महावीर-सवत
२४५४

[जिनाय-नमः]

[किताब-जैनमत-पताका.]

(न्यायांभोनिधि-श्रीमद्-विजयानंदसूरि-
अपरनाम-महाराज-श्रीआत्मारामजी-
साहबके-शिष्य.)

[जनाब-फेजमान-मग्जनेइल्म-जैनश्वेतांबर-
धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-
शांतिविजयजीकी-तसीफ-किइहुइ,-]
(बडेमार्केकी-किताब)

[जिसकों]

शाह नरोत्तमदास भगवानदास, L C C
ॲकाउन्टट-मुरारजी गोकुलदासमार्किट, कालनादेवीरोड,
बंबइने निर्णयसागर प्रेसमे छपवाकर
प्रकाशित किइ

(शेयर)
(बाचनेर सैर इल्मकी करना, यह तमाशा कितावमे देखो)

विक्रमसवत् (१९८४), इस्वीसन (१९२७)

किंमत दश (१०) रुपये

प्रथमावृत्ति
१०००

Vidyasagar-Nyayratna-Shreemat
Shantivijayji-Maharaj
Jain Shwetambar-Sadhu

जै ध १२९

चित्र ६ रंगीन
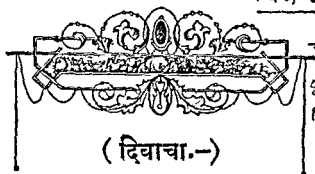
चक्र १ पृ ६३१

पृ ६३१ से ६४० लगाइे

चित्र १ लग

(दिबाचा.–)

(जैनमत–पताका.–)

१ किताब जैनमतपताका–जो–इसवख्त नाजरीनके जेरेनजर है, –इसकों अवलसें अखीरतक पढिये ! आपलोग–किताबमजकुरमे–नयेनये मजमूनकों पायेगें, और थ्री–कलर्स–ब्लाककी बनीहुई कई उमदातस्वीरेंभी–देखेगें, इसके पृष्ट (८००) हैं, जिसतरह किताब–जैनमतप्रभाकर छपतेही–फरोक्त–होगई, मजकुर किताबभी उमीद है,–इसीतरह फरोक्त होजायगी, फिर तलाशकरनेवालोकों–किताब –सायदही–दस्तयाब होसके. वरना ! उमीद नही, किताब मजकुरके तयारकरनेमे–शाह–नरोत्तमदास–भगवानदासजीने–तरह–तरहके पुस्तकमिलादेनेमे और तस्वीरोंके ब्लाक बनवानेमें बडी मदद दिई है, –निर्णय–सागर–प्रेस बंबइके उमदा टाइपोसें छपीहुई–किताब जैनमतपताका–देखकर–मे–जानता हुं–आपलोग जरूर पसंद करेगें.—

२ आज मुद्दतोंका इरादा कामयाब हुवा. और किताब छपकर आपलोगोंके सामने पेंश हुइ,–इसके अवलपृष्टपर तीर्थंकरोंकी और सद्गुरुओंकी इबादतके दोहे–कवित्त लिखेगये है,–पृष्ठ–तीसरेसे–वीसतक ग्रंथकर्त्ताकी सवानेउम्री–तेहरीर किइगई है, शहर–बलारी –मुल्क–कर्णाटकके चौमासेतककी सवानेउम्री–किताब–जैनमत–प्रभाकरमे छपीहुई है, आगे–संवत् (१९८४) तककी–सवानेउम्री.–

इसकितावम देखेंगे, इसमे ग्रथकर्त्ताका जीवनचरित-मुल्कोंकी सैर-और-तीर्थोंकी-जियारतका-हाल रौशन है,—

३ जैनफिलोसोफी-इसमे-जैनमजहबके उसूल, जैनमुनि, साध्वी, और श्रावक-श्राविकाकेलिये जैनशास्त्रके फरमान, विधिवादमें तीर्थंकरोंके-हुकम,-चरितानुवादमे किस्से-कहानी,-और यथास्थितवादमे कदीमीचीजोंका-बयान-काबिलेगौर है. बयान मुनिधर्म, इसमे मुनिधर्मपर-ग्यारह-कलम, और बयानश्रावकधर्मपर उन्नीस-कलम इसकदर शास्त्रनजीरोंके शाथ लिखीगई है, जिनकों पढकर जैनमुनि और जैनश्वेताम्बरस्थानककों खुद-ब-खुद मालुम होजायगा-हम-क्रियापात्र कहलाना चाहते है,-मगर मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके हमारेमे उतनी क्रिया नही है, जितनी शास्त्रोंमे फरमाई है,-दिलका गरुर निकलकर खयाल होजायगा, तीर्थंकर-गणधरोंका हुक्म क्या है ! और हमारा बरताव कैसा है ?

४ हिदायत-बुतपरस्तिये जैन,-इसमे मूर्तिपूजाके बारेमें उमदा दलिलें दर्ज है, जिसके पढनेसे मूर्त्तिपूजाके बारेमे उमदा बहेस करसकोगे, एक-विद्वान्के सवालोंका जवाब,-इसमे हरसवालके माकुलजवाब इसकदर-दाखले-दलिलोंसे दिये है,-पढकर आपलोग जरुर पसद करेगें, बयान पर्यूषणपर्व, इसमे पर्यूषणके तेहवारकी हकीकत, गणधरवादकी उमदा बहेस, और कल्पसूत्रकी नजीरे लिखीगई है,-दर-बयान-दीवालीपर्व,-इसमे-तीर्थंकर-महावीरस्वामीकी मुक्ति-और-उन्होने-जो-मुक्तिमिलनेके पेस्तर पावापुरीमे पाचमे आरेका जो-हाल-फरमायाथा, उसका जिक्र है,-बयान तपश्चर्या,-इसम तपकरनेकी पुरी पुरी तपसील लिखीगई है, बगेर एतकातके और बगेर ज्ञानके तपकरना फिजूल और कामीलएतकात-और-कामीलज्ञानसें तपकरना-फायदेमद कहा,-जिसको एतकात-और-ज्ञान-कामील है,-वो-शख्श अगर-तप-न-करे-तो-भी-उसकी

मुक्ति होसके, सबब धर्मशास्त्रमें एतकात सबका शिरोताज कहा, देखलो! अभव्यजीवकों एतकात–न–होनेकी वजह–चाहे–जितना उमदाचारित्र पाले, मगर–वो–मुक्ति–हासिल नही करसकता. सबुत हुवा, सामने एतकातके चारित्र–कुछ–चीज नही. जैनशास्त्र आवश्यक –सूत्रमे पाठ है,–चारित्र–विना इसजीवकी–मुक्ति होसके, मगर विदुनएतकातके मुक्ति नही होसकती, यह–एक–उंची–डिग्रीकी–बात है, कम इल्म–शख्शोंको–इसका मतलब पाना दुसवार–है.– किसी शख्शके हृदयमे–भाव चारित्र है–या–नही? इसबातको शिवाय केवलज्ञानीके दुसरा कौन कह सके?

५ बीच–बयान योग–उपधान, इसमें जैनमुनिको योगवहन– और श्रावकश्राविकाकों उपधानकी क्रिया किसतरह करना उसका जिक्र है, आजकल विदुनशास्त्रपढे कोरीक्रियाकरके योग–उपधान करलेते है, और बगेर गुणहासिलकिये आचार्य–उपाध्यायवगेरा– पदवी इख्तियारकरलेते है,–उसका–तजकिरा है, अठाईस–लब्धि- योका बयान, पेस्तरके जमानेमे किसतरह–लब्धिये–हासिल होतीथी और–वे–कैसे खुशनसीब थे,–जिन्होंने–इन–लब्धियोंको हासिल किई इसके पढनेसे मालुम होगा, जिनमदिरबनानेकी–तरकीब–और –जिनमूत्तिकी प्रतिष्ठाका बयान–काबिलतवज्जहके–है, तवारिख– जैनतीर्थ, इसमे शत्रुंजय, गिरनार, आबु, शंखेश्वर, पंचतीर्थी–मार- वाड, हस्तिनापुर, बनारस, पंचतीर्थी–पूर्व, समेतशिखर, अतरिक्षजी, उज्जेन, कुल्पाक, किष्किधा, लंका, दखनमथुरा, नाशिक, अश्वाव- बोध, भद्रेश्वर, घृतकल्लोल, और द्वारिका, वगेराजैनश्वेतांबर–तीर्थो- की हकीकत–है.—

६ जैनभूगोल,–इसमे–जैनभूगोल विद्या–किसतरह–मुकरर किई गई है, जंबूद्वीप, लवणसमुद्र, धातुकीखड, कालोदधि समुद्र, और पुष्करार्द्ध द्वीप, भारतवर्षके–छह–खड, गंगा–सिधु वगेरा–नदीये,

आर्यदेशोके नाम, और जैन भूगोलका-नकशा, तीनरंगोंसें रगा हुवा-इसमे दर्ज है, जमीन फिरती है-या-चाद-सूर्य ? इसके सवुतमे उमदा वहेस लिखी हुई है,-बयान-चौदह गुणस्थान और मुक्ति,-मजकुर बयान इस तरकीबसें-लिखागया है-जिसकों कम पढेहुवे शख्शभी बखूबी समजसके, चौदह गुणस्थानकी सीढियोंपर -जीव-किसतरह चढकर तरकी कररहा है, उसकी उमदा तस्वीरभी-तीनरंगोसे बनीहुई इसमे दर्ज है,—

७ किताब-शकरदिग्विजयके कितनेक-लेखपर समीक्षा, इसमे उन्होंने जैनमजहबके बारेमे-जो-कुछ लिखा है,-उसका जवाब है, सत्य ब्रह्म-जगन्मिथ्या,-उनका यह फिकरा, उनकी राय, और उनके मुकाबिलेमें जैनशास्त्रकी राय-और-दलिले दिइ है,-किताब -सत्यार्थ-प्रकाशके-बाहरम समुल्लासका जवाब, इसमे आर्यसमाजके स्थापन करनेवाले-दयानद सरस्वतीजीने-जो-जैनमजहबपर-एतराज किये थे, उनका माकुल जवाब दिया है. पढनेसे बखूबी मालुम होगा, गुजरात मासिकपत्र-पुस्तक दुसरे-अक-चौथेम-राजाधिराजके लेखम-जैनाचार्य-हेमचद्रसूरिके बारेमे-जो-एतराज कियाथा, उसका इसमे जवाब है,-किताब महावीर जीवनविस्तारके चदलेखोका जवाब, इसमे लेखकने-जो-गोशाला-मखपुत्रके-बारेमे एतराज किये थे,-उनका माकुल जवाब दिया है, प्राचीन श्वेताबर और उदयलालजी जैनकी-तेहरीरोंका-जवाब, इसमे-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन, साकीन-बडनगर, मुल्क मालवेने-जो-जैनाचार्य भद्रबाहुस्वामीके चरितका अनुवाद किया है,-उसकी प्रस्तावनाम श्वेताबरमजहबके बारेमे-जो-जो-दलिले पेश किइथी, उनका-माकुलजवाब है,-खरतरगछमीमासा,-इसमे-खरतरगछके उसूलोपर मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके-जो-जो-दलिले बयान किइ है-वो-पेश-नजर-है,—

८ जहुरे–आलम, इसमे–दुनयवी–कारोबारका–बयान, मुल्क–मुल्ककी–सैर, और शहर–व–शहरके हालातदर्ज है, जिसके पढनेसें बेहद फायदे हासिल होसकेगें, अकलके–फवारे,–इसमे लिखेहुवे–बातोंके फवारे आदमीकों शिक्षा देयगें, उसकी एक–उमदा तस्वीर तीनतरहके रगोंसे बनीहुई इसमे दर्ज है,–देखकर दिल खुश होगा, गुलदस्ते–जराफत, इसमे हासी–खुशीके किस्से, और तरह–तरहकी चतराइके लेख है, सवाल–जबाब, इसमे जीव–कर्म–मनः–बुद्धि–इंद्रियोंके बारेमे उमदा–बहेस–है,–बयान जैनतेहवार, इसमे जैन–मजहबके तेहवारोंके दिन बतलाये है,—

९ अग–स्फुरन–निमित्त, इसमें अग–फुरकनेका–बयान है,—स्वप्नशास्त्र,–इसमे–कौनसा स्वप्नदेखनेसे–क्या–नफा नुकशान होगा उसका जिक्र है, स्वरविज्ञान, इसमे मनुष्य, जानवर, और परींदोंकी बोली किसस्वरमे है, और उसका–क्या! फल होगा? बयान भूमि–कप–इसमे–जमीनकाप उठनेसें क्या नतीजा आयगा, उसका–तज–किरा है, बयान व्यजन निमित्त–इसमें शरीरपर–जो–तिल–मसे–और लहसन होते है,–उनकी केफियत है.–बयान हस्तरेखा, इसमे हाथ–पावकी–रेखाये–देखनेका आसान–तरीका, उसका फल–और–फायदे आमके हस्तरेखाकी तस्वीर तीनरगोंसें बनीहुई दर्ज है, जिसके देखनेसें निहायत खुशी हासिल होगी, बयान–उत्पात–निमित्त, इसमे अनहोते–बनावबननेसे क्या फल होगा, उसकी तपसील है,–बयान अतरिक्ष–निमित्त, इसमे–जो–जो–उत्पात आसानके ताल्लुक है–उसकी हकीकत बयान किइ है,—

१० बीच–बयान–शकुनशास्त्र,–इसमे तरह–तरहके–शकुनोंके हाल, और उसके जाननेके तरीके है,–बयान नजुमशास्त्र,–इसमे–व–जरीये नजुमके साल–दरसालके बरतारे निकालनेकी तरकीब, रुई, सोना, चादी, अलसी, एरडा, सूत,–घीर, सरसव, कपडे, खाड,

और तिलनगेरा चीजोंकी-तेजी-मदी-देखनेका तरीका-ज मपत्री और आद्दा-जमानेका हाल ऐसा-आम-फहेम-लिखागया है,-जो-हरमामुली आदमी ममजसके, रोगावली-चक्र,-इसमे बीमारीसें सुहेत पानेका बयान, किम नक्षत्रमे कौनसी चीज-गुम्म हो गई और-वो-कब मिलेगी ? उसकू देखनेका तरीका, चिकित्सा-विद्या, इसमें हिकमतकी-रुहसें-अपने बदनकी तदुरुस्ति-कैसे रखना ? कौनसी दवा-इस्तिमाल करनेसें क्या-नफा-नुकशान होगा, उसकी कैफियत है,—

११ बयान धर्मशास्त्र,-इसम व्याख्या-या-भाषण-किसतरह देना, व्याख्यान देनेवालोंकों कितना इल्म हासिल होना चाहिये, सभामे कैसे बोलना ? जिसको-आलादर्जेका वक्ता बननाहो,-इस लेखकों पढे, दुनयवी-कारोबार, इसम दुनयवी कारोबारके-मुताल्लिक-नजिरे-दरपेश है,-बयान स्वरोदयज्ञान,-इसमे चद्रस्वर, सूर्यस्वर, सुखुम्नास्वर वगेरा जाननेकी तरकीब, किसस्वरमे कौनसा काम करना इसका जिक्र है,-एम्.-पी.-शाहके लेखका जवान, इसमे-मर्यादाकी-हद-नामके लेखका जवान है.-तालीम धर्मशास्त्र,-इसमें-धर्मके बारेमें-उमदा नजीरे और नसीहतकी बाते है-बयान औरतोंके बारेमें-इसमे चार तरहकी औरतोंका बयान लिखागया है,-कामविकारसें-फतेह-पाना-दुसवार है,-मगर तारीफ उनकी करना चाहिये-जो-इससें फतेह पाये हो,-अष्टाग-निमित्त-प्रश्नावली, इसमे-सोलह-कोठोंके-यत्रसे अपने मकसद देखनेकी तरकीब है,-जब कभी-किसीतरहका-फिक्र-पैदा होजाय-इसकों देखनेसें तजरुबा मिलसकता है,-और-दिलकी तसल्ली होसकती है,—

१२ बयान-मन्त्रशास्त्र,-इसम दुरुस्त किया हुवा ऋषिमडल-स्तोत्र, जिसकी तलाशीमें बडे बडे इल्मवाले-सरगर्दा-बनेरहते है,-

दाखिल करदिया है.–भविष्य–दिखलानेवाले–बीज–अक्षर–जिनके पढनेसें आइंदा जमानेका हाल मालुम होसके–फायदे आमकेलिये इसमे लिखदिये है,–मगर–मास–शराब–लहसन–प्याज वगेरा जमीकदकी–चीजे–और पराई औरतसे परहेज रखना चाहिये–जब–ये–बीज–अक्षर फायदेमद होगें, अपराजिता–महाविद्या, जिसके पढनेसे अपनी रौजना तरक्कीका हाल मालुम होता रहे–ये अक्षर–कामील एतकातसे पढेजाय–तो–अशुभ–अनिकायित–कर्मकी निर्जरा और पुन्यानुबंधि–पुन्य हासिल होनेका सबब है, उपसर्ग हर–स्तोत्र और भक्तामर–स्तोत्रकी तजरुबा किइहुई–दो–नजीरे, आधाशिशी–मिटानेका उपाय, जागुली–महाविद्या, जिसके पढनेसे सर्पका–जहर–रफा –होसके, दरबयान यंत्र और तत्रशास्त्र इसमे पंदरका–यत्र–पुष्यार्क हस्तार्क–या–मूलार्कके–रौज–अपनेचद्र–स्वरमे अष्टगधसे भूर्यपत्रपर लिखकर पास रखाजाय–तो–रौजाना–तरक्कीकी सुरत हासिल होती रहे, जडी–बूटीयोंके बारेमे–सहदेवी, विश्नुक्राता, काकजघा, मयूरशिखा, केतकी, और शंखावली वगेरा जडियोकी खासिहत लिखी गई है,–

१२ श्वेताबर–दिगंबरके मंतव्यमे भेद,–इसमे श्वेताबर दिगबर मजहबमे–जिनजिन–बातोंका फर्क है,–उसका जिक है,–पापकर्मके फल, इसमे अपने अपने पापकर्मोंके फल–किसतरह–सहन–करने पडेगें मयदाखले दलिलोंके दिखलाये है, और दोजककी–तकलीफोंके–दोहे–जो–हिब्जकरनेके काबिल है, इसमे लिखे है, सस्कृत–वाक्य–मजरी, इसमे सस्कृत–जबानके फिकरे इसकदर उमदातौरसें लिखे है,–जिनके–बर–हिब्ज करनेसे–सस्कृतजबानमे–आसानीसें बोलसकेगें, उपदेशिक–पद, इसमे अलग–अलग कवियोंके बनायेहुवे पद और अध्यात्मिक स्तवन–जिसके पढनेसे दिल–तर–वा–ताजा होगा, अगर–सरगी–तबले–और–हारमोनियम–वगेरासाजसे रागरागिनीमे पढेजाय–दिलचस्प सगीत होगे, गुरुभक्तिपर लावनी और पदभी–काबिल पढनेके–है.—

१४ किताब-सुरसुंदरी-विवेकविलासके चतुर्थ-परिच्छेदमे-जो-साधु धर्म-और-जिनमूर्त्तिके बारेमे लेख है,-उसका माकुलजवाब इसमें दिया है,-दिग्पट-चौरासी-बोलोंके सारमें,-महोपाध्याय-यशोविजयजीका-बनायाहुवा दिग्पट-चौरासी-बोलोंका सार-कुछ-थोडासा हिस्सा-इसमे रौशन है, जिनकों मजहबी-बहेसकरनेका शौख हैं, ब-खूबी-देखे,-इम्तिहानधर्म,-इसमे कौनसाधर्म-दुरुस्त और कौनसा नादुरस्त हैं ? इसके पढनेसें मालुमहोसकेगा, ग्रथकर्त्ताके बनायेहुवे ग्रथोंकी तपसील,-किताब जैनमतपताकाके पेंशगी-खरीददारोंके-नाम, इसमे जैनमतपताकाके छपनेसे पेस्तर खरीददार होकर जिन्होने आठरुपये-पेंश किये थे,-उनके मुबारक नाम छपे हुवे हैं,-सवाने उम्रीकी वृत्ति,-इसमे ग्रथकर्त्ताकी-आजतककी सवानेउम्रीकी-वृत्ति लिखी है,-इतिहा-किताब, वगेरा लेख-आप-लोग-ब-गौर देखे,—

१५ मेरे बनायेहुवे छोटे-मोटे-पनराह ग्रथोंकी-तपसील-इस-किताबके-पृष्ठ-(७७१) पर दिई हे, देखिये !

१६ इन ग्रथोंमे मानवधर्म-सहिता पृष्ठ (८३६)-जैनतीर्थ गाईड पृष्ठ (५३६)-जैनमत-प्रभाकर पृष्ठ(७८८)-और-जैनमत-

पताका-पृष्ठ(८००) इसतरह-ये-चार ग्रथ बडे-और-बाकीके (११) ग्रथ-छोटे है,-सिर्फ! जैनमत-प्रभाकर-थोडी-सिलकमे रही है,-और फिलहाल! जबतक दुबारा-न-छपे उस-नायाब-किताबका-मिलना-मोहाल है,-बाकीकी किताब-जितनी छपीथी-तमाम बीक गई, सिलकमे नही, किताब-जैनमत-पताका-जो-आपलोग देखरहे है,-मेरी-जइफीमे-आखरी मालुम देती है,-आगे जैसा ज्ञानिदृष्ट भाव-होंगा वैसा बनेगा,-

१७ दुनियाफानी-सरायमे-आत्मा-कईदफे पैदा होकर-सितम-रसीद हुवा, मगर बिदुन धर्मके-मुराद-हासिल नही हुई, जिसके दिलको-इश्कके-तीरोंने चलनी नही किया,-वही-धर्म करसकेगा, -जो-शख्श-अपने मासुकके-दिदारको-दौलत समजे-और इश्कमे गिरफतार रहे उसकी क्या क़ुदरत है,-धर्म-कर सके, जिन्होने यहा धर्म किया परलोकमे मर्तबा पाया. और जिन्होने धर्मसें नफरत किई हर-बलामे-गिरफता हुवे, जान दारोंपर रहम करना. कत्ल-गारोंसें परहेज-और-अपनी जानकी तरह दुसरोंकों समजना यही धर्मका नाम-निशान-है, दरअसल! धर्मकी तरक्कीसेंही-इन्सान तकलीफोंसे निजात पाता है,—

१८ मोहकर्मसें-फतेह-पाना-निहायत मुश्किल है,-तारीफ करो, उन जमामर्दोंकी जिन्होने मेहनत और ममक्तसें तरी और कभी -खुश्कीमे रहकरभी धर्मसे-मुह-नही फेरा, और इसकी तलाशीमे सरगर्दा-बनेरहे, असलमे!-धर्मही-इस-रुहका निगहबान है, क्या! मुजाखा है-अगर कोई किसीतरह धर्मकी तहकीक करे, मगर धर्म किसीसुरत जूठा नही, दुनियादारीका-सरजाम करते उम्र खतम हुइ-मगर-पुरा नही हुवा, जिस शख्शका-जर-जवाहिर और माल असबाब-खो-जाय-वो-रज खींचता है, मगर धर्मको-खो-देवे, उसकी कोई परवाह नही करता,-जिस रौज तुमारेहाथसे धर्मका काम

बन गया-वो-दिन गनीमत समजो. आदमीका-चौला-पाकर धर्मको भूलजाना महेज-नादानी है.-कइ शख्श-धर्मका गुन्हाकरके जान्हमरसीद हुवे, और उनकी मुरादे हवा होगई, दुनियाका-माजरा-कौन सुने, और पुरा करे, इन्सानको लाजिम है, गुनाहोंसें-तोबा-करे, और नेकीपर कदम रखे, कियेहुवे गुनाहोसे पनाह मागे और अपने बदकामोपर-लानत-करे, जिससे आइंदाउसकी खैर हो, आदमी अगर-धर्मसे बेंकरार-न-हो-तो-उसकी तारीफ है, और उसीका-बेंडा-पार है,—

मुकाम-माहिम, पोष्ट-न -१६ बबई सवत् १९८४-	व-कलम-जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा- विद्यासागर-न्यायरत्न- मुनि शांतिविजय -

[सिद्धचक्रके महात्मपर उमदा लावनी]

जग्तमे नवपद जयकारी-पूजता रोग टले भारी,
प्रथमपद तीरथपति राजे-दोप अष्टादशको त्यागे,
आठ प्रातिहारज छाजे-जग्तप्रभु गुण बारे राजे,
अष्ट कर्मदल जीतके-सघल रिद्धि थई आय,
सिद्ध अनत नमु बीजेपद एक समय शिव जाय,
प्रगट भयो निजस्वरूप भारी-जग्तमे नवपद जयकारी. १

सूरिपदमे गोयम केशी-ओपमा चद सूरज जैसी,
ऊधार्यो राजा परदेशी-एक भवमाही शिव लेसी,
चोथेपद पाठक नमु-श्रुतधारी उवझाय,
सर्वसाधु पचमपदमाही-धन धन्नो अणगार,
वखाण्यो वीरप्रभु भारी-जग्तमे नवपद जयकारी. २

द्रव्य षटकी सरधा आवे–समसवेगादिक पावे,
विना ये ज्ञान नही किरिया–ज्ञानदर्शनथी सब तरिया,
ज्ञानपदारथ सातमे–पदमे आतमराम,
रमता रहे अध्यातममाही–निजपद साधे काम,
देखता वस्तु जगतसारी–पूजता रोग टले भारी. ३

योगनी महिमा बहु जानी–चक्रधर छोडी सब नारी,
यति दशधर्म करी मोहे–मुनि श्रावक सब मन मोहे,
कर्म निकाचित काटवा–तपकुठार करधार,
नवमापद जो करे क्षमासु–कर्म मूलकट जाय,
भजो नवपद जगसुखकारी–जग्तमे नवपद जयकारी. ४

श्री सिद्धचक्र भजो भाइ–आचामल तप नव दिनठाई,
पाप तिहु योगे परीहरज्यो–भवी श्रीपालपरे तरज्यो,
ओगणीसें सतरासमे–जयपुर श्रीसुपास,
चैत्रधवल पुनमदिने मुज–सफल हुई सब आस,
बाल कहे नवपद छब प्यारी–जग्तमे नवपद जयकारी. ५

(इति नवपद महात्मपर लावनी सपूर्ण)

[एक कविके बनायेहुवे गुरु भक्तिपर शेयर]

धन्यहो मुनिराजजी, जो सुख तजे ससारके;
पाचों इद्रिय दमन किनी, पचमहाव्रत धारके.
आठ कर्मकों नाश करते, छकायाकों तारके,
पाप भस करते अठारा, जीव अनेक उतारके.
शीलको धारण किया है, काम रिपुकों मारके,
न्यायरत्न विद्याके सागर, भाइ जिन दरबारके.

बन गया-वो-दिन गनीमत समजो. आदमीका-चौला-पाकर धर्मको भूलजाना महेज-नादानी है -कइ शरश-धर्मका गुन्हाकरके जान्हमरसीद हुवे, और उनकी मुरादे हवा होगई, दुनियाका-माजरा-कौन सुने, और पुरा करे, इन्मानको लाजिम है, गुनाहोंसें-तोबा-करे, और नेकीपर कदम रखे, कियेहुवे गुनाहोसें पनाह मागे और अपने बदकामोपर-लानत-करे, जिससे आइदाउमकी खेर हो, आदमी अगर-धर्मसे बेंकरार-न-हो-तो-उसकी तारीफ है, और उसीका-बेंडा-पार है,—

मुकाम-माहिम,
पोष्ट-न -१६ बनई
सवत् १९८४-

ब-कल्म-जैनश्वेतानर धर्मोपदेष्टा-
विद्यासागर-न्यायरत्न-
मुनि शांतिविजय -

[सिद्धचक्रके महात्मपर उमदा लावनी]

जग्तमे नवपद् जयकारी-पूजता रोग टले भारी,
प्रथमपद तीरथपति राजे-दोप अष्टादशको त्यागे,
आठ प्रातिहारज छाजे-जग्तप्रभु गुण बारे राजे,
अष्ट कर्मदल जीतके-सघल रिद्धि थई आय,
सिद्ध अनत नमु बीजेपद एक समय शिव जाय,
प्रगट भयो निजस्वरूप भारी-जग्तमे नवपद जयकारी. १

सूरिपदमे गोयम केशी-ओपमा चद सूरज जैसी,
ऊधार्यो राजा परदेशी-एक भवमाही शिव लेसी,
चोथेपद पाठक नमु-श्रुतधारी ऊवझाय,
सर्वसाधु पचमपदमाही-धन धन्नो अणगार,
वराग्यो वीरप्रभु भारी-जग्तमे नवपद जयकारी. २

द्रव्य रहटकी सरधा आवे—समसवेगादिक पावे,
विना थे ज्ञान नही किरिया—ज्ञानदर्शनथी सब तरिया,
ज्ञानपदारथ सातमे—पदमे आतमराम,
रमता रहे अध्यातममाही—निजपद साधे काम,
देखता वस्तु जगतसारी—पूजता रोग टले भारी. ३

योगनी महिमा बहु जानी—चक्रधर छोडी सब नारी,
यति दशधर्म करी मोहे—मुनि श्रावक सब मन मोहे,
कर्म निकाचित काटवा—तपकुठार करधार,
नवमापद जो करे क्षमासु—कर्म मूलकट जाय,
भजो नवपद जगसुखकारी—जग्तमे नवपद जयकारी. ४

श्री सिद्धचक्र भजो भाइ—आचामल तप नव दिनठाई,
पाप तिहु योगे परीहरज्यो—भवी श्रीपालपरे तरज्यो,
ओगणीसें सतराममे—जयपुर श्रीसुपास,
चैत्रधवल पुनमदिने मुज—सफल हुई सब आस,
बाल कहे नवपद छब प्यारी—जग्तमे नवपद जयकारी. ५

(इति नवपद महात्मपर लावनी सपूर्ण)

[एक कविके बनायेहुवे गुरु भक्तिपर शेयर.]

धन्यहो मुनिराजजी, जो सुख तजे संसारके,
पाचों इंद्रिय दमन किनी, पचमहाव्रत धारके.
आठ कर्मकों नाश करते, छकायाकों तारके;
पाप भस करते अठारा, जीव अनेक उबारके.
शीलको धारण किया है, काम रिपुकों मारके;
न्यायरत्न विद्याके सागर, भाव जिन दरबारके.

फेहरीस्त–जैनमत–पताका

[फेहरीस्त-तस्वीर,]

[दोहा]

अपने अपने पथको पोषन करत जहान,
वैसे यह मत पोषना, मतिमान, २,

श्रीयुत–रामचंदजी–कुम्भाजी–सिगा–
मुकाम–आहोर,–जिला–जोधपुर —
मारवाड जन्म संवत् १९०६

हाल मुकाम–बम्बई, सुतारगली–
पहली पोस्ट–नं ४

इन महाशयने–इस किताब–छपवानेमें मदद दिई–इस लिये–इनका फोटो
दर्ज किया गया है –

[जैन-चर्या,-]

(दीक्षा,)

१ दीक्षा इख्तियार करनेवाला शख्श-अपने मातापिता और भाइवगेरा रिस्तेदारोंकी परवानगीलेकर दीक्षा इख्तियार करे, अगर कोई शख्श किसी जैनमुनिके पास दीक्षा इख्तियार करनेके लिये आवे, जैनमुनि उसकों कहे, तुम अपने मातापिताकी परवानगी लेकर आओ, अगर कोई-शख्श-गेरमुल्कसें दीक्षा इख्तियार करनेके लिये आवे-तो-जैनमुनि-उसके मातापिता-और-भाइ वगेरा रिस्तेदारोकों रजिष्टरपत्र लिखकर इत्तिला देवे, आपके वहासे फलाशख्श हमारे पास दीक्षा लेनेको-आया है, आप लोगोंकी क्या-राय है?

२ छोटी उम्रवालोंको दीक्षा देना जोखमका काम है, फर्ज करो! जवानीमे-वो-दीक्षा रखेगा-या-छोडदेगा? इसका बयान कौन कर सकता है? इस बातका खयाल अवल-करलेना-चाहिये, जवानीमें दिलकों काबुमे रखना आसान नही, दीक्षा लेनेवालेके जइफ माता-पिता-मौजूद हो, घरका कारोबार उस दीक्षा लेनेवालेके सिरपर हो, जवान औरत और उसके लडकाभी-हो,-उनका क्या हाल होगा? इस बातका खयाल पहले करना चाहिये, उस हालतमे-जैनमुनि-उस दीक्षा लेनेवालेको हिदायत करे, तुमारेको दीक्षा लेनेका वख्त नही है, हाल तुमारेकों अतराय कर्मका उदय समजो, जिससे ऐसे सयोग मिले है,-तुमको लाजिम है, फिल हाल! दुनियादारी हालतमे इतजार रहो, और गृहस्थ धर्म पालन करो,

३ शिष्य बढानेकी चाहनावाले-जैनमुनि-अगर इस दलिलको-पेशकरे हम दिक्षा लेनेवालेके आत्माकों ससार समुदरसें तारते है,-(जवान) अवलतो विना हुकम वारीशोंके किसीके लडकेकों दीक्षा

देना तीर्थंकरोका हुकम नही, लोचकरना, विहार करना, भीक्षा मागकर सिकम-परवरीश करना, ऐसे सख्त रास्तेपर चलना क्या-आसान है ? जैनशास्त्रोंमे नवकल्पी विहार करना कहा, एक शहरमे या-एक गावमें-दो-दो-चार-चारवर्स रहना शास्त्रका फरमान नही, जैनमुनिको दिनमे एक दफे खानेका हुकम है, जैनमुनिको दिनमे-नींद-लेना फरमान नही, जिस जिस जैनशास्त्रका योगवहन करना हो-उस जैनशास्त्रका मूलपाठ मयअर्थके हिब्ज करना चाहिये,

४ जैनशास्त्रका फरमान है,-जैनमुनि-मुल्कोंके सफरमे किसीकी-मदद-न-ले, दो-चार-या-पाच जैनमुनि-शाथ-शाथ-सफर करे. कमसे कम-आचाराग, सूत्रकृताग, स्थानाग, समवायाग-इन चार सूत्रके पढे हुवेकों-जैनशास्त्र-गीतार्थ-मुनि-कहते है, गीतार्थको अकेले सफर करनाभी-हुकम है, मगर-अगीतार्थ-जैनमुनिकों अकेले सफर करना हुकम नही, सफरमे नोकर-चाकर-विद्यार्थी-श्रावक-श्राविका वगेरा शाथ चले-जैनमुनि-खुद जानते हो-ये-लोग हमारे सफरके सबबसे शाथ चले है,-ऐसी-मदद लेना शास्त्र हुकम नही, जब ऐसे सख्त रास्ते मुकरर है-तो-दीक्षा देनेवाले जैनमुनि और दीक्षा लेनेवाला शिष्य सोच लेवे-क्या ! दीक्षाका-मार्ग-आसान है ? दीक्षा देनेवाले जैनमुनिकों चाहिये शास्त्रीय फरमान और जमाने हालके कानुनके मुताबिक अमल करे, वरना ! दोनोंके लिये मुसीबत है,

५ दीक्षा इख्तियार करनेवालोंको मुनासिब है,-अपने-जइफ-माता-पिताका-और अपनी औलादका-जिंदगीभरके लिये खान-पानका इतजाम कर देवे,-फिर दीक्षा-लेवे, तीर्थंकर-ऋषभदेव-महा राजने अपनी अमलदारीका-और बेटोका सब तरह इतजाम करके दीक्षा इख्तियार किइथी,-आवश्यक सूत्रके-अवल अध्ययनमे इनका बयान है,-तीर्थंकर महावीरस्वामीने दीक्षा इख्तियार करनेके

पेस्तर अपने-बडे-भाई-नंदीवर्द्धनजीकी-रजामंदीकेलिये-दो-वर्स-तक दीक्षा इख्तियार करनेमे देरी किइथी, कल्पसूत्र वृत्तिमे रहै,-देखलो,

६ अगर कोई जैनमुनि-विना हुकम वारीशोके दीक्षा-देवे-तो-तीर्थंकरोंके हुकमकी साफ अदुलीहै,-आवश्यकसूत्र वृत्तिमे जहां आर्यरक्षितसूरिकी दीक्षाका बयान है,-वहा साफ लिखा है,

[आवश्यकसूत्रवृत्तिका-पाठ]

सो दीक्ष्यत तथा कृत्वा, प्राच्यासौ शिष्यचोरिका,
तेनाथैकादशागानि, पठितान्यचिरादपि, ४६

इसका माइना यह हुवा,-जब-तोसलिपुत्र-जैनाचार्यने-आर्य-रक्षितजीको-विना हुकम वारीशोके दीक्षा दिइथी, इसलिये इस वरतावकों शास्त्रकारोने चोरी बयान किइ, सबुत हुवा,-विना हुकम वारीशोंके दीक्षा देना जैनशास्त्रका फरमान नही, और ऐसा करनेसें एक तरहका अदत्तादान हुवा, मुनिमहाराज-अदत्तादानसें-दूर रहनेवाले होते है,-अगर विना हुकम वारीशोके किसीके लडकेकों दीक्षा देवे-तो-उनका तीसरा महाव्रत साबीत कैसे रहेगा? जिस लडकेने-अबतक दुनियाका-सुख चैन देखा नही, धर्मको पहचाना नही, उस हालतमे दीक्षा इख्तियार करना आइंदे-कया-नतीजा-निकलेगा,-इस बातको सोचना चाहिये, अगर कोई इस दलिलकों पेंशकरे,-वज्रस्वामी और हेमचंद्राचार्यने छोटी उम्रमे दीक्षा लि-इथी, (जवाब.) यह विधिवादकी मिशाल नही, चरितावादकी मिशाल है, चरितानुवाद अल्पव्यापी होनेसे छोडनेके काविल कहा, और विधिवाद-सर्वव्यापी-होनेसें-काविल मजर करनेके कहा, इस बातकों सोचो! विधिवादका नाम-शास्त्रीय कायदेका है,-जिसमजहबका-जो-कायदाहो, उसमजहबवालोंकों उसके मु-आफिक चलना चाहिये, जमाने पेस्तरके धर्मगुरु-केवल ज्ञानी होते

थे,-लक्षण विज्ञानके-और-नजुमके जाननेवाले थे, उनकी बराबरी आजकलके अल्पज्ञानी कैसे कर सकते हैं,-

[जिनमूर्त्ति-और-देवद्रव्य,-]

७ जैनमजहबके धर्मशास्त्रोंमे मूर्त्तिका मानना जाइज फरमाया, सात क्षेत्रोंमे जिनमूर्त्ति-अव्वल-क्षेत्र है,-जैनश्वेतांबर मजहबमे-स्थानकवासी और तेरहपंथ फिरकेवाले मूर्त्तिको नही मानते,-सात क्षेत्रोंमेसें-मंदिर-मूर्त्तिकों-न-माननेसे पांच क्षेत्र रह जाते हैं,-श्रावकोंका फर्ज है,-हरहमेश-जिनमूर्त्तिकी-पूजा करे और धर्मपर-कामील एतकात रहे, पूजा करते वख्त जिनमूर्त्तिकों संभालकर पूजा करे, पाषाणकी-मूर्त्तिको मंदिरमे-चुनेके मसालेसें या-दिवार और नीचेकी जमीनसे अचलकर देना चाहिये, वारवार उठाना ठीक नही, कभी-खंडित होजानेका-खौफ होगा, धातुकी मूर्त्तिकों-जमीन-या-दिवारके-शाथ-अचल-करनेकी कोई जरूरत नही, मगर मूल नायककी-प्रतिमा चाहे धातुकी हो-या-पाषाणकी जरूर अचलकर देना चाहिये, जिस शख्शके हाथसे जिनप्रतिमाका-अंगोपांग-खंडित होजाय, उसको मुनासिब है,-नयी-जिनप्रतिमा बनवाकर प्रतिष्ठाकराके उसी जगह तख्तनशीन करे, अगर उस जगह-तख्तनशीन करनेका-न-बन सकता हो-तो-दुसरी जगहपर जायेनशीन-करे,

८ जिस रौज जिस शख्शके हाथसें जिनमूर्त्ति-खंडित-होजाय उस रौजसें जबतक नयीप्रतिमा-तख्तनशीन-न-करे-अपने खान-पानकी चीजोंमसें एक चीज-खाना छोड देवे,-और हरहमेश-उवसग्ग-हर-स्तोत्रका पाठ करे, जब नयीप्रतिमा तख्तनशीन कर दे, फिर-वो-चीज खाना कोई हर्ज नही, और उवसग्गहर-स्तोत्रका पाठ करनाभी-फिर-जरूरत नही -जो-जिनमूर्त्ति-अपने हाथसे-खंडित होगई हो-उसी रौज उठाकर मंदिरके तलघरमे-या-किसी कोठरीमे

रख देवे, जिससे उसकी आशातना-न-हो,-खडितमूर्त्तिकी पूजा करना-जरूरत नही,-

[देवद्रव्य,]

९ देवद्रव्यकी हिफाजत करनेसे पुन्य और देवद्रव्यका नाश करनेमें पाप होना जैनशास्त्रोंमे बयान है,-सौचो! अगर देवद्रव्यका होना जैनशास्त्रोंकों मजुर-न-होता-तो-ऐसा बयान क्यौं होता? अगर कहाजाय त्यागी जिनेंद्रोकों देवद्रव्य क्यौं? मदिर क्यौं? (जवान,) त्यागी जिनेंद्रोंका समवसरण क्यौं? छत्र-चमर क्यौं? रत्नसिंहासन क्यौं? अगर कहाजाय-समवसरणकी रचना देवते करते है,-जवानमे मालुम हो, जिनमदिर श्रावक बनवाते है, और मदिर-मूर्त्तिकी हिफाजतके लिये देवद्रव्य है, इससे त्यागी जिनेंद्रकों क्या दोष आया? अगर कहाजाय जेनश्वेतांबर मंदिरोंमे-लाखो रुपये देवद्रव्यके पडे है,-फिर-पुरानेमदिर-मूर्त्तिकी मरम्मत क्यौं नही कराई जाती. (जवान,) मुनिजनोंका फर्ज है,-श्रावकोंकों-तालीम धर्मकी देना, उसपर अमल करना श्रावकोंका-काम है,-अपने घरकी रकम लगाना-तो-दूर रहा-देवद्रव्यकी-रकम-जमा होते हुवेभी-देवके काममे-न-खर्चना बडी भूल है,-कई श्रावक मातापिताके इतकालवरत बोली हुई धर्मखातेकी-रकमभी-तुर्त-नही लगाते, घरके वहीखातेमे जमाकर रखते है,-इसका कोई क्या करे? धर्ममें जबरजस्ती नही किई जाती, जिसकी-मरजी हो-धर्म करे,-ताकात होते हुवेभी-धर्म काम-न-करे-तो-वे-धर्मके गुनेहगार है, इससे ज्यादा और क्या कहे? अपनी करनीके-फल-आप-पायगें,-

१० अगर कोई-इस दलिलकों पेशकरे-जिनमदिरमें-जो-पूजा-आरती वगेराकी बोली किई जाती है, उसमे साधारण खातेकी कल्पना करके साधारण खातेमे लेजाना कोई हर्ज नही, (जवाब,)

पूजा-आरतीकी-बोली तीर्थंकरोंके नामसे बोली जाती है,-वो-रकम-देवद्रव्यकी हुई, उसमे साधारण खातेकी कल्पना करना किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा, अगर लिखा होतो-कोई-सबुत-बतलावे, देवकी-पूजा-आरतीकी बोलीमे ऐसी कल्पना करनाभी-नही हो सकता, फर्ज करो! एक शख्शकों-दो-लडके-है,-उनमे एक-लडकेकी सगाई किई गई, बतलाईये! उसमे दुसरे-लडकेकी सगाई होनेकी कोई कल्पना कर सकता है? हर्गीज! नही,—

११ जैनशास्त्रोंमे-सात क्षेत्र-बयान फरमाये, १, जिनमूर्त्ति २-जिनमंदिर, ३, ज्ञान, ४-साधु, ५-साध्वी, ६-श्रावक-और-७-श्राविका, इनमे देवद्रव्य जिनमूर्त्ति-और-जिनमंदिरके कामम लग सकता है,-ज्ञानद्रव्य ज्ञानखातेमे लग सकता है,-साधु-साध्वी-द्रव्यके त्यागी होते है,-श्रावक लोग-साधु-साध्वी रूपी-धर्मक्षेत्रम दौलत सर्फ करना चाहे-तो-इस तरह करे, जैसे कोई साधु-या-साध्वी-बीमार पड गये हो-तो वैद्य-हकीम-या-डाक्तर वगेरा लाकर बीमारीके इलाजकी कोशिश करे, श्रावक-श्राविकाके क्षेत्रका द्रव्य उस उस क्षेत्रमे सर्फ करे, अगर कोई जैनमुनि-या-श्रावक आज या-पाच पचीस-वर्सके बाद कहे,-देवद्रव्यमे साधारण खातेकी कल्पना कर लो-तो-इसमे कोई शास्त्र सबुत देना होगा, विना सबुत चाहे जितना कोई कहे, बिल्कुल गलत और नाजाईज होगा,—

१२ पर्यूषणके दिनोंमे तीर्थंकर-महावीर स्वामीका-जन्माधिकार वाचतेवख्त-चौदह-स्वप्न-उतारे जाते है,-वे तीर्थंकरकेही निमित्तसे है, तीर्थंकर महावीर स्वामीके पालनेमे-जो-नालियर रखा जाता है,-वो-खास! तीर्थंकरोंकी स्थापना है,-पालना-झुलानेकी और अपने घर-ले जानेकी-जो बोली बोलते है,-वोभी-तीर्थंकरोंकेही निमित्तकी है, उस बोलीकी रकम-शिवाय-देवद्रव्यके दुसरे कामम नही जा सकती, प्रतिक्रमण करनेके अवल-वंदित्तासूत्र वगेराकी

घोली गोलते है,-कल्पसूत्र वांचतेवख्त-गोली-घोलते है,-वो-ज्ञानके निमित्तकी होनेके-सबब ज्ञानखातेमें-ले-जाना मुकरर है,-इसमे फेरफार नही हो सकता, अगर साधारण-खातेकी-कमी है,-गरीब श्रावकोंको मदद देनेकी जरूरत है,-तो-उसका चंदा अलग करो, पाठशालाके लिये-चदा-करना-हो-तो-वोभी-कर सकोगे,-मगर एक-खातेका द्रव्य-कल्पना करके दुसरे-खातेमे-ले जानेकी सलाह देना किसी जैनशास्त्रका फरमान नही,—

१३ जैन-आगम-आवश्यकसूत्र वगेरामे विश स्थानक पद बतलाये है, खुद तीर्थंकरका-जीन-पिछले भवमें उनका आराधन-करता है, विश स्थानक-कहो, या-विश तरहके रास्ते कहो-बात-एकही-है,-कोई शख्श अरिहतपदकी सेवा करे, कोई सिद्धकी उपासना करे, कोई आचार्यकी-कोई उपाध्यायकी-या-कोई साधु महाराजकी भक्ति करे, कोई शख्श तीर्थंकी तरक्की-करे, कोई धर्मपर कामील एतकात रहे, कोई ज्ञान पढे-या-दुसरेको पढावे, कोई तीर्थोकी जियारत करे, कोई स्वधर्मीकी वैयावृत्य-करे, कोई-तपश्चर्या-करे, कोई दान देवे, कोई ब्रह्मचर्य-पालन-करे, कोई सामायिक-प्रतिक्रमण -करे, कोई शख्श तीर्थयात्राके लिये-सघ-निकाले, कोई अपने किये हुवे तपका उद्यापन करे, कोई पूजा-अगी-रचावे, कोई नया-जैन-मदिर तामीर करावे,-या-कोई पुरानेमदिरकी मरम्मत करावे, कोई राग-रागिनीमें तीर्थंकरोंकी इबादत करे, कोई जिनमदिरमे गीत-गान, वादित्र-या-नृत्य करे,-ये-सब तरहके धर्मरास्ते विश स्थानक पदमे दाखिल है,-और-ये-सब मार्ग खुले रखे गये है,-जिस जिससे-जो-मार्गपर चलना बने-वो-उस मार्गपर चले, एक मार्गको बद करनेकी सलाह देना मुनासिब नही. जैसे आजकल-कई-जैनमुनि-या-जैनश्रावक-सभामे खडे होकर कह देते है, मदिर कहा थोडे है,? ज्यादा बनानेकी क्या जरूरत? तीर्थयात्राके सघ निकालनेकी-या-उजमणा करनेकीभी क्या-जरूरत है?-गरीब

श्रावकको-मदद देनेका वरत है,-पाठशाला शुरु करनेकी जरूरत है,-मगर-इतना नही सौचते, तुमारे तीर्थंकर-गणधर-क्या-फरमा गये है,-वे-साफ फरमागये है,-जिनमदिरभी-बनवाओ,-उजमणाभी करो, तीर्थयात्राके लिये सघभी-निकालो, गरीब श्रावककों मददभी करो, और पाठशाला वगेरा ज्ञानवृद्धिके काममी-करो,-जिससे-जिस रास्तेपर चलना बने उस रास्तेपर चले, एक मार्गको बद करके अपने मतलबकी बात कहना मुनासिब नही. यह-बात-थोडे पढे हुवे जैनमुनि-या-श्रावक-न-समजे-तो-उनके ज्ञानावरणीय-कर्मका-दोष-समजो,—

१४ अगर कोई जैनमुनि-इस दलिलको पेंशकरे,-देवद्रव्यके हजारो-या-लाखो रुपये पडे है,-मगर उसकी व्यवस्था-होती नही. पुराने जैनमदिरोंकी मरम्मत कराई जाती नही. (जबाब,) श्रावकोंको उपदेश दो,-जिस मदिरमे-पूजाके लिये केशर-धूप-वगेरा चीजोकी जहा जरुरत हो, वहा उन चीजोंको भेजवानेकी हिदायत करो, कितनेक जैनमुनि-श्रावकोंको उपदेश-दे-सक्ने नही, श्रावकलोग नाराज होजायगे ऐसा जानकर चुप रहते है,-श्रावक लोगभी-देवद्रव्यकी रकम देवके काममे सर्फ करते नही, यही वजह है देवद्रव्य पडा रहे और पुरानेमदिरोकी मरम्मत-न-हो, एक सालमे मदिरका कुछ हिस्सा गिरगया, दुसरी सालमे दुसरा गिरा, इसी तरह पाच दश वर्समे मदिर बरबाद होजाते है,-दर असल ! यह सब-गलती श्रावकोंकीही कही जायगी, पूजा आरतीकी बोली तीर्थंकरोंके नामसे होती है वो-रकम देवद्रव्यकी हुइ.-उसमे साधारण खातेकी कल्पना करना जैनशास्त्रमे-नही लिखा. अगर कोई कहे-मे-सब जैनश्वेतावर मुनियोंको चेलेंज देता हु-तो-उसके जबाबमे-उनको-मे-चेलेंज देता हु पूजा आरतीकी बोलीका द्रव्य-देवद्रव्यमे जाना चाहिये इससे खिलाफ किसी जैनशास्त्रका-पाठ-हो, मुजे दिखलावे. वरना ! मे-पूजा आरतीकी बोलीका द्रव्य-देवद्रव्यमे जानेका पाठ दिखलानेको तयार हु

१५ अगर कोई कहे पूजा-आरती वगेराकी बोलीका रवाज शास्त्रोंमे नही चला, (जवाब.) क्यों नही चला? शास्त्रोंमे देवद्रव्यकी वृद्धि करना-साफ-लिखा है-इसपर गौर करो. जैनागम-ज्ञातासूत्रमे द्रौपदीजीके अध्ययनमे सतराह-भेदी पूजाका बयान है,-उसमे आभूषण पूजाभी-लिखी है, मुकुट-कुंडल-हार-वगेरा दागिना जिनमूर्त्तिपर चढाना लिखा. सोना-चादी-जवाहिरात वगेराके गेहने विनाद्रव्यके-बनते नही, साबीत हुवा देवद्रव्य जैनशास्त्रोंमें चला है,-बोली-बोलना देवद्रव्यकी वृद्धि करनेका सबब है,-देवके नाम चढती बोली-बोलकर-श्रावक पूजा-आरतीका फायदा हासिल करे, बोली-बोलनेसें दिलकी उमग बढती है, और देवद्रव्यकी वृद्धिभी-होती है,-खयाल करो! बोली-बोलकर देवद्रव्यकी वृद्धि-न-किई जाय-तो-जिनमंदिरोंकी हिफाजत कैसे होगी? केशर-धूप-दीप-पूजारी-वगेराका खर्च कैसे चलेगा? अगर कहा जाय-गरीब श्रावक पूजा-आरती करनेका फायदा कैसे हासिल कर सकेगें? (जवाब.) पहली पूजा-बोली-बोलनेवालोंने-कर लिई, फिर हर शख्श-पूजाका फायदा हासिल कर सकता है,-गरीब श्रावकको सौचना चाहिये-मेने-पूर्वजन्ममे-पुन्य-नही किया जिससे-यहा मुजे-पहली पूजा करनेका फायदा-न-मिल सका. अपना अतराय कर्म-अपनेको रोकता है,-इसमे-कोई क्या करे? अगर कोई इस दलिलको पेंशकरे श्राद्धविधि वगेरा ग्रंथोंमे-चढती बोली-बोलकर-पूजा-आरती करना,-मालापहनाना लिखा, मगर-वे-ग्रथ-थोडे वर्सोके बने हुवे है,-(जवाब.) पूजा-आरती-वगेराकी बोलीमे साधारण खातेकी कल्पना करना-यह-बात-तो-थोडे वर्सके बने हुवे ग्रंथोंमेभी-नही लिखी, फिर ऐसी कल्पना कौन मजुर करेगा? इस बातकों-सौचो!

१६ अगर कोई जैनमुनि-या-श्रावक-इस मजमूनकों पेंशकरे, अपनी-समाजवाले-अपने समाजको बढानेकी कोशिश क्यों नही

करते ? (जवाब) कौन कहता है-कोशिश-नही करते ? कमी-कोई-कोम-घट जाती है-तो-कमी-बढभी-जाती है,-घटती-बढतीका चक्र दुनियामे चल रहा है, इसका फिक्र करना फिजूल है,-जैनशास्त्र फरमाते है,-जैनमजहब-पाचमे आरेकी अखीरतक-रहेगा, त्रिकालज्ञानी तीर्थंकरोंका फरमाना गलत कैसे होसके, अगर कोई-जैनमुनि-या-श्रावक तेहरीर करे,-अपनी जैन कोम-केलवणीमे-और सुधारेमे पीछे है, जवाब, कौन कह सकता है ? केलवणीमे जैनकोम पीछे है ? जमानेकी रफतारके मुताबिक जैनकोम-किसी तरह पीछे नही, जहा जैनोंकी आबादी कमरतसे है,-वहा-देखो, सभा-मडल-परिषद्-पाठशाला-बोर्डिंग-जारी है, और महजबी इल्म पढाया जाता है,-और-तरह-तरहके सुधारे दरपेश है,-जैनोंकी देवभक्ति देखो, जब-जिनमूर्त्तिका जुलुस निकलता है,-चादीका रथ, पालखी, महद्रध्वज, और तरह-तरहके-बाजे-वगेरा लवाजमा देखकर हर शख्श तारीफ करता है.-जैनमुनि-जब-किसी शहरमे तशरीफ लाते है, श्रावक लोग-उमदा-बाजे-और-उमदा लवाजमोसे पेंशवाई करते है ? और जैनमुनियोकी खिदमत करते है —

१७ अगर कोई जैनमुनि-या-श्रावक बयान करे, जैनमजहबको-क्षयरोग-लागु पडा है,-(जवाब) किस बातका क्षयरोग-लागु पडा है-इसका खुलासा देना चाहिये,-मुताबिक जमानेके जैनमजहब-उमदा-तौरसे चल रहा है,-द्वादशाग-वाणीके पुस्तक छप गये है,-चाहे-सो-बाच लेवे, जैनमजहबके विद्वान् साधु-और-श्रावक-सभामे-मनुष्य कर्तव्य और धर्मपर भाषण देते है,-जैनमजहबके फरमान ऐसे है,-अगर उसपर कोई अमल करे-बदनसे और एतकातसे तदुरस्त रहेगा,-आजकल कितनेक जैनमुनियोंमे-और-श्रावकोंमे-ऐसा बोलनेका रवाज पड गया है,-अपनी-कोम-सुधारेमे पीछे है, अपनेम-सप-नही, मगर इन्साफसे देखो-तो-जैनकोम

सुधारेमे पीछे नही, और-एक्यतामेभी-देखो-तो-पीछे नही है,-कहनेवाले चाहे-सो-कहे,-इसका फिक्र कहातक करना?—

[पिंजरा-पोल,]

१८ पिंजरा पोलमें-गौ, भैंस, बकरे, घोडे, और-बैल-वगेरा कमताकात और करीब-उल-मौत-जानवरोंकी हिफाजत किई जाती है,-उन-जानवरोंकों घास, अनाज, चारी-वारी-दिई जाती है,-उनकी बीमारीका-इलाज किया जाता है,-और रहेमदिलीसें इसमें अपनी दौलत देते है,-जीवोंपर रहम करना आलादर्जेका-धर्म मार्ग है, जिनोने पूर्वजन्ममें जीवोपर-रहम-किई है,-उनोने उस जन्ममे अपने बदनकी खुबसुरती और तदुरस्त मिजाज-पाया है,-उम्रभर कभी बीमारी नही पाते और आराम चैनसें जिंदगी गुजारते है,-अगर तुमकों-इस जन्म-और-पर जन्ममे-सुख-चैन पाना है,-तो-जीवोंपर रहेम करो, जैसी अपनी-जान-है,-वैसी दुसरोंकी-समजो,-खास! तीर्थकरोंनेभी-षट्कायके जीवोंकी रक्षा किई है,-पिंजरा पोलमे जीवोंकी-(यानी) मुगे-प्राणीयोंकी रक्षा किई जाती है,-हिंदके कई-शहरोंमे-और गावोंमे पिंजरापोलका मकान बना हुवा रहता है, मुगे-जानवर बोल सकते नही. हमकों भूख लगी है, हमकों धूपमेसें छावमे लेजाओ, ऐसे जानवरोंपर रहम करना जाईज है,-अगर-कोई कहे-आज कलकी-पिंजरापोलमें जैसी व्यवस्था होना चाहिये,-वैसी-होती नही, इस लिये-बतौर-कमाईखानेके-है,-जवाबमे मालुम हो,-कैसी-व्यवस्था करना बतलाना चाहिये,-व्यवस्था बतला सकते नही, कोरीबाते बनाना क्या फायदा? अगर कहाजाय-गरीब-श्रावकोंको मदद देना बडी रहम दिलीका काम है, ज्ञानवृद्धिके लिये पाठशालाकी जरूरत है,-तो-जवाबमे मालुम हो,-पाठशाला वगेरामे-मदद-देनेवाले-उसमे मदद देवे,-कई जगह-पाठशाला चलतीभी-है, गरीब श्रावकोंकी मददके लिये-अलग-चदा करो, मगर पिंजरापोलके मार्गकों मौकुफ करके

दुसरे मार्गकों चलाओ ऐसा कहना मुनासिब नही, धर्मशास्त्रोंमे सभी-मार्ग-अपने अपने स्थानपर मुजुर रखे गये है,-एककों-बद-करना, और दुसरेकों खोलना-बहेत्तर नही,-जिसको-जो-मार्ग पसद पडे उसपर चले,—

[न्युसपेपर-यानी-अखबार]

१९ अगर कोई इस मजमूनको पेंशकरे, आजकल-न्युसपेपर, अखबार, समाचारपत्र, छापा-वगेरा बाचते रहना चाहिये,-जवाब,-न्युसपेपर-अखबार-वगेरा बाचते रहना अछी बात है इनसे मुल्क-व-मुल्क और शहर-व-शहरकी खबरें मालुम होसकती है, दुनियाकी खबरें जानना दुसरी बात है,-और धर्मशास्त्र बाचकर धर्मके उसूल पहचानना दुसरी बात है,-धर्मशास्त्र-आचाराग, सूत्रकृताग, स्थानाग, समवायाग, और भगवतीसूत्र-वगेरा-धर्मके-उसूल वतलानेवाले है -न्युस-पेंपर और अखबार-सूत्रसिद्धातकी बराबरी नही कर सकते,—

[पर्यूपणकी-सवत्सरी -]

२० पर्यूपणकी सवत्सरी-चाहे कोई जैन-भाद्रपद शुक्ल-चतुर्थीके-रोज करे,-या-कोई पचमीके रोज करे, दोनों-बाते-शास्त्र फरमानसे सही है,-कल्पसूत्रमे ऐसाभी-पाठ-है, भाद्रपद शुक्ल-पचमीके पहले करो,-या पचमीके रोज करो, दोनों फरमान शास्त्रसमत है, मगर पचमी तिथिकों छोडकर-छठके रोज पर्यूपणकी सवत्सरी करना जैनशास्त्रके खिलाफ है,—

[दुसरोंका-अयोग्य बरताव देखकर अपनी-
श्रद्धा-बदलाना नही]

२१ अगर कोई श्रावक-इस दलिलको पेंशकरे, आजकलके कितनेक जैनमुनियोंकी-कमजोर क्रिया देखकर हमारी धर्मश्रद्धा उनपर बेठती नही, (जवाब,) चाहे-कोई जैनमुनि हो-या-श्रावक-हो, आपआपनी धर्मश्रद्धामे पाबद रहना चाहिये,-दुसरोंके बरता

घकों देखकर अपने वरतानमें खलल क्यों डालना ?-जो-शख्श जैसी-करनी करेगा-वैसा-फल पायगा, यह-एक सिधी-सडक है, अगर कोई जैनमुनि-नवकल्पी-विहार-न-करे, परिग्रह संचय करे, विना हुकम-वारीशोंके किसीके लडकेको दीक्षा दे, संघमे विरोध पैदा करे, योग वहते-वख्त-उस शास्त्रकों मय अर्थके-हिब्ज-न-करे, और आचार्य-उपाध्याय वगेरा पदवीके गुण हासिल-न-किये हो-और-उस पदवीकों इख्तियार करे-तो-यह-वात मुनासिब नही.-इधर श्रावकोंके वरताव-तर्फ देखो! श्रावक धर्मके वारावत और चौदह नियम इख्तियार करे नही, अपनी सालियाना-आमदनीमेसें चौथा-हिस्सा धर्ममे खर्च करे नही, माता-पिता-भाई वगेराके इतकालके समय-जो-रकम धर्मादेकी बोली हो,-फौरन! उस उस काममे-खर्चे नही, और अपने घरके चौपटेमे-जमा-कर रखे.-साल भरमे-एक-तीर्थकी जियारत-न-करे, और केशरका तिलक करके भाव श्रावक बनना चाहे-यह बनाव कैसे बन सकेगा? अपने वरताव तर्फ देखना नही, और पर उपदेशमे कुशल बनना इससे-तो-धर्मशास्त्रके फरमानकों अपनेपर अमल करना अच्छा है.—

[धर्मशास्त्रकी-नजीरे,-]

२२ जैनमजहबमे चौवीस तीर्थंकर नायवधर्म हुवे. जिसमें अव्वल तीर्थंकर ऋषभदेव और अखीरके महावीर हुवे,-किसी शख्शको धर्मकी कसम खाना नही चाहिये, अदालतमे धर्मकों वीचमे रखकर कसम खाना पडे-तो-खावे, मगर-सच-बोले, किसीकी अमानत अपने घरमे जमा हो, और रखनेवाला इतकाल होजाय-तो-उसके दुसरे वारीशोंकों-दे-देवे, अगर कोई वारीश-न-हो-तो उसके नामसें धर्ममे खर्च देना, मगर अपना-नाम-नही करना. तकदीर अकेली फल देती है, तदबीर अकेली फल नही देती, तदबीर वेकार जाती है, मगर तकदीर फल दिखाती है, इस लिये तकदीर कौवतवाली है, ऐसा जानना.—

२३ पूर्वकृत-भले-बुरे कर्मोंका-फल-जीव-यहा पाता है, और यहा करेगा वैसा आगेको पायगा, उत्कृष्ट-पुन्य-पापका फल यहा-भी मिलता है,-मिथ्यात्वके उदयसें चौदहपूर्वके पाठी और यथा-ख्यात चारित्र पालनेवालेभी-ससारसमुद्रमे डूब जाते है, सबुत हुना-श्रद्धा-बडी चीज है,-व्याख्यान धर्मशास्त्र सुनतेवख्त-शोर-गुल नही करना, सामायिक नही करना, ध्यान देकर व्याख्यान सुनना यही-श्रुतसामायिक-है, मालाभी-नही-फेरना चाहिये,-दो-जगह उपयोग-न-रहेगा, मनविनाभी-कई-लोग दुसरोंको दिखा-नेके लिये-या-नाम करनेके लिये धर्मक्रिया करते है, मगर ऐसी क्रियासे आत्माकों कोई फायदा नही, विना-पुन्यानुबंधि-पुन्यके यानी विना-आला दर्जेकी तकदीरके दिलके इरादे कभी सुधरते नही,

२४ ज्ञानी-मनुष्य-पाप करतेवख्त-दिलमे पश्चात्तापभी कर सकता है अज्ञानी नही कर सकता, इस लिये उसको-पाप-ज्यादह है,-किसी हिंसक-यानी-जान मारनेवालोंको रुपये-पैसे-देकर किसी जीवको छुडवाया, और उन रुपयोंसे हिंसकने बुरे-कर्म-किये-तो-उसका गुनाह उसके जुम्मे है,-जीव छुडवानेवालोंकों-तों-पुन्य होगा, जिनेंद्रोंके हुकुमकों धका पहुचा कर दुनियाकी रीतरसमको मदद करे-तो-वो-शख्श धर्मसें दूर है,-हरेक श्राव-कको लाजिम है, अपने घरम किसी देवमदिरका-पैसा-न-रखे. किसी जैनमदिर-या-जैनतीर्थके देवद्रव्यका हिसाब अपने इस्तगत हो. छपवा कर जाहिर करे, व्याजसेंभी-अपनेपास-न-रखे. व्याजके लोभसें असली रकमभी-आना मुश्किल हो जाती है,—

२५ स्नान पूजाका सामान-श्रीफल-वगेरा अपने घरसें नया-ले-आना चाहिये, चढाई हुई चीजे नारीयल बादाम वगेरा पैसे देकर लेना और दोबारा चढाना ठीक नही, जिनमदिरमे यक्ष-या-शासनदेवीकी मूर्त्ति होती है,-उसकी पूजा-आरती-नही-करना चाहिये, सबब-वे-देव-गुरू नही है, सधर्मी श्रावक है,-

उनके सामने जाना-तो-मुखसें-जय-जिनेंद्र-कहना चाहिये,- कितनेक श्रावक अधिष्ठायक देवकी केशरसे पूजा करते है. धूप करते है. मगर यह बात खिलाफ जैनशास्त्रके है,-व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाचते वख्त-या-सारादिन जैनमुनिको मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा, हाथमे रखकर बोलना-या-व्याख्यान-देना-जैनशास्त्र-ओघनिर्युक्तिमे लिखा है,—

२६ कोई शख्श जिनमंदिरकी नेकीसे नोकरी करे, और देवद्रव्यमेसे अपनी नोकरीके दाम लेवे-तो-उसकों देवद्रव्य लेनेका दोष नही, उसकी नोकरीके दाम है, पचाशकसूत्रमे बयान है, जिसके घर लडका पैदाहो-तो दश दिनका अशौच,-यानी-नापाकी,-जिससे घर लडकी पैदा हो-तो-(११) दिनका अशौच, उस घरके मनुष्य-उतने दिनतक जिनमूर्त्तिकी पूजा-न-करे, सामायिक-प्रतिक्रमण-न-करे, धर्मशास्त्र-न-पढे, व्याख्यान सुननेमे कोई हर्ज नही, दुसरेके-घर-जिमते हो-तो-पूजा-सामायिक-नेंशक करे, सगे भाईके घर लडका-लडकी पैदा-हो-और सबका खानपान सामील हो-तो-खानेवालेकों दश दिनका अशौच, अगर खानपानकी जुदाई-हो-तो-अशौच नही, गेर मुल्कमे-लडका-लडकी-पैदा हो-तो-उसका अशौच दुसरे गाममे नही,—

२७ रात्रीको-या-दिनमे सोतेवख्त नीद आनेसें पेस्तर जैसे इरादे दिलके होगें, वैसे पुन्य-पाप-आत्माको लगते रहेगें, जैनशास्त्रोंमे परिणामे बध, क्रियाये कर्म, और उपयोगे धर्म कहा. नींदसें छुटे बाद जैसे जैसे इरादे बदलते रहेगें, वैसे वैसे फल मिलते रहेगें, श्रद्धा, ज्ञान, और चारित्र-इन तीनोंमे-श्रद्धा बडी चीज है, श्रद्धाके बाद ज्ञान, और ज्ञानके बाद चारित्र कहा,-विना चारित्रके मुक्ति होसके, मगर विना श्रद्धाके मुक्ति नही होसके, कर्म और उद्यममे-कर्म-ताकातवाले फरमाये, उद्यम-ताकातवाला नही फरमाया, जब कोई-मनुष्य-मरनेकी नोंबतपर आता है,-चाहे

जितनी-दवा करे, सब नेंकार जाती है,-उस वख्त कोई उपाय-कारआमद नही होते, सबुत हुवा,-पूर्व कर्म-अकेले फल दे सकते है,-उद्यम-अकेला-फल-नही दे सक्ता,—

२८ ज्ञानी मनुष्य पाप कर्म करते वख्तभी-दिलसें पश्चात्ताप कर सकेगा, अज्ञानी नही कर सकता, इस लिये अज्ञानीकों-निकाचित कर्म-बंध सकते है,-ज्ञानीकों निकाचित-कर्म-नही बंध-सकते, अज्ञानी अपने पूर्व संचित कर्मके उदयसें अज्ञानी-क्यों-बना ? अपनी करनीके फल भोगे, ज्ञानी अपने ज्ञानसे एक-स्वासोत्स्वासमे जितने पाप कर्म दूर कर सकता है, अज्ञानी करोडो वर्सकी तपस्यासेभी उतने-कर्म-दूर नही कर सक्ता, शुभहके वख्त नींद छुटे बाद-पंच परमेष्ठि महामंत्रका-जाप करना और रात्रीकों अरिहंत, सिद्ध, साधु, और धर्मका सरना लेकर सोना-शास्त्र फरमान है.—

२९ कीडी-मकोडी-और मुंगे-प्राणियोंकी-हिफाजत करनेके इजारदार बनना बडी तकदीरके ताल्लुक है, खुद ! तीर्थंकर-गणधर-पद्कायके जीवोंकी-रक्षा-करनेके इजारदार हुवे है,-इस बातकों-कम दर्जेपर कहना नही बन सकता,-कर्म-प्रकृतिके-जानकार होना सहज-बात-नही कर्म-सबकों लगे है. इतिहासोकी किताबें बाच लेनेसे क्या हुवा ? तीर्थंकरोंके फरमान-और-कर्मके भेदको जानना यही बडी बात है, जैन कोम-धार्मिक और व्यवहारिक काममे मुताबिक जमानेके अछी तरह चल रही है, इसको पीछे कहना बेमुनासिब है,-जमाना हरवख्त बदलता रहता है,-क्या ! बुद्धिवादका जमाना पेस्तर नही था ? बहत्तर कलाके जाननेवाले क्या पेस्तर नही थे,-विद्याशाला-पाठशाला पेस्तरभी-थी, और अबभी-मौजूद है,-गरीब श्रावक पेस्तरभी-थे, और अबभी-है, उनको मदद मिलती थी, और अबभी मिलती रहती है,-इसमे नयी बात क्या कही ?

[बयान-जैन-चर्याका-खतम हुवा,-]

[जिनाय नमः]

(गौतम-गणधराय नमः)

[किताब-जैनमत-पताका.]

(जिनकों)

(न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानंदसूरि, अपरनाम,
महाराज श्रीआत्मारामजी साहबके शिष्य,)

[जनाब फेजमाब मरजनेइल्म, जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा,
विद्यासागर, न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी-
साहबने तस्निफ किई,-]

[परमेष्टि-मगल]

[दोहा]

वीतराग और सिद्ध पुन, आचारज-उवझाय,
साधु सकलके चरनको, वंदू सीस नमाय. १

कल्पवृक्ष चिंतामणि, इन भवमे सुखकार,
ज्ञानवृद्धि इनसें अधिक, भव-दुख-भंजनहार. २

राइ मात्र घट वढ नही, देखा केवल ज्ञान,
यह निश्चय कर जानके, तजदो आरत ध्यान. ३

जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय,
ममता समता भावसें, कर्मबंध क्षय होय. ४

बांधे विन भुगते नही, विन भुगते-न-छुडाय,
आपही करता भोगता, आपही दूर कराय.

[कवित्त—नमिराज—ऋपिजीके वयानमें]

हंसगतिगामिनीज्यू देहद्युतिदामिनीज्यू-कामथीसी कामिनीज्यू निरुपम नागरी,
नमिराजजीकी रानी ऐसी तो हजार नारी रूपतें समारी एकएकहीसें आगरी,
निवार्या न दाहज्वर-चंदनकों घिसोखोर-कंकनकों सुनों सौर उपनो विरागरी,
मिथिलाकों राजछोड-मोहिनीकों बंधतोड नमे इंद्र करजोड ऐसी धुनलागरी

[दोहा]

वरस दिवसकी गाठकों, ओछव गाय वजाय,
ज्ञानी विन जानेनही, वरस गाठकों जाय.

विना कहे सतपुरुपही, परकी पुरे आस,
कौन कहत है सूर्यकों, घर घर करत प्रकास.

[वातके वारेमें—कवित्त]

बातही कहेसें ज्ञानध्यानमें प्रवीन बने बातही कहेसे सब लोगमें पूजातहै,
बातही बखान तीन लोकमें सुजाव होत बडे बडे योगी यति बातही कहातहै,
बातही कहेसें विपवासककों उतर जात, जाने बिन बात मूढकेते दुख पातहै,
मंत्र अरु तंत्र सब बातहीके पाठ बने, बातकर जाने-तो बात करामातहै,

The Life and Times of
Muni Shantivijayajee Maharaj

[सवाने-उम्री.]

जनाव-फेजमाव-मग्जने इल्म-जैनश्वेतांवर-धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत-महाराज-शांतिविजयजी साहवकी-सवाने उम्रीका-बाकीरहा हुवा-हिस्सा.

सवत् १९८० का-चौमासा-मुकाम-दादर-पोस्ट नबर (१४) बवई,—

१ शहर बलारी मुल्क कर्णाटकके चौमासेका हाल पेस्तर छपचुका है,-आप लोगोंने पढाहोगा, आगेका हाल यहांपर दिया जाता है,-सुनिये! शहर बलारीसे सवत् १९७९ के मृगशीरमहिनेमे जब महाराज बबई तशरीफ लाये, और लोंकागच्छके उपाश्रय कोटमें कयाम किया, आप लोगोंकों रौशन होगा, बबईसे महाराजने अपने पुस्तकोंका बहुतसा हिस्सा,—"विद्यासागर शातिविजयजी-जैनलाईब्रेरी"-मुकाम-सीरपुर,-मुल्क खानदेशको बतौर भेटके भेजा, जिसकों-कोई बाचे पढे और ज्ञानका फायदा हासिल करे यह भी-बयान उसमे दर्ज है,-आपलोगोंकों मालुम होगा,—

२ महाराज शातिविजयजी साहबकी-सवाने उम्री-सिर्फ! सवानेउम्रीही नही, बल्कि! इसमे तरहतरहकी बाते-तीर्थोंकी जियारतें-मुल्कोंकी सैर,-शहर बशहरमे दियेहुवे व्याख्यान,-जमानेके तजरुबे, और धर्मके तरहतरहके नफे नुकशानका तजकिरा होगा,-जिसकों पढकर आमलोग ताज्जुब करेंगे,-पौष-महिनेमे-बबईसें महाराज जब मुकाम माहीम-तशरीफ लेगये, और मौसिमे शर्द वहा गुजारा,

थानेके श्रावकोंकी आर्जूसें तीनरोजके लिये शहरथाना तशरीफ लाये, और वहां तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका मदिर वनाना शुरू किया जानेवाला था, माघसुदी पचमीके रोज उसका खातमुहूर्त किया, थानाशहर-श्रीपालराजाके जमानेका पुराना जैनतीर्थ है,-और श्रीपालराजा-तीर्थंकर-मुनिसुव्रतमहाराजके शासनमे हुवा, यह बयान जैनशास्त्रोंके पाठसे सावीत है थानानगरी पेस्तर वडी थी, जमानेहालमें छोटी रहगई, तीनरोज महाराज थानेमे ठहरे,-वापिस माहीम तशरीफ लाये, और मोसिमे गर्म वहा गुजारा, जब वारीशके दिन करीब आये,-व-मुकाम दादरके श्रावकोंकी आर्जूसें महाराज दादर तशरीफ लेगये, और सवत् १९८० की-वारीश वहापर गुजारी, इस सालका वरतारा-वजरीये नज्मके लिखकर महाराजने यहासें अखवारे वीरशासन-अहमदाबादको भेजा, और-वो-छपकर जाहिर हुवा था,—

३ चौमासेमें व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा वाज करतेथे, और सभा-कसरतसें भरतीथी, शहरे-वबईसें-लोकलट्रेनमे कई श्रावक व्याख्यान सुननेकों आतेथे. और व्याख्यान खतम होनेपर-अपने वतनकों जातेथे, पर्यूषणके दिनोमे कल्पसूत्र-वतरीके शास्त्र वाचा गया, बयान तीर्थंकर महावीर स्वामीके जन्मका-राग-रागिनीमे वाचा व्याख्यानसभामें उसवख्त-सरगी-तबले-हारमोनियम-और -सितार वजानेवाले उमदा तौरसे सगत करतेथे, आठरोज पर्यूषणके खतम हुवे, तरकी धर्मकी अछीहुई-चौमासा खतम होनेपर-कातीक सुदी पुनमके रोज दादरसे रवाना होकर-भायखाला-जैनमदिरमे-तीर्थ-शत्रुजयके चित्रपटकी जियारत किई, और वहासे-वबई-कोट लोकागछके उपाश्रयमे जानाहुवा, वहा चदरोज ठहरकर वापिस-दादर-तशरीफ लाये, इसअर्सेमें महाराजने एक-आर्टिकल—"तालीम धर्मशास्त्र"-नामका लिखा, और पुनेके चित्रमय-जगत-मासिकमे छापनेकों भेजा, जो-जनवरी महिनेके विशेष अकम-छपकर जाहिर हुवाथा, फाल्गुनमहिनेतक महाराज मुकाम दादरमे ठहरे,

इनदिनोंमें महाराजकी बनाईहुई-किताब-जैनमत-प्रभाकर छपकर तयार हुई, और पेंशगी होयेहुवे खरीददारोंकों भेजी गई,—

४ फाल्गुनमहिनेमे दादरसें रवानाहोकर थानेके श्रावकोकी आर्जूसे महाराज शहरे थानेमे तशरीफ लाये, और मौसिमे गर्मी वहापर गुजारा, इसअर्सेमे श्रीयुत पंडित लालनके लेखका जवाब-बजरीये अखबारजीर शासनके दिया, जिसमे वर्णाश्रमके बारेमे उमदा दलिले, क्षत्रिय-ब्राहमन-वैश्य और शूद्र-ये-चारतरीके आर्यधर्मशास्त्रमे मंजुर रखे है, बगेरा हकीकत दर्ज थी, दर असल! शूद्रके-दो-तरीके मानेगये है, एक शूद्र, दुसरा महाशूद्र, शूद्रके शाथ-क्षत्रिय, ब्राहमण, और वैश्योका-खानपान और विवाहसादी व्यवहार नही होता, और महाशूद्रके शाथ-स्पर्श व्यवहारभी-नही, चाहे शूद्र हो, या-महाशूद्र हो, जैनधर्म इख्तियार करना चाहे तो करसकते है, बशर्ते-कि-क्षत्रिय ब्राहमन और वैश्योसे अलग रहकर-सामील नही,-खानपानका व्यवहार-दुनयवी कारोबारके ताल्लुक है, और धर्म-इख्तियार करना-अपने दिली इरादेपर दार-मदार है.-अगर कोई शूद्र-या-महाशूद्र दुनियादार हो,-और गृहस्थहालतमें, जैनधर्म-पालना चाहे, तो-अपना अलग जैनमंदिर बनवाकर जिनमूर्त्तिकी पूजा करे, अलग पाठशाला बनवाकर धर्मपुस्तक वाचे पढे, धर्म-जो-शग्श माने उसका है, मोक्ष प्राप्तिमे कोई हरकत नही, दुनियादारीके व्यवहार मार्गमे-हरकत है,-जैनशास्त्रका फरमान क्या है? इसपर गौर करो,-विधिवादमे तीर्थंकर-गणधरोका हुकम क्या है? इसपर खयालकरो, विधिवाद सबको मंजुर होसकता है,-हरकेशीमुनि, मेतार्यमुनि, चित्तमुनि, और सभूतिमुनि, जैनमजहबपर एतकातरखनेवाले जैनमुनि हुवे, दुनियादारी हालतमे महाशूद्र थे, उन्होंने जैनमजहब इख्तियार कियाथा, मगर दुसरे जैनमुनियोंकी जमातसें-वे-अलग सफर करतेथे, और अलग भिक्षाको जातेथे,—

[संवत् १९८१ का-चौमासा-शहर थाना -]

(मुल्क-कोकन)

५ मौसिम गर्मी-खतम होनेपर जब बारीशका मौका करीब आया, महाराजने इससालका चरतारा-ब-जरीये नजुमके यहां थानेमें निकाला, जो बंबईसमाचार वगेरामें छपकर जाहिर हुवाथा, चौमासेके पेस्तर महाराजने जब शहर थानेसें दुसरी जगह जानेकी तयारी किई, थानेके श्रावकोंने अर्ज गुजारी, आपकी धर्मतालीमसें यहांपर-जो-प्राचीन जैनतीर्थ-सिद्धचक्रजीका शुरू हुवा है,-आपके रहनेसें-उसका काम जल्द होगा, इसलिये आप यहांही बारीश गुजारे और हमकों तालीमधर्मकी देवे, महाराजने उनकी अर्ज कबूलरखी और संवत् १९८१ की-बारीश शहर थानेमें गुजारी, व्याख्यानमें-सूत्र-आवश्यक-वृत्ति, और पृथ्वीचंद्रचरित वांचा, समाकसरतसें भरतीथी, कई श्रावक-श्राविका-बंबई और घाटकोपरसें-व्याख्यानसुननेकों-बजरीये रेलके थानेमें आतेथे, और व्याख्यानसुनकर अपने वतनकों जातेथे, पर्युषणके अर्सेमें निहायत उमदा जलसा हुवा, महाराजका जाना पुस्तककेलिये कईदफे शहर बंबईको होताथा, और शामकों वापिस थाने लोट आतेथे, चौमासेके दिनोंमें सबमुल्कोंमे बारीश अछी हुई-और सुकाल हुवा,-कई लोगोंने अपनी अच्छी राय-बजरीये खतके लिखी,—

६ बारीश खतम होनेपर कातिकसुदी पुनमकेरोज-शहर थानेमें-शेठ-फुलचंदजी-सामलदासजीके मकानपर जाकर महाराजने चौमासा बदला, शेठ-फुलचंदजी सामलदासजीने उसवख्त-मय-बेंडबाजा वगेरा जुलुसके पेशवाई किई, और महाराजकों-अपने मकानपर-लेगये,-वहां-जाकर महाराजने-व्याख्यान धर्मशास्त्रका दिया,-सभाकमरतसें-भरीथी, व्याख्यान खतम होनेपर-शेठ-फुलचंदजीकी तर्फसें-प्रभावना तक्सीम किईगई, और अपने घर स्वधर्मीवात्सल्यका

जिमन किया, उसीरोज दुफेरकों शहर थानेसें रवाना होकर महाराज-भाईखालेमे शत्रुंजयतीर्थके-चित्रपटकी जियारतकों गये, और वहासे शहर बंबईकों तशरीफ लेगये-टेशन-बोरी-बंदरपर उतरकर-कोटमे-लोकागछके उपाश्रयमें चंदरोज ठहरे, बंबईसे रवाना होकर चीचपोखली तशरीफ लाये, और जैनचालीमे चदरोज कयाम किया, चीचपोखलीसें दादर टेशन तशरीफ लेगये, और दादर टेशनसें-बी, बी, सी, आई, रेलमे सवार होकर शांताक्रूस-अंधेरी,-मलार,-वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे विरार टेशन उतरकर-अगासी-तीर्थकी जियारतकों गये,—

[तवारिख-तीर्थ-अगासी-मुल्क कोकन]

७ मुल्क कोकनमे-सोपारक-नगर-जो-जैनशास्त्रोंमे सुनतेहो, जहापर-श्रीपाल-राजा तशरिफ लायेथे,-एक पुराना शहरथा,-जिसकों आजकल नालासोपाला बोलतेहै,-नाला-और-सोपाला दोनों गाव नजीक नजीकमे होनेकी वजहसें-नालासोपाला-नाम-कहागया, और-वे-दोनों गांव इसवख्त अगासी गांवसें करीव-चार-मीलके फासलेपर आवाद है, करीव (१००) वर्सके पेस्तर सोपारक-नगरके-तालावमें-खोदकाम करते तीन-जिनमूर्त्तियें निकसी थी, एक-तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी की, दुसरी नेमिनाथजीकी, और तीसरी-सुपार्श्वनाथजीकी-ये-तीनोमूर्त्तियें उसवख्त-अगासी गावमे लाई गई, -उसअर्सेमे-शेठ-मोतीशाह-साकीन बंबईने यहा एक-वडा-आलिशान-जैनश्वेतांवरमंदिर तामीर करवाया,-मूर्त्ति-तीर्थंकर-मुनिसुव्रत-स्वामीकी-सवत् (१८९२) मे-बतौर मूलनायकके तख्तनशीन किई. उसवख्तसें अगासी तीर्थ मशहूर हुवा, गावके नामसें तीर्थ-का-नाम-अगासी पडा, यात्रीयोंकी आमद रफतसें तीर्थकी तरकी हुई, पेस्तर तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामीके शासनकालमे सोपारक नगर जैनतीर्थ मशहूर था,

८ अगासी गाव समुदरके-कनारे नसाहुवा-करीब आठ हजार मनुष्योंकी आबादीका एक कस्बा है,-बाजार छोटा और खानपानकी मामुली चीजें यहापर मिलती है,-तीर्थ-अगासीमे इसवख्त-कारखाना, धर्मशाला, मुनीम, गुमास्ते, नोकरचाकर, और पूजारी हमेशाकेलिये तैनात है, धर्मशाला छोटी बडी तीन, अवल मोतीशाह-शेठकी, दुसरी पचायती, और तीसरी बबईके जहोरीमंडलकी, इनमे यात्री-दिलचाहे वहां कयाम करे, कोई मुमानीयत नही, दो-सनेटेरीयम-सुरतके जैनश्वेतावर श्रावकोंकी तर्फसे बनेहुवे यहा मौजूद है,-अतराफ अगासी तीर्थके-कई-बाग, बगिचे, तरह तरहकी जडीबुटीयें, आम, अमरूद, नारीयल, केले, फनस और खरबुजे वगेरा पैदा होते है,-फुलोमे गुलाब, चपा, मोघरा, जासुस और सेवती वगेराके फुल पैदा होते हैं, और हमेशाकी पूजनमें चढाये जाते है,-हरसाल माघसुदी दशमीके रोज यहापर मेला भरताहै, और हजार-देढहजार यात्री जमाहोते हैं, उसरोज-बडी पूजा-और-स्वधर्मी-वात्सल्य वगेराका जलसा कियाजाता है-आबहवा यहाकी-उमदा, बबईके नजदीक ऐसा दुसरा जैनतीर्थ नही,—

सवत् (१९८१) के-मृगशीर-सुदी-पचमीकेरोज-महाराज-तीर्थ-अगासीमे-तशरीफ लाये,-आठरोज कयाम-किया, इसअर्सेमे-सूरीमत्रका यहापर जाप किया, दिवसके तीन बजेसे पाचबजेतक आयेगये शख्शोंके शाथ मजहबी बहेस करतेथे, शहर-बबई, पाटन, और दुसरे शहरोंसे कई-यात्री-इसतीर्थकी जियारतको आयेथे, महाराजके पास-मजहबी बहेसके लिये आतेथे,-और महाराज उनका-माकुल जवाब देतेथे,—

[तवारिख-तीर्थअगासीकी खतम हुई -]

९ अगासी तीर्थसें रवाना होकर विरारटेशनसें-व-सवारीरैल दादर-टेशनपर होतेहुवे-शहर थाना-तशरीफ लाये, और चदरोज-वहांपर-कयाम किया, पौषमहिनेमें दादरके श्रावकोंकी आर्जूसें दादर-तशरीफ लाये, कितान जैनमत-पताका-जो-शहर थानेके चौमासेमे वनाना-शुरू किईथी, यहांपर पुरी किई, माघसुदी एकमके-अर्सेमे-पेंण-बंदर, जिले कुलावेके श्रावक महाराजकी खिदमतमें आये और अर्ज गुजारी, आप हमारे पेंणवदरमे तशरीफ लावे, और-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी मूर्त्ति-एकमकानसे दुसरे मकानमे-वतौर परोणादाखल विधिके शाथ-जायेनशीन करे, महाराजने उनकी-अर्ज-मंजुर किई, और-व-मुकाम दादरसें-रैलमे सवारहोकर कल्यान-जकशन होतेहुवे-करजत-टेशन उतरे, वहासें अठारांह कोशके फासलेपर खुश्कीरास्ते-पेंण-वदरको तशरीफ लेगये, श्रावकोंने-मय-बेंडबाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाई किई,—

१० पेंण-बंदर समुंदरके कनारेपर वसाहुवा एक छोटासा-शहर है, एक जैनश्वेतांवर मंदिर-और मारवाडी श्रावकोंकी आवादी अछी है,-माघसुदी पचमीके रोज महाराजने कुंभस्थापना किई, नवग्रह, दशदिग्पालका विधिके शाथ आमंत्रण किया, पंचकल्याणिककी पूजा और जिनमंदिरमे अगी-रोशनी वगेरा जलसे हमेशा होते थे, माघसुदी-छठ-शुक्रवारके रोज महाराजने अपने चद्रस्वर चलते वख्त वर्द्धमानविद्या पढकर तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजकी-मूर्त्ति-वतौर परोणादाखल दुसरे मकानमे जायेनशीन किई, श्रावकोंने आठरोजतक जलसा और-नवकारसीका जिमन किया, ईर्दगिर्दके कई श्रावक ईसवख्त-पेंण-वदरमे आयेथे, माघसुदी अष्टमीके रोज वडी सभा हुई, महाराजने व्याख्यान धर्मशास्त्रका दिया, कई श्रावकोंने व्रतनियम ईख्तियार किये, पेंण-वदरके श्रावकोंने महाराजकी वडी खिदमत किई, पेंण वदरसें रवाना होकर महाराज-खुश्की रास्ते वापिस

करजत आये. और करजतटेशनसें रैलमे सवारहोकर कल्यानजकशन होते हुवे दादर-मुकामपर तशरीफ लाये,—

११ मुकाम दादरमे महाराज फाल्गुन, चैत,-और वैशाख महिनेकी अखीरतक ठहरे, दादरके जैनश्वेताम्बर-मंदिरका-जो-पुराना कोट-मरम्मत दरकार था, महाराजकी धर्मतालीमसें-श्रावकोंने उसकी मरम्मत करवाई, हिंदी ज्येष्टवदी एकमके रोज-महाराज-मुकाम दादरसे रैलमे सवारहोकर शहर थाना तशरीफ लेगये, और पांचरोज यहांपर कयाम किया, श्रावकोंको तालीमधर्मकी दिई, और शहर थानेसे वापिस दादर आये,—

१२ दादरसे संवत् (१९८२) के-हिंदी ज्येष्टवदी ग्यारसके रोज पुस्तककी तलाशीके लिये-सुरत, वडोदा वगेरा टेशनोंपर होते हुवे शहर अहमदाबाद तशरीफ लेगये, और टेशनपर धर्मशालामे ठहरे, किताब जैनमत पताकाके लिये-जो-दुसरे पुस्तकोंकी जरुरत थी,-तलाश किई, अहमदाबादसे बसवारी रेल-विरमगाम, लींमडी, वढवान, और बोला-जंकशन होते शिहोर टेशन तशरीफ लेगये,-शिहोरके श्रावकोंको मालुमहोनेसे कितनेक श्रावक और महाराजकी दुनियादारी हालतकी चाची वगेरा टेशनपर आये हुवे थे,-मिले,-और शहरमे चलनेकी अर्ज किई, महाराजने कहा, मे-ईसवख्त पुस्तककी तलाशीके लिये इधर आयाहुं,-ज्यादा ठहरनेका-मौका-नही, टेशनके सामने जैनश्वेताम्बर धर्मशालामे-कयाम-किया,—

१३ शिहोरमे अकसर जैनश्वेताम्बर श्रावकोंकी आबादीमे-ओशवाललोग ज्यादा है,-महाराज-खुद-भावनगरके बाशिंदे-विशा-ओशवाल थे, शिहोरके कई-रिस्तेदार-श्रावक-धर्मशालामे महाराजके दर्शनोंकों आये, और धर्मकी बातें पुछते रहे,-तीसरे रोज-महाराजकी दुनियादारी हालतकी चाचीने-अर्ज-गुजारी, आप शिहोरमे तशरीफ लाये है,-ईससाल यहांपर वारीश गुजारे और

हमको तालीम धर्मकी देवे-निहायत ऊमदा बात हो, मेरी ऊम्र-(८१) वर्सकी होगई, आपकों मेने लडकपनमे परवरीश कियेथे,-अब आप-हमको-धर्म-सुनावे, महाराजने ऊनकों धर्म-सुनाया, और कहा, दुनियामे-बदोलत धर्महीके-ईस जीवने सुखचैन पाया, और आइदे पायगा, दरअसल! सारवस्तु-दुनियामे धर्म है,-मे-ईसवख्त-एक-जैनमत-पताका-नामसे किताब बना रहाहुं, और ऊसमे नजुमशास्त्रकी बाते लिखनेके लिये पुस्तककी-तलाशीको ईधर आयाहु,-हाल यहापर बारीश गुजारनेका-मौका-नही, चौथे-रौज-शिहोर टेशनसे रैलमे सवारहोकर विरमगाम, अहमदाबाद, बडोदा, और सूरत बगेरा टेशनोपर होतेहुवे वापिस बबई आये, और चदरौज ठहरे, इनदिनोमे-जैनमत-पताका-किताबका-इश्तिहार छपवाया, और जाहिर किया.

१४ इस अर्सेमे-मुल्क मारवाड-जिले-शिरोही,-पाडीव वगेराके श्रावक-जिनकी दुकाने शहर बबईमे-है, ऊन्होंने आनकर-महाराजसे-अर्ज-गुजारी, आप-ईससाल-मुल्क-मारवाडमे-पधारे,-और-हमको तालीम धर्मकी देवे, महाराजने ऊनकी अर्ज मजुर किई,-और-मुल्क-मारवाड तर्फ जानेका ईरादा किया,-इनदिनोमे-सवत् (१९८२) की-सालका-वरतारा-बजरीये नजुमके निकाला, जो-नवई समाचार वगेरामे जाहिर हुवा था,—

[सवत् १९८२-का-चौमासा, मुकाम-जावाल, जिला-सिरोही-मुल्क मारवाड -]

१५ संवत् (१९८२) ज्येष्टसुदी बारस-गुरूवारके रौज-बबई कुलाबा टेशनसे रैलमे सवार होकर मुल्क मारवाडकी सफरके लिये रवाना हुवे, सुरत, बडोदा, अहमदाबाद, मेहसाना, वगेरा टेशनोंपर होते हुवे-पालनपुर-टेशनपर रौनक अफरोज हुवे, पालनपुर टेशनसे आगे-आबुरोड वगेरा टेशनोपर होते हुवे जब टेशन पिंडवाडेपर तशरीफ लाये, पिडवाडेके श्रावकोने पेशवाई किई, और

मय-बेंडवाजा-वगेरा जुलुसके शहरमे लेगये,-जिले शिरोही-मुल्क मारवाडमे पिंडवाडा-एक-छोटासा कस्वा है,-ईसमे-दो-जैनश्वेतांबर मदिर-श्रावकोकी आवादी-और एक-उमदा धर्मशाला वनीहुई है,-महाराजने उसम कयाम किया, ओर श्रावकोंको तालीमधर्मकी दिई, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा वाज-करतेथे, सभा-कमरतसे भरतीथी, दुफेरके गस्त-गेर-मजहबके पडितभी मजहवी बहेमकों आतेथे, और महागज-उनका-माकुल जवाव देतेथे, एकरोज महाराज-पिंडवाडेसे-दो-कोसके फासलेपर-तीर्थ-अजारीकी जियारतकों गये, अजारी गाव-पेस्तर वडाथा,-जमाने हालमे छोटा रहगया, ईसमे तीर्थंकर महावीर स्वामीका-एक-आलिशान जैनश्वेतावर मदिर वनाहुवा, ईसमे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति-करीव-दढहाथ वडी-वतौर मूलनायकके तख्तनशीन है,-महाराजने इस तीर्थकी जियारत किई, मदिरमे वेठकर सूरिमत्र और अपराजिता-महाविद्याका पाठ किया, मदिरकी परकम्माके पिछले पासे-एक-आलेमे-श्रुतदेवीकी-मूर्त्ति-जायेनशीन है,-तीर्थ-अजारीकी जियारत करके उसीरोज महाराज वापिस पिंडवाडा-तशरीफ लाये,—

१६ पिंडवाडेसें रवानाहोकर महाराज-तीर्थ-वमणवाडकी जियारतकों गये,-जो-खुश्कीरास्ते पाच मीलके फासलेपर वाके हैं,-गांवके नामसे तीर्थका नामभी-वमणवाड कहलाया,-एक छोटेसे पहाडकी तराईमे वमणवाड एक-स्थापना तीर्थ है,-छदमस्थ हालतमे तीर्थंकर महावीर स्वामीके कानोंमे-जो-गोवालियोंने-लकडेकी मेखे लगाईथी, और-एक-खरक-नामके वैद्यने निकालीथी,-यह-माजरा-मुल्क पूरवका है,-यहा उसकी स्थापना किई गई, छदमस्थहालतमे-तीर्थंकर महावीर स्वामी-मुल्क पूरवम सफर करते रहे, मुल्क मारवाडमें-तशरीफ नहीं लाये, देखो! कल्पसूत्रमे जहा तीर्थंकर महावीर स्वामीकी अतर वाचनाका वयान दर्ज है,-वहा लिखा है,-तीर्थंकर महावीर स्वामी-जब-एक-खणमानी-गांवके वाहर खडेहोकर

ध्यान करतेथे,-एक-गोवालिनेने उनके कानोंमें-दो-मेंरा-लकडेकी लगाई,-और-जब-वे-मध्यम अपापा नगरीकों तशरीफ लेगये वहांके वाशिंदे-एक-खरक-नामके वैद्यने निकाली,-दर असल यहबात मुल्क पूरवमें बनीथी,-यहां ऊनकी स्थापना किई गई है,-ऐसा जानो, यहां-बभणवाडमें-एक वडा आलिशान-बावनजिनालयका-मंदिर-मानींदेवविमानके बना हुवा है, और उसमे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी-मूर्त्ति-करीब (१) हाथबडी तख्तनशीन है,-जिसपर सचे-मोतीयोंका लेप लगाहुवा-दर्शन करके दिल खुश होगा, रंगमंडप और परकम्माके छोटे मदिरोमें-राजासंप्रतिकी तामीरकराई हुई-कई-मूर्त्तिये-जायेनशीन है,-तीर्थ-बंभणवाडके कारखानेमे मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर हमेशांकेलिये तैनात है,-धर्मशाला छोटी बडी तीन-अतराफ कोट खिंचा हुवा, नोबत खानेपर दिनमें चारदफे-चौघडीये बजते है,-जमाने हालमे तीर्थ-बभणवाडकी-जेरनिगरानी-सिरोहीके श्रावक रखते है,-महाराजने इस तीर्थकी जियारत किई, और मदिरमें बेठकर सूरिमंत्र-अपराजिता-महाविद्याका-जाप-किया, तीर्थक्षेत्रोंमें बीजअक्षरोंका और महाविद्याका पाठकरना निहायत फायदेमद होता है,—

१७ तीर्थ-बभणवाडकी जियारत करके आगे (९) मीलके फासलेपर खुश्की रास्ते जब महाराज मुकाम शिरोही तशरीफ लाये, शिरोहीके श्रावकोंको-मालुम हुवा, पेशवाईको आये, और तरहतरहके बाजे-धजा-पताका वगेरा लवाजमेके साथ पेशवाई किई, लोंका-गछके-उपाश्रयमे कयाम किया, श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिई, शिरोहीमे जैनश्वेताबर श्रावकोंके घर करीब (४००) और-बडे बडे आलिशान (१४) जैनश्वेताबर मदिर जिनमे चौमुखाजीका मंदिर चार-मंजील ऊचा, बुलदशिखरबद-निहायत उमदा बना हुवा है,-ऐसा सगीन मदिर शिवाय-शत्रुंजय गिरनारके दुसरी जगह-न-देखोगें, तीनरोजतक महाराजने शिरोहीमें व्याख्यान दिया, सभामे

(४००) श्रावक श्राविका-जमा होतेथे, कई विद्वान् महाराजके पास मजहबी बहेसकों आतेथे, और महाराज उनका माकुल जवाब देतेथे,—

१८ ईसअर्सेमे-शहर-जावालके श्रावक महाराजकी खिदमतमे हाजिर हुवे, और अपने शहरमे चलनेकी अर्ज किई, महाराजने उनकी अर्ज कुबुल रखी, और हिंदी आषाढवदी त्रयोदशी शुक्रवारके रौज शिरोहीसें रवानाहोकर महाराज जावाल तशरीफ लेगये,-जो-खुश्की-रास्ते करीब पाच कोसके फासलेपर वाके है,-जावालके श्रावकोंने-भय-बेंडवाजा और धजा पताका वगेरा लवाजमेके पेशवाई किई, और शहरमे लेगये, जावाल-एक-छोटासा शहर-मगर सब्जदार, चार जैनश्वेतांवर मंदिर और करीब (२००) घर श्रावकोंके यहापर आबाद है,-मुनिजनोंकों ठहरनेके लिये-दो-मकान यहा बने हुवे मौजूद है, महाराजने धर्मशालामे अपना कयाम रखा, और दुसरे रौज व्याख्यान धर्मशास्त्रका देना शुरू किया, बारीशके दिन करीब-थे,-श्रावकोंने अर्ज गुजारी, महाराजने जावालमे बारीश गुजारनेका इरादा कायम किया, धर्म-अधिकारमे सूत्र-आवश्यक वृत्ति, और भावना-अधिकारमे शातिनाथचरित वाचतेथे,—

१९ ईस अर्सेमे मुकाम कालिंदरी, पाडीव, बलदुट, मडवारिया, देलदर,-वराडा, गोहिली, सियाणा, वागरा, मणोरा, और मोटा गाव, वगेराके-कई श्रावक-महाराजके दर्शनोंकों आये, प्रभावना-और-स्वधर्मी-वात्सल्यम-अपनी दौलत सर्फ किई, जावाल, कालिंदरी, बलदुट-मडवारिया, और देलदरके-जैन-श्वेतांवर श्रावक-आरामतलब है,-इनकी-आमदनीका जरीया-बम्बई, पुना, दख्खन, मद्रास, और कर्णाटक-है,-पर्युषण पर्व-निहायत उमदा तौरसे बतौर हुवे, सभाका मकान खुब सजाया गयाथा, हाडी, तख्ते, गालीचे, तस्वीर और चंदोयेसें झलाझल रोशनी छा रहीथी,-व्याख्यान सभामे-कल्पसूत्र-बतौरके शास्त्र वाचागया, और सब श्रावकोंने सुना,

चांदीके बने हुवे चौदहस्वप्ने-व्याख्यान सभामे ऊतार्ये गये, सोने-चांदीके बने हुवे-तीन-पालने अलग अलग बोली-बोलकर श्रावक-लोग अपने अपने-घर-लेगये, और तीर्थंकरदेवोकी इज्जत किई, तरह तरहके बाजे-धजा-पताका,-चंद्रमुखी,-सूर्यमुखी,-छडी,-चमर वगेरा लवाजमेके शाथ जलसा किया, जैनपाठशालाके लडकोंने जन्म-अधिकारके वख्त प्रार्थना बोली, और व्याख्यान सभाका-इंतजाम अछारखा, जिससे कोई-शोर-गुल-करने नही पाता था, तपश्चर्या-ईससाल मुताबिक जमानेके अछी हुई, एकमास क्षमण, सोलह उपवास,-दश-उपवास, और-आठ उपवास-तीन शख्शोंने कियेथे,-छठ-अठम-कई श्रावकोंने किये, चैत्यपरिपाटीका जलसा उमदा हुवा, और श्रावकोंकी-सेवा-भक्ति लाईक तारीफके रही, प्रभावना-सात सात-आठ आठ-शख्शोकी तर्फसे तकसीम होती थी, और उनमे मोतीचूरके लाडु-बतासे और बादाम वगेरा चीजे बाटी जातीथी, जावालके श्रावकोंने महाराजकी खिदमत उमदा तौरसे किई,-चौमासा-खतम होनेपर आया, मगर व्याख्यान सभा कसरतसेंही-भरती रही, कई शहरोमे-बाद पर्यूषणके व्याख्यान सभा-कम-होजायाकरती है,-मगर यहापर अखीरतक-वही-जमाव रहा,-जो-शुरूमें-था,—

२० कई-जिज्ञासु लोग आते जाते थे,-और धर्मके बारेमे सवाल जवाब होतेथे,-उनमेसे-चंद-सवालात यहा दिये जाते है, सुनिये! कईयोंका कहना होताथा, धर्मधुर्म-उठ गया, दोजक-जन्नत-कुछभी नही, खाना-पीना और ऐशकरना यही मुनासिब है,-मगर यह बात बेहत्तर नही,-धर्म-हमेशा बना रहने वाला है,-वो-कभी-उठता नही,-दोजक जन्नतभी-मौजूद है,-धर्म-बन सकता नही, ईसलिये कहनेवाले कह देते है,-धर्म-धुर्म-उठगया, कई सवाल कर्ता,-ईसतेह॰ रीरकोभी-आगे लातेथे,-मुर्गी-पहले-था-इंडा पहले पैदा हुवा, ? जवाबमे कहा जाताथा,-बिदून मुर्गीके इडा नही, और

विदून इडेके सुर्धी नहीं, जैसे विना दिनके रात नहीं, और विना-रातके दिन नही, वगेर मर्दके औरत नही, और वगेर औरतके मर्द नहीं,-मजकुर वाते एकके विदून दुसरी अपने आप नहीं होसकती,-ईसी तरह-सुर्धी-और इडा-एकके विदून एक पैदा नहीं होसकता,-ईसलिये-दोंनोंका होना कदीमसें है,—

२१ कई-सवालकर्त्ता कहतेथे,-आजकल दुनियामें करामात क्यों -नहीं रही ? पेस्तर केवलज्ञान मौजूद था-तो-अब-मामुली ज्ञान-तो-होना चाहिये,-जवानमे कहाजाता था, जमाने हालमे-केवल-ज्ञान-नहीं-रहा, लेकिन ! मतिज्ञान-श्रुतज्ञान-वो-मौजूद है,-बजरीये नजुमके अवभी-सुकाल दुकालका होना माल्म हो सकता है, नजुमीलोग जमीनपर वेठे हुवे-अपने इल्मके जोरसें कहसकते हैं, फलां रोज-आसानमे ग्रहण-लगेगा,-अब करामातकी बात सुनो,-दर असल ! यह बात-आलादर्जेकी-तकदीरके ताल्लुक है, फर्ज करो ! अपना दिल अपने काबुमे नहीं,-तो-फरिस्ते काबुमें कैसे होसकेगें ? हाजरात, मेस्मेरीझम, हिप्नोटिझम, वगेरा करने-वाले अवभी-मौजूद है,-कइ सवालकर्त्ता-ईसमज मूनकों पेश करतेथे,-दुनियामें तरह तरहके मजहब-कायम आरास्ता हैं,-किसे सचा मानना चाहिये ?-जवानमे कहा जाताथा-मजहबकी पावर्दामे तलाश करनाहो-पेस्तर ईल्म हासिल करो ?-अगर ईल्म हासिल होमके नही, और कोरीबाते बनना हो,-चाहे जितनी बनालो,-शास्त्रोंकी-बातोंकों-न-मानना-जो-तीर्थंकरोंके कलाम है, और अगरचे ! किसी-गेर-मुल्कसें अपनेलिये खुशखबरी-या-रजके पेंगाम आ-जाय-तो-उसकों सच-मानकर-गम-या-खुशीमें मशगूल होजाना,-बतलाईये ! ईसकी क्या वजह है ? शास्त्रोंकी बाते माननेमे तरह तरहके बहाने और अपने मतलबकी बात मानलेनेमे कोई-बहाना नहीं, क्या ? खूब बात है !—

२२ कई सवालकर्त्ता सवाल करतेथे,-क्षत्रीय, ब्राहमन, वैश्य, और शुद्र-ये-चारभेद-क्यो! होने चाहिये ? जवानमे कहाजाताथा, ईससे धर्मकी हिफाजत होती है,-और मर्यादा कायम रहती है,-हिंदमे-पेस्तर तीर्थंकर गणधर हुवे, जिन्होंने धर्मको तरकी दिई, चक्रवर्त्ती-और वासुदेव वगेरा राजे महाराजे हुवे, जिन्होंने धर्मकी हिफाजत किई, और वर्णाश्रम कायम रखा, चुनाचे! ईनदिनोमे-धर्म-पतला पडता जाता है, ईन्सानोकी पुन्यवानी कम होगई, मूर्त्तिपूजा-कबुल-रखनेमे-कईयोंके दिलमे-शक-पैदा होता है,-स्पर्शास्पर्शका खयाल कम होता जाता है, ईस हालतमे-वर्णाश्रमका रवाजभी अगर-कम-होजाय-तो-कोई ताज्जुब नही, मगर धर्मपावंद शख्श धर्मपर साबीतकदम रहते चले आये,-रहते है, और आईंदे-भी-रहेगें,—

२३ जावालका चौमासा खतम करके-महाराज हिंदी-मृगशीर वदी सप्तमी शनिवार, तारिख (७) नवंबर सन (१९२५) के रौज कस्बे बलदुटमे तशरीफ लाये, श्रावकोने पेंशवाई किई, दरम-यानी-सारनेश्वरजीके-मदिरतक-श्रावक श्राविका-मय-देशीराजे व-गेरा लवाजमेके सामने आयेथे, महाराजने जैन धर्मशालामे कयाम फरमाया, और लोगोंको तालीमधर्मकी दिई, तीनरोज कस्बे बल-दुटमे कयाम किया, व्याख्यान सभा अछी भरतीथी, दुसरे मजहबके विद्वान् लोगभी-व्याख्यान धर्मशास्त्रके सुननेकों आतेथे, और मजहबी-बहेस होतीथी, बलदुटकी मर्दुम शुमारी-करीब (२०००) मनुष्योंकी-और-जैनश्वेतावर-श्रावकोंके घर यहा अदाज (१००) आवाद है,-दो-जैनश्वेतावर मदिर आलिशान शिखरबंद-शंगे मर-मरके बनेहुवे काबिलेदीद है,-बडे मदिरमे तीर्थंकर शांतिनाथ म-हाराजकी-मूर्त्ति-राजासप्रतिकी तामीर करवाई हुई तख्तनशीन है,-मंदिरका फर्स-शंगे मरमरका बनाहुवा निहायत उमदा, जैनमुनि-

योंको कयाम करनेके लिये-दो-मकान, एक जैन धर्मशाला, दुसरी जैन पाठशाला,-यहापर बनीहुई है, जहा दिलचाहे-कयामकरे,—

२४-कस्बे बलदुटसे रवाना होकर-मृगसीरबदी दसमीके रौज-महाराज-गाव-मंडवारिया तशरीफ लाये, बलदुटसे करीब-एक-मीलके फासलेपर-मटनारिया एक अछा मौजा है,-इसकी मर्दुम शुमारी करीब (१०००) मनुष्योकी, जैनश्वेताबर श्रावकोंके घर-अदाज (५०) और-दो-जैनश्वेताबरमदिर बडे कीमती बने हुवे, जिनमे-एक-पुराना, दुसरा नया,-नयामदिर-जमीनसे लगाकर-शिखरके-कलशतक शगे-मरमरका बनाहुवा-करीब-दो-लाखरुपयोंकी लागतका निहायत खूबसुरत है,-तीन-शिखर, और रगमडप बहारकी चौकीयें, दरवजे और उनपर जाली-झरोखे, उमदा बने हुवे है,-बगिचा-एक जिसमे-गुलाब, चमेली-मोघरा वगेराके फुल पैदा होते है,-और-हमेशा जिनपूजामे चढाये जाते है,-जैन पाठशाला-एक-जिसमे-जैनोके लडके इल्म पढरहे है,-उमदा तौरसें चलती है,-महाराज-जब-गाव-मडवारियेमे तशरीफ लाये,-श्रावकोंने पेशवाई किई,-महाराज पाचरौज मडवारियेमे ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे, और सभाकमरतसें भरतीथी, मडवारियेसे एक मीलके फासलेपर देलदर कस्बा आबाद है,-इसकी मर्दुम शुमारी करीब (८००) मनुष्योंकी-श्रावकोके-घर-अदाज (६०) और एक जैन श्वेतांबर मदिर शिखरबद बनाहुवा है,-देलदरसे एक-मीलके फासलेपर-बराडा-एक छोटासा गाव है,-श्रावकोकी आबादी और एक-जैन श्वेताबर मदिर यहा परभी तामीर है, बराडेसे उत्तरतर्फ मणोरा गाव-जिसमे श्रावकोंकी आबादी और-दो जैन श्वेताबर मंदिर बने हुवे है,-मणोरेसे आगे एक मीलके फासलेपर भूतगाव और-वहांसे मीलभर आगे-जामोतरा-गाव, जिसमे एक छोटासा मदिर और पांचसात घर श्रावकोंके आबाद है,-

२५-कस्बे मडवारियेसे-मगसीर सुदी एकमके रौज रवानाहोकर

शिरोहीके रास्ते-तीर्थ-बभणवाड आये और तीर्थकी जियारत किइ, बभणवाडसे रवाना होकर पिंडवाडा तशरीफ लाये, और वहापर आठरौज कयाम किया, पिंडवाडेसे-बसवारीरैल-तीर्थ-आबुजीकी जियारतके लिये आबुरोड टेशन उतरे, आबुरोडका दुसरानाम खरेडी बोलते है,-खरेडी गांवकी मर्दुम शुमारी करीबन (१००००) दस हजार मनुष्योकी, राज्य-शिरोही महाराजका-बाजार-अछा, जिस-चीजकी दरकारहो-मिलसकेगी,-डाकखाना, तारओफिस, अस्पताल और स्कुल-वगेरा मकानात बने हुवे है,-यहांपर जैन श्वेतांबर धर्म-शाला, और एक-छोटासा-जैन श्वेताबर-मंदिर बना हुवा है,-तीर्थं-कर रिषभदेव-महाराजकी-मूर्त्ति-बतोर मूलनायकके इसमे तख्तन शीन है,-मृगसीर सुदी नवमीके रौज महाराज-खरेडी कस्बेमे तश-रीफ-लाये, और जैन श्वेताबर धर्मशालामे कयाम किया,-खरेडीसें आबु पहाडपर जानेके लिये-सवारी मोटार-वगेरा मिलती है,-

२६-मृगसीर सुदी दसमीके रौज महाराज-आबु पहाडपर-तीर्थ-की-जियारतको गये,-और देलवाडेकी जैनश्वेतांबर धर्मशालामें कयाम किया, मुल्क पंजाब और गुजरातके यात्रीभी-तीर्थ-आबु-जीकी जियारतकों आये हुवे थे मिले, ओर धर्मचर्चा-होती रही,-आबुके जैनमंदिरोंकी जियारत किइ,-श्रीयुत दुलिचंदजी पाला-वत-साकीन अलवर-जो-हाल-तीर्थ आबु-देलवाडा जैन मंदिरके कारखानेपर-मेनेजर है, मिले-और-तमाम-जैन मंदिरोंमे शाथ फिरकर सबपुरानी-कारीगिरी और-निशानात दिखाये,-बेशक ! इसवख्त यहाके जैन मंदिरोंका-काम-तरक्कीपर है,-महाराजने आ-बुके जैन मंदिरोकी तवारिख यहापर लिखी, आबुके जैन मंदिरोंकी कारीगीरी आलादर्जेकी इसमे कोई-शक-नही,-आबुके जैन मंदि-रोंकी जियारत करके महाराज आबुरोड-टेशनकी जैन धर्मशालामे आये, ओर रैलमे सवारहोकर पालनपुर, महेसाना वगेरा टेशनोपर होते हुवे अहमदाबाद टेशनपर तशरीफ लाये, और टेशनके सामने

धर्मशालामें एक रोज कयाम किया, पुस्तकके लिये तलाश करनाथा- सो-किइ, अहमदाबादसें-ब-सवारी रेल-बरोदा, सुरत, बलसाड, और पालघर वगेरा टेशनोंपर होते हुवे-मृगसीर सुदी पुनमके रोज बबई तशरीफ लाये, और मुकाम-दादर जैन श्वेतांबर मंदिरके पास कयाम किया,-मुकाम जालना लका चौमासा-करके शहर बबईतक आनेकी हकीकत इस तरह बयान किई गइ,-

[बयान जैनफिलोसोफी]

जैनफिलोसोफीमें जैनमजहबके उसूल, जैनमुनि, जैनसाध्वी और श्रावक श्राविकाकेलिये जैनशास्त्रके फरमान, विधिवादमें तीर्थंकरोके हुकम, चरितानुवादमें किस्से कहानी, यथास्थितवादमें कदीमी चिजोंका बयान काबिलेदीद हैं-बयान जैनोंके तहवार, वुत्पत्ति, वादी प्रतिवादीको मजहबी बहेस करनेकी तरकीब, और देवद्रव्यकी हिफाजत करनेके बयानमें तेहरीर है,—

[उसूल जैनमजहब,]

१ जैनमजहबमें रागद्वेष वगेरा अठाराह दोषोसे निहायतपाक जिनेंद्रदेवको देवतरीके माने गये है,-जयति रागद्वेषादिशत्रून् इति जिन.- जिनाना इद मत जैनमत, रागद्वेष वगेरा गनीमोसे फतेह पावे उनका नाम जिन और उन्होका फरमाया हुवा मजहब जैनमजहब है, दुनयवीकारो बारस फरोक्त होकर दीक्षा इख्तियार करे, और सत्यधर्मकी तालीमदे उनका नाम जैनमजहबमें गुरू है,-सर्वज्ञोका फरमाया हुवा अहिंसामय जैनमजहबमें धर्म मानागया है, सर्वज्ञ कहो, जिन कहो, तीर्थंकर या अर्हन् कहो, सबका मतलब एकही है,—

२ रुहोंकी कत्लबाजीसे परहेज करना, सच बोलना, वगेर हुकम किसीकी चिज नही लेना, पराई औरत, या वेश्यासे परहेज करना, अपनी पाई हुई दौलतमें सबरकरना, रातके वख्त खानपान नही

करना,-और धर्मपर कामील एतकात बने रहना, तमाम जैनोंका फर्ज है,-साधु साधवी,-श्रावक श्राविका इन चारोंको जैनमजहबमे संघ कहते है,—

३ दुनिया कदीमसे है,-जो शख्श जैसी करनी करेगा,-वैसा फल पायगा,-दुनिया ईश्वरने बनाई या जीवोंकेकियेहुवे गुन्होंका फल ईश्वर देता है, ऐसा जैनलोग नही मानते, कियेहुवे कर्म खुद बखुद फल देते है, ईश्वर ईनके बीचमे क्यों आवे? शराब पिनेसें जैसे पिनेवाला गाफिल होता है अपने किये हुवे कर्म अपनकों आराम और तकलीफ देते है,-इसमे किसीकी सरारत नही,—

४ जैनमजहबमे द्वादशाग बानीके ग्यारह अग शास्त्र, बारह उपागशास्त्र, छह छेद ग्रथ,-चार मूलसूत्र, दशप्रकीर्णक सूत्र,-नदीसूत्र, और अनुयोगद्वारसूत्र, ये पैतालिश शास्त्र जैनागमतरीके मानेगये है,—

५ जैनमजहबमे बहिस्त और दोजक, इन्सान और जानवर-ये-चारदर्जे मजुरक्खे गये है,-इनको च-तरीके शास्त्र समजे, चांद सूर्य ग्रह नक्षत्र और सितारे जो आसमानमे दिखाई देरहेहै,-देवतोंके रहनेके मकान है, जिनकों बहिस्त बोलते है,-नरक जमीनके नीचेको है, और उसकों दोजक कहते है, इन्सान और जानवर जो दुनियामे नजरके सामने दिखाई देरहे है,-आमको रोशन है,—

६ जैन मजहबमे बुतपरस्ति मानी गइ है,-और तीर्थोंकी जियारत जाना बहेत्तर समजा गया है, जैनमजहबमे जिनेंद्रदेव, सिद्ध भगवान्, आचार्य, उपाध्याय, साधु, श्रद्धा, ज्ञान, चारित्र, और तप ये नवपद काबिले गौर है,-तकदीर और तदबीरमे तकदीर-जुबरदस्त है,-तदबीर बेकार जाती है, मगर तकदीर फल दिखाती है, जिसकी तकदीर बुलद उसको बिदुन तदबीर किये घर बैठे चिज मिलजाती है,-सबुत हुवा, अकेली तकदीर फल देसकती है,-तकदीरके सामने तदबीर कोइ चीज नही,—

१३ पापकरनेसे पेस्तर जिस शख्शका दिल पापकरनेका न हो, पापकरते वख्त भी उस पापकर्मको बुरा समजे और कियेबाद भी दिलमे पश्चत्ताप करे तो उसकामसें उसको निकाचित कर्म न बंध-सकेंगे, कर्म बांधनेमे रस डालनेवाला मन है, जब मन उसमे आशक्त नही तो निकाचित कर्म कैसे बंधे, प्रकृति बंध और प्रदेशबंध जबतक उसमे स्थितिबंध और रसबंध पडा नही तो फल कैसे दे सकेंगे, जो माल खरीदा नही, वो अपना नही,-ईस बातकों समजलेना चाहिये,—

१४ दुनियाम जीव तीनतरहके फरमाये, महावीर्य, मध्यवीर्य, और अल्पवीर्य, इनमे महावीर्य शख्श हिम्मतबहादूर होते है,-चाहे कोई साधुहो या दुनियादारहो, हिंमतबहादूर होना उमदातकदीरके ताल्लुक है, मध्यवीर्य शख्श दोयम दर्जेपर और अल्पवीर्य शख्श आखरी दर्जेपर है,-अल्पवीर्य शख्श नाहिम्मत होनेसे न धर्मके काम करसकता है,-न दुनयवी कारोबारमेंभी कुछ कर सकता, कितनेक शख्श दोलत चली जानेपर दिलसे कमजोर होकर फिक्रमे डुबजाते है, मगर महावीर्य शख्श इसतरह कमजोर कभी नही होता, पुन्यके उदयसें दिलके इरादे सुधरते है और पापके उदयसें दिलके इरादे बिगडते है,-इसीलिये कहागया पूर्वकृतकर्मके उदयानुसार जीव किया करता है,—

[तीर्थंकर महावीरस्वामीके पास आनंद कामदेववगेरा श्रावकोंने जैनमजहब इख्तियार किया,-]

१५ जैनमजहबमे चौईस तीर्थंकर नायबधर्म हुवे, उनमे अवलतीर्थंकर रिषभदेव और अखीरके तीर्थंकर महावीर हुवे, तीर्थंकर महावीरने बहुतअर्सेतक-तप किया, बडी बडी मुसीबतें उठाई और अखीरमे-तीर्थ-पावापुरीमे मुक्ति पाई, जिसको आज करीब (२४५१) वर्सका अर्सा गुजरा है,—

१६ मुल्क मगधमें वाणिज्यग्राम नामका एक रवनकदार कस्बाथा, इर्दगिर्द इसके इसकदर वागवगिचे बनेहुनेथे. जहा पहाडोंकी कद-रामे-साधुलोग-ध्यान-समाधि करते थे, उस वाणिज्यग्राम कस्बेमे एक आनद नामका श्रावक वसता था, और उसकी औरतका नाम-शिवादेवी जो-बडी-धर्मपाबद थी,-आनद श्रावककी दौलतका-शुमार किया जाय-तो-उसके पास (१२) करोड सोनैये थे, पेस्त-रके जमानेमे-हिंदमे दौलत बेशुमार-थी,-आज-दुसरे मुल्कोमे दौ-लत ज्यादा है, धुप-छाव-इसीका नाम है-एकराजकी वातहै, वा-णिज्य गाममे-तीर्थंकर महावीरस्वामी तशरीफ लाये,-और गावके वहार एक बगिचेमे कयाम फरमाया,-आनद श्रावक उनकी कदम-बोसीको गया, और उनका व्याख्यान सुनकर खुश हुवा,-उनके कदमोमे गिरकर अर्ज गुजारी मै-आर्हत-प्रवचनकों इख्तियार करना चाहताहु, रागद्वेष वगेरा अष्टादश दोषोंसे रहित-अरिहतदेवको-देवतरीके मानुगा, उनकी मूर्त्तिको-वदन-नमन-और पूजन करू-गा,-निर्ग्रंथ-जैनमुनिकों गुरुतरीके मानुगा, और अरिहत प्रणीत-धर्मको मंजुर रखुंगा,-इसका ज्यादा बयान उपाशक-दशागसूत्रमे तेहरीरहै,-यहा-वराये नाम-लिखा गया है,-किसी-त्रसजीवोंको-वे गुनाह-कतल-न-करुगा,-झुठ-न वोलुगा, वगेर दिये किसीकी चीजपर अपना इख्तियार न-जमाऊगा,-पराई औरतसे परहेज करूं-गा, अपनी दौलतमे-सबररखुगा. रातको खानपान-न-करुगा,-चौदहनियम हमेशा इख्तियार करुगा,-अनर्थ दडके कामोसे बचाव रखुंगा , सामायिक-देशावकाशिकव्रत-और अतिथिसविभागव्रत करुगा, विना-मरजी-कोर्टकाम-जवरदस्तिसे करना पडे-इसमे अमरलाचारीका है,-मेरा-नियम-न-टुटेगा, इसकदर छुट रखकर-आनद श्रावकने-मुताबिक अपनी ताकातके व्रत-नियम-इख्तियार किये,-आनंद श्रावककी-औरतनेभी इसी तरह व्रत-नियम लिये, सचे देव-सचे गुरु-और सचे धर्मपर-सावीत कदम होना, इन्सानका

फर्ज है, दरअसल ! मार वस्तु-दुनियामे धर्म है,-आनद श्रावकने चौंदह-वर्सतक-धर्म-पालन किया और-अखीरमे-अपनी-उम्र-खत महोनेपर बहिस्तको गया,-आजकल-कितनेक जैनश्वेतावर-श्रावक-धर्मका-पालन-करसकते नही, और कोरी बाते बनाते है,—

१७ जब तीर्थंकर महावीर स्वामी-चपा नगरीमे तशरीफ लेगये, चपानगरीके रहनेवाले-कामदेव-नामके-श्रावकने-उनके पास जैन मजहब-इख्तियार किया, और आनद श्रावककी तरह मुताबिक अपनी ताकतके-व्रत-नियम-लिये,-उसके खजानेम (१८) करोड-सोनैये थे, एकरौज-वो-अपने मकानमे-बेठा हुवा,-धर्मध्यान करताथा, बहिस्तसे-एक-देवतेने आनकर उसे डराया, और-कई तरहकी-बाते-बनाने-लगा, मगर कामदेव श्रावक बिल्कुल डरा नही, अपने ध्यानम सावीत रहा, देवता वापिस चलागया, धर्मपावद शख्शहो-तो-ऐसेहो जो-तकलीफमे भी-धर्मको-सलामत रखे, कामदेव श्रावक-अपनी-उम्रखतमहोनेपर-इतकाल होकर बहिस्तको गया, बनारसी नगरीके रहनेवाले-चुलिनीपिया नामके श्रावकने तीर्थंकर महावीर स्वामीकी धर्म तालीम पाकर जैनमजहब इख्तियार किया, इसके पास (२४) करोड सोनैये थे,-एकरौज-वो-अपने मकानमे धर्मध्यान करता था, एक देवतेने उसके सामने आकर इन्तिहान लिया, और कहनेलगा,-तु-अपना-मजहब छोडदे,-वरना ! तुजको और तेरे खानदानको जानसे मार दुगा, मगर चुलिनी पिया श्रावकने अपना धर्म नही छोडा, अपनी उम्र-सुखचैनम बतीत किई,-ओर इतकाल होकर बहिस्तको गया,

१८ इसी बनारसी नगरीके-सुरदेव-नामके श्रावकनेभी तीर्थंकर महावीर स्वामीकी धर्मतालीम पाकर जैनधर्म-इख्तियार किया, इसके पास (१८) करोड सोनैये थे, एकरोज-वो-अपने मकानम बठाहुवा-धर्मध्यान करता था, एक देवतेने आनकर उसको धमकी दिइ, और धम-छुडानेकी-कोशीश किई, मगर-वो-अपने धर्मपर

सावीत कदम रहा,—उम्र खतम होनेपर इंतकाल होकर बहिस्तकों गया, आलभिका नगरीके रहनेवाले चूलशतक नामके श्रावकने तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीम पाकर जैनमजहब इख्तियार किया, इसके खजानेमे (१८) करोड—सोनैये थे, एक देवतेने इसकोंभी—तकलीफ—दिई,—मगर—वो—अपने धर्ममे निहायत पाबद रहा, और अखीरमे—उम्र—खतम होनेपर बहिस्तकों गया,—कपिलपुर—नगरके बाशिंदे—कुंडकोलिक—नामके श्रावकने—तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीम पाकर जैनमजहब इख्तियार किया, उसके—खजानेमे (१८) करोड सोनैये—थे, एक वख्तकी बात ई,—वो—अपने मकानमे ईबादत करताथा, देवताने आनकर कहा,—तू !—गोशालेका मजहब इख्तियार कर, मगर उसने अपने जैनमजहबको छोडा नही, जब—अपनी उम्र—खतम—हुई, इंतकाल होकर बहिस्तकों गया,—

१९ पोलासपुर नगरके रहनेवाले—शकडालपुत्र—श्रावकने तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीम पाकर जैनधर्म—इख्तियार किया, शकडालपुत्र—श्रावक पेस्तर गोशाले मंखलीपुत्रके मजहबको—माननेवाला था, जब तीर्थंकर महावीर—वहा तशरीफ लाये शकडालपुत्र—उनके व्याख्यान सुननेको आया, और उनकी धर्मतालीम पाकर जैनमजहबपर एतकात लाया, उसके खजानेमे (३) करोड सोनैये थे, उम्रभर धर्म—किया, और इतकाल होकर बहिस्तको गया, राजगृही—नगरीके—रहनेवाले महाशतकनेभी—तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीम पाकर जैनधर्म—मजुर किया था, और इसके खजानेमे (२४) करोड सोनैये थे, इसकेधर इसकी (१३) औरते थी, उनमे एक—रेवती—नामकी औरतने—ऐसा—मनसुबा किया,—मेरी—शोकोको दगादेकर—मेही—अकेली—अपने खाविंदसे आराम—चैन करूं, अखीरमे उसने ऐसाही किया, अधर्मपावद शख्श—चाहे—कोई—औरत—हो—या—मर्द,—अपने किये हुवे गुन्होसे दोजक—पाते है,—महाशतक—अपनी औरतकों सख्त—कलाम कहकर मजहबी हिदायत करता था,—मगर—अधर्मीको—

धर्मका-असर होना-दुसवार है,-तावे उम्र उसने अपने बुरे इरादों-कों-छोडा नही,-महाशतक श्रावक निहायत धर्मपावद था, अपने कामीलएतकातमे कभी-खलल-नही डालता था और जब-उम्र-ख तमहुई-इतकाल होकर बहिस्तकों गया, सावथ्थी-नगरीके रहनेवा ले-नदनीपिया-नामके श्रावकने तीर्थंकर महावीरकी-धर्मतालीम पाकर-जैनमजहब इख्तियार किया, और उसके खजानेम (१२) करोड-सोनैये थे, तावेउम्र-उसने-धर्म-किया, और उम्र खतम होनेपर इतकाल होकर बहिस्तकों गया, इसी सावथ्थी-नगरीके रहनेवाले-शालिनीप्रिया-नामके श्रावकनेभी-तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीम पाकर जैनमजहब इख्तियार किया था,-तावेउम्र-उसने धर्म-किया,-और अखीरमे-उम्र-खतम होनेपर-इतकाल होकर बहिस्तकों गया, र० २०-राजगृही-नगरीका रहनेवाला-सुदर्शनशेठ-धर्मपर इसकदर पावद था, जो-अपनी-जानकीभी-परवाह-न-करके तीर्थंकर महावीर स्वामीके दर्शनोकों गया, राजगृही-नगरी-और-गुण शिलवन बगिचेके-बीचएक-अर्जुनमाली-नामका-शख्श-जिसके श रीरमे यक्षदेवता-घुमकर उसकों गुस्सेवाला बनादिया था, रास्तेमे जाते जाते लोगोंकों तकलीफ देता था, और उसीके खौफसे लोग-उसरास्ते-जातेआते नही थे, तीर्थंकर महावीरस्वामी-राजगृही नगरीके बहार उसीरास्ते ठहरे हुवे थ, सुदर्शन-शेठ-तीर्थंकर महावीरके दर्शनोंको गया, रास्तेमे अर्जुनमाली मिला, और सुदर्शनशेठसे देखकर उसका गुस्सा-उतर गया, उनकी सोवतसे धर्मपावद बना, धर्मपावद-हो-तो-सुदर्शनशेठ-जैसे हो, आजकल कितनेक-श्रावक-गर्मीयोके दिनोंमे अगर तीर्थोंकी जियारत जानाहो,-तो-कहगे सख्त गर्मीके दिन है,-और-अगर किसीकी बरातमे जानाहो-तो-खुश होकर जायगें, पेस्तरके जमानेमे-जब-चक्रवर्त्ती,-बलदेव,-माडलिक वगेरा राजेमहाराजे मौजूद थे, दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार कर तेथे, और अपना परलोकका रास्ता साफ-करते थे, दिवान, नाय-

वदिवान, शेठ, साहुकार और दौलतमदशख्शभी दीक्षा इख्तियार करते थे, आजकल-कितनेक श्रावक-दीक्षा-लेसकते नही, श्रावक-धर्मके-बारह-व्रतभी इख्तियार करते नही, और कहते है,-हमको आत्मज्ञान होगया है,-हम-अध्यात्मज्ञानी है,-हम-धर्मक्रियामे शिथिल-आचारवाले-मुनिजनोको मानते नही,-इन्साफ कहताहै, जैन-मुनिभी-ऐसे व्रतनियमरहित-कम-श्रद्धावाले श्रावकको-श्रावकतरीके कब मानते है,-१

जैनमुनि-और जैन साध्वीकेलिये-जैनशास्त्रका फरमान-१

२१ जैनमुनिको-और जैनसाध्वीको-पचमहाव्रत-पालन-करना, और-दुनियादारोंको सत्यधर्मकी तालीम देना-फर्ज है,-विधिवादमे जैनमुनि और जैनसाध्वीको-वनखड-या-गावके बहार बागबगीचेमे रहना कहा, आजकल-गावनगरमे रहना शुरू हुवा है,-जैनमुनिको नवकल्पी विहारकरना शास्त्र फरमान है,-एक गावमे एकमहिनेसे ज्यादह नही ठहरना,-मौसिमे शर्द-और गर्म-मिलाकर आठ कल्प और चौमासेका एक-कल्प-इसतरह नवकल्प हुवे,-अगर कोई जैन-मुनि-इसतरह बरताव-न करे, और बहुत अर्सेतक एकजगह कयामकरे -तो-यह जैनशास्त्रका-हुकुम नही, जैनमुनिको दिनमे-एकही दफे भिक्षाको जाना कहा,-अगर कोई-सवेरे-दुफेरको-और-शामको इसतरह तीनमरतबा भिक्षाको जावे-तो-इसको उत्सर्गमार्ग नही कहा, जैनमुनि-को दिनमे नींद लेना मना है, जैनमुनिको हुकम नही-किसीके लड-केको विदुन हुकम उनके वारिशोके दीक्षा देवे, अगर कोई जैनमुनि -विदुनहुकम वारिशोंके किसीके लडकेको दीक्षादे-तो-वे मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके गुन्हेगार है, विना इम्तिहान किये किसीको दीक्षा देनेसे नतीजा-यह-आता है,-यातो-चंदरोजमे-वो-चेला-गुरूको छोडकर चलाजाता है-या-आपसमे अनबना होजाता है,—

२२ पन्यास पदवी-किसी जैनागममे नही लिखी, अगर कोई-सबुत रखतेहो तो-जैनागमका पाठ बतलावे, चरितानुवादकी मिशाल-कारआमद नही होसकती, सबब-वो-अल्पव्यापी है,-विधिवादकी मिशाल-कारआमदहो सकती है, सबब-वो-सर्वव्यापी है,-कई फरमाते हैं, पन्यासपदवीको-आचार्य पदमे गिनलो, कई कहते है,-उपाध्याय पदमे शुमार करलो, और कई-बतलाते है, पडितपदमे दाखिल करलो, मगर विदुन शास्त्र सबुतके इस बातको कोन मजुर करसकेंगें,-जो-जो-बाते विधिवादमे-तीर्थंकर गणधरोंने फरमाई है,-सबको मजुर हो सकेगी, चरितानुवादमे-जो-जो-बाते-मुताबिक विधिवादके है,-वो-विधिवादमे आगई, खिलाफ विधिवादके चरितानुवादमे-कोई बात प्रमाणीक नही, फर्ज करो, विधिवादमे-तोता, मेना, वगेरा पिंजरेमे डालना मना फरमाया, दरअसल! उनकेलिये-वो-केदखाना है, इतनेपरभी किसी जैनने-तोता, मेना, वगेरा पिंजरेमे डाले, और उसकी मिशाल देकर दुसरा कोई-शख्श-तोता, मेना-वगेराको पिंजरेमे डाले-तो-हुकम नही, सबुत हुवा चरितानुवाद काबिलमजुर करनेके नही, इसीतरह पन्यासपदवी-विधिवादमे नही लिखी, इसलिये-वोप्रमाणीक नही,—

२३ अगर कोई महाशय! इसदलिलकों पेंश करे-परपरा-या-रूढीको मजुर क्यों नही रखना, ? (जवाब) परपरा-या-रूढी-तीर्थंकर-गणधरोंके फरमाये हुवे शास्त्रोसे वढी नही, कोईभी-जैनाचार्य, उपाध्याय, मुनि, या-श्रावक, हो, खिलाफ जैनशास्त्रके-कोई रूढी,-या-परपरा-मानना फरमावे-तो-वो मजुर-न-होगी, जैनशास्त्रोमे-जैनमुनिको-तमामदिन-या-व्याख्यान बाचतेवख्त मुहपर मुहपत्ती बाधना नही फरमाया, बल्कि! ओघनिर्युक्तिशास्त्रमे जैनमुनिकों बोलतेवख्त-मुहपत्ति हाथमे रखना कहा,—

२४ जैनमुनियोंको सफरकरते वख्त रास्तेमे अगर नदी आजाय-तो-नावमे बेठकर उसके पारहोना हुकम है,-जैनमुनिको जहा-जि-

समकानमे औरत रहतीहो मुनासिब है,-वहां-न-ठहरे, जैनसाध्वीकों चाहिये जहां-मर्द-रहतेहो,-वहा-कयाम-नकरे, पेस्तरके जमानेमे जैनमुनि-गावके बहार वाग-वगिचे-या-वनखडमे ठहरते थे, आजकल उत्सर्गमार्गमे वरतावकरना बंदहोगया. गाव-नगरमे-रहना शुरूहुवा, और यह एक तरहका अपवाद् मार्ग है,-अगर कोई-जैनमुनि-उत्कृष्ट-सयमी क्रियापात्र होना चाहे, गावके बहार-धनखंड-वाग-वगिचेमे-या-पहाडकी गुफामे जाकर रहे, मगर नजीकके गांववाले श्रावकोकों-या-अपनेपर एतकात रखनेवालोपर ऐसा फर्ज-न-डाले-हमारेलिये आहारपानीका-इतजाम करो, असलमे नजीकके गावमे आना-भिक्षा लेजाना-और-फिर वहां जाकर रहना चाहिये, अगर कोई मुनि-ऐसाकहे-हम-वनमे-या-पहाडकी गुफामे-जाकर ध्यान करेंगे-तो-शोखसें-ध्यान करे-मगर भिक्षाके लिये गांवमे आना होगा,-आधाकर्मी-आहार-अपनेलिये बनवाकर लेना जैनशास्त्रका हुकम नही,—

२५ अगर-किसी जैनमुनिकों-आपसमे तकरार-होजाय-तो-फौरन! उसकों मिटानेकी कोशिश करे, वहुत अर्सेतक-गुस्सा-न-रखे,-चौमासेके दिनोंमे जैनमुनिकों-और-जैनसाध्वीकों-सफर करना मना फरमाया,-सवव इसअर्मेमे जीवोंकी पैदाश ज्यादा होती है, चौमासेके दिनोंमे-जैनमुनिकों-वस्त्र, पात्र, कबल, रजोहरण वगेरा नये नही लेनाचाहिये, न-शर्तेकि-किसी चीजकी चौरी-न-होगईहो,-या-वस्त्र-पात्र-गम-न-गयेहो-चौमासेके दिनोंमे-जैनमुनिकों सफर-करना मना है,-मगर वीमारीका सववहो,-या-राज्यका-कोई-खौफहो,-तो-छुट है, जैनमुनि-जिसमकानमे ठहरेहो,-जैनसाध्वी वहाजाकर दिनमे-या-रातकेवख्त-सोवे नही, इसीतरह जैनसाध्वी जहा ठहरीहो,-जैनमुनि-वहाजाकर सोवे नही,-जैनमुनिकों-और-जैनसाध्वीकों-गृहस्थके मकानमे-जाकर सोना-बेठना-या-खानपान करना नही फरमाया, अगर सख्तवीमारीहो-और-कमता-

कात होजानेकी वजह-सोना,-बैठना,-या-खानपान करनापडे-तो-अमरलाचारी है,-और-उसवख्त छुट है,—

२६ किसी जैनमुनिकी कोईचीज-दुसरे जैनमुनि-विनाहुकम-अपनेकाममे-न-लेवे, चाहे-गुरुहो-या-चेला,-विनामरजी किसीकी चीज-कोई-कामम लेयगे-नाराजी-पैदा होगी, मुनासिव है,-पुछकर उनकी मरजीहो-तो-लेना, वरना! नही लेना,-दरजमल! किसीकी चीज अपने काममे-न-लेवे,-अगर लिई हो-तो-उस वातकी माफी माग लेवे,-जैनमुनिको-फुरमदके-वख्त-ईलमपढना, पुस्तक वाचना, -या-शास्त्र लिखते रहना हुकम है,-हरवख्त गुरूके-या-वडे-मुनिके -फरमानपर-अमल-करना चाहिये,-गुरूके पास-या-किसी दुसरे-गीतार्थ जैनमुनिके पास-अपने गुन्होकी माफी मागना-तो-सचवात जाहिर करके मागना,-जुठ वात-कहना,-गुन्हा है, जैनमुनिको-शास्त्रके पढेलिखे-मुनिके शाथम रहकर सफर करना वहेत्तर है,-विदुन-गीतार्थके-जैनमुनिकों सफर करना मना है,-जैसे-रेलगाडीको-चलानेवालेकी जरूरत है,-सफरमे-पढेलिखे-मुनिकी जरूरत है,-जैनसाध्वीकोभी-पढीलिखी-साध्वीकी सफरमे जरूरत है,-अकेली साध्वीको-सफर-करना-हुकुम नही,—

२७ सवतरहके कर्मोंम-मोहनीय-कर्म-वडा है,-वडेवडे आलिमफाजिल-और-पढेलिखे-इसम पडकर-अपने होदेसे गिरगये है,-अगर कोई जैनमुनि-साध्वी-या-श्रावक-श्राविका-अपने धर्मसें-चुक-जाय-और-अपने दिलम पश्चात्ताप करे-तो-शुद्ध-होसकते है, व-शर्तेकि-मनके-तीव्रपरिणामसे निकाचित कर्म-न-बधगये हो, अगर निकाचित-कर्म-वधगये होगे,-जरूर उसका-फल-भोगना पडेगा,-धर्मशास्त्रोंका-फरमान है,—"परिणामे-वध"-यानी-जैसे जैसे जिसजीवके मनपरिणाम होते जायगें-वैसे-उस जीवको कर्मवधन होगे, जैनशास्त्रोम-ममत्वभावको-परिग्रह कहा, दौलत, दुनिया, माल, खजाना होते हुवेभी-जिसको उसपर ममत्वभाव नही-तो-

उसका–उसको पाप नही, जिसके पास दोलत नही, मगर दिली-इरादा उसका–दौलतपर है–तो–उसको–पाप है,–चाहे–जितनी धर्म-क्रिया करो, मगर–मन परिणाम शुद्व नही–तो–वो–धर्मक्रिया–कामकी नही, धर्मक्रिया–कोई–अछे भावसेभी–करता है, और–कोई–देखादेखी अपनी तारीफ होनेके लिये करता है, सबुतहुवा,–बिदुन एतकातके–कोई–फल नही पाता,—

२८ जैनमुनिकों–या–जैनसाध्वीको किसीकी निंदा करना हुकम नही, मगर निंदा उसका–नाम है,–जिसमे जुठी बात बयान किई-जाय, सचबात कहना, निंदा नही, जैनमुनिको या–जैनसाध्वीकों–किसीके शाथ सख्त जबानसे बोलना हुकम नही, मगर धर्मके गुन्हे-गारको वचनसे शासन देना छुट है,–आवश्यक सूत्रवृत्तिमे अवल अध्ययनका पाठ देखो! जहा–दश तरहकी समाचारीका बयान है,–उसमे लिखा है,–अविनय शिष्यको वचनसे शासन देना, मशलन! जो–घोडा–अपनी चालपर चलता है,–उसकों चाबुक लगाना कोई जरुरत नही, जब–अपनी चालपर–न–चले–तो–चाबुकभी–लगाना पडे, कोई जैनमुनि–किसीकी दौलत–कुटुन–परिवार–या–औरतको–देखकर दिलमे ऐसा खयाल–नकरे, मेरे तपके प्रभावसे मुजे अगले-जन्ममे ऐसा सुखचैन मिलो, इसीतरह कोई साध्वी–किसी खुबसुरत मर्द–या–उसकी दौलतको देखकर अपने दिलमे बुरे इरादे–न–लावे, अगर बुरे इरादे आजाय–तो–उनको रोकनेकी कोशिश करे, पूर्वकृत–कर्मके–उदयानुसार मनके ईरादे होते है, मगर–बुरे–इरा-दोंको बुरा समजे,–और–जो–कर्म–उदय–आये है,–उसको–सम-भावमे–रहकर निर्जरा करे–तो–आइंदे–नये–पापकर्म–न–बधेगे,—

२९ जैनमुनिकों और जैनसाध्वीकों–लाजीम है,–वस्त्र, पात्र, कबल, रजोहरण, और पुस्तकपनेपरभी–ममत्वभाव–न–रखे,–विना ममता, धर्मसाधनकेलिये कोईभी–वस्त्रपात्र–पुस्तकपंने–वगेरा–चीज–रखे–तो–पाप–नही, अगर–कोई–जैनमुनि–या–जैनसाध्वी–चेला–

चेलीकेलिये-ममत्वभाव करे, विदुन हुकम उनके-वारिशोंके किसीके लडकेको दीक्षादेवे,-तो-यह-बात-खिलाफजनशास्त्रके है,-कोई-जैनमुनि-या-जैनसाध्वी-किसी गृहस्थके घरसे-चाकु, केंची, पाटपाटले-या-लिखनेकेलिये दवात-कलम लायेहो, मुनासिब है,-काम होजानेके बाद-वापिस-दे-आवे, ऐसा-नकहे-तुमारी चीज-हम-ठहरे है,-वहा-रखी है, तुम लेजाना, अगर कोई-जैनमुनि-या-साध्वी-पिनेका-गर्मपानी-ठडाकरनेकेलिये-श्रावकोंके घरसे-तांबे-पित्तलकी परात लावेतो,-वेहेत्तर नही-पानी-ठडा करनाहो-तो अपने पात्रेमे-या-मिट्टीके घडेमे-ठडा करना,-तांबे-पित्तलकी-परात लाना कोई जरूरत-नही, उत्कृष्ट सयमी ओर क्रियापात्र होना-तो-दिवसके तीसरे प्रहरमे भिक्षाको जाना, दिनमे नींद नही लेना, एकही दफे-आहार करना, और नवकल्पी विहार करना चाहिये,

जैनमुनिको ओर जैनसाध्वीको-काष्ट-मिटी-ओर तुंबेके पात्र रखना फरमाया, धातुके पात्र रखना मना है,-मुल्यलाया हुवा कपडा लेना नही कहा,-उधार लाया हुवा कपडाभी-नही लेना, अदलवदल करके-या-जबरजस्तीसेंभी-कपडा नही लेना, इसतरह करनेसे नाराजी पैदा होगी, अगर कोई गृहस्थ-अछे-भावसे किसी जैनमुनिकों कपडा देवे-तो-लेना अछा है,-मगर कार्यसे ज्यादा-लेना हुकम नही,—

३० जैनमुनिकों-या-जैनसाध्वीको-लाजिम है,-वसतमालती चद्रोदय, हिरण्यगर्भ-मृगाक-वग-माजुम-वगेरा निकारलानेवाली चीजे-विना-सबब-न-खावे,-सख्त बीमारीमे-अगर बीमारीरफा-करनेके लिये खाना पडे-तो छुट है, नये नये-पुस्तक वाचना जैनमुनि-या-जैनसाध्वीका फर्ज है,-व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, और अलकार वगेरा-अगर-अन्यमतावलवी-वैयाकरणी-ओर-नैयायिकपडितोंसे पढेजाय-तोभी-वेहेत्तर है,-मगर जैन आगम प्राकृत जबानमे बनेहुवे है,-जैनधर्मके गुरुओंसे पढना चाहिये,-जैनआग-

सका पुरेपुरा मतलब जैनगुरूओसें मिल सकेगा,-जैनधर्मके गुरूओसे जैनशास्त्रपढते वख्त वंदन-नमन वगेरा विनय व्यवहार करना पडे, कितनेक जैनमुनि-वंदन-नमन-करना-न-चाहे-तो-ईल्म हासिल-न-होगा,-ईल्म आजीजी-या-खिदमत करनेसेंही मिलता है, कितनेक जैनमुनि-विदुन जैन शास्त्रपढे कोरीक्रिया-करके आचार्य, उपाध्याय, पंन्यास, या-गणीपदके धारक बनते है, यह ठीक नही. अगर कोई जैनाचार्य, जैनउपाध्याय, जैनमुनि-या-श्रावक ऐसा कहे-देवद्रव्य जैनशास्त्रोंमे नही लिखा,-जिनप्रतिमाकी पूजा, आरतीकी बोलीमें-ओर स्वप्नवगेराकी बोलीमे साधारण खातेकी कल्पना करलो-ओर-साधारण खातेमें लेजाओ-तो-यह-बात-जाइज-नही, ऐसी कल्पना करना किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा, अगर लिखा है,-तो-उसके सबुतमें किसी जैनआगमका पाठ बतलावे, बिना सबुत कोई कैसे मजुर करेगा,-जैन आगम-गुरू गमसे-न-पढे जाय-जभी-ऐसे तर्कवितर्क पैदा होते है,—

२१ अगर किसी जैनमुनि-या-साध्वीकों,-या-श्रावक श्राविकाकों अपने कियेहुवे गुन्होका प्रायछित लेनाहो-तो-पढेलिखे गीतार्थ जैनमुनिके पास लेवे, पढेलिखे गीतार्थमुनि-उनको कहते है, -जो-पैंतालिश-जैन आगम-गुरूगमसे पढेहुवेहो, पचमहाव्रत पालनेवालेहो, और-जैनधर्मपर कामील एतकात हो,-ऐसे गीतार्थमुनि-न-मिले ओर चारित्रमे शिथिल आचारवाले हो,-तोभी-कुछ हर्ज नही, मगर पेंतालिश जैन आगमके पढेलिखे जरूर होना चाहिये,-अकेली-क्रिया-करे, ओर-पढेलिखे-नहो, ऐसे मुनिके पास प्रायछित नही लेना कहा उनकों-खुदको शास्त्रका ज्ञान नही,-तो-वे-दुसरोकों प्रायछित क्या दे सकेंगे, उसीलिये-शास्त्रोमे कहागया,-एतकात-ओर इल्मकी ज्यादा जरूरत है, प्रायछित देनेवाले-गीतार्थ गुरू-प्रायछित लेनेवाले-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाकी आलोचनाकी-बात-दुसरेके सामने जाहिर-न-करे, अगर कोई-जैना-

चार्य, जैनउपाध्याय,-या-जैनमुनि-किसी-गांव-नगरमे वारीश गुजारे,-या-सफर करतेवख्त-मासकल्प ठहरे-तो-उनको लाजिम है,-श्रावकोंकों-सत्यधर्मकी तालीम देवे,-इल्म पढनेकी हिदायत करे, मगर किसी श्रावक-श्राविकाको-जबरजस्तीसे व्रत-नियम-न देवे,-दबाव डालकर-शमीशर्मी-व्रतनियम देनेसे-वे-पालेगें नही, और चदरोजमे-उस-व्रत नियमकों तोड देगें, इसीसे कहाजाता है, धर्म-और-प्रीत-जोराजोरी-नही होती, जिसकी मरजी व्रतनियम -इख्तियार करनेकी हो, और अर्ज-गुजारे,-मुजे-व्रतनियम-दिजिये, उस हालतमे-मुताबिक उसकी ताकातके व्रतनियम देना अछा है, आज कलके कितनेक जैनमुनि-ज्ञान-पढे नही और अपनी धर्मक्रियाकी महत्त्वता बतलानेकेलिये फर्ज डालकर-श्रावक-श्राविकाको कहते है,-फलाना व्रत इख्तियार करो,-मगर ऐसा फर्ज डालना किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा,-जहा जैनमुनि-या-जैनसाध्वी-चौमासा-ठहरेहो,-वहा-श्रावकोको ऐसा खर्च-न-करावे जिससे उनकों-तग-होकर खर्च-करना पडे कितनेक जैनमुनि-या -या-जैनसाध्वी-श्रावकोको फर्ज डालकर कहते है,-फलाने गावके जैनमदिरका-चदा-करो, अमूक पाठशालामे रूपये भेजो, फला पशु शालामे इतनी रस्म दो, हमारे पडितजीकों तनखाह दो, अठाई महोछव करो, हमको इतने पुस्तकोकी जरूरत है,-मगवा-दो,-ऐसा फर्ज डालना किसी जैनशास्त्रका हुकम नही, अगर कोई जैनाचार्य, जैन उपाध्याय,-या-जैनसाधु-किसी शहरमे चौमासा ठहरे, श्रावक लोग खर्चकेलिये चदा करे, दिलसे तगहोकर-पाच-सात-हजाररुपये खर्च करे, आखीरकार नतीजा उसका यह आयगा, दुसरीदफे किसीजैनाचार्य-उपाध्याय-या-जैनसाधुका चौमासा ठहरानेकेलिये -राजी-न होगें, दशवैकालिक सूत्रके अवल अध्ययनमे-बयान है,-अगर जैनमुनि-किसी गृहस्थके घर भिक्षाको जावे-तो-उतना आहार लेवे, जिससे उसगृहस्थको खानपानमे तगी-न-आजाय, रसोइ

—क्रम—रहजानेके मगर दुसरीदफे बनाना—न—पडे, साँचो! जन— आहारकेलियेभी—गृस्थको—तग—करना नही कहा—तो—दुसरे कार्यके- लिये—क्यों—तग करना,—जैसे फुलोंमेसे—भमरा—रसलेता है,—मगर फुलोंकों—इजा—नही पहुचाता, इसतरह—जैनमुनि—गृहस्थको—तकलीफ —न—देकर भिक्षा लेवे, फिर—दुसरे कामकेलिये तकलीफ पहुचाना कहा रहा, विदुन हुकम उनके वारीशोके—किसीके लडकेकों दीक्षा देनाभी कहा रहा?—

३२ अगर कोई श्रावक—जैनाचार्य, उपाध्याय, या—जैनमुनिके— सामने आनकर अर्ज करे,—मुजे—एक हजाररुपये मदिर—मूत्तिके लिये खर्च करना है,—इसतरह कोई श्रावक अर्ज करे—मुजे—एक हजार रु- पये पुस्तकके—काममे—खर्च—करना है,—या—कोई श्रावक कहे,—मुजको —एकहजार रुपये—गरीब श्रावक—श्राविकाकी मदद देनेमे देना है, तो जैनमुनि—उसको—मुताबिक फरमान जैन शास्त्रके रास्ता बतलावे,— मगर बिना मरजी—मुलाहजेमे डालकर—खर्च—न—करावे,—और—ऐसा भी—फर्ज—न डाले, हमारा फरमान आपको मजुर करना—पडेगा, अगर कोई—श्रावक—गैरमुल्कसें—या—किसी गाव नगरसे जैनमुनिको वदन- करने आवे—तो—आनेवाले श्रावक अपने खानपानका बंदोबस्त करके आवे, गावके श्रावकोपर उनका कुछ फर्ज नही है,—गावके श्रावको- की—मरजी—हो—तो—खुशीसे उनको खाना खिलावे,—अगर मरजी— न—हो—तो—जैनमुनि उनके उपर—दबाव—न—डाले, तुम—इनकी खिद- मत करो,—जैनमुनिकों—ठहरनेकेलिये मकान देवे,—उस श्रावकका ना- म—जैनशास्त्रमे शय्यातर कहा, उसके घरका—खानपान लेना जैनमु- निकों हुकम नही, ठहरनेके लिये—मकान—दिया है—उसीका उसको बहुतमा पुन्य होगा, जैनमुनिकों—सूतका—रेशमका उनका—ओर शणका कपडा रखना कहा, जरीका—कपडा रखना नही कहा, जैन- मुनिको—खेती करना मना है,—डहेरेधारी होकर एकजगह रहना हुकम नही, दुनिया दारोकी तरह किसीसे लेनदेनका व्याजर-

खना मुनासिब नही, जैनमुनिकों और-जैनसाध्वीकों दंडा रखना जैनशास्त्रोमे इसलिये फरमाया, अगर सफर करतेवख्त रास्तेमे नदी आजाय-तो-पानी-कितना गेहरा है, दंडेसे नाप लियाजाय, बिदुन तलाश किये गेहरे पानीमे चलना मौतकी निशानी है,—

३३ अगर किसी जैनमुनिकों-या-जैनसाध्वीकों-बीमारी पेंशहो,-चंदनका कापुरका,-चेंला-चमेलीका,-या-दुसरीजातका, तेल-शरीरपर मालीश करनेका हुकमहै,-जैनशास्त्र आवश्यकसूत्र वृत्तिवगेरामे सुनाहोगा, शतपाक, सहस्रपाक-वगेरा खुशबूदारतेल-पेस्तर-जैनमुनि-बीमारीकी हालतमे ईस्तिमाल करतेथे, शौखसे-या-पांचइद्रियोंकी विषयपुष्टिकेलिये खुशबुदारतेल-अपने बदनपर लगावे-तो बेशक! उसकी मुमानीयत है, जैनमुनिको-ओर-जैनसाध्वीको-हरिवनास्पतिपर चलना-या-उसका स्पर्श करना मनाहै,-मगर जबकभी-सफरमे किसी-गेहरे-खाडेमे गिरजाय-तो-ईगर्द धर्मके हरिवनास्पति,-या-लता वेलडीकों, पकड कर उपर आजाना हुकमहै,-जैनमुनि-या-जैनसाध्वीकों-कचे-पानीका स्पर्शकरना मनाहै,-मगर मुल्कोंकी सफरकरतेवख्त-अगर-रास्तेमे कोई नदी आजाय-तो-नावमे बेठकर-उसके सामने कनारे जावे, इसमे कचेपानीकी हिसा बेशक! होती है, मगर इरादाधर्मका होनेसें भावहिंसा-नही, ओर-बिदुन भावहिंसाके पाप नही, आजकलके वख्तमे-जैनमुनि-या-जैनसाध्वी-मुल्क गुजरात, काठियावाड,-मारवाड,-ओर-मालवेतक-विना मददके-सफर-करसकते है,-मगर तमाम हिंदुस्थानमे-विना मदद-सफर नही करसकते,-अगर कोई-जैनमुनि-या-जैनसाध्वी, समेतशिखरजी, राजगृही, पावापुरी, मुर्शिदाबाद-या-कलकत्तावगेरा जैनतीर्थोंकी जियारतमे-या-बनारस जैन पाठशालामे पढनेजाते वख्त-या-मुल्क मेवाड, सिंध, पंजाब, राजपुताना, मध्यप्रदेश, विरार, खानदेश, दखन हैदराबाद, तीर्थकुल्पाकजी-बेजवाडा, मद्रास, बेंगलोर, हुबली, धारवाड, बलारी, या-बार्सी वगेरातर्फ-सफर करतेवख्त-श्रावक-श्राविका-विद्यार्थी-नोकर

–चाकर, शाथ चले, उन श्रावक श्राविका और नोकर चाकरोंकेलिये वेलगार्डीभी–शाथ रहे,–जैनमुनि–या–जैनसाध्वी–खुद जानतेहो–ये –सब–हमारे विहारके समय शाथ चले है,–ऐसी मदद लेना,–उत्सर्गमार्गमे समजना–या–किसमे? अगर कहाजाय रास्तेमे श्रावकोंके–घर–नही होनेसें ऐसी मदद लेना पडती है,–तो–जवाबमे मालुमहो, गेरमजहबवाले गृहस्थोके घरसें आहार मिल सकता है, आधाकर्मी–आहार–नही लेना–और रास्तेमे किसीकी मददभी नही लेना, जब उत्कृष्टसयमी और क्रियापात्र–कहला सकतेहो,–अगर कहाजाय पहलेजैसी–शरीरकी–ताकात नही रही, वीतराग सयम नही रहा, सातवे गुणस्थानसे आगेके गुणस्थान नही रहे,–इस लिये द्रव्य,–क्षेत्र काल, भावदेखकर चलना पडता है,–तो–फिर उत्कृष्ट सयमी,–और–क्रियापात्र बनना कहा रहा,? फिर एसा–कहना चाहिये, आजकल उत्सर्गमार्गपर–नही चला–जा–सकता, इसीतरह श्रावकोकेलियेभी –समजो,–श्रावकभी–श्रावकके (२१) गुण, (१२) व्रत–और (१४) नियममे उत्कृष्टमार्गपर कब–चलसकते है? श्रावकोंकों–कुछ–तीर्थकर–गणधरोंके फरमानमे–छुट–नहीमिली है–नाहक! अपनी धर्मक्रियाकी महत्वता करना फिजहुल है,–खुद दीक्षा लेवे नही, और बाते वडीवडी बनावे–ये–फिजहुल है,

३४ जैनमुनिकों–या–जैनसाध्वीको–भिक्षामे–लुखा सुका–या–मीठाभोजन मिले–बिना–लोलुपतासे–खावे, जबानकी लोलुपता नही रखना–सिर्फ! धर्मपालन करनेकेलिये–बतौर सहारेके–खानपान लेना हुकम है,–अगर कोई–जैनमुनि–आचार्यपदवी–या–उपाध्यायपदवी लेना चाहे,–तो–पेस्तर अपनेमे उसपदवीके गुण–हासिल–करे, –जैनागम–गुरुगमसे पढे,–कोरी क्रियाकरके योगवहन करना–और–जिसजिस शास्त्रके योगवहनकियेजाय उसउस शास्त्रको अर्थके शाथ–मूल–पाठ–कठाग्र नही करना, किसी जैनशास्त्रका फरमान नही, जैनमुनि–या–जैनसाध्वी–जिस मकानमे–ठहरे–हो, और वहा–सर्प,

विछ-वगेरा जीवोंका-आनाजाना-होताहो, कोई जैनमुनि-या-जैन-साध्वी-सख्तबीमार हो, उस हालतमे गृहस्थ-वहा-चिराग जलावे-तो-जला सक्ते है,-इसमे धर्म-ओर आत्माकी हिफाजतका काम है,-पेस्तरके जमानेमे जैनमुनिगावके बहार, बनखड,-बाग-बगिचे-या-पहाडकी गुफाओमे रहा करते थे,-वे-उत्सर्गमार्गपर चलसक्ते थे,-जमाने हालम गावके बहार-बनखडमे रहना मौकुफ होगया, ओर-गावमे-रहना शुरूहुवा, इसलिये कठीन मार्गपर चल नही सक्ते, आजकल अगर कोई जैनमुनि-ऐसा-कहे,-हम-आलादर्जेके सयमी ओर क्रियापात्र है,-तो-वैसा-वरताव करके-बतलावे,-कोरीबाते बनाना फिजहुल है,—

३५-जैनमुनि ओर जैनसाध्वीको-जब-वडी वारीश होतीहो-उसवख्त-भिक्षाको-जाना मना है-थोडी वारीशमे-जिससे रोटीयां भींज-न-जाय भिक्षाको जाना मना नही, जिनकल्पी-मुनि-जो-तीर्थंकर महावीर स्वामीके निर्वाण हुवे बाद-जबू-स्वामीके पिछे विछेद होगये, जो-खुद-नग्नस्वरूप-होते हुवे-भी-उनकी-तपोलब्धिसें दुसरोंको नग्नस्वरूप नही दिखाई देते थे, ओर-वे-स्थविर-कल्पी-मुनिकी तरह-पात्रेभी-नही-रखतेथे, हाथमेही भिक्षालेकर-खा-लेते थे, उनको-कम-वारीशम भी-भिक्षाकों-जाना हुकम नही, जमाने हालम-ऐसे-जिनकल्पी-मुनि-मौजूद नही,-आजकल-जो-जो-जैनमुनि-हयात है,-उनको स्थवीरकल्पी मुनि-कहे-गये, ओर उनको-कम-वारीशम भिक्षाकेलिये-जाना हुकम है, जैनागम-कल्प-सूत्रमे उसका-सबुत इसतरह-मौजूद है,-सुन लिजिये,—

[मूलपाठ,] कप्पइ-से-अप्पवुट्ठिकायसि,

(टीका.) प्रावृतस्य-अल्पवृष्टौ-गतु-कल्पते.

[अर्थ.]-कम-वारीशमे स्थविरकल्पी-मुनिको-कबल-ओढकर भिक्षाकेलिये जाना हुकम है,-अगर-कोई-सवालकरे, आजकल-कोई-जैनमुनि-नग्नस्वरूप हो-तो-उनको मुताविक जैनशास्त्रके जिन-

कल्पी–मुनि–कहना–या–नही? (जवाब) आजकल–वैसी लब्धी–नही रही,–जो–नग्न स्वरूपहोते हुवेभी–दुसरोको–नग्न स्वरूप–न–दिखाई दे, सौचो! जमाने हालमे–वज्र–रिषभ–नाराच–सहनन–कहा रहा? चौदह–पूर्व–वगेराका इल्म कहां है? और–वैसी–लब्धि–येभी कहां है? दर असल! जिनकल्पी–मुनि–जंबूस्वामीके बाद–विछेद होगये, विछेद गइहुई–लब्धियें–आजकल–कोई–किस तरह हासिल कर सकेगें? जैसे जमाने हालमे–इसक्षेत्रसें–मुक्ति–नही, केवलज्ञान नही, यथाख्यात–चारित्र नही, उपशम–श्रेणी–नही, क्षपक–श्रेणी–नही, क्या! इन बातोंको आजकल कोई पैदा करस–केगें? हर्गिज! नही,–इसी तरह आजकल इस भरत क्षेत्रमे–जिन–कल्पी–मुनिभी–नही,—

[शेअर]

कोरीबातोंसें काम नही चलता, जैसे पानीसें दीप नही जलता,—
कोरीबातोंसे बात नही रहती, जैसे कागजकी नाव नही बहती,–१

३६ जेसे जैनश्वेतांबर मजहबमे–तपगछ, कवलगछ, खरतरगछ, अचलगछ, पार्श्वचंद्रगछ, लोकागछ, विजयगछ, सागरगछ, देवसूर–गछ–वगेरा फिरके मौजूद है, दिगंबर मजहबमेंभी–कई–फिरके–म–शहूर है, जैसे काष्टासंघ, मूलसंघ, माथुरसंघ, गोप्यसंघ, वीशपंथ, ते–रहपंथ, समैयापंथ, वगेरा फिरके–मौजूद है,–जैनश्वेतांबरमजहबसे–जुदे–होकर–जो–स्थानक वासी–फिरका–और–तेरह पंथ–फिरका जा–रीहुवा है,–वुत्परस्ति–मंजुर नही रखता,–जैनोंकी–आबादी–इसवख्त–मुल्क मगध, अंग, बंग, कलिंग, कोशल,–राजपुताना, मध्यप्रदेश, विरार, खानदेश, मालवा, दखन, तेलंग, कर्णाटक, महीशूर, महाराष्ट्र, कोंकन, गुजरात, काठियावाड, कछ, मारवाड, मेवाड, सिंध, पंजाब, और–काश्मिर–वगेरामें–फैली हुइ है,–जैनश्वेतांबर–मुनिजनोंमें–नव–कल्पी–विहार करना छोडकर जब डहेरेधारी होना शुरू हुवा,–जमीन–जहागिरि इख्तियार करने लगे,–और–हकीमी करके गुज–

रान करनेके लगे, कितनेक जैनमुनिजनोंने क्रियाउद्धार करना बहेत्तर समजा, जेनआगम अनुयोगद्वार और निशिथसूत्रमें-नये-कपडेको-रंग-देना फरमान है, मुताबिक उसी फरमानके-पीले-कपडे-पहनना इख्तियार किया, और सवेगी-साधु-कहलाये, जैनआगम-उत्तराध्ययन-सूत्रमें-सवेग पदका-बयान है,-उसी सबुतपर सवेगी-साधु-मशहूर हुवे, ख्वाह-कोई-जैनमुनि-सफेदकपडे-पहनने वालेहो, -या-पीकपडे पहनने वाले हो,-कामील एतकात-ज्ञान-और-चारित्रमें पावद रहे, उनकी अछी गति होगी, इसमें कोई शक नही,—

[तत्त्वार्थसूत्रका-फरमान,]

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि-मोक्षमार्गः—

सम्यक् दर्शन-ज्ञान-और चारित्र-ये-तीनों मोक्षका मार्ग है,-यह-एक सामान्य सूत्र हुवा, मगर विशेषपाठ-ऐसाभी-मौजूद है,-अकेले-कामील एतकातसेभी ज्ञानपाकर मुक्ति पासके, अकेले चारित्रसें मुक्ति-न-पासके,—

(जैनशास्त्र-सबोध-सित्तरीका पाठ,-)

दसणभट्टो भट्टो, दसणभट्टस्स नत्थि निव्वाण,—
सिझति चरण रहिया, दसणरहिया-न-सिझति,-१,—

(अर्थ)-जो-शख्श श्रद्धासे पतित है, वो-धर्मसे पतित समजो, श्रद्धासे पतितकी मुक्ति नही होसकती,-चारित्रसे पतितकी मुक्ति होसके मगर श्रद्धासे पतितकी मुक्ति-न-होसके,—

[जैनागम आवश्यक-सूत्रकेवदना-अध्ययनका-पाठ]

(गाथा-)

भट्टेण चरित्ताओ,-सुट्ठुयर दसण गहेयव्व,
सिझति चरणरहिया,-दसण रहिया-न-सिझति,-१
दसारसिंहस्सय सेणियस्स,-पेढाल पुत्तस्सय सुव्वयस्स,—
अणुत्तरा दसण-नाण-सपया,-विणाचरित्तेण अहरगय गया,-२

(अर्थः) कोई शख्श-चाहे-चारित्रसे रहित हो,-मगर एतका-

पुराकामील हो,-तो-उसकी मुक्ति होसके, एतकातमें अगर ना
द है,-तो-उसकी मुक्ति-न-होगी, देखो! दसारसिह,-श्रेणिक-
।, पेढालपुत्र और सुव्रतकी-श्रद्धा-और ज्ञान सपदालार्डक तारी-
थी,-तो-उनकी मुक्तिका रास्ता साफ होगया, इसका मतलब
हुवा,-एतकात और ज्ञान आला दर्जेकी चीज है,-मुकाबिले उ-
चारित्र वडीचीज नही, इसीलिये-आवश्यक-सूत्रके पाठमें फर-
ागया-चारित्र-न-हो-तोभी श्रद्धा और ज्ञानसे इसजीवकी
क होसके, जैसे-मरुदेवी माता-और-एलाची कुमारने दीक्षा
तयार नही किईथी,-तोभी-भावनासे कर्म-क्षय-करदिये, और
ील एतकातसे ज्ञान पाकर मुक्तिकों गये,-खयाल करो! चारीत्र
सजीवने-कई मरतबा-इख्तियार किया, मगर बिदुन कामील
कातके कारआमद नही हुवा, अगर कोई कहे बिदुन एतकातके
सी तरहके-व्रत-नियम-या-चारित्र कोई कैसे इख्तियार करे!
ानमें मालुमहो, देखा देखीभी व्रतनियम-या-चारित्र लियाजाता
-शास्त्रोंमें फरमान है,-बिदुन भावके-इसजीवने परभवमें कइदफे
रित्रलिया, मगर कारआमद नही हुवा, इसलिये-व्रतनियम-या
ारित्र लिया देखकर ऐसा अदाज नही करना, यह महाशय
ात्मा है, जिसका एतकात, और ज्ञान सचा हो,-वही-धर्मात्मा
श है,-वैसा-जानना,-दिली इरादेको पहिचानना शिवाय ज्ञा-
के दुसरोके ताल्लुक नही,—

[चारतरहके-सामायिक,-]

३७ जैनशास्त्रोंमें सामायिक चारतरहके फरमाये, अवल सम्यक्त-
मायिक, दुसरा श्रुतसामायिक, तिसरा देशविरति सामायिक, और
था सर्वविरति सामायिक, इनमें अवलदर्जे सम्यक्त-सामायिक
ा, दोयम दर्जे श्रुतसामायिक, जिसका कामील एतकात हो
र ज्ञानमें निहायत पावद हो, चाहे देशविरति-या-सर्वविरति
मायिक-उसने-नही-लियेहो,-तोभी-उसकी मुक्ति होसकती है,

-अगर कोई सवालकरे, फिर सर्व विरति सामायिक (चारित्र) लेना-क्यों-फरमाया? और तीर्थंकर-चक्रवर्त्ती-वगेराराजे महाराजोने दुनिया छोडकर-दीक्षा इख्तियार क्यों किई? जवावमें तलव करो,-जैनमजहबमे-मुक्तिके कई रास्ते फरमाये,-कोइशख्श सिर्फ! कामील एतकातसें मुक्ति पासके, कोई-स्वाध्यायमे मशगूल रहे-और-अपूर्वज्ञानके सुननेसेभी मुक्ति पासके, कोई दान देनेसें और कोई ब्रह्मचर्य पालन करनेसे-मुक्ति पासके, कोई तीर्थयात्रासे और-कोई व्रत-नियम-या-चारित्रपालन-करनेसे-मुक्ति हासिल करसके, जैनागम-आवश्यक सूत्रमे-वीशस्थानक आराधन करनेसे तीर्थंकरपद हासिलहोना फरमाया,-इनमेसे कोइशख्श-एक-स्थानक-आराधन करे, कोई-दो-और-कोई तीनस्थानक आराधन करे,-गरज सबमें दिलीइरादा पाक और साफ होना चाहिये-जिसशख्शका-जिसरास्तेके जरीये मुक्तिपाना ज्ञानीयोंने देखाहो,-उसीरास्ते चलकर-वोशख्श मुक्ति हासिलकरे,-चारित्र लेवे-या-न-लेवे, व्रत-नियम-इख्तियार करे-या-न-करे,-जिसका दिलीइरादा-पाक-और-साफ हुवा,-तो-सब-साफ है,-जिसके इरादेमे-फर्क तो-सबजगह फर्क है-चौदह पूर्वके पढेहुवे-ज्ञानी-और-यथाख्यात-चारित्र पालनेवालेभी-अगर-कामील एतकातसे-चुक-जाय-तो-ससार समुदरमें गिरकर-डूब-जाते है,-सबुत हुवा,-एतकात बडी चीज है,-देखिये! विदून श्रद्धाके चौदह पूर्वके ज्ञानने और यथाख्यात-चारित्रनेभी कुछ-काम-नही दिया, श्रद्धा कहो, आस्ता कहो,-इमान-कहो,-या-धर्मपर विश्वास कहो, बात एकही है,—

[व्रत-नियमके बारेमे-उत्सर्ग-और-अपवादमार्ग]

३८ उत्सर्गमार्गका फरमान,-सुनिये,!

वरमग्गिम्मि पवेसो,-वर विसुद्धेण कम्मणा मरण,-
मा-गहियवयभगो,-मा-जीय-खलिय सीलस्स,-१

(अर्थः) आतीशमे गिरकर-या-दुसरी तरहसे मरजाना बहेत्तर

मगर व्रत-नियम तोड देना बहेत्तर नही, यह उत्सर्गमार्गका
ता हुवा,—

[अपवादमार्ग क्या कहता है,—सुनिये !—]

सवथ्थओ संयमं,—संयमाओ अप्पाणमेव रखिज्जा,—
मुचइ अइवायाओ,—पुणो विसोहि तया विरई,—२

(अर्थः) अपवाद मार्ग कहता है,—अवल संयमकी (यानी)
-नियम रखनेकी हिफाजत करो, लेकिन! व्रत-नियमसेभी
पने आत्माके रखनेमे ज्यादह हिफाजत करो, आत्मा-कायम-र-
ा-तो-व्रत-नियम फिरभी वनसकेंगे-मगर जब-आत्माही-फना-
होजाय-तो-व्रत-नियम कैसे वनसकेंगे, देखिये! इस फरमानमे-
-नियमसेभी-आत्माकी हिफाजत करना ज्यादा-बहेत्तर समजा
ा,-और-व्रत-नियम-न-पल-सके-तो-कुछ-हर्ज-नही, इवनी
दिई, उत्सर्गकी-जगह-उत्सर्गमार्ग-और-अपवादकी जगह-
वाद मार्ग-दोंनोकों-उमदा-तौरसे समजना चाहिये, अगर अप-
-कम-अकलसें समजमे-न-आ-सके-तो-ज्यादह पढेहुवे कामी-
रुसें समजना,-मगर-एतकातमे-खलल डालना-बहेत्तर नही.—

[व्रत-नियममे-छह-तरहकी-छुट,]

राज्याभियोगोथ-गणाभियोगो,
वलाभियोगश्च-सुराभियोगः,-
कांतारवृत्तिर्गुरुनिग्रहो-चा,-
आकारखट्कं-जिनशासनोक्तम्. १

(अर्थः) राज्यके हुकमसें-जमातके फरमानसें-बलवानके कह-
ें देवताके कहनेसें-जगलझाडीकी मुसीबतसे-और-गुरुलोगोंके
कमसे-अपने-व्रत-नियमके खिलाफ कोइकार्य-करना पडे-तो-
हालतमे अपना व्रतनियम टुट नही सकता, हां! अगर अपनी
जीसें-दिलीइरादा-नापाक करदिया जाय-और-जान-बुज-कर
त-नियम-तोड देवे-तो-टुट सकता है,-सबबात-अपने दिलपर

दारमदार है,-जैनमजहबमे-आत्मा-निश्चयनयसें-साफ है,-मगर जनतक-मुक्ति नही पाता,-व्यवहारनयसे जन्म-जन्मांतर करता फिरता है,-जैनलोग-इन्सान,-जानवर,-और परींदोकी-उम्र-बडी-लंबी और उनका बदनभी-बडाउचा-होना मानते हैं,-और-ऐसा-मानना-जाइजभी है,-सबब-पेस्तरके जमानेमे-बडीउम्र और बडा-शरीर होताही-था,-इसमे कोइशक-नही,-जमाने हालमेभी-उसके-सबुत थोडेबहुत-मिलतेभी है,-सच-फरमान-पानीमे डुबता नही, आतीशमे जलता नही, और-किसीके-दबाये दबता नही, सचका इम्तिहान करना-आमलोगोंका-फर्ज है,-हरेक-जीव-अपने पूर्वसंचित कर्मके-उदयसें-जानवर-परींदे-दोजक और बहिस्तका सफर करता रहता है,-हा! इन्सानका चौला पाना-बेशक! आलादर्जेकी तकदीरके ताल्लुक है,—

[दिलीइरादेपर-उमदा-दलिलें]

३९ फर्ज करो,-दो-जैनमुनि-एक द्रख्तके नीचे-कायोत्सर्ग-ध्यानमे खडेथे,-एक-मुनिकी-आखे खुलीथी, दुसरोंकी बंद, इत्तिफाक! दो-चार-औरतें-पानी भरनेके लिये-जाती हुई-उसरास्ते निकली, एक-औरत कहनेलगी,-देखो! ये-मुनि कैसे अछे है, जो -आखे-बंदकरके-ध्यान करते है,-दुसरे मुनि-जो-खुली-आखें रखकर ध्यान करतेथे, उनकों-देखकर-कहनेलगी देखो! इनका देखने भालनेका-अबतक-नही मिटा,-इधर ज्ञानीशख्शोंके ज्ञानसे देखाजाय-तो-जिनकी आखे-बंद-थी,-वे-अपने दिलमे बुरे इरादे करतेथे, जिनकी-आखे-खुली-थी,-वे-बुरे इरादे नही करतेथे,-सच पुछो-तो-ज्ञानी शख्शोने जिनका-दिल-पाक-और -साफ देखा,-वेही-अच्छे है,-चाहे-आखे खुलीहो,-या-बंद, इन-बातोसें कोई गरज नही, दुनिया-दुरंगी है,-चाहे-सो-कहे,-ज्ञानी -कहे-वो-बात ठीक है,—

४० दुसरी मिशाल,-दो-शख्श एक रास्तेसें मुसाफरीकों-जा-

रहेथे, इत्तिफाक! उसरास्तेमे कीडे-मकोडे-बहुतायतसे फिर रहेथे, -जानेवालोंमें-एक-शख्श-देख देखकर इस इरादेसे चलताथा,- मेरे पांवसे कोई-कीडा-दबकर-न-मरजाय, दुसरा शख्श-विना-देखे चलताथा,-सबब-उसका इरादा जीनकों बचानेका नहीथा,- जिसका-इरादा जीनकों बचानेका था,-इत्तिफाक! उसके पांवसें-दो-कीडे दबकर-मर-गये, दुसरे शख्शके पांवसें-एकभी-कीडा-नही मरा, बतलाना चाहिये, इनमे पापी कौन? और धर्मात्मा-कौन? जवाबमें तलब करो, जिसशख्शका-इरादा-जीन बचानेका-था,-चुनाचे! उसके पावसें-दो-कीडे मरगये-तोभी-उसका दिलीइरादा-जीव मारनेका-नही-था, इसलिये उसकों भावहिंसा नही, और विदुन भावहिंसाके पाप नही, दुसरे शख्शके पावसें-चाहे-कोई-कीडा नही मरा, मगर उसका दिलीइरादा-जीव बचानेका नही, इसलिये-वो-भावसें-हिंसक है,-उसके शरीरसे-जीव-नही मरा-तो क्या! हुवा? दिलसे-उसने हिंसा किइ समजो, और इसी-लिये उसकों-पाप है,-वजहात दिलके इरादेपर दारमदार है,—

[बयान-पर्वतिथि और अधिकमहिनेके बारेमे -]

४१ जैन शास्त्रोंमे हरमहिनेकी बारातिथि फरमाई, दुज, पचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, और पौर्णिमा. वदीपक्षमे अमावास्या, इसतरह सुदी और वदी मिलाकर बारापर्वतिथि हुइ. बजरीये नजुमके अगरकोई पर्वतिथि-घट-बढ-जाय-तोभी पर्वतिथिकों घटाना बढाना नही कहा, सबब बारापर्वतिथिके रौज-धर्मकी तरक्की करना हुकम है,—

"क्षये पूर्वा तिथिः कार्या-वृद्धौ कार्या तथोत्तरे-"

अगर कोई पर्वतिथि घट जाय-तो-उस पर्वतिथिके पेस्तरकी अ-पर्वतिथिकों घटा देना, सबब-पर्वतिथिके व्रतनियममे खलल-न-पडे, और अगर नजरीये नजुमके पर्वतिथि बढजाय-तो-अगली पर्वतिथिकों पर्वतिथि शुमार करना, पेस्तरकी पर्वतिथिकों पर्वतिथिमे

शुमार नही करना, सनव-व्रतनियममे पुनरुक्त दोप-न-आजाय, जैन शास्त्रोंमे तीर्थंकरोंके हुकमकों-बशिरो चश्म-मजुर रखा गया है,-अगर किसी वर्समे अधिक महिना पेंश हो,-तो-पहलेवाला अधिक महिना चातुर्मासिक-वार्षिक-और कल्याणिक पर्वतिथिकी अपेक्षा व्रतनियमकी गिनतीमे नही लेना, आगेवाला अधिक महिना गिनतीमें लेना, कभी-लौकिक पचागकी अपेक्षा अगर चौमासेके दिनोंमे अधिक महिना-आजाय-तो-तपगछवाले-पहलेवाला अधिक महिना गिनतीम नहीं लेते, खरतरगछ और अचलगछवाले आगे वाला अधिक महिना गिनतीमें नहीलेते,-खरतरगछ और अचलगछवाले पर्यूपणकिये बाद (७०) दिनकी एवजमे (१००) दिन बाकी रखते है,-चौमासी-प्रतिक्रमण-चारमहिनेकी अखीरमे करना कहा, खरतरगछ और अचलगछ वाले पाचमहिनेकी अखीरम-चौमासी प्रतिक्रमण-करते है,-सबुत हुवा, उन्होंनेभी-चातुर्मासिक-व्रतनियमकी अपेक्षा अधिक महिना गिनतीमे नही लिया, अपने दिलमे चाहे जिस तरह समजे, मगर इन्साफ कहता है, उन्होंनेभी अधिक महिना गिनतीमें नहीं लिया, अगर गिनतीमे लियाहोता-एक महिना पेस्तर चौमासा खतम करके चौमासी-प्रतिक्रमण करलेते, और उनके मुनि महाराज-चारमहिनेकी-अखीरमे चौमासा खतम हुवा मानकर विहार करजाते,-मगर-करते नही, पाचमहिनेकी अखीरमे-करते है,-सौचो! इसके क्या सबुत हुवा,—

[पापकर्मके उदयसे अछी चीच मिले नही-]

[अनुष्टुप्-वृत्तम्,-]

अतरायक्षयादेव,-लाभो भवति नान्यथा,-
ततश्च वस्तुतत्त्वज्ञो,-नो-लाभमदमुद्वहेत्,-१

४३ अपने अतराय कर्मके दूर होनेपर इन्सानकों दिलपसद चीज मिलती है,-इसलिये लाजिम है,-फायदा होनेपरभी-दिलमे-गरूर-न-लावे, चाहे कोइ कितनीभी-कोशिश करे,-अतराय कर्म-वि-

नादूर हुवे–किसीकों कोईचीज नही मिलसकती,–दुनियामे मिशल मशहूर है,—

"उद्यमकरो हजार, भाग्य–विन–मिले–न–कोडी,—"

दुनियामें मोहनी कर्मका–जोरशोर–चलरहा है,–उसमें–धर्मपर–पाचंद रहे उनकी तारीफ है,–कामील एतक़ातसे–जो–कुछ धर्म-क्रिया किइजाय वही फायदेमद होगी,–विदून कामील एतकातके–इसजीवने फइमरतना चारित्र–इरितयार किया, मगर आत्माकों–कोई फायदा–नही मिला, वहिस्तके–एश–आराम मिले इसके क्या! हुवा? जिसके मिलनेसें असीरनतीजा तकलीफ पेश–हो–वो–आराम नही, वल्कि! तकलीफ है,–कई मरतवा–तप–जप किये–ध्यान–समाधि–किई, मगर विदुन क़ामील एतकात और कामील ज्ञानके कोई कामयान–न–हुवे,—

[शास्त्रार्थके लिये सभाकरनेका तरीका]

४४ किसी मुनिकों–या–दुनियादारकों–किसीकेशाथ–धर्मचर्चा-के–बारेमे–सभा–करनेकी–जरुरत पडे–तो–इसतरीकेसे करे, समाजका–कामसमाजकी–सलाहसें–होना चाहिये, अकेले बेठकर शास्त्रार्थकरना–समाजकों क्या! फायदा? अगर किसीएक शख्शकों किसीतरहके सवाल–जवान–पुछनाहो,–अपने जाहिर नामसे हस्ताक्षरकी सहीसे वजरीये अखवारके–छपवाकर पुछे, और जवानदेनेवालेभी–अपने–जाहिरनामसें अपने हस्ताक्षरकी सहीसे वजरीये अखवारके छपवाकर जवान देवे, जिससे पढनेवालोंकोंभी–फायदा,–हो, और–कोई शख्श–अपने सवाल जवानसे बदल–न–सके, साईल अगर अपने सवालमें–अपने–मतव्यकी सवुतीके शास्त्रपाठ–न–दे–तो–जवान देनेवालोंकोभी–मुनासिव है,–शास्त्रपाठ–न–देकर–दासले दलिलोसें जवान देवे,–दोनोंमेसें कोईशख्श–शास्त्रपाठ–न–दे–और दुसरोंसें–शास्त्रपाठ–मागे–तो–यह–बात–जाइज नही,–गुप्तनामसे सवाल करना, या–हितेच्छु, शुभेच्छक,–वगेरा नामातरसेभी–

सवालकरना,-कोई फायदा नही, इसी तरह जवाब देनेवालेभी-गुप्तनामसे-या-नामांतरसे पेश-न-आवे, दोनों तर्फसे-जाहिरनाम-गाम-पता-ठिकाना लिखकर सवाल जवाबमे-उतरे-निहायत-फायदा-होगा,-गुप्तनामसे-सवाल-जवाब-करना-क्या! मालुम होसके कौन लाजवाब हुवे, और फतेहमंद निकले!

४५ अपनी इबारतमे अपशब्द-न-लिखे, किसीके अंगत-टीका-न-करे,-और-विषयांतरभी-न-जाय,-जो-जो-सवाल पेश किये गये हो, उन्हीको-अपने लेखमे लिखकर-नीचे-अपना-जवाब देते रहे,-आचार्य-आचार्यकी चर्चा-चलती हो,-उपाध्याय-उपाध्यायकी-या-साधु-साधुकी चर्चा चलरही हो,-चेला उसके-बीचम-न-आवे,-अगर-आवे-तो-उसमे-गुरुकी-कमजोरी साबीत होगी, अगर गुरू-अपने नामसे-बजरीये अखबारके जाहिर करे, मेरी तर्फसें-मेरा-चेला-जवाब देगा,-और उसका लिखा मुजे मंजुर होगा-तो-कोई हर्ज नही,-अगर कोई-मुनि-या-गृहस्थविद्वान्की चर्चा-बजरीये अखबारके चलती हो,-लाजिम है,-जबतक आखरी नतीजा-न-आवे-दुसराशख्श-बजरीये लेखके-बीचमे-न-आवे, किसी तरहका-फारस-या-हासी-मजाख-न-करे, सभ्यतासें-उमदा-लब्जोंमे-इबारत लिखते रहे,-छापेमे-चर्चा-चलती हो, उस अर्सेम एक पक्षवाले दुसरे पक्षवालोपर हाथकी लिखी चीठी-न-भेजे, अगर लिखे-तो-दुसरे पक्षवालोंकों मुनासिब है, उसपर-अमल-न-करे, और बजरीये अखबारके जाहिर करे, फला शख्शकी-चीठी-आइथी,-उसपर अमल नही किया गया है,-जो-कुछ लिखना हो,-बजरीये छापेके लिखे,—

४६ अगर सभाकरके-शास्त्रार्थ-करना ठहरे-तो-यह-काम दोनो पक्षवालोंके आगेवानोका काम है,-मजहबी बहेस किसी एकके फायदेकी नही, बलकि! सब समाजके फायदेकी बात है, कोई एक-शख्श-दुसरेकों कहे-शास्त्रार्थ-करलो-और-समाजकी सलाह-न-

हो-तो-ऐसे-शास्त्रार्थसे कोई फायदा नही, इसलिये दोनोंपक्षवाले-अपने अपने आगेवानोंकी सलाहसें अपने मजहबके विद्वानोको-इत्तिला देवे,-जिससें किसीको ऐसा कहनेका मौका-न-आवे, हम-इसमे सामील नही थे, जो-जो-धर्मगुरू-या-विद्वान् इस सभामे-न-आ सकतेहो-अपनी अपनी-राय-लिखभेजे-इस सभामे-जो-कुछ-निश्चय होगा,-हमकों-मंजुर है,-इतिहासिक बयान पढनेसें मालुमहोता है,-पेस्तर-राजसभामे-बेठकर मजहबी बहेस करते थे,-जमाने हालमे अगर ऐसा-न-बनसके-तो-दुसरे मकानमें सभा करनाभी कोई हर्जकी बात नही,-मगर-उसमे-१-वादी, २-प्रतिवादी, ३-सभादक्ष-४-दंडनायक-और-५-साक्षी इन पाचोंकी जरूरत होगी, वादी-प्रतिवादी-सभामे सामसामने बेठे, सभादक्ष-(संस्कृत-प्राकृत-विद्याके पढेहुवे पंडित,) जब-बहेस-शुरूहो, वादी-प्रतिवादीकी दलिले लिखते रहे,-दंडनायक कहनेसें राज्यकी तर्फसे कोई अमलदार-उस सभामें आने चाहिये-जो-बेइन्साफ बात-बोलनेवालोंकों रोके, साक्षी (षट्दर्शनके जाननेवाले विद्वान्-) बतौर मध्यस्थके-उस सभामे बेठे,-जिससे वादी-प्रतिवादी अपनी प्रतिज्ञांसे बदलने-न-पावे, जिस मजमूनकी-चर्चा-करना मुकरर किइगई हो, उससें-कोई-शरश-विषयांतर-न-जाय, और शास्त्रसबुतसे-पेश-आवे, सभामे जिसकी फतेह-हो, षट्दर्शनके जाननेवाले-विद्वानोकी सहीसे-राज्यकी-महोरके शाथ-छपवाया जाय, जिससे आमलोगोंकों-रोशन-हो, सभामें-फलाने शख्शकीफतेह हुई, शास्त्रार्थकेलिये सभाकरना-तो-इस तरीकेसें करना चाहिये, कोरीबातोंसे-कोई-फायदा-न-होगा,-और नाहक! फिसाद बढेगा, इसलेखका मतलब-यह-हुवा, अगर वाद-विवादके सवाल-जवाब करना-तो-बजरीये अखबारके-और-अगर-सभा-करना तो-उपर दिखलाये हुवे-तरीकेसे-करना,—

[बयान-उत्सर्गऔर-अपवादमार्ग,-]

४७ जैनमुनिको किसी औरतका-स्पर्श-करना हुकम नही, मगर किसी नदीमे कोई साध्वी-वहती जाती हो,-उसहालतमे कोई जैनमुनि-उसे-पकडकर बहार निकाले कोई हर्जकी बातनही, जहां इरादा पाक और माफ हो, शास्त्रके हुकमकी अदुली नही होती, जैनमुनिको और साध्वीको एक मकानमें रहना हुकम नहीं, मगर नाराकोशकी-अटवीमें-शामके वरत-कोई जैनमुनि-और-साध्वी-सफर करते आगये, वहापर एकही-मकान-बना हुवा है,-इर्द गिर्द कोई मकान नही, उस हालतमे-जैनमुनि-और-साध्वीको-एक मकानमें ठहरना हुकम है,-इरादा धर्मकी हिफाजतका है,-पापका नही,-जहा इरादा धर्मका हो,-भावहिंसा-नही और विदुन भावहिंसाके पाप नही, अगर कोई शख्श-एक मकानमे-साधु-साध्वीका रहना देखकर दिलमे-शक-लावे-तो-उसकी मरजीकी बात है, -उसकी कोई परवाह-न-करना, अज्ञानी शख्श-अपने अज्ञानके-सवव-शक-लावे-तो-उसके कर्मका दोष है, अगर-अपनादिल-साफ हो,-पाच-इंद्रियोंकी विषय पुष्टिकी कोई बात-नही,-तो-अपनेको कोई-दोष नही, इस जीवको-अज्ञानके समान कोई दुश्मन नही,—

[मुक्तिजानेवाले जीव-मुक्ति जायगे, मगर दुनियाकी आखरी कभी-न-होगी -]

४८ दुनिया और मुक्ति कदीमसें है,-मुक्तिजानेवाले-जीव-मुक्ति जायगें मगर दुनियाकी आखरी कभी-न-होगी, सबब-रुहें बेशुमार है,-जैसे-काल-अनत है,-मगर उसका अत नही, वैसे-रुहे -अनत है,-उसकाभी-अत नही, भविष्य कालमेसें जैसे दिन रातके चौईसघटे-कम-होते जाते है, मगर भविष्यकालका अत नही आता,-वैसे-मुक्ति जानेवाली-रुह-मुक्ति जायगी, मगर उसका-

बिल्कुल अंत–नही आयगा, अगर–रुहे–बेंशुमार–न–मानी जाय– और उसकी कुछ तादाद मुकरर किईजाय–तो–दुनिया–कभी–बिल्कुल खाली होजाय–या–मुक्तिमेंसें–मुक्तात्माकों दुनियामे लोट आना–पडे, सबब–दुनिया और मुक्ति दोनो–अविनाभावी–पदार्थ है, –जेसे–पुन्य और पाप, दिन और रात, जीव और अजीव, दोस्त दुश्मन, राग और द्वेष–अविनाभावी शब्द है, दुनिया और मुक्तिभी–अविनाभावी–शब्द है,–इसलिये–रुहोका–बेंशुमार मानना जाईज हुवा,

[अनुष्टुप-वृत्तम् –]

आश्रवो भवहेतुः स्यात्–संवरो मोक्षकारण.
इतीयमार्हती मुष्टिः–अन्यदस्याः प्रपचन,–१

(अर्थः) पापके रास्ते खुले रखना बुरा है,–और उनको बंद करना मुक्ति पानेका सबब है,–अर्हन्–देवोंका–यही असली फरमान समजो, दुसरा सब इसीका फेलावहे,—

[श्रावक-श्राविकाके-व्रतनियमे]

४९ सचे देव–सचे गुरू–और सचे धर्मपर कामील एतकात रहना और मिथ्या प्रचारसे बचना–श्रावक श्राविकाका–फर्ज है, जीवोकी कत्लबाजी छोडना,–जूठ बोलनेसे परहेज करना,–अदत्त–आदान–व्रतपर साबीत–कदम–रहना, पराई औरतसे मर्दको–और–पराये मर्दसें औरतकों बचना, अपनी पैदाशपर–सब्र–करना, दिशीका–मान प्रमाण करना, रात्रीको खाना–पीना–कताई बंद, जमीकंदकी चीजोंसे–शराब–और गोस्तसे परहेज करना, सामायिक–देशावकाशिक–पौषधव्रत–और अतिथि संविभागव्रत–इख्तियार करना ये–सब–श्रावक–श्राविकाके व्रतनियम है,—

[चारतरहके-अदत्त–]

५०–स्वामी अदत्त, जीव अदत्त, गुरू अदत्त, और तीर्थंकर

अदत्त-ये-बाते काबिलेगोर है,-किसीकी कोई चीज विदून हुकम उठाना,-इसका नाम स्वामीअदत्त हुवा, किसीको-तकलीफ-पहुचाना, उनके वदनकों-छेदन-करना यह-जीवअदत्त हुवा, अपने उस्तादकी-कोईचीज-विदून हुकमके लेना, गुरू अदत्त-हुवा, विना हुकम तीर्थंकर देवोंके-कोई-काम करना, यह तीर्थंकर अदत्त हुवा, तीर्थंकर देवोंका हुकम नही, श्रावक देवद्रव्य-या-धर्मद्रव्य-अपने पास-न-रखे, न-मालुम कभी अपना काम कमजोर होजाय-तो-देना मुश्किल-पड-जायगा,-एक श्रावकने-मेरे सामने-कहा, मेरे -वालिदके इतकाल-समय मेने-तीन-हजार रुपये धर्मकामके लिये -बोलेथे, अवतक मेरे घरके चौपडेमे-जमा है,-और-व्याज देताहु, मेने कहा,-तीर्थंकरोंका फरमान देखो-तो-उसमे-साफ वयान है,-धर्मकी-रकम-जल्द-खर्च देना, घरमे-जमा-नही रखना, मगर-उसने-कुछ खयाल नही किया,-तीर्थंकर देवोका फरमान है,-जिन मदिरके पूजारीसें-या-नोकर चाकरोंसें-अपने घरका-काम मत लो, जिन मदिरकी-चीजे-छत्र-चमर-धोती-दुपट्टे-शतरज वगेरा नकरा देकरभी-अपने घरके काममे-मत-लाओ,-जिन मदिरमे बेठकर अपने घरकी पचात मत करो, हसी-मजाक-न-करो, अपशब्द-न-बोलो, जिनमदिरकी-हदमे-रसोई मत वनाओ, शतरज-चोपड-या-गजिफा-मत-खेलो, तीर्थंकर देवोंकी-वेंअदवी होगी, श्रावकको चमडा और हाथीदातकी तिजारत करना वहेत्तर नही, शरावकी दुकानकरना-जाइज-नही, अगर कोई श्रावक दुनिया दारीके काममे तरहतरहकी, तकलीफें वरदास्त करे,-मगर-धर्मके लिये तकलीफ-आनपडे-तो-वहाने वतलाकर अलग होजाय, क्या! खूब वात है,? गर्मीयोके दिनोंमे तीर्थोंकी जियारत जानाहो,-तो-कहेगें, वडी सख्त गर्मी पडती है,-और अगर किसीकी वरातमे जानाहो, फौरन! तयार हो जायगें, शरीरमें-भगदर-या-जलोदर वगेरा वीमारी होजाय-तो सहन-करलेवे,

मगर धर्मकेलिये तकलीफ सहन–न–हो–सके, सवेरसे शामतक–बल्कि! रातके दशनजे तक दुकानपर बेठे रहना हो–तो–शुस्ति–न आवे, और अगर जिन मंदिरके दर्शनोंको–जानाहो,–शुस्ति आजाय, अपनी–औरत–या–बेटेकी–चीठी–न–आइहो–तो–दिनरात फिक्र करते रहे, मगर देव गुरूधर्मका–फिक्र–बिल्कुल–न–करे, दुसरोंका देनाहो–तो–मयव्याजके देवे, मगर–जिनमदिरका–देना–हो–कई तरहके बहाने निकाले, विवाह सादीके काममे हजारा रुपये खर्च करडाले, मगर धर्मकाममे–सो–रुपयेभी खर्च–न–होसके, आजकल कई श्रावक ऐसाभी कहदेते है, प्रतिष्ठा–रथयात्रा–और–उद्यापन वगेराके जलसे करना बेहत्तर नही, इन्साफ पुछता है,–विवाहसादी–वगेराके जलसे करना,–कैसे–बहेत्तर हुवा? इसका कोई जवाब देवे, अगर कोई कहे विवाह सादीके–काम–विनाकिये–चलता नही, जबानमे मालुमहो, धर्मके–काम–विनाकिये कैसे चलसकेगा? परभवमे–तो–धर्मही–शाथ–चलनेवाला है,–इसबातपर–कौन–खयाल करे,—

[पाकीटकी–तरी–कम हो जाना]

५१ पाकीटकी–तरी–कमहोजाय–तो–सबजगह–सन्नाटा है,–बेरोजगार चाहे जहा फिरो, कोई पुछेगाभी–नही, जब दौलतथी,–धर्मकिया नही, सट्टेके व्यापारमे–पडकर–कर्जदार होगये, मिलता हुवा–नफा–लिया नही, पाकीटमे–खुश्की–आगई, दोस्तलोग फरार होगये, अब–रज–करनेसे क्या! फायदा? तकदीरके सितारेने–जोंफ–खाया,–ये–दिन पेश हुवे, जमीदारी गिरवी रखना पडी, खानपानसे–तग–हुवे,–जब नजुमकी तलाश करने लगे, मिलीहुई दौलतपर अगर शब्र करते, ऐसे दिन क्यों–पेश होते? बल्कि! मजेमे रहते, न–कोई–तकलीफ थी, न–फिक्र था, अब अपनी करनीके फायदे उठाओ, जब गरीबी पेश हुई,–कहतेहो,–हमारे पास पैसा नही, धर्म कैसे करे? मगर यह जबान काफी

नही, जिसका दिलीइरादा पाक और साफ हो-वो-दौलतपाकर धर्म करते है,-और फिर आइंदेभी-आरामचैन पाते है, दुनियामे मिशल मशहूर है,-"नियत वैसी बरकत"-सवेरका निकाला हुवा धर्मद्रव्य शामतक सर्फ कर देना चाहिये, लोभमे-आकर-अपनी दुकानके-चौपडेमे जमाकर रखना कोई धर्मशास्त्र नही फरमाते, देव-द्रव्य-या-धर्मद्रव्य देनेमे-एक दुसरेका-वहना वतलाना वहेत्तर नही, फलाना शख्श-देगा-तो-मे-दुगा, ऐसा कहना जाइज नही, अगर धर्मके कामका कोई-चंदा-कियाजाय-तो-कहते है,-फला-शेठने-सो-रुपये दिये-मे-उनसे ज्यादा कैसे दु? मगर धर्मशास्त्र फरमाते है,-धर्मकाममे-जिसकी-जितनी मरजी हो,-उतना देवे,-इसमे वहाना वतलाना जरूरत नही, अगर कोई इस दलिलको-पेंश-करे, हमारे शहरमे रवाज है,-अमुक शेठका नाम-चंदेमे अवल लिखाजाय, जव-चंदा-आगे चले, मगर ऐसा कहनाभी-मुनासिब नही, धर्मकाममे-जो-आगे-हो-वही वडा है,-दुनियामें सारवस्तु धर्म है,-अगर कोई श्रावक इस मजमूनकों-पेंश-करे, आजकलके-जैनमुनि-व्रतनियममे शिथिल आचारवाले होगये, हमारी-श्रद्धा-उनपर वेठती नही, जवावमें तलव करे,-श्रावक लोग अपने व्रत नियममे कितने कठीन आचारवाले वने है? इस वातपर खयाल करे, क्या! श्रावकोकों छुट मिली है,-जो-श्रावकके (२१) गुण -हासिल-न-करे, वारह व्रत-न-लेवे, चौदह नियम-धारण-न-करे, और श्रावक कहलावे, कोई श्रावक अगर खुद दीक्षा इख्तियार करके अपना कठीन अचार जाहिर करे, कौन-मना-करता है? कोरी वाते वनाना क्या फायदा? और ऐसी कोरीवाते वनानेवाले श्रावकोपर जैनमुनिजनोकी श्रद्धा-कैसे वेठेगी? इस वातकों सोचो! हरेक श्रावककों अपने धार्मिक वरतावपर खयाल करना चाहिये,-पर उपदेशमे कुशल वनना इससे अपने वरतावपर खयाल करना वहेत्तर है,-

[बयान-मुनि-धर्म,-]

कलम पहली,-जैनशास्त्रका फरमान है,-जैनमुनि-अप्रतिबद्ध हो-कर मुल्कोंकी सफरकरे,-सफरके वख्त किसी श्रावक-श्राविका-या-नोकर-चाकरकी मदद-न-लेवे, अगर कोई जैनमुनि-तीर्थ-समेतशि-खर,-राजगृही,-या-पावापुरी वगेरा जैनतीर्थोंकी जियारत जानेमे-बनारस जैनपाठशालामे-इल्माहासिल करनेके लिये जातेवख्त-या-मुल्क मारवाड, मेवाड, सिंध, पंजाब, राजपुताना, बंगाल, मध्यप्र-देश, विरार,-खानदेश,-या-मुल्के दखनकी सफर करतेवखत-श्रावक श्राविका-विद्यार्थी-नोकर चाकर शाथ चले, जैनमुनि-खुद-इसबा-तकों जानतेहो,-ये-सब-हमारे विहारके सबब शाथ चले है,-ऐसी मदद लेना,-उत्सर्गमार्गमे-समजना-या-किसमे? अगर कहाजाय-पहले जैसा-द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव नही रहा, पहले जैसी-शरी-रकी ताकात नही, रास्तेमे भिक्षाका-योग मिलता नही, इसलिये ऐसी मदद लेना पडता है,-तो-सबुत हुवा,-आजकल-उत्सर्ग मा-र्गपर चला नही जाता,-कमजोर मार्गका-सहारा लेना पडता है-कलम दुसरी, जैनशास्त्रोंमे-जैनमुनिकों-नवकल्पी-विहार करना फर-माया,-एक गांवमे-या-एक शहरमे-एक महिनेसें ज्यादा-ठहरना-हुकम नही,-चौमासेके दिनोमे चारमहिनेतक-एक गाव-नगरमे रहना, बेशक! हुकम है,-इसके खिलाफ अगर कोई जैनमुनि-एक गांव-नगरमे-एकमहिनेसें ज्यादा कयाम करे,-या-चौमासेके बादभी वर्स-छह महिनेतक वहांही ठहरे रहे,-तो-बतलाना चाहिये,-यह उत्सर्ग मार्ग हुवा-या-अपवाद मार्ग,? कलम तीसरी, उत्तराध्यय-नमें बयान देखो! उसमे साफ लिखा है,-दिवसके तीसरे प्रहरमे जैनमुनिको भिक्षाको जाना,-अगर कहाजाय, पहले जैसा वख्त नही रहा, शरीरकी ताकातभी कम होती जाती है,-इसलिये सवे-रके वख्त चाह-दूध, और दुफेर-शामकों-आहार लेनेके लिये भि-क्षाकों-जाना पडता है,-तो-सबुत हुवा,-आजकल उत्सर्ग मार्गपर

चलना नही बन सकता, चाहे-कोई जैनमुनि-अपनी धर्मक्रियाकी महत्त्वता करे, इससे क्या हुवा, कलम चौथी,-दशवैकालिक सूत्र देखो! उसमे साफ बयान है,-जैनमुनिकों-दिनमे-एकदफे खान पान करना,—

कलम पाचमी,-जैनशास्त्र फरमाते है, जैनमुनि-दिनमे नींद-न-लेवे,-अगर कहाजाय-पहले जैसी-ताकात नही रही, इस लिये शरीरकों आराम पहुचानेकेलिये-दिनमे नींद लेना पडता है,-तो-सबुत हुवा,-जमाने हालमे-उत्सर्ग मार्गपर चालना कम बनमकता है,—

कलम छठी, जैनशास्त्रोंका फरमान है,-अगर कोई जैनमुनि-जैन साध्वी-श्रावक-श्राविका-उपवास व्रत करे-तो-पहले रोज-एकाशना करे-और-पारनेके रोजभी-एकाशना करे, इसीतरह-दो-उपवास करे-तो-छह-टक और अठमकरे-तो-आठटक छोडे, ऐसा शास्त्रहुकम है,-सोचो! आजकल-इसतरह उपवास-व्रत-करनेवाले कितने है?—

कलम सातमी, जैनशास्त्रोम साफ बयान है,-जैनमुनि किसीके लडकेकों बिदून हुकम उनके वारीशोके दीक्षा-न-देवे, अगर कोई शख्श जैनमुनिके-सामने जानकर दीक्षा इख्तियार करनेका-इरादा-जाहिरकरे-जैनमुनि-उसके रिस्तेदारोको-इत्तिला दे, रिस्तेदार लोग अगर रुबरूमिलकर-या-बजरीये खतके इस बातकों मंजुर करे,-तो-उसको दीक्षा देना,-बिदून हुकम वारीशोके किसीके लडकेकों दीक्षा देना जैनशास्त्रका हुकम नही,—

कलम आठमी, जैनशास्त्रोंमे-जैनमुनिको-योगवहन करना-तो-जिस जैनशास्त्रका-योग चलताहो,-उस शास्त्रका मूलपाठ-मय-अर्थके-हिब्ज-यादकरे, अगर कोई-जनमुनि-कोरी तपस्या करके योग वहे-तो-वो-योगवहन जैनशास्त्रोंको-मंजुर नही, योगवहन करना उसहालतमेभी-बयालिस तरहके दोषोंसे रहित खानपानलेना कहा,

अगर कोई जैनमुनि-कोरीतपस्या करके योगवहन-करे, उसशास्त्रके मूलपाठकों-मय-अर्थके याद करे नही, और दुसरे जैनमुनिको कहे, -तुमने योगवहन-किये नही, इसलिये-हम-तुमारा लाया हुवा खानपान इस्तिमाल नही करसकते,-यह कहना खिलाफ जैनशास्त्रके-है,—

कलम नवमी, अगर किसी जैनमुनिको-आचार्य, उपाध्याय,-प्रवर्तक, गणी-या-गणावच्छेदक वगेरा पदवी इख्तियार करनाहो, पेस्तर उस पदवीके गुण हासिल करे, अगर कोई जैनमुनि मजकुर पदवीके गुण हासिल करे नही, और पदवीधारक बने-तो-यह बात खिलाफ जैनशास्त्रके है—

कलम दसमी, अगर कोई-जैन यतिजीहो-तो-उनकोंभी-पच-महाव्रत-पालन करना कहा,-साधु-मुनि-यति-संयमी-अणगार-श्रमण-या-निर्ग्रंथ-ये-सब-मुनिपदके नाम है, किसी जैनयतिजीकों जैनशास्त्रसे-छुट नही मिली,-खिलाफ जैनशास्त्रके कोई बरताव करे, दशविध-यतिधर्म-पालन करे उन्हीका नाम यति है,—

कलम ग्यारहमी, जैनमुनिकों-शहरके बहार उद्यान, बनखंड, बागबगिचे-या-पहाडकी गुफामें रहना फरमाया, सिर्फ! भिक्षा-केलिये बसतीमें आना,-और फिर बहार चले जाना, अगर कहा-जाय आजकल वैसी ताकात रही नही, द्रव्यक्षेत्र काल-और भाव-देखकर-गांवनगरमें रहना पडता है,-तो-मंजुर हुवा, आजकल उत्सर्गमार्गपर नही चला जासकता,-कोरी बातें बनाना क्या फायदा? अब श्रावकोंके धार्मिक बरतावपर खयाल किजिये! अगर कोई श्रावक अपने आपकों-उत्कृष्ट-व्रतधारी-समजतेहो-तो-आगे लिखी हुई-इबारत पढे,—

[दरबयान-श्रावक-धर्म,-]

कलम पहली, श्रावक-श्राविकाको मिथ्याप्रचारसे बचना और मुतानिक फरमान जैनशास्त्रके अमल करनाचाहिये,—

कलम दुसरी, हरेक श्रावककों अपनी सालियाना आमदनीसे आधा, चोथा, दसमा-या-कमसें कम-सोलहमा हिस्सा धर्मकाममें सर्फ करना चाहिये, विवाह सादीमे और दुसरे कामोमे हजारोंरुपये सर्फ करना,-इसकी क्या! वजह है,-?

कलम तीसरी, श्रावककों देवद्रव्य-या-धर्मद्रव्य-अपने-बही-खातेमे जमा रखना हुकम नही, जो-जो-रकम जिस जिस धर्मकामके लिये बोलीहो, फौरन! उस कामम खर्च देना चाहिये, जो-जो-श्रावक खर्च करते नही, और-अपने घरके बही-खातेमे-जमा रखते है,-उसको श्रावक धर्मके किस दर्जेपर गिनना? इसका कोई जवाब देवे,—

कलम चौथी,-माता-पिताके इतकाल होते वख्त जितनी रकम धर्मकामके लिये निकाली हो,-तुर्त उस काममे खर्च करदेना, कित नेक श्रावक-वो-रकम-तुर्त खर्चते नही, अपने चौपडेमे जमाकर लेते है,-मगर ऐसा करना कोई जैनशास्त्र नही फरमाता,—

कलम पाचमी, जैनशास्त्रोमे फरमान है,-श्रावक-बहुत अर्सेतक -शोंक सताय-न-रखे, किसी रिस्तेदारका अपने घरमे-इतकाल होजाय-तो-जब-उसका उठमना किया गया, फौरन! शोंकको उठादेना, कितनेक श्रावक-वर्ष वर्स-दो-दो-वर्सतक शोंक रखते है,-जैन तीर्थकी जियारत नही जाते, नवकारसी-या-स्वधर्मीवात्सल्यके-जिमनमें जाना परहेज करते है, अगर व्याख्यान धर्मशास्त्रकी सभामे कोई परभावना बाटे-तो-लेते नही, यह खिलाफ जैनशास्त्रके है,-ससारके कामकों मदद पहुचाकर धर्ममे खलल डालना धर्म चुस्तोंका काम नही,—

कलम छठी,-श्रावकको दरसाल एक जैन तीर्थकी जियारत करना चाहिये, कितनेक श्रावक वर्सोतक तीर्थोंकी जियारत जाते नही, इनकों श्रावक धर्मके किस दर्जेपर समजना? सोचो!

कलम सातमी, श्रावककों ताने उम्र-नवलाखदफे-नमस्कार महामंत्रका जाप करना चाहिये, कितनेक श्रावक करते नही, और कहते है,-हमकों फुरसत नही मिलती,-इन्साफ कहता है,-दुनियाके कामोंमे फुरसत कैसे मिलती है!-इसपर खयाल करो,—

कलम आठमी,-पनराह कर्मादान इख्तियार करना श्रावककों हुकम नही, जो-जो-श्रावक पनराह-कर्मादान इख्तियार करते है, उनकों श्रावक धर्मके किम दर्जेपर समजना, ?—

कलम नवमी, श्रावकको बारहव्रत इख्तियार करना और हरहमेश चौदह नियम पालन करना कहा,-जो-जो-श्रावक ऐसा करसकते नही, और कहते है-मुनियोंमें-सप नही, शिथिल आचारवाले-होगये, इन्साफ पुछता है,-श्रावक कौनसे कठीन आचारवाले होगये है,-?—

कलम दसमी, श्रावककों रात्रीभोजन करना मना है, जो-जो-श्रावक-रात्रीभोजन करते है,-उनकों श्रावक धर्मके किस दर्जेपर शुमार करना?—

कलम ग्यारहमी, श्रावककों हरहमेश-सामायिक-प्रतिक्रमण करना फरमाया,-जो-जो-श्रावक करते नही,-यह-उनकी धर्मक्रियामें कमजोरी-समजना-या-नही?-श्रावकोंकों-तीर्थंकरोंके फरमानमें-छुट-नही मिली है,—

कलम बारहमी,-जो-जो-श्रावक बयान करते है,-आजकल गरीब श्रावकोंकों रुपये पैसोकी मदद देना जरुरी है,-प्रतिष्ठाके जलसेमे-रथयात्रा-या-तीर्थयात्राके संघ निकालनेमे ज्यादा खर्च करना जरूरत नही,-मगर धर्मशास्त्र फरमाते है,-धर्मके काममे कमी करना बेहत्तर नही,-विवाह सादीके जलसेमें-मौज-शौखमें-और दुसरे काममे

कम खर्च करके-गरीब श्रावकोंको मदद-देना-ठीक है,-इस वातकों अमलमे-क्यों-नही लाते,? कोरी बातें बनाना-क्या फायदा?—

कलम तेरहमी,-कितनेक श्रावक कहते है,-जिनमूर्त्तिकी पूजामे अपवित्र केशर क्यों इस्तिमाल करना? जवाबमे तलन करो,-पानीमें कबूतरकी बीठ हाड चाम वगेरा नापाक चिजें पडीरहती है, उसकोभी छोडो, सरगीतवले चमडेके-बने हुवे होते है,-जिनमदिरम क्यों लेजाना? चमरी गौके पुछके वालोंसे बने हुवे,-चमरभी-जिन मदिरमे लेजाना कैसे जाइज हुवा? इसका कोई जवाब देवे,—

कलम चौदहमी, श्रावक-श्राविकाको-उपधान वहन करना, तो जिसजिस-सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्रके निभागका-उपधान चल ताहो,-उसका पाठ-मय अर्थके मुहजवानी याद करना और साथम क्रियाभी करते रहना चाहिये,-कोरीक्रिया करलेनेसे उपधान होगया समजना गलत है,—

कलम पनराहमी,-कितनेक श्रावक कोरी क्रिया करके उपधान वहन करते है,-और फिर प्रतिक्रमण करते वख्त दुसरे श्रावकोंको-कहते है,-हमारे प्रतिक्रमणम-तुमारा बोला हुवा, वदिता सूत्रवगेरा पाठ-कारआमद नही होता, मगर ऐसा कहना किसी जैनशास्त्रमेनही लिखा,-अगर-तो-कोरी क्रिया करलेनेसे-उपधान-होगया,-किसी जैनशास्त्रमें नही फरमाया आजकल न-मालुम-क्या रवाज-चलपडा है,-ज्ञान पढते नही, और उपधानमे दाखिल होजाते है,-कितनेक-श्रावक-श्राविका-ऐसेभीदेखे जाते है,-जिनकों-पुरा-सामायिक-प्रतिक्रमणभी कठाग्र नही और उपधान क्रियाममे सामिल होजाते है,-कितनेक श्रावक-श्राविका दुसरे श्रावक-श्राविकाकों कहते है,-इतनी उम्र होगइ-अबतक उपधानभी-नही किये? मगर ये कोई खयाल नही करता, उपधान क्या चीज है,-ज्ञानपढे विदून कोरीक्रियासे उपधान नही होते,—

कलम सोलहमी,-जैन शास्त्रोंमें बयान है,-देवद्रव्य-जमा नही रखना चाहिये,-जितना जिनमंदिरके खजानेमे-आताजाय-तुर्त-जिनमंदिरके-या-जिनमूर्त्तिके काममे खर्च-करदेना चाहिये,-श्रावकोंके-घर-जमा-रखना बहेत्तर नही, शिवाय अपने गांवके दुसरी जगहके जिनमदिरमे-या-किसी-जैनतीर्थके मदिरमें-मरम्मत-होना दरकार हो,-वहां-दे-देना-चाहिये,-सबजगह-तीर्थकरदेव-एकही है,-अगर कोई श्रावक इसबातपर अमल-न-करे, और कहदेवे, हमारे गावके मदिरका देवद्रव्य-दुसरे गावके मदिरमे क्यों देवे? मगर इस बातपर खयाल नही करते-यहांभी और-दुसरे गावमेभी-वही-चौइस तीर्थकर देव है,-यहांतक बातबनती है कि-अपने गावके मदिरमे जिनमूर्त्ति-ज्यादा हो,-दुसरे गांवके मदिरमें -जिनमूर्त्तिकी जरूरत हो,-और कोई श्रावक-मागने आवे-तोभी-नही देते,-अगर-कोई जैनमुनि-तालीम धर्मकी देकर-कहे-देना-चाहिये,-लेकीन! श्रावकलोग सुनते नही, बल्कि! कह देते है,-आप अपना धर्मध्यान किजिये, आपकों इसमे बोलनेकी-क्या जरूरत है, मगर इस बातपर खयाल नही करते दुनियादारीके-काममे-जैनमुनिको-बोलनेकी जरुरत नही,-मगर-धर्मके काममे क्यो-न-बोले,-?

कलम-सतराहमी, फर्ज करो! किसी-गांवमे-या-शहरमें-जिनमंदिरकी प्रतिष्ठाका जलसा हुवा-और-लाख-या-पचास हजार रुपये-देवद्रव्यके-जमा-हुवे-तो-जिनमदिरके-खजानेमे-रखकर-मुनिम-गुमास्तोंके जरीये-उसकी-व्यवस्था करना,-मगर-श्रावकोंके-घर -जमा कराना बहेत्तर नही,-तुर्त जिन मदिर-या-मूर्त्तिके-काममे-खर्च करदेना-या-पुराने जैनमंदिरकी-मरम्मत करा देना,-ज्यादे अर्सेतक-जमा रखना ठीक नही,-अगर किसी-गाव-नगरमें-धर्मशाला-या-उपाश्रय बनानेका-काम-चलताहो, और-कोई-श्रावक -मिलकर-सलाह करलेवे, और देवद्रव्यकी-रकम-साधारण खातेमे

-उधार लेकर-धर्मशाला-या-उपाश्रय बनवावे-तो-यहभी-जैनशा स्त्रका हुकम नही, देवद्रव्य-जिनमंदिर-या-जिनमूर्त्तिकेही-काममें-लगसके, दुसरेकाममे लगाना-तीर्थंकर देवोंकी हुकमअदुली करना है,-इतनेपरभी-कोई-श्रावक-इस बातकों-अमलमें-न-लावे-तो-उसकी मरजीकी-बात है,-धर्मशास्त्र-और-धर्म गुरुओका-फर्ज -है,-धर्मका-उपदेश देना,-मानना-न-मानना सुननेवालोंके-इख्तियार है,-तीर्थंकर देव-धर्मकी तालीम-आमलोगोंको-देतेथे, मगर नही माननेवाले नही मानतेथे, उनका-क्या! कियाजाय? धर्म-और-प्रीत-जोराजोरी नही होसकती,—

कलम अठारहमी,-अगर कोई इस दलिलको-पेश-करे, दुनियामें जितना-हक-मर्दका-हो-उतना औरतका-क्यो-नही?-औरत-अगर-इतकाल होजाय-तो-मर्दको-दुसरी औरत विवाहनेकी-छुट,-और-औरतको मर्द-इतकाल होजाय-तो-दुसरीदफे विवाह करनेकी छुट-क्यौं-नही? जवाबमे मालुम हो,-आर्य धर्मशास्त्र-औरतकों-दुसरीदफे विवाह करनेकी-छुट-इसलिये नही देते-औरतका-पुन्य-मर्दके पुन्यसें कमजोर है, जिसकाममे फायदा-कम-और नुकशान ज्यादा हो, वो-काम-करना काबिलेगौर नही,-दौलत-और-आराम चैनसे ज्ञान बडा है, ज्ञानीयोने-जो कुछ कहा, सौच-समजकर रही कहा है,-औरतकों-अगर पुनर्लग्न करनेकी-छुट-दिइ जाय-तो-पहलेवाले खाविंदकी-दौलत-दुसरे खाविंदके नजदीक लेजानेकी कोशिश करेगी, और इससे अछे अछे खानदान घरानोकी बरबादी होगी, मुताबिक जमानेके अदाज किया जाय-तो-मजहुर खान वढता जाना सभव है,-मगर परहेज करनेवाले परहेजभी करते रहेंगें, दुनियाका अजब रग है,-सबका-इन्तजाम कौन करसके, अपने आप-धर्मकी राहपर चलना यही मुनासिब बरताव है,—

कलम-उन्निसमी, अगर कोई श्रावक दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार करना चाहे, पेस्तर अपनेमे उतनी ताकाद हासिल करे, देवगुर

र्मपर-कामील-एतकात रहे, और इल्म हासिल करे, अगर दीक्षा ख्तियार करनेकी-ताकात-न-हो तीर्थोमे जाकर रहे और अपनी तफीमे धर्म करे, या-अपने घरमे-(१४) उपकरण-वस्त्र, पात्र, कं-ल, रजोहरण वगेरा रखे, दिली इरादा ऐसा करता रहे, कब-में-दु-निया छोडकर-साधु-होजाउं, परलोकका रास्ता साफ करुं, और-मोहनीकर्मको शकिस्त दुं, अगर कोई-जैनमुनि किसीके लडकेकों-बिना हुकम-उसके वारीशोंके दीक्षा देवे,-तो-जानना इनको चेलेका लोभ है,-अगर-लोभ-न-होता-तो जैनशास्त्रोकी हुकम अदुली-क्यों करते ?—

[हिदायत-बुतपरस्तिये-जैन,-]

१ जैन मजहबमे-बुतपरस्ति-कदीमसें मंजुर रखी गई है, और जमाने तीर्थंकर देवोंके चली आती है,-अगर सोचाजाय-तो-तमाम धर्म शास्त्र-एक-ज्ञानकी मूर्त्ति है,-बत्तीस-हर्फ-वही-शास्त्र और शास्त्र-वही-ज्ञानकी-मूर्त्ति,-जिन्होंने-शास्त्र मानना मंजुर रखा उन्होने मूर्ति मानना-मजुर रखा सावीत है,-तीर्थ-अष्टापदपर भरत चक्रवर्त्तीने-चौइस तीर्थंकरोके जैनमंदिर तामीर करवाये,-जैनागम आवश्यक-सूत्रमे-तेहरीर है,-जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके गौतम गणधर-तीर्थ-अष्टापदकी जियारतकों गये, और-वहा-एक-रौज ठहरे, फर्ज करो! अगर जैन मजहबमे मंदिर-मूर्त्तिका-मानना-जाइज-न-होता-तो-ऐसा पाठ-क्यौ-होता? जब-गौतम-गणधर-जैसे -आलिम-जैनमुनि-तीर्थकी-जियारतकों गये-तो-जैनमुनि-क्यौं-न-जाय? मूर्त्तिपूजासें-एक-नागकेतु-नामके शख्शकों केवल ज्ञान पैदाहुवा और जिनमूर्त्तिके दर्शनसें-आर्द्रकुमारने जातिसरणज्ञान पाया, तीर्थ-शखेश्वरमे-केशरियाजीमे-और तीर्थ अतरिक्षजीमे पुरानी-जैनमूर्त्तियें अबतक मौजूद है,-खयाल करो,-अगर जैनमजहबमे मंदिर-मूर्त्तिका-मानना कदीमसें-न-होता-तो-ये-पुरानी मू-

त्तिये क्यों होती?-और-शत्रुंजय-गिरनार समेतशिखर वगेरा पुराने जैनतीर्थभी-क्यों-होते?-—

२ जैनमजहबपर-कामील-एतकात-रखनेवाले सप्रति राजाने-हिंदमे सवालाख जैनमदिर तामीर करवाये, जो-तीर्थंकर महावीर-स्वामीके निर्वाण हुवे वाद (२९०) वर्स-पीछे हुवा,-शत्रुंजय-गिरनारपर राजा-सम्प्रतिके तामीर करवाये हुवे जैनश्वेतांवर मदिर अव-भी-कायम है,-जिनकों-शक-हो, जाकर नजरसें देखे-और-अपने दिलकी-तसल्ली-करे, शेठ-विमलशाह, दिवान वस्तुपाल-तेजपाल, उदायनमत्री-और-शेठ-भैंशासाहके तामीर-करवाये हुवे-जैनश्वेतांवर-मदिर-आबु-वगेरा तीर्थोमे खडे है,-राजा-कुमारपालका-बनाया हुवा जैनश्वेतांवर मदिर, तीर्थ-तारगापर किस-कदर-उमदा-और-सगीन-है,-जिन्होंने देखा-होगा, वखूबी जानते होगें, जैन-आगम-ज्ञातासूत्रमें-सतरांहभेदी-पूजाका जिक्र-है,-फर्जकरो! अगर जैनमजहबमे बुतपरस्ति-न-होती-तो-ऐसा जिक्र क्यों होता? जैसे हर्फोंकों देखकर-इवारतका मतलब हासिल होता है,-मूर्त्तिकों देखकर तीर्थंकर देवोंकी ध्यान समाधिका ज्ञान हासिल होता है,-जिसने धर्मपुस्तकोकी इज्जत किई, उसने मूर्त्तिकी इज्जत पहले किई समजो,-कितावमें लिखे हुवे-हर्फ-ज्ञानकी मूर्त्ति-नही-तो-दुसरा क्या है?-अगर कोई-इस-सवालकों पेंश करे, मूर्त्तिपूजा उमदा चिज है-तो-मुनि-खुद पूजा क्यों-नही करते? जवावमे मालुम हो,-वदन, नमन, स्तवन वगेरा भावपूजा-मुनिभी-करते है,-गणधर-गौतमस्वामी-तीर्थ अष्टापदकी जियारतको गये,-यह-भावपूजा हुई-या-नही? चैत्य शब्दका-माइना-जैनमदिर और-जिनमूर्त्ति है,-जो-शख्श चैत्य शब्दका-ज्ञान-अर्थ करते है,-उसकी गलती समजो,-किसी-कोशमे-नही लिखा, चैत्य शब्दका-अर्थ-ज्ञान है,-अगर कोई-इस-दलिलकों पेंश करे, मूर्त्ति-जड है,-इसे-क्यों मानना? जवावमें तलब करे, कागज-स्याहीके बनेहुवे-धर्म-

पुस्तकभी-जड है,-उनकों क्यों-मानना? साधुका वेश-जड है,-उनकों-देखकर-वंदन-क्यों-करना? इसका जवाब दो, ज्ञाता सूत्रमे-लिखा है,-द्रौपदी-जब-स्वयवर-मडपमे-गई अवल-जिनप्रतिमाकी पूजा करके गई थी, आजकल-कितनेक जैनश्वेतांबर श्रावक विवाह सादीमे-तो-क्या! मगर-परवस्त-पूजनकेभी हाजिर नही रहते, कितनेक श्रावक कहदेते है,-हम-तो-पूजन करते करते-थक-गये, जबानमें तलब करे, दुनियादारीके कार्य करते-नही थके, और धर्मके कार्यमे थक-गये, क्या खूब बात? हर-श्रावकों-मुनासिब है,-अगर आइंदे अपना-भला-चाहे,-तो-देवपूजनमे शुस्ति-न-रखे, जिससे आपना परलोकका रास्ता साफ हो,-दुनियादारीके काम-तो जींदगीकी आखीरतक लगे रहेगें,—

२ रायपसेणी सूत्रमें बयान है,-सूर्याभ देवतानें स्वर्गमेभी जिनप्रतिमाकी-पूजा किई,-अगर अविरति समदृष्टि-देवताकी धर्मक्रिया-कुछ-गिनतीमे शुमार नही करते हो-तो-अविरति-समदृष्टि-देवेंद्रका-कहाहुवा,-नमुथ्थुण-पाठ-क्यों पढतेहो? श्रेणिकराजा-अविरति-समदृष्टि-श्रावक था, जिसने बिदून-व्रतनियमके-तीर्थकरपद हासिलकर लिया,-श्रद्धा-और-ज्ञान मौजूद हो,-तो-बिदून व्रतनियमके भावनासेभी केवलज्ञान और-मुक्ति-हासिल करसकता है, -जैनशास्त्रोंमें तीर्थ-दो-तरहके फरमाये, एक-स्थावरतीर्थ, दूसरा जंगमतीर्थ,-अष्टापद-समेतशिखर,-शत्रुंजय, गिरनार, आबु, तारगा, राजगृही, पावापुरी, चंपापुरी, अयोध्या, बनारस, हस्तिनापुर, अंतरिक्षजी-शखेश्वर वगेरा, स्थावरतीर्थ है,-साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, जंगमतीर्थ है,-जीवाभिगम सूत्रमे-बयान है,-भुवनपति, वाणव्यंतर, जोतिषी, और-वैमानिक देवते नदीश्वर द्वीपके-जैनमदिरोंकी जियारतकों-जाते है, और वहा-जलसा करते है,-भगवती सूत्रमे तेहरीर है,-स्वर्गमे-जहा-सुधर्मा सभाके-माणवक-चैत्यस्तंभ है, उनमे-जिनेंद्रोंकी-डाढा-रखी हुई है,-देवते-उनकी-इज्जत करते है,-यह-

मूर्त्तिपूजाकी-एक-उमदा दलिल है,-उपाशकदशागसूत्रमे-आनद, -कामदेव,-वगेरा-श्रावकोने जिनप्रतिमाका-वदन-नमन-पूजन करना खुला रखा है,-तीर्थंकरोके समवसरणमे-पूर्वदिशाके सामने-खुद -तीर्थंकर देव-तख्तनशीन होते है,-बाकी रही हुई-दखन, पश्चिम, और-उत्तर दिशामे-तीर्थंकर देवोकी तीन मूर्त्तिये-देवते लोग जायेनशीन करते है,-यह-मूर्त्तिपूजाकी-आलादर्जेकी दलील है,-तीर्थंकरोंकी मौजूदगीमे बुत्परस्ति किई जातीथी,-तो-आज-उनका कोई -कैसे इनकार करसकता है? दशवैकालिक सूत्रकी-निर्युक्तिमे-बयान है,-जैनाचार्य-शय्यभव सूरिजीने-जिनमूर्त्तिकों देखकर बोध पाया, १-जिनमूर्त्ति, २-जिनमदिर, ३-ज्ञान, ४-साधु, ५-साध्वी, ६-श्रावक, ७-श्राविका-ये-सातक्षेत्र-जैनमजहबमे बयान फरमाये, अगर मदिर और मूर्त्तिका-मानना कोई-इनकार करे-तो-उनकों सात क्षेत्रमेसें-पाच धर्मक्षेत्र-बाकी-रहेगें, और रहना चाहिये-सात, -जैन कहलाकर-जिनमूर्त्ति-और जिनमदिरकों नही माननेवाले स्थानकवासी-और-तेरहपथ-ये-दो-फिरके-जैनमे मशहूर है,-सातधर्मक्षेत्रमेसें-मदिर-मूर्त्ति-दो-धर्मक्षेत्र-न-माने-तो उनकों पाच धर्मक्षेत्र हुवे, कई-शिलालेख-जमीनसे निकले हुवे-ऐसें-मिलते है,-जिन्होंमे-जिनमदिर, और-जिनमूर्त्तिके-लेख है,-सौचो! अगर-जैनमजहबमे-बुत्परस्ति-नाजाइज-होती-तो-ऐसे लेख-क्यों-पाये जाते?-ज्ञातासूत्रमें-बयान है, तीर्थंकर-मल्लिनाथकी-ससारिक-हालतकी-मूर्त्ति-देखकर-छह-मित्रराजोंने-जातिसरणज्ञान पाया,-जैसे किसी -शख्शकी तस्वीर देखकर-उसकी-यादी-आजाती है,-जिनेंद्र देवकी तस्वीर देखकर-जिनेद्र देव-याद-क्यौ-न-आयगें? अगर कहाजाय पत्थरकी गौ-दूध-नही देती-तो-पत्थरकी मूर्त्ति-मुक्ति कैसे देगी? जवाबमे तलब करो, कागज-स्याहीके बनेहुवे-धर्मपुस्तक जड है,-वे-मुक्ति कैसे देयगें? उनकों क्यौ मानते हो? अगर कहाजाय-पुस्तकके बांचनेसे ज्ञान पैदा-होता है,-तो-जवाबमें

तलन करो,-मूर्त्तिके दर्शनमेंभी-ज्ञान पैदा होता है,-जम्बूदीप
फशा देखकर-जैसे जम्बूद्वीपका ज्ञान होता है,-जिनेंद्र देवकी
देखकर-जिनेंद्र देवका ज्ञान होना कौन-इनकार कर सक
कई शहरोंमे राजे-महाराजोंकी मूर्त्तिये-धातु-या-शंगेमरमर
हुइ बतौर याददास्तीके खडी किई जाती है,-उनकों देख
राजे महाराजे याद आजाते है,-और तमाम लोग उनकी इ
रते है, हुडी-और-नोंट-एक तरहकी स्थापना है,-स्थापना
आलादर्जेकी चीज है-जिससे-उसमे लिखे मुताबिक रुपये पैसे
जाते है,-रजोहरण-मुखवस्त्रिका जैनमुनिका वेश है,-उसकों
करनेवाले-जन-दिखाइदे-तो-देखनेवालोंके दिलमे-मुनि-य
जाते है, अगर कोई कहे-सिंहकी-मूर्त्ति-किसीकों-मारती
इसी तरह-जिनेंद्रकी-मूर्त्ति-किसीकों तारती नही, जवाबमे
हो,-सिंहकी मूर्त्ति-देखकर जैसे सिंह-याद-आजाता है,
दिलमे-एक तरहका-खौफ-पैदा होता है, इसी तरह-जि
मूर्त्ति देखकर-जिनेंद्र देव-याद आते हैं, और दिलमे-वैरा
होता है,-सबुत हुवा,-मूर्त्ति-उस चीजकी-यादी-दिलानेमे
मददगार चीज है,-बहिस्त-और-दोजककी-तस्वीरे देखकर
भी-ताज्जुब करता है, देखिये! तस्वीरोने कितना असर पहु
-जिनकों देखकर बहिस्त और दोजक याद आगये,-दुसरे
आई हुई-चिठीके-पढनेसें वहाका हाल-घरबेठे मालुम होसक
-देखिये! हर्फोंमे-कितनी-ताकात रही हुई है,-जिससे
हालत दिलमे रोशनहो गये, जैनरामायणमे बयान है,-रामच
-भेजीहुई-अंगुठीसें सीताजीकों-लंकामे-खुशी-पैदा हुई!
सीताजीके भेजे हुवे कंकनसे-किष्किंधामे-बेठे हुवे-रामच
खुशी-हासिल हुई, समज-सको-तो-समज लो! जड चीज
तनकों-कितनी खुशी पैदा-कर दिखाई-?—

४ पाडवचरितमे बयान है,-एक-भिल्लने-जगलमे-द्रोणाचार्य-जीकी मूर्त्ति बनाकर-उसको-गुरूसमान मानी, और उससे धनुष्य विद्याका इल्म हासिल किया, देख लो! बदौलत-उस मूर्त्तिके-उस भिल्लको कितना फायदा हुवा? भगवती सूत्रमें लिखा है, जब-असुर कुमार देवता-सौधर्म देवलोकको जावे-तो-अरिहत देवके-अरिहत-देवकी-मूर्त्तिके-या-भावित आत्मा-अणगारके विना-सरण लिये नही जा सकता, सौचो! अगर अरिहतकी-मूर्त्ति-जैनमजहबमे जाइज-न-होती-तो-ऐसा पाठ क्यों होता? मगर पाठ जरूर है,-मूर्त्ति-न-माननेवालोंके खयालसे दूर है,-अगर कोई शख्श चैत्यशब्दका-माइना साधु-या-ज्ञान-बतलावे,-तो-जैन आगमके पाठसे साबीत करे,-या-किसी-कोशका-सबुत पेश करे,-अगर चैत्य-शब्दका-माइना-साधु-होता तो उपर दिखलाये हुवे-भगवती सूत्रके पाठमे-चैत्यशब्द-जुदा-और साधु शब्द-जुदा क्यों! लिखते? चैत्यनाम-जिनमदिर और जिनप्रतिमाका है, तीर्थंकर महावीरके चौदह-हजार-साधु-जैनशास्त्रमे बयान फरमाये, चौदह-हजार-चैत्य-नही फरमाये,-अमुक-जैनाचार्यके शाथ-इतने साधु सफर करतेथे लिखा, मगर इतने चैत्य-सफर करतेथे नही लिखा, चैत्यनाम-ज्ञान-कामी-किसी जैनशास्त्रमे नही फरमाया,-जैनआगम-नदीसूत्रमे [illegible] नाण-पन्नत्त कहा, मगर पचविह-चेइय-पन्नत्त नही कहा, इसी लिये कह सकतेहो-चैत्यनाम-साधु-या-ज्ञानका नही, बल्कि! जिन प्रतिमा-और-जिनमदिरका-है,—

५ अगर कोई तेहरीर करे,-धर्म-दयामे है,-तो-मदिर बनवाना मूर्त्तिको फूल चढाना, सरगी-तबले बजाना, इसमे दया कहा रही? जनाबमे तलब करे, अगर धर्म-दयामेही-है-तो-स्थानक बनाना, दीक्षाका जलसा करना, दीक्षाके जलसेमें आये हुवे श्रावकोंको-भोजन-जिमाना, अपने धर्म गुरुओंको-वदन करने जाना,-या-अपने धर्मके गुरुवोका-इतकाल होजाय-तो-विमान बनाकर-जुलुसके शाथ-अग्नि-

सस्कार करनेको लेजाना-सूक्ष्मजीवोंकी हिसा इसमें होगी-या-नही? फिर दया कहा रही? अगर कहाजाय-इन कामोंमे इरादा धर्मका है,-इसलिये भावहिसा-नही, और-विदुन भावहिसाके-पाप नही,-तो-फिर-इसी तरह-जिनमदिर बनवाना रथयात्राका-जलसा-करना, तीर्थकी जियारत जाना,-स्वधर्मीवात्सल्य-करना-इनकामोंमेभी-सूक्ष्मजीवोंकी-हिसा होते हुवेभी इरादा-धर्मका होनेसे भावहिसा नही, और-विदून भावहिसाके-पाप-नही ऐसा क्यों-न-कहा जाय? मुनिजनोंको-विहार करनेसें वायुकायकी हिसा होगी, दयाधर्मी-मुनिकों-विहार क्यों करना? जैनमुनिको भिक्षाके लिये जाना, प्रतिक्रमणमें-बैठना-उठना-उसमेभी वायुकायके जीवोंकी हिसा होगी,-मंदिर-मूत्तिके पूजनेमें सूक्ष्मजीवोंकी हिसा होना मानकर नामंजुर रखी-तो-उपर लिखी हुई बाते क्यों मजुर रखी गइ? अगर कोई-इस मजमूनकों पेंश करे,-चौवीस तीर्थंकरोंके-शासनमें-चक्रवर्ती-वासुदेव,-प्रतिवासुदेव, बलदेव, और-छत्रपति, कइ राजे महाराजे हुवे,-किसकिसने जैनमदिर तामीर करवाये,-(जवाब) भरत चक्रवर्त्तीने तीर्थ-अष्टापदपर जैनमदिर तामीर करवाये,-वासुदेव, बलदेव, प्रतिवासुदेवोंने-अपने अपने राज्यमें जैनमदिर तामीर करवाये है,-तीर्थंकर महावीर स्वामीके जमानेमें श्रेणिकराजा-जिनप्रतिमाकी पूजन करताथा,-राजा-सम्प्रतिके बनवाये हुवे-जैनश्वेताबरमदिर तीर्थ-शत्रुजय-गिरनारपर खडे है,-राजा कुमारपालके बनवाये हुवे जैनश्वेताबर मदिर शत्रुजय गिरनार आबु और तीर्थ तरगा पर-बेंशकिमती-बने हुवे मौजूद है,-जिनकों-शक हो, जाकर देखे, तीर्थ-पावापुरीमे-जहा-तीर्थंकर-महावीर स्वामीका-निर्वाण हुवाथा, उस वख्तका बना हुवा, जैनमदिर-अवतक कायम है,-जहा हरसाल दीवालीके रोज-निर्वाणका-जलसा होता है,-जिनोंने देखा होगा,-बखूबी जानते होंगे,-तीर्थ-चपापुरी,-क्षत्रियकुड, हस्तिनापुर, अयोध्या, रत्नपुरी, शौरीपुर, कपीलपुर,-बनारस,-सिंहपुरी, चद्रावती,

मथुरा, और राजगृही-वगेरा पुराने जैनश्वेतांबर तीर्थोंमे-पुराने जैनमंदिर-बुतपरस्तिकी साबीती देते है,-मुल्क मेवाडमे तीर्थ-केशरीयाजी-जहा-मणोबद केशर-चढायाजाता है,-बडा-चमत्कारी जैनतीर्थ-शखेश्वर-जो-मुल्क गुजरातमें है,-निहायत पुरानी जैनमूर्त्ति वहापर तख्तनशीन है,-तीर्थ-अतरिक्षजी मुल्क विरारमे पुराना जैनतीर्थ काबिलेदीद है, इन सबुतोंसे पाया गया जैनमजहबमे-बुतपरस्ति-कदीमसें-है, मूत्तिका-मानना कइ लोग मजुर नही रखते, मगर अपनी तस्वीर फोटोमे उतरवाते है, उन लोगोंसें जब दरयाफ्त कियाजाता है,-मूर्त्ति माननेसें-आपलोग खिलाफ है,-फिर तस्वीर उतरवानेका क्या! सबब? जवानमे-कोई-माकुल दलिल पेंश नही करसकते—

[एक विद्वान्के-सवालोंका-जवाब]

सवाल, बुतपरस्ति जैनमे नयी शुरू हुइ-या-कदीमसे है?
जवाब,-जैनमे बुतपरस्ति कदीमसें है,-नयी शुरू नही हुई.-जितने धर्मशास्त्र है,-सब-ज्ञानकी मूर्त्ति है,-जिसने धर्मशास्त्र मानना मजुर रखा, उसने मूर्त्तिमानना मजुर रखी, इसमें कोई शक नही, युरोप, एशिया, अमेरिका, आफ्रिका और-आस्ट्रेलिया वगेराके नकशे क्या चीज है? सोचो! दरअसल! येभी-जमीनके आकारकी शिकल है, कई मजहबवाले किसी नदी-या-पहाडकों जियारतगाह मानते है, -यह-क्या बात हुई इसपर गोर करो, बम्बई-कलकत्ता-वगेरा शहरोमे-बडेबडे-मशहूर शख्शोंकी-धातु-या-सगेमरमरकी बनीहुई-मूर्त्तियें-जाहेर रास्तोपर जायेनशीन है,-उन महाशयोंकी-साल गिरहके रोज-उन-मूत्तियोपर फुलोंके-हार-पहनाये जाते है,-यह-उनकी इज्जत हुई-या-नही?—

सवाल-तीर्थंकरदेव मुक्ति हुवे बाद निराकार होगये, फिर मूर्त्ति किसकी समजना?—

(जवाब) तीर्थंकर देवका ज्ञान निराकार है,-फिर आचाराग-वगेरा सूत्र-सिद्धात किसकी मूर्त्ति समजना ?-अगर कहाजाय-उनके ज्ञानकी मूर्त्ति समजना-तो-इसीतरह तीर्थंकर देवकी मूर्त्तिकों उनके शरीरकी मूर्त्ति-समजना,—

सवाल-तिसरा,-तीर्थंकरदेव त्यागी थे-या-भोगी, ?

(जवाब) जबतक दुनियादारी हालतमे-थे, भोगी,-और दीक्षा इख्तियार किये बाद त्यागी,-साइल बतलावे, जब तीर्थंकर देव-समवसरणमे-रत्न-सिंहासनपर बेठकर-आमलोगोंको तालीम धर्मकी देते थे,-त्यागी-मानतेहो-या-भोगी, सवाल ऐसा करना चाहिये,-जिसका जवाबदेना-मुश्किल पडजाय,—

सवाल-चौथा,-जिनमूर्त्तिपर-सचित्तफुल चढाना,-सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा हुई मानतेहो-या-नही ?—

(जवाब) स्थानक बनवानेमे-सचितपानी,-मिट्टी-और-वनास्पतिकायके सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा हुई-मानतेहो,-या-नही ? दीक्षाके जलसेमे बाजें-बजवाना, आये हुवे,-श्रावकोंकों-रसोई-जिमाना, उसमे वायुकाय-अपकाय-तेउकाय-और-वनास्पतिकायके सूक्ष्मजीवोंकी हिसा हुई-मानतेहो-या-नही ? अगर कहाजाय,-इनकामोंमे -इरादा-धर्मका है,-इसलिये भावहिसा नही, और विना भावहिसाके-पाप-नही,-तो-यही दलिल-जिनमदिर और-जिनमूर्त्तिकी पूजाके-बारेमे-क्यों-न-लाई जाय ? इन्साफ-वो-चीज है,-जिसके सामने बडेबडे आलिमोंकोभी-लाजवाब होना पडता है,—

सवाल पाचमा, आनद कामदेव वगेरा दश-श्रावकोमेसे किस किसने जिनप्रतिमा पूजी-?—

(जवाब)-सूत्र-उपाशक-दशागमें देखो-आनंद-कामदेव-वगेरा सभी श्रावकोंने-जिनप्रतिमाकों-मानी-पूजी है,-मगर-आनंद कामदेव-वगेरा श्रावकोंमेसे किस श्रावकने-मुहपर-मुहपत्ति-बाधी ?

इसका जवाब देना चाहिये,-किसी जैनशास्त्रमे मुंहपर मुहपत्ति-बाधना नही लिखा,-अगर लिखा हो-तो-कोई पाठ बतलावे,—

सवाल-छठा, मुहपत्ति हाथमे रखना किस जैनशास्त्रका-पाठ है,?

(जवाब) जैनागम-ओघ-निर्युक्ति-शास्त्रमे पाठ है,-जैनमुनि-मुहपत्ति हाथमे रखे, और शास्त्र बाचतेवख्त-या-बोलतेवख्त मुहके आगे रखकर बोले,—

सवाल-सातमा,-चैत्य-शब्दके कितने माईने होते है ?—

(जवाब) चैत्यशब्दके-माइने-जिनमदिर और-जिनमूर्त्ति-ये-दो-होते-है-इससे ज्यादा नही,—

सवाल-आठमा, कृत्रिम-चीजकी-स्थिति कितने कालकी फरमाई?

(जवाब) कृत्रिम-चीजकी-स्थिति सख्यात कालकी फरमाई, और अगर कोई देवता-अधिष्ठायक बनजाय-तो-उसकी स्थिति-असख्यात-कालकीभी-हो सकती है,—

सवाल-नवमा, कल्पसूत्रमे बयान है,-तीर्थंकर महावीरके निर्वाणसमय-उनके जन्म नक्षत्रपर-जो-भसराशि-नामका ग्रह आया था, उसके दूरहोनेपर-जो-जैनमुनि-और-जैनसाध्वीकी-उदय-उदय-पूजाहोना लिखा,-वो-किस जैनमुनि-और-जैनसाध्वीकेलिये समजना ?

(जवाब)-जो-जो-जैनमुनि-और जैनसाध्वी-कल्पसूत्रकों मानना मजुर रखते हैं,-उनके लिये समजना,-जो-जो-जैनमुनि-और-जैनसाध्वी-कल्पसूत्रकों-मानना मजुर नही रखते, उनके लिये नही समजना-जैन मजहबके नदीसूत्रमे चोरासी-जैनागम-वगेरा-चौदह-हजार-प्रकीर्णक-जैनशास्त्र मानना फरमाया,-मुहपर मुहपत्ति बाधना किसीमे नही फरमाया,-जो-जो-जैनमुनि-और-जैनसाध्वी-बत्तीस सूत्रके पाठकोंही मानते है,-कल्पसूत्रकों नही मानते, उनके लिये नही फरमाया,-जो-जो-जैनश्वेताबरमुनि-और जैनसाध्वी-कल्पसूत्रकों मानते है,-जैनमदिर-जिनमूर्त्ति-और-जैनतीर्थोंकों-मानना म-

जुर रखते है,-उनकेलिये समजना,-देख लिजिये! इसवख्त जैन-श्वेतांबर मुनि-तमाम-हिंदमें सफर कररहे है,-जगह-जगहपर नये जैनश्वेतांबर मंदिर बन रहे है,-जैनधर्मशाला-और-जैनपाठशाला खुल रही है,-यह-सब-उदय-उदय-पूजा नही-तो-और क्या है,? युगप्रधान यंत्रमें-जो-पांचमें आरेमें-तेइस दफे जैनधर्मका-उदय-होना लिखा, मुताबिक उस फरमानके इस वख्त तिसरा उदय चल-रहा है,-जिनकों-शक-हो-युगप्रधान-यंत्र-देखे, और अपना-शक -रफा करे,—

सवाल-दशमा, जैनशास्त्रोंमें-जो-जैनमुनि-जैनसाध्वी-श्रावक-और-श्राविका-पांचमें आरेकी-अखीरतक मौजुद रहेगें बयान है,-किस मुल्कमें-रहेगें-ऐसा समजना?—

(जबाब) भारतवर्षके-छह-खंडोंमें-जो-दखन तर्फके तीनखंड है,-उसके मध्यके-खंडमें रहेगें, ऐसा समजना,—

सवाल—ग्यारहमा,-सम्यक्-दृष्टि-जैनमुनि-जैनसाध्वी-श्रावक और श्राविका-सम्यक्तधारी देवताकों-मानना मंजुर रखे-या-नही?

(जबाब) सम्यक्दृष्टि-देवी-देवताकों-चतुर्थ-गुणस्थानवाले हो-नेसे स्वधर्मीकी-अपेक्षा मंजुर रखे तो-कोई हर्ज नही,-और-जिनमं-दिरमें-जो-शासन देवता और-चक्रेश्वरी-पद्मावती वगेरा शासनदेवी की-जो-स्थापना होती है,-उनके सामने-जयजिनेंद्र-ऐसा कहे,-कोई-हर्जकी-बात नही,-जिनेंद्रदेवकी-तरह-अष्टप्रकारी वगेरा-पूजा-और आरती-न-करे,-धर्ममें-मददगार होनेसें-प्रतिक्रमणमें-श्रुतदेवी और क्षेत्रदेवी-जो-सम्यक्तधारी-होते है,-उनके नामसें का-योत्सर्ग करना,-प्रतिष्ठा वगेरा काममें-सम्यक्तधारी-देवका-आमं-त्रण-करना कहा,-मगर जिनेंद्रदेवकी तरह उनकी अष्टद्रव्यसे-पुजा या-आरती करना-हुकम-नही,-इस बातको-बगौर-समजना चाहिये.

सवाल-बारहमा, जैनमुनिको पेदल विहार करना कहा, मगर रैलमे बेठकर सफर करना-किस जैनशास्त्रमें लिखा है,?—

(जवाब) जैनमुनिको-बेंशक! पेदल विहारही करना कहा, विहारमे किसी-श्रावक-श्राविका-या-नोकर-चाकरकी मददलेना नही फरमाया, निर्दोष आहार लेना, और-अप्रतिबद्ध होकर विहार करना जैनशास्त्रका हुकम है,-मुल्कोंकी सफर करते वख्त-अगर रास्तेमे-नदी-आजाय-तो-जैनमुनिको-नावमे बेठना फरमान है,-नाव पानीमे चलेगी-तो-पानीके जीवोंकी हिंसा होगी,-मगर-इरादा-धर्मका होनेसे भावहिंसा नही, और विदून भावहिंसाके-पाप नही, पेस्तरके जमानेमे-रेल-नही थी,-इसलिये रेलका नाम शास्त्रमे नही आता, नाव हमेशासे है,-इसलिये नावका-नाम शास्त्रोंमे आता है,-पेस्तरके जमानेमे-जब-आकाशगामिनी विद्या-मौजूदथी, लब्धिधारी-जैनमुनि-बजरीये उस विद्याके आसानमे सफर करते थे,-उनसे वायुकायके-जीवोकी-हिंसा होतीथी, मगर इरादा धर्मका होनेस-भावहिंसा नही, और विदून भावहिंसाके पाप नही,-जैनमुनिकों-नवकल्पी विहार करना कहा, अगर कोई जैनमुनि-वर्स-छह-महिने एक जगह रहे-तो-हुकम नही, जैनमुनिको दिवसके तिसरे प्रहर भिक्षाकों जाना हुकम है,-अगर कोई जैनमुनि-सवेरकों-चाह-दूध लेने जावे, दुफेरकों-आहार-और फिर शामकोंभी-आहारकेलिये जावे-तो-हुकम नही, अगर कहा जाय,-तिसरे प्रहर भिक्षाको जाय-तो आहार मिलना दुसवार होगा, इसलिये-द्रव्यक्षेत्र-काल-भाव देखकर ऐसा करना पडता है,-तो-उत्सर्गमार्ग-नही रहा, अपवादमार्ग रहा,-जैनमुनिको दिनमे नींद लेना नही फरमाया,-सोने-चादी वगैरा धातुके फ्रेमवाले-चश्मे रखना वहेत्तर नही, विहारके-वख्त-शाथमे-आदमी नोकर चाकर बेलगाडी चले-तो-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके ऐसा करना वहेत्तर नहीं, बारा-पनरा-वर्सकी छोटी उम्रके लडकेको दीक्षा देना जमाने हालमे जोखमका काम है,-किसीकों

दीक्षा देना-तो-उनके वारीशोंके विनाहुकम नही देना, पेस्तरके-गुरूलोग-अवधिज्ञानी-वगेरा अतिशयज्ञानी थे,-वे-जानते थे,-इस शख्शके भाग्यमे दीक्षाका योग-है-या-नही? -आजकल हस्तरेखा या-जन्मपत्र देखकर जाननेवालेभी-कम हैं,-आचार्यपदके छत्तीसगुण-विना-हासिल किये-आचार्य पदवी लेना किसी जैनशास्त्रका-हुकम नही,-योगवहन करना-और-उस जैनशास्त्रकों पढना नही, यह किस जैनशास्त्रका फरमान है? उपवास व्रत करना-तो-पहले रोज-और-पारनेके रोज-एकाशना करना कहा,-अगर कोई-मुनि-या-श्रावक-ऐसा-न-करे-तो-उनका उपवास आला दर्जेका-नही समजा जायगा, जैनमुनिको-बाइस-तरहके परिसह-सहन करना कहा, अगर कोई जैनमुनि-विहारमे-कंतान-या-कपडेके मोजे पहनकर विहार करे-तो-यह-उत्सर्ग-मार्ग नही कहा, अपवादमार्ग-कहा,-जैनशास्त्रोंमे बयान है,-अवल-जैनमुनि-वस्तीके बहार-उद्यानमे-या-वन खंडमे-रहते थे,-जमाने हालमे-वस्तीमे रहना शुरू हुवा,—

श्रावकोंके धार्मिक वरतात तर्फ देखो-तो-मिथ्यात्वका प्रचार उनके घरोमे-चल रहा हैं, अपनी सालियाना आमदनीमेसें-चौथा-हिस्सा-धर्ममे खर्च करना कहा, मगर कितनेक श्रावक-एक आना-सेकडाभी-खर्च-नही करते, देवद्रव्य-और-धर्मद्रव्य-तुर्त उस-उस काममे खर्च करदेना चाहिये, अपने घरमे-जमा-रखना-हुकम नही, बाइस अभक्ष्य और बत्तीस अनत कायकी-चीजोंका-खानपानमे परहेज करना,-हरहमेश देवपूजन-सामायिक-प्रतिक्रमण करना कहा, दरसाल-एक-जैनतीर्थकी जियारतको जाना,-तावेउम्र-नवलाख-नमस्कार मत्रका जाप करना, और धर्मकाममे-शोक-सताप-रखना नही, मगर जमाने हालमे-कितनेक श्रावक-शोक-सताप रखते हैं,-

आजकल कइ श्रावक-वमनव-रेलके अपना वतन छोडकर हजारा-कोशोंपर-जावसे हैं,-जहा-धर्मका-नामनिशान नही, और व-

हा कोई-जैनमुनि-उनको धर्मका रास्ता बतलानेवाले नही मिलते, उस हालतमे-कोई जैनमुनि-इरादे धर्मके रैलमे सवार होकर वहा जावे-और-तालीमधर्मकी देवे,-तो-धर्मका फायदा है,-अगर कोई-जैनमुनि-अपने शौखसें रैलमे सफर करे-तो-बेशक! पाप है, और उसकी मुमानीयतभी-है,-सबब उसका इरादा धर्मपर नही रहा, जो-जो-जैनमुनि-श्रावकोकी-या-नोकर चाकरोकी वगेर म दद्के पैदल विहार करते है निर्दोष आहार पानी लेते है, नवकल्पी विहार करते है,-वे-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके अछे है,-मेने-सवत् (१९३६) के-वैशाखसुदी दशमीके रोज दिनके दशबजे मुकाम-मलेरकोटला-मुल्क-पजाबमे दीक्षा इख्तियार किइ, इल्म पढा, बीशव-सैतक-पजाब-राजपुताना-मारवाड-गुजरात वगेरा मुल्कोंमे-पैदल-विहार किया, सवत् (१९५६)मे-जब-शहर लखनउमे-चौमासा ठहरा, और-तीर्थ-समेतशिखर-राजगृही-पावापुरी-चपापुरी वगेराकी जियारत जाना चाहा, रास्तेके गावोमे-श्रावकोकी-आबादी-न-होनेकी वजह रैलमे-सफर करना शुरू किया. रैलसफरके लिये-टिकिट-खर्चका-बदोबस्त श्रावक लोग करते है,-जो-जो-जैनमुनि-शास्त्रके-पढे हुवे ज्ञानवान् है, उनकी खिदमत करनेवाले श्रावक हर-जगह मिलते है,-पूर्व-कृत-कर्मपर भरूसा रखनेवालोको-किसी बातका-फिक्र-नही रहता, रैलटेशनपर उतरकर-गावमे-जाना हो,-पैदल जासकते हैं, और श्रावकोको तालीम धर्मकी देसकते है,-मे-सवत् (१९३६)की सालसे रैलमे सफर करता हु,-प्रतिक्रमण करता हु, श्रावकोको-व्याख्यान धर्मशास्त्रका सुनाता हु गोचरी जाता हु स्वरोदय ज्ञानसे बरताव करता हु अचित-जल-पीताहु, चाह-दूध-जल वगेरा-प्रवाही-पदार्थ-बिदून-चद्रस्वरके नही पीता, चद्रस्वरमे-सफर करता हु-और-चद्रस्वरमही-नगरप्रवेश करता हु-दुफेरके वख्त कभी-नींद नही लेता बल्कि! आये गये विद्वान् लोगोंसें मजहबी बहेस करता हु-रातके वख्त शयन करनेसे अवल योगाभ्या-

स-और-ध्यान-समाधि करताहुं, इस तरह-मेरी-प्रतिदिनचर्या-है,-वस्त्र-पात्र-वगेरा चीजे-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके हरितयार करताहु,-धर्मगुण-आत्माका है, इसमें जबरजस्ती किसीकी नही चलती, जिसकी मरजी-हो-वो-माने, जिसकी मरजी-न-हो-वो-नमाने, जो-जो-जैनमुनि-या-श्रावक अपने धार्मिक बरतावपर खयाल नही करते, और दुसरोंको हिदायत करने आते है, लाजिम है-उनको-अपने धार्मिक बरतावपर खयालकरें, दुसरेंको उपदेश देनेमें कुशल बनना, इससे अपने धार्मिक बरतावपर खयाल करना तारीफकी-बात है,—

[एक विद्वान्के सवालोंका-जवाब-खतम हुवा,-]

[बयान-पर्यूषण-पर्व,-]

१ इसमे पर्यूषण पर्वकी हकीकत, गणधरवादकी उमदा बहेस, और कल्पसूत्रकी नजीरे दर्ज है,-व-खुशी-देख लो!—

(कल्पसूत्रकी-नजीरें,)

[अनुष्टुप-वृत्तम्]

पर्वाणि बहुशः सति, प्रोक्तानि श्रीजिनागमे,
पर्यूषणासम नास्ति, कर्मणा मर्मभेदकृत्-१

(शार्दूलविक्रीडित)

मंत्राणा परमेष्टिमंत्रमहिमा,-तीर्थेषु शत्रुंजयो,-
दाने प्राणिदया गुणेषु विनयो,-ब्रह्मव्रतेषु व्रत,
संतोषो नियमे तपस्सु च शमः,-तत्त्वेषु सद्दर्शन.
सर्वज्ञोदितसर्वपर्वसु तथा,-स्याद्वार्षिक पर्व च,-२

जैनमजहबमे पर्यूषण पर्वके समान दुसरा पर्व नही, जैसे मंत्रोंमे परमेष्ठिमंत्र बडा है,-तीर्थोंमे शत्रुंजय, दानमे जीवोंपर रहेम, गुणोंमे विनयगुण, व्रतोंमे ब्रह्मचर्यव्रत, नियमोंमे सतोष, तपमे समता, और तत्त्वोंमे सम्यग्दर्शन बडा है,-सब जैनपर्वोमे-पर्यूषणपर्व बडा है,

इनदिनोंमे धर्मकों तरकी देना, और पापके कामोसें परहेज करना सव जैनोका फर्ज है,-पेस्तरके जमानेमे एक-जैनमुनि-कल्पसूत्रका पाठ सुनातेथे, और दुसरे जैनमुनि सुनतेथे, मगर तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (९९३) वर्स पीछे-राजा-ध्रुवसेनके जमानेमे-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-चतुविध सघके सामने सभामे वाचना शुरू हुवा, इनदिनोमे-वाणव्यतर, भुवनपति, ज्योतिपी, और वैमानिक देव-दुनयवी कारोवार छोडकर नदीश्वर द्वीपको जाते है, और-धर्मको तरकी देते है,- फिर श्रावकोंको दुनियाके कारोवार छोडकर-धर्मकों तरकी-क्यों-न-देना ?-इन दिनोंमे-क्रोध-मान-माया-लोभ-करना मना फरमाया, मगर धर्ममे-खलल-डालनेवालोंकों-शासन-देना मना नही, इन दिनोंमे-जैनमजहबपर कामील एतकात रखने-वालोकों-खडन-पेषण-या-वडेवडे-कल-कारखाने-बंद रखना, और धर्म करना बहेत्तर है,—

२ उपवास वगेरा तप करना-सो-मुताबिक अपनी ताकातके करना कहा, आठ उपवास करलिये और दुसरे धर्मकार्य-न-बनसके-तो-वैसा तप कौन कामका? व्याख्यान कल्पसूत्रका-सुनते-वख्त खयाल रखकर सुनना चाहिये, व्याख्यानके वख्त-सभामे-शौरगुल-होता रहे,-कोई सामायिक करे, कोई-माला-फेरे, ये-सब-बातें खिलाफ हुकम तीर्थंकरके है,-एक-समयमे-दो-जगह-मन-कैसे रहेगा? खयाल रखकर-शास्त्र सुनना-यही-श्रुत-सामायिक है,-आजकल-व्याख्यान होतेवख्त-शौरगुल-होना, सामायिक लेकर बेठना, और-माला-फेरना, एक मामुली बात होगई है, शास्त्रवाचनेवाले जैनमुनि-मुलाहजेमे पडकर श्रावकोंकों इन बातोंसे रोकते नहीं, इसी लिये मजकुर बातें चलपडी है,-मे-जब-जिसजिस-जगह-व्याख्यान धर्मशास्त्रका देताहु-कोई-शौर-गुल-करने नही पाता, कोई, मेरी व्याख्यान सभोंमे सामायिक करने नही पाता, और व्याख्यानके वख्त-सभामे-कोई मालाभी-फेरने नही पाता, सबब-अवल रौजही

-इस बातकी मना करदिई जाती है,-व्याख्यान सभाके (१३) कानुन-जो-जैनशास्त्रोंसें तलाश करके-मेने-छपवादिये है,-एक-आइनेमे-जडवाकर दिवारपर लगादिये जाते है,-मुताबिक उसके सब-बरताव-किया जाता है,—

नार्हतः परमो देवो, न मुक्तेः परमं पदं,
न श्रीशत्रुंजयात्तीर्थं, श्रीकल्पान्न परं श्रुतं,-१

३ (अर्थः) अरिहंतके समान कोई देव नही, मुक्तिके समान कोई परमपद-नही, शत्रुजय-समान-कोई तीर्थ नही, और कल्प-सूत्रके-समान-कोई-श्रुतज्ञान नही,—

एगग्गचित्ता-जिणशासणंमि,-पभावणा पूयपरायणा-जे,-
तिसत्तवार निसुणंति कप्प,-भवाण्णव गोयम-ते-तरंति,-२

(अर्थः) तीर्थंकर महावीरस्वामीने गौतम गणधरके सामने बयान फरमाया, अगर कोई-शख्श-कामील एतकातसे-खयाल रखकर उम्रभरमे एकीस-दफे कल्पसूत्रके फरमानको सुने और-अमलमें लावे -तो-संसार समुदरसें जल्द कनारा पावे, दरसाल! पर्यूषणके दिनो-मे-कल्पसूत्र-वाचाजाता है,-इस तरह-एकीस-वर्समे एकीस दफे-कल्पसूत्र अवलसे अखीरतक सुने-तो-दिलीइरादे जरूर-पाक-और -साफ होसके, और ससारके-जन्म-मरणोंसें फतेह पावे, इसमे कोई शक नही, जैनशास्त्रोंमे-तीर्थ-दो-तरहके फरमाये, एक-स्थावर तीर्थ, दुसरा-जगम तीर्थ,-स्थावर तीर्थ, शत्रुजय, अष्टापद, समेत शिखर, गिरनार वगेरा, जगमतीर्थ-साधु-साध्वी, वगेरा चतुर्विध-सघ,-जमाने हालमे-कितनेक-श्रावकलोग-बिदून जैनमुनि-योंकी सलाह-लिये-सभा-भरकर-धार्मिक ठहराव करते है,-और-फिर उनपर अमल-नही-करसकते, आखीरकार-वे-कीयेहुवे-ठहराव-कागजपर लिखे हुवे-रह-जाते है,-जैनमुनियोंकी सलाह लेते नही, और-कह देते है,-जैनमुनियोंमे-सप-नही, क्रिया-पालते

नही, मगर इस वातपर खयाल नही करते,-श्रावकोंमे-कौनसा-सप है, और-धर्म-काममे-कौनसे-कठीन-क्रियावाले-वनगये है? इसका कोई जवाव देवे,—

४ चदवर्स-पेस्तर-जैनश्वेतावर सघम-ऐसी-चर्चा-चलीथी, पूजा आरती-चौंदहस्वप्नोकी-वोली-वगेरामे-साधारण खातेकी-कल्पना करके-साधारण द्रव्यमे-लेजाना, मगर पूजा-आरती-चौंदहस्वप्न वगेराकी वोली-देवनिमित्त वोली जाती है,-वो-देवद्रव्य हुवा, देव द्रव्यकी-वोलीमे-साधारण खातेकी-कल्पना-करना किसी जैनागममे नही लिखा, अगर लिखाहो,-तो-कोई पाठ वतलावे, साधारण खातेकों-वढानाहो,-तो-उसका अलग-चदा करो, देवद्रव्यके शाथ-उसका क्या! सवध है?-कितनेक थोडे पढेहुवे-श्रावक-ऐसाभी-जाहिर-करते है,-पूजा-आरती-चौंदह स्वप्न वगेराकी-जो-रकम-वोलीजाय-उसमे रुपये आठ-आना,-चारआना,-साधारण-खातेमे-लेना-धारलो,-मगर-ऐसी-धारणा-या-कल्पना करनाभी -किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा, फिजहूल वाते-पेंश-करना कोई फायदा नही,-अगर कोई जैनमुनि-या-श्रावक-इम दलिलकों पेंश करे, देवद्रव्य-ज्यादा जमा होजाय-तो-क्या! करना? जवावमतलवकरे,-जैनतीर्थोकी हिफाजतमे-और-जिनमदिरोकी मरम्मतमे -लगा देवे, जैनतीर्थ-और जैनमदिर वनेरहेगें-तो-जैन मजहवभी -वना रहेगा, देवद्रव्य शिवाय जैनमदिर और जिनमूत्तिके-दुसरे काममे नही लगाया जाता, गरीव श्रावककोकों-मदद करनाहो-तो -साधारण खातेके नामसें अलग-चदा-करो, देवद्रव्यके शाथ-गरीव श्रावकोंको-मदद करनेका कोई सवध नही, जैनमुनियोंका फर्ज है,-श्रावकोंको-मुताविक धर्मशास्त्रके तालीम धर्मकी देवे,-आर-इतनेपरभी श्रावकलोग-न-माने-तो-उनकी मरजी, इमसें-ज्यादा-धर्मगुरू क्या! करसकते है,? धर्मकरने-करानेमे-जवरजस्ती-होती

नही,–जिसकी मरजी–हो–वो–माने, जिसकी मरजी–न–हो,–न–माने,—

आश्रवकषायरोधः,–कर्तव्यः श्रावकैः शुभाचारः ।
सामायिकजिनपूजा,–तपोविधानादिकृत्यपरैः ॥ १ ॥

५ (अर्थः) पर्यूपणके दिनोंमे–कषाय–कम–करना, और–सामायिक–जिनपूजा–तपजप–ज्यादा करना, बहेत्तर है,–अखीरके रौज–चतुर्विध संघ–मिलकर–जलसेके शाथ–जिनमंदिरोंकी जियारत जाना,–इसका नाम–शास्त्रोंमे–चैत्यपरिपाटिका जलसा–कहा. धर्मका–कोइभी–जलसा–करना धर्मकी तरक्कीका–सबब है, जिन जिन शख्शोंकों–धर्मपर–कामील एतकात नही–वे–कहा करते है, प्रतिष्ठा–महोच्छवमे–तीर्थोंमे–रथयात्रा वगेरा जलसेंमे–बहुत द्रव्य–क्यों! खर्च करना? मगर–विवाह–सादीके–काममे–हजारो रुपये खर्च करदेते है,–इस पर खयाल नही करते, धर्मके जलसेमे पुन्य है,–इसको–कम–करना बहेत्तर नही, मगर दिलके दलेरोंकोही–मजकुरबात पसंद रहेगी,–कंजुसोंको–पसंद–न–होगी,—

पर्यूपणकी अखीरमे कितनेक गछवाले भाद्रपदसुदी चतुर्थी और कितनेक गछवाले भाद्रपदसुदी पंचमीके रौज संवत्सरी करते है, कल्पसूत्रके इस पाठसे–"अंतरावि–से–कप्पइ,"–चतुर्थी–तिथिके रौजभी–संवत्सरी करना शास्त्रसमत है,–और–उसी कल्पसूत्रके सबुतसें पंचमी तिथिके रौज संवत्सरी करनाभी–शास्त्रसमत है, दोनोंमे किसीका मानना गलत नही, इस पर आपसमे–एक–दुसरोंपर एतराज करना कोई जरूरत नही, जैनमुनिकों–कल्पसूत्रके–फरमानसें सफेद कपडे पहेननाभी–हुकम है, और अनुयोगद्वार तथा निशीथसूत्रके फरमानसें–कथे–चुने–वगेराका रंगदेकर–पीले–कपडे पहेननाभी हुकम है, इन दोनो–सबुतोंसे दोंनों तहरके कपडे पहेनना जैनमुनियोंके लिये साबीत हुवा, सफेद कपडे पहेननेवाले जैनमुनियोंमे–जब–क्रिया वगेरामे–शिथिल–आचार होनेलगा, किया उद्धार किया गया

और अनुयोगद्वार-तथा-निशीथ सूत्रके फरमानसे पीले कपडे पहनना शुरू हुवा, साधु कहो,-मुनि कहो,-यति कहो,-या-श्रमण-निर्ग्रथ-कहो, सबका मतलब एकही है,-जैनमुनि हो,-या-जैनयति हो, सबको पचमहाव्रत पालना चाहिये,-सफेद कपडे-और-पीले-कपडेके बारेमे दोनोंतरहके कपडे पहेनना जैनमुनिके लिये ठीक है,-जैनशास्त्रोंमें-श्रद्धा-ज्ञान-और-चारित्र-तीनों मुक्तिके रास्ते फरमाये, मगर जैनआगम-आवश्यकसूत्रमे ऐसाभी-फरमान हैं, चारित्रके विना-इस जीवकी-मुक्ति-होसके, लेकिन! श्रद्धाके विना मुक्ति-न-होसके, मतलब-इसका-यह-हुवा, श्रद्धा और ज्ञान विना मुक्ति-न-होसके, शुद्ध-श्रद्धा-और शुद्धज्ञानसें अनित्य अशरण वगेरा भावना-भावकर मुक्ति पासके, जैसे मरूदेवी-माताने और एलाची-कुमारने भावनासे केवलज्ञान और मुक्ति पाइ, द्रव्य चारित्र इस जीवने कइदफे लिया, मगर बिदुन श्रद्धा-कारआमद नही हुवा, द्रव्य चारित्र देखकर-यह-अदाज नही हो सकता,-अमुक जीव-भावित आत्मा-अणगार है,-द्रव्य चारित्र बिना भाव-देखा देखीभी लिया जाता है,-जैनशास्त्रोमे सुना होगा, अभव्य जीव पचमहाव्रत-इख्तियार करता है, मगर श्रद्धा विना सब बेकार है,-इस जीवमे-भाव चारित्र मौजूद है,-या-नही,! इस बातको केवलज्ञानी जानसकते हैं, दुसरे नही,—

[गणधरवादकी-उमदा बहेस]

७ करीब-साढे-चौईससो वर्सके पेस्तरकी बात है,-जब मुल्क पूर्वमे तीर्थंकर महावीर स्वामीकों-केवलज्ञान पैदा हुवा था, और-जब-अपापानामकी-नगरीमे तशरीफ लाये थे, एक-सोमील-नामके ब्राह्मणके-घर-यज्ञमहोच्छवका जलसा था, उस जलसेंमे बहुतसे पडित आये हुवेथे, और उनमे १-पडित इन्द्रभूति, २-पडित अग्निभूति, ३-पडित वायुभूति, ४-पडित व्यक्त, ५-पडित सुधर्मा, ६-पडित

मंडितपुत्र, ७-पंडित मौर्यपुत्र ८-पडित अकपित, ९-पडित अच-लभ्राता, १०-पंडित मेतार्य, और-११-पंडित प्रभास, ये-ग्यारह महाशय आलादर्जेके विद्वान् थे,-जब-अपापा नगरीकी एक तर्फ तीर्थंकर महावीर स्वामीका समवसरण हुवा, और उनका व्याख्यान शूरूथा, पडित इन्द्रभूतिजीने सुना, तीर्थंकर महावीर यहां तशरीफ लाये है, उनके सामने जाकर कितनीक वातोंकी बहेस करना चाहिये, अपने शिष्योंकों हमरा लेकर तीर्थंकर महावीरके सामने गये, उनका कहना था,—

"विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय
तान्येवानु विनश्यति-न-प्रेत्यसञ्ज्ञास्तीति,-"

विज्ञानघन-आत्मा-पंचभूतोंसें-(यानी) पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाशसे पैदा होकर उन्हीमे मीलजाता है, परलोकमे-नही जाता, इस पर तीर्थंकर महावीर स्वामीका फरमाना हुवा, पंचभूतोसें आत्मा पैदा नही होता,-आत्मा-अनादि है,-शरीरसे जुदा ज्ञानमय और-परलोकमे जाता है,-अगर शरीरसे जुदा आत्मा-न-होता तो-फला वख्त मेने यह काम किया था, अब कररहा हुं. और आगेकों करुगा ऐसा ज्ञान कैसे होता? ज्ञान होना आत्माका गुण है,-शरीरका नही,-इस लिये साबीत हुवा, शरीरसे जुदा-आत्मा-परलोकमें जाने-आनेवाला जरूर है,-अपने पूर्वजन्ममे किये हुवे भलेबुरे कर्मोंका फल यहा पाता है, जब-निस्पृह-होकर धर्म करेगा, और समता भावमे रहकर आइदा-नये कर्म-न-बांधेगा उसकी मुक्ति होगी,—

८ अनुमान प्रमाणसेंभी-आत्माकी साबीती हो सकती है, सुनो!—

"विद्यमानभोक्तृकं इद शरीर-
भोग्यत्वात्-ओदनादिवत्.—"

(अनुष्टुप-वृत्तम्)

क्षीरे घृत तिले तैल, काष्टेऽग्नि॰ सौरभ सुमे।
चद्रकाते सुधा यद्वत्, तथात्मागगत' पृथक्—॥ १॥

(अर्थः) शरीर एक तरहकी भोग्यवस्तु है,—इसलिये इसका भोगनेवाला जरूर होना चाहिये, जो-जो-भोग्यवस्तु-देखीगई-उसका-भोगनेवाला-जरूर होता है,—इस सबुतसेभी-आत्माका-शरीरसे अलग होना कह सकतेहो, जैसे दूधमे-घी-रहा हुवा है,—तिलोंमे तेल, काष्टमे अग्नि, फुलोमे सुगध, और चद्रकात-मणिमे-अमृत रहा है,—वैसे-इस शरीरमे आत्माभी रहा है,—इस वहेससें पडित इद्रभूतिजीका-शक-रफा हुवा, और उन्होंने तीर्थंकर महावीरस्वामीके पास-दीक्षा-इख्तियार किई,—बाद इनके दुसरे पडित अग्निभूतिजी-तीर्थंकर महावीर स्वामीके-पास-आये, इनका कहनाथा,

पुरुप एवेद सर्वे-यद्भूत-यच्च भव्य,—यत् भूत
अतीतकाले,—यच्च भव्य भाविकाले, तत्सर्वं इद पुरुप एव-
आत्मा, एवकार' कर्मेश्वरादिनिपेधार्थ॰ अनेन च
वचनेन यन्नरामरतिर्यक्पर्वतपृथ्व्यादिक वस्तु-
दृश्यते, तत्सर्वं आत्मैव, तत कर्मनिपेध' स्फुट एव,—

किच-अमूर्त्तस्य आत्मनो मूर्त्तेन कर्मणा,—अनुग्रह उपघातश्च कथ भवति? यथा आकाशस्य चदनादिना-मडन-खड्गादिना-खडन-च-न-सभवति, तस्मात् कर्म नास्ति,—

(अर्थ) दुनियामे-जो-कुछ मनुष्य, देवता, तिरश्चीन, पहाड, जमीन, वगेरा चीजे दिखाई देती है,—सब-आत्माही है,—कर्म-वगेरा कुछ चीज नही, आत्मा अमूर्त्त है, कर्म-जड और मूर्त्तिमान्-वे-आत्माकों आराम और तकलीफ कैसे-पहुचा सकेंगें? अगर आकाशकों कोई शख्श-चदन लगावे, या-तलवारसें-काटे-तो-क्या! आकाश छिन्नभिन्न होसकता है,—कभी नही,—

इसपर तीर्थंकर महावीर स्वामीने जवाब दिया,—

नायमर्थः समर्थः, यत इमानि पदानि पुरुपस्तुतिपराणि,-यथा-त्रिविधानि पदानि, कानिचित् विधिप्रतिपादकानि, यथा-स्वर्गकामोऽग्निहोत्रं जुहुयादित्यादीनि-कानिचिदनुवादपराणि-यथा-द्वादशमासाः संवत्सरः इत्यादीनि, कानिचित्स्तुतिपराणि-यथा-इद पुरुप एवेत्यादीनि,-ततोऽनेन पुरुपस्य महिमा प्रतीयते नतु-कर्माद्यभावः

किंच अमूर्त्तस्यात्मनो मूर्त्तेन कर्मणा कथं अनुग्रहोपघातौ? तदपि-अयुक्त, यत् अमूर्त्तस्यापि ज्ञानस्य मद्यादिना उपघातो, ब्राह्म्यौपधेन-च-अनुग्रहो दृष्ट एव-कर्म-विना एकः सुखी, अन्यो दुःखी एकः प्रभुरन्यः किंकरः-इत्यादि प्रत्यक्ष-जगद्वैचित्र्यं-कथ-नाम संभवति?—

(अर्थः) वचन-तीन तरहके-होते है, कितनेक विधि प्रतिपादक, जैसे स्वर्गकी चाहनावाला शख्श अग्निहोत्र करे, कितनेक अनुवाद प्रतिपादक,-जैसे बारह महिनोंका-एक-संवत्सर, और-कितनेक स्तुतिप्रतिपादक वचन-जैसे-पुरुष एवेद सर्वं-(यानी) दुनियामें-जो-कुछ है,-सब-आत्माही है,-इससे-आत्माकी-तारीफ बयान किइ गइ, मगर दुसरी चीजोंका अभाव होगया,-ऐसा नही कहाजासकता, अमूर्त्त आत्माको-मूर्त्तिमान्-कर्म-आराम तकलीफ कैसे पहुचा सके-इसके जवाबमें-सबुत-इस बातका-मौजूद है,-देखलो! शराब पीनेसे आदमी बेहोस होजाता है. और ब्राह्मी-औषधि-वगेराके सेवनसें तेज अकल होता है,-सबुत हुवा,-अमूर्त्त ज्ञानकों-मूर्त्तिमान्-पदार्थ-उपघात-अनुग्रह पहुचा सकते है,-अगर-पूर्वकृत-कर्म-न-माने जाय-तो-दुनियामें एक-सुखी और एक दुखी क्यों होसके? एक-मालिक और एक-नौकर क्यों-बने? दरअसल! तरह तरहकी विचित्रता कर्महीके ताल्लुक होसकती है,-इसमें-कोई शक नही, पडित अग्निभूतिजीका-शकरफा हुवा, और उन्होंने तीर्थंकर महावीरके पास दीक्षा इख्तियार किई,—

९ बाद इनके वायुभूतिजीका आना हुवा,-उनका कहनाथा, पचभूतोंसे यानी-पृथिवी, पानी, तेज, वायु, और आकाशसे-आत्मा-जुदा नही. पचभूतोंसें पैदा होकर पचभूतोंमेही मिल जाता है,-पर लोकमे जाता आता नही,-ऐसाभी बयान शास्त्रोंमे है,-और-"सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येप आत्मा ब्रह्मचर्येण-" सत्य और ब्रह्मचर्य वगेरा तपसे आत्माकी साबीती मिलती है,-ऐसाभी-बयान है,-इसमे कौनसा सच और कौनसा गलत समजना? इस बातपर पडित वायुभूति जीको शक था, इसपर तीर्थंकर महावीर स्वामीका फरमाना हुवा, आत्मा-पचभूतोंसे-जुदा-और-परलोकमे जाने-आनेवाला है,-जब निस्पृह होकर धर्म करेगा, मुक्ति पायगा, इस फरमानसे पडित वायु भूतिजीका-शक-रफा हुवा, और उन्होने तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा इख्तियार किई, बाद इनके व्यक्त नामके पडित-तीर्थंकर महावीरस्वामीके पास आये, उनका कहनाथा,—

"येन स्वप्नोपम-वै-सकल इत्येप ब्रह्मविधिरजमा
विज्ञेय इति -"

इस फरमानसें-जगत्-स्वप्नकी तरह असत्य मालुम होता है,-दुसरा-फरमान ऐसाभी-मौजूद है,-"पृथ्वी देवता,-आपो देवता,-इत्यादिभिस्तु भूतसत्ता-प्रतीयते -" पृथ्वी-अप-ये-देवता है,-अब सवाल पैदा होता है,-कौनसा फरमान सच समजना, इसपर-तीर्थंकर महावीर स्वामीका फरमाना हुवा,—

यस्मात् स्वप्नोपम-वै-सकल इत्यादीनि-
अध्यात्मचिंताया कनककामिन्यादिसयोगस्य-
अनित्यत्वसूचकानि-नतु-भूतनिपेधपराणि,-"

यह फरमान-अध्यात्मिक-वचनका है,-इससे-पचभूतोंका-न-होना खयाल करना बेहत्तर नही,-पृथ्वी-अप्-तेज-वायु-और आकाशका होना सच है,-गलत नही, जो-शख्श-जैसा काम करता

है मुताबिक उसके फल पाता है,-इस वहेससे-व्यक्त पडितजीका शक रफा हुवा, ओर-उन्होंने-तीर्थंकर महावीर स्वामिके पास दीक्षा इख्तियार किइ,—

१० बाद इनके पाचवे पडित-सुधर्माजी-तीर्थंकर महावीर स्वामीके सामने आये. उनका-कहना-था,-"पुरुषो-वै-पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्व-भवातरसादृश्यप्रतिपादकानि, तथा-शृगालो-वै-एष जायते-यः-सपुरीषो दह्यते-इत्यादीनि भवातरे वैसदृश्यप्रतिपादकानि पदानि दृश्यंते—

जो-शख्श-यहा-मनुष्य है,-मरकर अगले जन्ममे फिरभी मनुष्यही होगा, जो-जानवर है, मरकर फिरभी जानवरही होगा,-दुसरा ऐसाभी-शास्त्र फरमान है,-जो-शख्श-मलविकार सहित-अग्निसस्कार किया जाय-अगले जन्ममें शियालका चौला पायगा, इन-दोनो-फरमानोंमें कौनसा सच-और-कौनसा गलत-जानना, इस पर तीर्थंकर महावीर स्वामीने जवाब दिया, मनुष्य मरकर मनुष्यका चौला और-जानवर मरकर जानवरका चौला पावे ऐसा कोई नियम नही. जो-शख्श-यहा-पुन्य करता है, अगले जन्ममे देव-या-मनुष्य होता है, जो-शख्श-पाप-करता है,-अगले जन्ममे-दोजक-या-जानवरका चौला पाता है,-अपनी-अपनी करनीके फल है,-अपनी करनीके फलको-कोई-रद-नही करसकता -इस जवाबसे-पडित-सुधर्माजीके-दिलका-शक-रफा हुवा,-और-उन्होंने-तीर्थंकर महावीरस्वामीके पास दीक्षा इख्तियार किई.—

११ इनके बाद पडित-मडितपुत्रजीका-आना तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास हुवा, इनके दिलमें-बध-मोक्षके बारेमे-शक था,

यत.-स एप विगुणो-विभु-र्न-बध्यते ससरति-वा-

मुच्यते मोचयति-वा,-

आत्मा सत्त्व-रज-तमो-गुणसे रहित है,-वो-न-बधाता है,-न-छुटता है,-न-दुसरेको छुडवाता है,-दुसरा-यहभी-फरमान है,—

न-हि-वै-सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति,-देहधारी आत्मा कों-आराम तकलीफका-न-होना ऐसा नही हो सकता, इनदोनों फरमानमे कौनसा सच और कौनसा गलत समजना? इसपर तीर्थंकर महावीर स्वामीका-फरमाना हुवा,-जबतक-आत्मा-देहधारी है,-ससारके जन्म-मरणसें नही छुटता-आराम और-तकलीफ पाता रहेगा, जब ससारके जन्म-मरणसे छुट जायगा,-न-उसको-ससारिका आराम और-न-तकलीफ होगी, सिर्फ! उसको आत्मिक सुख मौजूद रहेगा,-और-फिर-न-वो-दुनियामे वापिस लोटेगा,-इस जवाबसे-पडित-मडितपुत्रजीका-शक रफा हुवा,-और-दीक्षा-इख्तियार किई,-बाद इनके-पडित-मौर्यपुत्रजीका-आना हुवा,-उनका-कहना था,—

> को-जानाति-मायोपमान्-गीर्वाणान्-इंद्रयम-
> वरुणकुबेरादीन्-इतिपदैर्देवनिषेध' प्रतीयते,-
> स एप-यज्ञायुधी-यजमानोञ्जसा-स्वर्लोक गच्छति-
> इतिपदैस्तु देवसत्ता प्रतीयते,-

कौन जानता है,-स्वर्गके-इद्र-यम-वरुण-कुबेर वगेरा देवतोंकों-इससे साबीत हुवा, स्वर्गके देवते कहने मात्र है, दुसरा ऐसा फरमान शास्त्रोंमे देखा जाता है,-जो-शख्श-यज्ञ-करे-वो-स्वर्गलोककों जावे, इनमे कौनसा फरमान सचा समजना? इसपर तीर्थंकर महावीर स्वामीने-जवाब-दिया,-स्वर्गके देवते कहनेमात्र नहीं, बल्कि! सचे है,-उपरके फरमानमे मतलब ऐसा है,-स्वर्गके देवते-इन्द्र-यम-वरुण-कुबेर वगेरा किसगतिकों जायगें शिवाय ज्ञानीके दुसरा कौन जान सकता है,-बात-इसतरहथी, और तुमारे खयालमें दुसरी तरह आया है,-बाद-सूर्य-वगेरा ज्योतिष देवोंके-जो-आस्मानमे विमान दिखाइ देते है,-वे-उनके रहनेके मकान है,-दुसरा सबुत-इन्द्र-वगेरा देवते देखलो! यहा आये हुवे-बेठे हैं,-इस

बहेससे-पंडित मौर्यपुत्रजीका-शक-रफा हुवा, और-उन्होने दीक्षा -इख्तियार किई,—

१२ बाद इनके-आठमे पडित-अकपितजी-तीर्थंकर महावीरके-सामने आये,-इनका कहना था,-नरकगति-मौजूद है,-या-नही?-शास्त्रोमे बयान है,—

"नहि वै प्रेत्य नरके नारकाः संति,-" इत्यादिपदैर्नारकाभावः प्रतीयते,-"नारको-वै-एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति, इत्यादि-पदैस्तु-नारकसत्ता-प्रतीयते,-इसमे एक वाक्य ऐसा-देखाजाता है, -नरकके जीवोंका न-होना-सावीत हो,-और-एक वाक्य ऐसाभी देखा जाता है,-जो-शख्श-शूद्रके घरका-अनाज-खावे, नरकग-तिमें जावे, इसपर तीर्थंकर महावीर स्वामीने जवाब दिया,-जीव-पापकरनेसें-नरक जाता है,-दुसरे फरमानका मतलव यह है, नरक गतिको-जाकर-तुर्त-दुसरा जन्म-नरक गतिमे-नही पाता, एक जन्म दुसरी गतिका-पाकर-चाहे-फिर नरक गतिको-जावे,-मगर-एकपि-छे-एक-तुर्त-नरकगतिमे-जन्म-न-पावे,-इस लिये-दोंनो-फरमान जिस तरहसें-कहे गये है,-उस तरहसें-सचे है,-ऐसा जानो,—

नहि-वै प्रेत्य नरके नारकाः सतीति कोऽर्थः? प्रेत्य परलोके-केचिन्नारका-मेर्वादिवत्-शाश्वता-न-संति, किंतु-यःकश्चित्पापमाच-रति-स-नारको भवति, अथवा नारका मृत्वा-पुनरनंतर नारकतया नोत्पद्यते-इति प्रेत्य नारका-न-सतीति उच्यते,—

इस बहेससें अकपित-पडितजीका-शक-रफा हुवा, बाद इनके नवमें पडित अचलभ्राता-तीर्थंकर महावीरके-सामने-आये. इनका कहना था, दुनियामे-पुन्य-पापका-होना जाइज है-या-नही? इस पर तीर्थंकर महावीर स्वामीने-जवाब दिया, पुन्यपापका होना दुनियामे जाइज है,-अगर पुन्यपाप-न-होते-तो-दुनियामे-एक-गरीब-और एक अमीर क्यों? एक बदसुरत और एक खुबसुरत क्यों?-एक-आरामतलब और एक-तकलीफवाला क्यों? एक-

राजा-और-एक-रंक क्यों? एक-शख्शको तालीम धर्मकी देनेसे-तुर्त-असर होजाता है,-और एकको कितनाभी धर्म सुनाओ-मगर उसको बिल्कुल असर नही होता, बतलाओ! उसका-क्या सबब? उसका यही सबब है, उस जीवने पूर्वजन्ममे-जैसा किया था,-वैसा-यहा-पाया, और यहा करेगा, आइंदे वैसा पायगा, इस वहेससें अचलभ्राता पंडितजीका-शक रफा हुवा,—

१३ बाद इनके दशमे पंडित-मेतार्यजी-तीर्थंकर महावीरके सा मने आये उनका कहना था,-जीव-परलोकमे-जाता है,-या-नही? इसपर तीर्थंकर महावीर स्वामीने जवाब दिया,-जीव-परलोकमें जाता है, जबतक-कर्म-रूपी-उपाधि-नही छुटी, परलोकमे जाना आना-नही-छुटता.-जब-निस्पृह होकर-धर्म-करेगा, और मुक्ति पायगा.-फिर परलोकमे जाना आना छुट जायगा, इस वहेससें-प डित-मेतार्यजीका-शक-रफा हुवा, और उन्होनें तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा-इख्तियार किई इनके बाद ग्यारहम-पंडित-प्रभासजी तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास आये, इनका कहना था,-मुक्तिका-होना-सच है,-या-गलत? इस पर तीर्थंकर महावीर स्वा मीने-जवाब-दिया, अगर कोई-जीव-राग-द्वेष-काम-क्रोध वगेरा दुश्मनोंसें-फतेह-पावे-तो-मुक्ति-क्यों-न-पा सके? जरूर पासके, अगर मुक्ति होना-गलत होता-तो-ज्ञानीयोंकी फरमाइ-हुइ-धर्म-तालीम-गलत ठहरती,-मगर ज्ञानीयोंकी फरमाइ हुइ धर्मतालीम-गलत कैसे-ठहरे. सबुत हुवा, मुक्ति जरूर है-इस वहेससें प्रभास-पंडितजीका-शक-रफा हुवा, और उन्होंने तीर्थंकर महावीर स्वामीके पास दीक्षा इख्तियार किइ,-इस तरह इंद्रभूतिजी वगेरा ग्यारहपं डित-जब-तीर्थंकर महावीर स्वामीके शिष्य हुवे, उनकों गणधरपद-वीका-इल्काब-दिया गया,—

[गणधरवादकी-उमदा-वहेस खतम हुई,-]

[दरवयान-दीवाली-पर्व,-]

१ दीवाली पर्वके वयानमे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मुक्ति और-उन्होंने-जो-मुक्ति मिलनेके पेस्तर पावापुरीमे पाचमे आरेका हाल फरमाया था, उसका जिक्र है,-मुल्क पूरवके क्षत्रियकुड-गावमे सिद्धार्थ राजाके-घर-त्रिशला-रानीकी कुखसें तीर्थंकर महावीरका जन्म हुवा, बीश-वर्सतक-दुनियादारी हालतमे रहे. और फिर दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ,—
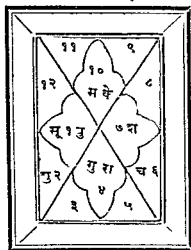
[तीर्थंकर महावीरस्वामीके जन्मग्रहोंका वयान]

क्षत्रीयकुंड-गामके-वहार ज्ञातनखड-उद्यानमे जव उन्होंने दीक्षा इख्तियार किई देवता और मनुष्योंने मीलकर जलसा किया, -दौलत-दुनिया-माल-खजाना और खुबसुरत औरतें छोडकर दीक्षा इख्तियार करना सहज वात नही,-कइ शख्श थोडासा एश-आराम पाकर धर्मको भूल जाते है,-घर छोडकर जगलकी-राह-लेना कितना दुसवार है ? तीर्थंकर महावीर स्वामीके-जन्मचक्रमे-केंद्र-त्रिकोणमे सवग्रह-आगये, सूर्य-मगल-बृहस्पति-और शनि-उचके

है,-दुसरे ग्रथकार शुक्र मीनका और राहु मिथुनका लिखते हैं,-लग्नेश शनि दसमें और-चद्रमा नवमे है,-यह-योग-परमयोगी राजका हुवा,-तीर्थंकर देवोंके जन्मचक्रम सातग्रह उच्चके होने चाहिये,-इसके जवावम ऐसा वयानभी देखागया है,-नवग्रहोंमेंसें पाच-या-छह-और कभी (८८) ग्रहोंमसें कोइभी-एकग्रह उच्चका आजाय-तो-यहभी बनाव बनसकता है,—

२ तीर्थंकर महावीरस्वामीके मगल उच्चका और वृहस्पति उसकों माकुल नजरसें देखता है, यह योग इज्जत बढानेवाला हुवा, सातम खानेमें राहु बेठा है-और-वो-लग्नको माकुल नजरसे देखता है,-इसलिये तरह-तरहके परिसह-यानी-तकलीफभी-पेंश हो, मगर उनसें फतेह पावे, तीर्थंकर महावीरस्वामीने-साढे-वारह-वर्स-तप किया,-बडी बडी आफते-पेंश-हुई, मगर अपने धर्मपर सावीत कदम बने रहे,-ध्यान-समाधिमे कभी खलल नही डाला, जिसके-लग्नेश -उच्चकाहो लबी उम्र पावे, तीर्थंकर महावीरस्वामीके लग्नेश शनि उच्चका होकर दशमे खानेमे आया है-उमदा योग हुवा, चौथे-खानका मालिक मगल-उच्चका होकर लग्नमे बेठा है, हमेशां आरामतलब बनेरहे-और-बडी पदवी पावे, पेस्तर लिखा गया है,-लग्नकों-राहु माकुल-नजरसें देखता है,-इससे-बडी बडी-आफतेभी-पेंशहो, वात ठीक है,-जब-वारां वर्स-तप-किया था, शूलपाणियक्षने-सगमदेवताने-चडकौशिकसर्पने-और-गोशाला मखलीपुत्रने-कितनी आफते पेंश किइथी! जिन्होंने जैनागमोंमे-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी -सवानेउम्री-पढी होगी, व-खुवी-जानते होगें, चौथे भुवनमे सूर्य-उच्चका-बुधके शाथ है, इसीलिये अपने-व्रत-नियममे-निहायत पावद बने रहेगें,-सातमें खानेम वृहस्पति उच्चका होकर आया है,-उसका फल-दुनियादारी हालतमें उमदा औरत मिले, मगर-शाथमें राहुभी-मौजूद है,-इसलिये पिछली उम्रम औरतका वियोगभी-होजाय, वात वहुत वहतर है,-जब-उन्होंने दीक्षा इख्तियार

किईथी, औरतका वियोग हुवाही-था, जिसके जन्मचक्रमे-लाभेश उच्चका हो-वो-शख्श दौलतमद हो, देखलो! आपके जन्मचक्रमे लाभेश मगल उच्चका होकर लग्नमे बेठा है,-इसका फल बेशुमार दौलत इल्मकी हासिल हो, केवलज्ञानकी बराबर दुनियामें दुसरी दौलत क्या होगी, बडे-बेपरवाह और धर्मपर कामील एतकात हुवे, इसमे कोई शक नही, केतु-जिसके लग्नमें पडाहो, वडी वडी तकलीफें पेश हों, मगर उसमे फतेह पावे,—

३ तीर्थकर महावीर तीस वर्सतक दुनियादारी-हालतमे-रहे, मगर-उन्होने अमलदारी नही किई, और दुनियाको छोडकर दीक्षा इख्तियार किई, आब-हवा-जमीन-आतीश-और वनास्पतिकी-रुहोंकों-इजा-पहुचाना छोड दिया, चलनेफिरनेसे-जो-बारीक-रुहोको-इजा पहुचती है,-उसमे-इरादा-अगर धर्मका हो, भावहिसा नही होती, और विदून भावहिसाके पाप नही होता,-जहा-पांचइन्द्रियोकी-विषयपुष्टिका-इरादा हो, वहां-पाप लगता है, इस बातको-कोई-समजे और उसपर अमल करे, घर छोडकर-तीर्थकर महावीरस्वामीने मुल्कोंकी सफर करना शुरू किया,-बहुत अर्सा-उनका-तपश्चर्यामे-बतीत होताथा, तपश्चर्याकी अखीरके रोज भिक्षा मागकर सिकमपरवरीश करते थे, और ज्यादेतर-ध्यानमे रहते थे, अगर कोई-शख्श-धर्मके बारेम-सवाल पुछते थे,-उनका माकुल जवाब देते थे,-कभी-उद्यान-बनखड-पहाडोकी कदरा-और-कभी घासकी-कुटियामे-बसर-करते थे, कभी द्रख्तोंके नीचे-या-कभी-सुनेपडे हुवे मकानमे खडे होकर ध्यान करते थे, राजकुमार होकर जगलकी राह लेना, अगर-धर्म-प्यारा-न-हो-तो-ऐसा कौन करसकता जो-लोग-दौलतकी-सरगमीसें-धर्मको-भूल गये है, आखीरकार-रज-उठायगें-मुल्कोंकी-सफरमे-तीर्थकर महावीर-स्वामीको कइ आफतें-पश हुइ, मगर उन्होंने-किसीपर-गुस्सा नही किया, और अपने-पूर्वकृत-कर्मके-उदयानुसार-जो-जो-तकलीफें आती थी.

उमदा तौरपर पसार होते थे,-कभी-किसी-सुने मकानमे खडे हो कर ध्यान करते थे-लोग-पुछते थे, यहा कौन खडा है? जबानमे कहते थे, मे-एक-भिक्षु हु, और ध्यान करता हु इस बातको सु नकर कइ लोग कहते थे, चले जाओ! यहासे!! यहा ध्यान कर नेकी-जगह-नही है,-इस बातको सुनकर वहासे-चले जाते थे, यह-एक-नेक-शख्शोका-काम है,-किसीकी नाराजीसे कोइ-काम -नही करना, गर्मायोके दिनोमे-लोग-अपने बदनको आराम देने केलिये पखोंसे-हवा-करते है,-और ठडके दिनोंमे-आतीश जला कर अपने आपको गर्म रखते है,-मगर तीर्थंकर महावीर स्वामीने-वैसा नही किया,-कभी-लुखा-सुका खाना मिलता,-या-कभी बि ल्कुल नही मिलता, उसपर-शब्र-करते थे, कभी-नेंसमज लोग कह देते थे,-पेंट-भरनेके लिये-साधु होगये,-और-डोलते फिरते है,-दुनियाका अजब तरीका है,-किसीका-मुह-कोई बद नही करसक्ता, आलीमोंको लाजिम है,-धर्मकी राहपर साबीतकदम रहे, और-किसीके कहनेपर परवाह-न-करे,-सफरमे-कभी-कोई शख्श-किसी-दुसरे साधुको-खाना-देताहो,-या-कुत्तोकों-रोटी-डालता हो,-उस रास्ते जाकर तीर्थंकर महावीरस्वामी-उनके देनेमे खलल नही पहुचाते थे,-रास्तेमे-चीडिया, कबूतर, कौवे-या-मुर्गे-अपना चारा चरते हो,-उनके नजीक होकर नही निकलते थे,-जिससे-वे-चारा-चरना छोडकर-उड-जाय, इस तरह-तीर्थंकर महावीर स्वामीने बारा वर्स-तप-किया, और मुल्क पूरबमे-समेत शिखर तीर्थके करीब-रिजुबालुका-नदीके कनारे ध्यान करते थे, उस हालतमे-उनको-केवलज्ञान पैदा हुवा,-लोक और-अलोकके-तमाम -पदार्थ-उनके ज्ञानमे दिखलाइ देने लगे, और-सर्वज्ञ हुवे,—

४ केवलज्ञान हुवे बाद जब-वे-आपापा नगरीमे तशरीफ लाये इद्रभूतिजी वगेरा ग्यारह पडितोकी बहेस हुइ -जो-बयान पर्युषण पर्वमे-गणधरवादकी उमदा बहेसमे दर्ज है,-इसी अपापा नगरीमे

हुइथी, तीर्थंकर महावीरस्वामी (३०) वर्ष-दुनियादारी हालतमें रहे, (१२) वर्स-तप-किया, और-(३०) वर्सतक मुल्कोंकी सफर करके लोगोंकों तालीम धर्मकी दिइ. इस तरह (७२) वर्सकी उम्र होनेपर जब-वे-फिर अपापा नगरीमें तशरीफ लाये. अखीरकी वारीश वहा गुजारी, अपापा नगरीकों आजकल-पावापुरी-बोलते है, कार्तिक वदी अमावास्याके-रोज-जब-स्वाति नक्षत्रमे चद्रमा आया था, पिछली रातको मुक्ति होनेका वख्त करीब आया, पावापुरीमें उस वख्त हस्तिपालराजा-इद्र वगेरा देवते. नव मल्लिक-और नव लछिक जातिके अठारां राजे जो-अनघ और कोशल देशके-सामत राजे-थे, हाजिर हुवे, सर्वार्थसिद्ध-मुहूर्त्तमें जब तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मुक्ति हुई, इंद्र देवतोंने और राजे-महाराजोंने जलसा किया, उस रोजसें हिंदमे दिवालीपर्व माना गया, हरेक जैनकों कार्तिकवदी चौदश-अमावास्याके-रोज-कुछ-व्रतनियम करना चाहिये, तीर्थंकर महावीर स्वामीने उस रोज-बेलेका-तप-किया था, अमावास्याकी पिछली रातकों-जैनमुनि-सूरिमत्र-वर्द्धमानविद्या-और-रिषिमडलस्तोत्र पढे, कई-जगह-जैनयति जनोंमे-वसुधारा-पढनेका रवाज-चलता है,-मगर-वसुधारा-बौध मजहबके आचार्योंकी बनाई हुई है, जैनाचार्योंकी बनाइ हुई नही, जैन श्वेताम्बर श्रावकोंकों-रिषिमंडलस्तोत्र-गौतम स्वामीके-बीज-अक्षर और सप्तस्मर्ण पढना चाहिये,—

५ मुक्ति होनेके पेस्तर तीर्थंकर महावीरस्वामीने पाचमें आरेका हाल इसतरह बयान किया, पांचमे-आरेमें बहुतसे लोग-धर्मको -भूल-जायगें, अधर्मकी बातें इख्तियार करेगें, पुरानेशहर बरबाद और नयेशहर आबाद-होगें, स्वर्गके देवते-प्रत्यक्ष-न-आयगें, मत्रोंकी-ताकात-कम-होती जायगी, जमीनमें-रस-थोडा, और मनुष्योंकी पुन्यवानी-कम-होती जायगी, देवद्रव्यका-गैर उपयोग -करेगें, औरत-अपने खाविदके हुकमकी अदुली करेगी, बेटे-

चापका-सामना करेग, साधुजनोंमें-वैराग्यभाव-कम-होजायगा, और तरह तरहके मतभेद पडजायगें, तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाण समय उनके जन्मनक्षत्रपर-भस्मराशि-नामका ग्रह पेंश हुवा,-जो-उनके शिष्योकी जमातकों तकलीफ पहुचानेका सूचक-होगा, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके-बाद-(४७०) वर्स पिछे विक्रम सवत् जारी हुवा, तीर्थंकर महावीरस्वामीका निर्वाण होनेपर पावा पुरीमे देवते-देवागना-राजे महाराजे-श्रावक-श्राविका जमा हुवे थे,-तीर्थंकरके वियोगसें-उनके दिलम-रज-पैदा हुवा, मगर-उम्र-खतम होनेपर किसीका-जोर-नही चलता,—

६ इन्द्रदेवोंने-और-राजे महाराजोने-तीर्थंकर महावीरस्वामीके-शरीरकों-एक-विमानमे-जायेनशीन करके पावापुरी-नगरीके-बहार अग्निसस्कारकों-ले-चले, साथमे गधर्व-देवते-गायन करतेथे, तरह-तरहके दिव्य-और-मनुष्य लोकके-बाजे-बजतेथे, स्वर्गके देवते-तीर्थंकर महावीरस्वामीके विमानपर-रत्नजडित हार-अलकार और दिव्यवस्त्र चढाते थे, राजेमहाराजे-हीरे-मोती-और-जवाहिरात,-शेठ,-साहूकार-शाल-दुशाले,-और कई लोग फुलोंके-हार-चढातेथे, ये-सब-उन खुशनसीबोंकी इज्जत-पूजा-या-सेवाके नमुने-समजो, -जैसे दिलके इरादे उसवख्त पैदा होते है,-हरवख्त नही होते,-अग्निसस्कारके वख्त-केशर, कस्तूरी, अबर, अगर, चदन, और-कापुर-वगेरा तीर्थंकर-महावीरस्वामीके-मृतक-शरीरपर-प्रक्षेप करके अग्निसंस्कार किया,-उनकी दाढाये-इन्द्रदेव-स्वर्गमे लेगये, और-रत्नमय-डब्बोम-रखकर-उनकी इज्जत किई, जिस जगह अग्निसस्कार कियागया था, देवोने रत्नमय-कदम-जायेनशीन किये, राजे-महाराजोंने-उनपर-मदिर तामीर करवाया, अपापा नगरीमे तीर्थंकर महावीरस्वामीका-इतकाल-हुवा, इसलिये देवताओंने इसको पापा-नगरी कही,-लोकभाषामे पापाकी जगह-पावापुरी कही गई,-इसवख्त पावापुरीमे उमदा सरोवर और उसमे-मदिर-बना हुवा है,

-दरगाल दीवालीके रौज-वहां-निर्वाणका जलसा कियाजाताहै, शहर-ब-शहर-और मुल्क-ब-मुल्कके श्रावक उसवख्त जमा होते है, तारीफ करो, उनकी-जो-दुनियवीकारोबारकों-छोडकर-धर्मके लिये वहा जाते है,-तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाणवख्त इन्द्रोंने और राजेमहाराजोंने-दीयोंकी-रौशनी किई, इसलिये उसवख्तसे दीवालीका तेहवार शुरू हुवा,—

७ जैनमजहबमें चौइस तीर्थंकर-बायन धर्म हुवे, उनमे अवल तीर्थंकर रिषभदेव, दुसरे अजितनाथ, तीसरे संभवनाथ, इस तरह-चौइस तीर्थंकरोंके अलग अलग-नाम है, तेइसमे तीर्थंकर-पार्श्वनाथ और चौइसमे तीर्थंकर महावीरस्वामी हुवे, इनके निर्वाणहोनेके कुछ अर्से-पेस्तर इन्द्रभूति-गौतम-गणधर नजीकके गावको गयेथे, कार्तिकसुदी एकमके रौज सवेरेही वापिस आते रास्तेमें उन्होंने सुना, पावापुरीमें तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मुक्ति होगई, सुनतेही उनको दिलमे-रज-हुवा,-कहने लगे-आजसे भारतवर्षमे तीर्थंकर देवोंकी नाइत्तिफाकी हुई, जब उनके दिलमे किसी बातपर-शक-पैदाहोता था, तीर्थंकर महावीरस्वामीसे सवाल करतेथे, और माकुल जबाब पातेथे,-इसी-इरादेसें-दिलमे-कहने लगे,—

[इन्द्रवज्रा-वृत्तम्-]

कस्या हि पीठे प्रणतः पदार्थान्-पुनःपुनः प्रश्नपदी करोमि, क-वा-भदतेति-वदामि-को-वा-मा-गौतमेत्याप्तगिराथ-वक्ता,-१

(अर्थः) मे-किसके-कदमोंमे पेशहोकर सवाल करुगा ? और -मुजे-गौतम ! कहकर कौन कहेगें,-यह-तेरा कहना बहेत्तर नहीं, वगेरा बातें दिलमें सोचने लगे, मगर तुर्त यहभी-खयाल-आया, वीतरागोंको-राग किसका ? राग-दो-तरहका होता है, एक-प्रशस्त राग, दुसरा अप्रशस्त राग, अप्रशस्त राग दुनियादारी तर्फका-प्रशस्तराग-धर्म तर्फका, धर्म तर्फका राग-धर्मके नजीक लाता है, मगर

बापका-सामना करेग, साधुजनोंमें-वैराग्यभाव-कम-होजायगा, और तरह तरहके मतभेद पडजायगें, तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाण समय उनके जन्मनक्षत्रपर-भस्मराशि-नामका ग्रह पेंश हुवा,-जो-उनके शिष्योंकी जमातकों तकलीफ पहुचानेका सूचक-होगा, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके-बाद-(४७०) वर्स पिछे विक्रम सवत् जारी हुवा, तीर्थंकर महावीरस्वामीका निर्वाण होनेपर पावा पुरीमे देवते-देवागना-राजे महाराजे-श्रावक-श्राविका जमा हुवे थे,-तीर्थंकरके वियोगसें-उनके दिलमे-रज-पैदा हुवा, मगर-उम्र-खतम होनेपर किसीका-जोर-नही चलता,—

६ इन्द्रदेवोंने-और-राजें महाराजोंने-तीर्थंकर महावीरस्वामीके-शरीरकों-एक-विमानमे-जायेनशीन करके पावापुरी-नगरीके-बहार अग्निसस्कारकों-ले-चले, शाथमें गधर्व-देवते-गायन करतेथे, तरह -तरहके दिव्य-और-मनुष्य लोकके-बाजे-बजतेथे, स्वर्गके देवते-तीर्थंकर महावीरस्वामीके विमानपर-रत्नजडित हार-अलकार और दिव्यवस्त्र चढाते थे, राजेमहाराजे-हीरे-मोती-और-जवाहिरात,-शेठ,-साहूकार-शाल-दुशाले,-और कई लोग फुलोंका-हार-चढातेथे, ये-सब-उन सुशनसीबोंकी इज्जत-पूजा-या-सेवाके नमुने-समजो, -जैसे दिलके इरादे उसवख्त पैदा होते है,-हरवख्त नही होते,-

वख्त-केशर, कस्तूरी, अवर, अगर, चदन, और-कापुर-वगेरा तीर्थंकर-महावीरस्वामीके-मृतक-शरीरपर-प्रक्षेप करके अग्निसस्कार किया,-उनकी दाढाये-इन्द्रदेव-स्वर्गमे लेगये, और-रत्नमय-डब्बोंमे-रखकर-उनकी इज्जत किई, जिस जगह अग्निसस्कार कियागया था, देवोंने रत्नमय-कदम-जायेनशीन किये, राजे-महा-राजोंने-उनपर-मदिर तामीर करवाया, अपापा नगरीमे तीर्थंकर महावीरस्वामीका-इतकाल-हुवा, इसलिये देवताओंने इसको पापा-नगरी कही,-लोकभाषाम पापाकी जगह-पावापुरी कही गई,-इसवख्त पावापुरीमे उमदा सरोवर और उसमे-मदिर-बना हुवा है,

-दरमाल दीवालीके रोज-यहा-निर्वाणका जलसा कियाजाताहै, शहर-व-शहर-और मुल्क-व-मुल्कके श्रावक उसवख्त जमा होते है, तारीफ करो, उनकी-जो-दुनियवीकारोबारकों-छोडकर-धर्मके लिये वहा जाते है,-तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाणवख्त इन्द्रोंने और राजेमहाराजोंने-दीयोंकी-रोशनी किई, इसलिये उसवख्तसें दीवालीका तेहवार शुरु हुवा,—

७ जैनमजहबमें चौइस तीर्थंकर-बायत धर्म हुवे, उनमें अवल तीर्थंकर रिषभदेव, दुसरे अजितनाथ, तीसरे सभवनाथ, इस तरह-चौइस तीर्थंकरोंके अलग अलग-नाम है, तेइसमे तीर्थंकर-पार्श्वनाथ और चौइसमे तीर्थंकर महावीरस्वामी हुवे, इनके निर्वाणहोनेके कुछ अर्से-पेस्तर इन्द्रभूति-गौतम-गणधर नजीकके गावकों गयेथे, कार्तिकसुदी एकमके रोज सवेरेही वापिस आते रास्तेमे उन्होंने सुना, पावापुरीमें तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मुक्ति होगई, सुनतेही उनको दिलमे-रज-हुवा,-कहने लगे-आजसें भारतवर्षमे तीर्थंकर देवोंकी नाइत्तिफाकी हुई, जब उनके दिलमे किसी बातपर-शक-पैदाहोता था, तीर्थंकर महावीरस्वामीसें सवाल करतेथे, और माकुल जवाब पातेथे,-इसी-इरादसें-दिलमे-कहने लगे,—

[इन्द्रवज्रा-वृत्तम्-]

कस्या ह्रि पीठे प्रणतः पदार्थान्-पुनःपुनः प्रश्नपदीं करोमि,
क-वा-भदतेति-वदामि-को-वा-मां-गौतमेत्याप्तगिराथ-वक्ता,-१

(अर्थः) मे-किसके-कदमोंमे पेशहोकर सवाल करुगा ? और -मुजे-गौतम ! कहकर कौन कहेगें,-यह-तेरा कहना बहेतर नहीं, वगेरा बातें दिलमें सोचने लगे, मगर तुर्त यहभी-खयाल-आया, वीतरागोंको-राग किसका ? राग-दो-तरहका होता है, एक-प्रशस्त राग, दुसरा अप्रशस्त राग, अप्रशस्त राग दुनियादारी तर्फका-प्रशस्तराग-धर्म तर्फका, धर्म तर्फका राग-धर्मके नजीक लाता है, मगर

-बोभी-केवल ज्ञान होनेके पेस्तर छुट जाना चाहिये, गौतम-गणधरका प्रशस्त रागभी छुट गया, मनः परिणाममें विशुद्ध-श्रेणीपर आरूढ हुवे, दिलमे एकत्व-भावना आई, और-व-जरीये क्षपकश्रेणीके-केवलज्ञान इजाद हुवा, केवलज्ञानके बराबर कोई ज्ञान-नही, जिससे दुनियाके तमाम पदार्थोंका-ज्ञान अपने आत्मामें हासिल होजाता है,-कार्तिक सुदी एकमके रौज-गौतम-गणधरकों-जब-केवलज्ञान हुवा,-स्वर्गके देवोंने पावापुरीमे जलसा किया, राजा-हस्तिपालने बडी खुशी मानी, व्यापारी लोगोंने आपसमे जुहार किया.-उसरौजसे कार्तिकसुदी एकमके रौज जुहार करनेकी रश्म जारी हुई,—

[भाइ दुजाका-तेह्वार,-]

८ तीर्थंकर महावीर स्वामीका निर्वाण होना सुनकर दुनियादारी हालतके बडे भाई-नंदीवर्धनजी-जो-क्षत्रियकुंड-गावके राजा थे, दिलम बडा-रज-हुवा, और उस रौज उनसें खानपान-न-होसका, दुसरे रौज-सुदर्शना बहनने दिलासा देकर अपनेघर-खाना-खिलाया, जबसे भाईदुजका तेहवार लोगोंमे जारी हुवा, भाई दुजके रौज-जब-बहेनके घर-भाई-खाना खानेकों जावे,-तो-मुनासिब है, मुताबिक अपनी हेसीयतके-कुछ-दौलत देवे, राजे-महाराजे-और-जिनकों लाखो रुपयोंकी आमदनी-हो, भाई दुजके रौज अपनी बहेनको हजार-दो-हजार रुपये देवे-तो-दे सकते है,-शेठ-साहूकार लोग जिनको-हजारोकी-सालियाना पैदाशहो-अपनी बहनकों-सो-दोसो-रुपये देना चाहे-तो-देसकते है,-मगर-कजुस लोग रुपये-दो-रुपये-या-पाचरुपये देकर काम चलाते है,-और-मुहसें कहते है, दरसालका-काम-ठहरा, एक-साल-ज्यादह देयगें -तो-अगली सालभी देना पडेगा, मगर-ये-सब-नही देनेके बहाने है,-जब-अपनेको अछी पैदाश हो-तो-ज्यादा क्यो-न-देना ?

कितनेक कहते है-हम-अपने बडोकी लकीरपर चलते है,-मगर यहभी-एक तरहका-बहाना समजो, फर्ज करो! दौलत-कम-होनेके सबब बडोने-दोसो-तीनसो रुपयोके खर्चसें विवाह-करवाया था, आज पाचदश हजार लगाकर विवाहका-काम-करतेहो, बतलाइये! बडोंकी लकीर कहा रही? अगर अपनी-बहेन-विधवा होनेकी-वजह-अपने-घर-रहती हो, भाई दुजके तेहवारके रोज उसके हाथ-का परोसा हुवा खाना-खाकर मुताबिक अपनी ताकातके कुछ, दौलत देना, कितनेक अपनी औरतके दबावसे बहेनकों दौलत देसकते नही, और कहते है,-ज्यादह-देयगे-तो-घरमें-रज होगा, मगर-यह-सब कहनेकी बाते है,—

८ दिवालीके दिनोंमें-अछे कपडे पहनना,-उमदा खानपान करना, और धर्मकों-तरकी देना जरुरी है,-व्यापारी लोग इनदिनोमे खर्चआमदनीका हिसाब करते है-मगर इस सालमे पुन्यधर्म कितना और पापकर्म कितना किया? इसका हिसाब कौन करे? धर्मादेकी आइहुई रकम तुर्त खर्च देना चाहिये, अपने चौपडेमे-जमा-कर रखना जैनशास्त्रका हुकम नही,-किसी जैनमदिर-या-जैनतीर्थका-काम-अपने हस्तगत हो-साल-दरसाल-खर्च-आमदनीका हिसाब-छपवाकर जाहिर करदेना चाहिये, देवद्रव्य-जिनमदिर और जिनप्रतिमाके काममें खर्च करदेना-और-ज्ञानखातेका द्रव्य ज्ञानके काममे लगादेना चाहिये, साधारणखातेकी-रकम-साधारणमें इस तरह -जो-रकम जिस काममे खर्च करनेकी हो-खर्च-करदेना चाहिये, धर्मके कामकी-रकम-जमा-रखना बहेत्तर नही, मगर कंजुसोंकों-यह-बात सायत! पसद-न-होगी, दिवालीके दिनोंमे तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मुक्ति और गौतम-गणधरकों-केवल ज्ञान होना-यही-दो-बडी बाते है, और इसीवजहसें इसकों पर्व मानागया, मौज-शौखभी-इनदिनोमें-कियाजाता है,-मगर अवल धर्म-और मौज-शौख उसके पिछे है,-कई-भावित-आत्मा-मुनि-और-कामी

लएतकात श्रावक इन दिनोमे-बेलेका-तप-करते है,-दिवालीके रोज -जब स्वातिनक्षत्रपर चद्रमा-सफर करताहो,-बीज-अक्षरोका-जाप करते है,-और-कई-खुशनसीब-पावापुरी-मुल्क पूरबमे जाकर तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाण महोच्छवमे सामील होते है, तारीफ करो! उनकी-जो-दुनयवी कारोबारको छोडकर धर्मकेलिये वहा जाते है,-तीर्थंकर महावीर स्वामीके निर्वाण होतेवख्त-पावापुरीमे-स्वर्गके देवतोंने-और राजे-महाराजोने जलसा कियाथा, आजकल-देवताओका-प्रत्यक्ष आना मौकुफ होगया, मनुष्यलोग-जलसा करते है,-और धर्मको-तरकी पहुचाते है,—

९ मेने जब-सवत् (१९५८)की-बारीश शहर कलकत्तेमे-गुजारी थी, उसके अवल चैत महिनेकी बात है,-पावापुरीकी जियारतको गया था, और कमल सरोवरके सामनेकी धर्मशालामे ठहरा था,-कमल सरोवरके-मध्यभागमे-जहा-तीर्थंकर महावीर स्वामीके-कदम जायेनशीन है,-शामके-वख्त-यात्रीयोंका जमाव होता था,-हरहमेश-हारमोनियम-और-तबले वगेरा साजसे-तीर्थंकरोंकी इबादत किइ जाती थी, पावापुरी-उस वख्त यात्रीयोके जमावसे सरगर्म थी. दर असल! तीर्थोंमे हरवख्त धर्मकी तरकी बनी रहती है,—

[दरबयान दीवालीपर्वका खतम हुवा,-]

―――

[बयान-तपश्चर्या -]

१ इसमें तप करनेकी पुरी तपसील लिखी गइ है,-बिदुन कामील एतकात और कामील ज्ञानके तप करना-फिजहुल, और कामील एतकात कामील ज्ञानसें तप करना फायदेमद कहा,-अगर-कोई इस सवालको पेश करे, बिना एतकात और बिना ज्ञानके तप करना कैसे हो सकेगा? जवाबमें मालुम हो देखा देखी-और लोगोंमे अपनी तारीफ बढानेके लिये भी-तप-किया जाता है,-अभ-

व्यजीव चारित्र पालता है,-व्रत-नियम-करता है,-लेकिन! उसको धर्मपर एतकात नही होता, इसलिये उसका चारित्र-आत्माको-कोई फायदेमद नही कहा,-द्रव्यक्रिया करके नव-ग्रैवेकतक-गया, इससे आत्महित क्या! हुवा? बल्कि! संसार भ्रमण बढा, श्रद्धा बिना तप करना द्रव्य तप, और श्रद्धासहित तप करना, इसका नाम भाव तप है,-तप-ऐसा करना चाहिये, जिससे दुसरे धर्मके काममें -खलल-न-पहुचे, किसी साधुमहाराजने-या-श्रावकने-आठ-उपवास किये, और-कमताकात होजानेके सबब दुसरे धर्मकाम-न-होसके,-तो-वो-तप-किस कामका हुवा?-सामायिक-प्रतिक्रमण-न-करसके, देवदर्शन जाना-न-बनसका, व्याख्यान धर्मशास्त्र सुनना-न-होसका, सोचो! ऐसा तप करना-क्या! फायदा हुवा,-इसी लिये कहा गया अपने बदनकी ताकात देखकर तप करना, और जहातक बने-रागद्वेष-कम करनेकी कोशीश करना,—

(अनुष्टुप वृत्तम्)

रागद्वेषौ-यदि-स्याता,-तपसा किं प्रयोजन,

तावेव-यदि-न-स्याता तपसा किं प्रयोजन, ॥ १ ॥

(अर्थः) रागद्वेष अगर बने रहे,-तो-वैसा तप करना-क्या! फायदा हुवा? और अगर शास्त्र वांचनेसे-या-अनित्य-अशरण वगेरा भावनासे रागद्वेष-कम-होगये-तो-तप करनेकीभी-क्या जरूरत? फर्ज करो! किसी शख्शने उपवास-व्रत-किया, और दिलमें बुरे इरादे पैदा हुवे-तो-उससे-क्या! फायदा? एक-औरतने-आठ-उपवास किये, उसके-पारनेके रोज-उसके खाविंदने जिमन-किया, दोसो-रुपये खर्च किये, मगर उसका इरादा-धर्मका-नही था, दुनियाकी-वाह-वाह-करानेका था. इससे उस श्रावकको पुन्य नही हुवा, सबब उसका इरादा-पुन्यधर्मका नही था, बल्कि! लोगोंमें अपनी तारीफ करानेका था.-जैसा इरादा-वैसा फल,-अगर इरादा

धर्मका हो-तो-पुन्य होसके. अगर इरादा-दुनियामें तारीफ-बढा-नेका-हो-तो-ससारभ्रमण बढे,-या-या-क्रिया, सा-सा-फलवती जो-जो-क्रिया किइ-जाय,-उसका फल जरूर होना चाहिये, अगर इरादा धर्म पुष्टिका हो-पुन्य होगा, इरादा-ससारपुष्टिको-हो-तो-पाप होगा,-यह-एक साफ बात है,—

२ एक शख्शने-पनराह-उपवास-किये,-पाच-सात रौजतक-उसके दिलके इरादे अछे रहे,-मगर आठवे-रौजसें-उसका दिल-घबडाने लगा, बात बातमे गुस्सा-करता था,-उसके दोंस्त-उसकी मुलाकातको आने लगे,-वालिदने उनकी जियाफत किइ, रसोइयेने रसोइ-बनाइ. और जियाफतके बादभी-बहुतसी चीजें बढ गइ,-पनरां उपवास करनेवाले-शख्शने रसोइयेपर-गुस्सा-किया,-और कहनेलगा-तुं-हमारा घर-उजाडकर देगा,-उसने कहा, आपके वालिदके हुकमसें-मेने-रसोइ किइ थी, बढ गइ-इसका-में-क्या! करू? मगर-पनरा उपवास करनेवाला-शख्श-हमेशा गुस्सा करता रहा,-इस तरह पिछले दिन-उसके-गुस्सेहीमे बतीत हुवे, धर्म शास्त्र फरमाते है,-तपश्चर्याके दिनोंमें-शात स्वभाव रहना,-तप करनेवा-लोंको-अवलसें-सोच लेना चाहिये-मेरे शरीरकी ताकात कितनी है? दिल-घबडाने लगे बुरे इरादे पेश हो-ऐसा-तप-करना बहेत्तर नही,-उपवास व्रत-करनेका-प्रत्याख्यान लेना-तो-एक-एक-रौ-जका-लेना,-एक साथ-आठ-दश-या-पनरा उपवासका प्रत्याख्या-न नही लेना,-न-मालुम तबीयत विगड जाय. तबीयत विगडनेसें मन'परिणाम बिगडेंगे, और अगर मनःपरिणाम बिगडे-तो-दुसरे धर्म काममे खलल पडेगा,-इसीलिये कहा गया,-एक-एक-उपवा सका-प्रत्याख्यान लेना, जबतक-तबीयतम विगाड-न-हो, दश-पनरा चाहे जितने उपवास करते रहना.-जिसरौज तबीयत-बिगडी, -दुसरे रौज-प्रत्याख्यान-नहीं लेना, और-किइ हुई-तपश्चर्याका -पारना-करलेना,—

३ दिलके-इरादेपर-सब बात-दारमदार है,-इस पर एक मिशाल सुनिये! एक-शख्श-बीमार पडा,-और-उसके मरनेका वख्त-करीब आया, रिस्तेदार लोग उसके घर-जमा-हुवे, और लडकेको कहने लगे,-तेरे वालिदके-नामपर कुछ दौलत सर्फ कर, उसने लोकलज्जासें-पांचसोरुपये वालिदके नामपर धर्ममे-बोले, उसका वालिद-बेहोश था, उसने अनुमोदन-नही-दिया, आखीरकार! उसका मरना हुवा,-पिछेसे उसके-बेटेने-लोकलज्जासें नामवरीके खातिर धर्मकाममे खर्च किये, मगर अदरूनी-इरादा-उसका धर्मपर नही था,-इसलिये पुन्य नही, बल्कि! ससारवृध्दिका-पाप-हुवा, उसके वालिदने मरते वख्त-अनुमोदन-नही दिया, इसलिये उसकोंभी-पुन्य-नही, धर्मशास्त्रका फरमान देखो! हरेक काममे करना, कराना,-या-रायतलब-देना,-ये-तीनों बाते हमजोली (सरखी) है,-अगर-इन-तीनोंमेसें एकभी-बात-न-हो-तो-उस धर्मक्रियाका-फल-पुन्य नही, बल्कि! ससारवृद्धि-होनेका पाप है,-थोडे पढे हुवे इस बातकों-समज-न-सके-तो शास्त्रके पढे हुवे-ज्ञानी शख्शोसें दरयाफत्त करे,-कमइल्म लोग-क्रियाकों बडी समजे-तो-उनकी गलती है,-धर्मशास्त्रोंमे-कामील एतकात-और-कामील ज्ञानको-बडा फरमाया, जैनागम नदिसूत्रमे-ज्ञान-बडा कहा, ज्ञानी शख्श-एक-श्वासोच्छ्वासमे-मनःपरिणामसे जितने अशुभ-अनिकाचित-कर्म दूर करसके, अज्ञानी उतने अशुभ अनिकाचित-कर्म-क्रोडपूरव तप करके भी-न-करसके,-सयुत हुवा-क्रिया-विना भी-मनःपरिणामकी विशुद्धिसें-जीव-मुक्ति हासिल कर सकता है,—

४-[तपकरनेके-तरीके,-]

१ इद्रियपराजय तप,	४ धर्मचक्रवाल तप,
२ कषायपराजय तप,	५ अष्टान्हिका तप,
३ योगशुद्धि तप,	६ कर्मसुदन तप,

७ कल्याणिक तप,	२० मेरुत्रयोदशी तप,
८ ज्ञान तप,	२१ वर्द्धमान तप,
९ दर्शन तप,	२२ अक्षयनिधि तप,
१० चारित्र तप,	२३ रोहिणी तप,
११ सलेपना तप,	२४ अष्टापद तप,
१२ कनकावली तप,	२५ विशस्थानक तप,
१३ मुक्तावली तप,	२६ अठाइस लब्धि तप,
१४ रत्नावली तप,	२७ मौन एकादशी तप,
१५ ग्यारह श्राद्धपडिमा तप,	२८ चंदनबाला तप,
१६ वर्षी-तप,	२९ द्वादशांगी तप,
१७ समवसरण तप,	३० पौष दशमी तप,
१८ चौदह पूर्व तप,	३१ सिद्धि तप,
१९ एकावली तप,	

तपश्चर्याकी अखीरमें मुताबिक अपनी ताकातके-उद्यापन-करें, अगर खर्च करनेकी ताकात-न-हो, दिलमें भावना लावे, मेरेपास-दौलत-होती-तो-मे-दर्शन-ज्ञान-चारित्रके उपकरण बनाकर तपको तरकी देता, उद्यापन करके चदोये-पुठीये वगेरा चीजे तुर्त मदिर वगेरा धर्मस्थानमें भेजदेना चाहिये, अपने घरमे रखना धर्मका गुन्हा है,-जब-तुमने कोई चीज धर्ममें बक्षीस करदिई, फिर-वो-घरमें रखनेका किसीकों क्या-हक है,-धर्मस्थानमें भेज दो, उसकी हिफाजत-संघ-करेगा, तुमारे घर-रखनेसें लोभ साबीत होगा, तपके दिनोंमे-अचित-जल-पिना फरमाया, अगर कोइ शरश-छास पिईकर महिने-दो-महिनेके उपवास करें, ऐसा तप करना जैनशास्त्रोंमे मना है,-तपकरनेके दिनोंमे-अगर-अधिक महिना पेंशहो,-तो-पहले महिनेमे पर्वतप-न-करे, दुसरे महिनेमे करें, उपवासव्रत करना-तो-अवल रोज-और-पारनेके रोज एकाशना करना, छठ-अठम-वगेरा तपमेंभी पहले-छेले रोज एकाशना करे जभी छठ-अठम

-तप कहाजायगा, आजकल कईलोग-ऐसा तप-करते नही, और मुखसें कहते है,-हमने-छठ-अठमतप किया है,-जो-जो-जैनमुनि -जैनसाध्वी-श्रावक-या-श्राविका क्रियापात्र-पूर्णसयमी बनना चाहे-ऐसा तप-करे,—

५ वर्षीतप-चैतवदी अष्टमीके रौज शुरू कियाजाता है,-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने वर्षदिनतक उपवास कियेथे,-जमाने हालमे मनुष्योंकी वैसी ताकात रही नही, एकांतर उपवासकरना जारी हुवा, एकरौज उपवास एकरौज एकाशना-इस तरह-तेरह महिने और ग्यारह रौजमे-वर्षीतप खतम होता है, पारनेके रौज-वैशाख सुदी-तीज आना चाहिये,-जिसकों-अक्षय-तृतीया-बोलते है,-तीर्थंकर रिषभदेव-महाराजने हस्तिनापुरमे इक्षुरससें इसी रौज पारना किया था, और इसलिये-वर्षी तपकरनेवालोंको उसरौज इक्षुरससें पारना करना फरमाया,-अगर इक्षुरस-न-मिलसके मिश्रीके पानीसे पारना करना बहेत्तर है,-कइलोग कहते है, (१०८) घडे-रससे तीर्थंकर रिषभदेवने पारना कियाथा, मगर सूत्रआवश्यककी टीका और-कल्पसूत्रवृत्तिमे-एक-घडे-इक्षुरससे पारना किया, भाषाके स्तवन बनानेवाले भूल करदेते हैं, सूत्र सिद्धातके फरमानपर सानीत कदम करना चाहिये, भाषाके स्तवन बनानेवालोंपर नही,-जमाने तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके-घडेभी-बडे बनते थे, जैसे मनुष्योंका-जिश्म-बडा-घडेभी बडे बनाये जाते थे, खयाल करनेकी बात है,-(१०८) घडे-इक्षु रसके एक आदमी कैसे पिइ सकता है,-अछी तकदीरवालोंका खान-पान-कम होता है, कमइल्म-लोग-कुछभी-समजो, ज्ञानीयोंका उनसें क्या! सरोकार!—

६ विशस्थानक तपके बयानमे एक एक-पदपर विश-विश-उपवास करना कहा. अगर किसीकी ताकात उपवासव्रत करनेकी-न-हो, आचाम्ल-एकाशना करकेभी-विशस्थानक-तप-करसकते है,-मुक्तिके लिये-तप-करना, मगर,-दुनयवी आराम-चैन-मिलनेके

लिये नही. जैन शास्त्रोमे-क्रिया-पांचतरहकी बयान फरमाई, अवल -विष क्रिया, दुसरी-गरलक्रिया, तीसरी-अन्यअनुष्ठानक्रिया, चौथी-तद्‌हेतुक्रिया और पांचमी-अमृतक्रिया, खानपानके लो भसें क्रिया किई जाय उसका-नाम-विषक्रिया, अगले जन्ममे-मुजे-अमलदारी मिले-या-बहिस्तके-आराम-मिले, इस इरादेसें-जो-कुछ क्रिया किइ जाय इसका-नाम-गरलक्रिया, दिल-साफ नही, और दुसरोकी देखा देखी-क्रिया किइ जाय इसका नाम अन्य अनुष्ठान-क्रिया, साफ दिलसें धर्मकी राहपर क्रिया किइ जाय, इसका नाम-तद्-हेतु क्रिया, और सचे दिलसें मुक्तिकी राहपर क्रिया किइ जाय-जिसके करते वख्त शरीरके-रोम-रोम-खिलजाय और आखोंमे-पानीके-डोरे-आजाय ऐसी क्रियाका नाम अमृतक्रिया कही.-इनमें अवलकी तीन क्रिया-आत्माको फायदेमद नही, बल्कि दौजकका-राहवर-है, पिछली-दो-क्रिया फायदेमद कही, और-वही-दो-क्रिया मुक्तिका राहगीर है,—

७-[विशस्थानक-तपके बारेमें-आवश्यकसूत्र निर्युक्तिका पाठ,-]

(गाथा)

अरिहत सिद्ध पवयण-गुरु थर बहुसुए तवस्सीसु,-
वच्छलया-य-एसिं-अभिरवनाणोवयोगे-य,- १
दसण विणयण आवस्सए-य,-सीलवए-निरइआरो,
खण लव तवचियाए-वेयावचे समाही य,-२
अपूव्व नाण-गहणे-सुअभत्ती पवयणपभावणया,
एएहि कारणेहि-तिथ्थयरत्त लहइ जीवो,-३

(अर्थः-)

१ ॐनमो अरिहताण,	४ ॐनमो आयरियाण,
२ ॐनमो सिद्धाण,	५ ॐनमो थेराण,
३ ॐनमो पवयणस्स,	६ ॐनमो उवज्झायाण,

७ ॐनमो लोए सव्वसाहूण,
८ ॐनमो नाणस्स,
९ ॐनमो दसणस्स,
१० ॐनमो विणयस्स,
११ ॐनमो चारित्तस्स,
१२ ॐनमो बभवयस्स,
१३ ॐनमो खणलव भावणापयस्स,
१४ ॐनमो तवस्स,
१५ ॐनमो दाणपयस्स,
१६ ॐनमो वैयावच्च पयस्स,
१७ ॐनमो समाहि-पयस्स,
१८ ॐनमो अपुव्वनाणस्स,
१९ ॐनमो सुअस्स,
२० ॐनमो तिथ्थस्स,

८ अरिहतपदके-१२-खतिक करना, १२ क्षमाश्रमण देना. १२ -लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो अरिहताण पदकी २० -माला फिराना, सिद्ध पदके ३१-स्वस्तिक करना, ३१-क्षमाश्रमण देना,-३१-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और नमो सिद्धाण पदकी २०-माला फिराना,-प्रवचन पदके-२७-स्वस्तिक करना, २७-क्षमाश्रमण देना, २७-लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो पवयणस्स-पदकी २०-माला फेरना,-आचार्य पदके-३६-स्वस्तिक, करना, ३६-क्षमाश्रमण देना,-३६-लोगस्स कायोत्सर्ग करना और ॐनमो आयरियाण पदकी २०-माला फिराना, स्थविर पदके-१०-स्वस्तिक करना, १०-क्षमाश्रमण देना, १०-लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो थेराण पदकी २०-माला फिराना, उपाध्याय पदके, २५-स्वस्तिक करना,-२५-क्षमाश्रमण देना, २५-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो उवज्झायाण पदकी २०-माला फेरना, साधु पदके-२७-स्वस्तिक-करना, २७-क्षमाश्रमण देना, २७-लोगस्सका कायोत्सर्ग-करना, और नमो लोये सव्वसाहूणं पदकी २० माला फेरना. ज्ञानपदके ५१ स्वस्तिक करना, ५१-क्षमाश्रमण देना, ५१ लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और ॐनमो नाणस्सपदकी २० माला फेराना, दर्शन पदके ६७ स्वस्तिक करना ६७ क्षमाश्रमण देना, ६७ लोगस्सका कायोत्सर्ग करना और-ॐनमो दस-

णस्स-पदकी-२०-माला फेरना,-विनय पदके (५२)-स्वस्तिक करना, (५२)-क्षमाश्रमण देना,-(५२)-लोगस्सका कायोत्सर्ग-करना, और ॐनमो विनय-पदकी-(२०)-माला फिराना,—

९ चारित्र पदके-७०-स्वस्तिक करना ७० क्षमाश्रमण देना, ७०-लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो चारित्तस्स-पदकी -२०-माला फेरना, ब्रह्मचर्य पदके-१८-स्वस्तिक करना, १८-क्षमाश्रमण देना, १८-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो बम-वयस्स-पदकी (२०) माला फिराना, अभिखण-लव-भावना पदके-२५-स्वस्तिक, करना, २५-क्षमाश्रमण देना, २५-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना और ॐनमो-खण-लव-भावणा पयस्स-पदकी २०-माला फेरना, तप पदके-१२-स्वस्तिक करना, १२-क्षमाश्रमण देना, १२-लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो तवस्स-पदकी-२०-माला फिराना, दान पदके-११-स्वस्तिक करना, ११-क्षमाश्रमण देना, ११-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो-दाणपयस्स-पदकी-२०-माला फेरना, वैयावच पदका-५१-स्वस्तिक करना, ५१-क्षमाश्रमण-देना, ५१-लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और ॐनमो वैयावच्च पयस्स-पदकी-२०-माला फिराना, समाधि पदके-१७-स्वस्तिक करना, १७-क्षमाश्रमण देना, १७-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो समाहि-पयस्स-पदकी -२०-माला फिराना, अपूर्वज्ञान पदके-५१-स्वस्तिक करना, ५१-क्षमाश्रमण-देना, ५१-लोगस्सका कायोत्सर्ग करना, और -ॐनमो अपुव्वनाणस्स-पदकी-२०-माला फिराना,-श्रुतपदके २०-स्वस्तिक करना, २०-क्षमाश्रमण देना २०-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और-ॐनमो सुअपयस्स-पदकी-२०-माला फिराना, तीर्थपदके-३८-स्वस्तिक करना, ३८-क्षमाश्रमण देना, ३८-लोगस्सका-कायोत्सर्ग करना, और ॐनमो तिथ्थस्स-पदकी -२०-माला फिराना,-इन-विश-स्थानकके विशपदमेंसें-चाहे-

कोइ शख्श कामील एतकात और कामीलज्ञानसें एक-पदकामी -आराधन करे-मुक्ति पासके,-चुनाचे! जमाने हालमे-इसजगहसें मुक्ति पाना नही होसकता, वैसी ताकात और ज्ञान आजकल रहा नही, इसलिए जन्मातरमे-मुक्ति पासकेगा, इन विशपदोंमेसें चाहे-कोई शख्श अरिहंत पदकी भक्ति करे, कोई सिद्धपदकी-या-कोई प्रवचन पदकी भक्ति करे, ब-शर्तेकि-दिली इरादा पाक और साफ होना चाहिये,-वो-शख्श मुक्ति पासकेगा,—

१० कोई शख्श ज्ञानपढे और उसीमे मशगूल होजाय उसके लिये वही फायदेमद है, कोई शख्श सुदेव, सुगुरु, और सुधर्मपर अपने एतकातसे पाबंद रहे, चाहे उससें दुसरी कोई क्रिया-न-बनसके, उसकीभी मुक्ति होसकेगी, पेस्तर लिखा गया है,-जमाने हालमें-इसजायसें-मुक्तिहोना नही बनसकता, बजाये-मुक्तिके-बहिस्त मिलसकेगा, और महाविदेहक्षेत्रमें जन्मपाकर मुक्ति जासकेगा, कोई शख्श देवगुरू धर्मकी साफ दिलसें मुक्तिकी राहपर खिदमत करे, कोई कामील एतकातसें-चारित्र पाले, कोई ब्रह्मचर्यव्रतपर साबीत कदम रहे, या-कोई-हमेशां वैराग्य-भावनामें पाबद रहे,-तो-उसकीभी-मुक्ति-होसकेगी, कोई-कामील एतकातसें-तपश्चर्या-करे, कोई-धर्मके बारेमे-रायतलब-दे, (यानी) सत्यधर्मका अनुमोदन-करे, कोई-अपूर्वज्ञानके धार्मिक पुस्तकोंकी हरवख्त स्वाध्याय करता रहे, किसीसे व्रत-नियम-या-तप जप-न-बनसके और जैनतीर्थोंकी-जियारत करे,-तो-उसकीभी-मुक्ति-होसकेगी,-मुक्ति पानेके विशरास्ते बयान फरमाये, कोई किसी रास्तेपर चले, मगर सबमे कामील एतकात-और कामीलज्ञानकी जरूरत होगी, कामील एतकात कहनेसे श्रद्धा-और कामीलज्ञान कहनेसे श्रद्धासहित ज्ञान इन दोनोंकी सबमें जरूरत है,-अगर कोई कहे, देवपूजा-सामायिक-प्रतिक्रमण-व्रत-नियम और चारित्र विना मुक्ति नही होसकती तो-यह-कहना गलत है,-मुक्तिके वीश-रस्ते बयान किये

उनमेंसे चाहे कोई किसी रास्तेको इख्तियार करे,-श्रद्धा और ज्ञान सहित हो-तो-सभी-रास्ते-मुक्ति देनेवाले है,-अगर श्रद्धा-और श्रद्धापूर्वकज्ञान नही-तो-सब-नेंकार है,-इस बातकों कोई उमदातोरसें समजे,—

११ अगर कोई श्रावक हरहमेश सामायिक-प्रतिक्रमण करे, चौदह नियम धारे, देवपूजन करके केशरका-तिलक लगावे मगर देव द्रव्य देवे नही, धर्मादेकी बोली हुइ-रकम-तुर्त खर्चे नही, उद्यापनमे-धरी हुइ चीजें-चदोवे-पुठिये,-कलश-रकाबी-धूपदाने-पुस्तक-पात्रे-तर्पणी-कमल-वगेरा जिनमदिरमे-या-जहांजहा देनेकी हो-देवे नही, और घरम रखे, दिलमे सोंचे नही, जो-चीज-धर्मम कर दिइ, उस चीजको घरमें रखना क्या! जरूरत? अगर कहाजाय दुसरे श्रावक इन चीजोंकी हिफाजत-न-रखेगे, इस लिये मने अपने घर रखी है,-तो-यह कहना मुमकीन नही अपने-घरमे-रखनेसे-लोभ-होना साबीत होगा, अपनी तर्फसें-जिनमदिरमे-तीर्थम-पाठशाला-वगेरामे जहा देना हो, तुर्त देदो, उसकी हिफाजत जैनसघ करेगा, तुमने-जो-चीज-धर्मम देना था-वो-देदिइ उसका पुन्य-तुमको-हुवा, ऐसा जानो, अगर कोइ शख्श-पुन्य-धर्म-करे नही और दिलमे ख्वाहेस रखे, मुजे-बहिस्त-या-मुक्ति-मिलेगी,-तो-ऐसी हालतमे बहिस्त-या-मुक्ति-मिलना गेरमुमकीन है,—

(बयान तपश्चर्याका खतम हुवा,)

[बीच-बयान-योग-उपधान,]

१ इसम जैनमुनिकों-योगवहन-और-श्रावक-श्राविकाको उपधान किसतरह करना चाहिये आजकल विदुन शास्त्रपढे कोरी क्रिया करके योग-उपधान करलेते है, जिस शास्त्रका-योग-चलताहो,-उसका-सूत्रपाठ और अर्थ-कठ करना नही, और आचार्य-उपाध्याय-वगेरा पदवीधर-बनना तपमे और क्रिया करनेमें जि-

तनी महेनत पडती है,-ज्ञान पढनेमें-उससे ज्यादह पडती है, गु-
रूकी खिदमत करना पडे-मग्जचिरागे रौशन-हो,-जभी इल्म पढा
जाता है,-थोडे पढे हुवे श्रावक-श्राविकाके सामने-कोई जैनमुनि
चाहे-सो-कहे, मगर गीतार्थ जैनमुनि-जो-जैनागमके पुरे माहित-
गार है,-उनको माकुल जवाब देना दुसवार है,-बतलाना चाहिये
जिस जैनशास्त्रका-योग वहना उस शास्त्रका-मूलपाठ और-अर्थ-
हिब्ज-याद करना नही. और-कोरी क्रिया करके योगवहन-हो-
गया-मानना किस जैनशास्त्रका फरमान है? विना ज्ञानके-क्रिया-
कमदर्जेपर कही,-न-मालुम-थोडे वर्सोंसें ऐसी रूढी क्यों दाखिल
होगइ-अकेली-क्रिया करनेसे योगवहन होगया-मान लेना,-

२ पन्यास-पदवी विधिवादके-किसी जैनागममे नही लिखी,
थोडे वर्सोंसे इजाद हुई है, अगर कोई जैनमुनि-इस बातका सबुत
रखते हो,-पाठ-बतलावे, ओघनिर्युक्ति जैनशास्त्र-जो-विधिवादमें
दाखिल है, उसमे-आचार्य-उपाध्याय-प्रवर्तक-गणी-गणावच्छेदक
पदवी लिखी है,-मगर पंन्यास पदवी-किसी जैनशास्त्रमे-नही
लिखी,-अगर सवाल कियाजाय,-श्रीमान्-सत्यविजयजी-पंन्यास
वगेरा-नाम-चरितानुवादमे-आते हैं,-जवाबमे मालुमहो,-पंन्यास
पदवी-नाम आता है,-इससें क्या? हुवा? चरितानुवाद-सर्वव्यापी
-नही, विधिवाद सर्वव्यापी-कहा, विधिवादमे-तीर्थंकर गणधरोंने-
किसी जगह पंन्यास पदवी नही फरमाई,-रूढी-या-परपरा तीर्थंकर
गणधरोंके-फरमानसे बडी नही,-फर्ज करो! जमाने हालमे-कोई-
रूढी-चलपडे-और-वो-दोसो-चारसो वर्स वतीतहोनेपर पुरानी
होजाय तो-क्या! वो-माननेके काबील होगई? हर्गिज! नही,

३ जैनागम-कल्पसूत्रमे-योगवहन-करनेका बयान है, उसमे
लिखा है-वालिद-और-बेटेने,-या-मालिक और नोकरने-एकशाथ
-दीक्षा इख्तियार किई हो, योगवहनके वख्त-ज्ञानपढनेमे वालिद
और मालिक-बेटे और-नोकरसे पिछे रहजाय-तो-थोडेवख्त ठह-

राना, इतनेपरभी-अगर-वालिद और मालिक पढनेमें शाथ-न-पहुचसकते हो,-तो-उनको कहना, आपकेलिये आपका बेटा और नोकर-दुसरे योगवहन करनेवालोंसें पिछें रहजायगें, अगर इजाजत देतेहो-तो-उनकों आगे पढाना शुरू रखे,-इस सबुतसें पायागया,-योगवहनमें-ज्ञानपढाना चाहिये, विदुनज्ञान पढे योग नही होता, कितना उमदा सबुत है,-न-मालुम-आजकलके-मुनिजनोंने-इस सबुतकों-अमलमें क्यों नही लिया? और क्रियाका पक्षकरके-योगवहन-होगया-समजने लगे? बडी-ताज्जुबकी-बात है,-अगर कोई कहे, अमुक-मुनिमहाराजको-बडी धूमधामसें-दो-हजार-मनुष्योंकी मेदनीमें-आचार्यपदवी दिइगई, जबानमें तलब-करे,-दो-हजार मनुष्यकी मेदनी क्या! इससेंभी ज्यादा हो तो-क्या! हुवा? आचार्य पदवी लेनेवालोंने आचार्य पदके (३६) गुण हासिल किये है-या-नही?-और जमाने हालमें-जो-(४५)-जैनागम मौजूद है,-गुरुगमसें उसका ज्ञान पढा है-या-नही? इसपर खयाल करना चाहिये,-जैनमुनिकों-नवकल्पी विहार करना कहा, दिवसके तीसरे प्रहर गौचरी जाना, और दिनमें-एकही-दफे-आहार करना फरमाया, दिनमें-नींद-नही लेना, सौने-चादीके फ्रेमवाले चश्मे नही पहेनना, बयालीश दोषरहित आहार लेना, किसीके लडकेकों-विना हुकम-वारीशोंके दीक्षा-नही देना, सफरमें किसीकी-मदद-न-लेना, अप्रतिबद्ध-विहार करना,-गावके-बहार उद्यान-बनखड-या-बागमें रहना,-सिर्फ! गौचरीके लिये गाव-नगरमें आना, शुभह-शाम दोनों वख्त-प्रतिक्रमण करना,-इतनी मामुली धर्मक्रिया करते रहे-तोभी-बहुत कुछ है,-जिस शास्त्रका-योगवहना-उसशास्त्रके-पाठको अर्थके शाथ कठाग्र नही करना और कोरीक्रिया करके योगवहन करलिये मानना गलत है,—

४ श्रावकोंकेलिये उनकी-धर्मक्रियाका बयान सुनिये! धर्मश्रद्धामें पाबद रहना, और मिथ्या प्रचारसें बचना, श्रावकोंका फर्ज

है,-पनरांह कर्मादान नही सेवना, असत्यभाषण नही करना, अदत्तादान-नही-लेना, परस्त्रीगमन-नही करना, रात्रीभोजनसें परहेज रखना, बाईस तरहके अभक्ष्य-बत्तीस तरहके अनंतकाय जमीकंद-लहसन-प्याज-वगेरा नही खाना,-हरहमेश जिनपूजा-सामायिक-प्रतिक्रमण करना, अष्टमी-चतुर्दशी-वगेरा तिथिके रोज-पौषधव्रत करना, दरसाल-एक-जैनतीर्थकी जियारतको जाना, धर्मकामके लिये बोलीहुई-रकम-तुर्त उस काममे खर्च करदेना, घरमे जमा, नही रखना, उम्रभरमें नवलाख-नमस्कार मत्रका-जाप-करना, और श्रावकके-एकीस-गुण-हासिल करना,—

५ श्रावक श्राविकोंके उपधान वहनेमे-आजकल पठन-पाठन होता नही, और गिनतीके दिनोंमे-अकेली क्रिया करके उपधान-वहन-करलेते है,-शास्त्रोंमे अवल ज्ञान कहा, और आजकलके उपधानमे अकेली क्रिया-आगे कर दिई,न-मालुम थोडे वर्सोसें एसी रूढी -क्यों! दाखिल होगई? किताब-उपधान विधि-गुजराती हर्फोमे-छपीहुई जिसके पृष्ठ (४८) है,-जिसकों छपवाकर प्रसिद्ध करनेवाले मास्तर-छगनलाल गुलाबचद-ठिकाना गोपीपुरा-सुरत है,-मेरे देखनेमे आई, उसके अवल पृष्ठपर लिखा है,-मुनिमहाराजाओंने सूत्र-सिद्धातोना अभ्यासनी योग्यता प्राप्तकरवा माटे जेम-योगोद्वहन करवानु परमात्माए सिद्धातोद्वारा फरमाव्यु छे,-अने-ते-आज्ञानु आराधन करवाना अभिलाषी मुनियो योगोद्वहन करे छे,-ते-प्रमाणे श्रावकोने माटे देववदनमा आवता सूत्रोने माटे उपधान वहन करवानुं शास्त्रकारे फरमावेलु छे, प्रथम अक्षरमात्र-ते-ते-सूत्रो कठे कर्या होय, अथवा अर्थसहित तेनु परिज्ञान-मेलव्यु होय,—

(जवाब)-जैसा योग और-उपधान वहन-करना तीर्थंकर-गणधरोने फरमाया है,-आजकल-वैसा-करते नही, और अकेले क्रिया करके योग और उपधान वहन होगया, समज लेते है. कितनी भडी -गलती है,? जैन शास्त्रके फरमानपर खयाल करो-तो-ऐसी कोरी

क्रियाकों योगवहन-नही-कहा, जो-जो-जैनमुनि-जिसजिस-जैन-शास्त्रका योगवहन करे उस उस जैनशास्त्रके मूलपाठकों-मय-अर्थके हिब्ज करे, जब योगवहन होसकता है,-जैसा-मैने इसी लेखकी तीसरी कलममे-कल्पसूत्रकी हकीकत देकर सबुत बतलाया है-विदून शास्त्र पढे कोरी क्रिया करके योगवहन करे और विदून गुण हासिल किये-आचार्य-उपाध्याय वगेरा पदवी इख्तियार करे,-ऐसा कोई जैनशास्त्र नही फरमाता, श्रावकोंकोंभी देववदनके लिये उपधान वहना कहा,-वोभी-देववदनके मूलपाठकों-अर्थके शाथ-कठाग्र करना-चाहिये, ज्ञान पढाते नही, और मुकरर किये हुवे दिनोंमे-कोरी-क्रिया कराके उपधान होगया कहदेते है,-बतलाना चाहिये यह-किस जैनशास्त्रका हुकम है ? आजकल देखाजाता है,-कइ-श्रावक-श्राविकाकों-सामायिक-प्रतिक्रमणभी-अर्थ सहित आता नही, और उपधानमे दाखिल होजाते है.-न-मालुम ऐसा-रवाज-आजकल-क्यों चलपडा ? इसका-कोई-जवाब देवे,—

६ आगे किताब उपधान विधिके (४) पृष्ठपर बयान है, उपधान विधि-जीत व्यवहारने अनुसारे लखवामां आवी छे, श्रीमहानिशीथ-सूत्रमां-ते-सबधी विशेप अधिकार दृष्टिगोचर थाय छे,—

(जवाब) जीत व्यवहार और महानिशीथसूत्रमे ऐसा पाठ कहां है ? विना ज्ञानपढे-कोरी क्रिया करलेनेसें उपधान वहन होजाय,-जीत व्यवहार-या-महानिशीथसूत्रका-पाठ क्यों नही बतलाया ? विना पाठ बतलाये-चाहे-सो-कह दो, इससे क्या ! हुवा ? जैनागमके पढे हुवे-जैनमुनि-इस बातको-कैसे-मजुर करेंगे ? थोडे पढे हुवे-श्रावक श्राविका-चाहे-मजुर करले-मगर विना सबुत-पढे लिखे-जैनमुनि-इस बातकों मजुर नही-कर-सकते, फिर इसी उपधानविधि-किताबके (४) पृष्टपर ऐसाभी तेहरीर किया है,-उपधान वहन करावनाना अधिकारी पण श्रीमहानिशीथसूत्रना-योगवहन-करनार-अथवा-गणिके-पन्यास थया होय-तेवा-मुनि-छे,—

(जवान) महानिशीथसूत्र-पढे नही,-और योगवहन करलिये-इससे उपधान वहन करानेके अधिकारी होगये ऐसा कहना नही बन सकता-महानिशीथसूत्रका मूलपाठ अर्थके शाथ हिब्ज किया नही,-फिर महानिशीथका योग कैसे होगया? सोचो! कायदेकी किताबका अभ्यास करके इम्तिहानमे पास हुवे नही, फिर वकील कैसे बनसके? महानिशीथसूत्र पढना क्या! सहजबात-समजते हो? पन्यास पदवीके बारेमे इस लेखके-दुसरे नवरकी कलम देखो! पन्यास पदवी-विधिवादमे-किसी जैनशास्त्रमे नही लिखी.-ओघनिर्युक्ति-जैनशास्त्रमे-आचार्य-उपाध्याय, प्रवर्तक-गणी-गणावच्छेदक पदवी लिखी है. मगर पन्यास पदवी किसी जैनशास्त्रमे नही फरमाइ, चरितानुवाद-अल्पव्यापी-और विधिवाद सर्वव्यापी कहा, -आगे-इसी-उपधानविधि-किताबके पृष्ट (४) पर बयान है,-प्रथम-उपधान, पंचमगल महाश्रुतस्कध (नवकार)नु, बीजुं उपधान-प्रतिक्रमण श्रुतस्कध (इरिया वही-तस्सुत्तरी)नु -त्रिजु उपधान-शक्रस्तवाध्ययन (नमुथ्थुण)नु,-चौथु-उपधान-चैत्यस्तवाध्ययन (अरिहत चेइयाण-अन्नथ्थ उससि एण)नु.-पाचमु उपधान-नामस्तवाध्ययन (लोगस्स)नुं,-छट्ठुं उपधान-श्रुतस्तव-सिद्धस्तवा ययन (पुख्खरवरदी,-सिद्धाण बुद्धाणं-अने-वैयावचगराणं-)नु,-आ-छ उपधान वहन करवाना दिवसो अनुक्रमे १८-१८-३५-४-२८-७-ए प्रमाणे कुलमलीने ११०-थाय छे,—

(जवान) नवकार, इरियावही, तस्सउत्तरी, नमुथ्थुणं, अरिहंत-चेइयाण, अन्नथ्थ उससि एण, लोगस्स, पुख्खरवरदी.-सिद्धाण बुद्धाण, और वैयावच्च गराण, ये-सूत्र और उनके अर्थ-जिसने सिखे पढे नही, उससे उपधान कैसे होसके, इसका कोई जवाब देवे-कोरी क्रिया कर लिइ-और ज्ञान पढा नही, इससें क्या हुवा? श्रद्धा-और ज्ञानसहित-क्रियाकारआमद फरमाइ, श्रावक-श्राविका चाहे-कोई -अनजानभी-हो, मगर उपधान वहन-करानेवाले-साधु महाराज-

जानते हुवेभी-अकेली क्रियासें उपधान वहन होगया क्यों फरमाते है,-? बढे ताज्जुबकी बात है,-

७ अगर कहाजाय दशवैकालिकसूत्र वृत्तिमे-जैनाचार्य-हरिभद्र-सूरिजी बयान करते है,-"श्रुतग्रहणमभीप्सता-उपधान कार्य-" श्रुतज्ञानका र्चाहेसमद उपधान वहन-करे, (जवाब) देखिये! इसपाठ-मेभी-श्रुतज्ञानकी-पुख्तगी हुई, जिस तपकरके श्रुतज्ञानका अध्ययन किया जाय-उसका नाम-उपधान है,-विदुन श्रुतज्ञान पढे-कोरी तपस्या करना-उपधान नही, देववदन, प्रत्याख्यान, क्षमाश्रमण. कायोत्सर्ग, और नवकारवाली गिननेमे वरत बतीत करा देना, और ज्ञान पढने पढानेकी कोशिश नही करना, इसका क्या सबब? उद्देश.-समुद्देश,-अनुज्ञा,-वगेरा कोरे शब्द-बोल दिये इससे क्या! ज्ञानहासिल होगया? बेठकर प्रतिक्रमण करे-या-बेठकर क्षमाश्रमण देवे-तो-दड-प्रायछित-और ज्ञान पढना-छोड दिया उसका-कुछ दड प्रायछित नही, क्या! खूब बात हुई?—

८ फिर उपधान विधिके (२२) मे-पृष्ठपर लिखा है, चउसरणादि चारपयन्ना अने दशवैकालिकसूत्रना (४) अध्ययन भणवानी श्रावकने छुट छे-तेने माटे त्रण त्रण आयबिल करीने-वाचना-लेवानो विधि छे,-ते-गुरुगमथी-जाणी लेवो —

(जवाब,) चौसरणादि चारपयन्ने और दशवैकालिकसूत्रके-(४) अध्ययन श्रावकको पढनेकी छुट है,-ऐसा कहनेसें-क्या हुवा? पठनपाठन-तो-कराते नही, कोरी बाते बनाना क्या फायदा? तीन तीन-आचाम्ल करवाके वाचना देदिइ-इससेंभी-क्या हुवा?-शास्त्रकारोका फरमाना है,-जनतक-उसका-मूलपाठ-मय अर्थके-वो-शरश हिन्न-याद-न-करसके-क्रियाको शुरू रखो -देववदनके सूत्र -नवकार, इरियावही,-तस्सउतरी, शक्रस्तव,-अरिहत चेइयाण, अन्न-त्थ-उससिएण, लोगस्स,-पुख्खरवरदी -सिद्धाण बुद्धाण और-वैयावचगराण, वगेरा सूत्रके पाठमी-अर्थके-साथ-जनतक-श्रावक-

श्राविका कंठाग्र-न-कर सके उपधानकी क्रिया शुरू रखे, मुकरर किया हुवे दिनोंमे शुष्क क्रिया करादेनेसे-उपधान वहन-होगया,-न-समजे, बस! यही-इस लेखका-मतलब है,—

९ कइ शहरोंमे जहा जैनोकी आबादी कसरतसें हो कइ-जैन मुनि-वहा बारीश गुजारते है,-पर्युषणपर्व-खतमहोनेपर श्रावकोंको उपधान वहनेका-उपदेश करते है.-अगर कोई जैनमुनि-पूर्णसयमी -और-क्रिया पात्र-बनना चाहे,-अछी बात है,-मगर-जमाने हालमे-क्रियाभी-पुरी-कहा बन सकती है,-देखो! जैनशास्त्रोंमे जैन-मुनिकों-नवकल्पी-विहार करना कहा अगर कोई जैनमुनि-जमाने हालमे-एक शहरमे-वर्स-या-छह-महिनेतक ठहरे रहे-तो-नवकल्पी विहार कहां रहा?-जो-जो-जैनमुनि-नवकल्पी-विहार करे-तो-बेशक! वे-पूर्णसयमी क्रिया पात्रभी-होसके, जैनमुनिकों दिनमे एकदफे आहार लेना कहा, अगर कोई जैनमुनि-दिवसके-पहले पहेरमे-चाह-दूध-लेने जाय, दुफेरकों-आहार और फिर शामकोभी-दुसरी दफे आहार लेने जाय-तो-पूर्णसंयमी-क्रियापात्र कैसे कहना अगर कहा जाय, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव देखकर बरताव किया जाता है,-तों-यह-एक-अलग बात हुई.-शास्त्र फरमान देखो-तो-दिनमे -एकही-दफे जैनमुनिकों-आहार लेना कहा, जैनमुनिकों दीनमे-नींद-लेना जैनशास्त्रोंमे नही फरमाया,-स्वाध्याय करो, बाचना लो, -या-कोई-पाठ मुहजबानी याद करो,-जब-पूर्णसंयमी-क्रियापात्र होसकते हो, जैनमुनिकों-सोने-चादी-वगेरा धातुके बने हुवे फ्रेमवाले चश्मे रखना बेहत्तर नही, अगर कोई-जैन-मुनि-धातुके-बने हुवे फ्रेमवाले-चश्मे-रखे-तो-जाइज नही. काष्टके-या-कचकडेके बने हुवे फ्रेमवाले चश्मेभी-मिल सकते है,-इतनी दलिलें इस लिये -यहा दिइ गइ है,-अगर पूर्णसयमी होना हो-तो-मुताबिक शास्त्र फरमानके बरताव करे,—

[अठाइस-लब्धि,-]

१ जमाने पेस्तरके खुशनसीनोंकों-अठाइस लब्धिये होतीथी,- अपने आत्मामे एकतरहकी ताकात हासिल-होना इसका नाम- लब्धि-समजो, यहा अठाइस लब्धियोंका बयान किया जाता है,- सुनिये ! पहली आमशोषधि, जमाने पेस्तरके-ऐसे-लब्धिवाले मुनि होतेथे, जिनकी-कदमबोशीसें-बीमार शख्शोंकी बीमारी रफा होजातीथी, दूसरी विप्रौषधिलब्धि,-जिनके बदन छूनेसें बीमार शख्शोंकी बीमारीये मिट-जाती थी, तीसरी-खेलौषधिलब्धि, जिन के-थुक-लगनेसें-कोढ-चला जाताथा, चौथी-जलौषधिलब्धि- जिनके पसीनेके लगनेसें-दाह-रोग मिट जाताथा, पाचमी सर्वौषधि लब्धि,-जिनके बदन छुनेसें बीमारोकी बीमारीये-नेस्तनाबुद हो जातीथी, छठी-संभिन्नश्रोत्रीय-लब्धि, तरह तरहके-बाजे बजते रहे, उनकी-जुदी जुदी अवाज अपने दिमागकी ताकातसें जान सके, सातमी अवधि-ज्ञान-लब्धि,-अवधिज्ञानवालोंकी-जो-जाननेकी ताकात होती है, उसको-अवधिज्ञानलब्धि कहते है,—

२ आठमी-मन पर्यवज्ञान-लब्धि,-अढाई-द्वीपके वाशिंदोंका- दिलीइरादा अपने ज्ञानसे जान सके इसको-रिजुमति-लब्धि- कहते है, नवमी विपुलमति लब्धि,-अढाई-द्वीपके रहनेवालोंका दिलीइरादा सूक्ष्मरूपसें जान सके उसकों-विपुलमति लब्धि-कहते है,-जैसा किसी शख्शने अपने दिलमें-घडा-मिलनेका इरादा किया-तो-रिजुमति लब्धिवाले उतनाही जान सकेंगे, मगर विपुल- मति लब्धिवाले वारी कीसें इतना ज्यादा जान सकते हैं,- फला शख्शने-मिट्टीका घडा चाहा है -फला शख्शने सोनेका-या-चादी- का-चाहा है,-दशमी-चारणलब्धि,-व-जरीये इस लब्धिके पेस्तर कई-मुनि-आसमानमे सफर करते थे जघा चारण मुनि और-विद्या चारण मुनि-अलग अलग-भेदमे है,-मगर-वे-इसी लब्धि-शुमार किये जाते है,-जमाने हालमें-पेस्तर जैसा-एतकात-ज्ञान-और-तप

रहा नही.–इसलिये आज कल–वैसी ताकातभी–मौजूद नही, विद्या-
धर–लोग–जो–वजरीये–अपनी विद्याके विमान बनाकर आसानमे
सफर करते थे.–दर असल! विद्याधर लोग वैताढ्य पर्वतके रहने-
वाले–जमाने तीर्थंकर देवोंके–इधर आते थे, आजकल नही आते,
पेस्तर खुशनसीबोंको–किसी किसीकों–आसानमे–सफर करनेकी–
विद्यायें–हासिल होतीथी,–आजकल वैसी–नही रही,—

३ ग्यारहमी आशीविषलब्धि,–इसके–दो–तरीके है,–एक–जाति-
आशीविषलब्धि,–दुसरी कर्म आशीविषलब्धि,–इस बारीकीकों सम-
जना चाहिये, बारहमी केवलज्ञानलब्धि,–जिसके जरीये–लोकालोकके
तमाम पदार्थोका–ज्ञान–अपने आत्मामे हासिल हो सके, तेरहमी,
–गणधरलब्धि,–गणधरपनेकी–लब्धि–गणधरोंको होती है,–जैसे
पुडरीक गणधर, गौतम गणधर वगेरा हुवे,–चौदहमी पूर्वधरलब्धि
चौदह पूर्वका–ज्ञान–धर्मशास्त्रमे बयान फरमाया, उसकों बजरीये इस
ज्ञानसे जान सके. पनराहमी तीर्थंकरलब्धि,–जो–तीर्थंकर देवोंको
होती है, जैसे तीर्थंकर रिषभदेव वगेरा चोईस–बडे ज्ञानी और–
धर्मके नायक हुवे, दुसरा तरीका–इस लब्धिका इस तरहभी–बयान
किया गया है,–कोई–मुनि–बजरीये अपनी तपोलब्धिके–समवसरण-
की रचना करके तीर्थंकरदेव–जैसी–रिद्धि–बतला सके सोलहमी–
चक्रवर्त्ती–लब्धि जिससे–चक्रवर्त्ती–पदवी हासिल हो, जैसे भरतचक्र-
वर्त्ती–वगेरा–राजे–हुवे, दुसरा तरीका इस लब्धिका–ऐसाभी बयान
किया है, कोई–मुनि–बजरीये अपनी तपोलब्धिके चक्रवर्त्ती जैसी–
राजरिद्धि करके दुसरोंकों–बतला सके, सतराहमी बलदेवलब्धि,–
बलदेवकों होती है,–अठारहमी वासुदेवलब्धि,–वासुदेवकों होती है,–
चक्रवर्त्तीसें आधीदौलत और आधी–राजसिद्धि–वासुदेवकों हो सके,–

४ उन्निसमी–क्षीराश्रव–लब्धि,–क्षीर–आश्रव–जैसी लज्जत हो,
उसको क्षीराश्रवलब्धि कहते है,–तीर्थंकरदेव–जब–व्याख्यान सभामे
–व्याख्यान देते थे. सुननेवालोंकों–मानींद–क्षीर–खानेकी–लज्जत–

आती थी, आजकलभी-शास्त्रके पढे हुवे-कइ-मुनि-या-कइ-गृहस्थ अपने व्याख्यानोसें सुननेवालोकों-शिक्षा-देते है,-और-उनके-दिलपर उमदा असर कर देते है. वीसमी-कोष्टकबुद्धिलब्धि,-जिसके दिलमे इलमका खजाना भरा हो, उसकों कोष्टकबुद्धिलब्धि कहते है, -एकीसमी पदानुसारिणीलब्धि,-किसी-काव्यका-एक-पद सुननेसें अखीरके पदतकका ज्ञान हो जाय, उसकों अनुश्रुतपदानुसारिणीलब्धि कहते है-अखीरका एक पद सुननेसें अवलके पदतक ज्ञान हो जाय,-इसकों-प्रतिकुलश्रुतपदानुसारिणी-लब्धि-कहते है, -और बीचका पद सुनसें अवल आखीर तकका-ज्ञान-हो जाय, उसकों उभयपदानुसारिणी-लब्धि-कहते है,-बाइसमी बीजबुद्धिलब्धि, एक-बीज-अक्षरके सुननेसें-अनेक-बीज-अक्षरोंका ज्ञान-दिलमे-रौशन हो जाय, उसकों बीजबुद्धिलब्धि-कहते है, ज्ञानावरणीय-कर्मके-क्षयोपशमसें तरह तरहकी चतराई हासिल होना-ब-दौलत इसी लब्धिके समजो -तेइसमी-तेजोलेश्या-लब्धि, कामील एतकात और कामील ज्ञानके तपश्चर्या किइजाय-तो-मजकूर लब्धि पैदा होसकती है, जमाने हालमे-वैसी-लब्धियें रही नही, चौइसमी आहारकलब्धि, मजकूर लब्धिभी-कामील एतकात और कामील ज्ञानसें तपश्चर्या किइजाय-जब-हासिल हो सके, जमाने हालमे ऐसी लब्धिभी-मौजूद नही रही —

५ पचीसमी शीतललेश्या लब्धि,-तेजोलेश्याको-रद करनेकी ताकात हो, उसकों शीतल-लेश्या-लब्धि-बोलते है-छविसमी-वैक्रिय-लब्धि, जिसके जरीये अपने जैसे-अनेक रूप-बना सके,-या -अपने शरीरकों-ब-जरीये इस लब्धिके-छोटा-बडा-बनाना चाहे -तो-बना सके, ऐसी लब्धिभी-जमाने हालमे नही रही, सताइसमी-अक्षीण-महानस-लब्धि,-जिसके जरिये थोडी चीजमेसे ज्यादा चीज होती रहे, अठाइसमी पुलाक लब्धि,-मजकूर लब्धिभी नही रही,-इस तरह जैनशास्त्रोंमे-अठाइस लब्धियें पेस्तरके जमानेमे होती

थी लिखा है, जमाने हालमे-धर्मपावदी-और-खुशनसीनी-कम-हो-गइ-ऐसी-ताकात-हासिल होनाभी-कम-होगया,-अष्टसिद्धि और नवनिधि.-जो-धर्मशास्त्रोंमे सुनते हो.-वे-सच थी, मगर जमाने हालमे वेभी मौजूद नही-कामील एतकात और कामीलज्ञानसें-तपश्चर्या-करनेपर तरह तरहकी-सिद्धि-होसकती थी-अवल-अणिमा-सिद्धि, व-जरीये-इस-सिद्धिके-अपना जिस्म-छोटेसें-सुराक-मेसें निकाल सकते थे. मगर तकलीफ बिल्कुल-न-हो, ऐसी सिद्धि-जमाने हालमे मौजूद नही, दुसरी महिमा सिद्धि, जिसके जरीये अपना-जिस्म-बडा बनाना चाहे-चंदअर्सेके लिये बना सकते थे,-तीसरी-लघिमा सिद्धि-व-जरीये-इसके अपने जिस्मकों-चंदअर्सेके लिये हलका बनाना चाहे,-या-चौथी-गिरिमा-सिद्धिके जरीये अपना-जिस्म-वजनदार-बनाना चाहे-तो-चदअर्सेतक-बना सकते थे, पांचमी-कामनशाइत्व सिद्धि,-जिसके जरीये जमीनपर बेठकर आसानमे-रहे हुवे-सितारेकों स्पर्श-करना चाहे-तो-कर-सकते थे, छट्ठी प्राकाम्य-सिद्धि-जिसके जरीये-तालाव-नदी-या-समुदरके-पानीपर-जमीनकी तरह चलना चाहे-तो-चलसकते थे. और-अगर-चदअर्सेतक-जमीनमे-गायन-होजाना चाहे-तो-होसकते थे, ऐसी-सिद्धिवाले-आदमी-जमाने हालमे-मौजूद नही रहे,-सातमी ईशित्व-सिद्धि और आठमी-वशित्व-सिद्धि-पेस्तरके जैसी नही रही, -जैसी-इन्सानोंकी तकदीर है,-वैसी मौजूद है,-आजकल धर्मपावदी और-खुशनसीबी-कम-होती जाती है. जैसी-रहेमदिली और -धर्म-पुन्य-मौजूद है, वैसा फायदा मिलता है,-भविष्यज्ञान-जाननेके लिये-नजुमशास्त्र-गौतम केवली-और-हस्तरेखा विज्ञान वगेरा अष्टांग-निमित्त मौजूद है,-मगर-पेस्तरके जैसे नजुमी-भविष्य-वक्ता और आलादर्जेके निमित्तज्ञानी रहे नही. जो-तमाम-हाल बयान करनेके-जैसी इन्सानोंकी तकदीर है-वैसा सबकुछ-हाजिर है,—

[बयान-अठाइस-लब्धियोंका खतम हुवा,-]

[जिनमदिर-बनानेकी-तरकीब,-]

१ अगर कोई-एक-शख्श-अपनी दौलतसें जिनमदिर बनवाना -चाहे-शौखसें बनावे मगर पेस्तर अपनी दौलतका शुमार करलेवे, -इतनी दौलतसें जिनमदिर बनसकेगा-या-नही ? अगर-सबसघकी तर्फसें पचायती-मदिर बनवाना हो-तो-अपने शहरमें जो-जो-श्रावक बसते हो.-गुजराती-काठियावाडी-कच्छी-मारवाडी-पजाबी-पूर्वी-मालवी,-या-दक्षणी-वगेरा सबश्रावकोंकी-सभा भरकर सलाह लेना चाहिये -जिनमदिरके-काममें-सबजैनोंका हक है,-सबजैनोंकी तर्फसें आमदनी होती है,-फिर एक-देशवाले-या-एक-तडवाले-जिनमदिरका कारोबार कैसे करसकते है ? आमदनी-सब-जैनसघकी -और-एक देशके रहनेवाले-या-एक-पक्षवाले-देवद्रव्य-या-जिन मदिरका-काम-काज-अपने पास रखते है-यह कैसे बनसके अगर कहा जाय-बहुत वर्सोसें हमारे शहरमें ऐसाही रवाज चलता है.-जवाबमें मालुम हो,-सब-सघ-मिलकर उस रवाजकों-रद-करे-और सबकी सलाहसे मदिरका-काम चलावे, और देवद्रव्यकी व्यवस्था करे, मदिर बनवानेके लिये-सब-सघ-मिलकर चदा करना,-या-पहलेका देवद्रव्य-जिस जिस श्रावकोंके घर-या-दुसरे साहूकारोंमे-जमा हो,-इकठा करके जिनमदिरकी तिजुरीमे रखना चाहिये अगर कहाजाय देवद्रव्यकी रकम साहूकारोंमे जमा है,-आती जायगी, और मदिरके काममें खर्च होता जायगा,-जवाबमे फर्ज करो! मदिरके लिये जरूरी सामान-अचानक खरीदना पडा, जैसे-ईंट-चुना-पथ्थर वगेरा-तो--रकमकी जरूरत पडेगी, इस लिये-रकम -अवल इकठी करना चाहिये, जो-बरवख्त-काम-देवे, रकमकी देरीसें-शुरू किया हुवा-काम अधुरा रह जाता है,-मदिर बनानेकी जगहमें-अगर कोई-किराये रहते हो-तो-उनको-नोटिश देना चाहिये, जिससे-वे-मकानकों जल्द खाली करे, अगर मकान खाली नही हुवा-तो-मुहूर्तके-वख्त-खलल-पडेगा -और-जगहकी-तगी

पडेगी, जिनमंदिरकी-पेंढी-बहीखाता-कपाट-तिजुरी-केशर-चंदन-धूप-अगरबत्ती भांडे-बरतन-रखने-की जगह पहले तलाशकर रखना-चाहिये, मंदिर बनानेवाले-मिस्तरी-कारिगर-नोकर-चाकर-उनके हथियार वगेरा चीजें रखनेकी-जगहभी चाहियेगी, मंदिरका-काम-कारिगरोंकों-और-नोकरोंकों-पुरी-तनखाह देकर बनवाना-चाहिये. जिनमंदिर बनानेकी-जमीन-उमदा और साफ होना, उखर भूमिमे मंदिर बनवाना बहेत्तर नही.-जिस जमीनमे-सर्पका-बिल-हो. फटी हुई जमीन हो,-ऐसी जमीनपर मंदिर बनवाना-मुनासिब नही,-

३ जिनमंदिर ऐसी जगहपर बनवाना, जहा-जलाशय-हो, इर्द-गिर्द-कोई तालाव-कुंड-होज-या-पानीके फव्वारे बनेहुवे-हो. बागमे-गावमे-शहरमे-तीर्थभूमिमे-या-पहाडपर किमती पथ्थरका संगीन मंदिर बनवाना-चाहिये.-इंट-चुनेकाभी बनाया जाता है, मगर पथ्थरका मंदिर बहुत मुद्दततक चलसकेगा, जमाने पेस्तरके-कइ-राजे-महाराजे-या-दौलतमंद गृहस्थ-सप्त-धातूका-रत्नजडितभी बनवाते थे, मगर वैसे दौलतमंद शख्श आजकल-कम है,-एक-शहरमे-मेरा जाना-हुवा और एक-लखपति-श्रावकसे-बाते-हुइ, उस वख्त मेने कहा तुमारे बेटेका-विवाह-होनेवाला-सुना है,-तुमको बडा खर्च होगा, उन्होंने कहा. खर्च होगा-तो-क्या हुवा? दौलत कमाते है,-किस लिये? दुनियादारीके कामोमे-खर्च-करनाही पडता है,-बाद चंद अर्सेके फिर उसी श्रावकसे मंदिरजीके-बारेमे-बात चली, कहने लगे. आजकल वख्त बहुत बारीक है, पेदाश-कम-होगइ, थोडे खर्चसे मंदिरजीका-काम-चला लेयगें,-मेने कहा,-विवाह सादीके-काममें-खर्चकी-कुछ परवाह नही और मंदीरका-काम-थोडेमे चलायगें-इसकी क्या वजह है? अगर कहा जाय-धर्मका काम थोडेमेंभी-होसकता है, ससारमे-थोडे खर्चसे चलता नही, जबानसे मालुम हो धर्म-बडा-या-संसार बडा? अगर कहाजाय धर्म-बडा है-तो-धर्ममे ज्यादा ध्यान देना चाहिये,-

४ मंदिरकी चारोंतर्फ खुली जमीन और-चांदना-रहना उमदा है,-अंधेरेवाला मंदिर अछा नही,-गर्भद्वारमे-जहा-मूलनायककी-मूर्त्ति-तख्तनशीन किइ जाती है,-चांदना-बना रहे-निहायत उमदा समजो, नव-छह-या-तीन-चौंकी,-उमदा रंगमंडप,-और-थंभों-पर-नाच-करती हुइ-पुतलीयें-बनाना-खुबसुरतीकी निशानी है,-शिखर तीन बनाओ,-या-एक-जैसी अपनी मरजी-और-दौलतकी गुंजाश देखो, वैसा करो, शिखरके-आगे-घुमट-बनाया जाता है,-वो-शिखरके सिंहकी-बेठकसे-नीचे होना चाहिये. अगर उससे-घु-मट-उंचा चला जाय-तो-शिल्पशास्त्रके फरमान मुजब उसका-फल-अछा-न-होगा.-मूलनायककी-बेठक-पूजक पुरुष-जो-सामने खडे होकर-पूजा-करते है,-उनकी नाभिसें उंची होना चाहिये और मूलनायक-प्रतिमाजीकी-दृष्टि-गभारेके-दरवजेके-आठ भाग करके उपरका-एक भाग छोडकर सातमे भागके आठ भाग करना, और उसके सातमे भागमें रखना,-मंदिरकी चारोंतर्फ कोट बनाना जरूरी है —

५ अगर कोई बावन-जिनालयका मंदीर बनवाना चाहे-तो-उ-नकी-देवकुलिकाके-दरवजे-सामसामने-एकसरखे-रखना चाहिये, [illegible] दृष्टिसें-दृष्टि-मिलाना,-और-थंभे-देवकुलिकाके बीच-में-न आवे,-ऐसा-शास्त्रका फरमान है, अगर कोई-शख्श-चौंइस जिनालयका मंदिर बनवाना चाहे-बनवा सकते है,-मगर शिल्पशा-स्त्रके जाननेवालोसे दरयाफ्त करके बनवावे कई जगह श्रावकलोग-मनमाना मंदिर बनवा लेते है, और पिछेसे पस्ताते है,-दौलत-इल्मके सामने कोई चीज नही -सोने-चादी वगेराके सिकोंपरभी-अगर ज्ञा-नके हर्फ लिखे हुवे हो-जब-चल सकते है, इसीलिये कहा गया, मंदिर वगेरा बनवानेमे-शिल्पशास्त्रके-जाननेवालोंकी-और-धर्म गुरुओंकी सलाह लेना जरूरी है, राजाओंके बनाये हुवे-मंदिरमे-गजथर होता है,-कुमारियाजी तीर्थमे-तीर्थंकर-नेमिनाथजीका-मंदिर-बनाहुवा

है,-उसमे मंदिरकी दिवारके पिछाडी बाजु-गजथर-लगाहुवा है,-दरअसल! वो-राजासाहबका बनाया हुवा-समजो.-आबुपहाडपर अचलगढकी-टोकके-नीचे-तालावके सामने जहा-राजा-कुमारपालजीका बनाया हुवा-जिनमदिर मौजूद है उसमे देखो! मदिरकी-दिवारके पिछाडी बाजु-गजथर-लगा हुवा है,-यानी-छोटेछोटे हाथी-पथ्थरमें-बने हुवे लाइन बद लगे हुवे है,-और-इसीकों-गजथर कहते है,-दिवानके बनाये हुवे-मदिरमे-अश्वथर-होता है,-और-शेठ-साहुकारोंके तामीर करवाये हुवे-मदिरोमे-नरथर-यानी पुतलियोंका आकार पथरमे बनाहुवा होता है, तीर्थ-रानकपुरका-मदिर-धरणाशाह-शेठका-तामीर करवाया-हुवा है,-देखलो! उसमे -मंदिरकी पिछाडीकी बाजु पुतलियें-बनी हुइ मौजूद है,-जिन्होंने मजकुर-तीर्थकी जियारत किइ होगी व-खूबी जानते होगें.—

६ जिनमूर्त्ति बनवाना-तो-समचौरस-सस्थानवाली और-नासाग्रदृष्टि बनाना चाहिये, क्रूरदृष्टिवाली जिनमूर्ति-अछी-नही, तीर्थंकरोकी दृष्टि क्रूर नही होती, सौम्य-होती थी, इस लिये सौम्य दृष्टि बनाना चाहिये, ग्यारह अगुल-उची-जिनमूर्त्ति-घर देरासरमे रखना, और-इससे बडी जिनमूर्त्ति-बडे-मंदिरमे रखना बहेत्तर है,-बडे-जिनमदिरमे-पद्मासन-जिनमूर्त्ति-एक गजकी-हो, दो-गजकी -हो, तीन, चार, पाच,-या-छह-गजकी-हो-अछा है,-इससे बडी होना बहेत्तर नही, एक-पत्थरमे इतनी बडी मूर्त्ति-बनाना कुछ-कम-बात नही है,-पद्मासन-मूर्त्ति-छह-गजसें ज्यादा बडी हो-तो-लेजाने लानेमे-खडित-होजानेका-खौफ रहेगा, ज्ञानी लोगोने -जो-कुछ कहा है,-सौच समज करही-कहा है,-मूर्त्तिसफेद पथ्थरकी बनी हुइ उमदा होती है,-लाल-पीले-हरे-और-काले पथ्थरकी मूर्त्तिभी बनाइ जाती है,-मगर-दोयमदर्जेपर समजो, तीर्थशत्रुजय-गिरनार-आबु-तारगा-कुभारियाजी-या-केशरीयाजी वगेरामे जितनी-बेठे-आकार जिनमूर्त्ति-बनी हुइ है-छह-गजसे बडी

४ मंदिरकी चारोंतर्फ खुली जमीन और-चादना-रहना उमदा है,-अधेरेवाला मंदिर अछा नही,-गर्भद्वारमें-जहा-मूलनायककी-मूर्त्ति-तख्तनशीन किइ जाती है,-चादना-वना रहे-निहायत उमदा समजो, नव-छह-या-तीन-चौंकी,-उमदा रगमडप,-और-थभों-पर-नाच-करती हुइ-पुतलीये-वनाना-खुवसुरतीकी निशानी है,-शिखर तीन वनाओ,-या-एक-जैसी अपनी मरजी-और-दौलतकी गुजाश देखो, वैसा करो, शिखरके-आगे-घुमट-वनाया जाता है,-वो-शिखरके सिंहकी-वेठकसें-नीचे होना चाहिये अगर उससे-घुमट-उचा चला जाय-तो-शिल्पशास्त्रके फरमान मुजब उसका-फल -अछा-न-होगा -मूलनायककी-वेठक-पूजक पुरुष-जो-सामने खडे होकर-पूजा-करते है,-उनकी नाभिसें उची होना चाहिये और मूलनायक-प्रतिमाजीकी-दृष्टि-गभारेके-दरवजेके-आठ भाग करके उपरका-एक भाग छोडकर सातमें भागके आठ भाग करना, और उसके सातमे भागमे रखना,-मंदिरकी चारोंतर्फ कोट वनाना जरूरी है —

५ अगर कोई वावन-जिनालयका मदीर वनवाना चाहे-तो-उनकी-देवकुलिकाके-दरवजे-सामसामने-एकसरखे-रखना चाहिये, प्रतिमाजीकी दृष्टिसे-दृष्टि-मिलाना,-और-थभे-देवकुलिकाके बीचमे-न आवे,-ऐसा-शास्त्रका फरमान है, अगर कोई-शख्श-चौइस जिनालयका मंदिर वनवाना चाहे-वनवा सकते हैं,-मगर शिल्पशास्त्रके जाननेवालोसे दरयाफ्त करके वनवावे कई जगह श्रावकलोग-मनमाना मंदिर वनवा लेते है, और पिछेसे पस्ताते हैं,-दौलत-इल्मके सामने कोई चीज नही -सोने-चादी वगेराके सिक्कोंपरभी-अगर ज्ञानके हर्फ लिखे हुवे हो-जब-चल सकते हैं, इसीलिये कहा गया, मंदिर वगेरा वनवानेमें-शिल्पशास्त्रके-जाननेवालोंकी-और-धर्म गुरुओंकी सलाह लेना जरूरी है, राजाओंके वनाये हुवे-मंदिरमे-गनथर होता है,-कुभारियाजी तीर्थमे-तीर्थंकर-नेमिनाथजीका-मंदिर-वनाहुवा

है,-उसमे मंदिरकी दिवारके पिछाडी बाजु-गजथर-लगाहुवा है,-दरअमल! वो-राजासाहबका बनाया हुवा-समजो.-आबुपहाडपर अचलगढकी-टोंकके-नीचे-तालावके सामने जहा-राजा-कुमारपालजीका बनाया हुवा-जिनमंदिर मौजूद है. उसमे देखो! मदिरकी-दिवारके पिछाडी बाजु-गजथर-लगा हुवा है,-यानी-छोटेछोटे हाथी-पथ्थरमें-बने हुवे लाइन बद लगे हुवे है,-और-इसीकों-गजथर कहते है,-दिवानके बनाये हुवे-मदिरमे-अश्वथर-होता है,-और-शेठ-साहुकारोंके तामीर करवाये हुवे-मंदिरोंमे-नरथर-यानी पुतलियोंका आकार पथरमे बनाहुवा होता है, तीर्थ-रानकपुरका-मदिर-धरणाशाह-शेठका-तामीर करवाया-हुवा है,-देखलो! उसमे -मंदिरकी पिछाडीकी बाजु पुतलियें-बनी हुइ मौजूद है,-जिन्होने मजकुर-तीर्थकी जियारत किइ होगी व-खूबी जानते होगे.—

६ जिनमूर्त्ति बनवाना-तो-समचौरस-संस्थानवाली और-नासाग्रदृष्टि बनाना चाहिये, क्रूरदृष्टिवाली जिनमूर्ति-अछी-नही, तीर्थंकरोकी दृष्टि क्रूर नही होती, सौम्य-होती थी, इस लिये सौम्य दृष्टि बनाना चाहिये, ग्यारह अगुल-उची-जिनमूर्त्ति-घर देरासरमे रखना, और-इससे बडी जिनमूर्त्ति-बडे-मदिरमे रखना बेहत्तर है,-बडे-जिनमदिरमे-पद्मासन-जिनमूर्त्ति-एक गजकी-हो, दो-गजकी-हो, तीन, चार, पाच,-या-छह-गजकी-हो-अछा है,-इससें बडी होना बेहत्तर नही, एक-पत्थरमे इतनी बडी मूर्त्ति-बनाना कुछ-कम-बात नही है,-पद्मासन-मूर्त्ति-छह-गजसें ज्यादा बडी हो-तो-लेजाने लानेमे-खडित-होजानेका-खौफ रहेगा, ज्ञानी लोगोंने-जो-कुछ कहा है,-सोच समज करही-कहा है,-मूर्त्तिसफेद पथ्थरकी बनी हुइ उमदा होती है,-लाल-पीले-हरे-और-काले पथ्थरकी मूर्त्तिभी बनाइ जाती है,-मगर-दोयमदर्जेपर समजो, तीर्थशत्रुजय-गिरनार-आबु-तारगा-कुभारियाजी-या-केशरीयाजी वगेरामे जितनी-बेठे-आकार जिनमूर्त्ति-बनी हुइ है-छह-गजसे बडी

कोई नही, कायोत्सर्गके-आकारकी-खडी जिनमूर्त्तिभी-सात गजसे उची होना-बहेत्तर नही,-कोई मूर्त्ति-पहाडके सामील-उकेरी हुइ-खडे आकार चाहे-बावन गजतक-उची हो -कोई हर्ज नही, मगर पहाडसें जुदी खडे आकार मूर्त्ति-सात गजसें ज्यादह उची होना ठीक नही.-ले-जाने-लानेमे-टुट जानेका डर रहेगा, पेस्तरके लोग बेशक! बडी बडी ताकातवाले थे, मगर जमाने हालमे-वैसे-रहे नही,-जैसा वख्त है,-वैसा बयान किया गया,—

७ शिल्पशास्त्रमे प्रासाद चौदह-तरहके फरमाये, जिसमे पाच-थर-पीठिकाके और-नव-थर उपरके-नवथरोंके उपर शिखर-ये-सबबाते शिल्पशास्त्रसे जानना जरूरी है,-शिल्पशास्त्र जाननेवाले धर्मगुरू-या-कारिगरोंसे दरयाफ्त करना इसी लिये कहा गया, मूलनायक म्रात्तकी-दोनो तर्फ-दो-काउसग्गिये, और उनपर-दो-छोटी म्रात्तिये-दोनोतर्फ-दो-हाथी और-वादित्र-बजानेवाले गधर्वोका आकार पथ्थरमे उकेरवाना शास्त्र फरमान है, जिनमदिरके बहार-दोनो तर्फ-दो-बडे बडे हाथी-बनाना चाहिये, तीर्थ-शत्रुजय-पहाडकी-तराइमे देखो! दोनोतर्फ-दो-हाथी बने हुवे है-पुराने तीर्थोके जिनमदिरोमें जाकर देखो, हाथी जरूर बने हुवे पाओगे.-पेस्तरके खुशनसीबोंने तीर्थोमें-किसकदर-दौलत सर्फ किइ है.? कारिगरोंने किसकदर अकलसें काम किया है,-जिनकी तारीफ बडे बडे विद्वान्लोग करते है,—

८ जिनमदिर तामीर करवानेका मुहूर्त्त जैन नजुमीसें पुछना चाहिये,-जैनागमचद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, भद्रबाहुसहिता, ज्योतिष्करडक, आरभसिद्धि, जन्माभोधि, यत्रराज, त्रैलोक्यप्रकाश,-मानसागरी-पद्धति, मेघमाला, गणितविद्याप्रकीर्णक, मेघमहोदधि, भुवनप्रदीप, और नारचद्र-ये-जैनमजहबके नजुम ग्रथ है इनके पढेहुवोको-जैन नजुमी कहना, जिनमदिर तामीर करवानेका मुहूर्त्त पुछना-तो -(२५)रुपये-और (१) श्रीफल लेकर जैन नजुमीके सामने जाना

जिनमंदिर तामीर करनेवाला एक शख्श-हो-तो-एक शख्श जाय. -सब जैन संघकी तर्फसें पंचायती जिनमंदिर तामीर करवाना हो,- संघमेंसें-दो-चार शख्श मिलकर जाय. पचीस रुपये और श्रीफल- जैन नजुमीके सामने रखकर मुहूर्त्त पुछे, जैन नजुमी-मुहूर्त्त देखे. और दिनशुद्धि-लग्नशुद्धि वगेरा देखकर सब हाल बयान करे. कंजुस श्रावक-रुपये-नारीयलसेंही-काम-चलाते है,-और कितनेक श्रावक -ब-जरीये चीठीके परदेशसें मुहूर्त्त पुछते है,-मगर-यह बात-जाइ- ज-नही.-रुबरु मिलकर पुछना चाहिये.—

९ जिस रोज-मंदिर बनवानेका मुहूर्त्त मुकरर होजाय-आगे बत- लाये हुवे-सात-हथियार चांदीके बनवाकर तयार रखना. पनराह- तोलेका-गज, पनराह तोलेका-काटकोना, पनराह तोलेका हथोडा. पांच तोलेका-टांकना, पनराह-तोलेकी-कोदाली,-पनराह-तोलेका -पावडा, और पनराह-तोलेकी-तगारी,-ये-सात चीजे चांदीकी बनवाना-शास्त्र फरमान है, पहले जमानेमें-ये-चीजें-सोनेकी बन- वाते थे. आजकल-चांदीकी बनवाना-काफी है,-ये-सब तीर्थंकर देवोंकी भक्ति और-इज्जत समजो,-दुनियादारीके-काममे-कितना खर्च-किया जाता है, मंदिर बनवाना-धर्मकी तरक्कीका-काम है,- इसमें कंजुसाइ करना मुनासिब नही,-मुहूर्त्त करानेवाले-धर्म गुरु- कोई-यतिजी-हो-या-कोई गृहस्थ हो,-अपने चंद्रस्वर चलते वख्त-नवग्रह, दश दिग्पाल, अष्ट मंगलीक नंद्यावर्त्त और कुंभस्था- पना विधिसें करे अगर-मजकुर विधि करानेवाले-कोई-यतिजी -हो-तो-उनकों-दो-चादर-दो-चोलपट्टे-एकपचरंगी आसन और (५१) रुपये देना, अगर गृहस्थ-हो-तो-धोती-दुपट्टा-आसन और (२५) रुपये देना,-मुहूर्त्त करनेसे पहले-गायन करनेवाले-गवैयोंकों -बुलवाकर-सरंगी-तबले-हारमोनियम-वगेरा साजसें स्नात्रपूजा- शांतिनाथजीका-कलश-और सतराह-भेदी-पूजा पढाना.-मुहूर्त्तके वख्त-चतुर्विधसंघ,-मंदीरकी-पेढीका-मुनीम, पूजारी, मिस्तरी,

कारिगर-नोकर वगेरा तयार रहे, श्राविका-मंगलगीत गावे, तरह-तरहके बाजे बजते रहे,-धर्मगुरु-जैनाचार्य-हो-तो-सूरिमंत्र पढे अगर कोई-जैनमुनि-हो-वर्द्धमानविद्या पढे,-जिसके हाथसें मुहूर्त्त-कराना हो -उनके चद्रस्वर चलते वख्त मदिर बनवानेकी जगहपर -श्रीफल, अक्षत,-बादाम-सोपारी,-धूप, दीप, नैवेद्य, कुंकुम-वगेरा चीजे-रखकर-दाहनी तर्फकी जमीनमे चादीकी कोदालीसें थोडा-खोदकाम करे, चादीके पावडेसें-थोडी-मिट्टी-चादीकी तगारीमे लेवे, और-चादीके हथोडेसें-टाकनेसें-गजसें और-काटकोनेसें-जमीनपर-थोडा-काम करे, फिर कारिगर लोग-लोहेके हथियारोंसें आगे काम चलावे.-चादीके सात-हथियार-मिस्तरीको-बतौर इनामके देदेवे. मदीरजीकी पेढीके मुनिमकों-(११) रुपये,-पूजारीकों (११) रुपये,-और-मदिरके हमेशाके नोकरोंकों-(११) रुपये इनाम देवे -मिस्तरीकों-चादीके सात हथियार दिये थे, शिवाय-दुसरेभी-(११) रुपये इनाम देवे. यह-कमसे-कम-बात लिखी है, अगर-कोई-श्रावक-दिलके दलेर-हो, और ज्यादा देना चाहे-तो-दे-सकते है.-बाजा-बजानेवालोंकों-और-गवैयोंकों खुश करना, मदिरका-मुहूर्त्त-होना-सुनकर-उस वख्त वहांपर कोई-याचक-लोग आये हो. मुताबिक अपनी ताकातके-सबको-इनाम देना, इसमे धर्मकी तारीफ होगी, मदीरके काममे कजुमाइ करना बहेत्तर नही मुहूर्त्त करनेके वख्त-आये हुवे श्रावक-श्राविका-नोकर-चाकर-वगेराकों-मोतीचूरके लाडुकी-प्रभावना-तकसीम करना,-खात-मुहूर्त्तके वख्त-कूर्म-स्थापन करना, मदिरकी-लबाइ-चोडाइ-आय-व्ययसें लेना, और-मदिरका नकशा-मिस्तरीसें-बनवाना-वगेरा काम-वख्तपर करते रहना जरूरी है,-कइ जगह देखा गया है,-मदिरका-काम-आधा बना, और आधा-वैसाही-अधुरा पडा रहता है,-बनानेवाले श्रावकोंसें पुछा जाय-तो-कहते है,-पैसा-नही, कहासे बनावे,-अपना-मकान-बनवाना हो,-या-विवाह सादीका-

कामहो,-तरह तरहकी कोशिश करके पुरा करदेयगें. धर्मके काममे-कोशिश-करना-मुश्किल है,—

१० अगर कहाजाय-जिनमंदिर बनवानेमे-ईट-चुना-पथ्थर-मिट्टी-और-पानी वगेराके सूक्ष्म जीवोंकी बरबादी होगी. जवाबमे-मालुम हो. धर्म साधन करनेके लिये-स्थानक-बनानेमेभी-इट-चुना-पत्थर-मिट्टी और पानी वगेराके सूक्ष्म जीवोंकी बरबादी होगी, फिर-स्थानकभी-क्यौं-बनाना? अगर रथयात्रा-प्रतिष्ठा-और-अठाइ महोच्छवके जलसेमें-वाजे बजवानेमे-धजा-पताका-वगेरा सवारी-निकालनेमें-सूक्ष्म-जीवोंकी बरबादी होना मानाजाय-तो-दीक्षाके जलसेमेभी इसी तरह-बाजा-धजा-पताका और सवारी निकलती है.-उसमेभी-सूक्ष्म-जीवोंकी बरबादी होगी,-इसका क्या जवाब देते हो, अगर कहाजाय. दीक्षा-लेनेमे इरादा धर्मका है.-जहा इरादा धर्मका हो,-वहा-भावहिसा नही, और विना भावहिंसाके पाप नही-तो-यही-दलिल मदिर-मूर्त्तिके जलसेमेभी-क्यौं-न-लाइ-जाय? फोटोग्राफकी तस्वीर देखनेसें-जैसे-उन-महाशयोंकी-यादी-आ-जाती है,-जिनमूर्त्तिके देखनेसे-जिनेंद्रोंकी-यादी-क्यौं-न-आय-गी? अगर कहाजाय-तीर्थयात्रा-जावे-तो-रास्तेमे-रैल-बग्गी,-मोटार,-या-बेलगाडीसें जाना होगा. रास्तेमे सूक्ष्मजीवोंकी बरबादी होगी. जवाबमे तलब करो, अपने धर्मगुरुओंके दर्शनकों-जानेमे-रैल,-बग्गी,-मोटार,-बेलगाडीसे-काम-नही लिया जाता? और-सूक्ष्म-जीवोंकी बरबादी नही होती? अगर कहाजाय. धर्मगुरुओंके दर्शनसें-पुन्य-होगा.-तो-क्या! तीर्थयात्रासें-पुन्य-न-होगा? जरूर होगा.—

११ फर्ज करो! किसी श्रावकने-अष्टमी-चतुर्दशीके रौज-उपवासव्रत-किया. दुसरे रौज-दुसरे श्रावकने-उस-श्रावककों-उपवासव्रतका-पारना-चाह-दूध-हलवा-पुरी-वगेरा चीजोंसें करवाया-धर्मगुरुओंके दर्शनके लिये-कोई श्रावक-आये. उनकों-खाना-खि-

लाया,-बतलाइये! इस-कारखाइसें उसको-पुन्य-होगा? या-पाप? अगर पुन्य होगा-तो-सधर्मि-वात्सल्यके-जीमनमेंभी-पुन्य-क्यों नही? इस तरह धर्मके-सब-कामोंम-तीर्थयात्राम-जिनमदिर-बनवानेमभी-पुन्य-है,—

१२ अगर कोई-इस सवालको पेश करे-पुराने मदिरोंकी हिफाजत आजकल होती नही, फिर-नया-मदिर बनानेकी-क्या जरूरत? इसके जवाबमे मालुम हो पुराने जैन मदिरोंकी हिफाजतके लिये-बडेबडे-जैन श्वेतावर तीर्थोंके खजानेमे लाखों-रुपये-जमा है, -उन-रुपयोंसे हिफाजत करना श्रावकोंका फर्ज है,-पुरानेमदिरोंकी हिफाजत होती नही, इसलिये-नया-नही बनवाना ऐसा कहना गलत है,-मदीर बनानेवालोंका-इरादा-धर्मका है-जहा-इरादा धर्मका-हो, वहा पुन्य है,-पाप-नही फर्ज करो! मुल्क कछ, सिंध, पजाब मारवाड, राजपुताना, बगाल, मध्यप्रदेश, वराड, खानदेश, मालवा, दखन, महाराष्ट्र, कर्णाटक-महीशूर, मलबार, कोकन, वगेरा मुल्कोंम -व-सबब रेलके-श्रावकोंकी आबादी बढती जाती है-और-वहापर-जिनमदिरका योग-न हो कोई श्रावक नया मदिर बनवाना चाहे-तो -खुशीसें बनावे-पुन्य है पाप नही-जिन जिनशख्शोंका-एतकात -मदिर-मूर्त्ति माननेका नही है,-वे-कहदेते है,-पुरानोकी हिफाजत होती नही नया-मदिर क्यों-बनना-कितनेक महाशय-मूर्त्ति माननेपर एतकाद लाते नही, और लेख लिखनेमे-या-भाषण देनेमे-होशियार है,-वे-आपने लेखम-या-भाषणमे-ऐसा बयान पेश करते है,-पुराने मदिरोंकी हिफाजत होती नही, फिर-नया-क्यों-बनवाना? मगर इस वातपर खयाल नही करते-मदिर बनवानेवालोका -इरादा-क्या है? जैसा-इरादा-वैसा-फल होना-इस बातको कोई रद-नही करसकता देखों? ज्ञानके पुस्तक छपवानेवालोंका-इरादा-ज्ञान फेलानेका है,-किसी श्रावकने पचप्रतिक्रमणकी किताब-छपवाई किसीने-कल्पसूत्र, दशवैकालिक-या-उत्तराध्ययन वगेरा-

शास्त्रछपवाये,-और-उनका इरादा था,-कोई-बाचे-पढे और-फाय-दा ज्ञानका हासिल करे.-फर्ज करो! किसीने-उन-पुस्तकोंकी-बेंअदबी किई. बतलाइये! उसमे छपवानेवालोको-क्या' दोष? जिन्होंने बेंअदबी किई-उनकों दोष है,-इसी तरह-मदिर बनवानेवालोंका-इरादा-धर्म फेलानेका था.-इसलिये उनकों पुन्य हुवा. जो-जो-लोग-उन मदिरोंकी बेंअदबी करेंगे,-उनकों पाप है.-यह-एक-सिधी-सडक है,—

१३ अगर कोई-इस-दलिलकों पेश करे. जिनमदिरकी-प्रतिष्ठा-में-अठाइ-महोच्छवके जलसेमे-और-उद्यापनमे-ज्यादा खर्च-क्यों-करना. बल्कि! इससे-तो-गरीब-श्रावकोंकों-मदद देना अछा है.-जबाबमे-तलब करो. विवाहमादीके काममे ज्यादा खर्च-क्यों-करना. इससे-तो-गरीब श्रावकोकों-मदद देना अछा है,-इस बात-का जबाब क्या! देते हो, कोरी बाते बनाना हो-तो-चाहे जितनी बनाओ, जिनमदिरकी-प्रतिष्ठामे-अठाइ महोच्छवके-जलेसेमे-और-उद्यापनमे-इरादा धर्मका है, जहा-इरादा धर्मका हो, वहा-पुन्य है पाप-नही देखो! धर्मपुस्तक छपवानेवाले-अछे-ढगढेसे-पुस्तक छप-वाते है, छपेबाद किसीने उन-पुस्तकोंकी-बेंअदबी किइ,-तो-उसका दोष-बेंअदबी करनेवालोंकों-है, छपवानेवालोंकों नही, इसी तरह जि-नमंदिर बनवानेवालोंका इरादा धर्मपर होनेसे-पुन्य है,-पाप-नही. जिनमदिर बनवानेवालोका फर्ज है,-जहातक अपनी जींदगी-बनी रहे,-हिफाजत रखना. इतकाल हुवे बाद-पिछे रहनेवाले श्रावकोका-फर्ज-है, जहातक बने हिफाजत-रखे.-पिछे रहनेवाले-श्रावकोंकी-ताकात-होते हुवेभी-अगर-जिनमदिरकी हिफाजत-न-रखे-तो-वे-दोषके भागी है-बडेबडे जैनतीर्थोंके-खजानेमे-जहा-लाखों-रुपये-देवद्रव्यकी रकमके जमा है,-उनके कार्यकर्त्ताओंकाभी-फर्ज है,-जिनमदिरोंकी-हिफाजत-देवद्रव्यकी रकमसें करते रहे. देवद्रव्य-की-रकम-देवके काममे-न-लगी-तो-वो-क्या कामकी रही?—

१४ जमाने तीर्थंकरोंके-बडे-बडे-राजे महाराजे-होगये जिन्हों-ने अपनी बेशुमार दौलत देवमंदिर-तामीर करवानेमें-सर्फ किई अखीरके तीर्थंकर-महावीर स्वामीके-बादका-जिक्र-है,-संप्रतिराजा-ने-और-उनके बाद-राजा-कुमारपालने-दिवान वस्तुपाल-तेजपाल-ने-और-दुसरे-कई-खुशनसीबोंने-जिनमंदिर तामीर करवानेमें-अपनी दौलत सर्फ किइ फर्ज करो! आजकल उनके मंदिरोंकी-कोई-बेअदबी करे-तो-बेअदबी करनेवालोंको दोष हैं -बनानेवालो-कों-दोष-नही अगर कोई-इस मजमूनको-पेश-करे, हजारा-मंदिर बनेहुवे-हयात है.-फिर नया-क्यों बनवाना? जवाबमें तलब करो, -हजारा धर्मपुस्तक छपेहुवे हयात है,-फिर-नये-क्यों-छपवाना? पचप्रतिक्रमणकी-किताब-पचास तरहकी छपीहुई देखी जाती है-पूजासंग्रहकी किताबेंभी-पचीस तरहकी-छपीहुई-नजर-आती है,-फिरभी-नयी-क्यों छपवाई जाती है ?-जैसे मजकुर किताब छपवाने-वालोंका-इरादा ज्ञान फेलानेका होनेकी वजहसें-पुन्य है,-पाप-नही, इसी तरह-नये-जिनमंदिर बनवानेवालोंका-इरादा-धर्मका है, -इसलिये उनकों पुन्य है,-पाप-नही, इस दलिलकों अगर उमदा तौरसें समजे-तो-उनके-शक-खुद-ब-खुद-रफा होजायगें,—

[बयान जिनमंदिर बनानेकी तरकीबका खतम हुवा,-]

[दरबयान-जिनमूर्त्तिकी-प्रतिष्ठा,-]

१ जिनमूर्त्तिकी-प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त मुकरर करके-एक-उमदा मंडप बनाना मंडपकी जगह-पाक-और-साफ होना चाहिये झाड, फनुस, हंडी, तख्ते, और झलाझल-रोशनीसें मंडपकों सजाना, और चारोंतर्फ आठ रोजतक किंनरुका धूप दिनरात करते रहना आठ रोजतक तरह-तरहकी-पूजा-रागरागिनीसे पढाना आठ रोजतक -हमेशा-बाजा-बजता रहे, गवैये लोग-गायन करे, और तीर्थंकर देवोंकी-इबादात होती रहे, आठ रोजतक श्राविका मंगल-गीत-

शुमह शाम गावे. और उनकों-श्रीफलोंकी-प्रभावना दिइजाय,-आठ रोजतक मदिरकी चारोंतर्फ शातिके लिये-बेंडवाजा वगेराके-शाथ-जलकी शांतिधारा देना,—

२ प्रतिष्ठाका-खर्च-चाहे एक श्रावक करे,-या-संघमिलकर करे, दोंनों-ठीक है, मगर प्रतिष्ठाके-काममे-कजुसपना-करना अछा नही, मजकुर काम-दिलके दलेरोका है, जेसे विवाह सादीके-काममे इज-तकेलिये हजारो रूपये खर्च-करदेते हो. प्रतिष्ठाके काममें-धर्मके-लिये-खर्च-करना जरूरी है,-इसमें कजुस-शख्शोंका-काम-नही, प्रतिष्ठाका काम जैनाचार्य-जैनउपाध्याय-या-जैनमुनि-करासकते है, विधि-विधानके लिये-चाहे-श्रावक-रहे, मगर सब काम-जैनाचार्य, जैनउपाध्याय,-या-जैनमुनि महाराजोंकी-नजरसानीमें होना चाहिये, सूरिमत्र और वर्द्धमान विद्यासें मत्रित करके वासक्षेप करना धर्म गुरूओंका काम है.-प्रतिष्ठाके-काममें-दिन शुद्धिही-देखना-जरूरी है,-बाकी-सबकाम-धर्मगुरू-अपना-चद्रस्वर चलते वख्त-शुरू करावे,-मंडप बनानेके रोज-मानक-स्तंभ-रोपना. कुभस्थापना करना,-और-जिनमूर्त्ति-तख्तनशीन करना-ये-काम-धर्मगुरू-अपना-चद्रस्वर-देखकर करे, जिस श्रावकने-बोली बोलकर-मूर्त्ति तख्तनशीन करनेका चढावा लिया हो, उसकाभी-उसवख्त-चद्रस्वर होना-चाहिये, अगर उसका चद्रस्वर उसवख्त-नही चलता हो तो-वो-शख्श-जिसका उसवख्त चद्रस्वर चलता हो,-उसकों हुकम देवे, पुन्य-तो बोली बोलनेवालेकोही है,-मगर-मुहूर्त्तकेलिये ऐसा करना चाहिये, ऐसा-नही-करनेसे-विघ्न-पैदा होता है,-बस! प्रतिष्ठाके काममें-यही-बातें देखनेकी है,-थोडे पढे-न-समजे-तो-फायदेकी ऐवजमें-गेरफायदा-होनेका सबब होगा, नजुमसें स्वरोदय ज्ञान-ताकतवर कहा,-अगर धर्मगुरू-अपने चंद्रस्वरमें जलतत्त्व चलते वख्त जिनमूर्त्तिकी-प्रतिष्ठा करे, मूर्त्ति-तख्तनशीन करनेवालेंकाभी-अगर चद्रस्वर और जलतत्त्व चलता हो-निहायत-उ-

मदा बात है,-अमन चैन और खुशखबरी पेश होगी मदिरका-शह-रका-और वहाके वाशिंदोंका प्रभाव बढेगा.—

३ पहले रोज-स्नात्रपूजन-शातिकलश-और-अष्टप्रकारी पूजा करके चद्रस्वरमे कुभस्थापना करना, दुसरे रोज (१०८) कुवोका-जल-लाना, अष्टोत्तरीस्नान और जिनमूत्तिकी प्रतिष्ठाकेलिये यही फरमान है, -अकेला-शातिस्नात्र करानाहो-तो-(२७) कुवोंका-जल-लाना ठीक है, जिसगावमे-या-शहरमे-उतने कुवे-न-हो-तो-नदीके कनारे (१०७)-या-(२६) खाडा खोदना, और उनमे एक एक पैसा, एक एक सोपारी, एक एक-मिश्रीकी डली,-नागरवेलका-पान-कुकुम-और-फुल वगेरा डालकर धूपदीप वगेरा विधि-विधानसें-जल-लेना. एकसो-आठमेसे-एक-कुवा इसलिये बाकी रखना, तिसरे रोज -उस-कुवेका-पानी-जलयात्राका-जलसा करके लाना होगा,-इसमे तरह-तरहके बाजे-धजा-पताका-बग्गी-मोटार वगेरा जुलुसके शाथ -गावके वहार-या-बागबगिचेमे जहा-बडा-कुवा हो-वहा-जाना, और-स्नात्रपूजा-शाति कलश-पढाना, नवग्रह-दशदिक्पालका आव्हानसे पूजन और विसर्जन करना,-कुवेके कठहरेके पास-सवा-पाच रूपये-सवासवा हाथके लबे चोडे लालरगके-पाच-रेशमीकपडे, पाच श्रीफल-पाच सोपारी-पाच मिश्रीकी-डली पाच नागर-वेलके पान-पाच फुल-पाचतोले कुकुम-रखकर धूपदीपके शाथ-उस कुवेका-पूजन करके-जल-लेना, पूजनके लिये धरी हुइ-सवा-पाच रूपये वगेरा-सब-चीजें कुवेके-मालिक-या-नोकर चाकरकों देना,-उस कुवेके जलसे-पाच-घडा-जल भरना, एक एक घडेमें-एक एक-दुअन्नी, पान-सुपारी-बादाम-और-एक एक-पैसा डालना एक एक-श्रीफल-उनपर धरना, और-सवासवा हाथके लाल-रगके पाच-रेशमीकपडे-उसपर बाधना -पाच-फूलकी-माला पहनाना, वासक्षेप करके पाच-घडे-पाच औरतोंके-मस्तकपर देना,-इस तरह जलसेके शाथ-जैसे-गये थे-जल-लेकर-मदिरमे आना,

आठरौजतक-प्रतिष्ठाके नवण करानेके काममें-थोडा थोडा-चो-जल लेना, जिस गाव-या-शहरमें-एकसो-आठ-कुवे-न-हो-तो-दुसरे गावके कुवोंसे-जल-लाना चाहिये,—

४ चौथेरौज-नंद्यावर्त्तका-पूजन-करना. पांचमे रौज-नवग्रह-दश दिग्पाल वगेराका पूजन करना. छठे रौज-ध्वजा-और-कलश-का पूजन-और-सातमे रौज-शासनदेवी, और शासनदेवका आमं-त्रण-अभिषेक वगेरा चैत्यप्रतिष्ठा-करना,-आठमे रौज जिनप्रतिमाका-स्नात्र पढाकर शातिकलश करना, फिर अष्टप्रकारी पूजन करके जि-नप्रतिमाकों गर्भद्वारके दरवजेके पास-पाचपोंखना-करके धर्मगुरु-अपने चद्रस्वरमें जलतत्त्व चलते वख्त-और-इसी तरह जिनप्रतिमा-तख्तनशीन करनेवालाभी-अपने-चद्रस्वरमे जलतत्त्वके वख्त-जिन-प्रतिमाकों तख्तनशीन करे, धर्मगुरु-अपने चद्रस्वरमे सूरिमंत्र-या-वर्द्धमानविद्या पढकर वासक्षेप करे, उसरौज-श्रीफलोंकी प्रभावना और शामकों नवकारसीका-जीमन-करना. जिस वख्त-जिनप्रतिमा तख्तनशीन किइजाय-अठारा-अभिषेक करे, फिर अष्टप्रकारी पूजा करके-आरती-मगल दीपक उतारे. और दुफेरको अष्टोत्तरी-स्नात्र-पढावे,—

५-[प्रतिष्ठा-अष्टोत्तरीस्नात्र-या-शांतिस्नात्रमें-जो-जो-चीजें दरकार होगी-उनकी तपसील,-]

केशर तोले ४०, बरास तोले १०, कस्तूरी वाल ४, अबर वाल ४, अगर तोले १० गोरोचन वाल ४, चदन तोले ८०, कचा हिंगलु तोला १, चणिकबाब तोले २, वासक्षेप तोले ८०, कक्कु तोले ४०, रक्ताजली तोले २, अगरका चूरा तोला १, तेल चमेलीका तोले ४०, इत्र गुलाब तोला १, इत्र केवडा तोला १, इत्र चमेली तोला १, इत्र बेला तोला १, इत्र हीना तोला १, श्रीफल (२०१)-मीढोल (१२५) मरडाशिंगी (१२५) पचरत्नकी पोटली (५१)-पचरत्नकी पोंटलीमे-हीरा, माणक, पुखराज, पन्ना, और नीलम-ये-पाच-रत्न लेते थे.

आजकल-कमखर्चके सबब-मोती, माणक, मुगा, सोना, और-चांदी -इनको पचरत्नकी-पोटली-मानकर-अमलमे लाते है,—

६ पचरगी मशरु गज सत्ता, हरा पाज-गज पाच, पीला पाज-गज पाच, लाल पाज-गज पांच, आसमानी-पाज-गज एक, जामली पाज-गज एक, काला पाज-गज एक, सफेद पाज-गज दो, सफेद, लाल, पीला, हरा, आसमानी, जामली और शाम-ये-सात रगके पाज -एक-एक-गज, जगन्नाथीके थान तीन मलमलका थान एक, लाल कसुंबेका थान एक, धोती जोडा (१३)-दुपट्टे-बनारीवाले जोडा (१३)-नवग्रह और दश दिग्पालकी पूजामे पहेननेकेलिये नये धोती जोडे होने चाहिये पहले जमानेके लोग-प्रतिष्ठा वगैरा अछे काममे-रेशमी धोती-दुपट्टे-पहनते थे, आजकल-कम खर्च करनेके -सबब-सूतके पहनने लगे है,—

७ गेहू दश शेर पक्का (८०) तोलेका शेर लेना, मुग पाच शेर पक्के, चने पाच शेर पक्के, जुवार पाच शेर पक्की, उर्द पाच शेर पक्के, चोले पाच शेर पक्के जव पाच शेर पक्के, ये-सात तरहके धान्य बलि बाकुल देनेके चाहिये, सरसव-दो-शेर पक्के, चावल एक मण-पक्का, काले तील तोले दश, और नागरवेलके-पान-एक हजार,-दशाग-धूप तोले (२००)-किन्नरु आधमण पक्का छुहारे-दो-शेर पक्के, बादाम-सावत पाश शेर पक्की खोपरेके गोले (५०)-सिंगोडे सुके एक शेर पक्के, द्राख एक शेर पक्की, बादामकी गिरी तोले (८०) पीस्ते तोले (४०)-चिरोंजी-तोले (१०)-अखरोट तोले (१००) जजीर तोले (८०)-मिश्री अढाइ शेर पक्की एलाची छोटी तोले (६०) लौंग तोले (३०) जायफल तोले (६०) जवत्री तोले (१०) दारचीनी तोले (३०) और सौफ तोले (४०) आवले कुटेहुवे तोले (४०)-पीठी (बटना) तोले (४०) ककोडी तोले (२०) स्नात्र करानेवालोके लिये शुद्धिकी चीजें है-सुपारी सफेद पाचशेर पक्की नवग्रहोके पूजनके लिये बिजोरे (४) फलोंमे अनार, सीताफल, केले, अमरुद, स-

तरे, आम, नारगी-वगेरा-जो-जो-मिले लाना. फुलोंमे-गुलाब, चपा, चमेली, वेला, जाई, जुही, मरुआ, मोलसीली, जाजुस, लाल कनेर-वगेरा जितने दरकार हो-लाना.—

८ नैवेद्यमे घेवर, सुत्रफेणी, मोतीचूर, मग्ज, मेहसुन, वर्फी-पेंडे-वगेरा तयार रखना, नवग्रहोंका पाटला एक, दश दिग्पालोंका पाटला एक, अष्टमंगलीकका पाटला एक, नद्यावर्त्तका पाटला एक, कूर्मका पाटला एक, चदोवे दो, तोरण दो, सिंहासनका त्रिगडा एक, वासके-वनेहुवे-जवारिये चार, जिनमें जवारे वोये जायगें. आरती. मगलदीपक, धूपदाना, वालाकुंची, आरीसा, कलश, रकावी, कटोरी, चांदीका वनाहुवा एक इद्र और एक-इद्राणी, चादीके वनेहुवे-काचवे-दो, चादीका वनाहुवा गज एक, चादीका वनाहुवा चुना उठानेका चुनाला-एक-और तगारी एक, पुराने सिकेका चौखुटा-रुपया -एक, इतनी चीजें प्रतिष्ठाके कामकेलिये तयार रखना,—

९ मिट्टीके घडे साफ लाल रगके-जिनमे-काले-दाग-न-हो, नग (१३) और उनपर-अष्टमंगलीकके चित्र-निकलवाना मिट्टीकी -कची-इटे-(५००)-वेदिका वनानेकेलिये चाहियेगी. वोभी-तयार रखना, जिनमूर्त्तिका-नसार-करनेकेलिये सचे-मोती-तोला एक. सोनेके वनेहुवे-फुल-तोले (४)-चादीके वनेहुवे-फुल-तोले (४)-ये -ये-चीजें जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाकेलिये जरुरी है.-ज्यादा हकीकत-गुरुलोगोंसे दरयाफ्त करना. कितनेक जैनश्वेताम्बराचार्य-उपाध्याय-मुनि-या-श्रावक जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाके काममे घटाकरण यत्रकी-पूजा-कराते है,-मगर-वो-वौधमजहवका है जैनोके लिये मुताविक जैनशास्त्रके फरमानसे रिषिमडल-या-तिजयपहुत्तका-यत्र-रखकर-उसकी पूजा-कराना चाहिये.—

१० नवग्रहोंके-नैवेद्य-और-देवी-देवताओंके नैवेद्य वनानेवाली -चार-श्राविका-ऐसी होना चाहिये-जिनके सासु-सुसरा-माता-और पिता-मौजूद हो, वरघोडे-दो-चढाये जायगे. एक-जलयात्रा-

का-दुसरा रथयात्राका-तरह तरहके बाजे-धजा-पताका-बग्गी-मो-टार-जहा-जैसा-योग हो, वैसा करना-प्रतिष्ठाका-बयान खतम होता है प्रतिष्ठा-शातिस्नात्र और-अष्टोत्तरी-स्नात्रमे जितना खर्च करो धर्मकी तरक्कीका-सबब है.-मगर कमसे-कम-चीजवस्तु-खरी-दनेमे (१५००) रुपये सर्फ होगें.-अठाइ-महोच्छवमे-पूजाका सामान -अगी-रोशनी वगेरामें जितना खर्च करो अच्छा है,-कुभस्थापनामें-घृतके अखड दीपकमे-नवग्रह-दश दिग्पालके पूजनमे-नद्यावर्त्त-और अष्टमगलीककी पूजनमें-पचज्ञानका पूजन-ज्ञानदर्शन चारित्र-का पूजन-शासन देव और शासनदेवीका पूजन-धजादड-और-कलशका पूजन-प्रासादके अभिषेकके पूजनमे-जिनप्रतिमाकी-वेदी-और-प्रतिष्ठा-पूजन वगेराम-जितना खर्च करो अच्छा है-पेस्तरके जमानेमें-खुशनसीबोंने-बडी-दौलत सर्फ किइ है-जिनकों मदिर-मूर्त्तिके माननेपर कामील एतकात है, अबभी-दौलत सर्फ करते है, -प्रतिष्ठाके दिनोंमे-आठ-रोजतक-स्वधर्मीवात्सल्य-या-नवकारसी-का जीमन करना जरूरी है-बेटा-बेटीके विवाहमे-मकान और जेवर बनानेमें-हजारो-रुपये सर्फ कियेजाते है धर्मकेलिये हजारो रुपये सर्फ कियेजाय-तो-कौन बडीबात हुइ? दुनियोंमे सारवस्तु धर्म है,—

११ प्रतिष्ठाके दिनोंमे-आठ रोजतक-मडपमें तरह-तरहके बाजे -बजते रहे, रोशनी हो, और गाना-बजाना-होता रहे-अपने शहर-के राजासाहबको-दिवान-नायब दिवान-जहागिरदार साहब-या-कोई-दुसरे अमलदार हो-मडपम-पधारनेकी आर्जु-करना चाहिये और-गवैयोंकों-बुलाकर-गाना-सुनाना चाहिये जलसेके दिनोंमे-गाना-बजाना-यही धर्मकी तरक्कीका सबब है,-जिस रोज मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा किइजाय-सब अमल्दारोंके-वहा-मण-आधामण-दशशेर-या-पाचशेर-मेवा-मिठाई-वगेरा उमदा चीजें-भेजना चाहिये, जि-ससें धर्मकी तरकी हो प्रतिष्ठाकी विधि करानेवाले-कोई-यतिजी हो-या-कोई श्रावक हो उनकों शिरोपाव देकर खुश करना चाहिये.

उन्होंने सब-विधि-विधान कराया है.-प्रतिष्ठाका विधि विधान कराना सहज बात नही, अगर विधिविधान करावानेवालोंकों दुसरे शहरसें बुलाये हो-जानेआनेका तमाम खर्चा-देना-चाहिये. शाथ-कोई-नोकर-चाकर आये हो,-उनकोंभी-जानेआनेका-खर्चा-और-इनाम देना चाहिये, प्रतिष्ठाके जलसेपर कोई यतिजी आये हो, उनकोंभी-शिरोपाव देना जरूरी है,-मदिर बनानेवाले मिस्तरीकों-मंदिरजीकी पीढीके मुनीमकों-और-पूजारी वगेरा हमेशाके नोकरोंकों-कडा-कंठी-शाल-दुशाले-रेशमीपीताबर-पगडी-दुपट्टे-और-नगदी रुपये-इनाम देकर खुश करना चाहिये. भोजक-वगेरा-जिनगुण-गानेवाले-गवैयोंकों-गंधर्वोंकों-कलावतोंकों-और बाजे बजानेवालोंकों-सबको इनाम देकर-खुश करना धर्मकी तरक्कीका सबब है, इसीसे कहाजाता है-प्रतिष्ठाका काम करना दिलके दलेर शख्शोंका-काम है.-कंजुस-शख्शोंसे दौलत सर्फ होसकेगी नही. और उनके कामसे-कोई-खुशमी-न-होगें, इसीलिये बुजुर्गोका कौल है,-धर्मके काम-दिलके दलेरशख्शही-अगाडी होकर-करे जमी-उनको यश-मिलेगा, कजुस शख्श कहेगें-एकदफे-इनाम-वगेरा ज्यादा देयगें-तो-फिर-हरवख्त-उनका लागा-लगजायगा. मगर-यह-नही-सोचते-बेटा-बेटीके-विवाह करनेमे-अपने-घर-दो-चारदफे ऐसा वख्त आया. और सबका-लागा-देना पडा है, फिर प्रतिष्ठा वगेराके-काममें-लागा-क्यों-न-देना? जरूर देना चाहिये, जिससें-धर्मके जलसेकी-तारीफ हो, मौज शौखमें हजारो रुपये खर्च करदेते हो,-फिर धर्मके काममें-क्यौ-न-खर्च-करना?-क्या धर्म-कम दर्जेपर है? हर्गिज! नही.-बल्के! धर्मका-दर्जा-सबसें अवल है,-जो-जो-श्रावक कजुस होगें-मदिरकी आइहुई-पैदाशकों-जमा करनेमें तयार रहेगें,-मगर उनसे खर्च-न-होसकेगा, और मुहसे कहते रहेगें,-जमा-न-करते-तो-इतना देवद्रव्य कहासें आता? मगर यह-खयाल

नही करते-धर्मका-प्रभाव बडा है,-पेस्तर कई धर्मी-शरण-हुवे है-होते है, और होयगें,-धर्म-तो-हमेशासे चलता-आया और-चलता रहेगा,-तुम-क्या-चलाओगे? पेस्तरके लोगोंने-धर्ममें किस कदर दौलत सर्फ किई है-इसपर खयाल करो —

[दरबयान-जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाका खतम हुवा —]

[तवारिख-जैनतीर्थ —]

(तीर्थ-शत्रुजयजी —)

१ मुल्क सौराष्ट्रका-शिरोताज तीर्थ शत्रुजयजी-जिले काठिया-वाडमे मौजूद है,-पालिताने शहरका दुसरा नाम पादलिप्तनगर है, और यह-पादलिप्ताचार्यके वख्तसें-आबाद हुवा. इससें पुराना गाव आदपुर-जो-घेटीकी-पाजके परलेसीरे अवभी आबाद है, बराये नाम -रहगया इस पहाडपर-नव-टोंक और उनमे कई-बडेबडे जैनमदिर खडे है,-जैन मजहबमे सबसें बडा जैनतीर्थ-शत्रुजय-जिसपर-सैंकडो जैनमदिर-और-मूर्त्तिये काबिलेदीद और सुनीद है, सूर्यकुड वगेरा कई-कुड और रास्ते उमदा बनेहुवे, कई मदिरोंके दरवजोंके पास हाथी, शेर-पुतलीये-और उमदा मेहरावें-इस कदर खूबसुरत बनीहुई देखोगें,-जिसकी कारिगिरी-बेमिशाल है,-चौमुखाजीकी टोंकमे-राजा-सप्रतिका तामीर करवायाहुवा-मदिर सबसें पुराना है, -कर्माशाह-शेठने तीर्थ-शत्रुजयपर अखीरका उद्धार करवाया, राजा-कुमारपालका बनवायाहुवा मदिरभी पुराना है,-जो-हाथीपोलके-सामने सूरजकुडके रास्तेसे बायीतर्फ-निहायत खूबसुरत और सगीन देखोगे,-सवत् (१०८)में-जावडशाह-शेठने तीर्थ शत्रुजयपर उद्धार करवाया और बेशुमार दौलत सर्फ किई,—

२ खास-किलेमे जानेके लिये-अवल-रामपोल दरवजा मिलेगा, इसमें होकर विमलवशी टोंकको जाना चाहिये, जो-दखनकी तर्फ

है,-तीर्थंकर रिपभदेव-महाराज जहा-खिरनी द्रख्तके नीचे-कईदफे तशरीफ लाये थे,-इस टोंकमे-बडा-आलिशान द्रख्त खडा है.-वाघनपोलके आगे तीर्थंकर शांतिनाथजीका निहायत उमदा मंदिर शेठ-हीराचदजी-रायकरनजी-साकीन दमणका तामीर करवायाहुवा मिलेगा. करीब इसके-मदिर देवी चक्रेश्वरीका-आगे इसके एक-मदिर तीर्थंकर नेमिनाथजीका-इसमे तीर्थंकर नेमिनाथजीकी चवरी, समवसरणका अक्स, और चौमुखाजीकी मूर्त्ति-इसमें तख्तनशीन है,-आगे इसके एक मदिर जगतशेठका तामीर करवायाहुवा वहुत खुशनुमा और लाईक तारीफके देखोगे. जब हाथीपोलके दरवजेपर पहुचोगे,-दो-बडेवडे हाथी दिवारपर बनेहुवे नजर आयगें, जमाने पेस्तरके-जब मंदिर तामीर करवाया जाता था, दरवजेके पास हाथी -बनानेकी रश्म जारी थी.-हाथीपोलके सामने राजा कुमारपालका बनवायाहुवा मंदिर और दाहनीतर्फ सूरजकुंडका रास्ता बनाहुवा है, -हाथीपोंल दरवजेके आगे वहुत बडी सीढिया चढकर खास! तीर्थंकर रिपभदेव महाराजके मदिरकों जाना चाहिये. मदिर क्या! है? गोया! शत्रुंजय पहाडका एक-जवाहिरात है, सवत् (१५८७)में-शेठ -कर्माशाहने इसकों तामीर करवाया. कर्माशाह-शेठ-जैसे खुशनसीब-और मुबारिक सितारे दुसरे कौन होगें जिन्होंने ऐसे अजायव काम किये, बडेबडे कारिगिर लोग इस मंदिरकी शिल्पकारिगिरी देखकर ताज्जुब करते हैं मदिरके वहार बडा आलिशान चौक-शंगे मरमरका फर्स-और-ईर्दगिर्दके मदिरोंका-घेराव दिलको मोहे लेता है,-मदिरोंके शिखर-सोनेके कलश-धजा-पताका और झलाझल-रोशनी देखकर दिल-खुश-होता है,-शत्रुंजयतीर्थका-यह-एक मूल-मदिर है, और इसम तीर्थंकर रिपभदेव महाराजकी वडी-आलिशान मूर्त्ति काविलेदीद और दिदारके बनीहुई-गोया! खास तीर्थंकर रिपभदेव महाराज यहा आनकर तख्तनशीन हुवे है. इस मूर्त्तिकी तारीफ कहातक लिखे? जिसकी सानी दुनियामे दुसरी-न-होगी,

उचाईमें-छह-हाथ वडी आखे स्फटिकरत्नकी, और ललाटमे-हीरा -लगाहुवा, दर्शन करके दिल निहायत खुश होगा, मंदिरके भीतरी रंगमंडपम शगमर्मर पत्थरके बनेहुवे हाथीपर राजा भरतचक्रवर्त्ती-ओर-मरुदेवी-माताकी खूबसुरत मूर्त्ति जायेनशीन है,-यह-रचना उस वख्तकी समजो.-जब-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकों केवलज्ञान पैदा हुवा था, भरतचक्रवर्त्ती और मरुदेवी माता-वास्ते तीर्थंकर रिषभदेवजीके दर्शनोकों आये थे.—

३ तीर्थंकर-रिषभदेव महाराजके मंदिरके सामने-गणधर पुंड-रीकजीके मंदिरको जाना चाहिये. जो-बेशकीमती-और वडा खूब-सुरत बनाहुवा, इसके दर्शन करके आम-मंदिरोंकी परकम्मा और-नसार करना चाहिये. रुपये-पैसे-असर्फीयोसें-और-अगर ताकात हो-तो-मोतीयोस तीर्थकी निछरावल करना चाहिये एक-मंदिर-नदीश्वरद्वीपका-इसमे नदीश्वरद्वीपका-आयेहुव-आकार बनाहुवा देखलो! एक मंदिर-सहस्रकूटका-इसमें-मेरुशिखर पहाडकी रचना-का-और एक मंदिर-अष्टापदतीर्थकी रचनाका-इस कदर उमदा और साफ बना है,-जैसे-वे-खास-चीजें यहा-लाकर रखदिई है,-एक-मंदिर समेतशिखरजीकी रचनाका-निहायत उमदा-जिसकी तारीफ -बेमिशाल है,-कहातक बयान करे-जिन्होने इस तीर्थकी-जियारत किई होगी, बखूबी जानते होगें दरसाल कातिक शुक्ल पुनमके रोज -इसी विमलवसी-टोंकमें रथयात्रा निकलती है,-सोनेचादीके बने-हुये रथ. पालखी-और तरह तरहके बाजे वगेरा जुलुससें मूलमंदिरकी चारोंतर्फ-परकम्मा दिइजाती है सोनेके कलशे-धजा-पताका-बाजोंकी सुरीली अवाजे और यात्रीयोंका ठाठ-उसवख्त यहां जमा होता है बडेबडे यजत्री-सरगी-तबले-सितार-हारमोनियम-और-बेला-वगेरा साजसें गवैयेलोग यहापर गायन करते है,-जिस शख्स-ने कातिकसुदी पुनमके रोज-शत्रुंजयतीर्थकी जियारत किइ-गोया! उसने-खास बहिस्त देखलिया और तीर्थकरोंके समवसरणमे-जा-

बेठा.-एक तर्फ यात्रीयोंके स्नान करनेकी-जगह-केशर-चंदन-घिसनेवाले पूजारी-और-एक तर्फ-गुप्त-भंडार, फुल वेचनेवाले माली लोग-फुल-लेकर बेठते है,-जिसकों फुलोंकी जरूरत हो-और देव-मंदिरमें-चढाना चाहते हो-पैसे देकर खरीद सकते है,-दिवान वस्तुपाल-तेजपालके तामीर करवायेहुवे किमती मदिर इसी टोंकमें मौजूद है,-विमलवशी-टोंकके दर्शन-करके वापिस-वाघन-पोंलको आना. और-मोतीशाह-शेठकी बनाई हुई दुसरी टोंकोंके दर्शनोंको जाना.—

४ शत्रुंजय-पहाडपर-करीव तीन कोशके घेरेमे-नव-टोंक-और छोटेवडे-तीन हजार मदिर कायम और बरपा है, इन मंदिरोंकी-और टोंकोंकी-चारोंतर्फ-एक दिवार मानींद किलेके बनीहुई-नव-टोंकोंके बडेबडे-अठारां फाटक-कई दरवजे-खीडकीयें-और जाने-आनेके रास्ते-पाक और साफ बनेहुवे है. हरटोंकके रास्ते-रातकों बदकर दिये जाते है,-मंदिरोंके-शिखर-धजाओंका-फरराना-घंटोंकी झनझनाट-दिलकों चकित करदेती है,-बडी-बडी-मूर्त्तियोंके मस्तकपर-हीरे-कथे-हाथ-और घुटनोंपर-सोनेके पत्ते लगेहुवे निहाहत खूबसुरती दिखारहे है.-दरअसल! शत्रुंजयपहाड-जैनश्वेतांबर मदिरोंका-एक-नायाब शहर है,-एक पहाडपर-इतने-मदिरोंका जमाव-हफते अकलीममे कही-नही देखोगे.-चौमुखाजीकी-टोंक-जो-बडी दूरसें नजर आती है, सिवा-सोमजी-नामके श्रावकने-बहुत दौलत मर्फ करके तामीर करवाई-और काविल देखनेके है,-इसका दुसरा नाम खरतर-वसहिमी कहते है,-छिपा-वसहि, स्वर्गारोहण, पाचपाडव,-अद्भूतजी, रायणवृक्ष. रिषभपादुका, उलखाजोड, ललितसरोवर, चेलणतलावडी,-और-सिधवड-वगेरा-स्थान-निहायत उमदा बने है,—

५ पहाड शत्रुंजयकी तराईमे-चरणपादुका-छत्रीयें-उमदा धर्मशाला, बगीचा. मीठे पानीकी वावडी. और-चार उमदा उमदा-बे-

ठके जिसपर करीन पाचसो-पाचसो आदमी बखूनी बेठ सकते हैं-बडी खबरदार जगह है,-जिसकों खानपान करना हो,-इस जगह करे. जगल जाना हो,-यहा-जावे, आगे पहाडके उपर-बसबब-पाकी और ताजगीके जगल जाना-न-होगा, तमाम पहाड जाये अदबका है,-यहातककि-पावमे जुतामी-कोई जैनी-नही पहनता.-यात्रीलोग शुभहकों पहाडपर जाते है और तीर्थकी जियारत करके शामकों पिछे लोट आते है,-पहाडपर चढनेकेलिये म्याना-और डोली वगेरा तयार मिलती है, अगर कोई पैदल जाना चाहे-तो-इख्तियार उसके है. शत्रुजयपहाड समुदरके पानीसें करीन (१९८०) फुट उचा, और उसपर चढनेकेलिये पथ्थरोकी सीढियें बनीहुई है,-पहाडकी तराइमें रास्तेकी दोनोंतर्फ-दो-हाथी-इट चुनेके बनेहुवे निहायत खूनसुरत गोया! सचे हाथी-यहापर आनखडे देखलो! पहाड शत्रुजयकी इज्जत जैनोंमे यहातक मशहूर है,-अगर कोई यात्री-पहाडपर जाय-बमुजब अपनी हेसीयतके-मोती-या-जवाहिरात नसार करे, अगर उतनी ताकात-न-हो-तो-सोने चांदीके बनेहुवे फुलोंसें नसार करे, जिसकी ताकात उससेभी-कम हो,-चादीके फुलोंसें, और अगर उसकीभी-वसत-न-हो-तो-चावल-या-गुलाब चमेलीके फुलोंसें नसार करे, और फिर अगाडी कदम रखे, तीर्थंकर रिषभदेव महाराज-इस पहाडपर पूरव-नन्यानवे दफा-तशरीफ लाये और ध्यान समाधि किइ. इसलिये नन्यानवें यात्रा करनेका रवाज यहापर जारी है,-भरत-चक्रवर्त्ती-शहर अयोध्यासें खुश्कीरास्ते इस तीर्थकी जियारतकों-आये थे, उनके मातहेत राजे और-फौज वगेरा लवाजमा साथ था, जवाहिरात और मोतीयोंके थालोंसें उन्होने-इस-तीर्थका नसार किया था बडेबडे दौलतमद और खुशनसीब यात्री यहापर आचुके है, जैनोंमे काबिल इसके दुसरा तीर्थ नही, सिद्धाचल, विमलाचल, सिद्धक्षेत्र, तीर्थाधिराज, और कचनगिरी,-ये-सब इसी तीर्थके नाम है,-तरह तरहकी जडी-बुटीयें-और वनास्पतियें-यहा-

पर खडी है, मोंर, तोते, कोयल, मैंना और चीडिया-वगेरा तरह तरहके परींदे यहा द्रख्तोंपर कलोले करते रहते है-ओर-पानीके भरे हुवे हौज-हमेशा तयार वने रहते है, कहातक वयान करे. मानींदे-सेव-वहिस्त है,

६ शहर पालिताना-एक-गुलजार वस्ति है-ओर उसके नीचे-एक-नदी-हमेशा वहती रहती है,-दिवानी फोजदारी महेकमे यहापर वने हुवे है, वडा-वाजार राजमहेलसें लेकर-भाडवी ओर आगे-शत्रुंजय दरवजेके वहारतक चला गया, खानपानकी चिजें-मेवामिठाइ, पुरी-कचौरी-आटा-दाल-घी-दूध-वगेरा जो-चाहिये लेलो, सोना-चादी-कपडा-ओर फल-फुल-सब चिजें यहापर मिलती है. जो-कोई यात्री यहा आते है सुखचैन पाते है, शहर पालितानेमे-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी-आवादी अछी, वडा-जैनश्वेतांबर मंदिर तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका-ओर करीब-इसके कारखाना आनंदजी कल्यानजीका-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर इसमे हमेशाकेलिये-मोंजूद रहते है,-और पूजनके लिये-यात्रीयोंको जिस चिजकी दरकार हो,-यहा-मिलती है,-जैनश्वेतांबर धर्मशाला यहां-कइ-बनी हुइ यात्री जहा दिल चाहे-कयाम-करे-और पहाड शत्रुजयपर जाकर तीर्थकी जियारत करे, अगर कोई यात्री-शत्रुंजय पहाडके सब मंदिरोंकी-चारो तर्फ-छह-कोशकी परकम्मा देना चाहे दरवजे रामपोलके दाहनी तर्फसें शुरूआत करे, जिसकों पावपैदल जाना हो, पावपैदल जाय, और अगर-डोलीमे-बेठकर जानाचाहे-तो-डोलीभी-मिल सकती है,-रास्तेमे-देवकीजीके षट्नंदनकी छत्री, चंदन तलाइ, सिद्धशिलाकी चटान-जिसपर कइ मुनि-ध्यान करके मुक्ति पाये है,-आगे इसके-भाडवाका-पहाड जिसपर तीर्थंकर अजितनाथ और शांतिनाथ महाराजने चौमासा किया था. आगे इसके कुछ नीचे उतरकर सिद्धवडकों आना, यहापर एक वट-वृक्ष खडा है,-इसके नीचे ध्यानकरके कई-मुनिजनोंने मुक्ति पाई थी, यहापर-दो-छत्री-

यें बनी हुई है,-जियारत करके सिधे-शहर पालितानेकों आना. रास्ता बनाहुवा है,-अगर कोई यात्री-शत्रुजयपहाडकी चारोंतर्फ बारा कोशकी परकम्मा देना चाहे-तो-यह-रास्ताभी बनाहुवा है,-चाहे कोई-बैलगाडीपर सवार होकर जाय, या-पाव पैदल जाय-इ-ख्तियार उनके है, शहर पालितानेसें रवाना होकर अवल शत्रुंजय नदीकों जाय. वहापर एक-छोटासा मंदिर और उसमे तीर्थंकर रिष-भदेव-महाराजके-चरण-जायेनशीन है, उनके दर्शन करके अगाडी बढना, आगे चार कोशके फासलेपर-एक-भडारिया-गांव मिलेगा, भडारिया गावके आगे-एक-कदबगिरि-पहाड-जिसपर कदंब गण-धर अगले जमानेमें मुक्त हुवे थे,-उनके चरणोकी छत्रीके दर्शन करके आगे बढे-तो-चौक गाव आना और वहापर रात्रीको कयाम करना. दुसरे रोज हस्तगिरि-पहाडकी जियारतकों जाना. इस पहाड-पर एक और हस्तीनामके गणधर मोक्ष हुवे थे. उनके चरणोंकी छत्रीके दर्शन करे और नीचे आनकर-घेटीगाव-जो-दरमयान रास्तेके आता है,-होते हुवे-शहर पालितानेकों-लौट-आना. बारां कोशकी परकम्मा-खतम हुई,—

[तवारिख-तीर्थ गिरनार -]

७ शहर बढवानसें (१६८) मील और भावनगरसें (१२६) मील दूर-जुनागढ शहर-गिरनारपहाडकी तराईमे बडी गुलजार बस्ति और-रैलका टेशन है. टेशन और शहरके बीच करीब एक मीलका फासला होगा. सवारीकेलिये-इका-बगी तयार मिलती है, बडी बडी-सडके-आलिशान इमारते-और आजकल इसकी आबादी ब-ढती जाती है,—बसबब रैलके-यात्रीयोंका आनाजाना कमरतसें और जिस चिजकी दरकार हो-यहा मिलती है,-जो-कोई जैन-यात्री-शहर जुनागढकों आवे शहरमे जाकरशेठ-हेमाभाईकी-धर्म-शालामें-या-बाबुकी धर्मशालामे कयाम करे, और-गिरनारपहाडपर जाकर तीर्थकी जियारत करे,-जुनागढसें-गिरनारपहाडकों-जाते

-रास्तेमें-एक-दामोदर नामका कुंड-जो-(२७५) फुट-लंबा-और (५०) फुट चौडा-मिलेगा, जब गिरनार-पहाडकी तराइमे -पहुचोगे एक-जैनश्वेतांबर मंदिर और धर्मशाला-उमदा बनीहुई देखोगें.-यहांपर पाक-और-साफ होकर गिरनारपहाडपर जाना चाहिये, चढनेके लिये-उमदा पत्थरोंकी बनी हुई सीढिया-जिससे -यात्री-आरामसें चढसकते है,-अगर कोई यात्री-डोलीमे सवार होकर जाना चाहे-डोलीभी-मिलसकेगी. जब आधा पहाड चढोगे-अवल-नेमनाथजीकी-टोंक-मिलेगी, जिसमे छोटेबडे बाईस जैनश्वेतांबर मंदिर-बडे खूबसुरत और संगीन बनेहुवे देखकर दिल खुश होगा.-पहाडकी तराइसें नेमनाथजीकी-टोंकतक सीढियोंकी गिनती करे-तो-करीब (४०००)के होगी, नेमनाथजीकी-टोंकके नजदीक एक-जैनश्वेतांबर धर्मशाला-और-तीर्थ गिरनारका-कारखाना बना-हुवा-मुनिम-गुमास्ते-नोकरचाकर और पहरेदार हमेशाके लिये तैनात है. यात्रीकों कोई तकलीफ-न-होगी. शौखसें धर्मशालामें कयाम करे और तीर्थकी जियारत करे,—

८ नेमनाथजीकी टोंकके दरवजेमे घुसते चोकीदारोंके रहनेकी जगह-धर्मशाला और कारखानेकी ऑफिस वगेरा मकानात बनेहुवे है,-आगे बढनेसें तीर्थंकर नेमनाथजीका मंदिर मिलेगा मंदिर बावन जिनालयका बडा संगीन और आलिशान शिखरबंद बनाहुवा, मूल नायक तीर्थंकर नेमनाथजीकी श्यामरंगमूर्त्ति करीब तीन हाथ बडी इसमे तख्तनशीन है,-दर्शन करके दिल खुश होगा. मंदिरके बहारके हिस्सेमें-बडा चोक और चारोंतर्फ बावन जिनालयोंके छोटे मंदिर बनेहुवे है,-मंदिरका रंगमंडप बडा-जिसमे बेठकर यात्री-गीतगान-और-सरंगी-तबले-हारमोनियम वगेरा साजसें तीर्थंकरोंकी इबादत करना चाहे-तो-करसकते है, मंदिरकी परकम्माके दाहनी तर्फ-एक-तलघरमे अमीझरा पार्श्वनाथजीकी-मूर्त्ति-करीब अढाई हाथ बडी तख्तनशीन है, बिदून चिरागके इसके दर्शन दिन-

मेमी–नही–होसकते तलघरमे जानेकेलिये सीढियें बनीहुई है,–जा-
कर–जियारत करना चाहिये, तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोंकसे नीचेकी
तर्फ उत्तर दिशामें जानेसें मेरकवशीकी टोक तीर्थंकर रिषभदेव-
जीका मदिर मिलेगा. इसकी जियारत करना चाहिये, इस मदिरके
सामने पाच मेरुकामदिर–जैनशास्त्रोंमे–जो–पाच मेरु लिखे है,–उ-
सका आकार इसमे बनाहुवा हे –तीर्थंकर रिषभदेवके–मदिरसें–बायी-
तर्फके दरवजेमें होकर मेरकवशीकों–जाना, मदिर बावन जिनाल-
यका–बनाहुवा, इसमे शिल्पकारीका–काम–उमदा और रगमडपमे–
कोतरकाम–लाइफ तारीफके बना हे मूलनायक–सहस्रफणा पार्श्वना-
थजीकी सफेद रग–मूर्त्ति–करीब सवा हाथ बडी इसमें तख्तनशीन
है, परकम्मामें कोरनीका–काम–निहायत उमदा देखोगे, इस मदि-
रमें–एक–मदिर चौमुखाजीका बनाहुवा–उसके गुबजकी शिल्पका-
रीका काम–लाइफ तारीफके है धर्मपर कामील एतकात और खुश-
नसीबोंने कैसे कैसे धर्मके काम कर बतलाये है,–जिसकी सानी आज
दुसरा बनना मुश्किल है,—

९ सग्राम–सोनीकी टोंकका मदिर बडा आलिशान और सगीन
बनाहुवा इसमे मूलनायक–सहस्रफणा–पार्श्वनाथजीकी–मूर्त्ति–सफेद-
रग करीब देढहाथ बडी तख्तनशीन है शिखरमे शिल्पकारीका–
काम–उमदा, रगमडप जहा बेठकर पूजन पढाई जाती है,–उपरके
भागमे बेठक–बनिहुई, परकम्मामे तीन–बडे मदिर–और–उनमें जिन-
मूर्त्तिके दर्शन है. राजा–कुमारपालकी टोंकका मदिर निहायत खूबसु-
रत और इसमे मूलनायक तीर्थंकर अभिनदन स्वामीकी–मूर्त्ति–करीब
एक हाथ बडी तख्तनशीन है –रगमडप बडा, बहारका चौक और
देखाव काबिलेदीद है वस्तुपाल तेजपालकी टोंकका मदिर आबुके
जैनमदिरोंकी यादी–दिलाता है,–इसमें–मूलनायक–शामलिया पार्श्व-
नाथजीकी–मूर्त्ति–करीब–दो–हाथ बडी तख्तनशीन है,–रगमडपमे
उमदा शिल्पकारी–बायीतर्फ सगीन पत्थरोंका बनाहुवा–समवसरणका

आकार-चारोंतर्फ सीढिया-और-उपर चौमुखाजीकी मूर्त्तिये तख्त-नशीन है,-असली-समवसरणका-आकार नजरके सामने दिख-पडता है,-मंदिरकी दाहनी तर्फ-मेरु पर्वतका आकारभी-निहायत उमदा बनाहुवा-असली मेरु पर्वतकी यादी दिलाता है,-देखकर दिल खुश होगा.-राजा-सम्प्रतिकी-टोंकका-मंदिर-इसमें निहायत उमदा कारीगिरी हुई है,-जिसकों देखकर पुराना जमाना याद आता है,-इसमे मूलनायक तीर्थंकर नेमनाथजीकी शामरंगमूर्त्ति-करीन अढाइ हाथ-बडी-तख्तनशीन है.-राजा सम्प्रतिकी-टोंकसें ज्ञानवावका मंदिर-इसमे चौमुखाजीकी चार मूर्त्तिये तख्तनशीन है. आगे गजपदकुंडके पास चंदाप्रभुका मंदिर इसमें तीर्थंकर चंद्रप्रभुकी मूर्त्ति-जायेनशीन है, तीर्थंकर-संभवनाथजीका मंदिर-इसमें-संभव-नाथजीकी मूर्त्ति तख्तनशीन है, दरअमल! यह मंदिर पुराना शुमार कियाजाता है.-इस मंदिरका-जीर्णोद्धार-शेठ-मानसिंहजी-भोज-राजजी-साकीन-कछ-माडवीने करवाया-इसलिये इनके नामसेभी-मशहूर कहलाता है,-

१० नेमनाथजीकी टोंकसे आगे पांचमी टोंककों जाया जाता है,-रास्तेमे पत्थरोंकी सीढिया बनीहुई, जिससे चढनेवाले आसानीसें चढसके कमताकात-यात्री-अगर-डोलीमे सवार होकर जाना चाहे -तो-शौखसें जाय कोई हर्ज नही.-पैदल जानेवाले यात्री पैदल जाय. अलवते! पांचमी टोंकका चढाव बेशक! मुसीबतका है, मगर ताकातवर-यात्रीकों कुछ परवाह नही. नेमनाथजीकी टोंकसें आगे थोडी दूर चढनेसें-राजुल-गुफा-मिलेगी, इसमे सती-राजुलकी-मूर्त्ति बनीहुई जायेनशीन है,-आगे-गौमुखी-कुंड-इसकी बाजुमे एकही पथरमे बनेहुवे चौइस तीर्थंकरोंके चरण-और-हरेक चरणोंकी -जोडमे तीर्थंकर देवका नाम शास्त्री हर्फोंमे उकेरा हुवा है,-आगे-रहनेमिजीका मंदिर-इसमे रहनेमिजीकी शामरंग मूर्त्ति-करीन-देढ हाथ बडी पद्मासन तख्तनशीन है-और इसकों दुसरी टोंक बोलते

है, आगे चलनेसें-अबादेवीका मदिर इसमे अबादेवीकी मूर्त्ति-जाये-नशीन है,-अबाजीके मंदिरसे आगे-ओघड शिखर-इसपर तीर्थंकर नेमनाथजीके चरण बनेहुवे है इसकों तीसरी टोंक कहते है.-इसके आगे चौथी-टोंक-और फिर आगे पाचमी-टोंक आती है,-इसका चढाव-बेशक! कठीन, और-जब-इसके सिरेपर पहुचते है-तो-मालुम होता है-आसानपर आगये. नीचेकी जमीन पहाडका घेराव -और दरख्तोंके झुड-दिलकों अजायब करदेते है, खास! पांचमी टोंकपर पहाडमे उकेरी हुई तीर्थंकर नेमनाथजीकी मूर्त्ति-और-एक छत्रीमे चरण-बनेहुवे-तख्तनशीन है.-मूर्त्ति-करीब सवा फुट बडी -और इसके नीचे लिखा है,-सवत् (१८९७) आसोज वदी सप्तमी गुरुवारके रोज-शेठ-देवचद लक्ष्मीचदने जिनालयकों प्रतिष्ठित किया, जैनलोग इस पांचमी-टोंककों-नेमनाथजीकी-मूर्त्ति-और-वरदत्त-गणधरके-चरणके सबब-जैनतीर्थ मानते है,-और-वैदिक मजहबवाले-दत्तात्रेयजीके-नामसे-वैदिक मजहबका तीर्थ मानते है. -यहापर एक-बडा-घट-सवत् (१८२५)का-बनाहुवा-लगा है-और हरयात्री इसकों बजाते है पाचमी टोककी जियारत करके वा-पिस उसी रास्ते-तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोंककी-आना-जिसकों पहली टोंक कहते है, यहापर धर्मशालामे कयाम करना. और दुसरे रोज-सहस्राम्रवनकी जियारतकों जाना —

११ नेमनाथजीकी-टोंकसें सहस्रावन जानेका रास्ता-गोमुखीकु-डके पाससे बायीतर्फकों जाता है,-रास्तेमे-पत्थरोकी सीढिया बनीहुई, कइ-यात्री डोलीमे सवार होकर और कइ-यात्री-पैदलभी जाते है, — थोडी दूरपर चढाव और थोडी दूरपर उतार-इस तरह करीब (१५००) पनराहसो सीढियोंकों पारकर जब-नजदीक-सहस्राम्र-वनकों पहु-चोगे, आम्रवृक्षोकी-छायासें ढकाहुवा-सहसावन-दिखाई देगा. इसीका नाम-जैनशास्त्रोंमे सहस्राम्रवन लिखा, तीर्थंकर नेमनाथजीने दुनयवी कारोबार छोडकर यहा दीक्षा इख्तियार किइथी. पेस्तर यहा

हजारा आम्रवृक्ष खडे थे, अनभी-सेकडों-आम्रवृक्ष खडे है, और उनकी थंडी छायामे परींदे कलोले करते रहते है.-एक छत्री-तीर्थंकर नेमनाथजीके चरणोंकी और आगे इसके पत्थरोंका फर्स लगाहुवा है, अतराफ कोट खीचाहुवा, जगह रवन्नकदार, यात्री यहापर बेठकर जियारत करे और ध्यान लगाकर दिलमे तीर्थंकर देवोंकी इबादत करे, सहमाननकी जियारत करके यात्री तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोककों वापिस आवे. और फिर वहासें पहाड उतरकर शहर जुनागढकों लोट जावे, गिरनारपहाड तरह-तरहकी जडीबुटीयोका खजाना. आम, अमरूद, शरीफे,-बादाम,-वगेरा मेवाजात-कइ-वनास्पति यहांपर पेदा होती है,-किताब-शत्रुजयमहातममें-गिरनारपहाडकों-शत्रुजयतीर्थकी पांचमी टोंक लिखी और इसका दुसरा नाम-रेवतगिरितीर्थ कहा, कइ-मुनिमहाराजोने-इस तीर्थपर आनकर ध्यान समाधि किई और मुक्ति पाई.-जिनकी आलादर्जेकी-तकदीर हो-इस तीर्थकी-जियारत करे.—

[तवारिख-तीर्थ आबु -]

१२ नवई इलाकेकी उत्तरतर्फ-शिरोहीराज्यमे-आबुपहाड एक-गुलजार जगह है. राजपुताना रेलवे लाईनमे आबुरोड टेशन उतरकर आबुपहाडपर जायाजाता है.-आबुरोडका दुसरा नाम खराडीगांवभी बोलते है यहांपर एक-जैनश्वेताम्बर धर्मशाला-और मदिर बनाहुवा है. यात्री इसमे कयाम करे.-खराडीमे-मामुली सोदा सामान वगेरा -जो-जो-चिजे चाहिये मिलसकेगी, खराडीसे रवाना होकर जब (१२) मील उपर आवे-तो-आरनाकी-चौकी मिलेगी. वहासे रवाना होकर जब-आबुपहाडपर पहुचेगें, देढ मीलके फासलेपर देलवाडा-गाव-मिलेगा. वहांपर पाच-जैनश्वेताम्बर मंदिर बडे-आलिशान बने-हुवे काबिलेदीद है,-धर्मशाला-दो-एक-बडी दुमजली, जिसमें कोठरी अदाज-साठ-पेंसठ-बनीहुई यात्री इसमे दिल चाहे-जहा-कयाम करे,-कोई मना-नही. दुसरी धर्मशाला हरकुवर-शेठानीकी

तर्फसें बनीहुई निहायत पुख्ता-सामने बडा चौक और खुबसुरदार जगह है-अकमर! जैनमुनिभी इसमें ठहरा करते है-चौकी पहेराका इतजाम अछा, बहारमें जैनश्वेतांबर कारखाना-जहांपर मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर हमेशाके लिये तैनात है,-और यात्रीयोंकों बर्त्तन बिस्तर वगेरा हरकिस्मकी चिजे मिलती है, अपना नाम लिखाकर-लेआवे और जातेवख्त देजाय —

१३ आबु-देलवाडामें अवल-मंदिर तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका -जो-शेठ-विमलशाहका तामीर करवाया हुवा-बेशकिंमती है, और इसमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी-मूर्त्ति-करीब-छह-फुट बडी तख्तनशीन है. तमाम मंदिर संगे-मर्मरका-बनाहुवा जिसमें निहायत उमदा कोरनी-जिसकों देखकर बडेबडे शिल्पकारभी-तारीफ करते है-काबिल देखनेके बनीहुई है,-बावन डेवरी, रंगमंडप, चदनचौकी, जिसके उपर संगे-मर्मरके बनेहुवे तोरण-इस कदर उमदा देखोगे-जो-बेमिशाल है खंभोंमें इस कदर कारिगिरिका-और नकासीका-काम किया है-जिसकी तारीफ लिखना-कलमसे बहार है,-इस मंदिरकी परकम्मामें-तीर्थंकर-मुनिसुव्रतस्वामीकी-मूर्त्ति-करीब-साढ़फुट बडी शामरंग जायेनशीन है,-दरअसल! यह-मूर्त्ति-निहायत पुरानी और विमलशाह-शेठके-तामीर करवाये हुवे-मंदिरसे पेस्तरकी है -जो-जमीनसे निकली थी, मंदिरके सामने हाथीखाना-जिसमें-संगे-मर्मरके बनेहुवे-दश,-हाथी ऐसे उमदा बनेहुवे देखोगे-जो-आजकलके जमानेमें बनना दुसवार है,-बीचमें-विमलशाह-शेठकी-घोडेपर सवार मूर्त्ति-संगेमर्मरकी बनीहुई उमदा कारिगिरिका नमुना है अगर कोई सवालकरे तीर्थंकर देवोंकी मूर्त्तिके घोडेपर सवारमूर्त्ति-क्यों-बनाना? जवाबमें तलब करे, तीर्थंकर देवोंकी मूर्त्तिसें-उंचेके भागमें-न-होना चाहिये. नीचेके भागमें-होतो-कोई हर्ज नही तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके समवसरणके सामने भरतचक्रवर्त्ती-और-मरुदेवीमाता-हाथीपर सवार होकर गये थे और मरु-

देवीमाता-दिलमें अनित्यभावना भावते केवलज्ञान पाकर-मुक्ति-पाये थे. सवुत हुवा-विमलशाह शेठकी बेठक तीर्थंकरोंके सिंहासनसे नीचेकी है, इसलिये कोई हर्जकी बात नही.

१४ दुसरा मंदिर-दिवान वस्तुपाल तेजपालका तामीर करवाया हुवा निहायत उमदा कारिगिरीका नमुना, सबकाम संगेमर्मरका, बावन देवरी और छतमें ऐसे वेल-बुटे उकेरे है,-जिसकों देखकर दिलमे ताज्जुब होगा, एक तर्फकी छतमे तीर्थंकर नेमनाथजीकी बरात और-चवरीका देखाव. निहायत उमदा,-खंभे-कमान और उनपर खुबसुरत पुतलीयें-और तरह तरहकी शिल्पकारीका-काम-इस कदर उमदा बना है,-देखनेवालेही-जान-सकते है, रंगमंडप, चंदनचोंकी और छतका काम इसतरह बारीकीसें किया है-जो-अकल-काम नही करती. आबुके जैनमंदिरोंकी कारिगिरी मुल्कोंमें मशहूर है.-खभोंम और-देरानी-जेठानीके बनाबाये हुवे आलोंमे शिल्पकारी देखो -तो-कारिगिरोने-पथरकों कागजकी मिशाल करके दिखा दिया है- वस्तुपाल-तेजपालके बनवायेहुवे मंदिरमें तीर्थंकर नेमनाथजीकी शामरंग-मूर्त्ति-करीब पांच फुट वडी-चतोर मूलनायकके तख्तनशीन है,-जो-राजा-सम्प्रतिकी तामीर करवाई हुई है,-इसमे-दो-शिलालेख दिवारमें लगेहुवे,-संस्कृत जबानमे श्लोकबद्ध है-जो-अछे-संस्कृतके पढेहुवे विद्वान् बाच सकते है,-मंदिरके पिछाडी भागके आलोंमें वस्तुपाल तेजपाल उनके मातापिता और रिस्तेदारोंकी मूर्त्तियें संगेमर्मरकी वनीहुई खडे आकार जायेनशीन है. संगेमर्मरके बनेहुवे -दश हाथी आलादर्जेके बनेहुवे खडे है-वस्तुपाल तेजपालने करीब (१२) करोड (५३) लाख रुपये सर्फ करके यह मंदिर तामीर करवाया.-कारिगिर लोग जितनी बारीकी करके पत्थरका चुरा निकाले -उसकों-तोलकर बराबरीमें सोना-जवाहिरात देते थे. और जितनी उमदा कारिगिरि मंदिरके काममे होसके वैसा करते थे, आजकलके कितनेक बजुम श्रावक मंदिरके कारिगिरोंकों और नोकरोंको-तन-

ख्वाह देनेमेभी-कजुसाई करते है. और-कहते है,-हमने-देवद्र-व्यकों बचाया. मगर इसका नाम-देवद्रव्य बचाना नही है,-बल्कि! मदिरके कामकों हानि पहुचाना है. विवाह-शादीके-काममें कजुस श्रावकभी-दौलत-सर्फ करते है -उसवख्त-कजुसाई-नही करते,—

१५ विमलशाह शेठके और वस्तुपाल तेजपालके मूलमदिरका पिछला भाग और शिखर देखाजाय-तो-पथर और चुनेके बनेहुवे है, खयाल करनेकी जगह है,-रगमडप,-महेराब,-खमे,-बावन जिनालयकी देवरीयोमे-और छतम-इतनी उमदा शिल्पकारिगिरि और मूलमदिरकी पिछली दिवारम और शिखरमे-उमदा-कारिगिरी-क्यों -नही? क्या! जाने-कुछ जमानेके रदवदलसें कारिगिरीका-काम-तोडा गया हो.-और पथर चुनेका काम फिर बनाया गया हो -हां! इतना जरूर कहसकते हो-आबु-देलवाडेके जैनमदिरोंकी कारिगिरी -जो-अब मौजूद है,-बेशक! उमदा है.-इन्ही-आबु-देलवाडेमे तीसरा मदिर शेठ-मैंसाशाहका-और इसमे तीर्थंकर रिषभदेव भगवानकी सर्वधातकी बनीहुई-मूर्त्ति-करीब पाचफुट बडी-बतौर मूल नायकके तख्तनशीन है.-इसी मदिरके करीब-चौथा-मदिर तीर्थंकर सुमतिनाथजीका जिसमे सफेद पाषाणकी बनीहुई-मूर्त्ति-करीब चार फुट बडी तख्तनशीन है.-इसके अतराफ (१८) देवरीये और उन सबमे जिनमूर्त्तियें जायेनशीन है, इस मदिरके बहार एक छोटासा बगिचा जिसम दादाजीके चरण और छत्री तामीर है,-इन मदिरोंके-हातेमे-कुछ उपर चढे तो-चार छोटी देवरी और उनमे-जिनमूर्त्तिये जायेनशीन है,-पाचमा-मदिर-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका-जो -तीमजिला-बहुत उंचा बनाहुवा-तीनोही-मजिलोंमे-चौमुखजीकी मूर्त्तियें-तख्तनशीन है,-इस मदिरकी बहारकी दिवारमे नकश लगाहुवा, पुतलीयोंका-आकार निहायत खूबसुरत बना है. चारोंतर्फ चार मडप, और उनपर-घुमट-उमदा बने है,-देलवाडेके जैनमदिरोंका बयान खतम हुवा —

१६ देलवाडेसें रवाना होकर पांच मीलके फासलेपर अचलगढ गाव जायाजाता है. रास्तेपर ओरियागांवमे एक मंदिर तीर्थंकर महावीर स्वामीका बनाहुवा है. इसकी जियारत करके अगाडी बढनेसें अचलगढकी तराइमे तालाव मदारगनके सामने–राजा–कुमारपालका तामीर करवायाहुवा शातिनाथजीका–मदिर मिलेगा. जिसमे गजथर लगाहुवा और–आलिशान शिखरबंद बडा सगीन है, इसकी जियारत करके आगे–कुछ–उपरको चढनेसें अचलगढके मंदिरोंकी जियारत होगी. अचलगढमे एक–मदिर तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका और उसमे सर्वधातमय बनीहुई (१४) मूर्त्तियें जायेनशीन है,–ऐसी–मूर्त्तिये हरजगह–न–देखोगे,–ये–मूर्त्तिये करीन सवत् (१५६५)के अर्सेकी बनीहुई लेखोसें सावीत है,–अचलगढका–कारखाना–मुनीम–गुमास्ते–नोकर–चाकर वगेरा सव इंतजाम अछा है,–अचलगढसें वापिस देलवाडे आना और देलवाडेसे आवुरोड–टेशन आना, आवुपहाडपर छोटेवडे वारा गाव वसते है. आवहवा यहांकी उमदा और तरह तरहके द्रख्त यहापर खडे है.–आम–जामुन–और–करोंदा–ये–कसरतसे पेदा होते है, गुलाव, चमेली, चपा, मोघरा, जाई, जुई, गुलदाउदी वगेरा फूल, और जडी–बुटीयोंमे–ब्राह्मी–अकरकरा, सालम, नकछीकनी, चोनचीनी, सहदेवी, मयूरशिखा, काकजघा, केतकी और विष्णुक्राता वगेरा खडी है,–आवुपहाडपर बाइस रजवाडोंकी कोठीयें, अग्रेजोंकी छावनी–बाजार–बगले–मकानात–टेलिग्राफ–पोस्ट–ऑफिस मदर्से अग्रेजी और–हिंदी पढानेके बनेहुवे है,–आवुपहाडकी जियारतकेलिये जैनयात्री अकसर थोडेबहुत हमेशा आते रहते है, मगर चेत, वैशाख, ज्येष्ठ और–आषाढमे ज्यादा आते है,–हवाकेलियेभी–कई लोग जाते है —

[आरासण–तीर्थ –]

१७ आरासण तीर्थका–दुसरा नाम कुंभारियाजी है,–और–आवुरोडसे खुश्की–रास्ते जायाजाता है,–इसमे–तीर्थंकर नेमनाथजीका

मदिर,-धर्मसिंहका मदिर, लाधुवसहि, देशलवसहि, शमलीविहार, -स्वर्गारोह, विश-विहरमान, चौदहसौ-बावन-गणधरोके चरण, वगेरा-काबिलेदीद है,-

[स्तभन-पार्श्वनाथजीका-तीर्थ -]

१८ शहर खभातमे स्तभनपार्श्वनाथजीका निहायत पुराना जैन तीर्थ है,-खभातका दुसरा नाम-त्रबावतीनगरीभी-बोला जाता है, राजा-सिद्धराज जयसिंह और राजा कुमारपालके जमानेमे-खभात शहर बडा तरकीपर था सिद्धराज जयसिंहके वख्त-खभातमे-जैन मत्री अमलदारी करता था और-वो-जैनमजहबपर कामील एतकात रखता था, उस वख्त-कई-कोटिध्वज-जैन व्यापारी यहा बसते थे, और और समुदरकी तिजारतसे दौलत झलाझल थी,-कई-जैन-श्वेताबर मदिर यहापर मौजुद है इनमे स्तभन-पार्श्वनाथजीका-मदिर निहायत पुराना है,-दुसरा मदिर चिंतामणि-पार्श्वनाथजीका-इसकी मरम्मत-जैनाचार्य-श्रीहीरविजयसूरिजीकी धर्मतालीवसें हुई थी -उसके तलघरमे-एक-बडी-जिनमूर्त्ति-जायेनशीन है,—

[कावी-गधार जैनतीर्थ -]

१९ करीब शहर खभातके-कावी-गधार पुराने जैनतीर्थ है,-पेस्तर कावी-गधारगांव बडे थे, इसवख्त आबादीमे-कम-रहगये, यहापर बावन जिनालयके जैनश्वेताबर मदिर-तीर्थका कारखाना-और धर्मशाला वगेरा सब इतजाम अछा है,—

[शखेश्वर-तारगा-और-पचासरा तीर्थ -]

२० मुल्क गुजरातमे-राधनपुरसें करीब (१८) कोशके फासलेपर शखेश्वर-एक-नामी-जैनतीर्थ है, यहापर धर्मशाला, तीर्थका-कारखाना और मुनीम-गुमास्ते-नोकरचाकर हमेशाकलिये तैनात है,-शहर मेहसानेसें थोडी दूरपर तारगातीर्थ एक पहाडपर है.-जहा राजा -कुमारपालने-तीर्थंकर अजितनाथ-महाराजका-बडा आलिशान शिखरबद मदिर बनवाया-जो-अबभी कायम है -और-उसमे तीर्थंकर

अजितनाथ महाराजकी मूर्त्ति-चतौर मूलनायकके तख्तनशीन है,-शहर-पाटन-जहा-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आवादी कसरतसे है और बडेनडे जैनश्वेतांबर मंदिर यहापर बनेहुवे है,-पचासरा पार्श्वनाथ-जीका-यहा जैनतीर्थ है,-और-कइ प्राचीन शिलालेख यहां मिलते है,-मुल्क गुजरातकी सरहदपर आया हुवा पालनपुर एक आवाद शहर है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आवादी कसरतसे-और कइ जैनश्वे-तांबर मंदिर यहांपर बने हुवे है,—

२१ मुल्क मारवाडमे करीब-शिरोहीके-एक छोटेसें पहाडकी तराइमे बभणवाड-एक स्थापना तीर्थ है.-यहा एक बडा आलिशान बावन जिनालयका मंदीर मानींद देवविमानके बना हुवा है, और तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति करीब (१) हाथ बडी इसमे तख्त-नशीन है. धर्मशाला छोटी वडी तीन और अतराफ इनके कोट खिचा हुवा है,—

[मुल्क मारवाडकी-पचतीर्थी]

२२ मुल्क मारवाडमे-रानी-टेशनसे (२०) कोशके घेरेमे-पांच -मशहूर तीर्थ है, वरकाणा, नाडोल, नाडलाइ, घाणेराय और रानक पुर-ये-पचतीर्थीके नाम है,-रानी टेशन उतरकर यात्री अवल वर-काणा-तीर्थको जाय, वरकाणा तीर्थमे-दो-धर्मशाला-और तीर्थका कारखाना बना हुवा है. मंदिर-वरकाणेका बहुत बडा आलिशान-बा-वन-जिनालयका निहायत-उमदा बना हुवा-घेराव इसका (४००) गजसे-कम-न-होगा. दरवजेके बहार-दोनोंतर्फ-दो-बडे हाथी-प-थ्थरके बने हुवे खडे है, दरवजेके भीतर चौकमे एक बडा हाथी पथ्थ-रका बना हुवा ठीक मूलनायकजीके सामने खडा है,-वरकाणाजीके मंदिरमे-मूलनायक तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति करीब एक हाथ बडी सयफणके निहायत खूबसुरत तख्तनशीन है. यहांपर बगीचा एक बडा गुलजार जिसमे गुलाब-चपा-जाइ-जुही-चमेली-डमरा-मरूआ-वगेरा फुल पैदा होते है. और-हमेशाकी पूजनमे चढाये

जाते है-तीर्थ वरकाणेकी-जियारत करके यात्री नाडोल तीर्थको जाय,—

२३ वरकाणेसे करीब अढाई कोशके फासलेपर-नाडोलतीर्थ-पचतीर्थके दुसरेनंबर वाके है-नाडोलमे जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी-और-तीर्थंकर-पद्मप्रभुका मंदिर शिखरबंद निहायत पुराना और मूर्त्ति इसमे राजा-सम्प्रतिकी बनाई हुई तख्तनशीन है धर्मशाला वगेरा सब इंतजाम लाइक तारीफके है,-बगिचा एक-जिसमे अनार -जामफल और केले वगेरा पैदा होते है. फुलोंमे-गुलाब, चमेली, मोघराके फूल पैदा होते है-और हमेशा जिनप्रतिमाकी पूजनमे चढाये जाते है,—

२४ तीर्थ नाडलाईमे-जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर अंदाज (६०) और-जैनश्वेतांबर मंदिर (११) इनमे (२) मंदिर गांवके बहार और (९) मंदिर भीतर है,-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका-मंदिर एक पहाडपर बनाहुवा-जिसकों शत्रुंजयजीकी टोंक बोलते है,-दुसरे पहाडपर-एक-मंदिर जिसकों गिरनारजीकी टोंक बोलते है,-यात्री-इनकी जियारत करे, एक-मंदिर-जो-दरवजेके पास है, मूलनायक तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी मूर्त्ति-निहायत खूबसुरत-इसमे तख्तनशीन है. यहांके बाशिंदोंमे यह-बात मशहूर है,-मजकुर मंदिर जैनश्वेतांबराचार्य-यशोभद्रसूरि-अपने मंत्रबलके जरीये दुसरी जगहसे उडाकर यहा लाये थे, कहते है, जैनश्वेतांबराचार्य-यशोभद्रसूरिका -और-एक-शैवमतके आचार्यका-यहा-मंत्रविद्याके बारेमें यहां वाद हुवा था,—

२५ पचतीर्थीमें-चौथे दर्जेपर-घाणेराय तीर्थ-एक गुलजार-शहर है-यहांपर जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (४००) और (१०) जैनश्वेतांबर मंदिर बनेहुवे जियारत करके दिल खुश होगा. तीर्थका कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर सब इंतजाम अछा है,-बगिचा एक-करीब-मंदिरजीके बनाहुवा-जिसमे गुलाब, चंपा,

मोघरा वगेराके फुल पैदा होते है, और हमेशाकी पूजनसें चढाये जाते है,-फलोंमे-अनार, जामफल वगेरा पैदा होते है,-घाणेरायका बजार अछा. मुल्क मेवाडसें-सोदागिर लोग वास्तेतिजारतकों-यहा-आते जाते है-हरकिसकी चिज यहा मिल-सकती है,-घाणेराय तीर्थसें करीन-देढ-कोसके फासलेपर एक-मंदिर-जो-मुछाला-महा-वीरके नामसे मशहूर है,-जगलमे-बतौर देवविमानके खडा है,-और इसमें तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति-बतौर मूलनायकके तख्तन-शीन है.-रगमडप उमदा बनाहुवा-और सबकाम लाईक तारीफके देखोगे. धर्मशाला-एक-और-नजीकमे पानीका-हौज-बनाहुवा है, -अतराफ मदिरके झाडी-बुटख-और द्रख्त-खडे है,-खुशनसीबोंने क्या! क्या! उमदा धर्मके काम-कर दिखलाये है जिसकी तारीफ-बेमिशाल है.-खम-और वकीललोग क्या करमकेगे? दुनबीकारो-बारेमे-विवाह-सादीमे चाहे-कोई-दौलत खर्च करदे, मगर धर्ममें-खर्च करना-बडे बहादुरशरशोंका काम है,—

२६ पचतीर्थीके पांचमे नंनरपर-रानकपुरतीर्थ-सादरीसे तीन कोशके फासलेपर पहाडोंके घेरेमे-झाडी-झुंडकों पारकरके जाना होगा, जब करीन रानकपुरके पहुचोगे-एक-आलिशान-जैनश्वेतावर मंदिर-मानींदे! स्वर्गविमानके दिखाई देगा, धरणाशाह-शेठने-नना-नवे-लाख-रुपये सर्फ करके इसको तामीर करवाया? और-इसका दुसरा नाम-त्रैलोक्य-दीपकमंदिरभी-कहते है.-तारीफ करो धरणा-शाह-शेठकी-जिन्होने ऐसे अजायब काम करके धर्मकों तरक्की दिई.-पेस्तर यहा-रानकपुर नामका-शहर-आबाद था, कहते है सवत् (१५००) सालमे यहापर जैनश्वेतावर श्रावकोंके-घर-अढाज (२०००) थे, जब-रानकपुरकी आबादी कम हुई-कितनेक श्रावक-सादरी गावमे आगये.-कई-पाली-मेवाड और मालवेतर्फ चलेगये, श्रावकलोगही-क्या! दिगरलोगभी-रानकपुरसे रवाना होकर दुसरी जगह-जा-बसे, गरज! इसवख्त-रानकपुरमे-एकभी-जैनश्वेतांबर

श्रावकोका-घर-नही रहा. सिर्फ! रानकपुरकी-जगह,-मंदिर, धर्मशाला, बाग, और पुराने कोटके निशानात बाकी रहगये, राणाजीके बनायेहुवे मंदिरके-पास-जाकर देखो-तो-पुराने कोटकी दिवार बडी दूरतक लगी चलीगई है और उसीके पाससे भानपुर होकर मेवाड जानेका रास्ता है, मंदिरके पास-बडी आलिशान धर्मशाला बनीहुई-यात्री-इसमे जाकर कयाम करे और तीर्थकी जियारत करे, बहारसें मंदिरको देखोगे मामुली-काम-दिखाई देगा. मगर जब पश्चिमकी-सीढी-तयकरके मंदिरके रंगमंडपमे पहुचोगे-मालुम होगा, बडी-कारिगिरिका नमुना-दिखाई देगा. खंभोंमे-मेहरानोमे और छतमे उमदा शिल्पकारी नजर आयगी,-दरअसल! (२२) फुट-उची-वेदिकापर बनाहुवा-एक-देवलोकके विमानका-नकशा है, (८४) देरीया, (२४) मंडप, (१४४४) थंमे, तीनमंजिला बनाहुवा मंदिर देखकर बडेबडे कारिगिरलोग-ताज्जुब-करते है,-बीचमें चौमुखाजीका-मंदिर, चारोंतर्फ-चार-दरवजे, और उनपर मंडप, जाली, झरोखे, ऐसे उमदा बनाये है,-जिनको देखकर दिलमे ताज्जुब होगा, मंदिरका घेराव (३००) फुट-समचौरस-और मंदिरकी दिवारपर-नरथर-उमदा पुतलीयें-दिग्पाल-वगेरा इसकदर खूबसुरत-काम-बना है,-जो-हिंदमें-तो-क्या! मगर किसी जगह-ऐसी-दुसरी इमारत-न-देखोग, (२४) तलघर और उपर चौक-देखनेवालेही-इसकी खूबी बयान करसकते है,-आबुके जैनमंदिरोकी-कोरनी-और-रानकपुरके मंदिरकी बाधनी-दुसरी जगह-नही-मिलेगी, दशहजार-मनुष्य-मंदिरमे-आजाय-तब-तो-कुछ मालुम पडे-यात्री-जियारत-कों-आये है,-दोसो-चारसो-यात्री-आजाय-तबतक-तो-मालुम नही होता-यात्री आये है,—

२७ मंदिरमे-चौमुखाजीकी-चार मूर्त्तियें-चारोंतर्फ तख्तनशीन है,-पश्चिमतर्फकी मूर्त्तिपर संवत् (१४९८) लिखा है,-और-इसके सामने दरवजेकी दाहनीतर्फ-जो-दिवारमे लगाहुवा शिलालेख है,-

उसमे सनत् (१४९६) श्रीमेदपाट-राजाधिराज-श्रीवप्प, और-श्री-गुहिल-वगेरा-राजाओंकी (४०) पीढियोंके नाम. और फिर आगे (३९)मी-पंक्तिमे लिखा है,-परमआर्हत-धरणाशाह-पोरवाडने-यह -मंदिर तामीर करवाया, (४१) मी-पक्तिमे लिखा है,-राणकपुर नगरे राणा-श्रीकुंभकर्ण-नरेंद्रेण-सुनाम्ना निवेशितः-फिर आगे (४२) मी-पक्तिमे बयान है,-त्रैलोक्यदीपकाभिधान-श्रीचतुर्मुखयु-गादीश्वरविहारः कारितः-इसके आगे अखीरकी पक्तियोंमे-तपगछके आचार्यमहाराजने प्रतिष्ठा किई वगेरा हकीकत दर्ज है.—एक जिना-लयमे तीर्थ-अष्टापद और नदीश्वर द्वीपका आकार बनाहुवा है-मगर लेख वगेरा नही है,-मदिरके-इर्दगिर्द बाग-बगिचे-बनेहुवे-उनमे आम, अनार, जामफल वगेरा पैदा होते है, फुलोंमे गुलाब-मोघरा वगेराके फूल उतरते है, और हमेशाकी जिनपूजामे-चढाये जाते है,-धर्मशालामे आयेगये यात्री-उतरते है,-और-शेठ-आनंदजी कल्या-नजीकी पीढीकी तर्फसें-मुनीम-गुमास्ते-वगेरा यहा रहा करते है, चौ-की पहाराका इतजाम अछा, हरसाल चैत नदी दशमीकों यहापर यात्री-योंका मेला भरता है उस राज-तीर्थंकर देवकी सवारी मदिरसे निक-लकर-बगिचेमे फिरकर शामकों वापिस मदिरमे लोट आती है,-

२८ रानकपुर तीर्थकी जियारत करके-सादरी मुकाम-आवे, सादरी एक-छोटामा शहर है,-और-जैनश्वेताबर श्रावकोंकी-आ-बादी-यहा-कसरतसे है.-एक-बडा-आलिशान-जैन-श्वेताबर-म-दिर यहापर बना हुवा-जिसमे तीर्थंकर चिंतामणि-पार्श्वनाथजीकी-मूर्त्ति-करीब देढ हाथ बडी तख्तनशीन है, इसपर-लेख-नही, मगर राजा-सम्प्रतिकी तामीर करवाइ हुइ-मूर्त्तियोंके निशानात इसपर पाये जाते है,-इसलिये मजकुर मूर्त्ति कहमकतेहो-राजा-सम्प्रतिकी तामीर करवाइ हुइ है,-मदिरकी परकम्मामे दाहनीतर्फ-एक-देवालयमें एक मूर्त्ति-सवत् (१६४४) और-तपगछ-जैनाचार्य श्रीहीरविजयसूरि-वगेराके नाम लिखे है.-मदिरका रगमडप उमदा-और पुख्ता बना

हुवा-सबकाम-सगीन है,-यात्री-इसकी जियारत करे-और फिर अपने वतनको-जाय, पचतीर्थीके-इर्दगिर्द देशुरी, मुडारा, सेवाडी-इसमें-तीर्थंकर-महावीर स्वामीका-मदिर बना हुवा जिसमें संवत् (११७२) तकके-शिलालेख-मिलते है,-नाडलाइके करीब-एक-राता-महावीरके नामसे मशहूर मदिर है, और उसमें आजसें हजार वर्ष-पेस्तरके शिलालेख मिलते है,-टेशन फालनेसें करीब तीन-कोशके फासले साडेराय-गाव-जहा पुराने जैनश्वेतांबर मदिर और उनमें संवत् (१२६६) तकके शिलालेख मिलसकते है जिसके पढनेसे मालुम होता है-पेस्तर बडे बडे दौलतमद श्रावक यहां आबाद थे,-मुल्क गुजरातकी सरहदसें आगे-मुल्क मारवाडमें आजसे तीनसो वर्स पेस्तरकी तवारिख देखे-तो-मालुम होता है,-करीब (३०००) हजार-जैनश्वेतांबर मदिर मौजूद थे,-टेशन फालना और-रानीके इर्दगिर्द-बाली,-खुडाला,-कोट,-लाठारा,-रानीगाव,-खीमेल,-विजवा,-वगेरा गांवोमें-जैनश्वेतांबर मदिर-और-श्रावकोंकी-आबादी कसरतसें बनी हुइ है,-आज कल-फालनाटेशन और रानीटेशनसें-यात्रीयोंकों सवारीकेलिये मोटर मिलती है,-यात्री-शौखसें जाय और-तीर्थोंकी जियारत करे,—

२९ मुल्क मारवाडमें-जोधपुरके आगे-ओशियानगरी पुराना जैन तीर्थ है,-जैनाचार्य-रत्नप्रभसूरि-पेस्तर यहा तशरीफ लाये थे और तरकी धर्मकी किइ थी,-ओशियानगरी-पेस्तर बडी थी,-इसका दुसरा नाम-उपकेशनगरभी-शास्त्रोंमे लिखा है,-महाराज-रत्नप्रभ सूरिजीकी धर्मतालीमसें-ओशवालोकी उत्पत्ति इसी नगरीसे हुइ,-मुल्क मारवाडमें-जेशलमेर-एक पुराना जैनतीर्थ है,-और यहा-एक पुराना-जैनपुस्तकालयभी मौजूद है, महाराज गायकवाड सरकारकी तर्फसें-जेशलमेरके हस्तलिखित जैन पुस्तकालयका सूचिपत्र छपा है,-वो-देखनेसें मालुम होगा, और वो-वडोदेमें मिलता है,-मुल्क-मेवाडमें शहर उदयपुरसें (२०) कोशके फासलेपर-केशरीयाजीके ना-

मसें एक-जैनतीर्थ-धुलेवा गांवमे आबाद है, मूर्त्तिपर-केशर-ज्यादा चढाया जानेकी वजहसे इसका-नाम-केशरीयाजी मशहुर हुवा,-मुल्क मेवाडमें चितोडगढ-पेस्तर बडा नामी-ग्रामी-शहर था, और अनभी है, आबादीमे बेंशक! कम-होगया, मगर-कइ-पुराने जैनमंदिर और शिलालेख यहा पर मिलते है,-मुल्क मारवाडमे शहर पाली-यहां पर जैनोंकी आबादी अछी, और पुराने जैनमदिर खडे है, जिनमे-नवल-खाजीका-मदिर बावनजिनालयका बना हुवा निहायत सगीन और पुख्ता देखोगे, इसमे अनतनाथ-तीर्थंकर महाराजकी मूत्तिके नीचे -सवत् (१२०१)का-लेख है,-मुल्क मारवाडमे शहर विकानेर-और शहर-मेरटा-येभी-पुराने जैनतीर्थ शुमार किये जाते है,-जैनोंकी-आबादी-इनमे अछी-और-बडे बडे-जैन श्वेतांबर मंदिर-बेंश किंमती बने हुवे देखे जाते है,—

[शहर-जालोर,-]

३० मुल्क मारवाडमे जालोर शहर एक पुरानी बस्ति है,-जो-जोधपुरसें (८०) मील दूर बसाहुवा, इसका दुसरा नाम-जाबालीपुर-भी बोलते है. यहा-जैनोंकी आबादी बेस्तर कसरतसें थी. और अनभी है. मगर उतनी नही, यहापर कई-उमदा-जैनमदिर-बनहुवे है. सवत् (१२२१)मे-यहाके काचनगिरि किलेमे-जैनाचार्य-हेमचद्रसूरिजी-की-धर्मतालीमसे-राजा-कुमारपालने-कुमारविहार-मदिर तामीर करवाया, और उसमे तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजकी मूत्ति-तख्तन-शीन किई.-दुसरेभी-कई-जैनमदिर किलेपर बनेहुवे है, दरवजे शहर जालोरके-चार-सूरजपोल, धूपोल, चादपोल और लोहपोल,-बाजार-उमदा-और हरकिसमकी चिजें यहापर मिलती है,—

[हस्तिनापुर-और-वीतभयपत्तन-तीर्थ -]

३१ देहलीसें आगे-मेरट-टेशनसें (१८) कोशके फासले खुश्की -रास्ते-हस्तिनापुर-निहायत पुराना-जैनतीर्थ है,-जहां-तीर्थंकर रि-षभदेव महाराजकों श्रेयासकुमारने सेलडीके-एक-घडे-रससे वार्षिक

तपका पारना करवाया था-उनके चरणोंकी-छत्री, एक-जियारत गाह है,-मुल्क पजानमे-भैरा-गाव-जिसको जैनशास्त्र-आवश्यकसूत्र वृत्तिमे-वीत-भय-पत्तन-लिखा, जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके यहापर-राजा-उदयन-अमलदारी करता था. जिसको वीतभयपत्तन-उदयन-कहागया.-और उसी अर्सेम-मुल्कपूरबकी-कौशाबी नगरीम जो-उदयन-राजा-अमलदारी करता था-वो-वत्स-उदयन कहाजाता था -श्रेणिक राजाके-चेटेका-वेटा-उदायी-था-वो-अलग था, मुल्क काश्मिरमे-पेस्तर जैनतीर्थ था-अब नही रहा —

[हिमालयपहाड और नयपाल -]

२२ पहाड हिमालयमे-जो-छाया-पार्श्वनाथ-और फुलिंग-पार्श्वनाथजीका जैनतीर्थ था -जमाने हालमे-वेमी-जेरे जमीन होगये. मुल्क-नयपालमे पेस्तर जैनतीर्थ-था-अब नही रहा जैनाचार्य-भद्रबाहु-स्वामीने नयपालम-चौमासा किया-जैनशास्त्रोंमे उसका-बयान है,-मुल्क तिब्बतमे-पेस्तर-पृष्टचपा-नामकी नगरी थी, पहाड हिमालयके पिछाडीपासे होनेकी वजह-इसका नाम-पृष्टचपा-कहागया, जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके-पृष्ठचपा नगरीमें-शाल-महाशाल नामके राजे थे-और-वे-दोनों-हकीकतमे सगे भाई थे, उसवख्त दार्जिलिंगके रास्ते होकर जैनमुनि-मुल्क तिब्बततर्फभी-पैदल सफर करते थे,-हिमालयकी उत्तरतर्फ-जानेकेलिये उसवख्त तीन रास्ते मोजूद थ. काश्मिर होकर, दार्जिलिंग होकर-और-आसामके रास्ते -ब्रह्म-पुत्रा-नदी उतरकर जायाजाता था -अयोध्यानगरीसे उत्तर पश्चिमकी रूखपर-गोंडा-जकशनसे आगे-बलरामपुर टेशनसे सात कोश-खुश्की-रास्ते-हिमालयकी-तराइमे-सावथ्थी-नगरी पुराना जैनतीर्थ है,-जहापर तीर्थंकर सभवनाथ महाराजका-जन्महुवा था-आजकल-उसको-सहेट-महटका किला बोलते है,-

२३ सुरसेन-देशकी राजधानी-मथुरा-नगरी निहायत पुरानी है,-पेस्तर यहा-जैनमदिर और जैनोंकी आबादी ज्यादा थी जमाने

हालमे-एक-जैनश्वेतांबर मंदिर-महोले-घीया-मंडीमे मौजूद है,-जैनश्वेतांबर श्रावकोंका एकभी-घर-आजकल नही रहा, मंदिरकी सारसंभाल-लश्कर ग्वालियरके श्रावकलोग रखते है,-सरयूनदीके कनारे अयोध्या-एक-निहायत पुरानी नगरी है,-भारतवर्षमें-सबसे पुरानी-नगरी तलाश किइजाय-तो-जमाने तीर्थंकर रिषभदेवके यही -पुरानी शुमार किइजाती है,-उसवख्त-इसका नाम-विनिता नगरी बोलते थे बादमे-कोशलापुरीभी-नाम-जारी रहा-जमाने रामचंद-जीके इसका नाम-अयोध्या-कहलाया. बडेबडे बहादूर-योद्धेभी-इसके वाशिंदोंसे-नही-लडसकते थे,-इसलिये-इसका-नाम अयोध्या शुमार कियागया,-फैजाबाद जक्शनके आगे मोहावल टेशनके-करीब-रत्नपुरी-तीर्थंकर धर्मनाथ-महाराजकी-जन्मभूमि-पेस्तर बडी-रवन्नकदार थी, जमाने हालमे बराये नाम रहगई, कंपिलपुर-तीर्थंकर विमलनाथजीकी जन्मभूमि-पेस्तर बडा था आजकल-कायमगंज टेशनसे आगे तीन कोशके फासलेपर-एक-छोटासा-गाव-रहगया, सिकोहाबाद टेशनसे सात कोशके फासले-शौरीपुर-पुराना जैनतीर्थ है,-कानपुरसे-इलाहाबाद जाते-भरवारी-टेशनसें (१०) कोश-खुश्की-रास्ते-कोशांबी नगरी तीर्थंकर पद्मप्रभुकी जन्मभूमि-पेस्तर बडी थी, आजकल छोटी रहगई,-पपोसा गावके करीब-कोसमपा-लीके-नामसे-मशहूर है,—

[इलाहाबाद-ऊर्फे-प्रयाग]

२४ गंगा-यमुनाके संगमपर-इलाहाबाद-एक-पुराना शहर और रेलका-जंक्शन है,-इसका दुसरा नाम-प्रयागभी कहते है,-इलाहाबादसें (५६४) मील पूरबको कलकत्ता, (३९०) मील-पश्चिमोत्तर देहली, और (८४४) मील-पश्चिम दखनको-शहर बंबई है,-सन (४१४) इस्वीमे-बौध यात्री फाहियानने-इस जिलेका हाल लिखा-तो-उसमे बतलाया है,-कोशल देशका-यह-एक-हिस्सा था, पेस्तर यहा जैनश्वेतांबर तीर्थ-था, अब नही रहा,—

[शहर बनारस-चद्रावती और सिंहपुरी]

३५ शहर बनारसको जैनलोग अपना तीर्थभी मानते है वैदिक मजहबवालेभी-इसको-अपना तीर्थ मानते है,-देववाणारसी, राज धानी वाणारसी, मदनवाणारसी, और विजयवाणारसी-ये-सब इसीके नाम है-बनारस-इस वख्त-तरकीपर है,-बडे बडे दौलतमद शेठ-साहूकार यहांपर बसते है,-बाजार बडा गुलजार जिस चीजकी दरकार हो-यहा मिलसकती है,-और सस्कृत विद्याकी तरक्कीकेलिये नामी ग्रामी शहर है,-इस वख्त-शहर-बनारसमें छोटे बडे दश जै नश्वेतांबर मदिर और करीन (४०) घर-जैनश्वेताबर श्रावकोंके यहा पर आबाद है,-भेलुपुर और भदैनीजी-ये-दो-जैनतीर्थ-बनारस-केही-हिस्से शुमार किये जाते है,-बनारससे तीन कोशके फासले-पर सिंहपुरी-जो-तीर्थंकर श्रेयासनाथजीकी जन्मभूमि-और सिंह-पुरीसे आगे (४) कोशके फासले-चद्रावती नगरी-जो-तीर्थंकर च-द्राप्रभुकी जन्मभूमि-पुराने-जैनतीर्थ है,—

३६ गगा कनारे-पटना-एक नायान शहर है, इसका दुसरा नाम कुसुमपुरभी-शास्त्रोंमे लिखा, तिजारतके लिये पटना-एक-नामी शहर है, बाजारमे सोना-चादी-जवाहिरात, शाल-दुशाले-मेवा-मिठाई वगेरा जिस चीजकी दरकार हो-तयार मिलती है,-पटनेमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर-पाच-सात और महोले वाडेकी गलीमें-दो-जैनश्वेताबर मदिर वने हुवे है, पटनेसे पश्चिमकों महोले तुलसीमडीमें-स्थूलभद्रमुनिजीके चरनोंकी छत्री, और सुदर्शन-शे ठका-शूली-सिंहासन बननेका स्थान काबिल देखनेके है, इस जग-हको कमलद्रहभी बोलते है,-पेस्तर यहा कमल बहोत पैदा होतेथे. गया-शहरसें खुश्की-रास्ते करीन (१६) कोशके फासलेपर भदील-पुर-तीर्थंकर शीतलनाथ महाराजकी जन्मभूमि पुराना जैनतीर्थ था मगर अब विरान है,—

[मुल्क पूरवकी-पचतीर्थी,-]

३७ विहार, पावापुरी, राजगृही, गुणशिल-वन-उद्यान,-और कुंडलपुर, ये-पचतीर्थीके नाम है,-जिले पटनेमे विहार एक-रैलका टेशन है,-इसका दुसरा नाम सुबेविहारभी बोलते है, जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके-इसका नाम-विशाला नगरी था. और-उसवख्त-चेडा-राजा यहापर अमलदारी करता था,-विहारमे पेस्तर जैनश्वेताबर श्रावकोंकी आबादी बहुत थी, मगर इसवख्त-सिर्फ! पाच-छह घर-रहगये,-जैनश्वेताबर मंदिर-और धर्मशाला वगेरा सब इंतजाम अच्छा है, महोले मेथीयानमे-जाकर-यात्री-जैनधर्मशालामे कयाम-करे-और तीर्थकी जियारत करे, विहारसे-दो-कोस -दखनकी-तर्फ-जो-तुंगीनामका-छोटासा-गाव यही-तुगीयानगरी शुमार किइजाती है. जैनागम-भगवतीसूत्रमे-तुगीयानगरीके श्रावकोंको अभगद्वार-लिखे-इसका सबब यही था. अन्नदान देनेमे -ये मशहूर थे.--

३८ विहारसें करीब तीन कोशके फासलेपर पावापुरी-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी निर्वाणभूमि-निहायत पुरानी नगरी है. हरसाल दीवालीके रौज-यहा-निर्वाण-महोच्छव होता है -और उसरौज बडी तयारीसे जलसा कियाजाता है.-क्षत्रीयकुंड-गावके राजा-नंदीवर्द्धन -जो-तीर्थंकर महावीर स्वामीका-दुनियादारी हालतमे भाई था-यहा--मंदिर तामीर करवाया-और-उनमे-तीर्थंकर महावीर स्वामीके-कदम-तख्तनशीन किये थे. तीर्थोमे-यह-एक-कदीमी रवाज चला आया-जो-एक मंदिर पुराना होकर गिरनेलगा किसी खुशनसीबने उसकी मरम्मत करवा दिइ,-वही-मंदिर पावापुरीके बहार कमलसरोवरमे मौजूद है,-दो-कोसके फासलेसे-मजकुर मंदिर नजर आता है. और इसका दुसरा नाम-जलमंदिरभी बोलते है,-पावापुरीमे पेस्तर बहुत आबादी थी. जमाने हालमे कम-होती-गई और बरायेनाम एक छोटासा कस्बा रहगया धर्मशाला यहापर चार बनीहुई-

जिनमे-बीच-बडी धर्मशालाके एक बडा-आलिशान जैनश्वेतांबर मदिर बनाहुवा, और उसमे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्ति तख्त-नशीन है. दरअसल! यहमूर्ति-पुरानी है और उसपर लिखा है-संवत् (४४४)मे यह प्रतिष्ठित किइगई प्रतिष्ठा करानेवाले आचार्यका नाम-घिस-जानेकी-वजहसें पढनेमे नही आता, मदिरके बहार-बगिचा-एक-जिसमे गुलाब, चमेली, मोघरा, गुलदाउदी, डमरा, मरुवा, और जाई-जुही-वगेराके फूल पैदा होते है-और-हमेशाकी पूजनमे चढाये जाते है —

२९ मुल्क मगधकी राजधानी राजगृही-एक-पुरानी-नगरी है, -पेस्तर बडी रवनकपर थी. अब-बरायेनाम रहगई तीर्थंकर महावीर स्वामीने यहा (१४) दफे बारीश गुजारी महाराज-प्रसेनजित्-इसी नगरीके-तख्तपर-अमलदारी करनेवाले हुवे-जो-राजा-श्रेणिकके वालिद थे, करीब अढाई हजार वर्स-पेस्तर-यहा झलाझल रौंशनी और दौलत थी. आज-न-वह-दौलत है-न-रवनक! असलमे! जवाल और कमाल सबकों लगाहुवा है, राजगृहीका एक-महोला-नालद नामका-जो-बडा मशहूर और माफक था, जिसमे जैनोंकी आबादी बहुत थी. बडेबडे दौलतमद लोग यहा आबाद थे, आज-वो-दिन है,-जो-राजगृहीमें जैनोकी आबादी बिल्कुल नही रही. जैनश्वेतांबर मदिर और-एक-बडी-आलिशान-जैनश्वेतांबर धर्मशाला -यहा-बनीहुई है, एक-बगिचा-बीच-इसी-धर्मशालाके बनाहुवा जिसमे-गुलाब, चमेली, बेला, गुलदाउदी, जुही, निवार वगेराके फूल पैदा होते है. और हमेशाकी पूजनमे चढाये जाते है राजगृहीके-पंच-पहाड जिनपर जैनश्वेतांबर मदिर बनेहुवे काबिल देखनेके है. राजगृहीसें थोडी दूर चलनेसें-विपुलगिरि-पहाडकी तराइमें गर्मपानीके भरेहुवे-पाच-कुंड-मिलते है आगे पहाडपर चढनेका रास्ता शुरू होगा -पाच कुंडोमे-पानी-गर्म-रहनेकी-वजह-इसतरह शुमार किइजाती है -जमीनके नीचे उष्ण-परमाणु ज्यादा होना, राजगृहीके

पच पहाडोंपर-संवत् (१५६५)के असेंमे-करीन (८१) जैनश्वेतानर-मंदिर मौजूद थे, आजभी-वैभारगिरिपर (७) जैनश्वेतानर मंदिर खडे है, उदयगिरिपर (२)-विपुलगिरिपर (६) सुवर्णगिरिपर (२) और-रत्नगिरिपरभी-(२) जैनश्वेतांनर मदिर खडे है.-कई-गिरेहुवे-पुराने मंदिरोंके निशानभी दिखाई देते है -जो-यात्री-डोलीमे सवार होकर पहाडपर जाना चाहे-डोलीभी-मिलती है. डोली उठानेवाले (४) आदमी आयगें.-सवेरके गयेहुवे-शामकों वापिस राजगृही-पहुचा देयगे.-पहाडपर चढने-उतरनेका-काम-मुसीनतका है,-जिनकों पहाडपर चढने-उतरनेका-महावरा-वनाहुवा हो-वे-लोगही-जासकते है,-ताकातवर-यात्री-पावपैदल जाय-तो-वहुत वहेत्तर है, -अगर कोई-कमजोर-या-जइफ यात्री-इतनी मेहनत-न-उठा-सके-तो-डोलीमें जानाभी कोई हर्जकी-वात-नही.—

४० गुणशिलवन उद्यान-जिसकों आजकल-गुणायाजीगाव बोलते है,-एक छोटासा कस्वा है. यहापर वीच तालावके एक वडा किमती मदिर वनाहुवा, और उसमे तीर्थंकर महावीर स्वामीकी-मूर्त्ति-एक-फुट-वडी निहायत खूनसुरत तख्तनशीन है-तालावके कनारेसे मदिरतक जानेकेलिये पूल-पक्का वधाहुवा है, यात्री-पूलपर होकर मदिरकों जाय. और तीर्थकी जियारत करे.-वारीशके दिनोंमे तालाव पानीसें भरजाता है, मगर-गर्मीयोंके दिनोंमे वेशक! सुक जाता है,-धर्मशाला एक-यहांपर-वनीहुई-यात्री इसमे दिल चाहे वहां कयाम करे, वगिचा-एक-धर्मशालामे वनाहुवा जिसमे गुलान, चमेली, वेला, गुलदाउदी. और-जुही-वगेराके फुल पैदा होते है,-और-हमेशांकी पूजनमें चढाये जाते है.—

४१ तीर्थ-कुंडलपुर जिसका दुसरा नाम-आजकल-वडगांव बोलते है,-पेस्तर इसका नाम-महाणकुंड-गाव था. जिसका वयान कल्पसूत्रमें दर्ज है,-जमाने हालमे यहा कोई जैनश्वेतानर श्रावक नही, करीव (५००) घरोंकी आवादीका-एक-कस्वा रहगया. एक जैनश्वे-

तानर मदिर-यहापर-बनाहुवा है, और उसमे मूलनायक तीर्थंकर-रिषभदेव-महाराजकी मूर्त्ति करीन (३) फुट-बडी-तख्तनशीन है -जो-सवत् (१५०४)की-तामीर किइहुई-शामरग निहायत खूबसुरत दर्शन करके दिल खुश होगा करीन मदिरके एकही-हातेमे-धर्मशाला बनीहुई है, यात्री इसमे कयाम करे, शिवाय-खानपानकी-मामुली-चीजोके-दुसरी-यहापर नही मिलसकती,-बगिचा एक-यहापर-मौजूद है, और उसमे-गुलाब, चमेली, बेला, कुद, जुही, वगेराके फूल पेदा होते है,-मुल्क पूर्वकी-पचतीर्थीका बयान-खतम-हुवा,—

[तवारिख-तीर्थ-काकदी और क्षत्रीयकुड –]

४२ लखीसराय-जक्शनसें-खुश्की-रास्ते करीन-छह-कोशके फासलेपर काकदी नगरी-तीर्थंकर सुविधिनाथ महाराजकी-जन्मभूमि -बराये नाम रहगई, और इसको जमाने हालमे-काकद गाव बोलते है,-यहापर-एक-जैनश्वेतानर-मदिर बनाहुवा-और-इसमे तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी-मूर्त्ति-तख्तनशीन है इसकी प्रतिष्ठा सवत् (१५०४)मे हुई थी तीर्थंकर सुविधिनाथ महाराजके कदमभी इसम जायेनशीन है,-धर्मशाला-एक-यहापर-बनीहुई है,-यात्री-इसमे कयाम करे,-और तीर्थकी जियारत करे,-धन्ना-काकदी-मुनि-इसी नगरीके थे. -काकदी नगरीसें-आगे-खुश्की-रास्ते-नवकोशके फासलेपर तीर्थंकर महावीर स्वामीकी-जन्मभूमि-क्षत्रियकुड-गाव-पुराना जैनतीर्थ है,-सिद्धार्थ-राजाके घर-त्रिशलारानीकी कुखसें चैतसुदी (१३)के रोज तीर्थंकर महावीर स्वामीका यहा जन्म हुवा. उन्होने अमलदारी इख्तियार नही किई और धर्मकी राहपर कदम रखा. पेस्तर दीक्षाके एक सालतक उन्होने यहा खैरात किई, और मृगशीरसुदी दसमी उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रके रोज दुनिया छोडकर ज्ञातवनखड-उद्यानमे दीक्षा इख्तियार किई, और पावापुरीमे मुक्ति पाई, क्षत्रियकुड गाव -पेस्तर बडा था. अब बरायेनाम रहगया. यहा एक जैनश्वेतानर

मंदिर और-बडी धर्मशाला वनीहुई है,-बडेबडे कमरे-दालान -और हवादार मकान बनेहुवे है.-क्षत्रियकुंड-गांव-आजकल-लछ-वाड गावके नामसें मशहूर है.-सबब इसके नजदीक-एक-पहाड-जिसका नाम-लछवाड है,-करीब देढ कोसके फासलेपर-वाके है,-क्षत्रीयकुंड-गावसें-रवाना होकर-यात्री-ज्ञातवनखंड-उद्यानके रास्ते पहाडपर जाय. और जियारत करे, तीर्थंकर महावीर स्वामीका-मंदिर पहाडपर वनाहुवा है, और उसमे-मूर्त्ति-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी -शामरंग-निहायत खूबसुरत तख्तनशीन है, अतराफ मंदिरके-कोट -खिचाहुवा, वहार बडी-बडी-शिला-चटाने-चिश्मे आब-और-तरह तरहके द्रख्त खडे है.-जियारत करके वापिस उसी रास्ते पहाड-सें उतरकर क्षत्रीयकुंड-गांव-आना.-शुभहके गयेहुवे-यात्री-शाम-कों-वखूबी वापिस-आसकते है.—

[तवारिख-तीर्थ-मिथिला -]

४३ विदेह-देशकी राजधानी-मिथिला-नगरी-पेस्तर बडी आ-बाद थी. उन्नीसमे तीर्थंकर-मल्लिनाथ-इसीमें-पैदाहुवे थे.-महाराज रामचंद्रजीकी-पटरानी-महासती-सीता-इसी मिथिलामें-जनक रा-जाके-घर-पैदा हुई-और यहा-इसका-स्वयंवर-मंडप रचागया था. -एकीसमे तीर्थंकर नमिनाथ-महाराज-इसी मिथिलामें पैदा हुवे थे. तीर्थंकर महावीर स्वामीने-यहापर (६) चौमासे किये. तीर्थंकर महावीर स्वामीके आठमे गणधर इसी मिथिलामें पैदा हुवे, मिथिलाके नामसें-दे-शका नाम-मैथिल-मशहूर हुवा, असलमें-विदेहदेश कहलाता था.-पा-नीकी वहुतायतसें-कुवे-वावडी.-तालाव,-हरजगह देखोगे,-पानीकी तरीसें मुल्क-हरा-भरा-वनारहता है,-बडेबडे दौलतमंद यहापर हो-चुके जिनके घर-हाथी-बधते थे,-संस्कृत विद्याकी यहा इतनी तर-क्की थी,-किसानलोगभी संस्कृत जबानमें वातचित करते थे.-मोका-मा जंक्शनसें-मोकामाघाट, सेमरियाघाट, समस्तीपुर,-और-दर-भंगा, होतेहुवे-सीतामढी टेशन जायाजाता है. और-इसीकों-मिथि-

लानगरी कहते है,-सीतामढी-इसनरत्त-जनकपुररोडसे (१६) मील-के फासेले करीब दशहजार मनुष्योंकी-आबादीका एक-छोटासा शहर है,-आजकल-यहा-न-जैनश्वेतावरमदिर है -और-न-जैनश्वे-तावर श्रावकोंकी आबादी, सिर्फ! जैनतीर्थकी यादी करके क्षेत्रस्प-र्शना-बाकी है. बाजार अछा-और हरकिसकी-चीजें-यहां मिल-सकती हैं, स्कुल-अस्पताल-कचहरी वगेरा मकानात यहा बनेहुवे है. चावल-और-नयपालकी पैदावारीकी-चीजे यहा बिकती है,-महा-राज रामचद्रजी और लक्ष्मणजीका-मदिर और सीताकुड-वगेरा यहा -बनेहुवे है,-और-वैदिक मजहबवाले-अपना-तीर्थ-मानते है —

[तवारिख-तीर्थ-चपापुरी -]

४४ भागलपुर टेशनसे-खुश्की-रास्ते-करीब (४) कोशके फास-लेपर चपापुरी-तीर्थंकर-वासुपूज्य-महाराजकी जन्मभूमि एक-इति-हासिक नगरी है. बेस्तर बडी गुलजार थी जमाने हालमे-बरायेनाम रहगई, और आजकल इसकों चपानाला कहते हैं,-श्रीपालजी जि-न्होंने-नवपदजीकी इबादत किई थी,-इसी-चपानगरीके राजा थे,-तीर्थंकर महावीर स्वामीने यहा तीन दफे बारीश गुजारी -कामदेव श्रावक जिसका बयान-सूत्र उपाशकदशागम दर्जे है,-इसी चपानगरी-का-बाशिदा था, सुभद्रा-सती-इसी चपाकी रहनेवाली थी, जैना-चार्य-शय्यभवसूरिजीने-दशवैकालिकसूत्र-इसी चपामे बनाया,-या-त्री-भागलपुर टेशन उतरकर जब-चपानालेकों आयगें दूरसे जैनश्वे-तावर मदिर और धर्मशाला-नजर आयगी, धर्मशाला चार,-मगर-एकही हातेमे होनेकी वजहसें-एकही-मालुम देती है,-मदिर तीर्थं-कर वासुपूज्यस्वामीका-शिखरबद निहायत उमदा-और उसमे-तीर्थं-कर वासुपूज्य महाराजकी-करीब-डेढ हाथ बडी-मूर्ति राजा सम्प्रतिकी तामीर करवाई हुई तख्तनशीन है,-जिलेका सदर मुकाम-भागलपुर -एक अछा शहर है -बाजार-रवन्नकदार और हरकिस्मकी चीजें यहां मिलती है,-भागलपुर टेशनके सामने एक बडी जैनश्वेतावर

धर्मशाला और उसीमे एक-बडा-जैनश्वेतांबर मंदिर बनाहुवा है. बगिचा एक-जिसमे गुलाब, चमेली, मोतीया, केवडा, जुही, गुलदाउदी, रायचंपा, वगेराके फूल पैदा होते है, और हमेशाकी पूजनमे चढाये जाते है,-यात्री-भागलपुर टेशन उतरकर चंपापुरीकी जियारतकों जाय,—

[तवारिख-तीर्थ-समेतशिखर -]

४५ मुल्क बंगालमे-समेतशिखर पहाड जैनोका-प्राचीन तीर्थ है.-मोगल-सरायसे इसके-दो-रास्ते जाते है. एक रास्ता-रूपलेन-गया टेशन होकर-इसरी-टेशन जाना. इसरी टेशनपर जैनश्वेतांबर धर्मशाला बनीहुई है-यात्री वहासे (७) कोश-खुश्की रास्ते मधुबनकों जाय.-मोटार-और बेलगाडी वगेरा सवारी मिलती है,-दुसरा रास्ता मोगलसरायसें मधुपुर जंकशन उतरकर गिरीडी-टेशन जाना. टेशन-गिरीडीके सामने धर्मशाला एक-जैनश्वेतांबरोकी-और उसमें एक जैनश्वेतांबर मंदिर बनाहुवा है, गिरीडीसे मधुबन-करीब (९) कोशके फासलेपर खुश्की रास्ते-सडक-पक्की बनीहुई.-रास्तेमे चार कोशके फासलेपर-बराकड-नदी-जिसका नाम-शास्त्रोमे-रिजुवालुका-लिखा मिलेगी,—

[रिजुवालुका-नदी,-]

४६ रिजुवालुका नदीके कनारे-जिभिकगावके पास-श्यामाककुडुबीके खेतमे ध्यान करतेहुवे तीर्थंकर महावीर स्वामीको केवलज्ञान पैदा हुवा था, यहापर-एक-जैनश्वेतांबर मंदिर और धर्मशाला बनीहुई है, यात्री इसमें कयाम करे और तीर्थकी जियारत करे,-यहापर कुछ दुकाने और बस्ती बनीहुई है. और खानपानकी मामुली-चीजें मिलसकती है,-बराकडसें पाच कोशपर मधुबन-जो-पहाड-समेतशिखरजीकी तराइमें आबाद है मिलेगा, वहापर जैनश्वेतांबर-यात्रीयोंकों ठहरनेकेलिये धर्मशाला-बडीबडी आलिशान तीन बनीहुई है, -यात्री-जहां दिल चाहे कयाम करे. कोई मुमानीयत नही. जैनश्वे-

तांवर कोठी-मुनीम,-गुमास्ते, नोकर, चाकर, चपरासी, घंटा-घडि-याल, चौकी, पहेरेका उमदा-इतजाम है,—

[समेतशिखर पहाड-और-मधुवन,-]

४७ समेतशिखरपहाडकी तराइम-तरह तरहके-द्रख्तोंसे घीरा-हुवा-मधुवन-नामका-एक-उमदा वन है,-दूरसे देखतेही-दिल-त-र-वा-ताजा होजाता है,-बाग-बगिचे-और द्रख्तोंके पुड-और तरह तरहके परींद-मोर, तोते, मेना चिडिया वगेरा यहापर कलोल करते रहते है-और-उनकी मीठी मीठी अवाजसें दिल निहायत खुश होता है-श्वेतांबर कोठीके करीब-बाजार और कुछ बस्ति बनी-हुई-आटा, दाल, घी, दूध, मिठाई वगेरा-खानपानकी जरूरी चीजे यहापर मिलसकती है,-बाजारमें एक-छोटासा-बगिचा, और उसम-दादाजीके चरण जायेनशीन है बाजारके नजदीक-जो-पुरानी गो-शालाके नामसें मशहूर है,-यात्रीयोकलिये यहापर कमरे बनायेगये है,-इसमें एक-बगिचा, आगे चलकर-करीब (२०) विघे-ज मीन-जो-श्वेतांबरोंके कबजेमे है, हाथीखाना-बनाहुवा है, और इन दिनोंमे-एक-हाथीभी-श्वेतांबरकोठीकी तर्फसें रहता है,—

४८ मधुवनमें जैनश्वेतांबरकोठी प्राचीन बनीहुई है-और इसके पास एकही-हातेमे दश (१०) जैनश्वेतांबर मंदिर-शिखरबंद-बडी-लागतके बनेहुवे खडे है-जिनमे मूलमंदिर-शामलिया-पार्श्वनाथ-जीके नामसे मशहूर है,-इसके सामने बडा-चौक-बाग-बगिचे-ख-चकदार जगह है,-बगिचेमे गुलाब, चमेली, मोगरा वगेराके फूल पैदा होते है, और हमेशाकी जिनपूजामें, चढाये जाते है,-श्वेतांबर-कोठीके बहार शिखरजी पहाडकी-दामनमे-एक-पुराना-बडका-द्र-ख्त-जो-करीब (१००) वर्सका कहाजाता है,-उसके नीचे अधिष्ठा-यक-देवका-स्थान-जिसको यहाके लोग-भोमियाजीके नामसें बो-लते है,-और इनका-पर्चा-बहुत जल्द मिलता है,—

४९ मधुवनसें-आगे-जब-पहाडपर चढेगें-अढाई मीलपर गंधर्व-नाला-मिलेगा, वहापर एक-जैनश्वेतांबर धर्मशाला-बनीहुई है,-जियारत करके वापिस आतेवख्त-यात्रीयोको-यहा-खानपानकी-चीजें-मिठाई वगेरा दिइजाती है,-यहांपर-चाह-पैदा होती है,-जो-पारसनाथ पहाडकी-चाहके नामसें मशहूर है, गधर्वनालेसें आगे साढेतीन मीलपर-शीतानाला-जहा-दो-छोटीछोटी घुमटीये अधिष्ठायकदेवोंकी बनीहुई, यहा बारां महिनोतक-जल-बहता रहता है. -एक जैनश्वेताबरोंका मकान यहापर पेस्तर बनाहुवा था,-मगर-वो-इसवख्त बतौर खंडहेरके पडा है. शीतानालेके आगे जब पहाडपर पहुचेगे-तीर्थंकर-कुंथुनाथ-महाराजकी-टोक-मिलेगी. यहासे आगे (१८) टोंकोंकी जियारत करके-जब-जलमदिरपर पहुचेगें, तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका मदिर मिलेगा, जिसकों-जलमंदिर-या-धुरमठजीका-मंदिरभी बोलते है. यहापर-दो-जैनश्वेताबर धर्मशाला, तीन कुंड जलके-तर-ब-तर भरेहुवे-बारा महिने इनमे-जल-भरा रहता है,-एक बगिचा-जिसमे गुलाब-चमेली-मोघरा वगेराके फूल पैदा होते है, और जिनमदिरमे चढाये जाते है,-इस मदिरका जीर्णोद्धार-सवत (१८२५)मे-जगत्शेठ-साकीन मुर्शिदाबादने करवाया, बडीबडी आठ-जिनमूर्त्तिये इसमे तख्तनशीन है,-बीस (२०) तीर्थंकरोंके चरण-और एक-मूर्त्ति-सर्वधातकी करीब सवाफुट बडी-प्राचीन-यहापर मौजूद है,-मधुबनमें जितने जैनश्वेताबर मदिर और चरण छत्रीये बनीहुई है,-और पहाडपर तमाम टोंकोंमें-जलमंदिरमे-सब जगह-पूजारी-नोकर-चाकर-सब-इतजाम-श्वेताबरजैनसघकी तर्फसें हमेशासे रहता है,-चढावाभी-जैनश्वेताबरकोठीमें जमा होता है.-समेतशिखर पहाडपर-सब-मंदिर. चरणछत्रीकी टोंके-श्वेताबरजैनोंकी बनाई हुई है,-आज-सवत् (१९८२)का-चालु है.-आजतक पहाड-समेतशिखरपर दिगबर जैनोंका-बनायाहुवा-कोई मदिर-मूर्त्ति-या-चरणोंकी छत्री नही.-करीब (१५) वर्स हुवे-पहाड-समेतशि-

खरके बारेमे-कई-बातें चली थी. आखीरकार-साढेचार लाख रुप-यौंसें-जैनश्वेताम्बरोंने-पालगजके-राजासाहबसे पहाड-समेतशिखर खरीद लिया -पहाडका-एग्रीमेंट-श्वेताम्बरोंका-पहलेसेही था -और -अब-पुरा-हक हासिल करलिया है,-कोई-कोई-जैनश्वेताम्बर श्रावक -अपने-तीर्थोंके-हकको-बराबर-जानते नही, और कहदेते है, धर्ममे -और तीर्थोंमे-अनबनाव क्यौं? मगर इस बातपर खयाल नही करते. अपना-हक-साबीत-न-रहता हो-तो-उसकेलिये-कोशिश-क्यौं-न-करना, जरूर करना चाहिये, सौचो! अपने अपने हककेलिये-सगे -भाईभी-सरकार-दरबारमे-जाकर कोशिश-करते है-या-नही? फिर तीर्थोंके हककेलिये-क्यो-नही कोशिश करना? इन्साफ कहता है, जरूर कोशिश करना पहाड-समेतशिखरके नीचे-मधुबनमे-दि-गंबर-बीशपथवालोंने-और-तेरहपथवालोंने-अपनी-अपनी-एक-एक-कोठी-और-मंदिर बनवाये है, -मगर यह बात-सौ-वर्सके-अं-दरकी-समजो पेस्तरकी नही -अगर-हो-तो-कोई साबीत करे —

५० जलमंदिरकी जियारत करके-आगे-नव-टोंकोंकी जियारत करतेहुवे-दशमी-पार्श्वनाथजीकी-टोंकको जाना चाहिये,-इस टोंक-का-जीर्णोद्धार रायबहादूर बद्रीदासजी-साकीन कलकत्तेने करवाया. जिसमे करीब एक-लाख रुपये सर्फ हुवे, तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी-टोंकपर-जियारत करके यानी-नीचे-मधुबनको आवे, रास्तेमें एक-डाकबंगला आयगा. वहासे कुछ-फासलेपर एक-रास्ता-मधुबनको आता है,-और एक-रास्ता-नीमियाघाटको फटता है, आनेवाले ख-याल रखे और उसको छोडकर मधुबनके रास्ते आवे शिखरजी पहा-डकी आब-हवा-पाक-और साफ तरह तरहकी-बनास्पति जडी-बुटीयें यहा पैदा होती है -और हमेशा-हराभरा-सरशब्ज बनारहता है -बीश तीर्थंकरोने-इसपर-मुक्ति पाई इसलिये तीर्थ मानागया.—

५१ इस पहाडपर बडेबडे-जलसे और मुबारक यादीयें गुजर चुकी है कइ-मुनि-महर्षि-इस पहाडपर मुक्तिको पाये. वेंझुमार दी-

लत-खुशनसीबोंनें-यहापर सर्फ किई,-पेस्तर इस पहाडपर-हाथी-रहा करते थे शेर, गेंडा, साबरशिंगी, भेसा, हिरन, रोझ, रीछ, और चदरमी-यहा-रहा करते थे. मगर अब-कम-होगये, कमी-कमी-शेर यहापर नजरमी-आता है.-जलमदिरकी दाहनीतर्फ-हिरना खाडा -अबमी-मशहूर है.-कमी-कमी-यहापर हिरन-लडतेहुवे दिखपडते है,-ताउस, तोते, मेना, बुलबुल, चीडिया, तीतर, कबूतर वगेरा हर-फसली-परींदा, यहापर द्रख्तोंके झुडोंमे कलोलें करते रहते है,-आम -खिरनी-केले, जिरोंजी, नारियल, वंशलोचन, कचनार, सुपारी, जमीर, खजूर, नींबु, हरड, बहेडे, आवले, केतकी, कदब, ताड, तमाल, मोगरा, गुलाब, चंपा, जाई, जुई, अशोक, दमनक, मरुआ, सेवती, मालती, मचकुद, चदन, आगुन, खेर, इमली, पलाश, अखरोट, अनार वगेरा यहा पेदा होते है.-जिनमेसे-कई-अब मौजूद है. और कई नाजुक मिजाज चीजे-बमबब तबदील जमानेके कम-होगई,-कामराज-हाथाजोडी. पातालकोला,-बनजीरा-अनतमूल-और-रतनज्योत-अबमी यहापर मौजूद है, कई-जडी-बूटीयें ऐसीमी है,-जिसके जाननेवाले नही रहे, साप और वीछूके जहेर उतारनेकी जडीमी यहापर पेदा होती है,-जिधर देखो! तरह तरहकी मेवाजात चीजे-सब्जी-फूल-बाग बगिचे-खुशबू और हरेहरे-पेंड-नजर आते है,-शिखरजी पहाडपर जानेवाले-यात्री-मधुबनसें शुभहके चलेहुवे जियारत करके शामकों वापिस आसकते है,-जो-यात्री पावपैदल जाना-चाहे-शौखसें जाय, मगर जिनकी ताकात नही-वे-डोलीमे सवार होकर-जा-सकते है.-गर्मीयोंके दिनोंमें पहाडपर जानेकेलिये पावमें कपडेके मोजे पहनलिये जाय कोई हर्ज नही. जिससे पहाडके कंकर-पथर-और गर्म जमीन पेरोंकों-लगकर छाले-न-पडजाय. अगर पावोंकों तकलीफ होगई-तो-दुसरे रोज जियारत जाना मुश्किल होगा. तीर्थमें आनकर-कमसे-कम-तीन-जियारत जरूर करना चाहिये, जहातक-बने-केशर, चदन, धूप, दीप, फल, फूल,

सोनेचादीके वर्के-इत्र-रकावी वगेरा-चीजे-शाथ रखना, तीर्थके खजानेमे-कुछ देना, और मदिरके पूजारी, नोकर-चाकर वगेराकों कुछ-इनामभी देना जरूरी है,-ये-सबकाम-तीर्थकरोंकी-इज्जत है,- जिन्होंने तीर्थकरोंकी-इज्जत-किई-उन्होने-अपने-आत्माकों-दुर्गतिसें रौका,-तवारिख-तीर्थ-समेतशिखर-खतम हुई,—

[तवारिख-तीर्थ-वर्द्धमान -]

५२ खाना-जकशनसें (८) मील दखनकों जिलेका सदर मुकाम -वर्द्धमान एक अछा शहर हैं.-हरजगह पानीका नल, सडके लबीचौडी और मकान इट-चुनेके खूबसुरत बनेहुवे है,-जैनागम कल्पसूत्रमे लिखा है तीर्थकर महावीरस्वामी-मफर करते हुवे,-मोराकसनिवेशसें यहा तशरीफ लाये और जब ध्यानसमाधि करते थे, शूलपाणि-नामके-एक-यक्षदेवताने उनकों यहा तकलीफ पेंश किई थी, मगर-वे-अपने-ध्यानमे साबीत कदम रहे ये -पेस्तर यहा जैनोंकी अछी आबादी थी, आजकल यहा जैनश्वेताबर-श्रावकोंका-कोई घर -नही,-न-जैनश्वेताबर मदिर है,-पेस्तर यहा जैनोका तीर्थ-था, अब सिर्फ! क्षेत्रस्पर्शना बाकी है, यात्री क्षेत्रस्पर्शना करके-जियारत कामयाब हुई समझे,—

[तवारिख-शहर-कलकत्ता -]

५३ गगा-कनारे-मुल्क बगालका नामी शहर कलकत्ता-एक मशहूर-और मारुफ शहर है,-शहर-बबई और कलकत्ता-ये-दोहिंदमे आजकल वडे शुमार किये जाते है,-कलकत्ता-बबईके बीचका फासला-(१२७८) मीलका और रैलकी सडक बनीहुई है, कलकत्तेकी जगहपर-पेस्तर कालीघाट-और-सुतापटी-दो-तीन-छोटेछोटे गाव आबाद थे. गगाकनारे कालीघाट बेंशक! पुराना है -जब-अग्रेजोंकी आबादी बढनेलगी दिनपर-दिन शहर कलकत्ता-तरक्कीपर होता गया वडेबडे मकानात बनते गये और तिजारतभी हरकिस-

की होनेलगी. रवनक कलकत्तेकी आजकल वढीहुई है,-वडेवडे बाजार, टेलीफोन-तार-पानीका-नल-और तरह तरहकी चीजे काबिल देखनेके है,-हेरीसनरोड, शालदह, वडा बाजार, चित्पुररोड, धर्मतल्ला, कालीघाट-किलेका-मेदान, वासतल्ला, अफीम चौरास्ता, मुर्गीहटा, चीनाबाजार, कोलुटोला, और अलसीवागान-वगेरा वडेवडे बाजार है.-रास्तेमे-वगी-मोटार-ट्रांम-वगेराके सबब हमेशां हुजुम-वना रहता है,-सडकोंपर रातकों लालटेनोंकी-रोशनी हुवा करती है.-समुदरके कनारे जहाज और ष्टीमरें हमेशां रहा करती है, -दुकान दुकानपर साइनबोर्ड और घर-घरपर नबर लगेहुवे है,-कोई शख्श-यहा-बेकार नही, हरेक आदमी अपने कारोबारमे मशगूल देखोगे, फोर्टविलियम-किलेका-मेदान-गवर्नमेंट हाउस-हाइकोर्ट-बंगाल बेंक-पोस्टओफिस-टेलीग्राफ ओफिस-टकशाल-कस्टम हाउस-इष्ट इंडियन रेलवे मकान-स्टेशनरी दफतर वडेवडे आलिशान और कीमती मकानात है.-इग्लांड-अमेरिका-फ्रांस-जर्मनी-चीन-रुस-जापान-इटाली-स्विट्झर्लांड-स्पेन-नोर्वे-स्विडन-अरब-काबुल-जंजीबार और मोरस-वगेराकी बनीहुई-चीजें-यहा मिलसकती है,-जहोरीयोंकी दुकानोंमे तरह तरहकी-जवाहिरात-कपडेवालोंकी दुकानोंमे-हरकिसका कपडा-बाजारमे-मेवा-मिठाई-पुरी-कचौरी हरवख्त ताजी मिलती है.--

५४ जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर-शहर-कलकत्तेमें करीब (७००) होगें, जहोरी-मारवाडी-गुजराती-सब इसमे आगये दुकाने इनमें सामील नही किइगई.-अफीम-चौरास्तेपर-एक-उमदा-जैनश्वेतांबर मंदिर काबिलेदीद और सुनीद है,-जो-कोई-जैनश्वेतांबर-यात्री शहर कलकत्तेमे जाय-हवडा-टेशनपरउतरे, टेशनपर-इक्का-वगी-तयार मिलेगी.सवार-होकर शहरमे जाना. और शामाबाईकी-गलीमे -जो-जैनश्वेतांबर धर्मशाला बनीहुई है,-जाकर ठहरे,जो-कोई-यात्री-बहार दादा-वाडीमें-ठहरना चाहे-सिधे-अलसीबागानके

रास्ते चले जाय, वहापर ठहरनेकेलिये-धर्मशाला-मौजूद है,-दादाजीके बगिचेमें-छत्री-और कदम दादाजीके जायेनशीन है,-छत्रीकी-पश्चिम तर्फकों-रायबद्रीदासजीका-बगिचा और उन्हीका तामीर करवायाहुवा-तीर्थंकर शीतलनाथजीका मंदिर बडी लागतका है,-इसकी कतेनजह और मीनाकारीका-काम-निहायत उमदा देखोगे, हरसाल कातिकशुदी पुनमके रोज अफीम-चौरास्तेके जैनश्वेताबर मंदिरसे सवारी-तीर्थंकर धर्मनाथजीकी बडे जुलुससे निकलकर दादाजीके बगिचेमें जाती है, शहरसे जब सवारी चलती है, डंका-निशान-धजा-पताका-बेंडवाजा-सोनेचादीके बनेहुवे-सिंहासन-छडी-चवर-छत्र वगेरा लवाजमा-शाथ रहता है,-और-तीर्थंकर धर्मनाथजीकी मूर्त्तिके सामने-श्रावकलोग-सरगी-तबले-हारमोनियम-और-फिडल वगेरा साजसे ताल-स्वरके-शाथ-गायन करते है,-उसवख्त बडेबडे-गवैये-भी-सुनकर ताज्जुब करते है,-मेने जब सवत् (१९५८)की वारीश शहर कलकत्तेमे-गुजारी-थी मजकुर जलसेमे-शाथ था.-और सवारी तीर्थंकर धर्मनाथजीकी-बचश्म-देखीथी,-उसवख्त धर्मपावद शख्श तीर्थंकरोंकी इबादत सुनकर तारीफ करते थे, दुफेरके चारांबजे सवारी निकसकर चारबजे दादाजीके बगिचेमे जाकर दाखील होती है-और तीन रोज-वहापर कयाम कर-चौथे-रोज उसी जुलुसके शाथ-वापिस-शहरमे आती है,-शहर कलकत्तेके कई-जैनश्वेताबर-जहोरी-श्रावकोंके घर देरासरोंमे-छोटीछोटी-जिनमूर्त्ति-हीरा-मानक-पना-पुखराज-नीलम-और स्फटिककी बनीहुई-देखीगई है,-जो-कोई-यात्री-कलकत्तेमे जाय कुछ रोज कयाम करे और-जिनमंदिरोंकी जियारत करे,-जिनमूर्त्तिकों तसलीम करना बडी तकदीरके ताल्लुक है,-

[बयान-शहर-मुर्शिदाबाद]

५५ मुल्क बगालमे-मुर्शिदाबाद-एक-अछा शहर है,-पेस्तर बडा था. निझामत कालेज-बडी-लागतका मकान और मोतीझील एक

काबिल देखनेकी जगह है.-रेशमी कपडे-कारचोबीका काम और हाथीदांतका काम-यहा उमदा बनता है, महेल-नवाबसाहबका बेश-कीमती और निहायत संगीन बनाहुवा है, दरमयान-अजिमगज--और-मुशिदाबादके गगानदी बहती है, और बजरीये नावके पार जानाआना होता है.-जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर-अंदाज (१५०) और मंदिर-अजिमगंजमे (७) रामबागमें (२)-कुछ्छ नव हुवे, बालुचरमे (४) मंदिर, कीर्त्तिबागमे (१)-महिमापुरमे (१) कठगोलेमें (१) और कासीम बाजारमेभी (१) बनाहुवा है,-ठहरनेकेलिये अजिमगंज-मे धर्मशाला एक-करीब टेशनके बनी हुई है, यात्री उसमे-कयाम -करे और जिनमंदिरोंकी जियारत करे,-कितनेक श्रावकोंके घरदे-रासरोमे-यहाभी-हीरा-पंना-पुखराज-और स्फटिककी बनीहुई-छोटी-छोटी-जिनमूर्त्तिये-जायेनशीन है,-शहर मुर्शिदाबाद और-कलकत्तेके जैनश्वेतांबर श्रावकलोग-बेशक! दौलतमद है,—

५६ कलकत्तेसें-आसनसोल,-रायपुर, बिलासपुर, नागपुर होकर -जब-मध्यप्रदेशमे-वर्धा-जकशन पहुचोंगे. वर्धासे-बरोरा-हिंगन-घाट होते-भाडक-टेशन मिलेगा. यहापर भाडक नामका जैनतीर्थ है. यहापर एक बडा-आलिशान जैनश्वेतांबर मंदिर-और-अतराफ इसके धर्मशाला बनीहुई, यात्री इसमे कयाम करे.-और तीर्थकी जियारत करे. पेस्तर यहा-एक-भद्रावतीनगरी आबाद थी. कादबरी अटवी-और दडकारण्यमे पेस्तर जैनतीर्थ थे. अब नेस्तनाबुद होगये,—

[तवारिख-तीर्थ-अतरिक्षजी]

५७ मुल्क विरारमे आकोला टेशनसें करीब (२२) कोशके फास-लेपर-कस्बे-श्रीपुरमे-अतरिक्षजी-एक-पुराना जैनतीर्थ है, आकोले-सें मोटार-बगी वगेरा सवारी मिलसकती है,-श्रीपुर-पेस्तर बडा था. जमाने हालमें छोटा रहगया,-तीर्थ-अतरिक्षजीका मदिर पुराना और इसमे तीर्थंकर-अतरीक्ष-पार्श्वनाथजीकी-शामरग-मूर्त्ति-तल-

घरमे मयफणके करीब अठाइ हाथ-बडी-तख्तनशीन है धर्मशाला-कारखाना-नोकर-चाकर-वगेरा सब इतजाम अछा-और यात्रीयोंकी आमद-रफत-बनी रहती है —

[तीर्थ-माडवगढ-उज्जेन-और-मकसीजी]

५८ मुल्क मालवेमे-महु-छावनीसें (३०) मीलके फासलेपर-खुश्की-रास्ते-माडवगढ-एक पुराना शहर है.-पेस्तर बडाथा. अब छोटासा रहगया छावनी-महुसें-सवारीकेलिये-इका-बगी-तयार मिलती है,-माडवगढके पुराने खडहेर-और-मकानात देखकर दिलकों ताज्जुब पैदा होता है,-खुशनसीबोंने कैसे कैसे-उमदा मकान तामीर करवाये थे? और अब किसकदर विरान पडे है,-हिडोला-महल और चपावावडी-वगेरा जगह काबिल देखनेके है अतराफ माडवगढके तरह तरहकी-जडीबुटीयें खडी है -मगर उनकों पहिचाननेवाले-कम-मिलेगें यहापर-एक-जैनश्वेतांबर मदिर और धर्मशाला बनी-हुई है,-यात्री-धर्मशालामे कयाम करे और तीर्थकी जियारत करे. कारखाना-मुनीम-पूजारी-और नोकर चाकर हमेशाकेलिये तैनात है -खानपानकी-जरूरी चीजे यहा मिलसकेगी मुल्क मालवेमे-फतेहाबाद-जक्शनसें (१४) मील उत्तरकी रुखपर क्षिप्रानदीके दाहने कनारे उज्जेन-एक-पुराना शहर है,-चपानगरीका-राजा-श्रीपालजी -इसी उज्जेनके राजा-प्रजापालकी-लडकी-मयणासुदरीसें-विवाहे थे, और-बदौलत इबादत-नवपदजीके-उनकी-कोढ-बीमारी रफा हुइ थी राजा-विक्रमादित्यके जमानेमे यहा बडी-रवनक थी. और सस्कृतविद्याका यहा बहुत जोरशोर था, बडेबडे नजुमीलोग यहा हुने इसका दुसरा नाम-अवतिका-पुरीभी मशहूर है. जमीनके खोदनेसे-पुरानी आबादीके निशान दूरदूरतक पाये जाते है,-क्षिप्रानदीके कनारे-मोहाबने बनेहुवे-बाग-बगिचे और तालाव-यहा काबिल देखनेके है जैनश्वेतांबर-श्रावकोंकी आबादी-और-पुराने जैनश्वेतांबर मदिर यहापर मौजूद है, सराफे बाजारमे-डहेरा-खीडकीमें-औ

-नयेपुरेमे-जिनमंदिरोके दर्शन है.-ठहरनेकेलिये-अनती पार्श्वनाथ-जीके मदिरपास धर्मशाला बनीहुई है,-यात्री-उसमे कयाम करे और तीर्थकी जियारत करे.-उज्जेनसें बसनारी रेल-ताजपुर और-तारना रोड होते-तीर्थ-मक्सीजीकों जायाजाता है,-टेशनसे करीन-आध-मीलके फासलेपर-एक-मक्सीजी-छोटासा गाव है और गावके ना-मसें-तीर्थका नाम भीममकसीजी कहलाया, तीर्थंकर-मक्सी-पार्श्व-नाथजीका -बुलदशिखरनद मदिर-यहापर मानींद स्वर्गविमानके खडा है.-और-इसमें तीर्थंकर मक्सी-पार्श्वनाथजीकी-शामरग-मूर्त्ति-क-रीन सना दो-हाथ बडी तख्तनशीन है.-धर्मशाला-मंदिरके पास बनीहुई है-यात्री-उसमे कयाम करे-और तीर्थकी जियारतका फायदा हासिल करे. पिछाडी मदिरके-एक-उमदा नगीचा-जिसमे गुलान-केनडा-चपा-जाइ-जुई-और गुलदाउदीके फुल पैदा होते है, और जिनपूजामें चढाये जाते है,—

[तवारिख-तीर्थ-कुलपाकजी -]

(मुल्क-तैलग)

५९ मुल्क तैलंगमें दखन हैदरानादके आगे-आलेर-टेशनसें-दो-कोसके फासलेपर कुलपाकजी एक पुराना जैनतीर्थ है.-यहापर-एक-कुलपाक नामका गाव आनाद है. गावके नामसें-तीर्थका नामभी कुलपाकजी मशहूर हुवा. जैनश्वेतांबर मजहनके-त्रिविध तीर्थ कल्प-शास्त्रमे लिखा है,-यह-मदिर विक्रम सवत् (६८०)मे ननाया गया. इसमे तीर्थंकर-रिषभदेन महाराजकी शामरग-मूर्त्ति-करीन अढाइ हाथ-बडी-तख्तनशीन है,-इसका-दुसरा नाम-माणिक्यदेवभी-बो-लते है,-सवत् (१६६५)मे इस मदिरका जीर्णोद्वार हुवा-शिलालेखोंसे सावीत है. सवत् (१९६५)मे-जब-मैने-दखन हैदरानादमें बारीश गुजारी थी-दखन हैदराबाद-और-सिकदराबादके श्रावकोंके साथ-मेरा जाना-इस तीर्थमे हुवा था,-मंदिरकी-मरम्मत-होना-दरकार था. श्रावकोंकों-तालीम धर्मकी दिइगई,-वहापरही-जीर्णोद्धारकेलिये

-चदा-कियागया. तीर्थका-पुनरुद्वार हुवा-और-आजकल वडा-उमदा तीर्थ बनगया है, दखन हैदराबादसे-बेजवाडा-जानेके रास्तेमे-आलेर-टेशन उत्तरकर-इस तीर्थको-जायाजाता है,-यात्री-इस तीर्थकी जियारत करे,—

[दखन मथुरा-लका-और-किष्किधानगरी]

६० शहर मद्रासले (२४५) मील दूर-मुल्क दखनमें-शहर-मदुरामें पेस्तर जैनतीर्थ-था,-अब नही रहा. जैनागम-आवश्यक-सूत्रके अवल अध्ययनकी-टीकामे-जो-दखन मथुरा-नगरी लिखी है,-वो-यही-मदुरा-है,-लका-टापुको-शास्त्रोमे-सिंहलद्वीप लिखा, जमाने रावणके यहा-एक-शातिनाथजीका जैनतीर्थ था, अब नही रहा,-मुल्क कर्णाटकमे-बल्लारी-टेशनसे-(४१) मील दूर-होस्पेट-टेशनसे (७) मीलपर किष्किधानगरी पेस्तर बडी थी. अब छोटी रहगई जमाने-सुग्रीवके-यहापर-एक-जैनतीर्थ था अब नेस्तनाबुद-होगया.—

[तवारिख-तीर्थ-नासीक -]

६१ बबई हातेके दरमयान मनमाड जक्शनसे (४६) मीलपर दखन-पश्चिमकी रुखपर नाशिकरोड-टेशनसें (५) मीलके फासलेपर जिलेका सदर मुकाम-नाशिक एक पुराना शहर है -जमाने तीर्थंकर चद्रप्रभस्वामीके-यहा-जैनतीर्थ था, त्रिभुवन-तिलक-चद्रप्रभस्वामी-का-यहा-बडा-मदिर-और श्रावकोंकी आबादी ज्यादा थी, जमाने हालमें-कम-होगई,-आजकल जैनश्वेताबर श्रावकोंके-घर-अदाज (१५) और जैनश्वेताबर मदिर (२)-एक-जुनी कमारगलीमें-तीर्थकरचिंतामणि पार्श्वनाथजीका, दुसरा सराफ बिल्डिंगके पास-तीर्थंकर धर्मनाथजीका-दोनों-शिखरबद-बनेहुवे है,-नाशिक-शहर-बडा गुलजार और हरकिसकी चीजें यहापर मिलसकती है,-वैदिक मजहबवालोंका-यहा-बडा तीर्थ है, गोदावरी नदीके बाये कनारेके हिस्सेमें-पचवटी-और-महाराज-रामचद्रजी-श्रीकृष्णजी-वगेराके मदिर बनेहुवे-यात्री-हरवख्त-जियारतकेलिये आतेजाते है,—

६२ रत्नागिरीके करीब-रत्नसंचया-नगरीमे-पेस्तर जैनतीर्थ था, अब नही रहा,-बंबईसे-आगे-बी-बी-एंड-सी-आइ रेलवे लाइनमें विरार टेशनसें-आगे पाच मील दूर खुश्की रास्ते-अगासी-गावमे-पुराना-जैनतीर्थ है.-एक-जैनश्वेतांबरमंदिर, धर्मशाला, तीर्थका कारखाना-मुनीम-गुमास्ते-नोकर-चाकर-सब इंतजाम अछा है,-बंबई विक्टोरिया-टर्मिनससें (२१) मील पूर्वोत्तरकी तरफपर-थाना-एक पुराना शहर है,-जमाने-तीर्थंकर-मुनिसुव्रत-स्वामीके-राजाश्रीपालजी-जब-शहर उज्जेनसें मुल्कोंकी सफरकों गये थे,-यहाभी-उनका आना हुवा था.-उसवख्त-यहा-जैनतीर्थ था,-वो-नही रहा, मगर -इसवख्तभी-एक-जैनश्वेतांबर मंदिर-और-धर्मशाला-बनीहुई,-और-तीर्थ-शुमार-कियाजाता है,-इसवख्त-थानेमे जैनश्वेतांबर--श्रावकोंकी-आबादी अछी, और पुराने जैनतीर्थके-पुनरुद्धार करानेकी-कोशिशमे-है,—

[तवारिख-शहर-बंबई,-]

६३ हिंदमे-दखनसमुदरके कनारे-बंबई-एक नायाब और-बेमिशाल शहर है, जिन्नत-खूबसुरती-हरेक-चीजके बसमे और उमदगी मकानातमे-बंबई-बहेत्तर-बा-ज्यादह है, मुबादेवीके नामसे शहरका नाम-बंबई-कहलाया, अंग्रेजी-जबानमे इसकों-Bombay-बॉबे बोलते है,-करीब (१२५) वर्स पेस्तर-बंबई-छोटा शहर था,-जो-कोई मुसाफिर बंबईमे कदम रखे-बोरीबंदर टेशन उतरे, हिंदमे-दुसरा कोई -ऐसा-टेशन-नही. छतमे-सुनहरी और मीनाकारीका काम-मारबल -पत्थरके बनेहुवे-खंभे-खूबसुरत-वेल-बुटोंसे सजेहुवे-और-एक-गुंबजपर किमती घटाघर जिसकी अवाज दूरदूरतक जाती है, देखकर ताज्जुब होगा -बग्गी मोटार वगेरा सवारी तयार मिलती है, जहा कहो पहुचा देयगें -कोलाबा, ग्रांटरोड-भायखला-दादर वगेरा टेशनोंपरभी उतरसकते हो. जिस मुसाफिरको-जैसा-सुभीता-हो-वैसा करे बहुतसी-ष्टीमरें-और-जहाज समुदरकनारे आते और जाते है.-

६४ बंबईसें शुरुकी-सडक-कल्याणी-नाशिक-धुलिया-महु-इं-दोर-फतेहाबाद-और-ग्वालियरकों होतीहुई-शहर आगरेकों-गई है, दुसरी पैदल सडक-मध्य-हिंदुस्तानके होतीहुई-खास-शहर कल-कत्तेकोंभी-गई है, बंबईके मकान-ऐसे-उमदा और खूबसुरत देखोंगे जिसपर लाखो-रुपये-सर्फ हुवे है बडीबडी आलिशान इमारतें-इस कदर उमदा और संगीन बनीहुई देखकर-आदमीकी-अकल-चकरा जाती है.-रंगरोशन-बडेबडे आइने-तरह-तरहके-मेहराबदार खंभे-और-साइनबोर्ड-हरमकानपर लगेहुवे है,-जहोरीबाजार-मारवाडी बाजार-कालबादेवी रोड-भूलेश्वर-माडवी लत्ता-कोट-अबदुल-रह-मानस्ट्रीट-पायधोनी-भींडी बाजार-नलबाजार-सेंडहर्स्ट रोड-क्रॉफर्ड मार्कीट-मूलजीजेठा मार्कीट-सर मगलदास मार्कीट-लखमीदास-खीमजी मार्कीट-ग्रांटरोड-ये-बडेबडे बाजार और तीजारतके मथक है, चर्नीरोड-जुमामसजिद-परेल-कोलाबा-गिरगाव और वालके-श्वर-जहा देखो-दुतर्फा-संगीन और रंगरोशन कियेहुवे मकान देख कर-मालुम होता है,-किसी राजमहेलकी-सैर-कररहे है,-भींडीबा-जारकी-सडक-जो-कुलाबेको-गई है -बडी-चौडी है,-तवारिखोंमे पढाहोगा बंबई-और-बंगाल-हाता-हिंदके-दो-गुलजार बाग है,-जिनमे-शहरबंबई और कलकत्ता-दो-बडे तरक्कीपर-है,—

६५ बंबईके-बाजारमे तरह तरहके माल-असबाब-जवाहिरात-कपडे-सोने-चांदीके बनेहुवे गेहने मेवा-मिठाई-पुरी-कचोरी-आम-अमरुद-सेव-अंगूर-अनार-मोसंबी-संतरे वगेरा चीजे तयार मि-लती है,-चाह-दूध-जहा देखो-हर बाजारमे तयार है, मगर खजाना-तर-चाहिये, अगर-पाकीटमे-पैसा-है-तो-बंबईमे किसी चीजकी-कमी-नही, बगी मोटार-और-ट्राम-बंबईमे हरजगह फिरती दे-खोगे, ट्राममें बेठकर जिसजगह जाना हो-शौखसें चलेजाओ-दाद-रसें कुलाबा-और-कुलाबेसे-ग्रांटरोड-जानेसें बंबईके बहुतसे हि-स्सोकी-सैर-होसकती है, इग्लाड-चीन-जापान-फ्रांस-जर्मनी-रु

स-इटाली-स्पेन-अमरिका-नोर्वे-स्विझलांड-अरब-काबुल-आफ्रिका-एडन-जंजीबार-मोरसस वगेराकी बनीहुई-चीजें यहा मिलसकती है. तरह तरहकी पुशाक पहनेहुवे-मुल्क मुल्कके-मर्द-औरत-छोटेबडे इसकदर शौखसें चलरहे है,-जैसे-अमीर-उमराव देखलो, बंबई और कलकत्ता-अलबत्ते! जमाने हालमें-दोनों शहर तरकीपर है,—

६६ भायखल्ला-चीचपोखली परेल और-कुलाबेमें-कपडेके कारखाने और मीले बनीहुई है,-जिनमे करोडों रुपयोंका माल बनता है.-और मुल्कोंमें जाता है,-समुदरके कनारे-चोपाटी-किन्सरोड-राजाबाई टावर-बी-बी-एंड सी-आइ-आरका टेशन कुलाबा-पालवानंदर-ताजमहेल होटल जिसमे राजे-महाराजे-अमीर-उमरावलोग-ठहरा करते है.-होरनबीरोड-वगेरा रवन्नकदार जगह है,-बंबईका-टाउन-हॉल कोटमे आलादर्जेका बनाहुवा मकान है. बोरीबदर टेशनके नजदीक-जनरल पोस्ट ओफिस-म्युनिसीपालिटीका-मकान-और टाइम्स-ओफ-इंडिया-प्रेसका मकान-बडी-लागतके बनेहुवे है,-कोटमे-हाइकोर्टका मकान निहायत-उमदा-देखोगे, चोपाटीपर शामके वख्त कइलोग हवा खोरीकों जाते है,-और वहापर-एक-बेंडस्टेंडभी-बनाया गया है.-व्हिक्टोरिया गार्डन जिसकों-रानीबाग बोलते है,-परेलके पूरबके कनारे-बडा-लंबा-चोडा-काबिल देखनेकी-जगह है.-और-अजायब घरभी-इसीमें-बनाहुवा है.-कई-तरहके-डेली-सप्ताहिक-और-मासिक-अखबार शहर बंबईसें जारी होते है.-बडेबडे-व्यापारी-और-अमीरोंके मकानपर-लगाहुवा-टेलिफोन-जिससें-घर-बेठे-तमाम-हाल मालुम होसकते है,-कइ जगह-बाग-बगिचे-पानीके फव्वारे-बनेहुवे नजर आते है,-बोरीबदरके करीब-गिवेटी-ऍपायर-एकसेलसियर-और बुइलिंग्टन थियेटर-उमदा बनेहुवे है,-चौपाटीके नाकेपर-रोयलओपेरा-हाउस-नामसें एक थियेटर-आलादर्जेका बनाहुवा देखोगे,-ग्रांटरोडपर-प्लेहाउसके नजदीकमे-

उर्दू-गुजराती-और महराठी-नाटक-कंपनीकेलिये-छह-थियेटर व-नेहुवे है,-बम्बईमे-तिजारत-ज्यादा हो-या-कम-लेकिन! हरवख्त रवनक बनी रहती है, हिंदी और इग्लिश-फिलमोके सिनेमा-कभी -युरोपियन-सरकस-तो-कभी-देशी सरकस-और कभी दुसरी तरहके खेल तमाशे मौजूद रहते है,-बम्बईमे-रेश-कोर्स-करीब महा लक्ष्मी टेशनके बडी लागतसें बनाहुवा है,—

६७ बंबईमे-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी-गुजराती-मार-वाडी-कछी-काठियावाडी-मालवी-और-दक्षिणी-मिलाकर करीब (२५०००)के-होगी पायधोनी-कोट-लालबाग-बालकेश्वर-कुलाबा -माडवीबंदर-भायखला-दादर-और माहिम वगेरामे कइ जगह उमदा जैनश्वेतांबर मदिर-बनेहुवे है,-जो-कोई-जैनश्वेतांबर-यात्री-बम्बईमे-आवे-इन मदिरोंकी जियारत जरूर करे, दुनयवी-कारोबार -कभी-खतम-न-होगें, जितना-धर्म-करोगे, वही तुमारा है,-सबसे बडा-मदिर पायधोनीपर तीर्थंकर-गोडी-पार्श्वनाथजीका-बीच-बाजारके इसकदर उमदा-तीमजिला बनाहुवा है,-देखकर दिल खुश होगा -इसमे तीर्थंकर-गोडी-पार्श्वनाथजीकी निहायत खूबसुरत-मूर्त्ति-तख्तनशीन है,-सुनहरी और मीनाकारीका-काम-तीर्थोंके नकशे-तस्वीर-झाड-फनुस-और फर्स शगेमर्मरका देखकर दिल खुश होगा, मदिरके दरवजेपर पीतलके बनेहुवे कठहरे दूरसें दिखाई देते है, शामके वख्त सरगी-तबले-हारमोनियम-और सितार वगेरा साजसें गवैयेलोग-सगीतकलाके शाथ तीर्थंकर देवोंकी इबादात करते है, दुसरा मदिर उसीके करीबमें तीर्थंकर महावीरस्वामीका-इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति तख्तनशीन है, तिसरा मदिर रिषभदेव महाराजका इसमे तीर्थंकर रिषभदेव-महाराजकी मूर्त्ति तख्तनशीन है,-मारवाडी श्रावकोंकी आमद-रफत-इसमे-ज्याहद और-ये-तीनोमदिर एक-लाइनमे-बनेहुवे है,-चौथा-मदिर शांतिनाथ महाराजका भींडी बाजारके कोनेपर-इसमे चिनकारी-और-

संगेमर्मरका-काम उमदा बनाहुवा है, पाचमा-मंदिर इसीके करीनमे -तीर्थंकर नेमिनाथजीका-छठा मंदिर-तीर्थंकर-चितामणि-पार्श्वनाथजीका-इन मंदिरोंमे-उमदा कारिगिरी और रवनक वनीहुई है,-कोटमे-और-लालबागमेभी जैनश्वेतांवर मंदिर बनेहुवे है, माडवी-बंदरपर-दो-मंदिर-उमदा कारिगिरी और बडी लागतके तामीर है, वालकेश्वरमें तीन मंदिर निहायत उमदा और सोहावने बनेहुवे है,-बंबईके मंदिरोंकी रवनक-बेशक! काविलेगौर है,-कोई-श्रावक केशरसें पूजन कररहा है, कोई तरह तरहके खुशबूदार फूल चढारहा है. कोई सोने-चादीके वर्कोंसें-और-कटोरियोंसें जिनमूर्त्तिकी-अग-रचना कररहा है, कोई-हार्मोनियम-सरगी-और तबले वगेरा साजसें तीर्थंकर देवोंकी इबादत कररहा है,-शुभहके वख्त-जैन-श्रावक और श्राविका-जिनमंदिरोंके-दर्शनोंको आते है,-हाथमे-सोने-चादीकी वनीहुई-डिब्बीये-जिनमे चावल-बादाम-और जिनप्रतिमाके सामने चढानेकेलिये रुपये-पैसे-रखे-जाते है,-लेकर-उमदा पुशाकके साथ जिनमंदिरमे-कदम-रखते है,-तो-उनकी सच्ची-देवभक्ति शुमार किइजाती है.-भाइखलेके जैनश्वेतांवर मंदिरका बयान सुनिये, वहापर हरसाल जब कातिक-और चेतमहिनेकी पुनमके रोज-तीर्थ-शत्रुंजयजीका-चित्रपट-लगायाजाता है, बंबई और इर्दगिर्दके तमाम -जैनश्वेतांवर श्रावक श्राविका-वास्ते-जियारतकों आते है, उसवख्तकी रवनक जिमने देखी होगी, कहसकते है-खास-तीर्थंकर देवके समवसरणकी रचना उसवख्त भायखलेमे-नजर आती है,-जिनमूर्त्तियोंके-अग-और सिरपर जवाहिरात लगेहुवे-गेहने आभूषण देखकर-जैनोंकी-देवभक्ति-और दौलत शुमार किइजाती है,-मेरा रहना अक्सर चदअर्सेसें-बंबईके इर्द-गिर्द होता है,-कातिक-और-चैतकी पुनमके रोज-मेभी-भायखलेके जलसेमे गया हु,-बेशक! मजकूर जलसा-लाइफ तारीफके होता है,-जिनजिन-श्रावकोंकी-श्रद्धा-जिनमूर्त्तिके-माननेमे-नही है,-वे-बेशक! कहा करते होगे,-जैनती:

थोंमे-मदिर-मूत्तिके-जलसेमे-प्रतिष्ठामे-रथयात्रामे-इतना खर्च-क्यों करना? मगर खयाल करनेकी बात है,-दुनियादारीके काममे-विवाहसादीमे-और-मौज शौखमे-इतना खर्च कियाजाता है-बतलाइये! इसकी क्या वजह है? क्या! बमुकाबिले धर्मके-दुनयवी कारोबार बढकर समजना? धर्म-एक आलादर्जेकी चीज है, जिसकी बदौलत यहा-सुखचैन पाया है-और आइंदे पायगें. तमाम धर्मशास्त्रोंने-धर्मको आलादर्जेपर फरमाया,-जैनशास्त्रोंका फरमाना है,-धर्मद्रव्य और-देवद्रव्य-श्रावक अपने घरमे-न-रखे. देवद्रव्य मदिर-मूर्त्तिके काममे-और धर्मद्रव्य-धर्मके काममे फौरन! खर्च करदेवे,—

६८ बंबईमे-कई-जैनपाठशाला बनीहुई है,-जिनमे श्रावकोंके लडका-लडकी-मजहबी इल्म पाते है -जैनधर्मके-छपेहुवे-पुस्तकभी -बंबईमे-जैनबुकसेलरोसे मिलसकते है,-बडे-बडे-जैनश्वेतांबर मदिरोंके कारखानोंपर पूजनकी चीजोमे-केशर-चदन-बरास-अगरबत्ती -वर्क-सोनेचांदीके-बादला-कटोरी-इत्र-उद्यापनकी चीजोमे रुमाल -चदोंए-बगेरा सरसामान-मोंल-मिलसकता है,-बंबईके कितनेक जैनश्वेतांबर श्रावकोंके यहा-घरदेरासरभी-बनेहुवे है, और उनमे--मानक-पुखराज-पन्ना-निलम-और स्फटिककी बनीहुई-छोटी-छोटी-जिनमूर्त्तिये-मौजूद है,-हिंदके कई-शहरोंके व्यापारी-और मुसाफिर लोग-बंबईमे आते और जाते है -कोई-रौज-ऐसा-न-होगा-जिसरौज-दश-पनरा-हजार-मुसाफिर बंबइमे आये गये -न-हों, जवाहिरात-रुई-सोना-चादी-कपडे-अनाज वगेरा हरकिसकी तिजारत यहा होती है,-कहातक बयान करे, तवारिख बंबईकी-खतम हुई,—

[बयान-शहर-सुरत,-]

६९ बंबईके कुलाबा टेशनसें-(१६७) मील-उत्तर-और-भरुअछ सें-(३७) मील-दरखनकों तापी नदीके बाये कनारे-सुरत-शहर एक गुलजार बस्ती है,-मकान उमदा और रंगरोशन कियेहुवे बाजार गुल

जार और जिस चीजकी दरकार हो,-यहां-मिलसक्ती हैं,-जवाहि-रात-सोना-चांदी-मेवा-मिठाई और-रेशमी-कपडे-जैसें चाहिये यहां मिलसकेगे -सलमेसितारेका-काम-यहां-इसकदर उमदा बनता है, जिसकी तारीफ वेमिशाल है,-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहां कमरतसें और-जैनश्वेतांबर मंदिर बडा चौटा-नाणावट-गोपी-पुरा-छापरियासेरी-हरिपुरा-और नयापुरा वगेरामें-बडी-लागतके -बनेहुवे है.-और उनमे खूबसुरत-जिनमूर्त्तिये दर्शनशीन हैं, कई मंदिरोंमे मीनाकारी काम-और-उमदा-चित्रकारी देखकर दिल-तर-था-ताजा होगा.-सुरतसे आगे-टेशन-अंकलेश्वरके करीब-झ-गडिया-नामका-एक तीर्थ-जहां-एक जैनश्वेतांबर मंदिर-और-बडी धर्मशाला बनीहुई है,-एक देखनेलायक जगह है,—

[दरबयान-शहर-भरुअच्,-]

७० बंबईके कुलाबा टेशनसे (२०४) मील-उत्तर और बडोदा-टेशनसे (४४) मील दखन-नर्मदानदीके कनारे जिलेका सदर मुकाम भरुअच-एक उम्दा शहर है.-बडेबडे मकान-और बाजार-उम्दा-हर-किस्मकी चीजें यहां मिलसक्ती हैं, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी कमरतसें-और-महोले-श्रीमालीमें-तीर्थंकर मुनिसुव्रत-स्वामीका-निहायत उमदा मंदिर तामीर है,-और-उसमे-तीर्थंकर-मुनिसुव्रत-स्वामीकी-अतिशययुक्त मूर्त्ति-दर्शनशीन हैं,-शहर-भरुअचमें-पे-स्तर-अश्वावबोध और-शकुनिका-विहार नामके जैनतीर्थ-थे, अब नही रहे,—

[बयान-शहर-बडोदा]

७१ बंबईसे (२४८) मील-उत्तरको-बडोदा एक उमदा शहर है, बडे-बडे-अमीरोंके-उमदा मकान और-बाजार-बडा-गुलजार-जि-समे हरकिस्मकी चीजे मिलसक्ती है, टेशनसें थोडी दूर-एक-बडी -कोलेज-जिसमें-बी-ए-तक-इल्म पढाया जाता है,-बडी लागतका मकान है. नजरबाग-एक गुलजार चमन-जिसमें तरह तरहकी-

वनास्पति-और द्रख्त खडे है, एक महेल फर्स मारबल पत्थरका-और -अजनबी चीजें रखीहुई देखकर दिल खुश होगा -शहर वडोदेमें जैनश्वेतांबर-श्रावकोंकी आबादी कसरतसें और बडेबडे जैनश्वेतांबर मदिर बनेहुवे है,-यात्री-इनकी जियारत करे,-

[बीचबयान-शहर-अहमदाबाद]

७२ बंबई हातेमे-मुल्क गुजरातका-शिरोताज-साबरमती नदीके बाये कनारे बसाहुवा-अहमदाबाद एक नायाब शहर है,-बंबई कुलाबा -टेशनसे (३१०) मील उत्तरकों-अहमदाबाद जक्शन बडी लागतका बनाहुवा झलाझल दौलत-रगरोशन कियेहुवे मकान-और-खूबसुरत-मर्द-औरत-हरजगह नजर आते है, रवन्नक-अहमदाबादकी किसी कदर-कम-नही,-टेशनपर-बग्गी-मोटार वगेरा सवारी तयार मिलती है, जहा-दिल-चाहे-बेठकर-सैर-कर आओ. सडके लबी चौडी-और-रातकों उनपर लालटेनोंकी-रौशनी-हुवा करती है, मानकचौक झवेरीवाडा-मांडवीपोल,-फतासापोल-दाणापीठ वगेरा बडेबडे महोले -शुमार कियेजाते है, जैनश्वेतांबर मदिर यहा-बडे कीमती बनेहुवे, -और-उनमे निहायत खुबसुरत जिनमूत्तियें तख्तनशीन है,-बडी बडी-चित्रकारीका-काम-और-रवन्नक यहाके मदिरोंमे-देखोगे, कई जैनश्वेतांबर श्रावकोंके मकानमे घरदेरासर बनेहुवे-और-उनमे-कइयोंमे-मानक-पना-पुखराज-और-स्फटिककी छोटी छोटी बनी-हुई-जिनमूत्तियभी-देखीजाती है,-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी कसरतसें-जैनमुनिजनोंका-आनाजाना यहापर बनारहता है,-उन्हों-कों-ठहरनेकेलिये कई मकान-कई-जैनपाठशाला और जैनपुस्तकालय यहापर मौजूद है,-चांदीका-रथ-पालखी और जिनमूर्त्तिकेलिये गेहने उमदासे उमदा यहा बनाये जाते है,-सल्मे-सितारोंके बनेहुवे-रूमाल -और चदोए-जैनमुनियोंकेलिये-काष्टके बनेहुवे-पात्रे-तर्पणी-और रजोहरण वगेरा-जो-जो-चीजे जैनोंकों-वास्ते-धर्मोपकरणके-दर-कार होती है,-यहापर बनाईजाती है,-कई-लेखक-लोग-यहां जैन-

पुस्तक लिखनेवाले रहते है,-जो-कोई जैनश्वेतांबर-यात्री-तीर्थ-शत्रुं-जय-गिरनारकी-जियारतकों जावे, अहमदाबादके जैनमदिरोंकीभी-जियारत जरूर करे, बयान-शहर अहमदाबादका-खतम-हुवा.—

[तवारिख-तीर्थ-द्वारिका -]

७३ जमाने तीर्थंकर नेमिनाथजीके द्वारिकानगरी किसकदर रव-बक रखतीथी-जैनआगम बाचनेवालोंकों बखूबी मालुम होगा, दश-दसार-वर-वीरपुरुष समुद्रविजयजी-उग्रसेनजी-और-वसुदेवजी-य-हांपर-जब-बसते थे,-द्वारिका-झलाझल रोशनीलिये-थी. बडेबडे राजमहेल और बेशुमार दौलत यहापर मौजूद थी,-श्रीकृश्नजी-और-बलभद्रजी-जब यहा-अमलदारी करते थे इसकी मकदूर थी इसकों फतेह करसके, बडेबडे जैनमदिर यहापर मौजूद थे, उनमेसें एकभी अब नही रहा. जमाने हालमे शहर बबईसें (३४२) मील और पोर-बदरसे (५६) मील पश्चिमोत्तरकी रुख-पर-द्वारिका इसवख्त मौजूद है. मगर पेस्तर जैसी रवबक नही. द्वारिका और बेट द्वारिका-इस-तरह-दो-हिस्से मौजूद है मगर-ये-सब उसीके अलग अलग हिस्से होगये है-ऐसा समजो. द्वारिका शहर-इसवख्त रेलका टेशन है. और-बेट द्वारिका छोटा टापु है, द्वारिकामे इसवख्त सगमघाट -वसुदेवघाट और पाडवघाट वगेरा-कई-घाट बनेहुवे-सोहावनी जगह है, बेट द्वारिकामे-कई-धर्मशाला तालाव और-पक्के-घाट-मौजूद है,-द्वारिकामे-वैदिक-मजहबवालोंका बडा तीर्थ-कई मंदिर धर्मशाला और घाट बडी लागतके बनेहुवे और वैदिक मजहबके-यात्रीयोंका यहांपर आना-जाना-बनारहता है,—

७४ अयोध्या-सावथ्थी-विशाला-राजगृही-वगेरा नगरीयें-पे-स्तर बडी थी, आजकल छोटी रहगई, मगर-जगह-वही है, चढती -पडती सबपर होती चली आइ, कोई शहर आबाद-और-कोई बर-बाद यही किस्सा दुनिया फानी-सरायका है,-कई-महाशय! हिमा-लयकों-वैताढ्य-पहाड बतलाते है, मगर मुताबिक फरमान-जैनशा-

Jain Geography
[जैन भूगोल]

Map of Jambu Dwip

[जम्बूद्वीपका नक्शा]

है,-बखूबी-देखलिजिये! जमीन फिरती-या-चाद-सूर्य-इसके सबुतमें-जो-जो-बहेसें लिखीगई है-कानिलेगौर है,—

२ जैनमजहबमे-लोक और अलोक-दो-हिस्से मानेगये है,-लोकके तीन हिस्से-उर्द्धलोक, मनुष्यलोक और अधोलोक,-अधोलोकमे सात नरकोंका होना. मनुष्यलोकमे जंबूद्वीप, धातुकी खंड, कालोदधि-समुदर, पुष्करार्द्ध-द्वीप और फिर इसतरह आगे द्वीप और समुदर असंख्य माने है. अखीरका स्वयंभूरमण-समुदर-जो-सबसें बडा है. इसके आगे-तीन-वलयाकार, और उसके आगे अ-लोक-यानी सिर्फ! आकाश है.—

३ उर्द्धलोकमें ज्योतिषीदेव, वैमानिकदेव, नवग्रैवेयक, और पांच अनुत्तर विमान, उनसे उपर सिद्धशिला-जो-पूरब-पश्चिम और उत्तर-दखन-लंबीचोडी है. इन चीजोंको मुताबिक जैनशास्त्रके समजना चाहिये, कितनेक लोग उनकों बिना समजे खंडन करनेपर आमादा होते है.-मगर बडी गलती करते है. चुनाचे! जैनके कामील विद्वान् इनका माकुल जबाब देते है. मगर पेस्तर बिना समजे खंडन करना-मुमकीन नही, उर्द्धलोक, मध्यलोक, और अधोलोक-चौदह-रज्वात्मक-प्रमाण गिनतीमें शुमार कियेगये है, कितनेक लोग इस बात-कोंभी-बिना समजे-रज्वात्मक-प्रमाणकों एक तरहका-रस्सा-समजकर खंडन-करते है-और कहदेते है,-जैनमजहबवालोंकी गिनती ठीक नही. मगर-रज्वात्मक-प्रमाण रस्सा-नही-एक तरहका-माप-है,-इसकों बगौर समजना जरूरी है,—

४ जंबूद्वीप, धातुकी खंड, और पुष्करार्द्धद्वीपमें-मनुष्योंकी आबादी मानीगई है,-भारतवर्ष-जंबूद्वीपके दखनकी तर्फका-एक-हिस्सा है.-इसके उत्तरमे चूलहेमवतपर्वत, और उसके उत्तरमें हेमवंतक्षेत्र, आगे महाहेमवत पर्वत, और हरिवर्ष-क्षेत्र, निषधपर्वत और महाविदेह-क्षेत्र, दो-गजदंत, देवकुरु क्षेत्र,-भद्रशालवन,-मेरु पर्वत, दो-गजदंते, उत्तर कुरुक्षेत्र, नीलवतपर्वत, रम्यक्वासक्षेत्र, रूपीपर्वत,

ऐरण्यवतक्षेत्र, शिखरीपर्वत, और-ऐरवतक्षेत्र,-ये-सब आबादी और पहाड-उत्तरतर्फ मौजूद है, जैनभूगोल जाननेवालोंको इन बातोंसें-अवल-माहितगार होना चाहिये. और इसमे दियाहुवा जैनभूगोलका रंगीन नकशा देखना चाहिये.-दुसरे कई मजहबवाले-सप्तद्वीप-और -सप्तसमुदरभी मानते है. और कहते है,-आजकल-वहा-कोई-जा-नही सकता. जबू-शाक-शालमली-पुष्कर-प्लक्ष-कुश-और क्रौंच-ये-सप्त-द्वीप बतलाते है,—

५ जैनमजहबमे जिसको भारतवर्ष-माना है.-उसके-छह-खड-शुमार किये है. तीन-खड-वैताढ्य पर्वतकी उत्तरतर्फ-और-तीन-खड दखनतर्फ, जिनमे दखनतर्फके तीन खडोंमे मध्यखडको आज-कल-हिंदुस्तान बोलते है-उसमे साढे-पचीस-आर्यदेशोंका होना कुबुल रखागया, और आर्य-देशोंमे तीर्थंकर-चक्रवर्त्ती-वासुदेव, प्रतिवासुदेव-और बलदेव-पैदा होना मानागया है,-जहा सत्यधर्म-की प्रवर्त्ती हो-वो-आर्यदेश-समजना, जैनशास्त्रोंमें-जो-साढे-प-चीस आर्यदेश लिखे है,-वे-कभी-सत्यधर्मकी प्रवृत्ति-न-रहनेसें अनार्यभी होजाते है,-और अनार्यदेश-कभी-सत्यधर्मकी-प्रवृत्ति होजानेपर आर्यभी होजाते है,-अवल कौनसा मुल्क कितना लबाचोडा था? और उसवख्त वहां कौन अमलदारी करते थे? कभी-कोई-मुल्क-किसी दुसरेने फतेह किया. अमलदारीका शहर बदल गया. कभी-एक-मुल्कका-कुछ-हिस्सा दुसरे मुल्कके शाथ मिला दिया,-इस वजहसें कहसकते हो-एक-मुल्क लबाई चौ-डाईमे घट-गया-दुसरा बढगया, इसीतरह सब-मुल्कोंकेलिये होना समजो, जैनभूगोल-जैनशास्त्रके द्रव्यानुयोगमे बयान कियागया है और तीर्थंकर देवोंने अपने ज्ञानसें देखकर फरमाया है,-जमाने तीर्थं-कर रिषभदेव महाराजके-वे-खुद-अवल राजा थे,-बाद्-भरत-चक्र-वर्त्ती-हुवे जबूद्वीपके दखनकीतर्फ-अर्द्धचद्राकार भारतवर्ष,-इसके-ठीक-बीचमे-पूर्वपश्चिमसमुदरतक-वैताढ्य पर्वत, जिससे भारतवर्ष-

दो-हिस्सोंमे बट गया.-चूलहेमवत-पर्वतके पदमद्रहमे-गंगा-सिंधु-नदीयें निकलकर-वैताढ्य पर्वतमे होतीहुई-दखनदिशामे-लवणसमुंदरकों-जा-मिली, इससे भारतवर्षके-छह-खंड-बनगये.-पहले इसी लेखमे लिखागया है, दखनकी तर्फके तीन खंडोंमें-बीचले खंडकों हिंदुस्तान कहते है, और इसीमे साढे-पचीस-आर्यदेश-आगये समजो. तीर्थंकर-चक्रवर्त्ती-वासुदेव-बलदेव-और-प्रति वासुदेव-बडे पुरुष-इसी आर्य-खंडमे हुवे, आर्यलोग-बहुत करके सत्यधर्मपर-कामील एतकात और रहमदिल होते है.—

६-[साढे पचीस आर्यदेश-और उनकी अमलदारीके शहर]

१ मगधदेशमे राजगृही नगरी. २-अगदेशमे चंपानगरी, ३-बंगदेशमे ताम्रलिप्ती नगरी. ४-कलिंगदेशमें काचनपुर नगर, ५-काशीदेशमे बनारसी नगरी, आजकल काशी-और-बनारस-ये-दोनों-एक-नगरीके नामसे मशहूर है,-६-कोशलदेशमे अयोध्या नगरी, ७-कुरुदेशमे गजपुरनगर, गजपुरका दुसरा नाम हस्तिनापुर है. ८-कुशावर्त्तदेशमे शौरीपुरनगर, ९-पाचालदेशमे कापिल्यपुरनगर, १० -जगलदेशमे अहिछत्रा नगरी, ११-सौराष्ट्रदेशमे द्वारिका नगरी, १२-विदेहदेशमे मिथिला नगरी, १३-वत्सदेशमे कौशानी नगरी, १४-शांडिल्यदेशमे नदीपुरनगर.-१५-मलयदेशमें भदीलपुरनगर, १६-मत्सदेशमे वैराट्यनगर, १७-वरुणदेशमे-अछापुरी नगरी. १८ -दशार्णदेशमे-मृत्तिकावती नगरी, १९-चेदिदेशमे सौक्तिकावती नगरी, २०-सिंधु-सौवीरदेशमें वीतभय-पतननगर, २१-सुरसेनदेशमें मथुरा नगरी. २२-बगदेशमे पावापुरी नगरी, २३-भालदेशमे-पुरीवट्टा-नगरी, २४-कुणालदेशमे सावथ्थी नगरी, २५-लाटदेशमे-कोटिवर्ष नगर, केकइ-देशका-आधा-हिस्सा-मिलानेसें-साढे-पचीस-आर्यदेश हुवे, कई मुल्कोंके नाम-रदबदल होगये, कई शहर आबाद और कई-बरबाद हुवे.-कई नये-कायम-हुवे और

कई बिल्कुल-नेस्तनाबुद हुवे, इसीका नाम जमानेका-हेरफेर समजो, जिनको भूगोलविद्या जाननेका-शौख है-तलाश करे,—

२ जैनराजा-सप्रति-जो-तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (२९०) वर्स पिछे हुवा, उसने जैनधर्मकी निहायत तरक्की किई. और उसकी -अमलदारी-उज्जेन-नगरी थी, जैनाचार्य-हेमचद्रसूरिका फरमाबर-दार-राजा-कुमारपाल निहायत धर्मपावद हुवा. और उसकी अमल-दारीका पायतख्त-शहर-अणहिल्लपुर पाटन था, भारतवर्षकी दखनका -मध्यखड-जिसकों जमाने हालमें हिंदुस्तान-या-इडिया-कहते है, -इसकी उत्तरदखन लबाई (१९००)-मील और पूरवपश्चिम-चौडाई -करीब (१८००) मील कहीजाती है, उत्तरतर्फ-इसके हिमालय पहाड -जिसमें वर्फकी वहुतायतसें-इसको हिमालय कहागया, इसकी लबाई अदाज (१५००) मील-और-चौडाई करीब (२००) मील होगी, इसके उचे-उचे-शिखर आसानसें बाते करते दिखाई देते है,—

३ हिमालयकी तराइमे-काश्मिर-नयपाल-भूटान-सिकिम-और इसके-उत्तरमे-मुल्क-तिब्बत-आबाद है,-जैनशास्त्रोंमे-जो-वैताढ्य -पहाड लिखा-वो-मुल्क-सैबीरियासें-उत्तरमे-है,-जहां-वर्फकी व-जहसें आजकल वहा कोई-जा-नही सकता,-हिंदके दखनमे हिंदी महासागर, पूरबमे वर्मा, और बगालकी-खाडी,-पश्चिममें मुल्क सिंध, अर्बी-समुदर-और-बलुचीस्तान वगेरा है -कई-दुसरे पहाडभी हिंद-मे मौजूद है.-विंध्याचल-पूर्वीघाट-पश्चिमीघाट-और दखनमें नील गिरि वगेरा है.-हिमालय पहाडमे तरह तरहके द्रख्त और जडी-बु टीयें-खडी है.-हिंदमे-नदीये-गगा, सिंधु, यमुना, शतलज, व्यासा, रावी-चनाब, जेहलम, सरयू, सरस्वती, ब्रह्मपुत्रा, चबल, गोदावरी, कृश्ना, कावेरी, नर्मदा, तापी, क्षिप्रा वगेरा कई छोटी बडी मौजूद है,-इस्वीसन (१९११)की-मर्दूम-शुमारीके वख्त हिंदकी मर्दूम शु-मारी (३१) करोड (९०) लाख (७५) हजार (१३२) मनुष्योंकी शुमार किईगई थी,—

४ हिंदमें इसवख्त नबई हाता, कलकत्ता हाता, विहार, उडिसा, काश्मिर, पंजाब, सिंध, राजपुताना, रियासत गवालियर, मध्यप्रदेश, विरार, खानदेश, गुजरात, काठियावाड, रियासत बडोंदा, मालवा, कोंकन, महाराष्ट्र, दखन-कर्णाटक, महीशूर, और त्रावनकोर, वगेरा बडेबडे मुल्क शुमार कियेजाते है,-हिंदमें-मोसिमें तीन-जाडा, गर्मी, -और बरसात,-पूर्वीमुल्कोमे चावलका खाना ज्यादा, गेहूकी-रोटी -चावल-दूध-और-घी-सब मुल्कवाले पसद रखते है,-गरीबलोग-जवार-बाजरी-और चने खाते है,-मांसका खाना-कम-और लोग-रहमदिल ज्यादा,-जानवर और परींदे बहुत किसमके-बनास्पति और फल-फूल-बेशुमार, धर्मशास्त्रकी-इज्जत करना सबलोग मजुर रखते है, जरीके कपडे-पघडी-दुपट्टे, धोती, पेजामा, शाल, दुशाले, अग-रखा, कुर्ता, और सल्मे-सितारोकी बनीहुई-टोपी-हिंदके लोगोंका पहनावा है. जैन, वैदिक, साख्य, बौध, नैयायिक और-वैशेपिक-ये-मजहबी तरीके है,-बुत्परस्ति-हिंदमे कदीमसें होती आई. मगर -कई-मजहबवाले-इसें-नामजुरभी-रखते है,-ताडपत्रपर लिखेहुवे धर्मपुस्तक पुराने मदिरोंके शिलालेख और पुराने सिक्केभी-हिंदमे-कई तरहके मिलते है,-निर्ग्रंथ-साधु-योगी-तपस्वी-सन्यासी हिंदमे ज्यादा-देखोगे, धर्मकी-पाबदीसें-हिंद बढचढकर माना गया.-सबब इसका त्यागी-और ज्ञानी-पुरुष-हिंदमे ज्यादा हुवे. हिंदके-राजे-महाराजेभी-पिछली-उम्रमे दुनियाकों छोडकर-साधु-होजाते थे, और तप करके अपने शरीरकों सुका देते थे, राजमहेल कमालहुस्न औरतें-तर-खजाना-और आराम-चैन-जमी छोडा जाता है-अगर दुनियामे धर्म-सबसे बढकर समजा-जाय, धर्मशास्त्रोंमे-सुनते हो, पेस्तर आर्य मुल्कके वाशिंदे जब अपने सिरपर सफेद-बाल-आजाता था. दिलमे समज लेते थे,-यमराजाका-दूत-आगया, अब धर्म करना चाहिये, आजकल-कई-आरामतलब-लोग-साधुओंकों देखकर हसते है, और कहते है, देख लो! कमाया नही गया-तो-साधु हो

गये, मगर इस बातपर खयाल नही करते धर्म बडी चीज है,-और-ब-राहे धर्मपर कदम रखना सबका फर्ज है,-चाहे राजे-महाराजे हो -सेठ-साहूकार हो, धर्म-सबको फायदेमद है. बदौलत धर्महीके यहां सुखचैन पाया. और आइदे पायगें.—

५ खानपान-एशआराम-और खेल तमाशे तमाम मुल्कोंमें होते है.-मगर-हिंदमे किसीकदर-कम-नही, हा! इतना जरूर है,-धर्म-पाबदलोग धर्महीको-ज्यादा तरक्की देते है, शतरजका खेल हिदके पडितोंने इजाद किया, इसका दुसरा नाम-चतुरग-सेनामी-कहते है, जैसें-फौजमे-हाथी-उठ-प्यादे होते है.-इस खेलमे सब बातें चतराईके ताल्लुक रखीगई है,—

[शतरजके खेलपर पद-रागिनी कमाच]

हे! शतरज खेल खेलारी,
सब समजदेख शतरजकी घात,
लख दोउ दल अपने परायकी जात,
काहुविधकर मोह बादशाहको मात,
जब जानु तोहे चतर खेलन खेलारी,-हे! शतरज खेल खेलारी. १
आठो कर्मके पियादे आगे झुकतेही आवे,
कामक्रोध गज चलत थमत नही थांवे,
लोभ उठ चारों खूटकी मरोर कर ध्यावे,
मानमायाके तुरग चाल चपल दिखावे,
मिथ्यामदसो वजीर वीर वाके ढिंग ठाडो,
वाके मारवेकों दल अपनो सवार-हे! शतरज खेल खेलारी. २
तेरो ज्ञानसो वजीर वीर तेरे ढिंग ठाडो,
आठो अग समकीतके पियादे हलकारो,
त्याग साढणी सवार पर साढणीपें डारो,
सत्यवचन तुरगसें तुरगकों निवारो,

क्षमाशील टोयपील राखो दलके अगाडी,
परदल कर डारों छिनमें सहार,-हे! शतरज खेल खेलारी.-३
तपजप मतव्रत याके घेरे चिहु ओर,
तब याकि चलनेकों कहुं रहे-न-ठोर,
जब तेरी होगी जीत दुजो हारेगो खेलारी,
तब सुयशकों तेरे सिर बंधेगो मोर,
ठाडे इद्र धरणेद्र तोरे ढोलेंगे चौंमर,
तेरो भजन भजेगो गुण अथाह-हे! शतरज खेल खेलारी. ४

(शतरजके खेलपर उमदा पद खतम हुवा,)

---

६ हिंदकी चिकित्साविद्या निहायत फायदेमद मानीगई है,-कोई-इम्तिहान करे. हिंदके कारिगिरोने पहाडोंमें उकेरकर-गुफायें बनाई है,-काविल देखनेके-है,-हिदके वाशिंदोंमें कितनेक ऐसेभी रहमदिल है-जो हरे-दरख्तकोंभी काटना पसद नही करते, वनास्पतिमें जीवोंका होना ज्ञानीयोंने मंजुर रखा है, लजवती-जडी-हाथ लगानेसें-सुकड-जाती है, सोचो! इसकी क्या! वजह? इसकी यही वजह है-वनास्पतिमें जीवोंका होना ज्ञानीयोंने मंजुर रखा.—

७ पेस्तरके जमानेमें जब हिंदके-राजे-महाराजोंमें किसी बातपर जंग-होता था, फौजके आगे होकर लडते थे और दोनों फौजोंके बीच-एक-रणस्तंभ-लगाते थे.-जो-अगाडी बढे उनकी फतेह हुई समझते थे, रथ-हाथी-या-घोडेपर बेठकर-राजे-महाराजे फौजमें आते थे. और सामने होकर लडते थे लडाइके वख्त शख-बजाया जाता था. और तरह तरहके बाजे बजाये जाते थे, जिससे लडनेवालोंके दिलमें-जोश-पैदा हो-विरुदावली-बोलनेवाले-बहादुरीके वचन बोलते थे,-बहादुर योद्धे-सिरपर-टोप-बांधकर लोहेके बखतर पहनके लडनेको आते थे,-धनुष्य-बाण-ढाल-तलवार-भाले-और

चरछीस लडाइ होती थी -चक्रवर्त्ती-चक्रसे लडते थे, और-उस चक्रकी-हिफाजत-रखनेवाले देवतेभी-मौजूद रहते थे, जब-वासुदेव और प्रतिवासुदेव-राजोंका जंग होता था प्रतिवासुदेव-अपना चक्र -वासुदेवपर छोडता-था,-वासुदेवकी तकदीर तेज होनेसे-चक्र-उसपर असर नही करसकता था, जब वासुदेव-चक्रको कहता था,-तेरे-मालिकके हुक्मकी तामील कर,-या-मेरा फरमानबरदार हो. चक्र -उसी वख्त वासुदेवका फरमानबरदार होता था, और उसीसे वासुदेवकी फतेह होती थी,-अछी तकदीरसे-सबको आराम चैन मिलता है,— दुनियामे-उदय-अस्त-सब चीजपर लगा है -राजकचहरीमे जाकर इन्साफ पाना-हमेशासे चला आया,—

८ हिंदके राजे-महाराजे-शेठ-साहूकार इसकदर खैरात करते थे, -जो-उनके दरवजेपरसे मांगनेवाला-शख्श-कभी खाली हाथ नही लोटता था देनेवाले खुशनसीब अबभी देते है,-मगर कजुसोंको-सायत!-यह-बात नागवार गुजरेगी दुनयवी-कारोबारमे-हजारोंका खर्च होजाय-मगर धर्मके कामोंमे-उनसे-एक-पैसाभी-खर्च-न-होसकेगा. पेस्तरके जमानेमे अलबत्ते दौलत और पुन्यवानी ज्यादा थी,-अब-वैसी-कम है,-बदनकी खूबसुरती-जवाहिरातके गेहने-और-जरीके कपडे हिंदमे-लाइफ तारीफके बनते है.-बैलोंसें-घोडोंसे और उठोंसें हल-खेडाजाता था, बैलोंसें-हल-खेडना-अबभी जारी है, और-उठोकी-गाडीयेंभी-चलती है,-पेस्तरके जमानेमें यहभी-रवाज-हिंदमे जारी था,-राजे-महाराजोंकी-कुमारी-स्वयंवर-मंडपमे जाकर अपनेलिये-पतिको-पसंद करती थी जिनको तवारिख पढनेका-शौख है-व-खूबी जानते होगें —

[जमीन फिरती है-या-चांदसूर्य? इस-पर-उमदा दलिलें]

९ जमीन फिरती है-या-चांद-सूर्य! इसके बारेमे तलाश किइजाय-तो-जमीनका फिरना साबीत नही होता, चांदसूर्य-बेशक!

फीरते है,-और यहबात-जाहिरभी-है,-देखो! आस्मानमें-एक राशि-पर-कइ ग्रहोका मिलना. और-फिर-जुदे होजाना,-जो-नजरके सा-मने दिखाइ देता है,-किसी कदर गलत नही होसकता, अगर ज-मीन फिरती हो-तो-एक-गाव दुसरे गावसें जिस दिशामें है, बदल जाना चाहिये, और बदलता नही, अगर जमीन फिरती है,-ऐसा माने-तो-फर्ज-करो! बारीशके दिनोंमे-एक-जगह-दो-घंटेतक-बारीश-होती रही, और उतने अर्सेम-जमीन फिरती हुइ-आगेकों चली गइ,-फिर उस गावके तालाव पानीसें कैसे भरसकेंगे? और-भर-जाते है, यह नजरके सामने दिखाई देरहा है,-सोचो! फिर जमीनका फिरना कैसे साबीत होसकेगा?-अगर कहाजाय-जमीनमे-आकर्षणशक्ति-मौजूद है,-मगर-वो-आकर्षणशक्तिभी-साबीत नही होती. मनुष्य और जानवर जब जमीनपर चलते है,-आकर्षण-शक्ति उसकों-रोक-क्यौ-नही लेती? फर्ज करो! जमीनपर किसी-ने-आग-जलाइ, और उसमेंसें-धुवा-निकलकर आसानतर्फ चला. तो-जमीनकी आकर्षण-शक्ति-उसकों-रोक-क्यौ-नही लेती? इसका कोई माकुल-जबाब देवे.-सबुत हुवा-जमीन-स्थिर है,-फिरती नही, चाद-सूर्य फिरते है,—

१० वैदिक मजहबमे सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग-ये-चार युग माने है,-लेकिन! जैनमहबमे सुखमय-सुखमययुग, सुखमययुग, सुखमय-दुखमययुग, दुखमय-सुखमययुग, दुखमययुग, और दुखमय-दुखमययुग, ये-छह-युग माने है,-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके आजकल दुखमययुग जारी है, जिसके करीब (२४५०) वर्स वतीत होचुके. और-करीब साढे-उन्नीस-हजार वर्स बाकी है,-वैदिक मज-हबवाले कलियुगकों-(४०००) वर्सका मानते है,-और-वो-जमाने हालमें जारी है,-जैनमजहबमें मूर्त्तिका मानना कदीमसें चला आया, -जितने शास्त्र है,-सब-ज्ञानकी मूर्त्ति है, ऐसा कहना कोई गलत नही. सबुत हुवा हर्फोंकों माननेवाले-ज्ञानकी मूर्त्ति मानते है-इसमें

कोई शक-नही.-हर्फोंको-अगर ज्ञानकी मूर्त्ति-न-माने-तो-शास्त्रके उसूल कैसे मालुम होसकेगें? अगर मजहबके उसूल-मालुम नही हुवे -तो-धर्मकी पहेचान कैसे होगी? इसलिये साबीत हुवा, हर्फोंका-माननाही-मूर्त्तिका-मानना है,-जो-लोग फोटोग्राफकी मूर्त्तिकी इज्जत करते है,-वोभी-एक तरहकी मूर्त्ति है,-राजे महाराजे और बादशाहोंका स्मारकचिन्ह-जो-शहर-बशहरमें-बतौर याददास्तके होता है, उनकी सालगिरेके रोज-उनकी-इज्जत-किइजाती है, फु-लमाला-पहनाई जाती है,-यह-उनकी इज्जत हुई-या-नही? मद-सोंमें-लडकोंकों बतलानेकेलिये-जो-नकशे-रखे जाते है-वेभी-जमीनकी-मूर्त्ति है,-सबुतहुवा-मूर्त्तिका-मानना-एक-जरूरी चीज है,-और दुनयवी कारोबारकों-कम-करके-इरादे धर्मके तीर्थोंकी जियारत जाना पुन्य है,—

[प्रमाणअगुल-आत्मअगुल-और-उत्सेध-अगुलका माप,-]

११ मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके-भरतक्षेत्र-जो-पाचसो-छ-बीस योजन-छह-कलाका- चोडा फरमाया गया है प्रमाणअगुलके मापमे समजना.-तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी अगुलकों प्रमाणअ गुल कहीगयी, तीर्थंकर रिषभदेव महाराज अपने शरीरकी उचाइमे -उत्सेध-अगुलके मापसे पाचसो धनुष्यकी उचाइवाले थे,-और-पाचसो धनुष्यकी उचाइवालोकी-एक-अगुलकों प्रमाणअगुल कहना इस बातकों समजना चाहिये, आत्मअगुल-छोटा-बडाभी शुमार किया जासकता है, सबब इसका-यह हुवा-जिस जिस जमानेमे जैसे जैसे-कदवाले-मनुष्य होते जाय-उन उन मनुष्योंकी-अगुलसें माना जाता है,-जैसे तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके-शरीरसे तीर्थंकर अजि-तनाथ महाराजका शरीर उचाइमे पचास धनुष्य-कम-हुवा. तीर्थंकर संभवनाथजीका शरीर उनसें कम-हुवा,-इसी तरह-वैसे-दर्जे-बदर्जे -चौहमें तीर्थंकर-महावीर स्वामीके शरीरकी उचाइ कम-होती गइ,

-इसीलिये कहागया,-आत्मअंगुल छोटा-बडाभी होता है.-जैसे अजितनाथजीके जमानेमे-फर्ज करो! एक-शहर-दुसरे शहरसें दश-कोश-दूर हो-तो-तीर्थकर-संभवनाथजीके जमानेमें-दश कोशसें गिनतीमे कुछ ज्यादा दूर शुमार किया जायगा.-सबब-संभवनाथ-जीकी-आत्मअगुल-अजितनाथजीकी आत्मअगुलसें छोटी थी.-इसी तरह-दर्जे-बदर्जे सब तीर्थकरोंके वख्तकी-बात समजना, उत्सेधअ-गुलका माप-तीर्थकर महावीर स्वामीकी-आधी-अंगुलकों शुमार-करना,-पाचमे आरेके आधे-बर्स-बतीत होनेपर-जो-मनुष्य-पैदा होगें-उनकी-एक-अगुल-और-तीर्थकर महावीर स्वामीकी आधी-अगुल-एकसरखी-होती है,-जैनमजहबमें-शरीरका-कद-उत्सेध-अंगुलके मापसें जो-जो-चीजे शाश्वती मानीगई है-उनकी-लंबाई-चोडाईका माप-प्रमाणअगुलसे और-एक गाव-दुसरे गांवसे-कितने कोशके फासलेपर है,-उसकी-गिनतीका माप-आत्मअगुलके मापसें शुमार करना.-और-वो-जिस जिस जमानेमें जो-जो-मनुष्य-पैदा हो उनकी अगुलसें गिनना.-इसीलिये आत्म-अंगुलका-माप--जमाने-जमानेमें बडा छोटाभी होसकता है. इन बातोंकों-बगेर समजे अगर-कोई-खडन-मडन-करे, तो-बहेत्तर नही.

[सूर्यकी-गतिसें-पूरब-पश्चिमके मुल्कोंमें-
उदय अस्तका फर्क.]

(सबुत लोकप्रकाश ग्रथका)

यावत्क्षेत्र स्वकिरणैश्चरन्नुद्योतयेद्रविः
दिवसस्तावति क्षेत्रे-परतो रजनी भवेत्.-१

१२ सूर्य-अपने किरणोंसें जितनी जमीनपर प्रकाश डालता है, उतनी जमीनमें दिवस-और-जितनी जमीनकों अपने प्रकाशसें रहित करता है-उतनी जमीनमे रात्री जानना, जैसे बंबई शहरमे दिनके-बारां बजते है, उसवख्त-इग्लाडके लडन शहरमें शुभहके सात बज-

कर आठ मिनिट होती है.-और जब-लंडन-शहरमें दिनके बारां बजते है, बंबईमें उसवख्त शामके चार बजकर बावन मिनिट होती है, इसतरह पूरबपश्चिमके शहरोंमे-और-मुल्कोंमे करीब-इतना-फर्क समज लो! बंबई टाइम और स्टंडर्ड-टाइमम (३९) मिनिटका-फर्क माना है, कलकत्ता-और-बंबईके टाइममें-फर्क है.-बंबई और मद्रासके टाइममेंभी फर्क है,-इसतरह सूर्यके उदय-अस्त-किरणोंके सबब ऐसा फर्क पडसकता है, मगर-बारा-घंटोंका फर्क किसी जगह-नही होसकता, जैसे भरतखंडके-छहों-खंडोंमे-किसी शहरमे दिनके-बारां-बजे हो, और दुसरे शहरमे रातके बारा-बजे ऐसा नही होसकता, चार-पांच घंटोंका फर्क बेशक होसके. सूर्यका प्रकाश प्रतिपरमाणु आगे बढता है, और इसी तरह पिछाडीसें प्रतिपरमाणु घटता है, मेरे पास इसवख्त तमाम मुल्क और बडेबडे शहरोंका सूर्योदय-चक्र-मौजूद है, मुताबिक उसके मजकुर बयान यहांपर लिखा है,-जैनमजहबमे जमीनकों स्थिर-और-चादसूर्यकों फिरतेहुवे माने है,-जमीनको नींबुकी तरह गोल नही, बल्कि! आइनेकी तरह-सपाट मानी है,-इस बातकों मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके समजना चाहिये,-बयान-जैनभूगोल खतम हुवा,—

---

१ [चौदह गुणस्थान और मुक्ति,]

(शार्दूल-विक्रीडित,)

भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं-वित्ते नृपालाद् भयं,
माने दैन्यभयं बले रिपुभयं-रूपे तरुण्या भयं,
शास्त्रे वादभयं गुणे खलभयं-काये कृतांताद् भयं,
सर्वं वस्तुभयान्वितं भुवि नृणां-वैराग्यमेवाभयं.-१

(अर्थ) संसारिक भोगविलासोंमे बीमारीका खौफ है,-उमदा कुलमें इज्जतका खौफ है. दौलतमें राज्य वगेराका खौफ है, मानमें-—कमी-मानहानिका खौफ है.-बलमे रिपुका खौफ, रूपमें तरुणीका
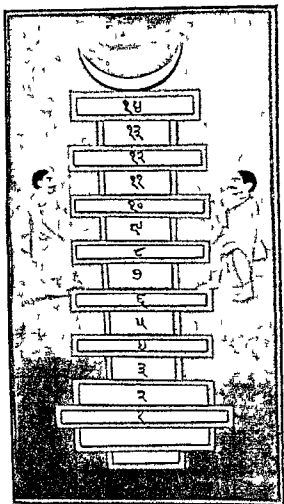
[दयार चौदह गुणस्थान और मुक्ति]

खौफ, शास्त्रार्थमें वादविवादका खौफ, गुणमे-खलपुरुषोंका खौफ, और कायापर-मौतका-खौफ है. इसतरह सब चीजोंमे खौफ रहा-हुवा है. सिर्फ! एक धर्मही विना खौफ-खतरकी चीज है,-इस-लिये इन्सानकों धर्मपर साबीत कदम रहना चाहिये.—

[दोहा-]

श्रीजिनयुगपदकमलमे-मुजमनभमर वसाय,
कव उगे-वो-दिनकरु-जिनमुखदर्शन पाय, १
आरभविषयकषायवश-भमिया काल अनत,
लखचौरासी योनिमे-अब पाया भगवत, २
मोहअज्ञानमिथ्यात्वका-भरिया रोग अथाग,
वैद्यराज गुरुचरनसें-औषधज्ञान विराग, ३
छुटे पिछले पापसे-नये-न-वाधे कोय,
सद्गुरुचरनप्रसादसें-सफल मनोरथ होय, ४
तीन मनोरथ-जो कहे, ध्यावे-जो-नित मन,
शक्तिसार वरते सदा, तो पावे सुख धन, ५
कर्मस्वरूप पुद्गल कहा, जीव रूप है-ज्ञान,
दो-मिलकर बहुरूप है, विछडा पद निर्वान, ६
रत्नवधा गठरीनीचे,-सूर्य छिपा घनमाह,
सिंह पिंजरेमे दिया, जोर चले कछु नाह, ७
सुखदिधा सुख होत है, दुखदिधा दुख होत,
आप हने नहि औरको, आप हने नहि कोंय, ८
गोधन-गजधन-रतनधन-कचनखान सुखान,
जब आवे संतोषधन,-सबधन धूलसमान, ९
ब्रह्मचर्य सबमे बडा, सबरत्नोंकी खान,
तीनलोककी सपदा, ब्रह्मचर्यमे आन, १०
करज विराना काढकर, खर्च किया बहुनाम,
जब मुद्दत पुरीहुई, देना पडसे दाम, ११

विना दिये छूटे नही. यह निश्चयकर मान,
हसहसके क्यों खर्चिये, दाम विराना जान, १२
पुन्य क्षीण जब होत है,-उदय होत है पाप,
दाझे वनकी लाकडी-प्रजले आपहि आप, १३
बहु बीती थोरी रही, अवतो सुरत सभार,
परभव निश्चय चालनो, वृथा जनम मतहार, १४
भवसागर ससारमे,-द्वीपातर जिनराज,
धर्मपुरी पहुचे सीरे,-बेठा धर्म जहाज, १५
कहा भयो घर छाडके-तज्यो-न-मायासग,
सर्प तजी-जिम काचली-विष नहि तजियो अग, १६

---

२ पिछले भवमें कुदेव-कुगुरु-कुधर्मकी चाहना किनीहो-उससें परहेज करताहु और सुदेव-सुगुरु-सुधर्मको मानना इख्तियार करताहु. पापके कामोसें पिछा हठताहु और धर्मके काममे रायतलब देताहु आजतक-जो-कुछ जूठ बोला हो,-दिलमे रज करताहु और आइदा जूठ बोलनेसें परहेज करताहु अपनी पैदाशपर-दान-करताहु और अभक्ष्य खानपानसें परहेज करताहु, अठाराह पापस्थानके काम छोडताहु और धर्मके काम करना इख्तियार करताहु ससारसागर अपार है,-उसका पार पाना दुसवार है,-दौलत-दुनिया-मालखजाना यहां रहनेवाला है.-मे-अकेला जानेवाला हु, ख्वाह-कोई अमीर हो-या-गरीब सबपर कालचक्र घूमता है. जबतक भवस्थितिका परिपाक नही होता-मुक्तिकेलिये-कोई उपाव कारआमद नही होते, जबतक-दिली-इरादे पाक और साफ हुवे नही चाहे जितना तप करो 'फायदेमद-न-होगा, आधि-व्याधि-और उपाधि-जो-इस जीवने पूर्वजन्ममे बाधी थी, यहा-उदय आई है,-दुनियामे कोई किसीका मददगार नही,-जो-चीज जिसवख्त-मिलनेवाली है,-विना कोशिश किये मिलेगी -जो-चीज छुटनेवाली है,-हजार कोशिश करो, विना

छुटे-न-रहेगी. अपने कियेहुवे कर्मही आराम और तकलीफ देने-वाले है,-आत्मा अकेला आया और अकेलाही जायगा. आत्मा शरी-रसें जुदा है, मगर अज्ञानसें शरीरको अपना मानलिया है,-

३-[साम्यभावपर-लावनी -]

विषयोंकी आशा नही जिन्होंके-साम्यभाव धन रखते है,
निजपरके हित साधनमे-जो-निशदिन तत्पर रहते है,
स्वार्थत्यागकी कठिन तपस्या-विना खेद-जो-करते है,
वैसे ज्ञानी साधु जगतके-दुखसमूहकों हरते है.-विषयोंकी-१
रहे भावना ऐसी मेरी-सरल सत्यव्यापार करु,
वने जहांतक इसजीवनमे-औरोका उपकार करु,
मैत्रीभाव मेरा जगतमे-सव जीवोंसें नित्य रहे,
दीनदुखी जीवोंपर मेरे-उरसे करना श्रोत वहे,-विषयोंकी-२
रोग-मरी-दुर्भिक्ष-न-फेले-प्रजा शातिसें रहा करे,
परम अहिसा धर्म जगतमे-फेल सर्वहित किया करे,
वनकर सतयुग वीर हृदयसें-धर्म उन्नति किया करे,
वस्तु स्वरूप विचार उसीसें-सवदुख सकट सहा करे-विषयोकी-३

४ जैनमजहबमे चौइसवे तीर्थंकर-महावीर स्वामी हुवे,-उन्होंने -चौदह-गुणस्थान-(गुण पैदा होनेके मुकाम.) और मुक्तिका वयान इसतरह फरमाया. उन्हीकी धर्मतालीमसें यहा-कुछ-हाल लिखताहु -सुनिये! मजकुर वयान इसतरह लिखागया है, जिसकों-कम-पढे-हुवे शख्शभी वखूवी समज सकेंगें. चौदह गुणस्थानोंकी सीढियोंपर -जीव-किसतरह चढकर धर्मकी तरक्की करता जाता है,-उसकी उ-मदा तस्वीरभी तीन तरहके रगसें वनीहुई इसमे दर्ज है, मुक्ति जान-नेवाले-जीव-मुक्ति जायगें, मगर दुनियाकी आखरी-कमी-न-हो-गी, सव-जीव-वेंशुमार माने गये है, उसकी पुरजोर दलिले दिइ-गई है,-आत्मा और कर्मप्रकृतिका वयानभी इसमे काविलेगौर होगा. जैसे सोना और मिट्टी कदीमसें मिलेहुवे है.-आत्मा और-कर्म-क-

दीमसें मिले समजो.-आत्मा-दो तरहके बयान किये, एक-मुक्तात्मा -दुसरा बद्धात्मा, कर्मसें रहित मुक्तात्मा और कर्मसें सहित बद्धात्मा, बद्धात्मा परतत्र है, जबतक मुक्ति नही पाई जन्मजन्मातर फरता रहेगा,-जब मुक्त होगा स्वतत्र बनेगा जैसे राजमहेलपर चढनेकी सीढिये बनीहुई होती है, मुक्तिरूपी-महेलकों चढनेकेलिये-चौदह गुणस्थान-रूपी सीढिये बनीहुई हैं,-जो-धर्मगुण इस जीवनें पहले हासिल-न-हुवा हो, वो-हासिल होजाय उसका नाम गुणस्थान कहा, और-वे-गिनतीमें चौदह शुमार किये जाते है,-दिलके पाक और साफ इरादेकों शुभपरिणती, और नापाक-इरादोंको अशुभपरिणती बोलते है,—

[चौदह गुणस्थानके नाम]

५ अवल मिथ्यात्व-गुणस्थान, दुसरा-सास्वादन गुणस्थान, तीसरा-मिश्र-गुणस्थान, चौथा-अव्रत-सम्यग्दर्शन-गुणस्थान, पाचमा देशविरति-गुणस्थान, छठा-प्रमत्तसयत-गुणस्थान, सातमा-अप्रमत्तसयत-गुणस्थान, आठमा-अपूर्वकरण-गुणस्थान, नवमा-अनिवृत्तिबादरसपराय-गुणस्थान, दशमा-सूक्ष्म-सपराय-गुणस्थान, ग्यारहमा-शातमोह-गुणस्थान, बारहमा क्षीणमोह-गुणस्थान, तेरहमा-सयोगि-केवली-गुणस्थान, और चौदहमा-अयोगि-केवली-गुणस्थान,-ये-चौदह गुणस्थानके नाम हुवे, ये-गुण-जब कोई जीव हासिल करे मुक्ति पासके-जबतक-ये-गुण हासिल नही किये बद्धात्मा है, बहिरात्मा-अतरात्मा-और परमात्मा-ये-भेदभी-काबिल जाननेके-है,—

६-[आठतरहके कर्म-और-उनका बयान]

अवल ज्ञानावरणीय कर्म, दुसरा-दर्शनावरणीय कर्म, तीसरा वेदनीय कर्म, चौथा मोहनीय कर्म, पाचमा आयुष्यकर्म, छठा नामकर्म, सातमा गोत्रकर्म, और आठमा-अतरायकर्म,-ये-आठ कर्म-हरेक-जीवके शाथ अनादिकालसें लगेहुवे हैं,-पेस्तरके कर्म-भोगे और-

रागद्वेष-रूप-उपाधिसें फिर-नये कर्म बाधे, इसतरह-अनतकाल हो-गया-संसारमे भ्रमण करता है,-पेस्तरके-कर्म-भोगलेवे और समता-भावमे रहकर आइंदे-नये-कर्म-न-बाधे-इस जीवकी मुक्ति होमके, अगर समताभाव-न-रखे-और फिर नये कर्म बांधता-जाय-तो-मु-क्ति-न-होगी. संसारके जन्म-मरणमे फिरता रहेगा.-आठ कर्मोमें -अवल ज्ञानावरणीयकर्म-उसको कहते है, जो-इस जीवके ज्ञानगुणमे खलल डाले;-पूर्वजन्ममे जिस जीवने ज्ञानकी-या-ज्ञानपुस्तकोंकी-बेंअदबी किई हो-उसको इस जन्ममे ज्ञान पढना नही आता. एक शख्श ऐसा होशियार है,-जो-चदअर्सेमे-इल्म पढकर कामील हो-जाता है. और एक-शख्श वर्सोंतक महेनत करे, मगर उसकों इल्म हासिल नही होता. एक औरत ऐसी है-जो-चदअर्सेमे इल्म पढ लेती है,-और संगीत कलामे होशियार होजाती है.-एक औरत व-र्सोंतक-ताना-रीरी-करती रहे-मगर उसकों सगीत कलाका इल्म हासिल नही होता, बतलाइये! इसकी क्या! वजह है? इसकी यही वजह है,-उसने पूर्वजन्मम ज्ञानकी इज्जत नही किई थी, दुसरा दर्श-नावरणीय कर्म-जो-धर्मश्रद्धामे-खलल डाले, सोचो! एक शख्श धर्मपर इसकदर कामील एतकात है,-जो-उसकों कोई-धर्मसें गिरा नही सकता. और एक शख्श ऐसा है,-जिसको धर्मपर एतकातही नही आता, चाहे-उसकों कितनाही धर्मशास्त्र सुनाओ,—

७ आराम-और-तकलीफ-पेंश करे, उसका-नाम-वेदनीय कर्म है,-दुनियामें-कई-खुशनसीब-ऐसे आरामतलब है,-जिनकों कभी-तकलीफ पेंश नही हुई, और कई-ऐसे-तकलीफमें है-जिनकों-कभी -आराम नही मिला, मोहनीयकर्म-उसका नाम है,-जो-तमाम-चीजोंपर-मोह-पैदा करे.-इस कर्मसे फतेह पाना मुश्किल बात सम-जीये.-अगर धर्मशास्त्रकों सुनकर धर्मकों-उमदा तौरसें-समजे-जभी -इस कर्मसें फतेह पासके.-जितनी उम्र-पूर्वजन्ममे-हासिल किई है,-उसको-पुरी तौरसें-भोगना-उसका नाम-आयुष्यकर्म है,-नाम-

कर्मके-कई-भेद है.-अछे कुलमे या-साधारण कुलमे पैदा होना-उसका नाम-गोत्रकर्म है,-दिलपसद चीज मिलनेमे-देर-होना, या-न-मिलना इसका नाम अतराय कर्महै,-मुवाविक फरमान जैन-शास्त्रके आठकर्मोका-बयान खतम हुवा.-मोहनीयकर्मके उदयसे-दिलमे-तरह-तरहके इरादे पैदा हो, अतरायकर्मके उदयसे दिलपसद चीज-मिले नही.-दिलपसद चीज-न-मिलनेपर रज-पैदा हो,-*ज्ञानावरणीय कर्मके उदयसे-उपाय-सुझे नही-और बेचैनी-चढती* रहे,-इसीलिये धर्मशास्त्रोंमे-कर्मकी-विचित्रगति बयान फरमाई —

८-[अवल मिथ्यात्वगुणस्थान,)

(अनुष्टुप्-वृत्त-)

अदेवागुर्वधर्मेषु-या-देवगुरुधर्मधीः
तन्मिथ्यात्व भवेदूव्यक्त-अव्यक्त मोहलक्षण. १
अनाद्यव्यक्तमिथ्यात्व-जीवेऽस्त्येव सदा पर,
व्यक्तमिथ्यात्वधीप्राप्ति-र्गुणस्थानतयोच्यते. २
मद्यमोहाद्यथा जीवो-न-जानात्यहित-हित,
धर्माधर्मा-न-जानाति-तथा मिथ्यात्वमोहित.-३
अभव्याश्रितमिथ्यात्वेऽनाद्यनता स्थितिर्भवेत्
सा भव्याश्रितमिथ्यात्वे-ऽनादिसाता पुनर्मता, ४

(अर्थ') अदेव-अगुरु-और-अधर्मम देव-गुरु-धर्मका खयाल करना इसका नाम-व्यक्तमिथ्यात्व है, अव्यक्त-मिथ्यात्व-जीवमे अ-नादिकालसें मौजूद है,-उसमेसें-व्यक्तमिथ्यात्वमे आना इसका नाम गुणस्थान कहा अव्यक्त मिथ्यात्वमे देवगुरु धर्मका बिल्कुल खयाल नही होता,-व्यक्तमिथ्यात्वमे इतना खयाल पैदा हुवा, यही गनीमत समजो-जो-शख्श जुठे तत्वकों-सचेतत्वमानने लगा-तो-कभी *सचेकीभी तलाश करेगा मगर-जो-धर्मकी बिल्कुल तलाश नही* करता उसकों-धर्म-कैसे मिलेगा? इस बातको सोचो! जैसे शरा बके नशेमें गाफिल बनाहुवा शख्श-भलेबुरेकों नही पहेचानता-

वैसे मिथ्यातत्वमे गाफिल बनाहुवा-शख्श धर्म-और-अधर्मको नही पहेचान सकता, अभव्यजीवकी अपेक्षा मिथ्यात्वकी स्थिति अनादि अनंतकालतक और भव्यजीनकी अपेक्षा-अनादि-सांत कालतक फरमाई,-मिथ्यात्वगुणस्थानपर-बंधमे (१२०) कर्मप्रकृति होती है.-उदयमे (१२२) उदीर्णामेभी (१२२) और सत्तामें (१४८) कर्मप्रकृती होती है,—

२-[दुसरा सास्वादन-गुणस्थान,]

(अनुष्टुप्-वृत्त,)

अनादिकालसभूत-मिथ्याकर्मोपशातितः
स्यादौपशमिकं नाम-जीवे सम्यक्त्वमादितः १
एकस्मिन्नुदिते मध्यात्-शातानतानुबंधिना
आद्योपशमिसम्यक्त्वशैलमौलेः परिच्युतः २

(अर्थः) अनादिकालका-मिथ्यात्वकर्म-उपशात होनेपर जीवकों अव्वल उपशमसम्यक्त्व पैदा होता है,-और उसीसे उसका-एतकात सचे देवगुरु और सचे धर्मपर जमता है,-फिर अगर अनतानुबधि-कषायोंमे एकभी उदय होजाय-तो-उस-एतकातसे गिरभी जाता है, और-वो-गिराहुवा जीव एक समयसें लेकर-छह-आवलीतक मिथ्यात्व गुणस्थानपर नही पहुचा, उतना-अर्सा-सास्वादन-गुणस्थानका है. इस गुणस्थानपर (१०१) कर्मप्रकृतिका बध होता है. (१२१) प्रकृतिका उदय, (१११) प्रकृतिकी उदीर्णा,-और (१४७) प्रकृतिकी सत्ता रहती है, जिननाम-कर्मकी प्रकृति-इस गुणस्थानपर इसलिये सत्तामें नहीं होती, जिननाम कर्मवाला-जीव-इस गुणस्थानपर नही आता, और-वो-ग्यारहमे गुणस्थानसें गिरताभी नही. सास्वादन गुणस्थानका-टाइम-छह-आवलीप्रमाण-बहुत थोडा, मजकुर गुणस्थान-भव्यजीनकोंही होता है,-अभव्यजीनकों नही होता, भव्यजीनकोभी -उसीकों होगा-जिसको अर्द्ध-पुद्गल-परावर्त्त-संसारभ्रमण बाकी रहगया हो,—

१० [तीसरा-मिश्र-गुणस्थान]

(अनुष्टुप्-वृत्त)

मिश्रकर्मोदयाज्जीवे-सम्यगमिथ्यात्वमिश्रित
यो भावोंतर्मुहूर्त्त स्यात्-तन्मिश्रस्थानमुच्यते, १

(अर्थः) मिश्र-कर्मके उदयसें जीवको-जो-सम्यक्त्व और मिथ्यात्व-मिश्रितभाव अतर्मुहूर्त-कालतक-रहता है, उसकों मिश्रगुणस्थान कहा. इस गुणस्थानपर-जीव-परभवका आयुष्य नही बांधता. और मृत्युभी इस गुणस्थानपर नही पाता.

आयुर्बध्नाति-नो-जीवो-मिश्रस्थो म्रियते न च,
सुदृष्टिर्वा-कुदृष्टिर्वा-भूत्वा मरणमश्नुते,-२
सम्यग्मिथ्यात्वयोर्मध्ये-आयुर्येनार्जित पुरा.
म्रियते तेन भावेन-गतिं याति तदाश्रितां,-३

(अर्थ) मिश्रगुणस्थानपर-जीव-परभवका आयुष्य-न-बांधे, और इस गुणस्थानपर-मरेभी-नही, कामील एतकात होकर-या-एतकातसें-गिरकर-आयुष्य बांधे-या-इतकाल हो सम्यक्त्व-अवस्थामे-या-मिथ्यात्व अवस्थामे-जिस जीवने परभवका आयुष्य बांधा हो,-वो-जीव मरतेवख्त-उसी भावमे आनकर-मृत्यु-पावे, और उसीके मुताबिक गति पावे, चौदह-गुणस्थानोंमे-जीव-मिश्रगुणस्थान-क्षीणमोह गुणस्थान-और-सयोगिकेवली-गुणस्थानपर-मृत्यु-न-पासके-बाकीके ग्यारह गुणस्थानपर-मृत्यु-पासके मिथ्यात्वगुणस्थान-सास्वादन गुणस्थान और-अव्रतसम्यग्दर्शन-गुणस्थान-इन-तीनों गुणस्थानोंमेंसें एक-गुणस्थानको-शाथ लेकर-जीव-परभवमे जाता है,-इस-गुणस्थानपर (७४) कर्मप्रकृतिका बंध होता है, (१००) कर्मप्रकृतिका उदय -(१००) कर्मप्रकृतिकी-उदीर्णा-और (१४७) कर्मप्रकृति-सत्तामे रहती है,-

११ [चौथा-अव्रत-सम्यगदर्शन-गुणस्थान]

(अनुष्टुप्-वृत्त,)

या-यथोक्तेषु तत्त्वेषु-रुचिर्जीवस्य जायते,
निसर्गादुपदेशाद्वा-सम्यक्त्व-हि-तदुच्यते. १
द्वितीयानां कषायाणां-उदयाद्व्रतवर्जित,
सम्यक्त्व केवल यत्र-तच्चतुर्थ गुणास्पद, २
उत्कृष्टास्य त्रयस्त्रिंशत्सागरा साधिका स्थितिः,
तदर्द्धपुद्गलावर्त्तभवैर्भव्यैरवाप्यते, ३
कृपाप्रशमसवेगनिर्वेदास्तिक्यलक्षणाः
गुणा भवति यच्चित्ते-स स्यात्सम्यक्त्वभूषित' ४

(अर्थः) सचे देवगुरु और सचे धर्मपर कामील एतकात होना इसका नाम-अव्रतसम्यग्-दर्शन-गुणस्थान कहा, किसी शख्सको-आपही-आप-धर्मपर एतकात आजाता है.-और-किसीकों धर्मशास्त्र सुननेसें-आता है, एतकात पानेके-ये-दोही-रास्ते फरमाये,-किसी शख्सकों कितनाभी-धर्मशास्त्र सुनाओ, मगर उसकों धर्मपर एतकात नही-वेठता. यह उसके पूर्वसचित-कर्मकाही-दोष समजो,-मजकुर गुणस्थान-चारों-गतिमे हासिल होसकता है,-और-जिस-जीवके अर्द्ध-पुद्गल-परावर्त्त-काल ससारभ्रमण बाकी रहे, उसीकों यह गुण-स्थान प्राप्त होसकता है,-इस गुणस्थानवाला भावसें-व्रत-नियम-नही करसकता, मगर सचे धर्मपर पावद वनारहता है,-सम्यक्त्वधारी-जीव-दुनियाके कामोंको पिछे-और धर्मके कामको अवल करता है) कृपा-प्रशम-सवेग-निर्वेद और-आस्तिक्य-ये-पाच गुण-सम्यक्त्व-धारी-जीवमे-जरूर-होने चाहिये. और इन्ही-गुणोंसें उसकी तरकी होती है,-इस गुणस्थानकी स्थिति (३३) सागरोपम-कालसे कुछ ज्यादा फरमाई, सम्यक्त्वधारी-जीव-सम्यक्त्व हालतमे स्वर्ग-गतिका -आयुष्य वांधे, क्षायिकसम्यक्त्ववाला-जीव-तीन-या-चार भवमे मुक्ति पावे. इसगुणस्थानपर (७७) कर्मप्रकृतिका वंध कहा, (१०४)

कर्मप्रकृतिका उदय, (१०४) कर्मप्रकृतिकी-उदीर्णा-और (१४८) कर्मप्रकृति सत्तामे रहती है,—

१२ [देशविरति-गुणस्थान]

(अनुष्टुप्-वृत्त)

प्रत्याख्यानोदयादेशविरतिर्यत्र जायते,
तत्-श्राद्धत्व-हि-देशोनपूर्वकोटिगुरुस्थितिः १
आर्त्त रौद्र भवेदत्र-मद धर्म्य-तु-मध्यम,
पट्कर्मप्रतिमाश्राद्धव्रतपालनसंभव,-२

(अर्थ) जिस जीवकों थोडेभी-व्रत-नियम भावसें उदय आजाय उसका नाम देशविरति गुणस्थान कहा,-इस गुणस्थानकी-स्थिति कुछ -कम-पूर्वकोटिकालतक कही.-आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान-ज्यादा और धर्मध्यान-मध्यमस्थितिमें रहता है, इस गुणस्थानपर (६७) कर्मप्रकृतिका बंध-होता है, उदयमे (८७) कर्मप्रकृति, उदीर्णामेंभी (८७) और सत्तामे (१४८) कर्मप्रकृति-रहती है,-गृहस्थधर्मके पट्कर्म-और श्रावकधर्मके-व्रत-नियम इस गुणस्थानपर उदय आते हैं,—

देवपूजा गुरूपास्ति'-स्वाध्यायः सयमस्तपः
दान चेति गृहस्थाना-पट्कर्माणि दिनेदिने, १

(अर्थः) हमेशा देवपूजन करना, गुरुलोगोंकी खिदमतमे जाना, धर्मशास्त्रका अध्ययन करना,-व्रतनियम इखितयार करना -तप करना, और मुताबिक अपनी ताकातके खैरात देना-ये-पट्कर्म-गृहस्थोंके लिये फरमाये, किसी जीवकों-तकलीफ-न-देवे. जुठ-न-बोले जुठी गवाही-न-देवे, जुठे लेख-न-लिखे, कमी जैसी तोल-न-करे विनाहुक्म किसीकी चीज-न-लेवे, मिलीहुई दौलतमे शन करे,- चारों दिशामे जानेआनेकी-हद-बाधे, सामायिक-देशावकाशिक और पौषधव्रत करे, स्वधर्मि-वात्सल्य करे. ये-सब पुन्यके काम है, -जिनका एतकात धर्मपर नही है-वे-चाहे इन बातोंकों पसद-न-

करे, मगर धर्मशास्त्रके फरमानकों बयान करना-अछे लोगोंका फर्ज है-और-वही फर्ज अदा किई-जा-रही है,-मेरी दौलत और जहागिरि चली-न-जाय, मेरे कुटुंब कबिलोंका-वियोग-न-होजाय-इस बातके फिक्रमें गायब रहना कोई जरूरत नही, धर्मके काममें शोक-सताप रखना हुक्म नही,-दुनियामें-सारवस्तु धर्म है, देवद्रव्य देवके काममें और धर्मद्रव्य धर्मके काममे तुर्त खर्चे नही, दरसाल एक-जैनतीर्थकी जियारत-न-करे, श्रावकके-व्रत-नियम न लेवे और अध्यात्मज्ञानकी बाते बनावे-इससे क्या हुवा? श्रावकधर्मके गुण हासिल होना चाहिये, इस गुणस्थानपर (७७) कर्मप्रकृतिका बंध, (१०४) कर्मप्रकृतिका उदय, (१०४) कर्मप्रकृतिकी उदीर्णा और (१४८) कर्मप्रकृति-सत्तामे रहती है,—

१३ [छठा-प्रमत्तसयत-गुणस्थान.-]

(अनुष्टुप्-वृत्त)

कषायाणा चतुर्थाना-व्रती तीव्रोदये सति,
भवेत्प्रमादयुक्तत्वात्-प्रमत्तस्थानगो मुनिः १

(अर्थः) इस गुणस्थानपर सज्वलन-कषायका-उदय रहनेसे इसका नाम-प्रमत्तसंयत गुणस्थान कहा, दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार करे-वो-इस गुणस्थानपर कदम रखे -दुनिया छोडकर साधु होना-सहज-बात-नही. और साधु होकर व्रतनियम-पालन-करना यहभी कुछ-सहज बात नही. आलादर्जेकी तकदीर हो-जब-मजकुर गुणस्थान हासिल होसके आजकल पहले जैसा साधुपना नही रहा, उत्कृष्ट सयमी-पूर्ण क्रियापात्र-मुनि-पेस्तरके जमानेमें होते थे, आजकल-जैसा समय है-वैसे साधु-मौजूद है,-अगर कोई जैनमुनि उत्कृष्टसयमी-पूर्णपात्र होना चाहे-तो-इस आगे लिखी इबारतकों पढे. पेस्तरके जैनमुनि-गाम-नगरके बाहर उद्यान-या-वनखड-वगेरामे रहते थे, -आजकल-वैसा-कहा होसकता है,? गाम-नगरमें रहना शुरू हुवा. -जैनमुनिकों-नवकल्पी विहार करना कहा.-अगर कोई-जैनमुनि-वर्स-छह-महिनें-एक-जगह ठहरे-तो-उत्सर्गमार्ग-कहा रहा?-

जैनमुनिको-दिनमे-एकदफे तीसरे प्रहर भिक्षाकों जाना शास्त्रफरमान है. अगर कहाजाय पहले जैसा वख्त नही रहा, शरीरकी ताकात-कम-होती जाती है, इसलिये सवेरवख्त चाह-दूध, और दुफेर-शामको आहार लेनेजाना पडता है,-तो-सबुत हुवा-आजकल उत्सर्ग-मार्गपर चलना कम-बनसकता है, जैनमुनिकों दिनमे नींद लेना हुक्म नही अगर कहाजाय पहेले जैसी ताकात नही रही. इसलिये शरीरकों आराम पहुचानेकेलिये दिनमे नींद लेना पडता है-तो-सबुत हुवा,-आजकल उत्सर्गमार्गपर-चलना-कम-बनता है.—

१४ जैनशास्त्रोंमे साफ बयान है,-जैनमुनि-किसीके-लडकेकों विना हुक्म वारीशोंके दीक्षा-न-देवे,-अगर देवे-तो-तीर्थंकर देवोंकी हुक्मअदुलि होगी विना हुक्म वारीशोंके दीक्षा दिई जायगी-तो-दुनियामे धर्मकी कमजोरीहोगी. इधर तीर्थंकरोका हुक्म नही, अगर कहाजाय-रिस्तेदार लोग हुक्म-न-देयगें, फिर दीक्षा लेनेवालोंकी -मुराद-हासिल-कैसे होगी? जवानमे तलन करो. इस बातका फिक्र अपनेकों-क्यों-?-चेला-किसीको तारनेवाला नही. अपनी-करनीसें तरना-है,-फिर शिष्य करनेके खयालमे-क्यों-पडना?-इसलिये सोच-समजकर दीक्षा देना मुनासिब है,-जैनमुनिकों-अप्रतिबद्ध-होकर विहार करना चाहिये. रास्तेमे-श्रावक-श्राविका-नोकर वगेराकी -मदद-नही-लेना, अगर मदद लेवे-तो-यह-बात खिलाफ जैनशास्त्रके है, उत्सर्ग-मार्गपर चलना-और-पूर्णक्रियापात्र बनना-तो-शास्त्रके हुक्मकी तामील करना चाहिये उपवास-व्रत करनेकेलिये-शास्त्रफरमान है,-अगले पिछले-दिन एकाशन करना.-जन-चार-टक छोडे सावीत होगें.—

१५ जैनमुनिकों योगवहन करना-तो-जिस जैनशास्त्रका-योग-चलता हो, उस जैनशास्त्रका-मूलपाठ-और उसका अर्थ-कठाग्र करना चाहिये कोरी-तपस्या करके-योगवहन-होगया समजना गलत है,-विदून ज्ञानके अकेली क्रिया कारआमद नही फरमाई,-अगर कोई

जैनमुनि-आचार्य,-उपाध्याय, प्रवर्त्तक, गणी-या-गणावछेदक पद-वी लेना चाहे-तो-पहले-उस पदवीके गुण-हासिल करे. अगर-कोई -यतिजी-हो-तो-उनकोभी-पचमहाव्रत पालन करना कहा, पचम-हाव्रत-और दशविध-यतिधर्म-पाले उनका नाम यतिजी है,-मुनि-यति-संयमी-अणगार-श्रमण-या-निर्ग्रंथ-ये-सब-मुनि पदकेही नाम है,-जैनयतिजीकों जैनशास्त्रके फरमानमें-छुट-नही-मिली-जो -खिलाफ जैनशास्त्रके वरताव करे,—

अस्तित्वान्नो कपायाणा-अनार्त्तस्यैव मुख्यता,
आज्ञाद्यालम्बनोपेत-धर्मध्यानस्य गौणता,-२

(अर्थः) इस प्रमत्तसयत-गुणस्थानपर आर्त्तध्यानकी मुख्यता-और धर्मध्यानकी गौणता रहती है, धर्महीं-परभवमे शाथ चलेगा-ऐसा खयाल दिलमें-पैदा होना इसका नाम धर्मध्यान है,-और-धर्म-ध्यान-इस जीवको-अछी गतिमे पहुचानेवाला है,-अतरायकर्मके उदयसें-जीवकों-चीज-मिले नही. और दिलमे चाहना वनी रहे, इससे शिवाय अशुभ-कर्मके कोई फायदा नही. इस गुणस्थानपर (६३) कर्मप्रकृतिका बध रहता है, (८१) कर्मप्रकृतिका उदय, उदी-र्णामी (८१) कर्मप्रकृतिकी और सत्तामें (१४८) कर्मप्रकृति वनी रहती है,—

१६ [सातमा-अप्रमत्त-सयत-गुणस्थान]

(अनुष्टुप्-वृत्त)

चतुर्याणा कपायाणा-जाते मदोदये मति,
भवेत्प्रमादहीनत्वात्-अप्रमत्तो महाव्रती, १
सप्तकोत्तरमोहस्य-शमनाय क्षयाय-वा,
सद्ध्यानसाधनारभ-कुरुते मुनिपुगवः २
धर्मध्यान भवत्यत्र-मुख्यवृत्त्या जिनोदितं,
रूपातीततया शुक्ल-मपि स्यादंशमात्रतः-३

(अर्थ.) सातमें गुणस्थानपर सज्वलन-कषायका मद उदय होनेसें प्रमाद-कम-होजाता है, और प्रमाद-कम-होनेपर-मुनि-अप्रमत्त गुणस्थानपर कदम रखते है-फिर मोहनीय कर्मकी सात प्रकृतिको-उपशम-या-क्षय करनेकेलिये-ध्यान करनेकी-शुरआत करते है. इस गुणस्थानपर-धर्मध्यानकी पुख्तगी और-शुक्लध्यानका-अशमात्र-हिस्सा-इजाद करसकतेहै, यहापर योगदृष्टि तरकीपर आती है, पदस्थ-पिंडस्थ-रूपस्थ-और रूपातीत-ये-चार तरीके ध्यानके कामयाब होते है,-योगाभ्यासी-मुनि-जनजन उपयोगके शाथ धर्मध्यान करे, इस गुणस्थानपर आये समजना. इस गुणस्थानकी स्थिति-अतर्मुहूर्त-कालकी फरमाई मोहनीय-कर्मका-जन-उपशम हो-जमी-मजकुर सातमा गुणस्थान हासिल होसके. इस गुणस्थानपर (५८) या-(५९) कर्मप्रकृतिका बध होता है, स्वर्गका आयुष्य बाधे जन (५९) कर्मप्रकृतिका बध और स्वर्गका आयुष्य-न-बाधे (५८) प्रकृतिका बध रहता है, उदयमें (७६) प्रकृति, उदीर्णामें (७३) और सत्तामें (१४८) कर्मप्रकृति रहती है,—

१७ [आठमा-अपूर्वकरण-गुणस्थान]

"-अपूर्वात्मगुणाप्तित्वात्-अपूर्वकरण मत,-"

(अर्थ) पहले-जो-गुण-कभी हासिल-न-हुवे हो, वैसे आत्मिक गुण-जहा हासिल हो, उसका नाम-अपूर्वकरण गुणस्थान कहा —

(अनुष्टुप्-वृत्त)

तत्राष्टमे गुणस्थाने-शुक्लसद्ध्यानमादिम,
ध्यातु प्रक्रमते साधु-राद्यसहननान्वित' १
निष्प्रकप विधायाथ-दृढ पर्यकमासन,
नाशाग्रदत्तसन्नेत्र:-किंचिदुन्मीलितेक्षण: २
विकल्पवागुराजालाद्-दूरोत्सारितमानसः
ससारोच्छेदनोत्साहो-योगींद्रो ध्यातुमर्हति, ३

(अर्थः) आठमें गुणस्थानपर-मुनि-शुक्लध्यानकी-शुरूआत करते है, नासाग्रदृष्टि लगाकर पद्मासनमें बैठेहुवे-योगींद्र-थोडे खुलेहुवे कमलकी तरह किंचित् उन्मीलित नेत्र रखकर ध्यान करे, तरह-तरहके विकल्पोंसें-मनकों रोके, ससारके पारपानेके इरादावाले योगीराज-इसकदर ध्यान करनेके काबिल होसकते है, इस गुणस्थानपर-मुनि-दों-तरहकी ध्यानश्रेणी शुरु करते है. एक-उपशम-श्रेणी, दुसरी क्षपक-श्रेणी, उपशम श्रेणीवाले-ग्यारहमें गुणस्थानसें गिरजाते है,-सबब मोहका उपशम किया है, क्षय नही किया, क्षपक श्रेणीवाले दशमें गुणस्थानसें बारहमें गुणस्थानपर चलेजाते है,-इसलिये-वे-गिरते नही.-इस गुणस्थानपर-शुक्ल ध्यानका पहेला-पाया-उदय आता है,-सोहं-सोहं-रटना-शुरु होती है,-और-बंकनाल-षट्चक्र-भेदकर दशमद्वारमें ज्योति-पैदा होती हैं, इस गुणस्थानपर-बंधके-सात-हिस्से-कायम करना चाहिये, अवल हिस्सेंमे (५८) कर्मप्रकृतिका-बंध. दुसरे-तीसरे-चौथे-पाचमे-और छठेमें (५६) कर्मप्रकृतिका-और सातमें हिस्सेमे (२६) कर्मप्रकृतिका बंध रहता है, उदयमे (७२) कर्मप्रकृति उदीर्णामे (६९) और सत्तामें (१३८) कर्मप्रकृति रहती है,—

१८ [नवमा-अनिवृत्ति-बादर-सपराय-गुणस्थान.]

"-भावानामनिवृत्तित्वादनिवृत्तिगुणास्पद,-"

(अर्थ) सद्भावोंकी-अनिवृत्ति होनेसे-इस गुणस्थानका-नाम अनिवृत्ति-बादरसपराय-गुणस्थान कहा, इसका मतलब-यह-हुवा, इस गुणस्थानमे-कुविकल्पोंका-नाश होजाता है, मगर कषायका बिल्कुल नाश नही होता. बल्कि! उपशांत होता है, जैसे राखमें दबीहुई अग्नि रहती है कषाय-दबे-रहते है, इस गुणस्थानपर (२२) कर्मप्रकृतिका बंध, (६६) कर्मप्रकृतिका उदय, (६३)की-उदीर्णा-और-(१०२) कर्मप्रकृति सत्तामे रहती है,—

१९ [दसमा-सूक्ष्म-सपराय-गुणस्थान.]

"-अस्तित्वात्-सूक्ष्मलोभस्य-भवेत्सूक्ष्मकषायक-"

(अर्थः) इस गुणस्थानपर-सूक्ष्म-लोभ रहजानेकी वजहसें इसका नाम सूक्ष्मसपराय-गुणस्थान कहागया.—

(अनुष्टुप्-वृत्त)

ततोसौ स्थूललोभस्य-सूक्ष्मत्व प्रापयन् क्षणात्,
आरोहति मुनिःसूक्ष्म-सपरायगुणास्पद,-१

(अर्थः) नवमे गुणस्थानके बाद-मुनि-स्थूललोभको पतला करते है, और दशमे सूक्ष्मसपराय-नामके गुणस्थानपर कदम रखते है, इस गुणस्थानपर (१७) कर्मप्रकृतिका बध रहता है, (६०) कर्मप्रकृतिका उदय, और (१०२) कर्मप्रकृति सत्तामें रहती है —

२० [ग्यारह्मा-उपशातमोह-गुणस्थान]

"-शमनाच्छातमोह स्यात्-"

(अर्थः) मोहकर्मका उपशात होनेसें इसका नाम उपशातमोह गुणस्थान कहा, उपशात मुनिको जब मोहनीय कर्मका उदय होजाय-तो-इस गुणस्थानसें नीचे गिरजाते है -श्रुतकेवली-आहारिक शरीरी-रिजुमति-मन.पर्यायज्ञानी-और उपशातमोही-ये-सब प्रमादमे पडकर ससारचक्रमे फिर गिरजाते है. इस गुणस्थानपर उपशम-सम्यक्त्व-उपशम चारित्र और उपशम जनित भाव होते है, क्षायिक और क्षायोपशमिक भाव नही होते.

(अनुष्टुप्-वृत्त)

एकादश गुणस्थान-क्षपकस्य-न-सभवेत्,
किंतु सूक्ष्मलोभाशान्-क्षपयन् द्वादश व्रजेत्-१

(अर्थ) क्षपकश्रेणीवाले-मुनिको ग्यारहमे गुणस्थानपर जानेकी जरूरत नही,-वे-सूक्ष्मलोभके अशोंको क्षय करके बारहमें गुणस्थानपर चलेजाते है,-इस गुणस्थानपर (१) शातावेदनीय-कर्मप्रकृतिका

नध रहता है, (५९) कर्मप्रकृतिका-उदय, और (१४८) कर्मप्रकृति सत्तामे रहती है,—

२१ [वारहमा-क्षीणमोह-गुणस्थान]

"-क्षपणात्-क्षीणमोहकं,-"

(अर्थः) इस गुणस्थानमे-मोहकर्म-विल्कुल क्षय होजाता है,-इसलिये इसका नाम क्षीणमोह गुणस्थान कहा, इसमे-शुक्ल-ध्यानके दुसरे पायेका ध्यान होता है. यहापर क्षपकश्रेणी खतम करते है, और-शुक्ल-ध्यानके दुसरे पायेमे ध्यान करतेहुवे-मुनि-ज्ञानावरणीय कर्म-दर्शनावरणीयकर्म-मोहनीयकर्म-और अतरायकर्म-इन-चार-घातीकर्मोका क्षय करके वारहमे गुणस्थानकी अखीरमे-केवलज्ञान-पाते है,-केवलज्ञान-वो-चीज है,-जिसके जरीये दुनियाके तमाम पदार्थ-अपने आप जान सके. इस गुणस्थानपर (१) शाता-वेदनीय-कर्म-प्रकृतिका वध रहता है, उदयमे (५७) कर्मप्रकृति,-और सत्तामे (१०१) कर्मप्रकृति-वाकी-रहती है,—

२२ [तेरहमा-सयोगिकेवली-गुणस्थान]

मन वचन और कायाके योग-मौजूद होनेकी-वजहसे इसका नाम-सयोगि-केवली-गुणस्थान कहा.—

(अनुष्टुप्-वृत्त)

भावोऽत्र क्षायिकः शुद्धः-सम्यक्त्व-क्षायिक परं,
क्षायिक-हि-यथाख्यात-चारित्र तस्य निश्चित, १
चराचरमिदं विश्व-हस्तस्थामलकोपम,
प्रत्यक्ष भासते तस्य-केवलज्ञानभास्वतः २
विशेषात्तीर्थकृत्कर्म-येनास्त्यजितमूर्जितं,
तत्कर्मोदयतोऽत्रासौ-स्याज्जिनेंद्रो जगत्पतिः ३
स सर्वातिशयैर्युक्तः-सर्वामरनरैर्नतः,
चिर विजयते सर्वोत्तम तीर्थं प्रवर्तयन्-४

(अर्थ) इस गुणस्थानपर क्षायिक भाव, क्षायिकसम्यक्त्व-और यथाख्यातचारित्र मौजूद रहता है, उपशम और क्षायोपशमिक भाव यहा नही रहते, केवलज्ञानरूपी-सूर्यके उदय होनेसे दुनियाके तमाम पदार्थ-उनको प्रत्यक्ष दिखाई देते है, जैसे हाथकी हथेलीमे-रखा-हुवा-आवला बरावर दिख पडता है, केवलज्ञानीकों-तमाम-लोका-लोक प्रत्यक्ष दिखपडते है, जिन्होंने पूर्वजन्ममे विशतरहके धर्ममार्ग मेंसे-एकभी-धर्ममार्गका आराधन करके तीर्थंकर नामकर्म-हासिल किया हो-वे-यहा-तीर्थंकर-जगत्पति-कहलाते है, और उनकी खिदमतमे-इद्र-देवते वगेरा हाजिर रहते है.-जिन्होंने पूर्वजन्ममें तीर्थंकर नामकर्म हासिल नही किया और-बजरीये क्षपकश्रेणीके-केवलज्ञान हासिल किया हो-उनको सामान्यकेवली कहते है.-तीर्थं-करदेव-जब-आमलोगोंको व्याख्यान देते है, देवतेलोग उनके व्या-ख्यानकेलिये-एक-उमदा व्याख्यानघर बनाते है,-जिसकों शास्त्रोंमें समवसरण कहा.-जिसमे-सोना-जवाहिरातका काम उमदा तौरसें बनाहुवा होता है,-उसमे-रत्नसिंहासनकपर बेठकर-तीर्थंकरदेव-आ-मलोगोंकों मालकोश-रागमे-तालीमधर्मकी देते है,-इद्रदेव-दिव्य-बाजोंसें-उनके-स्वरकी-सगत करते है,—

अशोकवृक्ष. सुरपुष्पवृष्टि.
दिव्यध्वनिश्चामरमासन च,
भामडल दुदुभिरातपत्र
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणा, १

(अर्थ) तीर्थंकर देवोंके समवसरणमे अशोकवृक्षकी छाया, देवता ओंकी किइहुई फुलोंकी वारीश, छत्र-चवर, दिव्यबाजोंकी ध्वनि, आसन भामडल-और-देवदुदुभि ये-आठ-प्रातिहार्य-होते है,—

२३ तीर्थंकरदेव-जब-मुल्कोंकी सफर करते है.-एक-धर्मचक्र-उनके आगे चलता है देवते उनकी खिदमतमे हाजिर रहते है. और

जहां-कुछ अर्सा कयाम फरमाते है,-वहां-लोग उनके व्याख्यान सुन नेको आते है,-और-सुनकर खुश होते है,

(अनुष्टुप्-वृत्त)

वेद्यते तीर्थकृत्कर्म-तेन सद्देशनादिभिः,
भूतले भव्यजीवाना-प्रतिबोधादि कुर्वता, ५

(अर्थः) तीर्थंकर नामकर्मकी-प्रकृतिकों-बजरीये धर्मतालीमके अमलमे लाकर-भव्यलोगोंकों-प्रतिबोध देते है. और मुल्कोंकी सफर करके आमलोगोंकों-धर्मका-फायदा पहुचाते है,-इस गुणस्थानपर (१) शातावेदनीय-कर्मप्रकृतिका बंध रहता है. (४२) कर्मप्रकृतिका उदय, और (८५) कर्मप्रकृति-सत्तामे रहती है,—

२४ [चौदहमा-अयोगि-केवली-गुणस्थान]

इस गुणस्थानपर-मन-वचन-और कायाके योगका अभाव हो-जाता है. इसलिये इसका नाम-अयोगिकेवली गुणस्थान कहा,—

(अनुष्टुप्-वृत्त)

तत्रानिवृत्तिशब्दात-समुच्छिन्नक्रियात्मक,
चतुर्थं भवति ध्यान-मयोगिपरमेष्ठिनः १
समुच्छिन्ना क्रिया यत्र-सूक्ष्मयोगात्मिकापि-हि,
समुच्छिन्नक्रियं प्रोक्तं तद्द्वार मुक्तिवेश्मनः-२

(अर्थः) इस-अयोगिकेवली गुणस्थानपर-मुक्तात्मा परमेष्ठीकों-अनिवृत्ति-शब्दात-समुच्छिन्नक्रियात्मक-नामका-चौथा पाया शुक्ल-ध्यानका उदय आता है, दरअसल! यह-चौथा-पाया-मुक्तिरूपी-मंदिरका-एक-दरवजा समजो, यहापर-देह-छुट जाता है, और निर्मल-आत्मा-चौदह-रज्वात्मक-लोकके अग्रस्थानमे-जाता है,-जैसे-मिट्टीका-लेंप छुट जानेसें-तुंबा-पानीके उपर-तीर-आता है,-कर्म-रूपी-लेंप छुट जानेसें आत्मा-लोकके अग्रभागपर आजाता है,-जिनकी आठ कर्मरूप-उपाधि-दूर होजाय-जन्म-मरणसें रहित हो,-

वही मुक्तात्मा-कहेजाते है,-इस गुणस्थानपर पहले समयमे (७२) प्रकृतिका क्षय करे. और फिर बाकी रहीहुई (१३) प्रकृतिका अखीरके समयमे-क्षय-करके मुक्तिकों पावे. बाद उनका-जन्म-मरण-नही होता और अपने-सचिदानदमय-आत्मिक सुखमें-पूर्ण रहते है,—

(अनुष्टुप्-वृत्त)

ज्ञातारोऽखिलतत्त्वाना-द्रष्टारश्चैकहेलया,
गुणपर्याययुक्ताना त्रैलोक्योदरवर्तिना, १
अनत केवल ज्ञान-ज्ञानावरणसक्षयात्,
अनत दर्शन चैव-दर्शनावरणक्षयात् २
शुद्धसम्यक्त्वचारित्रे-क्षायिके मोहनिग्रहात्,
अनते सुखवीर्ये च-वेद्यविघ्नक्षयक्रमात्-३
आयुषः क्षीणभावत्वात्-सिद्धानामक्षया स्थिति',
नामगोत्रक्षयादेवा-मूर्त्तानतावगाहना. ४

(अर्थ.) तीन लोकमे रहेहुवे चराचर पदार्थ मुक्तात्माके ज्ञानमें दीख पडते है उनका ज्ञानावरणीय-कर्म-क्षय होनेसें उनकों अनतज्ञान मौजूद है, दर्शनावरणीय-कर्म-क्षय होनेसे-उनमे-अनतदर्शन विद्यमान है, मोहनीय-कर्म-क्षय होनेसे-उनमे क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिकचारित्र-हयात है,-वेदनीय कर्म-और-अतराय-कर्मके क्षय होनेस-उनमें अनतसुख-और अनतबल मौजूद है,-आयुष्यकर्मके-न-होनेसें उनकी-चहा अक्षयस्थिति है, और-नामकर्म-गोत्रकर्मके न होनेमे उनकी-अमूर्त्त-अवगाहना-मौजूद है —

२५-यत्सौख्य चक्रिशक्रादि-पदवीभोगसभव,
ततोऽनतगुण तेषा-सिद्धावक्लेशमव्यय, ५

(अर्थ) जो-सुख-चक्रवर्त्ती-और इद्रको होता है,-उमसें अनत गुण-आत्मिकसुख-सिद्धमहाराजकों-होता है, जो-आत्मस्वरूप-पाना

था, उन्होंनें-पा-लिया, मुक्तिमें आत्मिक सुख है,-संसारिकसुख नही,-अगर मुक्तिमें कोई-संसारिकसुख-कहे-तो-वहेत्तर नही. चौदह-गुणस्थान-मुक्तिरूपी-नगरीकों पहुचनेकेलिये बतौर चौदह पडावके-समजो. जैसे कोई मुसाफिर किसी शहरकों जाता हो,-वीचमें पडाव करता है. मुक्तिके रास्तेमें चौदह पडाव है,-इसमें चौदह गुणस्थान-और मुक्तिकी-जो-तस्वीर दिई है,-उसकों-देखनेसें मालुम होगा,—

(चौदह गुणस्थान-और-मुक्तिका बयान खतम हुवा)

[किताव-शंकरदिग्विजयके-
कितनेक लेखपर समीक्षा]

१ श्रीशंकरदिग्विजय-मूलसहित-शुद्ध गुजराती-भाषांतर-श्रीमाधवाचार्यप्रणीत है-और-जो-श्रीकृष्णलाल गोविंदराम देवाश्रयीने प्रकट किया है,-इसवख्त-मेरे पास मौजूद है,-जो-अहमदाबाद-युनाइटेड-प्रिंटिंग-प्रेसमें-मि.-रणछोडलाल गंगारामने छापा है, जिसके पृष्ट (३८७) है, उसमें जैनमजहबके बारेमें-जो-कुछ लिखा है-उसका इसमें माकुल जवाब दिया है.-"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या," -इस वाक्यपर उनकी राय और-उनके मुकाबिलेमें जैनशास्त्रकी राय लिखीगई है,-किताब शंकरदिग्विजयकी प्रस्तावनामें बयान है, श्रीमाधवाचार्य-तुंगभद्रा-नदीके कनारे पंपा नामके क्षेत्रमें रहते थे,-उनका जन्म-शालिवाहन-शकके तेरहमें सैकेमें हुवा-था, और विजयनगरके हरिहरराय और बुक्करायके वख्तमें मौजूद थे, श्रीमाधवाचार्यका-विद्यारण्यमी-नाम था, किताब-शंकरदिग्विजय-जो-शुद्ध गुजराती भाषांतर सहित-अहमदाबाद-युनाइटेड प्रिंटिंग-प्रेसमें छपी है,-जिसका बयान उपर लिखचुका हु, उसके पृष्ठ (१९९)पर जहा श्रीशंकराचार्यजीका-और-मंडनमिश्रजीका शास्त्रार्थ हुवा लिखा उस जगह बयान है,—

ब्रह्मैक परमार्थसचिदमल-विश्वप्रपचात्मना
शुक्तीरूप्यपरात्मनेव वहला-ज्ञानावृत भासते,
तज्ज्ञानान्निरिखिलप्रपचनिलया-स्वात्मव्यवस्थापर
निर्वाण जनिमुक्तमभ्युपगत-मान श्रुतेर्मस्तक, ६१

(ગુજરાતી ભાષાતર)

વાસ્તવિક સત્ય, ચૈતન્ય અને નિર્મલ એક બ્રહ્મજ અનાદિસિદ્ધ અજ્ઞાનથી આવૃત થવાને લિધે જેમ છીપ-રૂપા-રૂપે પ્રતીત થાય છે, તેમ સઘલા પ્રપચરૂપે પ્રતીત થાય છે એ બ્રહ્મને જાણવાથી જેમા સર્વ પ્રપચનો તથા પ્રપચના કારણથી ભૂતઅજ્ઞાનનો લય થાય છે, એવી-જે-સ્વરૂપસ્થિતિ થાય છે, તેનેજ અમો જન્મમરણાદિકથી રહિત પરમ મુક્તિ માનીયે છીયે અને તેમ માનવામા વેદના મસ્તકરૂપ વેદાતો (ઉપનિષદો) પ્રમાણ છે

समीक्षा, अज्ञानसें आवृत होयाहुवा,-वास्तविकसत्य,-चैतन्यही निर्मल ब्रह्म माना जाय-तोभी-अज्ञानकों दूर करनेकेलिये उपासनामार्ग (यानी) क्रियामार्गकी-जरूरत पडेगी. वेदोंमे बयान है,-स्वर्गकामनावाला शख्श अग्निहोत्र करे, सत्य, ब्रह्मचर्य, और तपसें आत्माकी साबीती मिलती है.-इससें साबीतहुवा, शास्त्रका-अध्ययन-पूजन पाठ-और तप करनाभी जरूरत है,-ज्ञानमार्ग-और उपासनामार्ग-दोनों अपनी अपनी जगह फायदेमद है,-और यहभी सवाल पैदा होगा,-अगर-ब्रह्मही-एक सत्य-और प्रपच-मिथ्या है,-तो-प्रपचकी पैदास किमसें हुई? अगर कहाजाय प्रपचकी पैदाश मायासें हुई -तो-बतलाना होगा, माया-सत्य है-या-असत्य? अगर सत्य है-तो-दो-तत्त्व साबीत होगे, एक माया, दुसरा ब्रह्म, अगर-दो-तत्त्व -मजुर रखेजाय-तो-अद्वैतवाद गलत-ठहरता है, द्वैतवाद साबीत होता है, अगर मायाकों-असत् मानीजाय-तो-असत् मायासें प्रपचकी पैदाश नही होसकती,-अगर कहाजाय-सीपमे जैसे रजतकी भ्राति-होती है,-वैसे अज्ञानसें-एक तरहकी भ्राति पैदा होती है,-तो-

पेस्तर लिखागया है,-अज्ञानकों-दूर करनेकेलिये-शास्त्राध्ययन वगेरा क्रियामार्गकी जरूरत होगी,—

२-आगे-किताब-शंकरदिग्विजयके-पृष्ट (२०७)पर तेहरीर है,—

अतिप्रसक्तेर्नतु केवलस्य,
विशेषणत्वस्य तदभ्युपेय,
भेदाश्रये हींद्रियसन्निकर्षे
न-सन्निकृष्टत्वमिहात्मनेस्ति, ५५

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

શ્રીશંકરાચાર્ય-જો-ભેદના અધિકરણરૂપ-જીવને અને ઇંદ્રિયને સયોગ આદિ સબધ હોય તોજ પ્રત્યક્ષપ્રમા થવી જોઇયે પણ યહા જીવને અને ઇંદ્રિયને સન્નિકર્ષ નથી, તેથી જીવના વિશેષણરૂપ ભેદની માત્ર વિશેષણપણારૂપ સબધથી પ્રત્યક્ષપ્રમા થવી સભવતી નથી જો-અધિકરણના સન્નિકર્ષ વિના એકલા વિશેષણનીજ પ્રત્યક્ષપ્રમા થવી સભવતી હોય તો જે ભૂતલને આપણ દેખતા નથી-તે-ભૂતલમા વિશેષ પણાથી રહેલો ઘટનો અભાવપણ આપણને પ્રત્યક્ષ થવો જોઇયે, એવી રીતના અતિપ્રસગ પ્રાપ્ત થાય છે

(जवाब.) भेदके अधिकरणरूप जीवका और इंद्रियोंका संबंध नही ऐसा कहना इसलिये नही बनसकता-जबतक जीव देहधारी है,-इंद्रियोंका सबध बनारहता है.-अगर जीव और इंद्रियोंका संबंध-न-हो-तो-कोई कार्य-न-होसके. सबुत हुवा.-इंद्रियोंका-और जीवका संबंध है. जब-जीव-देहरहित होकर मुक्ति पायगा,-उस हालतमे-सबध-छुट सकता है. पहले नही छुट सकता,—

३ फिर किताब शंकरदिग्विजयके पृष्ट (२३३)पर-बयान है.—

कलशादिमृत्प्रभवमस्ति यथामृदमतरा-न-जगदेवमिदं,
परमात्मजन्यमपि तेनविना समयत्रयेपि-न-समस्ति खलु,-९४

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

જેમ ઘટ આદિ વસ્તુઓ માટીથી ઉત્પન થયેલ છે માટે ત્રણે

કાલગા માટી વિના છેજ નહી, તેમ આ-જગત્-પરમાત્માથી ઉત્પન્ન થયેલ છે માટે ત્રણે કાલમા પરમાત્મા વિના છેજ નહી —

[आगे ऐसाभी लिखा है,–]

(આ પ્રમાણે પરમાત્મામા જગત્ કલ્પિત હોવાને લિધે જગતની અદરના પુન્ય અને પાપ કલ્પિતજ છે એમ યથાર્થ જાણનારને પુન્યનો કે પાપનો સબધ થવો ઘટેજ નહી,–)

समीक्षा, परमात्मासें जगत् पैदा हुवा–ऐसा प्रमाणसें सावीत नही होता, परमात्मा–राग–द्वेष–काम–क्रोध वगेरा दोषोसें रहित है,–उन कों–इन बातोसे कोई जरूरत नही, दरअसल! सब जीव अपने अपने कियेहुवे–पुन्यपापसें–फल–पाते है,–कल्पित नही होसकते, बल्कि! सचे है,–अगर कहाजाय परमात्मा और जीवात्माम–सिर्फ! अविद्या-काही फर्क है, अगर अविद्या दूर होजाय–तो–यही–जीवात्मा–पर-मात्मा होसके,–इसके जनानमे–शास्त्रअध्ययनकी–जरूरत होगी, अल-बते! ज्ञानमार्ग–वडा है. श्रद्धा–और ज्ञानसें विना क्रियाभी मुक्ति होसकती है, ज्ञानीकों ज्ञानमार्ग और अल्पज्ञकों क्रियामार्गकी जरूरत है, जबतक–कपडा–मेला है,–उसको साफ करनेकेलिये–साबुभी जरू-रत होगी.–कपडा साफ हुवा–फिर कोई जरूरत नही —

४ आगे–किताब–शंकरदिग्विजयके पृष्ठ (२२३)पर इस दलिलकों पेश किई है,—

कथमर्ज्यते जगदशेषमिद कलयन्मृषेति हृदि कर्मफले,
न–फलाय–हि–स्वपनकालकृत–सुकृतादिजात्वनृतबुद्धिहत–९४

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

આ–સઘલુ જગત્ મિથ્યા છે–એમ–હૃદયમા અનુસધાન રાખનારો જ્ઞાની પુરૂષ કર્મના ફલોથી કેમ લેપાય ? નજ લેપાય, સ્વપ્નઅવસ્થામા કરવામા આવેલુ પુન્ય આદિ ખોટુ છે,–એવી બુદ્ધિથી હણાઈ ગયેલુ હોવાને લિધે–કદીપણ ફલ આપતુ નથી, તેમ જાગૃતમા થયેલા કર્મો પણ ખોટા છે, એવી બુદ્ધિથી હણાઈ ગયેલા હોવાને લિધે જ્ઞાનીને કદી પણ–ફલ–આપતા નથી,—

समीक्षा, जगत् मिथ्या है, ऐसा जाननेवाला-ज्ञानी-शरश-मनसें पाप कर्ममे लिप्त-न-रहे-तो-बेशक! उसको निकाचितकर्म-न-बंधे, मगर सबजीव-ज्ञानी नही, कम पढेहुवोंकों-क्रियामार्गभी-फायदेमंद है, स्वप्नअवस्थाम वचन और-काया-बेशक! क्रिया नही करते, मगर नींदकी शुरुआतमे मनमे जैसा चिंतन-हो, उस ध्यानके मुताबिक-पुन्य-पाप हासिल होते रहते है,-जागृत अवस्थामेंभी-मनःपरिणामसें अछा-या-बुरा-जो-कामकिया गया हो, उसका फल जरूर मिलता है, सब धर्मशास्त्रोंका फरमान है,-मनःपरिणामही-बंध-मोक्षका कारण है, मन साफ होगा,-तो-सब अछा है. यह सब शास्त्रोंका-इस-है.—

५ फिर कितान-शंकरदिग्विजयके पृष्ट (२५०)-बयान है,—

त्वन्नासिदेहो घटवदूघनात्मा-रूपादिमत्त्वादिहजातिमत्त्वात्
ममेतिभेदप्रथनादभेद-सम्प्रत्यय विद्धि विपर्ययोत्थ,-७७

(ગુજરાતી ભાષાતર)

તું દેહ નથી, કારણ કે દેહ-તો-રૂપઆદિવાલો હોવાને લિધે, મનુષ્યપણા આદિ જાતિઓવાલો હોવાને લિધે, તથા-મારો છે એમ કહેવાવાથી પ્રત્યક્ષભેદ જણાવાને લિધે ઘટની પેઠે અનાત્મા છે-હું-જાડો છુ-હું-પાતલો છુ, અને-હું-મનુષ્ય છુ, ઇત્યાદિ દેહની સાથે જે અભેદની પ્રતીતિ થાય છે,-તે-તો દેહમા આત્માના અને આત્મામા દેહના પરસ્પર મિથ્યા અધ્યાસથી થાય છે, એમ સમજવુ —

समीक्षा, देहसें आत्मा-जुदा-है, यह बात उस हालतकी है, जब -जीव-देह छोडकर मुक्ति हासिल करेगा, जबतक मुक्ति हासिल नही किई, दुनियादारी हालतमें बेठे है,-तबतक नही-कहा-जा-सकता, देहसें आत्मा अलग-है,-गृहस्थाश्रम पहली-सीढी-है,-पहली सीढी-पर-जो-कर्तव्य करनेका-है,-वही करना चाहिये,-जबतक दुनियाके -एश-आराम-छुटे नही. मनसें लोभ-लालच मीटे नही, तबतक मनःपरिणामकों साफ करनेकी कोशिश करना चाहिये. और उसके

लिये शास्त्रअध्ययन-तप-जप-दान पुन्य वगेरा करनेकी जरूरत है, अलबते! ज्ञानमार्गसें-कई-जीवोंके रागद्वेप-काम-क्रोध दूर होसकते हैं और मुक्तिभी-पासकते हैं. इसलिये ज्ञानमार्ग-और क्रियामार्ग-अपनी अपनी जगहपर-मजुर रखना बहेत्तर है.—

६ आगे किताव शकरदिग्विजयके पृष्ट (२५४)पर-श्रीशकराचार्य जी-मडनमिश्रकों-बजरीये उपदेशके फरमाते है,—

जाग्रत्स्वप्नसुपुप्तिलक्षणमदोवस्थात्रय चित्तनौ.
त्वय्येवानुगते मिथोव्यभिचरद्धीसज्ञमज्ञानतः
ह्यस रज्जिदमशके वसुमतीछिद्राहिदडादिव,
तद्ब्रह्मासि-तुरीयमुज्झितभय मा त्व पुरे चभ्रमीः ९१

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

જેમ રજ્જુના-"આ"-એ અશમા પૃથ્વીના છિદ્રની-સર્પની-અને દડઆદિની મિથ્યા કલ્પના થાય છે-તેમ તુ-કે-જે-ચિન્માત્ર અનુસ્યૂત છે, તેમા જાગ્રત-સ્વપ્ન અને સુષુપ્તિરૂપ પરસ્પરથી ભિન્ન બુદ્ધિની અવસ્થાઓ અજ્ઞાનથી કલ્પાએલ છે, એટલા માટે-તુ-એ ત્રણે અવ સ્થાઓથી-પર-અને નિર્ભય બ્રહ્મજ છે આમ હોવાથી હવે-તુ-આગ લની પેઠે ભુલજે-મા,—

समीक्षा, जाग्रत-स्वप्न-और सुपुप्ति-इन तीनों अवस्थामें दूर ब्रह्मस्वरूप आत्मा उस हालतमे होगा जब मुक्ति पाकर सच्चिदानदमय होगा, जबतक कर्मोसें लिप्त है, जन्ममरणके चक्रमें फिरता है, और अज्ञान मिटा नही. तबतक अज्ञानको दूर करना फर्ज है अज्ञान दूर करनेकेलिये धर्मशास्त्र पढना-या-सुनना फायदेमद कहा, अज्ञानसेही -रज्जुम-सर्पकी-दडकी या-जमीनमें छिद्र होनेकी भ्राति पैदा होगी जब ज्ञान पैदा होगा-तो-भ्रातिही पैदा-न-होगी. जब नि स्पृह होकर-तप-करेगा कर्मोकों-जला-देगा, तब जीवकी मुक्ति होगी मुक्ति हुवे बाद उस मुक्तात्माकेलिये-परम-निर्भय एक-ब्रह्मही है,-और जगत् मिथ्या है,-ऐसा कहना कोई हर्ज नही,—

७ आगे किताब शंकरदिग्विजयके पृष्ट (३६०)पर बयान है,—

प्रतिपद्यतु वाल्हिकान् महर्षी-विनयिभ्यः प्रविवृण्वति स्वभाष्य,
अवदन्नसहिष्णवः प्रविणाः समये केचिदथार्हतामिधाने, १४२
ननु जीवमजीवमाश्रव च-श्रितवत्संवरनिर्जरौ च बधः
अपि मोक्षमुपेपि सप्तसंख्यान्नपदार्थान्कथमेव सप्तभंग्या,-१४३

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

પછી શ્રીશંકરાચાર્ય ત્યાથી વાલ્હિકદેશમા પધારી, શિષ્યોને પોતાના ભાષ્યનુ વ્યાખ્યાન સમજાવતા હતા, તે સમયે જૈનમતમા પ્રવીણતા ધરનારા કેટલાએક વિદ્વાનોએ ત્યા આવીને અસહનતાથી નીચે-પ્રમાણે કહ્યુ ૧૪૨, જીવ, અજીવ, આશ્રવ, સવર, નિર્જરા, બધ, અને મોક્ષ-એ-સાત પદાર્થોને સપ્તભગીની રીતથી તમે કેમ-સ્વીકારતા નથી ? ૧૪૩

समीक्षा, वाल्हिक देशमे कौनसे जैनपंडित-श्रीशंकराचार्यजीके सामने आये थे? उनके नाम-क्यों-नही लिखे?-नाम लिखना जरूरी था और उन जैनपडितोंने-जो-सात पदार्थ-स्याद्वादन्यायसे-बयान-फरमाये-वे-गलत नही थे. देखीये! जीव-और-अजीव पदार्थ-सब मजहबवाले मजुर रखते है,-कोई जड-चेतन कहो, कोई जीव-अजीव कहो, बात एकही-है. आश्रव-सवर-उनका नाम है, जो-कर्मोके आनेके और रोकनेके मार्ग है, जीवोंके शाथ रागद्वेपके सबब कर्मोका बध होना. उसके उदय आनेपर निर्जरा करना और अशीरमे मोक्षपाना,-यह-बात किसी प्रमाणसे बाधित नही, इसलिये गलत नही कहसते, सब पदार्थ-अपने स्वरूपसे अस्ति-और परस्वरूपसे नास्ति है,-इसीका नाम जैनमजहबमें स्याद्वादन्याय है,-और-जो -आगेकी कलममे-बयानभी किया है, आपलोग देख लिजियेगा. रागद्वेप वगेरा अठाराह दोपोंसे रहित जिनेंद्रको जैनमजहबमें-देव-माने है, दुनिया छोडकर-दीक्षा-इख्तियार करे आमलोगोंको सच्चे धर्मकी तालीम देवे, उनका नाम जैनमजहबमे धर्मगुरु-और-सर्वज्ञका

फरमायाहुवा जैनमजहबमे-धर्म मानागया है सब जीव-अपने अपने कियेहुवे कर्मोंका-फल-भोगते हैं,-यह-जैनमजहबवालोंकी सिधी सडक है,-स्वर्ग-नरक-जैनलोग मजुर रखते हैं,-और जगत्-अनादि कहते है,—

८ फिर किताब शंकरदिग्विजयके पृष्ट (३६२)पर तेहरीर है,—
अपि साधनभूतसप्तभंगीनयमप्याहत नाद्रियामहे-ते,-
परमार्थसता विरोधभाजा-स्थितिरेकत्र-हि-नैकदा घटेत, १५५

(ગુજરાતી ભાષાંતર)

હે જૈન! સઘળા પદાર્થોમા સત્વ, અસત્વ, એકત્વ, અનેકત્વ, -આદિ પરસ્પર વિરૂદ્ધ ધર્મોનો એકી વખતે સમાવેશ કરવાના સાધન ભૂત-જે-તારો-સપ્તભંગીનય છે તેને પણ અમો યોગ્ય ગણતા નથી કારણકે પરસ્પર વિરૂદ્ધતા ધરાવનારા વાસ્તવિક ધર્મોની એક પદાર્થમા એકી વખતે સ્થિતિ સંભવતીજ નથી,—

समीक्षा, एक पदार्थमे-परस्परविरोधीधर्म-अपेक्षा भिन्नसे-एकही -वस्तुमे रहसकते है, उसका सबुत देखिये! नैयायिकोंने पृथ्वीकों-दो-तरहकी फरमाई -परमाणुरूप-पृथ्वी-नित्य और कार्यरूप-पृथ्वी अनित्य,-खयाल किजिये! एकही पृथ्वीमे-दो-विरोधीधर्म-अपेक्षा-भिन्नसें रहे-या-नही? सामान्य आर विशेष-दो-विरोधीधर्म अपेक्षा-भिन्नसे-एकही-द्रव्यमे रहते है,-या-नही? आत्माकों व्यवहारसें-बद्ध -और परमार्थसे अबद्ध-कहते हैं कहिये! एकही आत्मामे-दो-विरोधीधर्म-अपेक्षाभिन्नसें रहसके-या-नही? स्याद्वादन्याय-युक्तिप्रमाणसें सावित होनेसे सचा है.-उसकी हानि नही जिस अपेक्षा-वस्तु-अस्तिरूप है,-उसी अपेक्षा-वो-नास्तिरूप है,-ऐसा जैनलोग-कब-कहते है? बल्कि! दुसरी वस्तुका इसमे असद्भाव बतलाकर नास्तिरूप कहते है -अब असहिष्णुता किसकी समजना? खयाल किजिये! एक शख्श अपने पुत्रकी अपेक्षा-पिता है, और-वही-शख्श-अपने पिताकी अपेक्षा पुत्र है-देखिये! दो-विरोधी धर्म-अपेक्षा भि-

त्वरें एक शख्शमें रहगये-या-नही? एक-गुरु-अपने चेलेकी अपेक्षा-गुरु है. -मगर अपने गुरुकी अपेक्षा चेले है,-विना समजे-कोई चाहे-सो-कहे,-स्याद्वादन्यायको जैसा जैनोंने माना है.-वैसा-समजकर उसपर दलिल करना चाहिये.—

९ संस्कृत-जबानके पढे हुवे विद्वानोंकेलिये-संस्कृतमें स्याद्वाद-न्यायका कुछ बयान दिया जाता है,-व-गौर देखिये!

(अनुष्टुप्-वृत्तम्,)

सर्वमस्ति स्वरूपेण-पररूपेण नास्ति च,
अन्यथा सर्वभावाना-मेकत्व संप्रसज्यते, १

(शार्दूल-विक्रीडित,-)

या प्रश्नाद्विधिपर्युदासभिदया-बाधच्युता सप्तधा,
धर्म धर्ममपेक्ष्य वाक्यरचना-नैकात्मके वस्तुनि,
निर्दोषा निरदेशि देव! भवता-सा-सप्तभंगी-यया,
जल्पन् जल्परणांगणे विजयते वादी विपक्षं क्षणात्-२

१-स्यादस्ति, २-स्यान्नास्ति, ३-स्यादस्तिनास्ति, ४-स्यादवक्तव्यः, ५-स्यादस्ति अवक्तव्यः, ६-स्यान्नास्ति अवक्तव्यः, ७-स्यादस्तिनास्ति-अवक्तव्यः,

१० [यदुक्तं-स्याद्वादमंजरी-ग्रंथे,-]

स्याद्वादः अनेकांतवाद.-नित्यानित्याद्यनेकधर्मशबलैकवस्त्वभ्युपगम इतियावत्,-तस्यमुद्रा-मर्यादा-ता-नातिभिन्नति नातिक्रामतीति स्याद्वादमुद्रानातिभेदि,-(तथाहि,) न्यायैकनिष्ठे राजनि-राज्यश्रिय शासति-सति सर्वाः प्रजाः तन्मुद्रा नातिवर्तितु इशते, तदतिक्रमे तासा सर्वार्थहानिः स्यात्-एव विजयिनि-स्याद्वादमहानरेन्द्रे-तदीयमुद्रा सर्वेपि-पदार्थाः-नातिक्रामति तदुल्लघने तेषा स्वरूपव्यवस्थाहानिप्रसक्तेः।

प्रमातवादिभिरपि-एकस्या एव पृथिव्यां नित्यानित्यत्वाभ्युपगमात् तथाच-प्रशस्तकारः-पृथिवी द्विधा,-नित्या-अनित्या-च-परमा-

गुरूपा नित्या, कार्यरूपा अनित्या, इति, नचात्र-परमाणु-कार्य-द्रव्य-लक्षण-विषयद्वयभेदात्-नैकाधिकरण-नित्यानित्यत्व-इति वाच्य पृथिवीत्वसोमयत्राप्यभिचारात्-एव अप आदिषु-अपि,—

(अनुष्टुप्-वृत्तम्,)

अनादिनिधने द्रव्ये-स्वपर्यायाः प्रतिक्षण,
उन्मज्जति निमज्जति-जलकल्लोलवज्जले, १

हरेक द्रव्यमे-समयसमयपर-अपने-अपने पर्याय पैदा होते हैं, और विनाशभी होते जाते हैं-जैसे-जलमे-कल्लोल पैदा होकर फिर उसीमे गायब होजाते हैं, दुनियाम सब वस्तु-अनंत धर्मात्मक हैं,-और-गुण-गुणीका संबंध-बना हुवा है,-एक-एक गुणकी अपेक्षा स्याद्वादन्याय उतारना चाहे-तो-उतर सकता हैं, अपने खयाल श रीरमे-उमदा तौरसें वेठाना चाहिये, जो-शख्श पुरा-तार्किक होगा स्याद्वाद्-न्यायकों समज सकेगा, जिन्होंने तर्क शास्त्र पढे नहीं, सद्धेतु और-असद्धेतुका इल्म हासिल किया नही, उनको स्याद्वाद-न्याय समजना दुसवार हैं,—

११ आगे किताब शंकरदिग्विजयके पृष्ट (३६९) पर-श्रीशंकरा चार्यजी-अपनी बिमारीके वारेमे अपने शिष्योंको-फरमाते है,—

व्याधिर्हि-जन्मांतरपापपाको-भोगेन तस्मात् क्षपणीय एष,
अभुज्यमानः पुरुष-न-मुंचेज्जन्मांतरेपीति-हि-शास्त्रवाद ९

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

એ પ્રમાણે શિષ્યોના વચન સાભલી શ્રીશંકરાચાર્યજી બોલ્યા-કે-આ-વ્યાધિ-જન્માતરના પાપના ફ્લરૂપ છે, એટલા માટે-આ-વ્યાધિને ભોગવીજ નાશ પમાડવો યોગ્ય છે, ભોગવાયો-ન-હોય-તો-જન્માતરમા પણ પુરૂપને છોડે નહી, એમ શાસ્રો કહે છે,—

समीक्षा, इस काव्यमे श्रीशंकराचार्यजी-अपनी बीमारीके बारेमे शिष्योंको फरमाते हैं,-मुजे-जो-बीमारी हुइ हैं. पूर्वजन्मके पापका फल है,-इसको भोगनाही पडेगा,-विना भोगे छुटेगी नही, सबुत

हुवा, कर्म-प्रधान है, जैनलोग अवलसे फरमाते है,-पूर्वसंचित-कर्म -विना भोगे छुटते नही, कर्मके सिद्धातपर हरशख्शको आना पडता है,-चाहे कोई जगतकर्त्ता ईश्वर है,-ऐसा माने,-तोभी-कर्मके फल देनेवाले ईश्वर है,-ऐसा मजूर रखना होगा,-वभी-जीवोंके किये हुवे कर्मोंके मुताबिक-फल देयगें, कमी-बेंसी नही,-सबुत हुवे पूर्व-संचित कर्म-प्रधान है,—

[किताब शंकरदिग्विजयके कितनेक लेखपर समीक्षा खतम हुइ]

[सत्यार्थप्रकाश ग्रथके-बारहमें-समुल्लासमें जो-कुछ-जैनमजहवके बारेमें लिखा है -उसका इसमे जवाब दर्ज है]

१ सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ-श्रीमत्-परमहंस-परिव्राजकाचार्य-श्रीमद्दयानदसरस्वतीस्वामिने बनाया है,-इसकी आवृत्ति कई छपचुकी मेरे पास इसवख्त-सोलहमी-बार छपीहुई आवृत्ति मौजूद है. और -वो-अजमेर वैदिक यत्रालयमे छपीहुई है.-में-जैनमजहबका एक-साधु हु, जैनमजहबके बारेमे-जो-कुछ-लेखहो,-उसका जवाब देना मेरा फर्ज है. वही फर्ज अदा करता हु. सत्यार्थप्रकाश ग्रंथके बारहमें समुल्लासकी शुरुआतमे श्रीमद्दयानद सरस्वतीस्वामी लिखते है,-अथ नास्तिकमतातर्गत-चार्वाक-बौद्ध-जैनमत-खडनमडनविषयान् व्याख्यास्यामः—

(जवाब.) नास्तिकमतातरगत-उसकों-कहसकते है -जो-जीवकों -न-माने, पुन्यपापकों-न-माने, स्वर्ग नरककों-न-माने, ईश्वरकों-न-माने, और शिवाय प्रत्यक्षप्रमाणके दुसरे प्रमाणोंको-न-माने, जैनमजहबवाले-जीव अजीवको मानते है पुन्य पापको-मजुर रखते है, स्वर्ग-नरकका होना-स्वीकार-रखते है, ईश्वरको मानते है, और प्रत्यक्ष-परोक्षप्रमाणभी मजुर रखते है,-फिर किस सबबसें

हबको नास्तिक मतातर्गत कहा जाय?-सब जीव अपने अपने किये-
हुवे कर्मोके मुतानिक फल पाते है,-जगत् प्रवाहरूपसे अनादि है,-
ईश्वर-रागद्वेप-काम-क्रोध-मोह वगेरा दोपोंसे रहित है, और राग-
द्वेप वगेरा दोपोंसें रहित-ईश्वर-जगत् बनावे ऐसा प्रमाणसें साबीत
नही होता.-ऐसा कहनेसे जैनमजहबवालोंको कोई नास्तिकमतातर्गत
कहे-तो-उनकी मरजीकी बात है. जैनोका इसमे कोई नुकशान नही,
जगत्मे-जीव-और-अजीव-दोंनों अनादि पदार्थ है.-चाहे इनकों
कोई-जड-चेतन कहो. बात एकही है. श्रीमत्-दयानद सरस्वतीजीने
-स्वमतव्यामतव्यप्रकाश-नामका लेख-जो-सत्यार्थप्रकाशकी अखी-
रमे दिया है. पृष्ट (६३७)पर देखो! छठी-कलमे बयान है.-"-अ
नादि पदार्थ"-तीन है. एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति-
अर्थात् जगत्का-कारण, इन्हीको नित्यभी कहते है, जो नित्यपदार्थ
है-उनके गुण, कर्म, स्वभावभी नित्य है,-देखिये! इस लेखमे जीव
-और-प्रकृतिकोंभी-अनादि फरमाये. नित्य पदार्थका बनानेवाला
कोई नही कहा जासकता,-इसतरह-जैनमजहबमे- जगत्कों प्रवाहसें
अनादि कहा,-जैन और बौद्धमजहब एक नही. जुदेजुदे है, अमर-
कोशके बनानेवाले अमराचार्य-बौद्धमजहबके थे, जैन नही और
चार्वाकसे जैनोंका कोई सबध नही, जैनलोग-जीवका-देहात होकर
परलोक जानाआना मानते है नास्तिक मजहबवाले-या-नास्तिकम
जहबके अतर्गत चार्वाकवाले-परलोक जाना आना नही मानते,-

२ आगे किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासर्से पृष्ट (४२८)
पर बयान है, चार्वाक, आभाणक, बौद्ध और जैनभी-जगतकी उ
त्पत्ति स्वभावसें मानते है, जो-जो-स्वाभाविकगुण है. उस उसके
द्रव्यसयुक्त होकर सब पदार्थ-बनते है. कोई जगत्का कर्त्ता नही —

जवाब.-ईश्वर, जीव, और प्रकृति-यानी-जगत्का कारण-ये-तीन
पदार्थ-तो-श्रीयुत दयानद सरस्वतीजीभी अपने मतव्यामतव्यप्रका
शमे मजुर रखते है -जीवका-और-जगत्के कारणका बनानेवाला

कोई नही, जैनलोग फरमाते है,-जगत्-अनादि है,-ईश्वर-रागद्वेष-काम-क्रोध-मोह वगेरा दोषोंसे रहित ठहरे,-वे-जगतको-क्यों बनावे? दुनियामे एक-सुखी, एक दुखी क्यों? अगर कहाजाय-सुख दुखका होना-पूर्वसंचितकर्मके ताल्लुक है,-ईश्वर उनका फल देनेवाले है,-तो-सवाल पैदा होगा, जैसा जिस जीवने किया होगा, वैसाही फल देयगें-या-कमीबेसी?-अगर कहाजाय फल देनेमे कुछ-कमी-बेंसी नही करते-तो-कर्मही-बडे सबुत हुवे. इस बातकों सोचो?—

३ फिर सत्यार्थप्रकाश ग्रंथकी अखीरमे-जो-स्वमंतव्यामतव्य-प्रकाश लेख है. पृष्ट (६३६)पर-श्रीयुत दयानंद सरस्वतीजी तेहरीर करते है. अब-मे-जिन जिन पदार्थोंको-जैसा जैसा मानता हु. उन उनका वर्णन-सक्षेपसें यहा करताहू-कि-जिनका विशेष व्याख्यान इस ग्रंथमे अपने अपने प्रकरणमे दिया है.-इनमेसें-१-प्रथम-"ईश्वर"-की जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम है, जो सच्चिदानंदादि लक्षण है. जिनके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र है, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनत, सर्वशक्तिमान्,-दयालु, न्यायकारी, सर्व सृष्टिका कर्त्ता-धर्त्ता-हर्त्ता-सब जीवोंको-कर्मानुसार सत्य न्यायसे-फलदाता, लक्षणयुक्त है. उसीकों परमेश्वर मानताहूं.—

(जबाब.)-देखिये! इसमे सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, और सर्वशक्तिमान्-ईश्वरको-जीवोंके कर्मानुसार फलदेनेवाले माने, फर्ज करो! किसी-जीवके कर्ममे दौलत और-आराम-नही है, उसको-आराम-और दौलत देयगें.? अगर कहाजाय-न-देयगें-तो-क्या? बात साबीत हुई-? इसपर खयाल कीजिये,—

४ आगे किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लास पृष्ट (४३२)पर -इस दलिलको पेश किई है. सर्वस्य ससारस्य दुःखात्मकत्वं, सर्वतीर्थकरसंगत.-जिनकों बौद्ध तीर्थंकर मानते है. उन्हीकों जैनभी मानते है, इसीलिये दोनों एकहै (जबाब.) जिनकों बौद्धलोग तीर्थंकर मानते है, उनकों जैनलोग तीर्थंकर नही मानते, जो बात लिखना-तो

–पुरीतीरसें तलाश करके लिखना चाहिये,–पेस्तर लिखागया है–जैन –बौद्ध–एक नही, दोंनो जुदे जुदे मजहब है –फिर किताब सत्यार्थ-प्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४२८)पर दयानद सरस्वतीजी इस मजमूनकों पेश करते है, बौद्धलोग समय समयमे नवीनपनसे (१) आकाश–(२) काल, (३) जीव, (४) पुद्गल–ये–चार द्रव्य मानते है, और जैनीलोग–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय, और काल इन छह द्रव्योंकों मानते है,– आगे–(समीक्षक) ऐसा लिखकर बयान करते है.–जो–बौद्धोंने चार द्रव्य प्रतिसमयमें नवीन नवीन माने है–वे–जूठे–है,–क्योंकि–आकाश, काल, जीव, और परमाणु–ये–नये–या–पुराने कभी नही हो-सकते,–क्योंकि–ये–अनादि और कारणरूपसें अविनाशी है. पुनः नया और पुरानापन कैसे घट सक्ता है? और जैनियोंका माननाभी ठीक नही, क्योंकि–धर्माधर्म द्रव्य नही. गुण है.–ये–दोंनों जीवास्तिकायमें आजाते है, इसलिये–आकाश, परमाणु, जीव–और–काल मानते तो ठीक था,—

(जवाब)–जैनोंने और बौद्धोने–जो–जो–द्रव्य जिस जिस तरह माने है–पहले उनकों–समजना और फिर लिखना चाहिये.–बौद्धोंका क्षणिकवाद, वासना, और क्षणसतति,–उन्होंने किस तरकीबसे कहे है,? जैनोंने–जो–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय, और काल–ये–छह द्रव्य किसतरह माने है,–उनकों सोच–समजकर उसपर लेख लिखना चाहिये, जैन-लोग धर्मास्तिकाय–उसको कहते है,–जो–जीव और अजीवकों गमन करनेमे सहायक–हो, अधर्मास्तिकाय उसको कहते है,–जो–जीव और अजीवको स्थिर करनेम सहायक हो, दयानद सरस्वतिजी बयान करते है–धर्माधर्म–द्रव्य नही. किंतु गुण है,–मगर तर्कसग्रह वगेरामे–जो –धर्म–अधर्म गुण कहे है,–वे–जुदे है.–और जैनलोग जिनकों धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय–द्रव्य बतलाते है,–वे–जुदे है,–सब पदार्थोंका

आधार-और जीव-पुद्गलकों-अवगाहन देनेवाला आकाश सर्वव्यापी है, पुद्गल-परमाणु-वर्ण-गध-रस-और स्पर्श स्वभाववाला है.-चेतना -लक्षण-जीव,-और-काल-ये-सबको समत है,-इसमे जैनोंने कोई गलत बात नही फरमाई. चाहे कोई मंजुर करे-या-न-करे, उससे कुछ वहेस नही, सच बात बयान करना-अकलमंदोंका फर्ज है,-आगे इसी बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४२९)पर-श्रीयुत दयानंद सरस्वतीजी लिखते है.-एक जीवकों चेतन मानकर-ईश्वरकों-न-मानना, यह- जैन बौद्धोकी मिथ्या पक्षपातकी बात है, (जवाब.) मिथ्या पक्षपातकी बात नही. बल्कि! इन्साफकी बात है, जीव-अल्पज्ञ है. ईश्वर-सर्वज्ञ है.-जैनलोग-ईश्वरकों मानते है. मगर-जगत्कर्त्ता तरीके नही-मानते.-रागद्वेष-काम-क्रोध वगेरा दोषोसे रहित-ईश्वर-जगतको बनावे ऐसा किसी किसी प्रमाणसें साबीत नही होता.-जो शख्श-जैसा- कर्म-करे वैसा फल पावे. और जगत् अनादि है,-यह-एक-सिधी और साफ बात है,-जिसको कोई गलत नही करमकता,—

५ फिर किताब सत्यार्थप्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४२९) पर लिखा है.-अब-जो-बौद्ध और जैनीलोग-सप्तभंगी और स्याद्वाद मानते है.-सो-यह है.-"सन् घटः"-इसको प्रथमभंग कहते है.- आगे इसी सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमें पृष्ट (४४०)पर-(समीक्षक) ऐसा लिखकर स्याद्वादन्यायके बारेमें तेहरीर करते है,-यह कथन एक अन्योन्याभावमे साधर्म्य-और-वैधर्म्यमे चरितार्थ होसकता है. इस सरल प्रकरणकों छोडकर कठिनजाल रचना केवलअज्ञानीयोके फसानेकेलिये होता है,—

(जबाब.) जैनोंका स्याद्वादन्याय-अज्ञानियोंकों फसानेकेलिये नही. मगर ज्ञानीयोके ज्ञानसे-सचा है,-जीव वगेरा कोई पदार्थ हो-अपने स्वरूपकी अपेक्षा अस्ति और दुसरे पदार्थोके स्वरूपकी अपेक्षा नास्ति है. यह दीवे जैसी-बातकों छोडकर साधर्म्य-वैधर्म्यकी कठीन रचनामे क्यों जाना-? एक पदार्थमे-अपेक्षाभिन्नसे अनेक धर्म रहसकते

है.-यह-स्याद्वादन्यायका फरमान किसी सुरत गलत नही, देखिये! नैयायिकोंने और वैशेषिकोंनें पृथ्वीको नित्यभी-मानी,-और अनित्यभी-मानी परमाणुरूपसें-नित्य, और कार्यरूपसें अनित्य, देखिये! एकही पृथ्वीमे-दो-विरोधिधर्म-अपेक्षाभिन्नसें रहे-या-नही? अगर कहाजाय-रहे-तो-फिर जैनोंका-स्याद्वादन्याय-किस सबुतसें कोई गलत कह सकेगें?-इस वातकों सोचो! दरअसल! जैनही स्याद्वादन्याय मानते है.-बौद्ध मजहबवाले-इसको नही मानते. जैनमजहब और बौद्धमजहब बिल्कुल अलग अलग है-जैनमजहबके धर्मशास्त्र जुदे, बौद्ध मजहबके धर्मशास्त्र जुदे है.-जैनमजहबके चौइसमे तीर्थंकर महावीर स्वामीके चेले-गौतमगणधर अलग थे, बौद्धमजहबके गौतमबुध अलग थे,-अशोक महाराजने बौद्धमजहब मान्य रखाथा, राजा-सप्रतिने जैनमजहब मंजुर रखाथा,-इन बातोंकों ब-गौर देखना चाहिये.—

६ आगे किताब-सत्यार्थप्रकाश-बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४२०) पर बयान है, जैनलोग-"चित्-और-अचित्"-अर्थात् चेतन-और -जड-दोही-परतत्त्व-मानते है—

(जवाब) वेशक! बात ठीक है,-दुनियामे-जड-और चेतन दोही पदार्थ-सब जगह मौजूद है-दयानंद सरस्वतीजीनेभी-स्वमतव्या मतव्यप्रकाश लेखमे-छठी-कलम देखो! अनादि पदार्थ तीन-माने है-ईश्वर-जीव-और प्रकृति-प्रकृति कहनेसे जगत्का-कारण, -जैनोंने-दो-अनादि पदार्थ माने,-जड-और-चेतन, इसमे गलत बात क्या! थी?—

७ फिर किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे-समुल्लासमे-पृष्ट (४४२) पर-दयानंद सरस्वतीजी-तेहरीर करते है.-जैनलोग कहते है.-जीवही-परमेश्वर होजाता है—

(जवाब) वेशक! इसमे गलत क्या है! जीव-अछी करनी करे-तो-परमेश्वर क्यों-न-होसके?-अछी करनीका-फल-अछा मिले. यह एक-इन्साफकी बात है,-जीव-अगर निस्पृह होकर तप करे-

तो-निर्मल-क्यों-न-बने? कर्मोसे रहित होना, जन्ममरणसे छुट जाना-और ज्ञान पाना-यही-परमात्माका-लक्षण है.-परमात्मा कहो, या-ईश्वर कहो, बात एकही है,-नर-जो-ऐसी करनी करे-तो-नरका नारायण हो,-यह वाक्य दुनियामे मशहूर है.-जो-अल्पज्ञ है-वही कर्मरूप-मैल-दूर होनेसें सर्वज्ञ बनसकता है, अगर अल्पज्ञ-जीव करनी करनेसें सर्वज्ञ-न-बनसकता हो-तो-फिर धर्मशास्त्रका उपदेश किस कामका-रहा? बडेबडे रिपियोंने और राजे महाराजोने तप क्यों किया? राज्य और अमलदारी छोडकर-साधु-संन्यासी क्यों बने? उनोंने जब-ज्ञान और मुक्ति होनेका फायदा देखा होगा, तब संसार छोडा होगा,—

८ आगे किताब सत्यार्थप्रकाशके-बारहमें समुल्लासमे-पृष्ट (४४२) पर इस मजमूनकों-पेश-किया है.-अपने तीर्थंकरोंकोंही-केवली मुक्तिप्राप्त परमेश्वर मानते है. अनादि परमेश्वर कोई नही,-सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हन्, केवली, तीर्थकृत, जिन, ये-छह-नास्तिकोंके देवताओंके नाम है,—

(जबाव.) नास्तिकोंके कोई देवताही-नही-तो-फिर उनके नाम कैसे होसकेगे? दरअसल! उपर लिखे-नाम-खास-जिनदेवोंके है, सब पदार्थोंकों अपने ज्ञानसें जाने उनका नाम-सर्वज्ञ, रागद्वेष वगेरा दोष-जिनके दूर होगये, उनका नाम वीतराग,-इसीतरह-अर्हन्-केवली-तीर्थकृत्-और-जिन-ये-सब इनहीके पर्यायांतर नाम है,-उत्सर्पिणी-और अवसर्पिणी-ये-समयचक्रके-दो-हिस्से है, एक-एक हिस्सेमे-चौदस तीर्थंकरोंका होना जैनलोग मंजुर रखते है, ऐसे समयचक्र-पूर्व-कालमे कई हुवे-और-अनागत कालमे कई होंग,-जैसे मन्वंतर पूर्वकालमे-कई हुवे, और-भविष्यकालमें कई होंगे,-इस तरह -जैनमजहबवाले-समयचक्रकी-अपेक्षा प्रवाह-रूपसे-संसार-और-मुक्ति-अनादि मानते है, ईश्वर परमात्मा-जगत्कों बनावे-ऐसा-

जैनमजहबमे-नही मानागया, सब जीव-अपने कियेहुवे-कर्मोका-फल पाते है,-यह-जैनमजहबका-उसूल है,—

९ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमे पृष्ट (४४३)पर-लिखा है,-जो-अनादि ईश्वर-न-होता-तो-अर्हन् देवके मातापिता आदिके शरीरका साचा कौन बनाता?

(जवाब.) हरेक जीवके शरीरका-साचा-उस जीवके पूर्वसंचित कर्मके उदयानुसार बनता है.-एक सुखी एक दुखी. एक गरीब एक दौलतमद, ये-सब बाते-उस जीवकों पूर्वसंचित कर्मसेही मिली है, -कोई शख्श तकलीफ पाना नही चाहता. मगर फिरभी उसकों तकलीफ पेश होती है बतलाइये! इसकी क्या वजह है? इसकी यही वजह है,-जो-उसने पूर्वजन्ममे-पापकर्मकिया था,-उसका बदला यहा मिला है,-और-जो-यहा करेगा-वो-आगेकों पायगा.—

१० किताब सत्यार्थप्रकाश-बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४४४)पर दयानद सरस्वतीजी-बयान करते है.-तुम-जो-तीर्थंकरोंकों परमेश्वर मानते हो-यह-कभी नही घट सकता, आगे इसी बारहमे समुल्लासके (४४५)मे पृष्टपर लिखा है,-ऐसे परिच्छिन्न सामर्थ्यवाले एक देशमें रहनेवालेको ईश्वर मानना विना-भ्रांतिबुद्धियुक्त-जैनियोंसें दुसरा कोईभी नही मानसकता —

(जवाब.) भ्रांतियुक्त बुद्धि-जैनोकी-इसलिये नही-वे-युक्तिप्रमाणसे खिलाफ बातकों मजुर नही रखते,-जैनलोग प्रमाणके शाथ बयान करते है, अगर अल्पज्ञ जीव-धर्मकरनी करके मुक्ति-न-पासके तो फिर मुक्तिके अधिकारी कौन? तीर्थंकरोंने निस्पृह होकर तप किया, ज्ञान पाया, फिर उनकी मुक्ति क्यों-न-होसके जैनमजहबमें साद्दश्य-मुक्ति-मानीगई है,-यानी-मुक्तात्माके ज्ञानमे सब समान है, उनके ज्ञानमे कमीबेसी नही होती. और मुक्तिहुवे बाद फिर ससारमे आना जैनमजहबमे नही मानागया.—

११ किताब-सत्यार्थप्रकाश-बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४४५)पर

दयानंद सरस्वतीजी इस मजमूनकों पेश करते है, इसके आगे प्रकरण -रत्नाकरके दुसरे भागमे-आस्तिक नास्तिकके संवादके प्रश्नोत्तर यहा लिखते है, जिसको बडेबडे जैनियोंने अपनी समतिके शाथ माना, और बबईमे छपवाये है,—

(जवाब) बेशक! छपवाया है, उसमे कौनसी गलतबात थी, जीव -अपने पूर्वसचित कर्मोंके मुताबिक आराम और तकलीफ पाता है. इसमे-कोई बेमुनासिब बात नही. मिट्टीके शाथ-सोना पहलेसे मिला-हुवा है. मगर कब मिला उसका कोई पता नही, लेकिन! मिट्टीसे सोना तरकीबसे अलग होसकता है, इसीतरह-जीव-अपने कर्मोसे छुट सकता है.-जीव-अगर अपनी मरजीसे-न-चाहे मे-तकलीफ पाउ. मगर उसके पूर्व कृतकर्म-उसको तकलीफ देते है. और अपनी तर्फ खेंचते है. जैसे लोहचुबक पाषाण लोहेको खेंचता है, दुसरी मिशाल! जैसे कोई शख्श शराब पिइकर गाफिल बनता है,-सौचो! उसको गाफिल किसने किया, अगर कहाजाय शराबनेही उसकों गाफिल किया,-तो-सबुत हुवा,-कर्म-इस जीवको गाफिल करते है, नैयायिक और वैशेषिकोंने-समवायसबध माना है लेकिन! जैनोने -सयोगसबध माना है,-वो-ईश्वर-खुद-क्रियावान्-नही. सबब-वो -निराकार है. क्रियावान् साकारही-बनसकता है, जैनलोग-मुक्तिसे -पिछा लोट आना नही मानते. इन्साफ कहता है.-मुक्तिका-सुख-छोडकर-ससारमे क्यौं आवे! कोईभी-मनुष्य-साधारण सुखको छो-डना नही चाहता, फिर मुक्ति पाकर मुक्तात्मा-मुक्तिकों कैसे छोडे?—

१२ किताब सत्यार्थप्रकाश-बारहमे-समुल्लासके पृष्ट (४४८)पर बयान है, बहुतसे ईश्वर है-तो-जैसे-जीव-अनेक होनेसे लडते भिडते फिरते है,-वैसे ईश्वरभी-अनेक होनेसे लडा भिडा करेंगे,—

(जवाब) जहा-रागद्वेष-काम-क्रोध-मोह वगेरा मौजूद नही. वहा लडाई किस बातकी? जहा-कर्म-मौजूद हो-वहा-रागद्वेष पैदा होते है,-मगर-जब-सब कर्म-छुट गये. मुक्ति हासिल होगई वहा ल-

डाई होनेका कोई सबब नही, दुनियादारोंमे-रागद्वेप बने है, इसलिये -आपसमे लडते है, अगर कोई इस दलिलको पेंश करे विना कर्त्ताके कोई कार्य नही बनसकता. जैसे कपास, सूत्र, कपडा, अगरखा, दुपट्टा, धोती-पघडी-वगैरा बनकर कभी नही आती, उनका बनाने वाला जरूर है. इसी तरह जगत्का कर्त्ता कोई है, ऐसा समजो,—

(जवाव) दुनियामे जड-और चैतन अनादिसिद्ध है,-और सयोग सबंधसे रूपातर बनते है जैसे कपास, सूत्र, कपडा, अंगरखा, धोती -दुपट्टा वगेरा वगेरा, देखो! सयोगसबधसे खुद-बखुद-चिजोका पैदा होना बडी बात नही. पानी-और-जमीनके सयोगसे-जो-घास -पैदा होता है, उसका बीज कौन बोंने जाता है, घास-स्वभावसे पैदा होता है, पहाड-नदी-रास्ते-क्षेत्र वगेरामे घास आपही उगजाता है, इसीतरह सयोगसम्बधसे-हरचीज-रूपांतर होती जाती है,-मूल पदार्थ-जड-चेतन-अनादि है.-खुद-श्रीयुत दयानद सरस्वतीजीने तीन पदार्थोमे-जीव-और प्रकृति अर्थात् जगत्का कारण अनादि माना है,—

१२ किताब सत्यार्थप्रकाश-बारहमें समुल्लासके पृष्ट (४४८)पर लिखा है. तुम अपने और अपने तीर्थकरोंके समान परमेश्वरकोंभी-अपने अज्ञानसे समजते हो-सो-तुमारी अविद्याकी लीला है.-

(जवाब) जैनोके वहा-तीर्थंकर-गणधरोंके फरमायेहुवे द्वादशांग-वानीके सत्य-धर्मपुस्तक मौजूद है.-जिनमे आम दुनियाका और मुक्तिका हाल रौशन है,-उनके पढनेसें अविद्याकी पैदाशही नही होती फिर दुसरे शास्त्र देखनेकी क्या! जरूरत? जैनोंकों अविद्यादिदोप इसलिये नही, वे-रागद्वेप-काम-क्रोध-मोह वगेरा दोषोंसें रहितकों इश्वर मानते है -रागद्वेपसहित-देव-तीर्थंकरके समान नही होसकते.-तीर्थंकर कहो-जिन कहो. अर्हन् कहो-सब-एकही देवके पर्यायवाचक नाम है,—

१४ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४४८)पर लिखा है.—

(मूल पाठ)

सामि! अणाइ अणते–णुगइ संसार घोरकातारे,
मोहाइ कम्म गुरुठिइ–विवागवसणु भमइ जीवो,

प्रकरण रत्नाकर भाग दुसरा–षष्टीशतक (६०) सूत्र–२–यह रत्नसार भाग–नामक ग्रंथके सम्यक्त्वप्रकाश प्रकरणमें–गौतम और महावीरका सवाद है, इसका सक्षेपसे उपयोगी यह अर्थ है कि–यह–ससार अनादि अनत है,–न–कभी इसकी उत्पत्ति हुई–न–कभी विनाश होता है, अर्थात् किसीका बनाया जगत् नही.—

(जवाब.) इसमे कौनसी गलतबात है? जबतक मुक्ति नही पाई –मोहकर्मके उदयसे–जीव–जन्म–जन्मातरमे फिरता है.–यहभी–कोई –बेइन्साफकी बात नही.–जगत् अनादि और–जो–शख्श जैसा कर्म करे वैसा फल पावे. इस बयानकोंभी कोई–रद–करसकता नही. जीव और जगत्का कारण अनादि, अपने अपने–कर्म–करनेमे जीव कर्त्ता –और–भोक्ता है. जडपदार्थभी–खुद–क्रिया करता है, देखो! कोई चीज नयी थी–पुरानी होगई? बतलाइये! पुरानी किसने किई? अगर कहाजाय–वो–खुद पुरानी होगई.–तो–सोचो! क्या बात साबीत हुई?—

१५ किताब–सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमें पृष्ट (४४९)पर इस दलिलको पेंश किई है. इसीलिये तुम्हारे तीर्थंकरोंको सम्यक्बोध नही था,–जो–होता तो ऐसी असभवबात क्यों लिखते? आगे ऐसाभी लिखा है.–जो–प्रत्यक्ष सयुक्तपदार्थ दिखता है,–उसकी उत्पत्ति और विनाश क्यों कर नही मानते?—

(जवाब.) जो–जो–सयुक्तपदार्थ–प्रत्यक्ष दिखाई–दे–रहे है, उनका–कर्त्ता–जीव है, सब जीवोंने अपने अपनेलिये–जिस जिस चीजकी दरकारथी–बनालिई है, सयुक्तपदार्थोंकी–उत्पत्ति और विनाश–सब

-मजुर रखते है. मगर असयुक्त-पदार्थ-जो-जड और चेतन है, वतलाइये! उनकी पैदाश किससे हुई? अगर कहाजाय जीव और जगत्का कारण अनादि है,-वो-फिर बात क्या हुई? ग्रथकर्त्ताने-जो-लिखा, तीर्थकरोंकों सम्यक्-बोध-नही था, अगर होता-तो-ऐसी असभवबात क्यों! लिखते? (जवाब.) कौनसी असभवबात कही है,-जो-प्रमाणसें सावीत-न-होती हो. दरअसल! तीर्थंकरोंकों इस-कदर सम्यक्बोध था, जिनके फरमायेहुवे पदार्थोको-प्रमाणके शाथ कोई-रद-नही करसकता, देखिये! उनोने-रागद्वेष वगेरा दोषोंसे रहित ईश्वर कहा. सब जीव अपने कियेहुवे कर्मोंके मुताविक आराम तकलीफ पाते है. दुनिया कदीमसें है,-षद्द्रव्य-स्याद्वादन्याय-और कामील एतकात-ज्ञान-और-सयमके-जो-जो तरीके बयान फरमाये है, इन्साफसे तलाश किइजाय-तो-सचे सावीत होते है, जैनोंके धर्म-नायक तीर्थंकरदेव-और-उनके शिष्य जैनाचार्य-आजतक-कई हुवे, -जैनोंका पदार्थविज्ञान-और दाखले दलिले-काविलेगौर है, मैने-जो-इस लेखमे जवाब दिये है,-इसपर जिस महाशयकों जो कुछ लिखना हो, शौखसें लिखे.-माकुल जवाब देता रहुगा,—

१६ किताब सत्यार्थप्रकाश-बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४४९)पर दयानद-सरस्वतीजी-लिखते है,-इनके आचार्य-वा-जैनियोंकों-भूगोल-खगोलविद्याभी नही आती थी और-न-अब यह विद्या इनमे है.-इस-सृष्टिमे पृथिवीकाय-अर्थात्-पृथिवीभी-जीवका शरीर है. और जलकायादि-जीवभी-मानते है. इसकों कोईभी नही मान सकता,—

(जवाब.) चाहे-आप-न-जाने, इससे क्या हुवा? पृथिवीमे जलमे वायुमे आतीशमे और वनास्पतिमे-जैनलोग जीवोंका होना मानते है. युक्तिप्रमाणसें सावीत है.-और सायन्ससेभी-श्रीयुत-जगदीशचद्र बोसने यत्रद्वारा सावीत करदिया है,-जैनलोग अवलसेंही इनमे जीवोंका होना मानते थे. जैनोंके तीर्थकरोंने अपने केवलज्ञानसे जानकर

अवलसेही जैनशास्त्रोंमें बयान करदिया है-इनमें-जीव है, वनस्पतिमें लजवती जडी प्रत्यक्ष दिखपडती है कि-उसमें-जीव है, देखो! आदमीके हाथ लगनेसें संकुचित और-हाथ उठालेनेसें तुर्त प्रफुल्लित होजाती है, कहिये! जीवका होना उसमे साबीत हुवा-या-नहीं? जो -बात प्रमाणसें करार पाइजाय उसकों गलत कैसे कहे? अब जैनोंकी भूगोल-खगोलकी विद्या देखिये! जैनलोग-पृथ्वीकों-नींबुकी तरह गोल नही मानते. बल्कि! थालीके तरह गोल और सपाट मानते है, जमीन फिरती नही, चादसूर्य फिरते है, देखो! आसानमें एक राशि-पर-अनेक-ग्रहोंका इकठा होना और फिर जुदे होजाना नजरके सामने दिखाई देता है-कैसे गलत होसकेगा. दयानद सरस्वतीजी लिखते है-जैनोंकों भूगोल खगोल विद्यामी नही आती थी. जवाबमे मालुम हो. जैनके तीर्थकरोंकों-गणधरोंकों आचार्योंकों और-उनके चेलोंकों-उमदा तौरसे भूगोल खगोल विद्या आती थी.-जिन्होंने-जैनशास्त्र चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, जबूद्वीपप्रज्ञप्ति-क्षेत्रसमास और लोक-प्रकाश जैनग्रथ देखो,-इनमे-एक-चद्रप्रज्ञप्ति छोडकर बाकीके सब पुस्तक छपेहुवे मौजूद है.-और-बबई-अहमदाबाद वगेरा शहरोंमे जैनबुकबेचनेवालोंसें मिलसकते है. जिनकों-शक-हो-मंगवाकर देखे. जैनलोग-जो-पृथ्वीकाय वगेराके जीवोंका आयुष्य-मानते है, इनमें कौन ताज्जुनकी बात हुई! जब-पृथ्वी-जल-वायु-आतीश-और वनास्पतिमें-जीवोंका होना जैनलोग मानते है,-उनका आयुष्य क्यों-न-मानेगें?

१७ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४५०)पर -दयानंद सरस्वतीजी-बयान करते है. जैनोंके ग्रथोंकी कालसख्या जब दश-क्रोडान् क्रोड पल्योपमकाल बीते तब एक-सागरोपम-काल होता है. जब दश-क्रोडान् क्रोड सागरोपमकाल बीतजाय-तब-एक -उत्सर्प्पणी-काल होता है. और जब एक उत्सर्प्पणी-और एक-अवसर्प्पणी-काल बीतजाय तब एक कालचक्र होता है, जब अनत-

कालचक्र बीतजाय-तब-एक-पुद्गलपरावृत्त होता है. वैसे अनंत-पुद्गलपरावृत्तकाल-जीवको भ्रमतेहुवे बीते है. सुनो! गणितविद्या-वाले लोगो, जैनोके ग्रथोंकी कालसख्या करसकोगें-या-नही?—

(जवाब)-क्यौं-न-करमकेंगें? जैनलोग-जैसे-पल्योपम सागरोपम, उत्सर्प्पणी, अवसर्प्पणी, कालचक्र और पुद्गलपरावृत्त-वगेरा-कालकी सख्या मानते है, इसमे कौन ताज्जुब हुवा? जैसे आपलोगोने सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग, मन्वतर वगेरा कालसख्या मजुर रखी है, वैसे जैनोंने पल्योपम, सागरोपम, अवसर्प्पणी वगेरा कालकी सख्या मजुर रखी है. इसवख्त मेरेपास दयानंद सरस्वतीजी रचित-सत्यार्थप्रकाशग्रथ-सोलहमी-वार-छपाहुवा मौजूद है. उसके टाइटल पेंजपर देखो! आर्यवत्सर-१९७२९४९०२५, लिखा. फिर जैनोंकी-मानीहुई-कालसख्या-क्यौं-न-सावीत होगी? जैनोके-सुखमय-सुखमययुग, सुखमययुग, और सुखमय-दुखमययुग, बडे होनेकी-वजह-उनकी कालसख्या बडी हुई. इसमे कौन ताज्जुबकी बात थी?—

१८ सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४५०)पर-दयानद सरस्वतिजी तेहरीर करते है -देखो! इन तीर्थकरोंने ऐसी गणितविद्या पढी थी. ऐसे ऐसे इनके मतमे गुरु और शिष्य है. जिनकी अविद्याका कुछ पार नही.—

(जवाब.) जैनके तीर्थकर-और उनके शिष्योने इसकदर गणित विद्या पढी थी जिनकी-विद्याका कुछ पार नही. जैनागम आचाराग सूत्र-वगेरा, द्वादशागवानीके पुस्तक देखिये! नजुमशास्त्र-चद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति, पढिये -तवारिखोकी किताबें रायपसेणीसूत्र,-ज्ञातासूत्र-उत्तराध्ययनसूत्र-त्रिपष्टिशलाका पुरुषचरित-जैनरामायण-और पाडवचरित-मुलाहजा फरमाइये. जिनके पढनेसें मालुम होगा, जैनोकी विद्या कैसी है? जिनेंद्रव्याकरण, न्याय ग्रथोंमें सम्मतितर्क-स्याद्वाद-रत्नाकरावतारिका, स्याद्वादमजरी, और अनेकात-जय-पताका,-दे

खिये! क्या! क्या! उमदा दलिले पेंश किई है? काव्यशास्त्रोंमें द्व्याश्रयमहाकाव्य, जैनमेघदूत, कोशग्रथोंमें अभिधानचिंतामणि–और अलकारग्रंथोंमे अलकारचूडामणि, इसतरह नाटक–चपु–चिकित्सा–विद्याके कई ग्रंथ अगर वगैर देखेजाय–तो–मालुम होगा, जैनोंकी विद्या किसकदर उमदा है.–जैनाचार्य–सिद्धसेन दिवाकर–हरिभद्र–सूरि–हेमचद्राचार्य–कैसे कैसे कामीलहुवे जिनके बनायेहुवे ग्रथ मौजूद है,–देखनेसे मालुम होगा, इनकी विद्या किसकदर उमदा थी?—

१९ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमे पृष्ट (४५१)पर दयानंद सरस्वतीजी–बयान करते है.–पुराणियोंका–योजन–चार कोशका–परतु–जैनियोंका योजन दशसहस्र कोशोंका होता है.—

(जवाब.) जैनमजहबमे–दश–हजार कोशोंका–योजन किसी शास्त्रमें नही कहा, अगर कहा है–तो–उस जैनशास्त्रका सबुत पेंश करे. तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके वख्तका–जो–जैनोने प्रमाण अगुल माना है,–उसका माइना तलाश करनाथा. और फिर लेख लिखनेके लिये कलम उठाना था. वगेर तलाश किये लिखना इल्मदारोंका–काम–नही. जैनमजहबमे–उत्सेध–अगुल, आत्मअगुल, और प्रमाणअगुलका–नाप–किसतरहँसे बयान किया है, इसको जानना चाहियेथा, दरअसल! उत्सेधअगुल–पाचमे आरेके साढेदश–हजारवर्स बतीत होनेपर–जो–मनुष्य–जितने–कदवाले होगें,–उनकी अगुलका नाम–कहा,–तीर्थंकर महावीरस्वामीकी एक–अगुल–दो–उत्सेध अगुलकी थी. उत्सेध अगुलका नाप सबसे छोटा है, जिस जिस जमानेमे जितने जितने कदवाले मनुष्य हो,–उनकी एक–अगुलका नाम–आत्मअगुल कहा, जैसे चार कोशका योजन तमाम मजहबवाले–मजुर रखते है, जैनलोगभी चारही–कोशका योजन मजुर रखते है,–जैसे–एकगाव दुसरे गावसें कितने कोशके फासलेपर वाके है,–उसका बयान करना, प्रमाण–अगुल–जो–सबसे बडा है,–उससे कदीमी चीजोंकी लबाइ–चोडाइ–शुमार किइ जाती है,–जैसे–सुमेरू पर्वत

-इतना लंबा-चोडा और उंचा है, जंबूद्वीप इतना लंबा चोडा, और लवणसमुंदर इतने योजनका है, वगेरा बयान प्रमाण अंगुलके नापसें माना है,-उत्सेधअंगुलके नापसे जैनमजहबमें-सिर्फ! शरीरकी-उंचाइ और लंबाइ चोडाइ शुमार किइ गइ है,-इस बातकों-बगौर-देखना चाहिये था.—

२० किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४५१)पर दयानंदसरस्वतीजी इस दलिलकों पेंश करते हैं, अडतालीश कोशकी -स्थूल-जू-जैनियोंके शरीरमे पडती होगी, और उन्हीने देखीमी-होगी.—

(जबाब.) जैनमजहबके किसी शास्त्रमे-अडतालीश कोशकी बडी -जू-होना नही लिखा, फिर उसका जिक्र कहांसे लाये?-अगर किसी जैनशास्त्रमें लिखा हो,-पाठ-बतलावे,-दरअसल! यह बयान दयानंदसरस्वतीजीने-बगेर जैनशास्त्रके तलाश किये-लिखा है.-अगर कोई दुसरा शख्श इस बयानकों सानीत करना-चाहे-जैनशास्त्रोंके सबुत बतलाकर सानीत करे. बगेर तलाश किये फिजूलबातें पेंश करना कामील इल्मका काम नही,-जैनोंके शरीरमें इतनी बडी -जू-क्यौं पडे? जब-उनके शास्त्रोंमे किसी जगह ऐसा बयान नही -तो-फिजूलबातोंमे-वख्त-क्यौं-बरबाद करे,-कोइ बात लिखना -तो-सौच समजकर लिखना चाहिये, जैनमजहबमे-एकेंद्रियजीव-बेइंद्रियजीव. तेंइंद्रिय चतुरिंद्रिय-और-पचेंद्रियजीव-किसतरह मंजुर रखे गये है. इस बातपर ख्याल करना चाहिये,-जमाने पेस्तरके बडे -कदवाले-आदमी-जानवर-परींदे-और द्रख्त होते थे,-इसमे कोई शक नही, रामायणमे-आपलोग, सुनते हो. जब रामचंद्रजी-लक्ष्मणजी लंकाकों तशरीफ लेगये और जब-सीताजीके लिये-रावणके-साथ-जंग-हुवा, कुंभकरण-बहादूरीसें लडने आया था, उसका शरीर कितना बडा बयान किया है.-बडेबडे द्रख्त पेस्तरके जमानेमें होने थे, यहभी-कोई ताज्जुबकी बात नही. नर्मदा-नदीके कनारेपर

-भरुचके करीब-जो-बडका द्रख्त-जिसकी छायामें-हजारों आदमी बेठसकते है. क्या-वो-छोटा कहा जायगा?-भूगोल हिदुस्थानकी जिनोंने देखी होगी,-बखूबी जानते होगें,-वनास्पतिकी-बडीबडी उम्रका होना-जो-जैनमजहबके शास्त्र-फरमाते है,-इसमेभी कोई ताज्जुनकी बात नही, बल्कि! बहुत दुरुस्त है,-अबभी-कइ जगह-तीनसो-वर्ससें ज्यादा अर्सेके द्रख्त खडे है,-सो-सो-वर्सकी उम्र-वाले कहा करते है, फला-द्रख्त हमारे बुजुर्गोका देखाहुवा-करीब तीनसो बर्सका-खडा है, कोई चीज अपने देखनेमें-न-आइ-तो-क्या! वो-दुनियामे नही है, ऐसा समजा जाय? हर्गिज! नही,-अखबारोंमे-जाहिर होचुका है,-मुल्क जर्मनीमे-एक द्रख्त करीब बारासो वर्सतकका पुराना-और-बडे घिरावबाला है,—

२१ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमें पृष्ट (४५१)पर दयानद सरस्वतीजी-इस मजमूनको पेश करते है,-जलचर-मछि-आदिके शरीरका मान एक-सहस्र-योजन अर्थात् दशहजार कोशके योजनके हिसाबसें-एक-करोड कोशका होता है,—

(जबाब.) अवल कोई-साबीत करे-जैनशास्त्रोंमें दश हजार को-शका योजन किस जगह फरमाया है,? फिर एक-करोड कोशके शरीरकी बात करे. पेस्तर बयान करचुका हुं, उत्सेधअगुल, आत्म-अगुल, और प्रमाणअगुलके नापकों-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके तलाश करना चाहिये. बगेर तलाश किये लिखना मुनासिब नही, जैनलोग पाचसो योजन-उत्सेध-अगुलके नापसे मंजुर रखते है,-वे -भारतवर्षके समुदरमे नही. बल्कि!-बडेबडे समुदरमे होना मानते है,-भारतवर्षके समुदरमे ऐसे ऐसे मछ-तो-अबभी-मौजूद है,-अगर ष्टीमरके-नीचे आजाय-तो-ष्टीमरकोंभी-धका पहुचा देवे,-फिर बडेबडे समुदरोंमे बडेबडे मछ क्यौं-न-होगें? इस बातका इनकार करना नही बन सकता,—

-इतना लंबा-चोडा और उंचा है. जबूद्वीप इतना लबा चोडा, और लवणसमुदर इतने योजनका है, वगेरा बयान प्रमाण अंगुलके नापसें माना है,-उत्सेधअंगुलके नापसे जैनमजहबमें-सिर्फ! शरीरकी-उंचाइ और लबाइ चोडाइ शुमार किइ गइ है,-इस बातकों-बगौर-देखना चाहिये था.—

२० किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४५१)पर दयानदसरस्वतीजी इस दलिलकों पेंश करते है, अडतालीश कोशकी -स्थूल-जू-जैनियोंके शरीरमें पडती होगी, और उन्हीने देखीभी-होगी.—

(जवाब.) जैनमजहबके किसी शास्त्रमे-अडतालीश कोशकी बडी -जूं-होना नही लिखा, फिर उसका जिक्र कहांसे लाये?-अगर किसी जैनशास्त्रमें लिखा हो,-पाठ-बतलावे,-दरअसल! यह बयान दयानदसरस्वतीजीने-बगेर जैनशास्त्रके तलाश किये-लिखा है.-अगर कोई दुसरा शख्श इस बयानकों साबीत करना-चाहे-जैनशास्त्रोंके सबुत बतलाकर साबीत करे. बगेर तलाश किये फिजहूलबातें पेंश करना कामील इल्मका काम नही,-जैनोंके शरीरमें इतनी बडी -जू-क्यों पडे? जब-उनके शास्त्रोंमे किसी जगह ऐसा बयान नही -तो-फिजहूलबातोंमे-वख्त-क्यौ-बरबाद करे,-कोइ बात लिखना -तो-सौच समजकर लिखना चाहिये, जैनमजहबमे-एकेंद्रियजीव-बेइंद्रियजीव. तेंद्रिय. चतुरिंद्रिय-और-पचेंद्रियजीव-किसतरह मजुर रखे गये है. इस बातपर ख्याल करना चाहिये,-जमाने पेस्तरके बडे -कदवाले-आदमी-जानवर-परींदे-और द्रख्त होते थे,-इसमे कोई शक नही, रामायणमे-आपलोग, सुनते हो. जब रामचद्रजी-लक्ष्मणजी लकाकों तशरीफ लेगये और जब-सीताजीके लिये-रावणके-साथ-जग-हुवा, कुभकरण-बहादूरीसें लडने आया था, उसका शरीर कितना बडा बयान किया है,-बडेबडे द्रख्त पेस्तरके जमानेमें होने थे, यहभी-कोई ताज्जुबकी बात नही. नर्मदा-नदीके कनारेपर

—भरुचके करीन—जो—बडका द्ररूत—जिसकी छायामे—हजारों आदमी बेठसकते है. क्या—वो—छोटा कहा जायगा?—भूगोल हिंदुस्थानकी जिनोंने देखी होगी,—बखूबी जानते होगें,—वनास्पतिकी—बडीबडी उम्रका होना—जो—जैनमजहबके शास्त्र—फरमाते है,—इसमेभी कोई ताज्जुबकी बात नही, बल्कि! बहुत दुरुस्त है,—अबभी—कइ जगह—तीनसो—वर्षसें ज्यादा अर्सेके द्ररत खडे है,—सो—सो—वर्षकी उम्र-वाले कहा करते है, फला—द्ररत हमारे बुजुर्गोंका देखाहुवा—करीब तीनसो बर्सका—खडा है, कोई चीज अपने देखनेमे—न—आइ—तो—क्या! वो—दुनियामे नही है, ऐसा समजा जाय? हर्गिज! नही,—अखबारोंमे—जाहिर होचुका है,—मुल्क जर्मनीमे—एक द्ररूत करीब बारासो वर्सतकका पुराना—और—बडे घिराववाला है,—

२१ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें पृष्ट (४५१)पर दयानद सरस्वतीजी—इस मजमूनको पेश करते है,—जलचर—मछि-आदिके शरीरका मान एक—सहस्र—योजन अर्थात् दशहजार कोशके योजनके हिसाबसें—एक—करोड कोशका होता है,—

(जवाब.) अवल कोई—सानीत करे—जैनशास्त्रोंमे दश हजार को-शका योजन किस जगह फरमाया है,? फिर एक—करोड कोशके शरीरकी बात करे. पेस्तर बयान करचुका हु, उत्सेधअगुल, आत्म-अगुल, और प्रमाणअगुलके नापको—मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके तलाश करना चाहिये. बगेर तलाश किये लिखना मुनासिब नही, जैनलोग पाचसो योजन—उत्सेध—अगुलके नापसे मजुर रखते है,—वे —भारतवर्षके समुदरमें नही. बल्कि!—बडेबडे समुदरमे होना मानते है,—भारतवर्षके समुदरमे ऐसे ऐसे मछ—तो—अबभी—मौजूद है,—अगर ष्टीमरके—नीचे आजाय—तो—ष्टीमरकोंभी—धक्का पहुचा देवे,—फिर बडेबडे समुदरोंमे बडेबडे मछ क्यों—न—होगें? इस बातका इनकार करना नही बन सकता,—

२२ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें पृष्ट (४५२)पर दयानद सरस्वतीजी–लिखते है.–इस पृथिवीमें–जम्बूद्वीप सब द्वीपोंके बीचमें है, इसका प्रमाण एक–लाख–योजन–अर्थात्–एक अरब कोशका है, इसके चारों ओर लवणसमुदर–इसका प्रमाण–दो–लाख योजन, उसके आगे धातुकी खड–इसका प्रमाण चार लाख योजन, उसके आगे कालोदधि–समुदर, इसका प्रमाण आठ लाख योजन, इसके आगे पुष्करावर्त्त–द्वीप, इसका प्रमाण सोलह लाख–योजन,–इसके आधेहिस्सेमें मनुष्य आबाद है, और इसके आगे–असख्यात द्वीप समुदर है.–उसमें–तिर्यग्–योनिके जीव आबाद है,—

(जबाब.) जैनलोग बेशक! जबूद्वीप,–लवणसमुदर,–धातुकीखड,–कालोदधिसमुदर, और पुष्करार्द्ध–द्वीप–सब द्वीप–और–समुद्रोंके बीचमें मानते है, और इनके आगे–असख्य द्वीप–समुदरोंका होना मजुर–रखते है इसमें कौन गलतबात है? दुसरे महाशयभी सप्तद्वीप–और–नवखडा–वसुधरा कहते है, नामका फर्क होना अलग बात है,–खयाल करनेकी–जगह है–अबभी–समुदरोंमे ऐसे ऐसे–टापु –मिल रहे है–जिसका कोई पता–नही था. फर्ज करो! ज्ञानीयोने अपने–ज्ञानसे देखकर–जो–जो–बयान फरमाया अगर–किसीके खयालमें–न–आसका–तो–क्या! वो–गलत कहसकोगे? इस लेखमें जबूद्वीप–लाखयोजनका जैनोंने कहा,–वो–प्रमाणअगुलके नापसे कहा है,–और–चार कोशका–योजन माना है दयानद सरस्वतीजीने जबूद्वीपको दश हजार कोशके योजनके हिसाबसें–एक–अरब कोशका लिख दिया, यह–किसी जैनागममें नही लिखा.–अगर लिखा है,–तो–कोई उसका सबुत पेश करे. नाहक! फिजूल बाते–पेश करना –वख्त बरबाद करना है,—

२३ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासम पृष्ट (४५२)पर–दयानद सरस्वतीजी–बयान करते है, इसलिये जैनीलोग अपने पुस्तकोंको किन्ही विद्वान् अन्यमतस्थोंको नही देते, क्योंकि–जिनको–

ये-लोग-प्रामाणीक तीर्थंकरोंके बनायेहुवे सिद्धांतग्रथ मानते है,-उनमें इसी प्रकारकी अविद्यायुक्त बातें भरी पडी है, इसीलिये नही देखने देते-जो-देवे-तो-पोल खुलजाय.—

(जवाब.) पोल-उनके पुस्तकोंमे होगी,-जो-स्वर्ग-नाम सुखविशेष भोग और उसकी सामग्री, और नरक-जो-दुःखविशेष भोग और उसकी सामग्रीकी प्राप्तिका होना मानते है -देखो! दयानंद सरस्वतीजीरचित सत्यार्थप्रकाश किताबके पृष्ट (६४१)पर-स्वमतव्यामतव्य-प्रकाशकी (४२) और (४३) मी-कलम, फिर इसी सत्यार्थप्रकाश किताबके पृष्ट (६३९)पर (२०) मी-कलममे लिखा है, देव-विद्वानोंको-और-अविद्वानोंको असुर, पापियोंकों राक्षस, अनाचारियोंकों पिशाच-मानताहु-देखिये! इसमे दयानंदजीने विद्वानोंको देव-और -अविद्वानोंकों असुर माने. मगर मजकूर बात सनातनवैदिकमजहबवाले मंजुर नही रखते है. अगर सुखविशेष और उसकी सामग्रीकों स्वर्ग-मानाजाय, दुःखविशेष और उसकी सामग्रीको नरक कहाजाय -तो-स्वर्ग-नरक-यहा-मनुष्यलोकमेही-साबीत होगे धर्मशास्त्रोंमे -जो-स्वर्गलोक-और-नरकलोग अलग अलग-लिखे है,-वे-गलत ठहरेगें, वैदिकमजहबमे-जो-कहागया है-स्वर्गकी कामनावाला-शख्श अग्निहोत्र-यज्ञ-करे,-इससें साबीत हुवा,-स्वर्गलोक-इस मनुष्यलोकसें अलग है.-चांद-सूर्यके विमान-जो-नजरके सामने दिखाई-दे-रहे है,-इनकों स्वर्गलोक मानना-या-मनुष्यलोक? इसका माकुल जवाब-पेश करे, वेदके भाष्यकार और टीका करनेवाले-उवट-सायनाचार्य-महीधर वगेरा प्राचीन वैदिकाचार्योंके फरमानकों सनातन-वैदिकमजहबवाले सच मानते है, सनातन-वैदिकमजहबम-मूर्त्तिपूजा-तीर्थयात्रा-और गंगास्नान-वगेरा मंजुर रखे है. वेदोंकों मानना-और-इन बातोंकों-न-मानना इसकी क्या! वजह है? जैनपुस्तकोंके बारेमे-दयानंद सरस्वतीजी बयान करते है, इनमे अविद्याकी बातें भरी है. मगर जैनशास्त्रोंमे-कोई अविद्याकी

बात नही, जैनपुस्तकोंकों-कौन-कहता है, दुसरोंकों नही देते? जै-नोंने अपने प्रामाणीक तीर्थंकर-गणधरोके फरमायेहुवे-आचाराग-सूत्रकृताग वगेरा-धर्मशास्त्र छपवा दिये है. आचाराग-और-कल्प-सूत्रका अंग्रेजीमे तर्जुमा होकर छपगया है, जैनोंके व्याकरणग्रथ, काव्य, कोश, न्याय, अलकार, नाटक, चपू, भूगोल,-खगोल, वगेरा कई-पुस्तक छपेहुवे मौजूद है-जो-बबई,-सुरत, अहमदाबाद, भाव नगर, जामनगर, बनारस, और मुर्शिदाबाद वगेरा शहरोंमे-जैनबुक-सेलरोंसें मिलसकते है जिनकों-देखना हो-मगवाकर देखलेवे, जैन-लोग-अपने धर्मपुस्तकोंकों गुप्त नही रखते जब छपवाही दिये-तो-फिर गुप्त रखनेकी बात कहा रही? और अगर मरजी हो-तो-उसपर कुछ राय लिखे जैन विद्वान् जवाब देनेकेलिये-मुस्तेज है,—

२४ जैनमजहबको नास्तिक-या-वाममार्गीयोंमे शुमार करना गलत है, बल्कि! आत्मा-पुन्य-पाप-स्वर्ग-नरक और परलोककों मजुर रखनेवाला जैन-एक-आलादर्जेका धर्म है-रागद्वेष-काम-क्रोध वगेरा गुनाहोंसें निहायत पाक-ईश्वरको मानते है. ऐसा-ईश्वर -जगत् कर्त्ता बने-यह-साबीत नही होता, इसलिये कर्त्ता तरीके नही मानते, इस सबब-चाहे कोई-जैनोकों नास्तिक कहे-तो-उनकी मरजी! इसमे जैनोंका कोई नुकशान नही बौद्धमजहबसे जैनमजहब बिल्कुल निराला है,-जैनलोग-किसी जीवकी हिसा करना धर्मसें खिलाफ समजते है जहातक बने-हरा-दरख्तभी नही काटते बौद्धोके सिद्धातस जैनोका कोई ताल्लुक नही, बौद्धमजहब क्षणिकवादी-और -जैनमजह स्याद्वादवादी, उनका और जैनोंका कोई सरोकार नही, बुधका नाम-कोई-जिन कहे-तो-इससें जैन बौद्ध एक नही होसकते, नाम एक होनेसे क्या हुवा? नाम-तो-कइयोंके मिलते झुलते रहते है,-गौतमबुध-और जैनके तीर्थंकर एक नहीं, अशोकमहाराज बौद्ध थे, और सप्रतिमहाराज जैन थे, तीर्थंकर पार्श्वनाथ तेइसमे तीर्थंकर-और-महावीरस्वामी चौइसमे तीर्थंकर थे, जैनलोग जमीनकों वायु-

पर होना मानते है.-वो-घनवात और तनुवात जिनकी तासीर-इस मामुली वायुसें अलग है,-उसपर जमीनका होना जैनलोग मंजुर रखते है, पानीपर जमीन नही रहसकती. हवापर पानी रहसकता है, मेने-जो-अपनी बनाई हुई किताब मानवधर्मसहितामे-बतलाया है, जमीनमे आकर्षणशक्ति नही-बिल्कुल सही बात है, द्रख्तसे-जो-फलका नीचे गिरना होता है,-वजह उसकी-उसमे-जो-गुरुत्वशक्ति-रहीहुई है,-वो-उसको नीचे गिराती है,-जमीनमे आकर्षणशक्ति होती नही, अगर होती तो-अग्निसें-धुआं निकलकर-जो-आसमानकी तर्फ जाता है,-उसकों उचे क्यों-जाने देती?—

२५ अगर कोई बयान करे, जैनोंकी रहमदिली-अदरुनी कुछ और है,-जाहिरातकी और है, (जवाब) कौन कहसकता है, अदरुनी-और-बहारकी रहमदिली गेर तरीकेकी है. जैनलोग-जानदारोंकी जान लेनेसें परहेज करते है,-और-जगह जगहपर जानवरोंकी-जो-करीब-उलमौत है,-पिंजरापोल-बनाकर हिफाजत करते है.-फिर कोई किस सबबसें-जैनोंकी रहमदिलीपर एतराज करसकते है.? जैनलोग अपने मातापिताकी खिदमत करते है. किसी एक-शख्शने-हुकमअदुली-किई उससे तमाम जैनोंपर-धब्बा-नही लगसकता-क्या! हरेक मजहबमें ऐसे शख्श नही है-जो-अपने मजहबके उसूलोंसें-उल्टा-बरताव-न-करते हो? जैनलोग-अपने-देव-गुरु-धर्मके बयानमें किसीका मुलाहजा नही करते, देखलो! वे-अरिहतके बयानमें साफ कहते है,-जो-शख्श अपने कर्मरूपी दुश्मनोंसें फतेह पावे उसका नाम-अरिहत है, और-'अहिसा परमो धर्म'-जैनका उसूल है,-दिलीइरादा पाक और साफ होजानेसें जैनलोग-केवलज्ञान-का-होना मजूर रखते है, इसमे कौन गलतबात थी?-वैदिकमजहबकी-किताब-गीताजीमें-लिखा है,-'मनएव मनुष्याणा-कारण बंधमोक्षयोः'-ऐसे जैनमजहबमे मनःपरिणामही-बध-या-मोक्ष होनेका सबब बतलाया.-इसमे गलत क्या! था? अनतका-अत-आजाय-

तो-वो-अनत कैसे होसके? दुनियामेसे जितने-जीव-मुक्तिकों गये, वेशक? उतने-दुनियामे-कम-हुवे, मगर-दुनियाके जीवोंका अत आजायगा ऐसा कहना-नही वनसकता, सवव-जीव-अनत है - इसपर मिशाल दिइजाती है, सुनिये! भविष्यकालमेंसे-चौइस-घटे-हरहमेश-कम-होते जाते है,-मगर-भविष्यकालका विल्कुल अत आगया ऐसा कभी-न-हुवा,-न-होगा.—

२६ कोई शख्स-तीर्थोंकी जियारतकों चला फर्ज करो! रास्तेमे चौरोंने उसकों लुट लिया,-तो-उसके पूर्वजन्मके पापका फल है - मगर तीर्थोंकी जियारत जानेका नतीजा-वुरा है-ऐसा हर्गिज! नही कहसकते. जियारत जाना-तो-हरहालतमे फायदेमदही है,-यही-रुह -अगर पाकीजा-खयालातसे धर्म करे-तो-उसकी मुक्ति होसके इसमे-ईश्वर कृपाकी-क्या! जरूरत? अपनी करनीसे-जीव-मुक्ति पासकता है ईश्वर परमात्माका-ध्यान करनेसे-कर्म दूर होकर मुक्ति मिलसके, मुक्तिपानेमे-ईश्वरपरमात्माका ध्यान-एक-सहारा है, ऐसा कहना कोई हर्जकी वात नही -जीव-असलमे-चाहे ज्ञानमय है, मगर जवतक कर्मोंसे वधाहुवा-मद-मोहरूपी-शराव पिइकर गाफिल वना है जन्ममरणके चक्रसें फारक हुवा नही मुक्ति कैसे मिलसकेगी? इस वातकों सौचो!—

२७ किताव सत्यार्थप्रकाश वारहमे समुल्लासके पृष्ठ (४५३)पर-दयानद सरस्वतीजी इस मजमूनकों पेश करते है -कर्त्ताका-कर्त्ता और कारणका-कारण कोईभी नही होसकता.—

(जवाव) इसीलिये-जैनमजहव वयान करता है,-स्थूल जगत्का -कर्त्ता-खुद जीव-और अजीव है -जिस जिस चीजकी दरकार थी-जीवने अपनेलिये वना लिई जैसे-घर-हाट-हवेली-मकान-गेहने-कपडे-खेती-वाडी वगेरा-स्थूलजगत्का-कर्त्ता-ईश्वर वने-यह-वात प्रमाणसें सावीत नही होती ईश्वर परमात्मा-राग द्वेप काम-क्रोध-मोह वगेरासें निहायत पाक और साफ है.-सव जीव-अपने अपने किये-

हुवे कर्मोंके मुताबिक फल पाते है.–इनके बीचमे–ईश्वर क्यों आवे? सब पदार्थ–सयोगसे रूपातर होते रहते है. देखिये! पानीके घडेमे –मिश्री–डाले–तो–खुदबखुद–उसका पानी होजाता है,–कहिये! मिश्रीकों पानी किसने बनाया. अगर कहाजाय पानीके शाथ मिश्रीका संबंध होनेसे–पानी होगया–तो–फिर–सयोगसबधसे मिश्रीका पानी होना सबुत हुवा,–बारीश होनेपर–जमीनका–और–पानीका–संयोग होनेसे–घास–पैदा होजाता है,–सोचो! घासका बीज–जमीनमे कौन डालने जाता है? जड पदार्थभी–सक्रिय है,–जैसे कोई–कपडा–बधाहुवा पाच वर्सके बाद देखो! पुराना चीथरा जैसा होजाता है. कहिये! नया कपडा पुराना किसने किया–? सबुत हुवा. स्वभावसे–चीज–नयीकी–पुरानी होजाती है,–कई जगह देखा गया, जलका स्थल, और स्थलकी जगह जल होजाता है.–सबुत हुवा, –जीव और अजीव–स्वभावसे अपने अपने कार्यके कर्त्ता है.–दुसरा कोई–कर्त्ता नही होसकता. जैनलोग–जो–हरपदार्थमे–गुण–और पर्याय–मानते है,–वो–बहुत बहेत्तर है, परमाणुमे अगर अनंतशक्ति –न–मानीजाय–तो–उसके समूहमे–शक्ति कहासें आसकेगी? जैनलोग–जीवकों पुन्य पाप मानते है. जडको पुन्य–पाप नही होते. मगर सक्रिय–यानी–क्रिया करनेवाला जरूर है,–नया–कपडा–पाच सात वर्स–बाध रखाजाय–तो–खुदबखुद–पुराना होजाता है,–कहिये! उसको–काममे–नही लिया–फिर पुराना–कैसे होगया? इस बातकों सोचो.—

२८ किताब सत्यार्थप्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४५४)पर दयानद सरस्वतीजी लिखते है, जैनलोग जगत्, जीव, जीवके कर्म, और बध अनादि मानते है.—

(जवाब.) बेशक! जैनलोग जीवके शाथ कर्मोंका सबध अनादि मानते है जैसे किसी शहरके नजीक कोई नदी वहती हो,–जो–जल आज बहेता है–वो–आगेको चला जायगा, और उस जगह दुसरा

आजायगा, मगर नदीका जल उस जगह वहां बना रहेगा. इसीतरह -जीव-और-कर्मोंका-सबध प्रवाहरूपसें अनादि है.-और एक कर्मकी अपेक्षा-सादीभी-है,-जब-जीव-निस्पृह होकर धर्म करेगा. पहलेके -कर्म-क्षय होकर नये कर्म-न-बधेंगे-जब-उसकी मुक्ति होगी, जबतक मुक्ति नही हुई-कर्मोंके शाथ बधाहुवा-जन्म-जन्मातरमें सफर करता रहता है,—

२९ किताब सत्यार्थप्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४८५)पर दयानंद सरस्वतीजी लिखते है-रिषभदेव पाचसो धनुष्यके उचे-और चोरासी-लाख पूर्व-वर्सका आयु,-अजितनाथ-साढेचारसो धनुष्यके उचे-और बहत्तर लाख पूर्व-वर्सका आयु, सभवनाथ-चारसो धनुष्यके उचे और साठ लाख पूर्व-वर्सका आयु. इसतरह चौइस तीर्थकरोंका बयान लिखकर-आगे-(४८६) पृष्टपर लिखते है. इसमे -बुद्धिमान् लोग विचारलेवे इतने बडे शरीर और इतना आयु मनुष्यदेहका-होना-कभी-सभव है,?

(जवाब.) क्यौं नही सभव है?-पेस्तरके आदमी बडीबडी उम्र -और-कदवाले होते थे. इसमें-कोई-शक नही. जानवर और परींदेभी-बडेबडे होते थे,-इसीतरह-मकान-कोट-किलेभी-बडे होते थे,-जैनमजहबमें-छह-युग-माने है-अवल सुखमय-सुखमययुग, दुसरा सुखमययुग, तीसरा सुखमय-दुखमययुग, चौथा दुखमय-सुखमययुग, पाचमा दुखमययुग, और छठा दुखमय-दुखमययुग, इनकी गिनती दश कोटाकोटी-सागरोपम कालकी शुमार किइगई है, वैदिकमजहबमें-सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, और कलियुग-ये -चार युग मानेगये है,-पेस्तरके जमानेमे मनुष्य-बडेबडे कदवाले-और बडीबडी उम्रवाले होते थे यह-बात-हरेक मजहबवाले मजुर रखते है.-धर्मशास्त्रोंमे-सुनते हो,-फलां! मुनि-महर्षिने-इतने वर्ष-तक तप किया, जमाने पेस्तरके-विश्वामित्ररिषिजीने-ब्रह्मर्षि होनेमे (६०) हजार वर्स-तप-किया,-जब इतने वर्स-तप-किया-तो-

उनकी उम्रभी-बडी-क्यौं-न-होगी. जब-उम्र-बडी होगी-तो-उनके शरीरका-कद-क्यौं-न-बडा होगा? विश्वामित्ररिषिजी मुवाफिक फरमान वैदिकमजहबके-जमाने रामचंद्रजीके हुवे,-जब-रामचंद्रजीके जमानेमे इतनी उम्र-और-बडा-शरीर था-तो-उनसे अब लके जमानेमें बडी उम्र-और बडा शरीर क्यौं-न-होगा? इसपर गौर किजिये! हिरण्यकश्यप-बडा कदवाला था-यह बात-शास्त्र फरमानसे साबीत है, जमाने-सिकंदरके-पौरस-राजा-हिंदमें-बडी ताकात और-कदवाला था. तवारिख देखनेसें मालुम होगा.-इसीतरह हजार-दो-हजार वर्स पेस्तर इनसे बडे-क्यौं-न-होगें. दश हजार वर्स-और-लाख वर्स-पेस्तर ज्यादा बडे आदमी बडे-कदवाले होना चाहिये, फर्ज करो! करोड वर्स पेस्तर-इनसे ज्यादा बडे क्यौं-न-होगें?-जैनमजहबके तीर्थंकर-रिषभदेव-महाराज-कोटाकोटि-सागरोपमकाल-पेस्तर हुवे,-उनका शरीर (५००) धनुष्यका था इसमें कौन ताज्जुबकी बात है? पेस्तर इसी लेखमे लिखा-गया है. जैनमजहबमे शरीरकी उचाइका-नाप-उत्सेध अंगुलसे शुमार किया गया है,-और-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी आधी-आत्मअंगुलकों-एक-उत्सेध-अंगुल-कहते है,-यहभी बात पेस्तर बतला चुका हुं-तीर्थंकर महावीर स्वामी-उत्सेध-अंगुलके नापसे-सात हाथ-और-उनकी-आत्मअंगुलसे-वे-साढेतीन हाथ-उचे थे. इस बातकों-समजना चाहिये.-जिस जिस जमानेमे जितने जितने कदवाले मनुष्य हो-उनके अंगुलकों आत्मअंगुल कहते है -और तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी आत्मअंगुलकों प्रमाणअंगुल कहते है,—

२० तीर्थंकर रिषभदेव-महाराजका शरीर-अखीरके तीर्थंकर महावीर स्वामीकी-एक-आत्मअंगुलके हिसाबसें-(२५०) धनुष्यका हुवा. और अढाइसो धनुष्यके (१०००) हाथ हुवे. खयाल करनेकी जगह है,-कोटा-कोटि-सागरोपमकालके पेस्तर इतने उचे कदवाले मनुष्य क्या-न-होगें, जमानेहालमे सुनाजाता है,-मुल्क-अमेरिका

आजायगा, मगर नदीका जल उस जगह वहां बना रहेगा. इसीतरह -जीव-और-कर्मोका-संबंध प्रवाहरूपसे अनादि है.-और एक कर्मकी अपेक्षा-सादीभी-है,-जब-जीव-निस्पृह होकर धर्म करेगा पहलेके -कर्म-क्षय होकर नये कर्म-न-बधेगें-जब-उसकी मुक्ति होगी, जबतक मुक्ति नही हुई-कर्मोके शाथ बधाहुवा-जन्म-जन्मातरमे सफर करता रहता है,—

२९ किताब सत्यार्थप्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४८५)पर दयानंद सरस्वतीजी लिखते हैं-रिषभदेव पाचसो धनुष्यके उचे-और चोरासी-लाख पूर्व-वर्षका आयु,-अजितनाथ-साढेचारसो धनुष्यके उंचे-और बहत्तर लाख पूर्व-वर्षका आयु, संभवनाथ-चारसो धनुष्यके उचे और साठ लाख पूर्व-वर्षका आयु. इसतरह चौइस तीर्थंकरोंका बयान लिखकर-आगे-(४८६) पृष्टपर लिखते है. इसमे -बुद्धिमान् लोग विचारलेवे इतने वडे शरीर और इतना आयु मनुष्यदेहका-होना-कभी-संभव है, ?

(जबाब.) क्यौ नही संभव है?-पेस्तरके आदमी बडीबडी उम्र -और-कदवाले होते थे. इसमे-कोई-शक नही जानवर और परींदेभी-बडेबडे होते थे,-इसीतरह-मकान-कोट-किलेभी-बडे होते थे,-जैनमजहबमे-छह-युग-माने हैं -अवल सुखमय-सुखमययुग, दुसरा सुखमययुग, तीसरा सुखमय-दुखमययुग, चौथा दुखमय-सुखमययुग, पाचमा दुखमययुग, और छठा दुखमय-दुखमययुग, इनकी गिनती दश कोटाकोटी-सागरोपम कालकी शुमार किइगई है, वैदिकमजहबमे-सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, और कलियुग-ये -चार युग मानेगये है,-पेस्तरके जमानेमे मनुष्य-बडेबडे कदवाले-और बडीबडी उम्रवाले होते थे यह-बात-हरेक मजहबवाले मजुर रखते है -धर्मशास्त्रोंमे-सुनते हो,-फला! मुनि-महर्षिने-इतने वर्ष-तक तप किया, जमाने पेस्तरके-विश्वामित्ररिषिजीने-ब्रह्मर्षि होनेमे (६०) हजार वर्स-तप-किया,-जब इतने वर्स-तप-किया-तो-

उनकी उम्रभी-बडी-क्यों-न-होगी. जब-उम्र-बडी होगी-तो-उनके शरीरका-कद-क्यों-न-बडा होगा? विश्वामित्ररिषिजी मुवाफिक फरमान वैदिकमजहबके-जमाने रामचंद्रजीके हुवे,-जब-रामचद्रजीके जमानेमें इतनी उम्र-और-बडा-शरीर था-तो-उनसें अव्वलके जमानेमे वडी उम्र-और बडा शरीर क्यों-न-होगा? इसपर गौर किजिये! हिरण्यकश्यप-बडा कदवाला था-यह बात-शास्त्र फरमानसे साबीत है, जमाने-सिकंदरके-पौरस-राजा-हिंदमें-बडी ताकात और-कदवाला था. तवारिख देखनेसें मालुम होगा.-इसीतरह हजार-दो-हजार वर्स पेस्तर इनसे बडे-क्यों-न-होगें. दश हजार बर्स-और-लाख वर्स-पेस्तर ज्यादा बडे आदमी बडे-कदवाले होना चाहिये, फर्ज करो! करोड वर्स पेस्तर-इनसे ज्यादा बडे क्यों-न-होगें?-जैनमजहबके तीर्थंकर-रिषभदेव-महाराज-कोटाकोटि-सागरोपमकाल-पेस्तर हुवे,-उनका शरीर (५००) धनुष्यका था इसमें कौन ताज्जुबकी बात है? पेस्तर इसी लेखमे लिखा-गया है. जैनमजहबमें शरीरकी उचाइका-नाप-उत्सेध अगुलसे शुमार किया गया है,-और-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी आधी-आत्मअगुलकों-एक-उत्सेध-अगुल-कहते है,-यहभी बात पेस्तर बतला चुका हु-तीर्थंकर महावीर स्वामी-उत्सेध-अगुलके नापसें-सात हाथ-और-उनकी-आत्मअगुलसे-वे-साढेतीन हाथ-उचे थे. इस बातकों-समजना चाहिये.-जिस जिस जमानेमे जितने जितने कदवाले मनुष्य हो-उनके अगुलको आत्मअगुल कहते है-और तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी आत्मअगुलकों प्रमाणअगुल कहते है,—

३० तीर्थंकर रिषभदेव-महाराजका शरीर-अखीरके तीर्थंकर महावीर स्वामीकी-एक-आत्मअगुलके हिसाबसें-(२५०) धनुष्यका हुवा और अढाइसो धनुष्यके (१०००) हाथ हुवे. खयाल करनेकी जगह है,-कोटा-कोटि-सागरोपमकालके पेस्तर इतने उचे कदवाले मनुष्य क्यों-न-होगें, जमानेहालमे सुनाजाता है,-मुल्क-अमेरिका

-और रुम-वगेरामे-सात-सात-फुट-उचे-आदमी-मौजूद है, जिनकों अखबार पढनेका-शौख है,-बखूबी जानते होगें.-मुल्क अमरिकाके-न्यूयॉर्क-वगेरा-शहरोमें बडेबडे मकान होते है.-कई मुल्कोंमे -पुराने मकानके खडहेर-और-पुरानी इटे-आजकलकी इटोंसें बडी-बडी पाइजाती है,-और-मरेहुवे हाथीयोंके-कलेवर-कई जगह-जमीनमे दवेहुवे-निकल आते है -जो-आजकलके हाथीयोंके शरीरसे बडे देखे जाते है.-अखबारोमे जाहिर होचुका है.-हिंदके शिवाय दुसरे मुल्कोंमें-ऐसी ऐसी ताकातवाली औरते होती है, जिसका-वजन-करीब पाच मण-पक्का-और उसके जिश्मकी-उचाई सात फिटतक होती है -कभी-कोई-मोटार-चलती हुई उमसे टकर खा जाय-तोभी-चोट-न-लगे, और वैसटके खडी रहसके —

३१ जैनमजहबमे-जो-बडेबडे-जिश्मवाले-युगलीक-मनुष्य मानेगये है, इस भारतवर्षमे-नही,-बल्कि! जबूद्वीपके देवकुरु-उत्तरकुरु -जो-युगलीक मनुष्योंके मुल्क है,-उनमे मानते है,-तीर्थंकर रिषभ देवके जमानेसे पेस्तर-जो-भारतवर्षमे युगलीक मनुष्योंका होना-जैनशास्त्रोमे मजुर रखागया है,-जबूद्वीपके देवकुरु-उत्तरकुरु जगहके युगलीक मनुष्योंसे छोटे कदवाले थ -अगर कहाजाय इतने कदवाले मनुष्योंकेलिये-घर-और-थभे कितने बडे होंगे? जवाबमे मालुम हो जैसे मनुष्य-वैसे उनके रहनेके-घर-और-घरके थभे होने चाहिये इसम कोई ताज्जुबकी बात नही जिनको अखबार पढनेका-शौख है,-बखूबी जानते होगें -सबुत हुवा, जहा-बडे कदवाले आदमी हो, वहा-मकानभी-बडे होते है —

३२ किताब सत्यार्थप्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४७१)पर दयानद सरस्वतीजी बयान करते है,-अब देखो! जितना मूर्त्तिपूजाका झगडा चला है,-वो-सब-जैनियोंके घरसे चला है,—

(जबाब) मूर्त्तिपूजाका झगडा जैनोंके घरसे नही चला, बल्कि! मूर्त्तिपूजा कदीमसें चली आती है,-देखिये! वाल्मिकीय रामायणमे

-रावण-शिवमूर्त्तिकी पूजा करता था लिखा है,-मनुस्मृतिमें-आठ तरहकी मूर्त्तिका बयान है.-सनातन वैदिक मजहबवाले-मूर्त्तिपूजा-तीर्थयात्रा-और-गंगास्नान वगेरा मानते है, अगर कहाजाय! निरा-कारका आकार नही होता जबाबमें-मालुम हो. ज्ञान-निराकार है,-जितने हर्फ है,-ज्ञानकी-मूर्त्ति है,-अगर हर्फोंकों-न-मानेजाय-तो-श्रुति-स्मृति-वगेराका ज्ञान कैसे होसके?-मदर्सोंमे-लडकोंकों-इल्म-पढातेवख्त-भूगोलविद्याकी माहितीकेलिये-नकशे-दिखाये जाते है,-दरअसल! ये-उन उन-मुल्कोंके आकार है.-और-उनसें भूगोलविद्याका ज्ञान जाहिर होता है, मूर्त्ति-तस्वीर, फोटो-प्रतिबिंब-ये-सब मूर्त्तिके नाम है.-अगर कोई इस सबालको-पेंश-करे, प-त्थरकी मूर्त्तिको-परमात्मा-मानना क्या! फायदा? (जबाब) कागज-स्याहीके बनेहुवे पुस्तकोंकों धर्मपुस्तक मानना क्या! फायदा? अगर कहाजाय-पुस्तक बाचनेसे ज्ञान पैदा होता है-तो-जबाबमे तलब करो,-मूर्त्तिके दर्शनसे उस देवकी यादी आती है-और उस देवकी यादी दिलानेमें-मूर्त्ति-एक सहारा है.-दयानद-सरस्वतीजी-मूर्त्ति-पूजा-नही मानते थे, खयाल पैदा होनेकी जगह है,-विवाहके पहले वरकन्याकी फोटोकी तस्वीर देखकर विवाह होना-योग्य-कैसे समझा गया? इससे-तो-मूर्त्तिका होना लाजिम समझा गया, देखिये! किताब सत्यार्थप्रकाशके चतुर्थ समुल्लासमे-पृष्ट (९३)पर-श्रीयुत दयानद सरस्वतीजी लिखते है,-जब कन्या-वा-वरके विवाहका समय हो, अर्थात्-एक वर्स-वा-छ'महिने ब्रह्मचर्याश्रम-और विद्या पुरी होनेमे-शेष-रहे, तब-उन कन्या और कुमारोका प्रतिबिंब-अर्थात्-जिसकों-"फोटोग्राफ"-कहते है,-अथवा प्रतिकृति उतारके कन्याओंकी अध्यापिकाओंके पास कुमारोंकी-कुमारोंके अध्यापकोंके पास-कन्याओंकी प्रतिकृति भेज देवे. जिस जिसका-रूप-मिलजाय उस उसके इतिहास-अर्थात्-जो-जन्मसे लेकर उस दिनपर्यंत-जन्म-चरितका-पुस्तक-हो-उनकों अध्यापकलोग मगवाकर देखे, जब

दोनोंके-गुण-कर्म-सभाव-सदृश हो, तब जिस जिसके शाथ जिस जिसका विवाह होना योग्य समजे-उस उस पुरुष और कन्याका प्रतिबिंब और इतिहास कन्या और वरके हाथमें देवे और कहे-कि-इसमें-जो-तुमारा अभिप्राय हो-सो-हमको विदित करदेना जब दोनोंका निश्चय परस्पर विवाह करनेका होजाय तब उन दोनोंका समावर्त्तन एकही समयमें होवे,-जो-वे-दोंनों अध्यापकोंके सामने विवाह कराना चाहे-तो-वहा, नही-तो-कन्याके मातापिताके घरमें विवाह होना योग्य है देखिये! इस लेखमें-वरकन्याका प्रतिबिंब अर्थात्-फोटोग्राफ-देखकर विवाह होना मुनासिब समझा,-यानी फोटोग्राफकी तस्वीर जरूरी समजी —

३३ किताब सत्यार्थप्रकाशके पृष्ट (६३७)पर-स्वमतव्यामतव्य-प्रकाशकी दुसरी कलममें-श्रीयुत दयानंद सरस्वतीजी इस मजमूनको पेश करते है -चारों-वेदों-(विद्या धर्मयुक्त ईश्वरप्रणीत संहिता मंत्र भाग.)कों-निर्भ्रांत स्वत प्रमाण मानताहू -वे-स्वय-प्रमाणरूप है कि-जिनके प्रमाण होनेमें किसी अन्यग्रथकी अपेक्षा नही, जैसे सूर्य -वा-प्रदीप-अपने स्वरूपके स्वत.प्रकाशक और पृथिव्यादिकेभी-प्रकाशक होते है. ऐसे चारों वेद है,-और चारोंवेदोंके ब्राह्मण, छ अंग,-छ उपाग,-चार उपवेद-और ११२७ (ग्यारहसो-सत्ताइस) वेदोंकी शाखा, जो कि-वेदोंके व्याख्यानरूप-ब्रह्मादि महर्षियोंके बनाये ग्रंथ है -उनकों-परत प्रमाण-अर्थात् वेदोंके अनुकूल होनेसे प्रमाण और-जो-इनमे वेदविरुद्ध वचन है उनका-अप्रमाण करताहु. -सनातन-वैदिकमजहबवाले वेदोंके पुराने भाष्यकार-और टीकाकार -उवट-सायनाचार्य-और-महीधर वगेराके फरमानकों मंजुर रखते है,-मूर्त्तिपूजा-तीर्थोंकी जियारत जाना-और गगास्नान वगेरा मानते है,-इनको-प्रमाण मानना-या-अप्रमाण-?-वेदोंके पुराने भाष्य-और-जो-टीका है, उनको मंजुर रखना-या-नही? इसके बारेमें क्या! जबाब है?-और-उसमें कोनसा सबुत है?—

३४ किताब सत्यार्थप्रकाश बारहमे समुल्लासके पृष्ट-(४७१)पर दयानद सरस्वतीजी जैनोंकी मूर्त्तिपूजाके बारेमे लिखते है. मदिर बनानेके नियम-मंदिरोंकों बनवाने और सुधारनेसें मुक्ति होजाती है. -आगे-ऐसाभी लिखा है.-मूर्त्तिपूजासे-रोग-पीडा-और-महादोष छूट जाते है.-एक किसीने पाच-कोडीका-फूल-चढाया. उसने (१८) देशका राज पाया उसका नाम-कुमारपाल हुवा.—

(जबाब) बेशक! जैनलोग-अपने-द्वादशाग-बाणीके धर्मपुस्तकोंकों-सर्वज्ञप्रणीत होनेसे-स्वतःप्रमाण मानते है.-जैसे आपलोग-अपने वेदोंकों स्वतःप्रमाण मानते हो,-और-जो-जैनाचार्योंके बनाये-हुवे दुसरे ग्रथ द्वादशागवाणीके मुताबिक है,-उनको-परतःप्रमाण मानते है.-विधिवाद सर्वव्यापी-और-चरितानुवाद अल्पव्यापी है, इस बातको-ब-गौर समजना चाहिये.-जैनशास्त्रमे फरमान है धर्मपर जिस शख्शका दिल-पाक-और-साफ होगया. कामील एतकातसे जिनमदिर बनावे मदिरकी मरम्मत करावे-या-मूर्त्तिपूजा-करे-तो उसकी मुक्ति क्यों-न-हो?-सब मजहबवाले-श्रद्धा और आस्ताकों-मजुर रखते है.-श्रद्धाका होना-मन'परिणामके ताल्लुक है,-मनःपरिणाम कहो-या-दिलिइरादा कहो, बात एकही है.-साफ दिलसें कोईभी धर्मकरनी किइजाय-तो-उसकी मुक्ति होसकती है.-रोग पीडा छुट जाते है, मनःपरिणाम पाक और साफ होनेसें-अशुभ-अनिकाचित-कर्म-दूर होसकते है, फिर महादोष दूर होना कौन बडीबात रही? इसमे जैनोंने कौन-गलत बात कही थी? जो-बात दाखले दलिल और धर्मशास्त्रके मयुतसें करार पाइजाय उसकों कोई गलत नही कहसकता,-एक शख्शने पाच कोडीके फुलसें-अठारा देशका राज्य पाया, उसका जबाव सुनिये! राजा-कुमारपालके जीवने पहले जन्ममे अपने अछे भावोंसे जिनमूर्त्तिपर-फूल-चढाये थे, इसलिये-उसकों-कुमारपालके भवमे अठाराह देशोका राज्य मिला. और-परमआर्हत-कुमारपाल-भूपाल-कहलाया, जो-जैनाचार्य-हेमचद्रसूरिका फरमान-

रदार था धर्मके काममे-पाच कोडीके फुलपर वात नही है,-दिलीइरादे पर-सव वात दारमदार है.-दुनियादारी हालतकी वातमेभी-देखो! कोई शख्श-दुसरे शख्शकों-प्रेमभावसें-एक पानवीडीभी देवे-कितनी इज्जत किई समजी जाती है? इसपर गौर किजिये. मूर्त्तिपूजा और तीर्थोंकी जियारतमे-वेशक! दिलीइरादे-पाक-और साफ होते है, और दिल धर्मपर-रजु होता है,-फिर धार्मिक फायदा-क्यों-न -मिलेगा? अगर कोई-मूर्त्तिपूजाको-मजुर रखे-या-न-रखे, मगर इन्साफ कहता है, मूर्त्तिपूजा-और-तीर्थोंकी जियारत एक-फायदेमद चीज है,-दिलके इरादे पाक और साफ होगें-और-धर्मकी तरक्की होगी—

३५ किताव सत्यार्थप्रकाश-वारहमे-समुल्लासके पृष्ट (४७३)पर-दयानद सरस्वतिजी-जैनोका-नमस्कारमत्र लिखकर-वयान करते है, यह-इनका मत्र है,-"नमो अरिहताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाण, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मगलाण च सव्वेसिं-पढम हवइ मगल,"-इस मत्रका वडा-माहात्म्य लिखा है, और सव जैनोंका यह गुरुमत्र है,—

(जवाव) आपने गायत्रीमत्रकों वडा माना है,-और-उसका वडा प्रभाव वयान किया है,-जैनोंने-अपने-नमस्कारमत्रकों वडा माना और उसका प्रभाव वयान किया, इसमे कौनसी-बेजा-वात कही? हरेक मजहबमे अपने अपने देवके नमस्कारका मत्र होता है,-उपर दिखलायेहुवे नमस्कारमत्रमे देखलो! अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सव-साधुजनोंकों नमस्कार किया है -इसमे गलतवात-क्या थी,?-गायत्रीमत्रके वारेमे मनुजी अपने शास्त्रमे फरमाते है,-गायत्री-मत्र-पढनेसे मनुष्य मुक्ति पाता है,-जैनोंने वयान किया, जो-शख्श-रागद्वेष-काम-क्रोध-मोह-वगेरा दुश्मनोंसें फतेह पावे, उनका नाम-जिन है,-जिन कहो,-अरिहत कहो, वात एकही है,-अरिहत-जव मुक्ति पाते है,-तव-सिद्ध कहलाते है, उनकों नमस्कार

किया-इसमें कौनसी बेजा बात थी? धर्मशास्त्रकी तालीम देनेवालोंको जैनमजहबमे आचार्य कहे, उनकों नमस्कार करना कौन बेइन्साफकी बात थी? फिर उपाध्यायको-और-साधुजनोंकों-नमस्कार किया है, इसमे जैनोंने कौनसी बेमुनासिब बात कही? आपलोग-गायत्रीमत्र मानना मजुर रखते है-जैनलोग-नमस्कार-महामत्र मजुर रखते है.-इसमे-अतिशय-उक्ति-क्या थी? चाहे-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति हो-या-तीर्थंकर महावीरकी हो, जैनलोग-जन-मूर्त्तिपूजाको-मजुर रखते है,-फिर उनके दर्शनसें दिलीइरादा सुधरनेपर -पाप-दूर क्यों-न-होगें? चाहे-कोई-मूर्त्तिकों-न-माने,-मगर फोटोग्राफ तस्वीरकी-जरूरत समजे-तो-बात क्या हुई? मूर्त्ति-समान फोटो है,-किसीने कागजकी मूर्त्ति-मजुर रखी. किसीने पथ्थरकी-मूर्त्ति-मजुर रखी, किसीने नैवेद्य चढाया. किसीने-हवन-होम-किया,—

२६ अगर सवाल कियाजाय-जिनमूर्त्तिको फुल चढाकर-जो-पूजन-किइजाती है. क्या! इसमे फुलोंके जीवोंकी हिंसा नही होती?—

(जवाब.) देवपूजनमे इरादा धर्मका होनेसे भाव हिंसा नही. और बिदून भावहिंसाके पाप नही जैनलोग-जो-मूर्त्तिपूजामे-देवमंदिरोंमें -और तीर्थोमे-हजाराह रुपये सर्फ करते है-इसमे इरादा धर्मका होनेसे पुन्य है,-कोईभी मजहबवाले हो-अगर मूर्त्तिपूजा-माननेवाले हो-तो-देवमूर्त्तिके-सामने फल-फुल चढाते है.-मूर्त्तिकों नही माननेवालेभी-अपने-समाज-या-सभा-स्थापन करनेके रोज-वार्षिक जलसा करते है,-बाजा बजाते है गायन करते है,-सवाल पैदा होनेकी जगह है मूर्त्तिका-मानना-या-जलसा करना मजुर-नही-तो-अपनी सभा-या-समाज स्थापनकी-सालगिरेका जलसा करना पसद कैसे हुवा? इसका माकुल जवाब दिजिये,-नया मदिर बनाना -या-पुराने मदिरकी मरम्मत कराना,-तीर्थोमे धर्मशाला तामीर कराना-सब-पुन्यके काम है. सबब इसमे इरादा धर्मका है, जहा

इरादा धर्मका-हो-वहा-पुन्य है.-इस बातको कोई गलत नही कहसकता. शत्रुंजय,-गिरनार,-आबु-समेतशिखर-वगेरा-जैनतीर्थ -है,-जियारत जानेवालोंकी-जेसी-मनोभावना होगी-वैसा-उनको फल होगा,-जैनोने-स्वर्गलोकके उपर-सिद्धशिला-मुक्तिका स्थान माना है,-जब-सब कर्मोसे छुट जाता है,-वहा जाता है,-और फिर संसारमे-कभी नही आता, यह बात बहुत ठीक है, मुक्तिमे जन्म-मरण नही, देह नही, सिर्फ! निर्मल आत्मा-अपने ज्ञानमे मशगूल रहेता है-किताब सत्यार्थप्रकाश-बारहम समुल्लासके पृष्ट (४७६) की अखीरमे दयानंद सरस्वतीजी लिखते है, उस शिला-वा-शिवपुरके बहार निकलनेसे उनकी मुक्ति छुट जाती होगी और सदा उसमे रहनेकी प्रीति और उससे बाहर जानेमे अप्रीतिभी रहती होगी-आगे ऐसाभी लिखा है,-यह-जैनियोकी मुक्तिभी एक प्रकारका बंधन है.-(जवाब) मुक्तिमे-राग-द्वेष वगेरा दोष होते नही, रागसें प्रीति और द्वेषसें अप्रीति पैदा होनेका संभव है,-जब-मुक्तात्माको-राग-द्वेष-नही-तो-उनकों मुक्तिमे प्रीति अ-प्रीति पैदा होनेका सबब क्या?-इसलिये-मुक्तिकों बंधन कहना नही बनसकता, अगर-मुक्तिमेंसेभी-वापिस संसारमे लोट आना मानाजाय -तो-वो-मुक्ति क्या हुई? इस बातपर खयाल किजिये, जमाने हालमे कोई तीर्थंकर मौजूद नही,-ब्रह्मा-विष्णु-महेश वगेरा हयात-नही, मगर उनके फरमायेहुवे धर्मशास्त्र-जो-मौजूद है, उन्हीकों बाचकर उनके गुण और स्वरूपकी हकीकत तलाश करना चाहिये,—

२७ जैनशास्त्रोमे-पटना-शहरके बाशिंदे-शकडालमंत्रीके बेटे-स्थूलभद्रजी-हुवे-जवानीमे-एक-कोश्या-नामकी वेश्याके-घर-बारा वर्सतक रहे थे जो इसी पटनाकी-रहनेवाली थी. जब स्थूल-भद्रजी-दुनिया छोडकर साधु हुवे और-तप किया-उनकी स्वर्गगति हुई. किताब-सत्यार्थप्रकाशके बारहम समुल्लासमे पृष्ट (४७५)पर

दयानंद सरस्वतिजी बयान करते है. इनकेमे बहुत कुकर्म-करनेवाला साधुभी-सद्गतिकों गया.—

(जबाब.) जब-कुकर्म छोडदिया और तप किया-फिर उनकी-सद्गति-क्यों-न-हो? इसमे नेंजा बात क्या थी? स्थूलभद्रजीने-साधु हुवे बाद-कोश्या-वेश्यासें संग नही किया. धर्ममार्गपर चले.-फिर उनकी स्वर्गगति क्यों-न-हो.-जरूर हो, जब परलोकका ज्ञान-न-हो,-और दुनियादारीके कारोबारमे फसे-मगर-फिर जब उस फदेसें छुटकर-धर्म करे, तो अछी गति-होसके. ऐसा धर्मशास्त्रका फरमान है,-बात-बहुत बहेत्तर है, अगर-दुनियादारीके कारोबारमे-इस जीवकों-निकाचित कर्म-न-बधे-हो-तो-तप-करनेसें-अशुभ-अनिकाचित-कर्म-छुट सकते है, और अछी गति होसकती है, इसमे कोई शक-नही. फिर आगे-जैनके अरणिकमुनिके बारेमे लिखा है,-मजकुर मुनि-चारित्रधर्मसें चुककर-कई वर्स-पर्यंत-गृहस्थपनमे रहा. और फिर देवलोककों गया.-जबाबमें मालुम हो, एक-आदमी-धर्मसें गिरकर-अपना रास्ता भूलजाय. फिर ज्ञान होनेसे-धर्मके रास्तेपर आजाय,-निकाचित-कर्म-न-बधेहो-तो-उसके-अशुभ-अनिकाचित-कर्म-दूर होकर-धर्मकरनीसें उसकों-देवलोककी गति मीले, इसमें कोइ बेइन्साफ नही, कोई शख्श धर्मसे गिरकर फिर सुधरजाय और-धर्ममे पाबद बने-तो-यह-बात बनसकती है-और-पुन्य हासिल करके स्वर्गकी-गति-पासकता है. कई-शुक्लध्यानसे-मुक्तिभी-पासके है,-जिसका दिल-पाक-और-साफ होगया-तो-उसकी स्वर्गगति-या-मुक्ति कौन रोक सकता है, ?—

३८ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे-समुल्लासमे पृष्ट (४७५)पर दयानद सरस्वतीजी-लिखते है,-जैनलोग मानते है. श्रीकृष्णके-पुत्र-ढढण-मुनिकों-स्यालिया-उठा लेगया. पश्चात् देवता हुवा.—

(जबाब.) किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा-श्रीकृष्णके पुत्र-ढढण मुनिको स्यालिया-उठा लेगया. मजकुर बयान दयानंद सरस्वतीजीने

वगेर तलाश किये लिखा है-और वगेर-तलाश किये कोई बयान पेश करना-बडी-भूल है.-दरअसल मजकूर बयान ढढण मुनिका नही.-मगर उजेन नगरीके वाशिंदे-एक-अवंतिसुकुमाल मुनिका बयान है,-उनकोंभी-स्यालिया-उठा-नही लेगया था मगर जब-अवंतिसुकुमाल--दुनिया छोडकर जैनमुनि हुवे थे और-उजेन नगरीके बहार-कथारिक-बनमे खडे होकर ध्यान करते थे-रातके वख्त एक स्यालियेने आनकर उनकों काटा था -मुनि-अपने ध्यानमे साबीत कदम रहे थे. और उनकी अछी गति हुई थी देखिये! बात किसकी थी-और लिख दिइगई किसके नामपर, फिर सत्यार्थ-प्रकाश-बारहमे समुल्लासके इसी पृष्टपर जैनके विवेकसार पृष्ट (२१६) का-सबुत देकर दयानद सरस्वतिजी-बयान करते है एक चोरने पाच मुठी लोचकर चारित्र ग्रहण किया, बडा कष्ट और पश्चात्ताप किया. छठे महिनेमे-केवलज्ञान पाकर सिद्ध होगया.--

(जवाब) एक चौरने चौरी करना कतई छोड दिया. वैराग्य पाकर दीक्षा इख्तियार किई अपने कियेहुवे पापकर्मोसे-पश्चात्ताप किया. जिस शहरमे पेस्तर चौरी किया करता था-उसी शहरके बहार थोडी दूर एक दरख्तके नीचे ध्यान करताहुवा तप करनेलगा, उसके सामने आकर कई लोग कहने लगे, देखो! पेस्तर यह चौर था अब साधु होगया है,-वगेरा बाते सुनाकर हासी करते थे मगर इस बातकों-सुनकर-वो-नाराज नही होता था, बल्कि! दिलमे कहताथा, इनका कहना बजा है-इसतरह-छह-महिनेतक अपनी बुराइयोंसे वैराग्य-पाकर मुक्ति पाई बतलाइये! इसमे-बेमुनासिब बात क्या थी? क्या! कोई-शख्श-पेस्तर-पापकर्म-करता हो-और-उनकों छोडकर धर्म करे-तो-उसकी मुक्ति-न-होसके? जरूर होसके-इसमे कोई-शक-नही जैनशास्रम फरमान है,-चाहे कोई-गरीब हो-या-अमीर धन्वतरी वैद्य हो,-या-चक्रवर्त्ती-वासुदेव-वगेरा कोई हो -जैसी धर्मकरनी करेंगे-वैसा फल-पायगे, अछी करनीका फल अछा

और बुरी करनीका–बुरा,–इसमे कोई बेइन्साफकी बात नही. जैनमजहबमे–तीर्थंकर रिषभदेव,–अजितनाथ–वगेरा चौइस–तीर्थंकर धर्मके नायक समजे गये है,–उन्होंने–दुनिया–छोडकर–दीक्षा इख्तियार किई, तप किया और मुक्ति पाई,–इसमें कोई बेमुनासिब बात नही फरमाई.–जैनसाधुओंके–और–जैनगृहस्थोंकेलिये–जैनशास्त्रोंका–क्या–क्या! फरमान है? इसकों देखिये! किसी–एक–जैनमुनिने–या–जैनगृहस्थने धर्मशास्त्रसे खिलाफ बरताव किया–तो–वो–सबपर लागु–नही होसकता, इसीलिये कहागया–जो–चरितानुवाद–विधिवादके खिलाफ है,–काबिल छोडनेके–है. जो–विधिवादके मुताबिक है–वो–विधिवादमे आगया, इसीलिये विधिवाद–सर्वव्यापी, और–चरितानुवाद सर्वव्यापी नही कहलाया, किसी जैनसाधुने–या–जैनगृहस्थने खिलाफ जैनशास्त्रके बरताव किया–वो–सब–जेनोंने करना, ऐसा कोई नियम नही,—

२९ किताब–सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४७६)पर–दयानंद सरस्वतीजी–जैनग्रंथ–विवेकसार पृष्ट (५५)का–सबुत देकर लिखते है, गगादि तीर्थ–और काशी आदि क्षेत्रोंके सेवनेसे कुछभी परमार्थ सिद्ध नही होता. और अपने गिरनार, पालिताणा–और–आबूआदि तीर्थक्षेत्र–मुक्तिपर्यंतके देनेवाले है. (समीक्षक) यहां विचारना चाहिये. जैसे शैव, वैश्नवादिके तीर्थ–और क्षेत्र–जल स्थल–जडस्वरूप है,–वैसे जैनोंकेभी है,—

(जवाब.) दयानद सरस्वतीजी–वेदोंकों मानते थे. मगर मूर्त्तिपूजासें इनकार करते थे. सनातन वैदिकमजहबवालोंने–गगा–काशी वगेरा क्षेत्रोंकों तीर्थ–माने है. और मूर्त्तिपूजा मंजुर रखी है,–जैनलोग–गिरनार–पालिताणा–आबु–समेतशिखरजी वगेराकों तीर्थ मानते है,–और–रागद्वेष वगेरा दोषोंसें रहितकों देव और उनकी मूर्त्तिकों मानना मजुर रखते है. दयानद सरस्वतीजी फरमाते है, जैसे–शैव–वैश्नवादिके तीर्थ–और क्षेत्र–जल स्थल–जडरूप है, वैसे जैनोंकेभी–

है. जवाबमें मालुम हो. अगर जल-स्थल-जडरूपकों तीर्थ नही मानना-तो-कागज-स्याहीके बनेहुवे-धर्मपुस्तकभी-जड-है,-पूजनीक क्यों मानना? इसका जवाब-दिजिये -दरअसल! तीर्थ-क्षेत्र-और-मूर्त्ति-जडरूप हो-इससे क्या! हुवा? पूजक पुरषकी जैसी भावशुद्धि होगी-वैसा उसकों फल होगा.-धर्मशास्त्र फरमाते है भावे हि विद्यते देव.-तस्माद्भावो हि-कारण,-अब-रहा-सुदेव-सुगुरु-सुधर्मका सवाल-सो-जिज्ञासु-महाशय आप करलेवे,-अगर कोई इस सवालकों-पेश-करे, जैनशास्त्र-कुवा, वावडी, तालाब वगेरा जलाशय बनवाना मना फरमाते है -जवाबमें तलब करे, पापकर्मकी पुख्तगीकेलिये-कुवा-वावडी तालाब-वगेरा बनवाना मना फरमाया, मगर पुन्यकर्मकी पुख्तगीकेलिये-या-अनुकंपाकेलिये बनवाना मना नही, खयाल करनेकी बात है, हिंदमें इसवख्त-छोटेबडे-जैनश्वेतांबर मदिर करीबन छत्तीस-हजार-शुमार कियेजाते है. उनकेलिये-हजारोंही-कुवे-वावडी-बनेहुवे है. कई जगह-बाग-बगिचे बने मौजूद है,-और उनमें गुलाब-चमेली-मोंघरा वगेराके फुल पैदा होते है, और हमेशाकी जिनपूजामें चढाये जाते है,—

४० किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४७७)पर-दयानद सरस्वतीजी-जैनग्रंथ तत्वविवेक पृष्ट (१९६)का-सबुत देकर तेहरीर करते है -इस नगरीमें-एक नदनमणिकार-शेठने एक-वावडी -बनवाई, उससें धर्मभ्रष्ट होकर सोलह महारोग-हुवे, मरकर उसी वावडीमे-मेडक-हुवा, महावीरके दर्शनसे उसकों जातिस्मर्ण-ज्ञान-होगया,-महावीर कहते है,-मेरा आना सुनकर-वह-पूर्व जन्मके धर्माचार्य-जान-वदनाकों आने लगा, मार्गमें श्रेणिकके घोडेकी टापसें मरकर शुभ ध्यानके योगसे-दर्दुराक-नाम महर्द्धिक देव हुवा अवधिज्ञानसें-मुजकों यहां आया जान-वदनापूर्वक रिद्धि दिखाके गया —

(जवाब) नदनमणिकार शेठने-धर्मकी पुख्तगीकेलिये वावडी

नही बनवाई थी. पापकी पुख्तगीकेलिये बनवाई थी. और मरतेवख्त -उसका मन-उस बावडीके मोहमे पडगया था.-इसीलिये-वो-मरकर उस बावडीमे-मेंडक हुवाथा. धर्मशास्त्रका-फरमान है,-जिस-जीवका-मन-जिस चीजके-मोहमें-पडजाय-मरकर उसीमे पैदा होजाता है, यही बात-नदनमणिकार-शेठके किस्सेमें बनी थी. तीर्थंकर महावीर जब उस नगरमे तशरीफ लाये, बावडीके-कनारे-लोग -बातें करनेलगे, तीर्थंकर महावीर-यहां-तशरीफ लाये है.-मेंडकने -यह-बात सुनी, उनके दर्शनको चला,-उसका-मन-उसवख्त धर्मध्यानमें था. और धर्मध्यानमेंही उसका इतकाल हुवा, इसीलिये वो -स्वर्गकी गति पाया. इसमे कोई असभव बात नही.-दयानद सरस्वतीजी-इस लेखकी-अखीरमे-बयान करते है,-इत्यादि-विद्याविरुद्ध-असभव बात कहनेवाले महावीरकों-सर्वोत्तम मानना, महाभ्रांतिकी बात है,-जवाबमे मालुम हो, तीर्थंकर महावीरने दुनिया छोड दीक्षा इख्तियार किई थी, तप किया था. और केवलज्ञान पाया था. -इसलिये उनको सर्वोत्तम मानना कोई भ्रांतिकी बात नही, वेदोंको मानना और पुराने वैदिक आचार्य-उव्हट-सायनाचार्य-और-महीधराचार्यके बनायेहुवे पुराने भाष्य-और-टीकाको-न-मानना, मूर्त्तिपूजाको-नही मानना, और फिर विवाहसे पेस्तर-कन्या-और-कुमारोका प्रतिबिंब-अर्थात्-फोटोग्राफकी बनीहुई-तस्वीरकों देखकर विवाहका होना योग्य समजना, यानी-उसवख्त मूर्त्तिकी जरूरत समजना.—

४१ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४७६)पर-दयानद सरस्वतीजी जैनग्रथ-श्राद्धदिनकृत्य पृष्ट (३६)का-सबुत देकर तेहरीर करते है मृतकवस्त्र-साधु-लेलेवे, (समीक्षक) देखिये! -इनके साधुभी-महाब्राह्मणके-समान होगये -वस्त्र-तो-साधु लेलेवे. परतु मृतकके आभूषण कौन लेवे? बहुमूल्य होनेसें-घरमे-रखलेते होगें,-तो-आप-कौन हुवे, ?—

(जवाब.) दयानद सरस्वतीजीने मोगम बात क्यों लिखी, यह बात-गृहस्थकेलिये है-या-साधुलोगोंकेलिये बतलाना था. अगर कहाजाय, गृहस्थकेलिये है-तो-गृहस्थलोग-मरनेवालोंके शरीरपरसें गेहने-आभूषण-अवलसंही-उतारलेते है और पहनेहुवे-कपडे-मुर्देके-शाथ-जला दिये जाते है,-इसमें कौन ताज्जुबकी-बात-थी? अगर-साधुमहाराजकेलिये-मजकुर बयान लिखा गयाहो,-तो-फर्ज करो! साधुसमुदायमेंसें किसी साधुमहाराजका-मरना होगया उनके पहनेहुवे-कपडे-मुर्देके सग जलाही-दिये जाते है -और साधुलोगोंके -गेहने-आभूषण होतेही नही, फिर उसका-जिक्रही-क्या था?-जो -कोई बात लिखना-तो-साफ साफ लिखना चाहिये,-किताब-सत्यार्थ-प्रकाशके बारहम समुल्लासमे-पृष्ट (४७८)पर दयानद सरस्वतीजी-जैनग्रथ-तत्वविवेक पृष्ट (२०२)का-सबुत देकर इस मजमूनकों -पेश-करते है. एक दिन-लब्धि-साधु-भूलसें वेश्याके घरमे चला गया, और धर्मसें भिक्षा मागी, वेश्या-बोली-यहा धर्मका काम नही किंतु-अर्थका-काम है,-तो-उस लब्धि-साधुने साढेबारह लाख-अशर्फी-उसके घरमे वर्षा दी.—

(जबाब) जिस जैनमुनिने-वेश्याके-घर-साढेबारह लाख-अशर्फीये-बरसादिई थी-उनका नाम-नदीषेण-मुनि था. और उनके तपोबलसें-उनकों-ऐसी-लब्धि-सिद्ध थी जैनशास्त्रोंके फरमानसें-नदीषेणमुनि-दो-हजार वर्स पेस्तर हुवे-दो-हजार वर्स-पेस्तर-मुनिलोग ऐसे ऐसे लब्धिधारक होते थे,-आकाशगामिनी-विद्यासे-आसानमें-सफर करते थे,-विद्याके बलसें तरह-तरहके-रूप बनाते थे.-द्रौपदीजीके-सतसें सभामे-वस्त्र-पूर्ण हुवे, वगेरा बातें शास्त्रोंमें लिखी है,-सबुत हुवा,-पेस्तरके जमानेमे-तपधारी महात्माकों तरह तरहकी लब्धि होती थी -नदीषेण-मुनि-भूलसें वेश्याके घर भिक्षाकों चलेगये वेश्याने कहा, यहा-हमारे घर-धर्मका काम नही, दौलतका काम है.-वे-तपोलब्धिके धारक-बडे-नसीबेदार थे तुर्त! उन्होंनें

वेश्याके घर-अशर्फी वर्षा दिई उनके लिये-यह-कौन ताज्जुबकी बात थी.-इन्साफ-इस बातकों कुबुल रखता है, चाहे-कोई-माने-या-न-माने,-उनकी मरजी, अगर कहाजाय ऐसे करामातवाले साधु भिक्षा क्यों मागते थे? जवाबमे मालुम हो. भिक्षा मागना मुनिका धर्म है, इसमें उनकी कोई कमजोरी नही समजी जासकती. मत्र-शास्त्र गलत नही,-मणिमत्रौपधीना-अचिंत्यप्रभावः-मणिमंत्र और औपधियोंका-अचिंत्यप्रभाव शास्त्रोंमे बयान किया. जमाने हालमें -कई-मत्रशास्त्रके जाननेवाले मत्रबलसें-सर्पका-जहर उतार देते है.-मेसेरीझम-विद्याके बलसें कई तरहके प्रयोग करबतलाते है.-कई -शख्श ऐसे है,-जो-एक छोटी-जेबघडी-रुमालमे रखकर दुसरेके हाथमे देवे, और फिर थोडी देरके बाद वही जेबघडी तिसरे शख्शके खिस्सेमेसें निकाल देवे.-इन सबवोंसें सबुत पायाजाता है,-मंत्रविद्या सच है.-पेस्तर ज्यादा थी. अब-कम-होगई,—

४२ किताब-सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें पृष्ट (४७८)पर दयानद सरस्वतीजी-रत्नसार भाग-पृष्ट (६८)का-सबुत देकर इस मजमूनकों पेंश करते है. एक पाषाणकी मूर्त्ति घोडेपर चढीहुई-उ-सका जहा स्मर्ण करे वहा उपस्थित होकर रक्षा करती है,—

(जबाब.) घोडेपर चढीहुई पाषाणकी-मूर्त्ति-जैनोंके किस देवकी थी. इसका सबुत दयानद सरस्वतीजीने-रत्नसारका-पाठ-लिखकर-क्यों-नही बतलाया? जैनोंका कोई देव-घोडेपर चढाहुवा नही होता. जैनलोग-निर्मोही-अर्हन्-देवकों मानते है.-और-उन्हीकों तीर्थं-करभी कहते है,-उनकी पद्मासन देवमूर्त्ति-हरजगह जैनमंदिरोंमें तख्तनशीन होती है.-खयाल करनेकी बात है-जैनलोग अपने भले-बुरे-कर्मोको आराम और तकलीफ देनेवाले मानते है.-वे-घोडेपर चढीहुई-देवकी मूर्त्तिकों-क्यों-मानेगें?-जैनमजहबमे आज-कल-श्वेतांबर-दिगबर-स्थानकवासी-और तेरहपथ-ये-चार बडे फि-

रके शुमार किनेजाते है, श्वेताबर-दिगबर-दो-फिरके मूर्त्तिपूजाको मजुर रखते है,-स्थानकवासी और तेरहपथ-ये-दो-मूर्त्तिपूजाकों मजुर नही रखते, श्वेताबर फिरकेवाले शृगारीहुई मूर्त्तिको मानते है दिगबर फिरकेवाले-नग्नस्वरूप मूर्त्ति मानते है,-श्वेताबर जैनसाधु-रजो हरण-और दड-कबल रखते है, दिगबर-जैनसाधु-मोरपीछी और कमडल रखते है,-श्वेताबर जैनमुनि-मुहपत्ति हाथमे-रखते है, स्थान कवासी-और तेरहपथके जैनमुनि-मुहपत्तिको मुखपर बांधते है,-श्वेताबर फिरके साधुओंमे-एक-फिरका पीले कपडे पहनना मजुर रखता है,-जो-सवेगीसाधुके नामसें मशहूर और एक फिरका सफेद कपडे पहनना मजुर रखता है, जो-यतिनीके नामसें मशहूर है, जैनमुनि-कचन-कामिनीके त्यागी और भिक्षा मागकर सिकमपरवरीश करते है,-और आमलोगोंको तालीम धर्मकी देते है,—

४३ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४७९)पर दयानद सरस्वतीजी बयान करते है,-दिगबरोंका-श्वेताबरोंके शाथ इतनाही भेद है कि-दिगबरलोग-स्त्रीका-अपवर्ग नही कहते, और श्वेताबर कहते है, इत्यादि बातोंसे मोक्षको प्राप्त होते है,—

(जवाब) जैनश्वेताबर-और-जैनदिगबर फिरकेमे-औरतकी मुक्ति होनेके बारेमही-फर्क-नही मगर बहुतसी बातोंका फर्क है,-जैन श्वेताबर फिरकेवाले द्वादशाग-वाणीके-आचारागसूत्र वगेरा-अग-उपागके शाथ (४५) जैनागम मानते है,-दिगबर फिरकेवाले-धवल, जयधवल, महाधवल, गोमटसार,-वसुनदीश्रावकाचार वगेरा शास्त्र मानते है,-वगेरा चौरासी बातोंका फर्क है,-जिनको इन बातोंकी [illegible]गी, दोनो फिरकोंके धर्मपुस्तक बांचकर तलाश करे,—

[illegible]ाब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४७९)पर [illegible] थी [illegible]जी-इस मजमूनको पेश करते है जैनोंका वेश कहा [illegible] है और [illegible] इत्यादिभी लिखा है, [illegible]एसा [illegible] दिई है,-कहिये!

दया धर्म-कहा रहा? क्या! यह हिंसा-अर्थात् चाहे अपने हाथसें लुंचन करे, चाहे उसका गुरु करे,-वा-अन्य कोई, परतु कितना बडा कष्ट उस जीवको होता होगा? जीवको-कष्ट देनाही-हिसा कहाती है,—

(जवाब.) जैनमुनिकेलिये जैनशास्त्र कल्पसूत्रमें फरमान है,-जिसकी ताकात हो -वो-केशोका-लुचन करे, जिसकी ताकात-न-हो, -वो-उस्तरेसें-सिरके-केश-साफ करा लेवे,-या-कतरनीसे कटालेवे, इसमे कोई जबरजस्तीकी वात नही. दयानद सरस्वतीजीको मुनासिब था-जैनशास्त्रोंकी पुरी तलाश करके लेख लिखते, कल्पसूत्रके फरमानको देखलो! कल्पसूत्र-मयटीकाके छपाहुवा-नंबरै-अहमदवादमे जैनपुस्तक वेचनेवालोंसें मिलसकता है.-और अग्रेजी जबानमे तरजुमाभी-इसका होगया है,-केशलुचन-मुताविक फरमान-जैनशास्त्रके वाइस परिसहोंमे शुमार नही किया, जोराजोरी किसी जैनमुनिपर केशलुचन करनेका फर्ज डालना हुक्म नही.-अव दयानद सरस्वतिजीकी लिखीहुई-दलिलका-जवाब सुनिये! अगर-इरादे धर्मके-जीवको कष्ट देना हिसा कहलाती हो-तो-तप-क्यो-करना? तप करनेसें भूख लगेगी, और कष्ट होगा, वडेवडे रिषि-महर्पियोंने तप क्यो किया? कई-रिषि-महर्षियोंने-कई-वर्षतक तप किया वैदिक मजहबके धर्मशास्त्रोंमे लिखा है, वैदिकधर्ममे-एकादशी-पर्व-तिथिके रोज-व्रत-नियम करना वहेत्तर फरमाया,-खयाल करनेकी जगह है,-चाहे-साधु हो-या-कोई दुनियादार हो.-जो-धर्मपालनकेलिये तप करते है,-जीवको तकलीफ होतीही-है, लेकिन! अगर इस तपको हिसा मानीजाय-तो-तप करना-वेफायदे सावीत होगा, सवुत हुवा, इरादे धर्मके-तप-करना हिसा नही —

४५ किताव सत्यार्थप्रकाशके वारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४७९)पर-दयानद सरस्वतीजी-विवेकसार पृष्ट-ऐसा सवुत देकर लिखते है,-संवत् (१६३३)के सालमे जैनश्वेतावरोंमेसें-ढुढिया-और-ढुंढियोंमेसें -तेरहपथी आदि निकले है, ढुढियेलोग पाषाणादि मूर्तिको नही

मानते. और-वे-भोजन-स्नानको छोड सर्वदा मुखपर पट्टी बांधे रहते है, और-जति-आदिमी-जब पुस्तक बाचते है, तमी मुखपर पट्टी बाधते है अन्य समय नही.—*

(जवाब,) चाहे कोई जैनमुनि हो, यतिजी हो, ढुंढिये मजहबके-या-तेरहपथके कोई साधु हो,-व्याख्यानकेवख्त-या-तमामदिन-मुहपर-मुहपत्ति बाधना किसी जैनशास्त्रम नही लिखा. अगर लिखा हो-तो-जैनशास्त्रका सबुत पेश करे.-हाथमे मुहपत्ति रखकर शास्त्र बाचना फरमान है -जिससें शास्त्रकी-बेंअदबि-न हो, दयानद सरस्वतिजी बयान करते है,-सवत् (१६३३)मे-श्वेताबरसें ढुंढियामजहब निकमा मगर मजकुर बात वगेर तलाशकिये बयान किई है,-दरअसल! सवत् (१७०९)मे-एक-लवजीस्वामीने-इस मजहबकी शुरुआत किई, मुहपर मुहपत्ति बांधना इख्तियार किया. और-मूर्त्तिका मानना मना फरमाया, फिर ढुंढियेमजहबसें तेरथपथ इजाद हुवा. इन्होंमेंभी -मुहपर मुहपत्ति बाधना जारी रखा और-मूर्त्तिपूजा मना फरमाई,-जैनशास्त्रोंमे मूर्त्तिपूजा-करनेका फरमान है,-इसको कोई इनकार नही करसकता. ताडपत्रपर लिखेहुवे-जैनपुस्तक-जेसलमेर-खभात-पाटन -और अहमदाबाद वगेरा शहरोंके जैनपुस्तकालयोंमे-मौजूद है-उनको देखो!-शत्रुजय-गिरनार-वगेरा पुराने जैनतीर्थोंमे-राजा सप्रतिके तामीर करवायेहुवे-जैनमदिर-अबतक मौजूद है.-जिनोंने मजकुर जैनतीर्थोंकी जियारत किई होगी, बखूबी जानते होगें अगर कहा-जाय-मदिर तामीर करवानेमे-मिट्टी-और-पानीके सूक्ष्मजीवोंकी बरबादी होगी,-तो-जबाबमें तलब करो-स्थानक तामीर करवानेमे क्या! मिट्टी और पानीके जीवोंकी बरबादी-न-होगी? अगर कहाजाय-तीर्थोंकी जियारत जानेम-वायुकाय-और चलते फिरते-सूक्ष्मजीवोंकी-हिंसा होगी, जवाबमे मालुम हो -क्या-अपने धर्मगुरुओंके-दर्शनोंकों-जानेम वायुकाय-और-चलते फिरते जीवोंकी हिंसा-न-होगी? अगर-कहाजाय, मूर्त्तिके जलसेमे-धजा-पताका वगेराके

सबबसें-और-बाजा-बजवानेमें-वायुकाय वगेरा जीवोंकी वरबादी होगी. जवाबमें तलुब करो. दीक्षाके जलसेमे-बग्गी-घोडे धजा-पताका-और बाजे-बजाये जाते है, इनमें-वायुकाय और चलते फिरते सूक्ष्मजीवोंकी बरबादी नही होती?-फिर दीक्षाका जलसाभी-क्यों-करना? दरअसल! जहां-दुनियादारीका कोई सबब-न-हो, और-इरादा धर्मकी तरक्कीका हो, वहा भावहिंसा नही, और विदून भावहिंसाके पाप नही, इस बयानकों समजना चाहिये. मुहपर-मुहपत्ति-बाधनेसे वायुकायके जीवोंकी बरबादीका होना-रुक-नही सकता. वायुकायके जीवोंका शरीर-आठ-स्पर्शवाला है, और भाषा वर्गणाके पुद्गल चारस्पर्शवाले होते है, चारस्पर्शवाले-पुद्गल-आठ स्पर्शवाले शरीरवालोंकी-हिंसा-नही करसकते, अगर कहा जाय भाषावर्गणके पुद्गल-मुखसें-बहार निकलेबाद वायुकायके जीवोंकी हिंसा करेंगे-तो-फिर मुहपत्ति बाधना बेकार हुवा, सबब उसके बाधनेसेभी-वायुकायके जीवोंकी हिंसा होना-तो-रुक सका नही, जैनशास्त्रोंमे-जैनमुनिको-और जैनगृहस्थकों मलीन रहना नही फरमाया.-अगर कोई-जैनमुनि-या-जैनगृहस्थ-मलीन रहे-तो-तमाम जैनमजहबकों-यह-मिशाल लागु नही होसकती, जैनमजहबके तीर्थंकर-केवलज्ञानी थे. उनोंने-जो कुछ कहा-फायदे धर्मके कहा है.—

४६ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८२)पर दयानद सरस्वतीजी-तेहरीर-करते है हरित-शाकमे-जीवका मरना, और उनकों पीडा पहुचना क्योंकर मानते हो?—

(जवाब.) हरी वनास्पति वगेराके शाक-पात-और-कदमूल वगेरामे-जीवोंका होना शास्त्रप्रमाणसे माना गया है, पेस्तर इसी लेखमे लिखचुका हु. लजवती वनास्पतिकों हाथ लगानेसें-वो-संकोच-और हाथ उठालेनेसें विकश्वर होजाती है,-सबुत हुवा, वनास्पतिमे जीव है,-धर्मशास्त्र-कदमूलका खाना मना फरमाते है.-और-वनास्पतिमे जीवोंका होना मजुर रखते है, पर्व-तिथिके रोज-वनास्पति-न-

खाना, और जहातक बने धर्म करना-दुनियादार लोग हरहमेश धर्म -न-करसके-तो-पर्वतिथिके रौज जरूर करे, इस बातम जैनोका फरमाना कोई गलत नही. जिनकों धर्मपर कामील एतक़ात है,-वे-शास्त्रफरमानकों-बसिरोचश्म-क़ुबुल रखते है,—

४७ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८३)पर-दयानद सरस्वतीजी उष्ण जलके बारेम इस दलिलकों पेश करते है - जब तुम-पानीकों-उष्ण करते हो, तब पानीके जीव सब मरते होगें,—

(जबाब) दुनियादार-लोग-रसोई बनाते है,-गर्मपानीसें नहाते धोते है, घर-हाट-हवेली बनाते है.-सबम आरभ-समारभ होता है, -दुनियादारोसें-मजकुर बाते कैसे छूट सकती है -अगर दुनिया छोडकर साधु होजाय-तो-भिक्षा मागकर गुजारा करसकेगा. मगर दुनियामे रहकर खानपानकी-चीजें-बनाना-कैसे छोडसकेगे ? पर्वतिथिके रौज-उपवासव्रत करना और गर्म कियाहुवा ठडाजल पीना शास्त्रका हुक्म है,-उपवासव्रतमे-खानेका-त्याग किया, गर्मजल करनेका त्याग नही किया —

४८-किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८४)-पर-दयानद सरस्वतीजी-इस मजमूनकों पेश करते है,-जो-तुम्हारे तीर्थकरोंका-मत-सच्चा होता-तो-सृष्टिमे-इतनी वर्षा नदियोंका चलना-और इतना जल क्यौं ! उत्पन्न ईश्वरने किया ? और सूर्यकोंभी -उत्पन्न-न-करता.—

(जबाब.) आपके मतानुसार वर्षा-नदीयोका चलना, और-सूर्य-ईश्वरने पैदा किया मानते हो -फिर समतव्यामतव्यमे-ईश्वर, जीव, और प्रकृति, अर्थात्-जगत्का कारण-ये-तीन चीजें अनादि क्या मानी ?-जीवोंका-और-जगत्के कारणका पैदा करनेवाले ईश्वर है,-ऐसा मानलेते-तो-क्या ! हर्ज था ?-जैनमजहबवाले-जड-और चेतनकों-अनादि मानते है,-कार्यरूप पदार्थके कर्त्ता-खुद-जीव और अजीव है -जीव-जैसे कर्म करे वैसा फल पावे, यह एक साफ बात

है.-वर्षा-नदी-और- सूर्यको ईश्वर पैदा करे यह बात प्रमाणसें साबीत नही होती, ईश्वर राग-द्वेष-काम क्रोध-और-मोह वगेरा दोषोंसे रहित-निर्विकार और निराकार है,-उनकों जगत् बनानेकी क्या! जरूरत? इसका कोई जबाब पेंश करे,—

४९ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमे पृष्ट (४८४)पर दयानद सरस्वतीजी तेहरीर करते है, कितनेक जैनलोग दुकान करते, उन व्यवहारोंमे जूठ बोलते,-इत्यादिके निवारणमे-विशेष उपदेश-क्यों-नही करते? (जबाब.) धर्मशास्त्र-और-धर्मगुरु-हरवख्त तालीम धर्मकी देते है,-व्यापारमे सदाचारसे चलना और जूठ बोलनेसें परहेज करना, इस तालीमकों अमलमे लानेवालेभी दुनियामे मौजूद है, और अमलमे-न-लानेवालेभी-मौजूद है.-सब आदमी-एकसरखे नही होते. कोई-शख्श-धर्मशास्त्रके फरमानकों अमलमे-न-लावे-तो -उसका कोई-क्या! करे? धर्ममे जबरजस्ती नही चलती. जिसकी मरजी हो-माने. जिसकी-मरजी-न-हो.-न-माने, इतना जरूर कहसकते हो-एक शख्शका कियाहुवा-दोष-सब मजहबपर नही आसकता, शिष्य करनेके बारेमे-जैनशास्त्रका-फरमान है,-बिना हुक्म वारीशोंके किसीको दीक्षा नही देना, उपवास वगेरा-तप-करनेके बारेमे-जैनशास्त्रका फरमान है.-अपनी-ताकात देखकर-करना.-जबरजस्ती करना हुक्म नही. नोकर-अपनी मरजीसें नोकरी करे, और मालिक अपनी मरजीसे-तनख्वाह देवे,-यह-एक इन्साफकी बात है,-जबरजस्तीसें किसीको-नोकर-रखे-तो-यह बात मुनासिब नही. हाथी, घोडे, बेल, वगेरा जानवरोंकों-अछीतरह-खानपान देकर-उनसें-काम-लेना बहेत्तर है,-मगर उनकी ताकातसें-बढकर--काम-लेना बहेत्तर नही,-अगर कहाजाय-जल-स्थल-वायुके स्थावरशरीरवाले-मूर्छित-जीवोंकों-दुखसुख नही पहुचसकता, (जबाब.) क्यों-नही पहुचसकता? अदरुनी-दुख-जरूर पहुचता है. मगर-उनकों-बोलनेकी ताकात नही, इसलिये बोल नही सकते,—

५० किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८६)पर-दयानद सरस्वतीजी-कल्पभाष्य पृष्ट (४६)का सबुत देकर इस मजमूनकों पेंश करते है,-महावीरकों-सर्पने काटा, रुधिरके बदले दूध निकला और-वह-सर्प (८)वे-स्वर्गको गया.—

(जवाब.)-उस सर्पने तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीमसें पिछले दिनोमे-हिसा करना छोड दिया था फिर-वो-आठमे स्वर्गकों-क्यौ-न-जाय? बात ऐसे बनी थी, मुल्क-पूर्वम-कनकखल-तापस आस्रमके-नजीक तीर्थंकर महावीर ध्यानारूढ होकर खडे थे-एक-चडकौशिक-नामके सर्पने उनके पावकों काटा था. तीर्थंकर महावीर अपने ध्यानमे साबीत कदम रहे थे, उनके पावमे-जिस जगह-सर्पने-काटा था,-उस जगहसें रुधिर निकला था-दूध नही, मगर-वो-रुधिरही-सफेद रगका था.-रुधिरकी-रगतमे-फर्क होना कोई ताज्जुबकी बात नही. सर्पने जब महावीर तीर्थंकरको-काटा, उन्होंने उनकों ज्ञान सुनाया, सर्पको पिछले जन्मका ज्ञान हुवा, और सोचने लगा-मेने-पूर्वजन्ममें-बहुत गुस्सा किया था जिससें-इस जन्ममे सर्प हुवा हु अब गुस्सा छोड देना चाहिये, ऐसा सोचकर उसने जीवोंकों काटना छोड दिया, और-बदौलत धर्मक्रियाके-उसकों आठमे स्वर्गकी गति हासिल हुई, इसम कौन बेंमुनासिब बात थी? क्या! ज्ञानीयोंकी धर्मतालीमसें अधर्मी जीव-धर्मपावद नही बनसकते? बेंशक! बन सकते है,—

५१ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८६)पर दयानद सरस्वतीजी-कल्पभाष्य पृष्ट (१६) ऐसा लिखकर-बयान करते है,-छोटेसें पात्रमे-उट-बुलाया, फिर आगेके पृष्टमे लिखा है, भला छोटेसे पात्रमे-कभी-उट आसकता है?—

(जवाब) कौन कहता है,-छोटेसें पात्रमे-उट-बुलाया, किसी जैनशास्त्रम नही लिखा-किसी जैनाचार्यनें छोटेसें पात्रमे-उट-बुलाया, बात बिल्कुल गलत है.-बगेर तलाश किये कोई बात लिखना

बहेत्तर नही, जैनशास्त्र-आवश्यसूत्रकी-लघुवृत्ति-प्रतिक्रमण अध्ययनमे लिखा है, एक शहरमे कितनेक जैनमुनि-तशरीफ लाये. और एक मकानमे ठहरे,-मकानके पिछाडी भागमे जहां-हाजत-रफा-करनेकी जगह थी.-शामके वख्त-उस-जगहकी देख भाल करनेके लिये गुरुजीने एक-चेलेको-कहा,-हमेशा शामको देखलिया करो-उसमे-कोई जीव-जतु-न-आनबेठे हो, चेला बोला, हमेशा क्या! देखना. वहा-उंट-तो-आनकर बेठाही-नही.—

[जेनागम-आवश्यक-सूत्रलघुवृत्तिका-पाठ, देखिये –]

ऊचे-च-तत्र सत्पुष्ट्रा-निविष्टाः किं-विशृखलाः ।
उष्ट्ररूप ततः कृत्वा-निविष्टा-तत्र-देवता,—

इसका मतलब उपरके लेखमे आगया है.-इत्तिफाक! वही चेला-रातके वख्त अपनी हाजत रफा करनेकों उस जगहमे गया.-वहां-एक-उट-देखा, गुरुजीसे आनकर कहने लगा-सचमुच! वहा-तो-उट-दिखाई देता है.-गुरुजीने कहा, देख! तेने पेस्तर मेरे कहनेपर अमल नही किया.-अब-वही बात आगे आई-या-नही? चेला शर्मीदा हुवा, और आइदा मकानकी सारसंभाल हमेशां रखता रहा,-देखिये! वहा छोटेसें पात्रेमे-उट-बुलानेकी बात कहा थी? बगेर तलाश किये लिखना बहेत्तर नही,—

५२ किताब सत्यार्थ-प्रकाश-बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८६)पर दयानद सरस्वतीजी-विवेकसार-भा-१-पृष्ट (१५)का-सबुत देकर-इस मजमूनको पेश करते है,-जैनोंके एक-दमसार-साधुने-क्रोधित होकर उद्वेग-जनक सूत्र पढकर एक शहरमे आग लगादी. और महावीर तीर्थंकरका अतिप्रिय था.—

(जबाब.) जैनोंके दमसार मुनिनें किसी शहरमे-आग-नही-लगाई, दयानद सरस्वतीजीने-बगेर तलाश किये मजकुर बात लिखी है.-अगर किसी जैनशास्त्रमें लिखा हो,-कोई-सबुत पेश करे.-उद्वेग-जनकसूत्र पढना.-या-समुपस्थान-सूत्र पढना. उनकी मरजीकी

बात है,-धर्मम खलल डालनेवालोंकों-तालीम धर्मकी देना -या-शासन देना, धर्मशास्त्रका फरमान है,—

५३ किताब-सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमें-पृष्ट (४८७)पर -दयानद सरस्वतीजी-जैनग्रथ विवेकसार-भा-१-पृष्ट (२२७)का-सबुत देकर बयान करते है एक-कोशा-वेश्याने स्थालीमे सरसोंकी ढेरी लगा, उसके उपर फूलोंसें ढकीहुई-सुई-खडी रखकर उसपर अछे प्रकार नाच किया. परतु-सुई-पगमे गडने-न-पाई. और सरसोंकी ढेरी बिखरी नही.—

(जबाब) कोशा वेश्या-नाच घरम सरसवकी भरी थाली धरकर उसमे-सुई-और सुईपर फुल रखकर इसतरह नाचती थी, जब नाचती हुई उस थालीके पास आजाती थी, उस फुलपर जरा उचेके भागमें -चक्कर देतीहुई-नीचे-उतर जाती थी. फुलकों-सुईकों और सरसवके दानोंकों स्पर्शतक नही करती थी. जाहिरातमे यही कहा जाता था. देखो! इसने सरसवकी भरी थालीपर नाच किया. इसमें असभवबात क्या थी? आजकलमी-कथ्थक-लोग इसकदर नृत्यकला दिखलाते है,-जिनकों देखकर सगीतकलाके जाननेवालेभी ताज्जुब करते हैं -भारतकी-नृत्यकला-मशहूर है, कोशा-वेश्याने-अपने शरीरकों ऐसी तालीम दिई थी, जिससे-वो-उमदा नाच करसकती थी. इस बातका-कौन-गलत कहसकेगा?—

५४ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहम समुल्लासमे पृष्ट (४८७)पर-दयानद सरस्वतिजी-जैनग्रथ विवेक-भाग-१-पृष्ट (१८५)का-सबुत देकर लिखते है.-एक-सिद्धकी-कथा-जो-गलेमें पहनी जाती है, वह (५००) अशर्फी-एक-वैश्यकों-नित्य देती रही. (जवाब) जैनके साधुजनोंको-या-सिद्धोंको-कथा-नही होती,-जैनग्रथ विवेकसारका लिखाण अक्षरेअक्षर लिखते-तो-अछा था, पढनेवालोंकों मालुम होता-वो-सिद्ध जैनमजहबके-थे-या-कौन थे? इबारत ऐसी लिखना चाहिये,-जिससे पढनेवालोंकों-उसीमेसें खुलासा निकल आवे,

किताब सत्यार्थप्रकाशके-बारहमें-समुल्लासमें पृष्ट (४८६)पर दयानद सरस्वतीजी-जैनशास्त्र कल्पभाष्य पृष्ट (४७)का सबुत देकर तेहरीर करते है,-महावीरके पगपर खीर पकाई और पग-न-जले,—

(जवाब) पाव-जब-जले अगर बहुत अर्सेतक आग जलती रहे,-तीर्थंकर महावीर जब तप करतेहुवे-एक-वनमे-ध्यानमे एक द्रख्तके नीचे खडे थे. गोवालियोंने आनकर उनके दोंनों पावके बीच आग जलाकर खीर पकाई, जिससे उनके पावोंकों तकलीफ जरूर हुई, लेकिन! पाव बिल्कुल इसलिये नही जले.-जो-बहुत कालतक आग नही जलाई गई थी.—

५५ किताब-सत्यार्थप्रकाश-बारहमे-समुल्लासके पृष्ट (४८८)पर-दयानद सरस्वतीजी जैनग्रथ प्रकरण-भा-सग्रहणीसूत्र (७७)का-सबुत देकर बयान करते है.-जबूद्वीप लाख योजन-इसमे-दो-चद्र,-दो-सूर्य है. और वैसेही-लवणसमुद्रमे उससे दुगुणे, अर्थात् (४) चंद्रमा, (४) सूर्य है,-धातुकी खंडमे बारह चद्रमा-बारह सूर्य और इनकों तिगुणा करनेसें छत्तीस होते है,-उनके शाथ-दो-जंबूद्वीपके और चार लवणसमुद्रके मिलकर चालीस चद्रमा और चालीस सूर्य-कालोदधि-समुद्रमें है, इसीप्रकार अगले-अगले-द्वीप और समुद्रोंमे-पूर्वोक्त चालीसकों तिगुणा करे-तो-एकसो-छव्वीस होते है.-उनमे धातुकी खडके-बारह-लवणसमुद्रके चार और जंबूद्वीपके-जो-दो, इसी रीतिसें निकालकर (१४४) चंद्र और (१४४) सूर्य-पुष्करद्वीपमे जैनलोग मानते है,—

(जवाब) जैनलोग-भारतवर्षमे इतने चाद और सूर्य-कब मानते है.-जंबूद्वीप-लवणसमुदर, धातुकी खड, कालोदधिसमुदर, और पुष्करार्द्धद्वीपमे मानते है,-जबूद्वीपकी चारोतर्फ-दो-लाख योजनका वलयाकार-लवणसमुदर,-जिसकों आजकल महासागर बोलते है, लवणसमुदरका एक तर्फका कनारा है,-अगर कोई-सिधा-दखनदिशाकों-महासागरमे जाय-तो-दो-लाख योजन जाकर पिछा लोट

आवे ऐसा साधन नही, समुदरमे मुसाफरी करनेवाले बयान करते है,-समुदरम-अगर-सिधे दखनकी तर्फ जहाज चलावे-तो-जलतरगोंके सबब आगे जाना नही होसकता, उत्तर-कनारेकों-आना पडता है-लवणसमुदरके आगे-चौफेर-वलयाकार-चार लाख योजनका-धातुकी खड, जैनलोग मानते है,-जबूद्वीपमे-दो-चद्र, दो-सूर्य, लवणसमुदरमे-चार चद्र, चार सूर्य,-धातुकी खडमे बारह चद्र बारह सूर्य,-इसकी चौफेर-आठ लाख-योजनका-कालोदधिसमुदर, इसमे बेंतालीस चद्र, बेंतालीस सूर्य,-और-कालोदधि-समुदरकी चौतर्फ पुष्करार्द्धद्वीप, जिसमे (७२) चद्र, और (७२) सूर्य-मानते है, इमत रह अलग-अलग-द्वीप-समुदरोंमे-इतने चद्र-सूर्य-आसानमे अलग-अलग-फिरतेहुवे-जैनलोग-कहते है,-भारतवर्षमे-इतने चाद सूर्य नही कहते.—

५६ किताब सत्यार्थप्रकाश-बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४८९)पर-दयानद सरस्वतीजी-इस दलिलकों-पेंश करते है,-समीक्षक! अब देखो! इस भूगोलमे (१३२) सूर्य-और (१३२) चद्रमा-जैनियोंके घर तपते होगे.—

(जबाब) एकसो बत्तीस सूर्य-और एकसो बत्तीस चद्र-इस भूगोलमे जैनलोग कब कहते है? बगेर तलाश किये कोई बात लिखना बडी भूल है,-पत्तर लिखचुका हु-जबूद्वीप, लवणसमुदर, धातुकी खड, कालोदधि-समुदर-और-पुष्करार्द्धद्वीप-जो-लाखो-योजनके लबे चौडे-और-दूर है,-उनमे इतने चादसूर्य कहते है,-नवखडा-वसुधरा-सप्तद्वीप-और-सप्त समुद्र-यह बातभी-शास्त्रोंमे सुनते हो,-जैनमजहबमे उनके तीर्थकरोंका ज्ञानरूपी-सूर्य-तप रहा है,-वहा अज्ञानरूपी-अधकार नही रहसकता,—

५७ किताब सत्यार्थ-प्रकाशके बारहमे-समुल्लासमे पृष्ट (४८९)-पर दयानद सरस्वतिजी-इस दलिलकों-पेंश करते है, और-जो-

पृथिवी-न-घूमे. और सूर्य-पृथिवीकी-चारों ओर घूमे-तो-कइएक वर्षोंका दिन और रात होवे,—

(जवाब.) अगर-पृथिवी फिरती है,-तो-बतलाइये! ऊर्ध्व-अधः-फिरती है,-या-तिर्यग्? अगर ऊर्ध्व-अधः फिरती है,-तो-ऊर्ध्वस्थितपदार्थ-अधः आनेसें गिरनेका खौफ है,-अगर तिर्यग्-फिरती-है-तो-बतलाना चाहिये,-वो-किसके आधार फिरती है? अगर कहाजाय! किलकके आधार फिरती है-तो-उस-किलकका आधार कौन? जैसे कुंभकारके-चक्रके नीचे-किलक-लगा होता है,-अगर कहाजाय पृथिवी-निराधार रहकर फिरती है.-तो पृथिवी-जैसा-भारी पदार्थ निराधार कैसे ठहरसके? जो-जो-भारी पदार्थ देखा-निराधार नही देखा,-इससें जरूर मानना पडेगा. पृथिवी किसीके आधार ठहरी है,-अगर पृथिवी फिरती है-तो-एक-गाव-दुसरे गावसें जिस दिशाम हो,-बदल जाना चाहिये. फर्ज करो! बरसातके दिनोंमे-दो-घटेतक एक जगह-बरसात-होता रहा,-पृथिवी-फिरतीहुई-आगेकों चलीगई-उस जगहके तालाव-पानीसें भरजाने-न-चाहिये, अगर पृथिवी फिरती हो-तो-उसका वेगभी ज्यादा होना चाहिये, और उस वेगसें बडेबडे द्रख्त और मकानकोंभी-कुछ इजा पहुंचना सभव होसके,-दुसरी दलिल, अगर पृथिवी फिरती हो-तो-पखी-अपने मालेसें-उडकर-फिर अपने मालेकों-न-पासकेगें.-खयाल करो! उडनेवाले-पखी-दो-घटेतक आसानमें उडते रहे. इधर पृथिवी उस जगहसें फिरकर दूर चलीगई, कबूतर उडानेवाले अपने मकानसे कबूतर उडाते है,-और-फिर-वे-घटे दो-घटेबाद उसी जगह आबेठते है,-जहांसे उडे थे,-अगर पृथिवीकों-फिरती मानीजाय-तो-जो-स्थान दूर चलागया मिलना-न-चाहिये, अगर कहाजाय-सूर्य-स्थिर और पृथिवी उसकी चारोंतर्फ फिरती है-तो-बतलाना होगा,-अमावास्याके रोज-चाद-सूर्य-एकसाथ-और पौर्णिमाके रोज-सूर्यके सामने चद्र कैसे आजाता है,? एक राशिपर-अनेक-ग्रहोका-इकठा

होना और-फिर-जुदे होजाना आसानमे दिखपडता है, क्योंकर सभव होगा? खयाल करनेकी जगह है,-फिर कइएक-वर्षोका दिन -और-कइएक वर्षोकी-रात होना-कैसे कहा जासकेगा? किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ट (४८९)पर-दयानद सरस्वतीजी -इस दलिलकों-पेंश-करते हैं,-सुमेरु-विना हिमालयके दुसरा कोई नही (जवाब) हिमालय पहाडकों-सुमेरु पहाड-कहना-किस सबु तसें-मानाजाय.-इसका कोई सबुत देना चाहिये, बगेर सबुतके कोई कैसे मजुर करेंगें? जैनशास्त्रोंमे-जो-जबूद्वीप कहा है,-सुमेरु-पहाड -उसके मध्यभागमे-होना मजुर रखा है,—

५८ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें पृष्ट (४९१)पर दयानद सरस्वतीजी-लिखते हैं-जैनोंके मुक्तिका स्थान-सर्वार्थसिद्ध-विमानकी ध्वजाके उपर पेंतालीस लाख योजनकी शिला, अर्थात्-चाहे ऐसी अछी और निर्मल हो,-तथापि-उसमे रहनेवाले मुक्तजीव एक प्रकारके बद्ध है,-क्यौंकि-उस शिलासें बाहार निकलनेमे-मुक्तिके सुखसें छुट जाते होगें. और-जो-भीतर रहते होगें-तो-उनकों वा युमी-न-लगता होगा.—

(जवाब) सिद्धशिलापर-चारोंतर्फसें-वायु-आताजाता है,-वो-कोई बद मकान नही-जो-हवा-न-आसके, दयानद सरस्वतिजी-जो -लिखते है.-पेंतालीस लाख योजनकी शिला-अर्थात्-चाहे ऐसी अछी-और-निर्मल हो, तथापि उसमे रहनेवाले मुक्तजीव एक प्रकारके बद्ध है,-मगर यह बात बहेत्तर नही. मुक्तात्मा अगर-बहुत शुद्ध तसेंभी-वापिस दुनियामे लोट आवे-तो-वो-मुक्ति क्या! हुई? जहांसे वापिस लोट आना बने,-बधन उनकों होता है-जो-शरीरवाले हो -मुक्तिमेंसें बहार निकल आना. या-फिर-अदर चले जाना-मुक्तात्माकों क्या! जरूरत?-वे-अपने-सत्-चित-आनदमे पूर्ण है,—

५९ किताब सत्यार्थप्रकाशके नवम समुल्लासमे-जहा-विद्या-अविद्या-बध-मोक्षके बारेमे व्याख्या किई है,-पृष्ट (२५४)पर-मुडक

उपनिषद्के वचनका सबुत देकर लिखा है,-वे-मुक्तजीव मुक्तिमें प्राप्त होके-ब्रह्ममें-आनंदकों तबतक भोगके पुनः-महाकल्पके पश्चात् मुक्ति-सुखकों छोडके ससारमे आते है, इसकी संख्या यह है कि-तेंतालीस लाख-वीस-सहस्र वर्षोंकी एक चतुर्युगी, दो-सहस्र-चतुर्युगीयोंका -एक-अहोरात्र, ऐसे तीस अहोरात्रका एक-महिना, ऐसे बारह महिनोंका एक वर्ष, एक शतवर्षोंका परातकाल होता है, इसकों ग-णितकी रीतिसे यथावत् समज लीजिये, इतना समय मुक्तिमे सुख भोगका है,-आगे-इसी समुल्लासके पृष्ट (२५६)पर-ऐसाभी लिखा है मुक्ति-जन्ममरणके सदृश नही,-क्यौ कि-जबतक (३६०००) छत्तीससहस्रवार उत्पत्ति और प्रलयका जितना समय होता है.-उतने समयपर्यंत जीवोंकों मुक्तिके आनंदमे रहना-दुखका-न-होना. क्या! छोटी बात है.?—

(जवाब.) मुक्तजीव-ब्रह्ममें-आनदकों भोगे-महाकल्पके बाद फिर ससारमें आवे,-इसका क्या सबब?-मुक्तिके सुखकों छोडनेकी जरूरत क्या! इसका कोई माकुल जवाब देवे,—

६० जैनशास्त्रोंमे चौदह-रज्वात्मक लोक-एक तरहका-मापा है, किसी राजधानी-या-मुल्कका नाम नही, मगर स्वर्ग-मृत्यु-और पाताल इन तीनों लोकको मिलाकर एक तरहका-माप-शुमार किया गया है. सिर्फ! आसमानपर चौदह-रज्वात्मक-मापा-मानलेना बहे-तर नही, सर्वार्थ सिद्ध-विमानकी-धजाके आगे-जो-सिद्धशिला-जैनलोग कहते है,-इसमे कोई गलतबात नही. स्वर्गलोकके-उपर-मुक्तिस्थान-होना शास्त्रसमत बात है,-जीव-देह करके सर्वव्यापी नही, बल्कि! ज्ञानकरके सर्वव्यापी होसकता है, किताब सत्यार्थप्र-काशके बारहमे समुल्लासके पृष्ट (४५६)पर दयानद सरस्वतीजी लिखते है, जैनलोग देहके परिमाणसें-जीवकाभी परिमाण मानते है,-तो-फिर हाथीका-जीव-चींटीमें और चींटीका जीव हाथीमें कैसे रहस-केगा? जवाबमें-मालुम हो,-जीवमे सकोच विकास गुण होनेसें छोटे

शरीरमे छोटा, और बडे शरीरमे बडा-होकर रहसकता है जैसे चिरागकों-जमीनपर धरकर उसपर बडा वर्त्तन ढाक दियाजाय-तो-बडेमे और छोटा वर्त्तन ढांक दियाजाय-तो-छोटेमे-प्रकाशमान् होकर रहता है, इसीतरह-जीव-छोटेबडे शरीरमे व्याप्त रहता है, अगर ऐसा -न-हो-तो पावमें काटा लगनेसें सिरमे दर्द कैसे पहुचता है? इसका जवाब पेश किजिये जैनोंने-जो-रागद्वेषसें निहायत पाक-और-साफकों देव माने, पचमहाव्रतकों इख्तियार करनेवाले धर्मगुरु-और सर्वज्ञका बयान कियाहुवा-धर्म-माना. इसमे कौन बात बेजा थी? सच्चे-देवगुरु धर्मकों मंजुर रखना, और असत्य देवगुरु धर्मकों छोडदेना अछे लोगोंका फर्ज है, इसमें वैर विरोध-या-इर्षाकी क्या! बात थी? बल्कि? इन्साफ था,—

६१ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासम पृष्ट (४९२)पर दयानद सरस्वतीजी-बयान करते है. जैनलोग-कुरुक्षेत्रमें-(८४) चौरासी सहस्र नदी है, ऐसा मानते है और आगे (समीक्षक) ऐसा लिखकर बयान करते है,-भला, कुरुक्षेत्र बहुत छोटा देश है.-उसकों -न-देखकर ऐसी मिथ्याबात लिख दिई

(जवाब) दयानद सरस्वतीजीने बगेर तलाश किये-यह-मिथ्या बात लिखदिई है,-तलाश करके लिखना था, जैनलोग-इस भारतवर्षका-कुरुक्षेत्र-जो-पानीपत-करनाल-और सरहिंदके करीब है,-इसमें-चौरासी हजार नदीया नही कहते, बल्कि! जबूद्वीपमें-सुमेरु पर्वतके करीब-जो-देवकुरु-उत्तरकुरुक्षेत्र है, उसमें कहते है.-आप तलाश करना नही, और दुसरोंकों-मिथ्याबात लिखनेवाले कहना कितनी बडी भूल है? जबूद्वीपप्रज्ञप्ति,-सग्रहिणी,-क्षेत्रसमास, वगेरा जैनशास्त्र देखो! जब-मालुम होगा, जैनलोग-किस-उत्तरकुरुक्षेत्रमें चौरासी हजार नदीया कहते है,-किताब सत्यार्थप्रकाशके दशमें समुल्लासमे पृष्ट (२७७)पर-दयानद सरस्वतीजी तेहरीर करते है. एक समय व्यासजी-अपने पुत्र-शुक और शिष्य सहित-पाताल-अर्थात्

जिसकों इस समय-"अमेरिका"-कहते है, उसमें निवास करते थे,-फिर इसी पृष्टपर ग्यारहमी पंक्तिमें-लिखते है,-प्रथम-मेरु-अर्थात्-हिमालयसें ईशान-उत्तर-और वायव्यकोणमें-जो-देश-वसते है, उनका नाम-हरिवर्ष-था, (जवाब.) जैनलोग-हिमालयकों-मेरु-नही मानते, और-हिमालयके ईशान-उत्तर-और वायव्यकोणके देशोंकों हरिवर्ष नही कहते है,-बल्कि! जंबूद्वीपमें-हरिवर्ष-और-सुमेरुका-होना कहते है.-पाताललोक-मनुष्यलोकके नीचेकों-मानते है,-अमेरिकाकों-पाताल-नही मानते.—

६२ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें पृष्ट (४६४)पर-दयानंद सरस्वतीजी-इस दलिलकों पेश करते है,-जैसे अन्यके स्थानोमे-चामुडा, कालिका, ज्वाला, प्रमुखके आगे-पापनौमी अर्थात्-दुर्गानौमी-तिथि-आदि सब बुरे है, वैसे क्या तुमारे पजूसण आदि व्रत बुरे नही है, जिनसें महाकष्ट होता है,—

(जवाब.) जैनोंके पर्यूषणपर्वमे महाकष्ट किसकों होता है?-इसका खुलासा लिखना था,-अगर कहाजाय-जैनलोग-उपवास वगेरा व्रत-नियम करते है,-इनमे कष्ट होना संभव है, जवाबमे मालुम हो,-व्रत-नियम-या-उपवास करनेकेलिये किसीकी जबरजस्ती नही, जिसकी मरजी-हो, व्रतनियम करे, जिसकी मरजी-न-हो,-न-करे,-जैन-शास्त्रोंमे फरमान है,-अपनी ताकात देखकर व्रतनियम करना, व्रत-नियमसेंभी-ज्ञानपढना-शास्त्र सुनना. धर्मपर कामील एतकात रहना-बडा फरमाया,-सच बोलना,-जीवोंपर रहम करना,-और सदाचारसें चलना, ये-सब धर्महीके तरीके है,-इसमे महाकष्ट होनेकी-बात-क्या! थी?—

६३ जैनशास्त्र-आवश्यकसूत्रवृत्तिमें-लिखा है,-तीर्थंकर महावीर स्वामीके दर्शनकों-एक-दशार्णभद्र-नामका-राजा-बडे जलसेके साथ-अपने शहरके बहार बगिचेमे गया.-और-दिलमे इस बात-का-अभिमान लाया-जैसा जलसा मेने किया है, सायतही! दूसरेने

किया होगा. इस बातपर-इद्रको-खयाल आया, दशार्णभद्र राजा इस अभिमानसे ईश्वरभक्ति-चेंकार करता है, इसके अभिमानको-मिटाना चाहिये -देवताओंकी ताकात है,-मनुष्योंसे ज्यादा जलसा कर-सके-इद्रदेवता-आसानसे बडे जुलुसके-साथ-तीर्थंकर महावीरकी खिदमतमे पेश हुवा -उसका बयान आवश्यकसूत्र वृत्तिमे लिखा है,-वो-यहा-देता हु —

[देखिये! आवश्यकसूत्रवृत्तिका-पाठ,-]

तद्गर्वसर्वतां नेतु-ससैन्यैर्छादितांबरः—
शक्र' स्वर्गादवातारीदारुह्यैरावण गज, १
तस्यास्यानि विकुर्व्याष्टौ,-प्रत्यास्य दशनाष्टक,
दतेदतेष्टवापीश्च, प्रतिवाप्यष्टपद्मिका, २
पद्मेपद्मेष्टपत्राणि,-पत्रे पत्रे तथैकके,
द्वात्रिंशत्पात्रयुक्तानि,-नाटकान्यद्भुतानि-सः ३
तदानीमाययौ शक्रो, दशार्णद्विरदोपरी,
श्रीमद्वीरगुणग्राम स्फीतगीतवशातर',-४

(अर्थ) दशार्णभद्र-राजाके सामने-इद्रदेवता आसानमे ऐरावण-हाथीपर बेठकर तीर्थंकर महावीरके दर्शनोंको आया, इद्रके जलसेको देखकर दशार्णभद्र राजा-दिलमे ताज्जुब करने लगा, और उसका अभिमान उतर गया इद्रके हाथीकी-आठ-शुड-थी. एक एक-शुडपर आठ आठ दात, एक एक दातपर छोटी छोटी आठ आठ-बावडी, -और-उन-बावडीयोंपर आठ आठ कमल, एक एक-कमलपर-आठ आठ पत्ते. और उन पत्तोंपर देवशक्तिसे बत्तीस तरहके नाटकोंका देखाव इद्रने किया था.-सबब देवताओंकी ताकात-मनुष्योंसे बढकर होती है. बस! दशार्णभद्र-राजा-इस-इद्रके कियेहुवे-जलसेको देखकर दिलमे सौचने लगा, मेरी दौलत-इद्रकी दौलतके सामने कुछ चीज नही, देखिये! किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमे समुल्लासमे पृष्ठ (४७७)पर दयानद सरस्वतीजी-तेहरीर करते है.-दशार्ण-राजा

महावीरके दर्शनको–गया. वहां कुछ अभिमान किया, उसके निवारणकेलिये सोलह अर्ब–और–उनसें ज्यादा इंद्राणी वहा आई थी, देखकर राजा आश्चर्य होगया. अब विचार करना चाहिये. इंद्र और इंद्राणीयोंके खडे रहनेकेलिये ऐसे ऐसे कितने भूगोल चाहिये.—

(जबाब.) कौन कहता है. सोलह अर्ब–और उनसे ज्यादा इंद्राणी वहा आई थी? इंद्र–और–इंद्राणी–तो–एकही थी, उपर दिखलायेहुवे आवश्यकसूत्र वृत्तिका पाठ देखिये! उसमे साफ बयान है,–इंद्र–अपने–ऐरावण–हाथीपर सवार होकर तीर्थंकर महावीरके दर्शनकों आया, ऐरावण हाथीकी–शुंडपर–आठ आठ–दांत–बावडी–कमल–और कमलके पत्तोंपर दिव्यशक्तिसें बत्तीस तरहके नाटकोंकी रचना करके दिखलाई थी.–और इंद्रदेवता अपनी दिव्यशक्तिसें ऐसी रचना करभी सकते है,–इसमे कोई–बेमुनासिब बात नही,–तीर्थंकर महावीरके दर्शनोंकों–सोलह अर्ब–इंद्र और उनसें ज्यादा इंद्राणी यहा आई ऐसा किस जैनशास्त्रका सबुत है? और उनके खडे रहनेकेलिये –ऐसे ऐसे कितने भूगोल चाहिये इस बातका फिक्र करना फिजहुल है, शास्त्र फरमानकों देखना चाहिये,–और–तेहकीकात करके इबारत लिखना चाहिये,—

६४ किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासकी अखीरमे पृष्ट (४९३)पर–दयानद सरस्वतीजी–इस मजमूनको पेश करते है,–जल–छानकर पीना, और सूक्ष्मजीवोंपर नाममात्र दया करना, रात्रीकों भोजन–न–करना,–ये–तीन बातें अछी है, बाकी जितना इनका कथन है. सब असभवग्रस्त है. इतनेही लेखसे बुद्धिमान् लोग–बहुतसा जान लेगें,—

(जबाब) बगेर तलाश किये–जैनोंका फरमाना कोई असभवग्रस्त –कहे–तो–इससें जैनोंका–क्या–नुकशान है? समजकर–कहे–उनकी –तारीफ बयान किइजाय,–जैनोका फरमान असभवग्रस्त कहनेवालोंके लेखका–जबाब–इसमे किसकदर उमदा दाखले दलिल–और–शास्त्र–

सबुतसें दिया है, बखूवी-देखीये! जिनकी मरजी हो, इसपर कलम उठाकर जवाब लिखे,-मे-उसका माकुल जवाब दुगा, हरशख्शकों लाजिम है,-जिस मजहबके उसूलोंपर कुछ खंडन लिखना-हो-तो-उसके-उसूलोंकों-पुरी तौरसें समजलेना चाहिये, एक शख्शने-अपने मजहबके उसूलोंसें खिलाफ बरताव किया-वो-सारे मजहबपर-लागु नही होसकता, बस! इतनाही-बयान-समजनेका-है,-अपशब्द लिखना किसीकेलिये मुनासिब नही.-मेने-इस लेखमे देखलो! कोई-अपशब्द नही लिखा,-माकुल जवाब पेश किया है,—

६५ जैनशास्त्रोंमे लिखेहुवे कल्पवृक्षोंका पेस्तरके जमानेमे होना सावीत था,-द्ररख्तोंके उपर घर बनाकर रहनेवाले-लोग-अबभी कई मुल्कोंमे मौजूद है, द्ररख्तोके-फलस-या-रससें अबभी लोगोंका गुजरान चलसकता है, इसमे कोई ताज्जुब नहीं, कइलोग कल्पवृक्षोंके बयानकों हसीमें उडादेते है, जिनकों अखबार पढनेका शौख है,-बखूवी जानते होगें, कई मुल्कोंमे-ऐसेभी-वृक्ष-हयात है, जिनमेसें बशरी जैसे मीठे स्वर निकलते है, कई वृक्षोंमेंसें रातके वख्त-मिशालकी तरह रोशनी बहार आया करती है. जैनमजहबके धर्मपुस्तकोंमे-जो-बहिस्तका आराम चैन बयान किया है,-दुसरे मजहबके धर्मपुस्तकोंमेभी-देखाजाता है,-जो-लोग बहिस्त और दोजखका होना मञ्जुर नही रखते-वे-चाह-न-माने. जैनमजहबके धर्मपुस्तकोंमे-मास खाना-और-शराब पीना मुमानीयत है-अगर कोई-एक शख्श जैन होकर मास खावे और शराब पीवे-तो-सारे जैनमजहबपर यह-धब्बा नही लगसकता. सुभूमचक्रवर्तीके वख्तमें एक थालमे रखी-हुई मनुष्यकी दाढाये खीर बनगई थी, और उनमेसें मलीनभाव दूर होगया था, जैसे खेतोंमे-खात-डालाजाय,-मगर-फलमे उस खातका मलीन भाव नही आता.—

६६ जबूद्वीपमे-सुमेरुके-दोनोंतर्फ-जो-गजदते जैनशास्त्रोंमे वयान किये है-वे-हाथीके दांत नही, मगर-गजदंतेके आकारवाले-

पहाड है,-ऐसा जानना.-बगेर तलाश किये-चाहे कोई कुछ कह बेठे इससे क्या हुवा? तीर्थंकरोंकी-व्याख्यान भूमिका नाम-जैनमजहबमे -समवसरण-कहा.-और-तीर्थंकरोंकी हयातीमें उसकों देवते बनाते थे,-जब-काम-होचुकता था-निकाल डालते थे, अखीरके तीर्थंकर महावीर स्वामिकों हुवे आज करीब चौइससो वर्षसें-ज्यादा अर्सा गुजरा,-अब-वो-समवसरण कहासे रहे? उस जमानेके बनेहुवे जैनमदिर बेशक! कई जगहपर अबतक खडे है, जैनाचार्य-हैमचद्र-सूरि-जो-राजा कुमारपालके वख्तमे हुवे, जिनके बनायेहुवे कई-ग्रंथ -पुराने जैनपुस्तकालयोंमे मिलते है,-राजगृही-नगरीका-श्रेणिक-राजा-जिसका दुसरा नाम बिंभीसार था,-वो-पेस्तर-गेरमजहबकों मानता था, पिछेसें तीर्थंकर महावीर स्वामीकी धर्मतालीमसें जैन हुवा था,—

६७ किताब-सत्यार्थ-प्रकाशके तृतीय समुल्लासमें पृष्ट (३७)पर दयानद सरस्वतीजी लिखते है, सूर्योदयके पश्चात् और सूर्यास्तके पूर्व अग्निहोत्र करनेका समय है, उसकेलिये एक किसी धातु-वा-मिट्टीकी वेदी,-प्रोक्षणीपात्र,-प्रणीतापात्र,-आज्यस्थाली,-अर्थात् घृत रखनेका पात्र-और-सोना-चादी-या-काष्टका-चमचा-बनवाकर प्रणीता और प्रोक्षणीमें जल-तथा-घृतपात्रमे घृत रखके घृतकों तपा लेवे, प्रणीता जल रखने और प्रोक्षणी इसलिये है, उससे हाथ धोनेकों सुगम है,-पश्चात् उस-घीकों-अच्छेप्रकार देखलेवे, फिर इन मत्रोंसें होम करे,-फिर आगे पृष्ट (३८)मे-ऐसाभी लिखते है, होम करनेसें दुर्गंधयुक्त वायु-और-जलसे-रोग-रोगसें प्राणियोंकों दुख, और सुगंधित वायु. तथा-जलसें आरोग्य और रोगके नष्ट होनेसें सुख प्राप्त होता है,—

(जवाब.) जब घृतकों अग्निमें डालकर जलानेसें-खराब आब हवा सुधरनेका फायदा होता हो,-फिर-केशर-भीमसेनी कपुर-उमदा सुगधवाले-फूल-और आलादर्जेके इत्रसे देवपूजा करनेमे फायदा क्यों

-न-हो,-मूर्त्तिपूजा करना बेजा समजा गया-तो-होम-हवन-करना -बजा-कैसे समजा गया? अगरचे होम-करनेसें-आन-हवा-सुध रती होती, तो-ताउन-बुखार-और हेजा वगेरा दिगर बीमारीयें नेस्तनाबुद-क्यौं-नही-होजाती?—

६८ दयानद सरस्वतीजी-ऋग्वेदादिभाष्य भूमिकाके पृष्ट (२३) पर दुनियाकों पैदा हुवे (१,९६,०८,५२,९७६) वर्स हुवे बतलाते है. सवाल पैदा होनेकी जगह है, इसके पहले दुनिया नही थी-इसका क्या सबुत? जैन-बौद्ध-सांख्य और मीमासक मजहबवाले दुनियाका कर्त्ता ईश्वर है,-ऐसा कुबुल नही रखते,-अगर कहा जाय,-ईश्वर-जीव-और जगत्का कारण अनादि है,-तो-रागद्वेष रहित निराकार ईश्वर जगत् क्यों बनावे? अगर बुत्परस्तिकी तमन्ना-नही तो-होम-हवनकी क्या जरूरत थी? हरेक धर्मशास्त्रोंमे पृथिवीकों ध्रुवा बयान किइ,-दयानद सरस्वतीजीने फरमाया पृथिवी-घूमती है,-सो-वर्सके दिन-होना-कोई आलिम-फाजिल कुबुल नही रखते, जैनशास्त्रोंमे-जो-जो-भूगोल खगोल और इतिहासिक तेहरीरे पाइ जाती है, दुसरे शास्त्रोंमे कम पाइ गइ,-जैन रामायण ग्रथके फरमानसें रामचद्रजी-जैन थे,-और वैदिक मजहबकी-वाल्मीकीय-रामायणके फरमानसे-रामचद्रजी-वैदिक मजहबके अवतार थे. दोनों-ग्रथ-अलग अलग-बने हुवे-मौजूद है,—

६९ भारत वर्षका इतिहास चीनके मुसाफिरोंने लिखा,-इग्लांडके विद्वानोंने लिखा, और हिंदके इतिहासकारोनेभी लिखा, इनके-देखनेसें करीब (६०००) वर्सका इतिहास मिलता है, जैनमजहबके-इतिहासिक ग्रथोंसें तलाश किइ जाय तो-चौइस तीर्थंकर-बारा चक्रवर्त्ती राजे-नव वासुदेव-राजे-जिनमे-लक्ष्मणजी आठमे वासुदेव हुवे,-और-श्रीकृश्नजी-नवम वासुदेव हुवे-वगेरा पुराना इतिहास मिलता है, बौद्ध मजहब-राजा-शुद्धोदनके पुत्र-गौतम-बुधसें इजाद हुवा,-जो-तीर्थंकर महावीरके वख्तमे हयात थे. कइ विद्वान् बौद्ध

मजहब पुराना बतलाते है,–मगर–जैनमजहबके शास्त्र–और शिला लेखोंसे मालुम होता है, बोद्ध मजहबसें जैनमजहब पुराना है,–युरोपके बुडापेस्टमे निकले हुवे,–पुराने मंदिर मूर्त्तियों वगेरा सबुतोंसें–पाया जाता है, जैनमजहब पुराना है. जैनमजहबके आचारांग–सूत्र–वगेरा धर्मशास्त्र–जमाने तीर्थंकरोंके बने हुवे–तीर्थंकर चौइस हुवे, लेकिन! उसूलोंमें–फर्क–कमी नही आया, वैदिक मजहबके सूत्र बननेके समयकी तलाश किइ जाय–तो–विक्रम संवत्से–आगे (५००) वर्षपेस्तरके जमानेमे–व्यास सूत्र–पाणिनीय सूत्र–पातंजल सूत्र–कात्यायन सूत्र वगेरा बने, जैनसूत्रोंका समय–इसने पुराना है,–जैसे आचारांग सूत्र–सूत्रकृतांग सूत्र, स्थानांगसूत्र–समवायांगसूत्र वगेरा–द्वादशांगवाणीके–सूत्र–सब–तीर्थंकरोंके जमानेसे चले आते है,–तीर्थंकर महावीर चौइसमे तीर्थंकर हुवे, इनसें पहले–पार्श्वनाथ तीर्थंकर, इनसे पेस्तर नेमनाथ तीर्थंकर–और सबसें अवल–रिषभदेव तीर्थंकर, इस तरह–चौइसही–तीर्थंकरोंके जमानेमें द्वादशांगवानीके (१२) सूत्र होते है,–और उनके उसूलोंमे–कुछ–फर्क नही होता,—

७० चाहे कोई मजहबवाले हो,–अपने मजहबी पुस्तकोंको सबलोग मानना मंजुर रखते है,–जैनमजहबके सूत्र–सिद्धांत हो, वेदहो, पुराण–हो, या–कुरान हो, उनमे लिखे हुवे–हर्फ एक तरहकी –ज्ञानमूर्त्ति है, हर्फोंको माननेवाले ज्ञानकी मूर्त्ति मानते है,–ऐसा कहना कोइ गलत नही,–जो–महाशय–हर्फोंको–बतौर ज्ञानमूर्त्तिके –न–माने–तो–सूत्र–कैसे माने जायगे? अगर सूत्र–न–माने जाय –तो–उस मजहबके उसूल कैसे मालुम होसकेंगें? अगर मजबके उसूल मालुम–न–हुवे–तो–धर्मकी पहेचान कैसे होगी? सबुत हुवा, हर्फोंका माननाही–मूर्त्तिका मानना है,–दयानंद सरस्वतीजीका फरमाना था,–मूर्त्तिका मानना जाइज नही, मगर–विवाहके पेस्तर कन्या और कुमारोंकी प्रतिकृति देखकर विवाह करना योग्य फरमाते थे,–अगर–मूर्त्तिके माननेकी जरुरत नही तो–फोटोके जरीये

अपनी तस्वीर उतरवानेकी क्या! जरूरत? राजा-बादशाहोंके-स्मारक चिन्ह-जो-शहर-बशहरोंमे बतौर याददास्तके होते है, और सालगिरेके रोज-उनकी इज्जत किइ जाती है,-उनकी मूर्त्तिको देखकर कहा जाता है, यह-अमूक-बादशाह-या-राजा साहबकीमूर्त्ति है, -यह-सब-मूर्त्तिकी इज्जत नही-तो-और क्या! समजना? दरअसल! मूर्त्तिकी-इज्जत करनाही-मूर्त्ति माननेका-एक-तरीका है,—

७१ वेदोंके भाष्य बनानेवाले-सायनाचार्य-विक्रम सनत् (१४००)की शताब्दीमे मौजूद थे, इनको हुवे-आज-करीबन (६००) वर्स-समजो, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और-अथर्ववेद-ये-चारवेदोंके नाम है -कइ महाशय वेदत्रयीभी-बयान फरमाते है,-और कहते है,-अथर्ववेद-पिछेसें वेदोंमें शुमार किया गया,-वेदव्यासजी-आलादर्जेके विद्वान् हुवे, १-शिक्षा, २-व्याकरण ३-निरुक्त,-४,-कल्प, ५-ज्योतिष, और-६-छंद-ये-छह वेदांग कहे जाते है,-चारवेद-असल बतलाये है, और-ये-छह वेदके-अंग है-पाणिनिऋषि, कात्यायनऋषि, और पातंजलिऋषि, ये-ऋषि हुवे, पाणिनिऋषिने व्याकरणकी अष्टाध्यायी-बनाइ, कात्यायनऋषिने-कात्यायन सूत्र, और पातंजलिऋषिने अष्टांगयोगशास्त्र-रचा, कुमारिलभट्ट-और-प्रभाकर-ये-पूर्वमीमासावादी थे,-यजुर्वेदकी-महीधर-आचार्यरचित भाष्यमे-शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण-यजुर्वेद नाम होनेका सबब दिखलाया है,-वेदोंमे-कइ-पाठ-उदात्त-अनुदात्त-और स्वरितमें है,-वेदोंमे-अध्याय-और-मंडल वगेरा नाम है,-जैसे ऋग्वेदका पहला मंडल, दुसरा मंडल वगेरा, सामवेदके दो-भाग, पहले भागमे-छह-कांड, और दुसरेमे नवकांड है, एक-एक कांडके कइ-कांडिका,-जिन्हे-सूक्तभी कहते है,-वेदोंमे कइ जगह-ऋचायेंभी-कही गइ है,—

७२ अगर कहा जाय ईश्वरने सब पदार्थ-जीवोंकों सुखके लिये दे रखे है, उसका गुण भूलजाना, ईश्वरहीको-न-मानना, यह बडी गलती है,—

(जवाब.) अगर ईश्वरने सब पदार्थ-जीवोंकों आराम चैनके लिये दे रखे है-तो-एक शख्श-आरामतलब और एक-रोटियोंका मोहताज क्यों? क्या! ईश्वरकों किसीका-पक्ष था?-जो-एककों आराम और दुसरेको तकलीफ क्यों पेंश करे! निराकार ईश्वरकी मूर्त्ति नही होती-तो-सरगी-तबले हारमोनियम बजाकर-उनकी स्तुति-क्यों करना? बुत्परस्ति-जाइज नही-तो-उसकी स्तुति करना जाइज कैसे हुवा? नियोगके बारेमें-अगर कहा जाय एक औरत-एकके बाद दूसरा-दूसरेके बाद तीसरा, इस तरह दश पुरुषोंके शाथ संतानकी पैदाशके लिये नियोग करना चाहे-तो-सरसर्के, इन्साफ कहता है, अगर यही बात है-तो-फिर औरतके लिये-जो-पतिव्रता धर्म-शास्त्रोंमे-बयान फरमाया-कैसे रह सकेगा? विधवा विवाह करनेकी मनशावाले-पाराशरस्मृतिके सबुतकों पेंश करते है,—

इसपर सनातन वैदिक मजहबवाले-स्मृतिकौस्तुभ-और निर्णयसिंधु-पुरुषार्थचिंतामणि-वगेरा धर्म ग्रथोंका सबुत देते है,—

पाच बातें-कलिकालमे मना फरमाइ, पेस्तर जमाना कैसा था-और-आजकल कैसा जमाना है, इस बयानकों अपने खयाल शरीफमे लेना चाहिये,—

मनुस्मृति-अध्याय (९) श्लोक (६४)मे देखों, क्या लिखा है?

नान्यस्मिन् विधवा नारी,-नियोक्तव्या द्विजातिभिः,
अन्यस्मिन् हि-नियुजाना,-धर्मं हन्युः सनातन, ६४

(अर्थः) द्विजाति-देवर आदिमे विधवाकों नियुक्त-न-करे, जो-देवर आदिमे नियुक्त करते है-वे-सनातन पतिव्रता धर्मकों नष्ट करते है,-मजकुर फरमान मनुस्मृतिका है,-अगर कोई-न-माने-उसकी मरजी, अछे लोगोका फर्ज है,-शास्त्र सबुत पेंश करना-उपदेशकोंका-फर्ज है,-वो-अदा करदिया,—

(किताब सत्यार्थप्रकाशके बारहमें-समुल्लासके लेखका जवाब खतम हुवा,-)

[गुजरात-मासिक पत्रके लेखका जवाब,-]

१ साहित्य ससद् तर्फसे-जो-गुजरात नामका मासिक पत्र-गुजरात कार्यालय-होमजी स्ट्रीट-बबइसें निकलता है,-उसके तत्री-रा-कनैयालाल-माणकलाल-मुनशी,-बी ए-एल् एल्-बी.-अॅडवोकेटने पुस्तक दुसरे सवत् १९७९-पौष, अक चौथेमे-राजा धिराज-नामके लेखमे-हैमचद्रसूरिके बारेमे जो कुछ लिखा है,-उसका जवाब इसमे दिया जाता है,-जैनाचार्य-हैमचद्रसूरि-जैनमजहवके-एक-बडे धर्मगुरू थे, और व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, अलकार-षद् दर्शनके पुरे जानकार थे, उन्होंने-कइ-ग्रथ-बनाये है, हैमव्याकरण-और हैमीनाममाला-व्याकरण और कोशग्रथोंमे शुमारकिये जाते है,-वे-इन्ही-जैनाचार्य हेमचद्रसुरिके बनाये हुवे है,-पाणिनि व्याकरण-और-मम्मट-रचित साहित्य ग्रथ देखे जाय-और-हेमचद्राचार्यजीके बनाये हुवे व्याकरण और साहित्य ग्रथ देखेजाय-तो-मालुम होसके किसके बनाये हुवे-ग्रथ-आलादर्जेके है? अर्हन्नीति ग्रथ-जो-हेमचद्राचार्य रचित है,-देखनेवाले जानते होगें-किसकदर-उमदा है,-हेमचद्राचार्य-राज्य-खटपटमे नही पडते थे, बल्कि! इन्साफकी राहपर-चलना-आमलोगोंकों-फरमाते थे,—

२ गुजरात मासिकपत्र पुस्तक दुसरे अक चौथेके पृष्ट (३७२) सें (३७७) तक-राजाधिराजके लेखमे-तत्री-रा-कनैयालाल-माणेकलाल-बी. ए एल् एल् बी. अॅडवोकेट-लिखते है,-हेमचद्रसूरि, एक रौज-मजरीके-घर-गौचरी गये, पृष्ट (३७६) पर लिखा है, "-ते-भयकर विपलमा-सूरिपद, वीतरागपद, अविकारता, नजर आगल थी-अदृष्ट-थइ जता लाग्या,-"-आगे-इसी पृष्टपर ऐसाभी लिखा है,-"उर्मिओथी अणजाण तेना अतरमा थयेला नामना तोफानने अदृष्ट थता वार लागी नही, आजन्म अविकारीना स्थिर मगजने पलवारनो विकार वश करता वार लागी नही,—

(जवाब.) जैनाचार्य-हेमचंद्रसूरिजीके वख्तमें-मुनशीजी-मौजूद नही-थे,-मजकुर बयान किसी शास्त्र सबुत-या-इतिहासिक पुरावेसें -लिखा होना चाहिये, हेमचंद्राचार्यसूरिकी अधिकारता अदृष्ट होजाय ऐसा लिखनेवालोंके पास क्या! सबुत है? किसी इतिहासिक ग्रथके सबुतसे लिखा हो-तो-वो-सबुत पेश करना चाहिये, लेख-जभी-लाइक तारीफके कहे जासकते है,-इन्साफ और शास्त्र सबुतसे लिखे जाय,-गुजरात मासिकपत्र-पुस्तक दुसरा-अंक चौथा -इस वख्त मेरे सामने रखा हुवा है.-उसकों देखकर मजकुर इबारत लिखी गइ है,-मीनलदेवी-मुंजाल-वगेरा कोई हो,-जिनकेलिये-जो-कुछ लिखना,-इतिहासिक ग्रंथोंकि-या-शास्त्र सबुतसें लिखना-मुनासिब है,—

[गुजरात मासिक पत्रके लेखका जवाब खतम हुवा]

[किताब महावीरजीवन विस्तारके चंद-लेखोंका-
जवाब इसमे दर्ज है,-बखुबी-देखिये?-]

१ किताब महावीरजीवन विस्तार,-इस वख्त मेरे सामने रखी हुइ है,-इसके टाइटल-पेजपर लिखा है,-प्रयोजक, परी.-भीमजी -हरजीवन,-शिवसदन,-मढडा,-किताबका नाम-महावीरजीवन विस्तार-रखा, मगर तीर्थंकर महावीरस्वामीका-जीवन चरित-इसमें-टुकसें बयान किया है, चाहिये था विस्तारसें,-तीर्थंकर महावीरस्वामीको-केवलज्ञान पैदा होनेके बादका-हाल-इसमे बिल्कुल-नही, फिर-महावीरजीवन विस्तार-नाम-कैसे रखा गया-इसपर गौर कीजिये, यहां उसमेसें चंदबातोपर दाखले दलिलोसें कुछ समीक्षा करता हुं-सुनिये!

२ किताब महावीरजीवन विस्तारके अवल पृष्टपर-प्रयोजक, श्रीयुत परी. भीमजी-हरजीवन लिखते है,—

ઘણા મહાપુરુષોના જન્મસબધે તેમના અનુયાયી સમાજે પાછલથી ઘણી અશ્રદ્ધેય બાબતો દાખલ કરેલ હોય એમ જોવામા આવે છે,—

(जवाब.) तीर्थंकर महावीरस्वामीके जीवनचरितमें कौनसी-अश्रद्धेय बाबत थी,-खुलासा लिखना था,-दिलमें-कोरा शक लाना जुदी बात है,—

३ आगे किताब महावीरजीवन विस्तारके-इसी पृष्टपर-प्रयोजक-श्रीयुत परी. भीमजी हरजीवन बयान करते है,—

જેસસક્રીસ્ટ-કૃષ્ણ, મહાવીર વિગેરે મહાન્ ધર્મપ્રવર્તક પુરુષોના જન્મના વ્યતિકરની આસપાસ તેમના ભક્તજનોની શ્રદ્ધાએ પાછળથી એવુ અદભૂતપણાનું વાતાવરણ જમાવેલુ છે-કે-તેવી વાતોને આ બુદ્ધિવાદનો યુગ-સત્યમાને એ અસભવિત છે,—

(जवाब,) बुद्धिवादका-युग-क्या! अभी पैदा हुवा है? पेस्तर बुद्धिवादका युग नही था? बल्कि! जमाने हालकी बनिस्बत जमाने पेस्तरके लोग ज्यादा बुद्धिमान् थे,-जब अवधिज्ञान-मन'पर्याय-और-केवलज्ञान मौजूद था,-उस जमानेकों क्या! बुद्धिवादका युग नही कहना? न-मालुम-आजकल क्या! रवाज जारी होगया है,-विद्वन् लोग खयालातके कह देते हैं,-जमाना बदल गया है,-मगर इस बातको अपने खयाल शरीफमे नही लाते, जमाना-तो-हरवख्त बदलताही रहता है,-चाहे-कोई-किसी बातकों माने-या-न-माने, मगर सचबात कहनेमे कोई परवाह-न-करना चाहिये,-दुनियामे मिशल मशहूर है,-साचकों आच नही,-अगरचे! कोई सच बात जमाने हालके इन्सानोंके दिलमे-न-बेठी-तो-इससे क्या हुवा! सचबयान-गलत होगया? हर्गिज नही तीर्थंकर महावीरस्वामीके जीवन चरितमे उनके शागिर्दोंने कोई गलत बात दर्ज नही किइ,-न-कोई-बनावटी बात हमसीर किइ गइ.-चाहे-कोई-अपने दिलमें शक लावे-तो-उसकी मरजी.

४ किताब-महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (२) पर-प्रयोजक,-तेहरीर करते है,—

श्री महावीर प्रभुना गर्भने पण एम बनेलुं-शास्त्र कहे छे के-देवानंदा नामनी स्त्रीना उदरमांथी सौधर्म देवलोकना इंद्रे-ते-प्रभुना गर्भ, शरीरनुं हरण करी-तेमने इक्ष्वाकु-कुलना सिद्धार्थ नृपनी पट्टराणी-त्रिशला देवीना गर्भमां स्थाप्यो, अने त्रिशला-देवीना गर्भने देवानंदाना उदरमां स्थाप्यो,—

(जवाब.) जैनशास्त्र-कल्पसूत्रमें लिखा है,-तीर्थंकर महावीरस्वामीके गर्भकों-देवताने-देवानंदाकी-कुखसें लेकर त्रिशलारानीकी कुखमें रखा. इसमें कौन-ताज्जुबकी बात थी? आजकल-कइ एक-डाक्तर-किसी मरीजकों क्लोरोफोर्म-सुधाकर-मिनिटोंमेंही-ओपरेशन करदेते है,-तो-क्या! देवते लोग-जो-इन्सानसे बडे ताकतवाले होते है,-एक औरतका-हमल-दुसरी औरतके सिकममें रखे, इसमें कौन बडी बात हुई? सच्च फरमानकों-कहनेमें क्या! हरकत है,—

५ किताब महावीर जीवन विस्तारके पृष्ट (२) पर-प्रयोजक-इस दलिलकों पेश करते है,—

आवा अलौकिक व्यतिकरोने सिद्ध करवा प्रयत्न करवो अथवा तेम थवुं संभवित छे, एम जणाववानी-आ विज्ञानना युगमां हिम्मत धरवी-ए-डहापण भर्युं नथी,—

(जवाब.) चाहे जैसा विज्ञानका युग क्यों-न-हो, सच-कहना-आलादर्जेकी-अक्लमदी है,-सचकों-दबा रखना-कौन दस्तुरकी बात है,-एक देवता-अपनी दिव्यशक्तिमें-एक औरतके गर्भकों दुसरी औरतके गर्भमें रखे,-और-उन-दोनों-औरतोंकों तकलीफ पेश-न-हो, इसमें अलौकिक बात क्या थी? शास्त्रोंमें सुनते हो,-पेस्तर-विद्याधर लोग विमानमें बेठकर आसमानमें सफर करते थे,-जमाने हालमें(Aeroplane)-येरोप्लेनके जरीये आसमानमें सफर करते है,-इस मिशालसें अंदाज किया जाता है,-पेस्तरके विद्याधरोंके विमानकी

वातभी-सच थी,-कल्पसूत्रकी तहरीरके लिये-जिसका धर्मशास्त्रोपर-एतकात हो-माने, किसीकी जबरजस्ती नही,—

६ किताब महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (२) पर-प्रयोजक-श्रीयुत-परी. भीमजी हरजीवन-इस मजमूनको पेश करते है,—

જે વાતને મનુષ્યની બુદ્ધિ શકયતા અથવા સભવનીયતાના પ્રદેશની બહાર ગણે છે, તે વાતને માત્ર શ્રદ્ધા અને શાસ્ત્રના વાકય ઉપર નિર્ભર રહી, ઠસાવવા પ્રયત્ન કરવો-એ-અયોગ્ય છે—

(जवाब) धर्मशास्त्रका फरमान-जिसकों-मानना हो,-माने, कोई जबरजस्तीसें किसीके दिलमे ठसाने नही जाता,-शास्त्र फरमानकों-समजानेकी-कोशिश करना अगर अयोग्य समजा जाय-तो-ज्ञानियोंका धर्मोपदेश देना-बेंकार होजायगा, फर्ज करो! शास्त्र फरमानकी कोई वात-इन्सानकी अकलमे-न-आसकी-तो-वो-गलत समजना ऐसा कोई नियम नही सौचो! पानीमे-वायुमे-और वनास्पतिमें जीवोंका होना किसीके खयालमे नही आया-तो-क्या! वो-वात गलत हुइ ऐसा समजना? सर्वज्ञोंके फरमानपर-कोई-महाशय! एतकात लावे-या-न-लावे, चाहे बुद्धिवादका-युग हो या विज्ञान-युग हो,-सत्यशास्त्रके फरमानको-सत्य कहना-अयोग्य नही,-बंगालके बाशिंदे-श्रीयुत-जगदीशचद्र-बोस-वनास्पतिमे जीवोंका होना-यन्त्रोद्वारा साबीत करते है,-और यह बात-जिनकों अखबार पढनेका शौख है-बखूनी-जानते होगें, जैनशास्त्र-वनास्पतिमे जीवोंका होना अवलसे फरमाते है इन सबुतोंसे पाया जाता है, धर्मशास्त्रोंका-फरमान गलत नही,—

७ किताब-महावीर जीवन विस्तारके पृष्ट (४२) पर-श्रीयुत-प्रयोजक-परी -भीमजी हरजीवन-इस मजमूनको-पेश-करते है,—

આત્મા જેટલે અંશે પૂર્ણતાને પ્રાપ્ત થયો હોય છે, અથવા પર મપદની નજીક હોય છે-તેટલેજ અંશે-તે-અન્ય મનુષ્યનું હિત કરી શકવા સમર્થ નિવડે છે,—

(जवाब.) जैनशास्त्रोंका फरमान है,-अभव्यजीव-दुसरोंकों-तालीम धर्मकी देकर ससाररूपी-दरयावके-पार लगा सकता है.-कइ-अभव्यजीवोंकी धर्मतालीमसे-भव्यजीवोंका-जहाज-कनारे-लग चुका है,-अभव्यजीवोंको जराभी धर्मकी खासीयत हासिल नही होती, और-न-वे-परमपदके नजीक पहुच सकते, मगर उनकी धर्मतालीमसे दुसरोंका आत्महित होसकता है.-धर्मतालीम देनेवालेका फरमान अगर सुननेवालोंके शुभकर्मका उदय हो,-तो-असर करसकता है,-इसमे कोई-बेमुनासिब बात नही,-उपदेशक-जैसी करनी करेगें, उसका फल-वे-खुद पायगें. दुसरोंकी करनीका फल दुसरा नही पासकता,—

८ किताब महावीरजीवन विस्तारके इसी (४२) पृष्टपर प्रयोजक-इस मजमूनकों पेश करते है,—

જેમના જીવનને હજી સેંકડો બાજુઓથી સુધારવાનુ બાકી રહ્યુ હોય છે, તેવા મનુષ્યો જ્યારે બીજાઓને સુધારવાનો-ઝડો-લઇ મેંદાનમા ઉતરી પડે છે, ત્યારે તેથી જગત્‌ની ઉપર માઠી અસર થવા પામે છે,—

(जवाब.) इस दलिलसें साबीत होता है,-उपदेशक लोग-जो-दुसरोंको तालीम धर्मकी देते है,-उनमे बहुतसी बाते सुधारनेकी-हो-वो सुधारते नही, जिससें आलीमपर जैसी चाहिये-वैसी-असर नही पडती, ब-मुजब इसी दलिलके देखा जाय-तों-कइ श्रावकभी उपदेशक होते है,-सभामे भाषण देते है,-लेख लिखकर दुसरोंकों हिदायत करते है,-उन श्रावकोंकोभी-सेंकडों बाजु तर्फसें सुधारनेका-काम-बाकी नही है-क्या ?-श्रावकके एकीसगुण हासिलकरनेकी-और बारह व्रत इख्तियार करनेकी जरूरत है,-या-नही ? कितनेक श्रावक बयान करते है. हम-अध्यात्मज्ञानकों मंजुर रखते है,-देवपूजा सामायिक-प्रतिक्रमण करना जो श्रावकोका कर्तव्य है,-वो-करसकते नही,-

इससे-तो-कुछ बरताव करके बतलाना अछा है,-जो-जो-श्रावक-प्रतिष्ठामहोच्छवके-या-रथयात्राके वरघोडेकों-पसद नही करते-तो-अपनी सभास्थापनके रोज-या-उसकी सालगिरेके रोज-जलसा करना कैसा पसद करते है,-इसका कोई माकुल जवाव देवे, अगर कोई श्रावक-इस वातपर एतराज करे-आजकलके कितनेक-जैनमुनि-साधुपनेके धर्ममें चलते नही, फिर दुसरोंकों तालीम धर्मकी-देकर-फायदा कैसे-पहुचायगें? जवावमें तलब करे, आज कलके कितनेक-श्रावक-अपने श्रावकपनेके धर्ममे चलते नही, फिर सभामे-भाषण देकर धर्ममे-क्या! फायदा पहुचा सकेंग! इस वातको-सोचो! अगर कहाजाय-जैसा समय है-वैसे-साधु-और-श्रावक मौजूद है,-तो-फिर इसीपर कायम रहो,-चाहे-साधु-महाराज-हो,-या-श्रावक हो, पाकीजा-खयालातसे भरी हुई-धर्मतालीम-जिनजिन-जीवोंके शुभकर्मका उदय हो-फायदा पहुचा सकती है,-इसपर एक मिशाल दिइ जाती है,-सुनिये! किसी दरयावमें-कोई ष्टीमर जा रही है, इत्तिफाकसे तुफान उठा, उस हालतमे सामने कोई दुसरी ष्टीमर आरही हों, पहलेवाली ष्टीमरका कप्तान-सामने आनेवाली ष्टीमरके कप्तानकों-इस-तुफानकी खबर देकर-उसकों इस तुफानसे दूर रहनेका फायदा पहुचा सकता है,-

सबूत हुवा-एक विद्वान्मुनि-या-पढालिखा-विद्वान् श्रावक अपनी सची धर्मतालीमसे दुसरोंकों फायदा धर्मका पहुचा सकते है,-न-शर्तेकि-सुननेवाले उस धर्मतालीमपर एतकात लाकर अमल करे, हरेक शख्श इस वातपर गौर करे-तो-उसकों व-खूबी मालूम होजायगा-निहायत उमदा और सची दलिल है,—

९ किताव महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (४३) पर-प्रयोजक-श्रीयुत-परी मीमजी-हरजीवन बयान करते है,—

સુધારકનુ ચારિત્ર જ્યાસુધી દોષયુક્ત અને વિકલ હોય છે,-ત્યા-સુધી તે બીજાઓને ઉપદેશ આપવાની પ્રવૃત્તિથી-સ્વ-અને-પર ઉભયના હિતનો વિનાશજ-કરે છે,—

(जवाब.) देखिये! इस लेखमें प्रयोजक बयान करते हैं,-सुधार-कका वरताव-साफ-न-हो, तबतक दुसरोंपर उसका-असर-नही होता. मगर यह कहना दुरुस्त नही, जैनशास्त्र फरमाते है,-अभव्य जीवके उपदेशसें-रूट-भव्यजीव-ससार समुदरसें पार पहुच गये हैं और अभव्य जीवकों धर्मपर श्रद्धाभी-नही-होती, समजलो, क्या! बात साबीत हुई? बात यह साबीत हुइ-सची धर्मतालीमसे-जिस जीवके पुन्यका उदय हो,-असर होसकता है, और फायदा धर्मका पहुच सकता है,-कितनेक उपदेशक-चाहे-वे-जैनमुनि हो-या-जै-नश्वेतांबर श्रावक हो,-जन-सभामें व्याख्यान या-भाषण देते है,-तो-अवल बयान करते है,-शास्त्र फरमान ऐसा है,-मानना-न-मानना-सुननेवालोंके दिलपर दारमदार है,-सुधारकका चारित्र चाहे जितना साफ हो,-और-सचे धर्मकी तालीम देवे, मगर-जिस-जीवके अशुभकर्मका उदय होगा उसकों असर न होगा, तीर्थंकर जैसे साफ चारित्रवाले दुसरे कौन होगें? देखिये! उनकी धर्मतालीमसभी-अभव्य जीवकों फायदा नही पहुचा सकती, मगर अभव्य जीवका-एतकादही-धर्मपर नही होता, फिर उसकों असर कैसे होसके?—

१० किताब महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (४५) पर-प्रयोजक इस दलिलकों पेश करते है,—

પોતાના અંત:કરણનું અંધારું કાયમ ગણીને જેઓ આ દુનિયાને પ્રકાશમાં ધમકી લાવવા પ્રયત્નશીલ રહે છે, તેઓ હિતને બદલે ઉલટુ પોતાના દ્રષ્ટાંતથી દુનિયાનુ અહિત કરે છે,—

(जवाब) उपदेशकके दिलका अंधेरा कायम है,-इस बातकों सु-ननेवाले-कैसे जान सकते हैं,?-यातो-वो-खुद जाने-या-केवल-ज्ञानी जान सके,-इतने परभी-अगर-वो-दूसरोंको-सचे धर्मपर चलना फरमान करे-तो-इसमें दूसरेका अहित क्या? बल्कि! हित है,-बिना शास्त्रसबुतके बयान करना-यही-दुनियाकों अहित होनेका सबब है,-कइ श्रावक जाहिर सभामें बडेबडे लेक्चरर-बनकर सब-

अपने खानके दूसरोंकों नसीहत करते है,-ठहराव-पास करते है, और अपनेपर तालियोंकी-बोछार हासिल करवाते है,-लेकिन! अफसोस है-वेही-श्रावक-घर-जाकर-उसपर अमल नही करते, और खिलाफ तौरपर दरपेश गुजरते है,-दरअसल! बमुआफिक जमाने पेस्तरके-न-ऐसे साधु है,-और-न-वैसे श्रावक है,-खाली कह बेठते है, पेस्तरके साधु कैसे क्रियापात्र थे? मगर-इस बातपर खयाल नही करते-पेस्तरके जैसे-व्रतधारी श्रावक कहा है? इस बातकों सौचो! साधु और श्रावकोंको इस वख्त मुनासिब है,-वे-हालके जमानेपर निगाह करे, कोरी बातें-न-बनावे, अगर कोई कहे, हमारे बडेरे बडे दौलतमद-थे-तो-इससे क्या! हुवा? अपनेपास कितनी दौलत है,-इसपर खयाल करो, आजकलके कितनेक श्रावकोंसें-दु-नयवी कारोबारसें फारिग हुवा जातानही. गृहससारमे जितनी दौलत सर्फ किइ जाती है, उससे चौथा हिस्साभी धर्मकी राहपर सर्फ नही किया जाता, धर्मादेकी बोली हुइ रकम कइ साल बीत-जानेपर-खर्च करते है,-धर्मशास्त्र फरमाते है, तुर्त खर्च दो,

११ किताब महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (७२) पर-प्रयोजक इस मजमूनकों पेश करते हैं,—

આપણે મુનિસમુદાય પ્રભુના-આ-આશયને ક્યારે સફલ કરશે,?

(जवाब) मुनिवर्गमे सब-मुनि-एक समान नही होते. जो-जो-जैनमुनि-खिलाफ जैनशास्त्रके चलते है,-वे-बेशक! ठीक नही है, इसीतरह जैनश्वेताबर-श्रावक-समुदायमभी-जो-जो-श्रावक खिलाफ जैनशास्त्रके चलते है, वेभी-ठीक नही, उनकोभी चाहिये अपना धार्मिक बरताव सुधारे, मुताबिक जमानेके दोंनों तर्फ धार्मिक बरता वमें कमजोरी आगइ है, मगर-किसीका पक्ष-न-रखकर सत्यधर्मका उपदेश देना दोनोंके लिये फायदेमद है,—

१२ किताब महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (६७) पर-प्रयोजक श्रीयुत भीमजी हरजीवन लिखते है,—

બૌદ્ધના સાહિત્યમા ગોશાલો એટલો બધો-વિકૃત-વર્ણુંમા-નજરે પડતો નથી,—

(जवाब.) तीर्थंकर महावीरस्वामी-और-उनके जमानेके जैनोंसें-गोशालेनें-उल्टा वरताव किया, जैसाकि-तीर्थंकर महावीरस्वामीसें तेजोलेश्याका बयान लिखा, और फिर उन्हीके सामने हुवा,-बौद्धोंके साथ उसका सबध-कमहोगा, इसलिये उनके साहित्यमे गोशालाके उल्लेखरतावका बयान न होगा, इसमे कोई ताज्जुबकी-बात नही, जैनोंके साथ उसका जितना सबध था, बौद्धोंके साथ उतना नही.

१३ किताब महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (७६)पर-प्रयोजक-श्रीयुत-भीमजी-हरजीवन तेहरीर करते हैं.—

વૈશિકાયન નામના તાપસ સાથે પ્રસગ પડ્યો, ગોશાલાએ-તે-ધ્યાનસ્થ તપસ્વીને તેની ક્રિયાનો મર્મ ઉદ્ધતાઇથી પુછવા માડ્યો

(जवाब) देखिये ! यहा-खुद-प्रयोजकने गोशालेकों उद्धत वचन बोलेनाला लिखते हैं,-जैनशास्त्रोंके लेखसे मालुम होता है,-गोशाला-तीर्थंकर महावीरस्वामीके साथ-और-उसवख्तके जैनोंके साथ-जैनधर्मसे उल्टा बरताव करता था, इसलिये जैनशास्त्रोंमे उसकों उल्टा वरताव करनेवाला लिखा,—

१४ किताब महावीरजीवन विस्तारके पृष्ट (६७)पर-बयान है,—

મતભેદની દૃષ્ટિ આપણને સામા મનુષ્યને તેના-ખરા-સ્વરૂપે જોવામા અતરાય કરે છે,—

(जवाब.) अगर इन्साफसे देखाजाय-तो-मतभेदकी दृष्टि चाहे जैसी हो-अतराय नही करसकती, हरेक शख्सकों इन्साफपर बावद रहना चाहिये.—

[किताब महावीर-जीवनविस्तारके चढ लेखोंका
जवाब खतम हुवा]

[प्राचीन-श्वेताम्बर और श्रीयुत-उदयलालजी जैनकी-तहरीरोंका-जवाब,-]

१ इसमे-सावीत करदिया है,-जैनश्वेतांबर मजहब प्राचीन है,-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-साकीन-बडनगर-मुल्क मालवेने-जो-जैनाचार्य-भद्रबाहुस्वामीके चरितका अनुवाद किया है, उसकी प्र-स्तावनामे-उन्होंने-जो-जो दलिले श्वेतांबर मजहबके बारेमे पेश किइ थी, उनका-माकुल जवाब-इसमे दिया गया है,-जैनमजहबमे-श्वेतांबर-और दिगंबर-दो-फिरके मशहूर है,-उनमे कौनसा फि-रका पुराना है,-इसकी तलाश करना चाहिये, जिस फिरकेके धर्म-शास्त्र-मंदिर-मूर्त्ति-और शिलालेख पुराने मिलसके वही-फिरका पुराना समजो, जैनमजहबमे-शत्रुंजय-गिरनार-समेतशिखर-राज-गृही-पावापुरी-आबु-ये-पुरानेतीर्थ-शुमार किये जाते है,-तीर्थश-त्रुंजयपर चौमुखजीकी टोंकमे राजा संप्रतिका तामीर करवाया-हुवा जैनश्वेतांबर मंदिर करीब (२१५०) वर्सका मौजूद है. गिरनार तीर्थ परभी इसी अर्सेका बना हुवा-राजासंप्रतिका-मंदिर खडा है,-राजा संप्रति-जैनश्वेतांबर श्रावक था,-जैनश्वेतांबराचार्य-हैमचद्रसूरिका फरमानबरदार-राजा कुमारपाल-जो-परम आर्हत-जैनश्वेतांबर श्रावक था,-उसके तामीर करवाये हुवे जैनश्वेतांबर मंदिर-शत्रुंजय-गिरनार और आबुपर कायम है, देखलो, दिवान वस्तुपाल-तेजपालके तामीर करवाये हुवे-जैनश्वेतांबर मंदिर-जो-शिल्प कारीके-नमुने-शुमार किये जाते है,-तीर्थआबुपर खडे है,-तीर्थ-समेतशिखरपर जहा जैनोके-(२०) तीर्थंकरोंका निर्वाण हुवा-तमाम-छत्रीये-चरण-पादुका-और-मंदिर-जैनश्वेतांबर फिरकेके बने हुवे है,-खयाल करनेकी जगह है,-उसपर-आजतक-एकभी-दिगंबर फिरकेका मंदिर नही,-बडे अफसोसकी बात है,-जहा-जैनोंके वीश तीर्थंकरोंकी मुक्ति हुई-उस पहाडपर-आजतक-दिग-बर फिरकेका एकभी मंदिर नही-इसका क्या सबब? करीब (१००)

नही हुवे पहाडके नीचे बीशपंथ-और तेरहपंथवालोंके दिगंबर मंदिर बने है,-श्वेतांबरोंके बनाये हुवे-मंदिर-पहाडके नीचेभी इनसें पुराने है,-राजगृहीके पांचोपहाडपर जैनश्वेतांबर मंदिर बने हुवे है,—

२ तीर्थ पावापुरी-जो-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी निर्वाण भूमि है, वहां जैनश्वेतांबर फिरकेके बनाये हुवे-पुराने जैनश्वेतांबरमंदिर मौजूद है, कमलसरोवरमे-तीर्थंकर महावीरस्वामीकी चरणपादुकाका मंदिर जैनश्वेतांबरोंकी तर्फसे बना हुवा है,-कमलसरोवरके सामने एक दिगंबर मंदिर-करीब पचासवर्स हुवे होगें बना है,-अगर श्वेतांबर मजहबसें दिगंबरमजहब पुराना होता-तो-अखीरके तीर्थंकर महावीरस्वामीकी निर्वाणभूमिमेंभी-उनका पुराना मंदिर क्यों न होता? तारंगातीर्थमे-राजा-कुमारपालका तामीर करवाया हुवा-जैनश्वेतांबर मंदिर कायम है,-वहांभी श्वेतांबरमंदिरके पेस्तरका बनाहुवा दिगंबरमंदिर नही. तीर्थमांडवगढ-जैनमजहबमे पुराना शुमार किया जाता है.-उसमेंभी पुराना श्वेतांबरमंदिर-और तीर्थका कारखाना बनाहुवा, देखलो! तीर्थमक्सीजीमेंभी-श्वेतांबरमंदिर पेस्तरका बना हुवा और दिगंबरमंदिर उसके बादका है,-मुल्क-तेलंगमें-दखन-हैदराबादके आगे-आलेर-टेशनसे दो कोशके फासलेपर-तीर्थकुल्पाकजीमें-तीर्थंकर ऋषभदेव-उर्फ-माणिक्य स्वामीका-तीर्थ है,-उसमें मंदिर-मूर्त्ति-और-शिलालेख-सब-श्वेतांबर फिरकेके है, -और उसकी जेरनिगरानी-दखन-हैदराबाद-और-सिकंदराबादके जैनश्वेतांबर श्रावकलोग रखते है;-विक्रम संवत् (६८०) मे-वहांका मंदिरबना, कइ दफे जीर्णोद्धार हुवा, संवत् (१९६५) मे-जब मेरा चौमासा-शहर-दखन-हैदराबादमे हुवा था, मेरा जाना इस तीर्थमे हुवा था, मंदिरके जीर्णोद्धारकेलिये-दखन-हैदराबाद और सिकंदराबादके श्रावकोंकों तालीम धर्मकी दिइ गइ थी, वहांपरही चंदा हुवा था, इसवख्त-तीर्थका पुनरोद्धार हुवा-मौजूद है,—

३ जैनश्वेतांबर मजहबके आचारांग वगेरा द्वादशांग वाणीके-ब-

र्मपुस्तक-दिगंबर मजहबके-धवल-जयधवल-महाधवलसे-पुराने सा-बीत होते है,-मथुराके जैनटीलेसें निकले हुवे-शिलालेख-जैनश्वेतांबर मजहबके कल्पसूत्रकी पटावलीसें मिलते है,-जैनश्वेतांबर मजहबकी पटावली-पुरानी है,-इन बातोंसें देखलो! मंदिर-मूर्त्ति-धर्मपुस्तक और-शिलालेख किसके पुराने है? श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-साकीन बडनगर-मुल्क मालवेने-जो-भद्रबाहु-चरित्रका-अनुवाद किया है.-उसकी प्रस्तावनाके पृष्ट (७) पर लिखते है,-वामदेव-जो-विक्रमकी दशमी शताब्दिमे हुवे, उन्होंने भावसंग्रहमे लिखा है,-विक्रमराजाकी मृत्युके (१३६) वर्स बाद-जिनचंद्रके द्वारा श्वेतांबरमतका संसारमे आविर्भाव हुआ,—

(जवाब) हरिभद्रसूरि-जो-वामदेवसें पेस्तर हुवे है,-जिस वख्त विक्रमकी छठी-शताब्दि चलती थी, उन्होने आवश्यक सूत्रवृत्तिमे बतलादिया है,-एक-शिवभूतिमुनिने श्वेतांबर फिरकेसें अलग होकर विक्रम संवत् (१४९) मे-दिगंबर मजहब इजाद किया,-श्रीहरिभद्र-सूरि-वामदेवजीसे चारसो वर्स पेस्तर हुवे,-चारसो वर्स-पेस्तरवालोंका-लिखना अक्लमंद लोग-ज्यादा पसंद करेंगें,—

४ आगे-वडनगरनिवासी श्रीयुत-उदयलालजी जैन-इसी-भद्रबाहु चरित्रकी-प्रस्तावनाके (८) मे-पृष्टपर बयान करते है,-उज्जयिनीमें भीषण दुर्भिक्ष-पडा,-उसवख्त-साधुलोक-वास्तविकमार्गको नही रखसके, परंतु किसीतरह-अपना-पेट-तो भरनाही पडता था, इसलिये धीरे धीरे शिथिल होकर वस्त्र, दंड, भिक्षापात्र, कंबलादि धारण किये —

(जवाब) उज्जयिनी-नगरीमे दुष्काल पडा उसवख्तसें जैनमुनियोने वस्त्र, दंड, और भिक्षापात्र रखना शरू किया-कहना-द्वादशांगवाणीके धर्मपुस्तकोंसे खिलाफ है,-इससे पेस्तरभी-स्थविरकल्पी-मुनि-वस्त्र, पात्र, दंड वगेरा रखते थे, दिगंबर मजहबके ज्ञानार्णव नामके शास्त्रमे जैनमुनिके लिये-धर्मोपकरण चले है,-दिगंबर मुनि-

कमंडल रखते है,-यह-क्या! पानीकेलिये-पात्र नही हुवा? और-मोरपिंछी क्या! रजोहरणकी जगह एक तरहका उपकरण नही हुवा? वेशक हुवा. बतलाइए! नग्नदिगंबरमुनिकोंभी-पिंछी-कमंडल विना-नही-चला, आहारकेलिये-दिगंबर मुनि एक-गृहस्थके-घर-खडेखडे-हाथमें लेकर खातेहै-यहभी नही छुट सका-जैनश्वेतांबर मजहबके कल्पसूत्रमे-जैनस्थविरकल्पी-मुनियोकेलिये बयान है,-श्वेतवस्त्र पहनना, जब श्वेतवस्त्रधारीयोंमे-पंचमहाव्रतकी कमजोरी हुइ-धर्मकी हिफाजतकेलिये-पीले-वस्त्रपहनना जारी हुवा,—

५ द्वादशांगवानीके धर्मपुस्तक देखो,-जैनमुनियोंकेलिये-दो-मार्ग फरमाये,-एक जिनकल्पमार्ग, और-दुसरा स्थविरकल्पमार्ग,-जिनकल्पमार्ग-वज्रऋषभ-नाराच-संहननवाले मुनि-इख्तियार कर-सकते थे. जिनकल्पी-मुनि-कमसे-कम-नवपूर्वकी तिसरी आचार वस्तुतक और ज्यादा दशपूर्वके पढेहुवे होते थे, दिवसके तिसरे प्रह-रमें गोचरी जाते थे. पावमे काटा लगे-तोभी-निकालते नही थे, रास्तेमे चलतेहुवे अगर उनके-सामने-सिंहभी आजाय-तो-पिछे नही हठते थे, वीमार पडे-तो-दवा नही लेते थे. नवकल्पी विहार करते थे.-और-वे-नग्न-स्वरूप होतेहुवेभी-दुसरोंको नग्न नही दिखाई देते थे, ऐसे मुनिको-जिनकल्पी होना फरमाया.-और-ऐसा जिनकल्पमार्ग-जंबूस्वामीके बाद विच्छेद होगया अगर जमाने हालमे-कोई-जैनमुनि-नग्न रहकर पिछी-कमंडल धारण करनेमात्रसें-जिनकल्पी-कहलाना चाहे तो-द्वादशांगवानीके धर्मपुस्तकोंसें खि-लाफ है,—

६ फिर वडनगरनिवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-भद्रबाहुच-रित्रकी प्रस्तावनाके पृष्ट (९)पर तेहरीर करते है,-श्वेतांबरोंने यह बात अपने आप स्वीकार किई है-शिवभूतिने जिस मतका आदर किया था, वह जिनकल्प है,—

(जबाब) शिवभूतिमुनि-जिनकल्पी थे-मजकुर बात-श्वेतांबरलोग

मजुर नही रखते, सबब-शिवभूति-मुनिके पेस्तर-जबूस्वामीके वख्त-सेंही-जिनकल्पि-मार्ग-विछेद होगया था,-जिनकल्पमार्गका जमा-नाही नही रहा था-तो-उसकों इख्तियार करना-कैसे बनसके, फर्ज करो! जिसकी ताक़ात-मणभर-बोजा-उठानेकी नही, वो-सवामण बोजा-कैसे उठा सकेगा? जिनकल्पमार्ग विच्छेद होगया था,-उस बातकेलिये-शिवभूतिमुनिजी-जुदे नही हुवे थे, बल्कि! एक-रत्नकबलके बारेमे-गुरुजीसे विवाद होनेपर जुदे हुवे थे -विच्छेद होयेहुवे -जिनकल्पमार्ग चलानेकेलिये-वज्रऋषभ-नाराच-सहनन चाहिये, नवपूर्वस दशपूर्वतक ज्ञान, और-लब्धि-चाहिये,—

७ आगे-वडनगरनिवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-किताब भद्रबाहुचरित्रकी प्रस्तावनाम-पृष्ट (११)पर-इस दलिलकों पेंश करते है,-यदि-हम-और प्रमाणोंकों-दिगबरोंकी प्राचीनता सिद्ध करनेमें -न-दे-तोभी-हमारा काम अटका नही रहता,—

(जवाब) क्यो नही अटका रहता? हरेक बातकेलिये सबुत-तो-देना चाहिये आपके भावसग्रहग्रथका सबुत देखलिया-जो-जैनश्वेताबराचार्य-हरिभद्रसूरिजीके पिछेका बनाहुवा है,-आगे-वडनगर निवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-किताब भद्रबाहुचरित्रकी प्रस्तावनाके पृष्ट (१२)पर-इस मजमूनकों पेंश करते है,-नग्ना जिनाना विदु'-वराहमेहरके बनायेहुवे-प्रतिष्ठाकाडमे नग्न (दिगबर साधु-) लोग-जिनभगवान्‌की पर्युपासना करे,-इसके जवाबमे मालुम हो, सिर्फ! नग्न-शब्द है,-और अर्थमे दिगबरसाधु-शब्द कहासे लाये? अकेले नग्न शब्दसें जिनकल्पमार्ग-नही कहाजाता -वडनगर निवासी -श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-दिगबर मजहबकी-प्राचीनताकेलिये दुसरा सबुत पेंश करे,—

८ फिर वडनगरनिवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-किताब-भद्रबाहु-चरित्रके भाषानुवादमे पृष्ट (७०)पर-बयान करते है,-उसी

दिनसें श्वेतवस्त्रके ग्रहण करनेसें अर्धफालक-मतसें-श्वेताबरमत प्रसिद्ध हुवा.—

(जवाब.) अर्धफालक मतसें-श्वेताबरमजहब-नही चला, बल्कि ! खास तीर्थंकरोंकाही-चलायाहुवा है,-लेखक महाशयकों-अगर-दिगंबरमजहब पुराना-साबीत करना हो-दिगंबरमजहबके मंदिर-मूर्त्ति-और शास्त्र-दो-हजारवर्स पेस्तरके साबीत करे,-कोरी बातोंसें काम नही चलसकता, संप्रतिराजा-कुमारपालराजा-विमलशाह शेठ-दिवान-वस्तुपाल-तेजपाल-और-सग्रामसोनी-वगेरा जैनश्वेतांबर-श्रावकोंके तामीर करवायेहुवे-जैनश्वेतांबर मंदिर-तीर्थ-शत्रुंजय-गिरनार-आबु-वगेरामे अबतक मौजूद है,-इनसें पहलेके-बनेहुवे-जैनदिगंबर मंदिर मूर्त्ति-या-शिलालेख-सबुतके शाथ-जाहीर किजिये,-अगर कोई-कहे,-विदून लेखके हमारा मंदिर-या-मूर्त्ति-चतुर्थकालकी-मौजूद है,-तो-वैसी-बिना सबुतकी बात मंजुर-न -होगी,—

९ तत्त्वार्थसूत्रके मूलपाठमे-एकादश-जिने,-अर्थात्-जिनेंद्रकों ग्यारह परिसह पैदा होते है,-ग्यारह परिसहोंम क्षुधा-तृषा-बतौर परिसहके सामील है,-इसलिये-केवलज्ञानीकोंभी-क्षुधा-तृषा लगना सबुत हुवा.-औरतकों मुक्ति होनाभी-प्रमाणसे-साबीत है, औरत-अगर-श्रद्धा-ज्ञान-और चारित्रमे-साबीत रहे-तो-उसकी मुक्ति-क्यों-न-हो. तीर्थंकर महावीर स्वामीके गर्भका-अपहारहोना-जैनद्वादशांग-वाणीके पुस्तकोंमे-आश्चर्यजनक लिखा-दिगंबरमजहबके शास्त्रोंमेभी-आश्चर्यजनक कइ-बातें लिखी है.-सुनिये ! तीर्थंकरका जन्म -अयोध्यानगरीमे होनाचाहिये,-इस अवसर्पिणी-कालमे-अलग-अलग जगहसे हुवा.-तीर्थंकरोंकी मुक्ति-समेतशिखरतीर्थपर होती है, इसकालमे कितनेक तीर्थंकरोंकी मुक्ति दुसरी जगहसेंभी हुई, तीर्थंकरोंके घर-बेटेही-बेटे पैदा होते है,-इसचौविसीमें-तीर्थंकर ऋषभदेवके घर-बेटी-पैदा हुई, चक्रवर्त्तीका-मान-खडन होसके नही, मगर

भरतचक्रवर्त्तीका मानखडन-बाहुबलिजीने किया,-तीर्थंकरदेवोंकों-किसी हालतमे उपसर्ग-न-होनाचाहिये. इसचौविशीमे-तीर्थंकर पार्श्वनाथजीको हुवा तीर्थंकर अपने-अवधिज्ञानकों-प्रकाश करे-नही. इस-अवसर्पिणी-कालमे-तीर्थंकर ऋषभदेवमहाराजने किया, वासुदेवका मृत्यु-भाईके हाथसे-न-हो-और-नवमे-वासुदेवका मृत्यु -जरतकुमारके हाथसें हुवा त्रिषष्टिशलाका पुरुष (६३) होने चाहिये,-इस चौविशीमे-कम-हुवे,-नवमे तीर्थंकरसे-लगाकर सौलहमे-तीर्थंकरतक सात-तीर्थंकरोंके अतरेमे-जैनधर्म-बिल्कुल विच्छेद हो गया था, दुसरेकालमे नही होता, कल्की-और अर्द्ध-कल्की-अनागत कालमे होयगें -यह-सबबाते आश्चर्य-जनक-है,-ऐसा बयान-दिगबर मजहबके सिद्धातसार-त्रैलोक्यप्रज्ञप्ति-और भाषाके पार्श्वपुराण वगेरामे मौजूद है, जिनकों देखनाहो,-मजकुर ग्रथ देखे,—

१० श्वेताबर मजहबवाले-अपनी-जिनप्रतिमापर-केशर-चदन-वर्कसोने-चादीके-फुल-मुकुट-कुडल-हार-कठी-वगेरा-गेहने चढाते है, दिगबर मजहबवाले-अपनी-जिनप्रतिमापर-नही चढाते,-सिर्फ! बीशपथ-दिगबरफिरकेवाले-जिनप्रतिमाके चरणपर-केशरकी टीकी-और-फुल-चढाते है, तेरहपथ-फिरकेवाले नही चढाते,-कभी-रथयात्राके जलसेमे-जिनप्रतिमाकों-रथमे-सोनेचादीके सिंहासनपर बेठाकर जुलुस निकालते है,-बीशपथ-फिरकेवाले -भट्टारक और-उनके चेले-पडितोको-मानते है, तेरहपथ-फिरकेवाले नही मानते, श्वेतावर फिरकेवाले-अपनी-जिनप्रतिमाके सामने मिठाई-वगेरा नैवेद्य चढाते है, दिगबर-बीशपथ-और-तेरहपथ-फिरकेवाले-नालियरकी गिरिका छोटा-टुकडा-विना-रगा हुवा चढाते है,-और-उसकों-नैवेद्यकी जगह समजलेते है,-श्वेताबर लोग -आम-अमरूद-अनार वगेरा-हरेफल अपनी जिनप्रतिमाके सामने चढाते है,-दिगबर-बीशपथ-फिरकेवालेभी चढाते है,- तेरहपथ-फिरकेवाले बादाम,-छुहारे वगेरा-सुकेफल-चढाते है,—

११ तत्त्वार्थसूत्रमें पाठ है–मूर्छा–परिग्रहः–ममताभावकों परिग्रह कहा.–चीजहोते हुवेभी–अगर–उसपर ममता नही है–तो–वो–पापका बंधन करनेवाली नही फरमाई, देखो ! दिगंबर मजहबके फरमानसेंभी–भरतचक्रवर्त्तीकों–छह–खंडका राज्यहोते हुवेभी–उसमें ममता–न–होनेके सबब–त्यागी कहा, सबुत हुवा,–दौलत–दुनिया–माल–खजानेकी मौजूदगीमेंभी अगर दिलमें–उनपर मोह–नही–तो –निष्परिग्रही–कहे, इसीतरह–जैनमुनिके पास वस्त्र–पात्र–कंबल होते हुवेभी–अगर उसपर ममता नही–तो–वो–परिग्रह नही कहा,–नग्नस्वरूप होतेहुवेभी–अगर दिलमें–मूर्छा–भावहो–तो–वैसा–नग्नस्वरूपभी–कारआमद नही फरमाया, और वस्त्र–पात्र–कंबल वगेरा धर्मसाधनकी चीजें–अपनेपास होते हुवेभी–अगर दिलमें मूर्छा–भाव नही–तो–वो–परिग्रह नही फरमाया, जिनकल्पमार्ग–पालन करनेका –जमाना रहा नही, और उसकों इख्तियार करना बन सकेगा नही. इसलिये–बदनकी ताकात देखकर स्थविरकल्प–मार्गपर–चलना बेहत्तर है,—

१२ वडनगरनिवासी–श्रीयुत–उदयलालजी–जैन–किताब–भद्रबाहु–चरित्रके समूलभाषानुवादके पृष्ट (७५) पर–केवलि–भगवान्–सर्वलोकालोकके देखने जाननेवाले है,–तो–संसारमें नानाप्रकारके जीवोंका–वध–देखतेहुवे–कैसे भोजन करसकते हैं ? अथवा जिनभगवान्भी अल्पज्ञानीलोगोंकी तरह–शुद्ध–तथा–अशुद्ध भोजन करगें क्या ? और यदि अंतरायोंके होतेहुवेभी भोजन करेंगें–तो–केवली–भगवान्के श्रावकोंसेभी अत्यंत निंदनीय हीनता ठहरेगी. उनके आहारकीभी कल्पना–केवलवेदनीय–कर्मके–सद्भावमें मानीजाती है. –मांस रक्त आदि अपवित्र वस्तुओंकों देखतेहुवेभी–यदि–केवली–भगवान आहार करे–तो–फिर–यों–कहिये ! जिनभगवान्ने अपने सर्वज्ञपनेकों जलांजलि–दे–दिई,—

(जवाब.) क्या ! खून दलिल पेंश हुई है ? क्या ! तरहतरहके

जीवोंका-वध-देखकर-निर्मोही-वीतरागोंकोंभी-कुछ-फिक्र पैदा होना कहाजायगा? जिससें-वे-खानापिना छोडदेवे?-उनको फिक्र -दरपेश होनेका क्या! काम?-वे-अपने ज्ञानसें दुनियाका हाल-बखूबी जानते है? उनका आत्मा ज्ञानवान् है,-मगर-देहकेलिये खानपान छोडनेका क्या सबब? नोकर्म-आहार-केवलज्ञानी करे ऐसा-तो-दिगंबर मजहबमेभी-मंजुर रखा है,-मगर बिदून खानपानके देहका कायम रहना कैसे होसकेगा? फर्ज करो! किसी-मुनिकों -जवानीमे केवलज्ञान हुवा. उम्र लंबी-हो-तो-बतलाइये-शरीर बढवारी बिदून खानपानके कैसे होगी?—

१३ बडनगरनिवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-भद्रबाहुचरित्र -समूल-भाषानुवादके पृष्ट (७८)पर-इस दलिलकों-पेंश-करते है,-जो-लोग-निर्ग्रंथ-मार्गके बिना-परिग्रहके सद्भावमेभी मनुष्योंकों मोक्षका प्राप्त होना बताते है,-उनका कहना प्रमाणभूत नही होसकता,—

(जवाब.) प्रमाणभूत-क्या-नही होसकता? लेखककों-यहभी-तलाश करना चाहिये जैनशास्त्रोंमे परिग्रह किसको कहा है? तत्वार्थ सूत्रमे-ममत्वभावकों-परिग्रह-कहा. निर्ग्रंथमार्ग-वगेर-इश्तिहार कियेभी-अगर-दिल-पाक और साफ होजाय -तो-उसकों केवलज्ञान-और-मुक्ति मिलसकती है,-मुक्ति होनेका सबब भावना है,-अगर दिल-साफ-होगया-तो-दुनियाकी चीजे-मुक्ति-होनेमे रुकावट नही करसकती,-अगर-दुनयवी-चीजोंकों परिग्रह-कहते हो-तो -शरीरभी आत्माकेलिये-एक तरहका परिग्रह है,-आहार-खाना-शरीरकी हिफाजतका सबब है.-फिर आहर-क्यौ-खाना? अगर कहा जाय धर्मसाधन करनेकेलिये-खानपानकी जरूरत है,-तो-जैनमुनिकों -धर्मसाधनकेलिये-वस्त्र, पात्र, कंबल वगेराकीभी-जरूरत है, अगर वस्त्रपात्र और कंबलकों परिग्रह-कहाजाय-तो-पींछी-कमंडलकोंभी -परिग्रह क्यौ-नही, कहना?-जब-दिगंबरमुनि-एक-जगहसें दुसरी

जगह जानेकेलिये निहार करेगें-तो-पींछी-कमडल-उठाकर साथ लेयगें, आपके खयालसें-सायत!-पींछी-कमंडल साथ-लेनेमेभी-ममत्वभाव-पेंश होगा. अगर कहाजाय-शौचकेलिये-कमंडल और जीवरक्षाकेलिये पींछी है,-तो-श्वेतांबरमुनिकेलियेभी-वस्त्र-पात्र-देह और संयमरक्षाकेलिये और रजोहरण-जीवोंकी हिफाजतकेलिये-क्यों-नही.—

१४ वडनगरनिवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-किताब भद्रबाहु-चरित्र-समूलभाषानुवादमें पृष्ट (७९)पर-तेहरीर करते है,-वस्त्रकेलिये-प्रार्थना करनेसें दीनता आती है,-और वस्त्र प्राप्त होने पर उसमें-मोह-होजाता है,-और मोहसे संयमका नाश है.—

(जबाब.) दिगंबर जैनमुनिकों-पींछी-कमंडल-याचना करनेपर क्या! दीनता-न-आयगी? पेस्तर लिखचुका हु, शरीरभी आत्माकेलिये-एक तरहका वस्त्र है,-और आहार खाना उसकी पुख्तगीका सबब है.-फिर आपके खयालसें-तो-खानपान करनेसेंभी-मोह-पैदा होगा, और-मोहसें चारित्र बरबाद होगा, उंची उंची बाते कहदेना आसान है, मगर मुताबिक उसके बरताव करना आसान नही,-आजकल-नग्नस्वरूप दिगंबर जैनमुनि-कम-मिलते है,-इसीलिये-जैनदिगंबरमजहबके श्रावक-गोमट्टसार-वसुनंदी श्रावकाचार-वगेरा-भाषाग्रंथ-खुद-बाचते है,—

१५ वडनगरनिवासी-श्रीयुत-उदयलालजी-जैन-किताब-भद्रबाहुचरित्र-समूलभाषानुवादके पृष्ट (८३) पर-इस-मजमूनको-पेंश-करते है, जो-वस्त्रादिकका धारणकरना है,-वह-स्थविरकल्प नही, किंतु गृहस्थरूप है,—

(जबाब.) गृहस्थके-घर-मुनि-खडेखडे आहार करे-यह-कौनसा कल्प है,? पेस्तर जितना ज्ञान नही, उतनी ताकात नही, उतनी लब्धि नही, फिर-जिनकल्पमार्गपर चलना आजकल-कैसे बनसकेगा द्रव्यक्षेत्रकालभाव देखना चाहिये-नग्नस्वरूप इख्तियारकरकेभी

पींछी-कमडल-तो-रखनाही पडा,-दिगंबर मजहबके पडित-बना-रसीदासजीरचित-समयसारनाटक-ग्रथ-देखिये ! उसमे स्थविरकल्प और जिनकल्प-दोनों-मार्ग बतलाये है,—

[दोहा]

नानाविध सकटदशा-सही साधे शिवपथ,
स्थविरकल्प जिनकल्पधर-दोउ-सम-निर्ग्रंथ, ६६३
जो-मुनि-सगतिमे रहे-स्थविरकल्पी-सो-जान,
एकाकी जाकी दशा-सो-जिनकल्पी बखान, ६६४

इसमे-दिगबरमजहबके-पडित-बनारसीदासजी-स्थविरकल्प और जिनकल्प दोनोंको निर्ग्रंथ बतलाते है,-श्वेतांबर मजहबवाले कहते है,-आजकल जिनकल्पमार्ग नही रहा,-वज्रऋषभ-नाराच-सहनन-पूर्वोका ज्ञान और वैसी लब्धि मौजूद नही,-जमानेहालमे स्थविर कल्प-मार्गपर चलना चाहिये -दिगबर मजहबवाले-कहते है,-जैन-मुनिकों-जिनकल्पमार्गपर-चलनाचाहिये,—

१६ अगर कोई शख्श-व्रत-नियम-या-पचमहाव्रत-इख्तियार -न-करसके-मगर-उसकी मनोभावना-सुधर जाय-तो-केवलज्ञान पाकर मुक्ति हासिल करसके,-अगर कोई शख्श नीच-कुलमे-पैदा हुवाहो,-उसके मन.परिणाम-उमदा-न-होसके ऐसा कोई नियम नही, चुनाचे ! आत्मा-ऊच-नीच नही, देहसे नीचकुलमे पैदाहुवा है-हरेक जीवके-श्रद्धा-ज्ञान-और चारित्रमय आत्माको शुद्धभाव आनेपर मुक्ति-क्यों-न-होसके ? शुद्धभावना कहो, चाहे दिली इरादा साफ कहो, बात एकही है,-अगर कोई-शख्श-पचमहाव्रत इख्तियार-न-करसके-या-पचमहाव्रत इख्तियारकरके बरताव-न-करसके-तोभी-जिसका-कामील एतकात हो-और-अनित्य-अशरण -वगेरा-भावनामे मशगूलरहे-उसकी मुक्ति होसकती है, जिसका दिल पाक और साफ है-तो-सब-साफ है,-धर्मशास्त्रोंमे सुनते हो-

भरतचक्रवर्त्तीकों-अनित्य-अशरण भावनासे-आरिसा भुवनमें केवलज्ञान पेदा होगया,-सोलहशिंगार-पहनेहुवे-और-राजसिंहासनपर बेठे कई महाशय-अनित्य-भावनासे-केवलज्ञान पाकर मुक्ति-हासिल करसके है,-गहने-कपडे-मुक्तिको रोकनेवाले नही, मुक्तिकों रोकनेवाला नापाक दिल है,-रागद्वेष-क्रोधवगेरा दोषोंसें जिसका-दिल-पाक-और माफ होगया उसकी-मुक्ति-कोई नही रोक सकता, तीर्थंकर-ऋषभदेवमहाराजकी-माता-मरुदेवीजी-हाथीके होदेपर बेठेहुवे -शुद्धभावनासे-केवलज्ञान और मुक्ति हासिल करसकी है,-श्वेतांबर मजहबके-शास्त्रफरमानकों-देखो-तो-सबबात-दिलीइरादेपर दारमदार है,-दिगंबर मजहबके-शास्त्र फरमाते है,-बाह्य-परिग्रह छोडकर पचमहाव्रत विना इख्तियार किये मुक्ति नही,-श्वेतांबर मजहबके धर्मशास्त्र फरमाते है, औरत-अगर-दुनयवी-कारोबार छोडकर दीक्षा इख्तियार करे-तो-उसको पचमहाव्रत उदय-आसके, औरतको पचमहाव्रत-उदय-न-आसकते हो,-चतुर्विध-संघमें-साध्वीपद-क्यों-कहा? औरत-अगर-श्रद्धा-ज्ञान और चारित्रमें-पावद रहे-फिरभी उसकी-मुक्ति नही इसका क्या सबब? औरतको पचमहाव्रत पुरीतोरसें-उदय-नही-आवे-उसका क्या! सबुत है,-क्या-औरत -व्रतनियम-नही पालसकती? जैनशास्त्रोंमें-सोलह-सतीयोंका बयान जाहीर है,—

१७ श्वेतांबर मजहबमे-तपगछ, खरतरगछ, अचलगछ, लोंकागछ, स्थानकवासी-और-तेरहपथ वगेरा भेद है,-वैसे दिगंबर मजहबमे-काष्टासघ, मूलसघ, माथुरसघ, गोप्यसघ, वीशपथ, तेरहपथ, वगेरा भेद है, दिगंबर मजहबमे-जब-कभी-रथयात्राका जलसा किया जाय-रथमे सोना-चांदीके सिंहासनपर-जिनप्रतिमाकों बेठाते है,-खयाल करनेकी जगह है,-दीक्षा-इख्तियारकिये बाद तीर्थंकरदेव -पावपैदल सफर करतेथे, रथमें कभी सवार नही हुवेथे.-अगर कहा-जाय-अपनी भक्ति है-तो-श्वेतांबर लोग-जो अपने मजहबकी

जिनप्रतिमापर-सोने-चादी जवाहिरात वगेराके गेहने पहनाते है,-यहभी-उनकी-भक्ति क्यो-न-शुमार किई जाय? दिगंबर मजहबमे-केवलज्ञानीको-केवलआहार करना मंजुर नही, मगर-तत्वार्थसूत्रमे-बयान है-ग्यारह-परिहस-जिनेंद्रोको बाकी रहते है,-क्षुधा, तृषा,-शीत,-उष्ण,-डसमशक, चर्या, शय्या, वध, रोग, तृणस्पर्श,-और-मल,-ये-ग्यारह परिसह तेरहमे गुणस्थानपरभी रहते है, इससे साबीत हुवा, केवलज्ञानीकोभी वेदनीयकर्म बाकी रहनेसे-क्षुधा,-तृषाभी होना चाहिये, केवलज्ञानीको केवलज्ञान हुवे बादभी-(११) परिसह बाकी रहते है उसमे रोग-और-वध-परिसहभी मौजूद है-तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मौजूदगीमे-गोशाला-मखपुत्रने-जब-उनपर-तेजोलेश्या छोडी थी, उससे जब-तीर्थंकर महावीरस्वामीको आतीश-बीमारी-पैदा हुई थी-उस हालतमे-चंदरोजतक-कूष्मांडपाक-(यानी) पेंठापाक इस्तिमाल किया था, इसमे कौनसी खिलाफधर्म-शास्त्रके बात थी?-श्वेतांबर धर्मशास्त्रके मुताबिक केवलज्ञानीकोभी-क्षुधा-तृषा-रोग-वध-वगेरा परिसह होना-कोई गेरमुमकीन नही, जबतक शरीर है,-खान-पान-बीमारी वगेरा होतीही है,-इसमे कोई ताज्जुब नही केवलज्ञानीकोभी जबतक मुक्ति नही हुई-वेदनीयकर्म-बाकी है,-बाइस परिसहोंके-नाम-दोनों-मजहबमे एक सरिखे है, बाइसमेसें ग्यारह बाद किये जाय-और-बाकी रहे,-वही केवल ज्ञानीकों होना कहसकते हो, उसमे रदबदल-किसीतरह होसकता नही, अगर कोई इस सवालकों पेंश करे जहा-खानपान होगा. तो-नींदभी-जरूर आती होगी, (जबाब) दर्शनावरणीय-कर्मके उदयसें-नींदका-आना जैनशास्त्रोमे-मंजुर रखा, और-केवलज्ञानीकों दर्शनावरणीय-कर्म-मौजूद नही, फिर उनकों-नींद कहासें आयगी.? क्षुधा-तृषा-लगना वेदनीयकर्मके उदयसे मानागया है और वेदनीय कर्म-केवलज्ञानीकों मौजूद है फिर उनको क्षुधा तृषाका इनकार कैसे किया-जा-सके? इस बातको-सोचो!—

१८ जैनश्वेतांबर मजहबमे-जमाने तीर्थंकरोंसे लगाकर,-आजतक स्थविरकल्पी-जैनमुनि,-गणधर, आचार्य, उपाध्याय वगेरा होते चले आये, स्थविरकल्पी-मुनिको-वस्त्र-पात्र-कंबल-रजोहरण-मुखवस्त्रिका वगेरा चौदह उपकरण-वास्ते धर्मकी हिफाजतके रखना फरमाया, आजतकभी-उसीतरह-श्वेतांबर जैनमुनि-बरताव करते है,-खुद-तीर्थंकर महाराज-जब-हयात थे,-देवदुष्य वस्त्र-इख्तियार करते थे, -जैसे-स्थविरकल्पी-मुनि-जमाने तीर्थंकरोंके चले आये. जिनकल्पी -मुनिभी-उसीतरह होते आये.-और-वे-अकेले विहार करते थे.- नग्नस्वरूप होतेहुवेभी-ब-जरीये-लब्धिके-दूसरोंको नग्नस्वरूप नही दिखाई देते थे, दशपूर्वतक ज्ञानवान्-और-जंगलम-पहाडोंकी-गुफा-ओंमे-और-दरख्तोंके नीचे जहां मुनासिब हो-खडे होकर ध्यान करते थे -ऐसे-लब्धिधारक और ज्ञानवान्-जिनकल्पी-मुनि-तीर्थंकर महावीर स्वामीके पीछे-जंबूस्वामीके निर्वाण हुवेबाद रहे नही,-इसी-लिये श्वेतांबरमजहबवाले बयान करते है, जिनकल्पी-मुनि होनेका जमाना नही रहा,--

१९ श्वेतांबर मजहबमे-जैसे-श्रीपूज्यजी-और-यतिजी होते है, -दिगंबर मजहबमे-भट्टारकजी-और क्षुल्लकजी होते है,-श्वेतांबर लोग-वीशस्थानककी पूजा-सतराहभेदी, चौसठप्रकारी, नवाणुप्रका-रकी-और-अष्टप्रकारी-वगेरा तरहतरहकी पूजा मानते है,-दिगंबर मजहबमे-एक-अष्टप्रकारीही-पूजा-मानीगई है, परमेष्ठी-महामंत्रके -दिगंबर मजहबवाले पांच-पद कहते है,-श्वेतांबर मजहबवाले-नव कहते है,-इसतरह-कई-बातोंमे तफावत है,-जिनको-धर्मचर्चाका-शोख है,-तलाश करे,--

[बयान-प्राचीन श्वेतांबर खतम हुवा]

[खरतर-गच्छ-मीमांसा]

१ इसमे खरतरगच्छके उसूलोंका बयान मुताबिक फरमान जैन-

शास्त्रके दियागया है,-वो-काबिले गौर है,-आजकल तीर्थंकर गणधर मौजूद नही, पूर्वधारी-मुनिभी-नही रहे, सिर्फ! धर्मशास्त्र हयात है, -व-जरीये उन्हीके हरबातके नतीजेपर खयाल कियाजाता है,-जमाने हालमे-कई-गछ, समुदाय, और फिरके श्वेतांबर मजहबमें जारी है,-उपकेशगछ जिसको-कवलगछ-बोलते है, तपगछ, खरतरगछ अचलगछ, पायचदगछ, विजयगछ, सागरगछ,-और-लोकागछ वगेरा, खरतरगछवाले कहते है, संवत् (१०८०) मे दुर्लभराजाकी सभामे-श्रीजिनेश्वरसूरिजीको-खरतर-बिरुद मिला, मगर उससंवत्मे दुर्लभराजाका होना-साबीत-नही होता, प्रबंधचितामणि, गुर्जरदेशभूपावली, और फारवस साहबकी बनाइहुई रासमाला वगेरा इतिहासिक किताबोमे बयान है, संवत् (१०६६)मे दुर्लभराजा-राजगदीपर-तख्तनशीन हुवा, ग्यारहवर्ष-छह-महिने-अमलदारी किई, और संवत् (१०७७)मे उसका इतकाल हुवा, संवत् (१०८०)की-सालमे-दुर्लभराजा मौजूद नहीथा,-फिर-श्रीजिनेश्वरसूरिजीको-खरतरबिरुद किससे मिला, इसका कोई सबुत पेश करे,—

२ अचलगछकी पटावलीमे-एक तरहका सबुत इसबातपर मिलता है, संवत् (१२०४)मे-श्रीयुत-जिनवल्लभ-सूरिजीने-चितोडगढमे-छह-कल्याणककी प्ररूपणा करके खरतरगछ इजाद किया, खरतरगछवाले तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाच-कल्याणककी जगह-छह-कल्याणक मानते है,-जैन श्वेतांबर फिरकेवाले दुसरे सब-पाच कल्याणक मानते है,-पाचकल्याणक मंजुर रखना-मुताबिक फरमान जैन-शास्त्रके-सच-और-छह-कल्याणक मंजुर रखना गलत है,-जबसे-चितोडगढ-मुकामपर-श्रीयुत-जिनवल्लभ-सूरिजीने-छह-कल्याणक बयान किये-उसके पेस्तरके बनेहुवे-जैनशास्त्रोंमे किसीजगह-छह-कल्याणका बयान नही, खरतरगछवाले तेहरीर करते है, कल्पसूत्रके मूलपाठमे तीर्थंकर महावीर स्वामीके-छह-कल्याणक लिखे है,-मगर मजकुर बात करार नही पाई जाती,—

[देखिये! कल्पसूत्रका-पाठ-यहां देता हुं -]

तेण कालेण-तेण समयेणं-समणे भयवं महावीरे-पंच हथ्थुत्तरे होथ्था, तंजहा, हथ्थुत्तराहिंचुएचइत्ता-गभ्भ वक्ते, हथ्थुत्तराहिं गभ्भाओ गभ्भ साहरिए, हथ्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, हथ्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुन्ने निव्वाघाए, निरावरणे अणंते-केवलवरनाणदंसणे-समुप्पन्ने, साइणा परिणिव्वुए भयवं,—

खयाल किजिये! इसकल्पसूत्रके पाठमें छठा कल्याणक-कहालिखा है,-? अगर लिखा है,-तो-पाठमें कल्याणक शब्द बतलाइये! अगर इसीपाठसे खरतरगछवाले-छह-कल्याणक मंजुर रखते है-तो-खरतरगछ निकलनेके पेस्तरकी कोई-कल्पसूत्रकी-टीकाका-सबुत पेंश करे, संवत् (१२०४)में-श्रीजिनवल्लभसूरिजीसें खरतरगछ इजाद हुवा, उसके पेस्तरकी पुरानी टीका-कल्पसूत्रकी हो, और-उसमें तीर्थंकर महावीर स्वामीके-छह-कल्याणक लिखेहुवे निकल आवे, निहायत उमदा बात हो, और-श्रीजिनवल्लभसूरिजीका फरमाना करार पायाजाय,-बगेर सबुतके कोई कैसे मंजुर करेंगें?—

३ अगर कोई खरतरगछवाले बयान करे-श्रीअभयदेवसूरिजी खरतरगछमें हुवे,-तो-इसमेंभी कोई सबुत होना चाहिये,-उन्होंने -जो-स्थानांग-समवायांग वगेरा नव-अंगशास्त्रकी टीका बनाई, उसमें स्थानांगसूत्रकी अखीरमें अपने गुरुका नाम वगेरा बतलाया है,-वहां-खरतरगछका नामभी नही लिखा,-अगर-वे-खरतरगछमें हुवे होते-तो-खरतरगछ नाम जरूर लिखते,—

[स्थानांगसूत्रवृत्तिकी अखीरका पाठ]

श्रीवुद्धिसागराचार्यस्य चरणकमलचंचरीककल्पेन-श्रीमदभयदेवसूरिनाम्ना-मया-महावीरजिनसंतानवर्त्तिना-महाराजवंशजन्मेन-संविग्नमुनिवर्गप्रवरश्रीमज्जिनचंद्राचार्यांतेवासिना-यशोदेवगणिनामधेयसाधोरुत्तरसाधकस्येव-विद्याक्रियाप्रधानस्य साहाय्येन समर्थित,—

देखो! इस पाठमें श्रीवुद्धिसागर-आचार्यके शिष्य-श्रीअभयदेव-

सूरिजीने मजकुर स्थानागसूत्रकी टीका बनाई लिखा, मगर-खरतरगछका नाम नही लिखा, समवायागसूत्रकी टीकामेंभी यही फरमाया है -श्रीबुद्धिसागरसूरिजीके शिष्य श्रीअभयदेवसूरिजीने समवायाग सूत्रकी टीका बनाइ, भगवतीसूत्रकी टीकामभी-जहा अखीरका बयान दिया है,-वहाभी-खरतरगछका नाम नही लिखा.—

[भगवतीसूत्रवृत्तिका पाठ]

एकस्तयोः सूरिवरो जिनेश्वर
ख्यातस्तथान्यो मुनि बुद्धिसागरः
तयोर्विनेयेन विबुद्धिनाप्यल,—
वृत्ति. कृतेपाभयदेवसूरिणा,-५

देखलो! इसमे श्रीबुद्धिसागरसूरिजीके शिष्य-श्रीअभयदेवसूरिजीने -इस टीकाको-बनाई लिखा मगर खरतरगछका नाम नही लिखा. -आगे इस टीकाको-अनिवृत्ताख्य-कुलके श्रीद्रोणाचार्य-महाराजने शोधन किई-ऐसाभी बयान है,-अखीरम-सवत् बतलानेके बारेमे लिखा है,—

अष्टाविंशतियुक्ते-वर्पसहस्रशतेन चाभ्यधिके,
अणहिल्लपाटकनगरे-कृतेयमच्छुसधानवसतौ, १५

इसका-माइना यह हुवा,-सवत् (११२८)की-सालमे-जब अणहिलपुर-पाटनम ठहरना हुवा था. मजकुर भगवतीसूत्रकी-टीका-पूर्ण-किइगई थी, खयाल करनेकी जगह है,-इसमभी-श्रीअभयदेव सूरिजीने-खरतरगछका-नाम-निशान नही बतलाया, फिर-किस सबुतसे उनको खरतरगछमे हुवे शुमार करना, इसका कोई-पुराना पेश करे,—

४ अगर कहाजाय-खरतरगछकी पटावलीके ग्रथानुसार-श्रीमान् -अभयदेवसूरिजीको-खरतरगछमे हुवे-शुमार करना चाहिये. जवाबमे-मालुम हो.-खरतरगछकी-चार-पाच-पटावली-जो-जैनसिद्धातसमाचारी किताबमे छपी है, देखी गई-तो-उनमे-एक-एकसें

तफावत आता है.-एक पटावलीमे-श्रीमद्-अभयदेवसूरिजीकों छत्तीसमे-पट्टपर-लिखे, एकमे-पेंतालीशमे पट्टपर, किसीमे तयालीशमे तो-किसीमे-छयालीश-और किसीमे-इकतालीशमे पट्टपर लिखे. खयाल करो! कोंनसी-पट्टावली-सच्च-मानना. और श्रीमान् अभयदेवसूरिजीकों कोंनसे पट्टपर हुवे शुमार करना, इसका कोई खुलासा करे, दुसरी दलिल यहभी-है.-अगर श्रीअभयदेवसूरिजी खरतरगछमें हुवे-होते-तो-तीर्थंकर महावीरस्वामीके-छह-कल्याणक फरमाते, मगर उन्होंने-जो-पचाशकसूत्रकी टीका बनाई-उसमे तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाच कल्याणक बयान फरमाये, और उन-पाच-कल्याणकोंकी तिथियेंभी बतलाई है, पचाशकसूत्र-बनानेवाले आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरिजी हुवे.-जो-पूर्वधारीयोंके जमानेमे हयात थे. उन्होंने -पंचाशकसूत्रके मूलपाठमे-तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाच-कल्याणक बयान किये,-और-उनकी पाचही-तिथी-फरमाई,—

[श्रीहरिभद्रसूरिरचित-पचाशकसूत्रका मूलपाठ]

आसाढसुद्ध छठी, चित्तेतहसुद्धतेरसीचेव,
मगसिर कन्हदसमी, वइसाहे सुद्धदसमीय,
कत्तियकन्हे चरिमा, गम्भाइदिणा जहाकम एते,
हत्थुत्तरा जोएण, चउरो तह साइणा चरमो,—

[श्रीअभयदेवसूरिरचित-टीकाका-]

(पाठ –)

आषाढमासे शुक्लपक्षस्य षष्ठीतिथिरेक दिन, चैत्रमासे तथेति समुच्चये शुद्धत्रयोदश्येवेति द्वितीय, तथा मार्गशीर्षकृष्णदशमीति तृतीय, -वैशाखशुद्धदशमीति चतुर्थं,-चशब्द' समुच्चयार्थ -कार्तिककृष्णे चरिमा पचदशीति पचम, एतानीत्याह, गर्भादिदिनानि, गर्भ, १ जन्म, २-निष्क्रमण, ३-ज्ञान, ४ निर्वाणदिवसा यथाक्रम, ५

(अर्थ.) तीर्थंकर महावीरस्वामी आषाढसुदी छठके रोज माताके गर्भमे पैदा हुवे. चैतसुदी त्रयोदशीके रोज उनका जन्म हुआ, मृग-

शीर्षवदी दशमीके रोज उन्होंने दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किई, वैशाखसुदी दशमीके रोज उनकों केवलज्ञान हुवा, और कातिक वदी अमावास्याके रोज मुक्ति पाये देखिये! इस पाठमें आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजीने पचाशकसूत्रके मूलपाठमें ओर-आचार्यश्रीअभयदेव सूरिजीने टीकामे तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाचही कल्याणक बयान फरमाये,-अगर-ये-दोनो जैनाचार्य छह-कल्याणक माननेवाले-होते -तो-पाचकल्याणक-क्यों-फरमाते,-अगर कोई खरतरगछवाले इस पर ऐसा कहे-मजकुरबात-चोइस तीर्थंकरोंकी अपेक्षा-सामान्यतौरसे फरमाई है,-तो-जवाबमें-तलब-करे-इस उपर लिखे पाठमें सामान्य -या-विशेषतौरसे यह बात कही गई,-ऐसा पाठ कहा है,? बगेर सबुतके कोई कैसे मजुर करेगें,?

५ खरतरगछके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी-अपनी बनाईहुई-किताब प्रश्नोत्तरमजरीके पृष्ट (९)पर इस दलिलकों पेश करते है - हरिभद्रसूरिजीने पचाशकसूत्रके मूलपाठमें-और-अभयदेवसूरिजीने-पचाशकसूत्रकी टीकामें-पाच-भरत-पाच ऐरावर्त्तके-अवसर्प्पिणी-तथा-उत्सर्प्पिणी-काल सबधी-बीसचौविशीके-चारसोअसी-तीर्थंकर महाराजोंके पाच-पाच-कल्याणक बतानेकी अपेक्षासे-श्रीवीर-प्रभुके पाच-कल्याणक बतलाये है,—

(जवाब.) पचाशकसूत्रका पाठ और टीकाका पाठभी-मैने उपर लिखदिया है,-उसमे पाच भरत और पाच-ऐरावर्तके चारसो-असी -तीर्थंकरोंके पाच-पाचकल्याणककी अपेक्षा-महावीरस्वामीके पाच कल्याण बतलाये, ऐसा पाठ कहा है.? सबुत पेश करना चाहिये विना सबुत इस बातको कौन मजुर करेगा पाच भरत और पाच ऐरावर्त्तक्षेत्रके तीर्थंकरोका-यहा-सबधही-क्या था? अगर तीर्थंकर महावीरस्वामीके-छह-कल्याण होते-तो-छह-कल्याणकोकी तिथि -अलग-अलग-क्यो-न-बतलाते?—

६ आगे खरतरगछके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी अपनी बनाईहुई

किताब प्रश्नोत्तरमजरीके पृष्ट (१५)पर-तेहरीर करते है,-आपलोग-देवानदाकी कुखीसें-त्रिशलारानीकी-कुक्षीमे-आनेरूप-वीरगर्भापहारकों-अकल्याणरूप ठहराते हो, एक तरहका दुराग्रह है —

(जबाब.) आप-तीर्थंकर महावीरके गर्भापहारकों-कल्याणक-साबीत किजिये, कल्पसूत्रके मूलपाठमे-गर्भापहारकों-कल्याणक नही कहा. तपगछ-और-खरतरगछ-जारी होनेके पेस्तर जितने जैनाचार्य हुवे-उनमेंसें किसीनेभी-कल्पसूत्रकी पुरानी टीकामे गर्भापहारकों-छठा-कल्याणक बतलाया नही,-हरिभद्रसूरि तथा अभयदेवसूरिजीने-पचाशकसूत्रमे-और-उसकी वृत्तिमे पाचकल्याणक-बयान किये,-यातो-आप-छठे-कल्याणकका कोई सबुत दिजिये-या-पाचकल्याण-मंजूर किजिये,-दोनो-बातोमेसे-अगर-आप-एकभी बात मजूर नही किजियेगा-तो-दुराग्रह किसका ठहरेगा-इसपर-गौर-फरमाइये.—

७ मेने-तारिख (२७) जुलाई,-सन १९१३ के-जैनअखबारमे लिखा था, खरतरगछवाले-श्रीजिनदत्तसूरिजीका-और-श्रीजिनकुशलसूरिजीका-कायोत्सर्ग-प्रतिक्रमणमे करते है,-मगर-जो-जैनश्वेताबरमजहबमे इनसे बडे-गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी, स्थूलभद्रस्वामी, वज्रस्वामी, सिद्धसेन दिवाकर, देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण-और हरिभद्रसूरि वगेरा कई-आलिम-फाजिल जैनाचार्य हुवे, उनका कायोत्सर्ग-क्यों नही करते? क्या! खरतरगछवालोंको अपने गछके आचार्योंका-पक्ष-है.-अगर कहाजाय,-श्रीजिनदत्तसूरिजीने-कई-शख्शोंकों तालीमधर्मकी देकर जैन-बनाये है,-तो-जवाबमे मालुम हो, क्या! जैनाचार्य-रत्नप्रभसूरिजीने तालीम धर्मकी देकर दुसरोंको जैन नही बनाये? बदौलत जिनके-ओशवाल कहलाये, और जैनमजहबकों तरक्की दिई, उनका कायोत्सर्ग-खरतरगछवाले क्यों नही करते,? दुसरे गछके आचार्योंनेभी-कई-शख्शोंकों-जैन बनाये है, अपने गछके आचार्य श्रीजिनदत्तसूरि और श्रीजिनकुशलसूरिका कायोसर्ग

करना, और-गणधर गौतमस्वामी-सुधर्मास्वामी-जो-बडे आलिम हुवे, उनका नही करना-यह-सरासर-पक्षपात नही-तो-और क्या है? स्थूलभद्रस्वामी, वज्रस्वामी, सिद्धसेन दिवाकर, देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण, और हरिभद्रसूरिजी वगेरा जैनाचार्य-जैनमजहबपर तरकी पहुचानेवाले हुवे, उनकाभी कायोत्सर्ग खरतरगछवाले नही करते इसका क्या! सबब? अपने गछके श्रावकोंके सामने-चाहे-सो-कोई कहे, मगर इन्साफसे-जवाब देना अकलमदोंका काम है, अगर कोई -खरतरगछवाले इस दलिलको पेश करे, जिनसें धर्मका फायदा पहुचाहो-उनका कायोत्सर्ग करना क्या! हर्ज है? (जवाव) धर्मका फायदा-क्या! गौतमगणधर-सुधर्मगणधर वगेरोंने नही पहुचाया? श्रीजिनदत्तसूरिजीके पेस्तर जैनसघ-प्रतिक्रमणमे किसका कायोत्सर्ग करता था? और खास' श्रीजिनदत्तसूरिजी-जब प्रतिक्रमण करते थे,-किसका कायोत्सर्ग करते थे? अगर कहाजाय, विशस्थानकपदमे आचार्यपदकी इबादत करना लिखा है, (जवाव) इबादत चाहे जिसवख्त करो, मगर-प्रतिक्रमणमे खास-छह-आवश्यककी बात है, उसमे अपने गछके आचार्योंकी इबादत दाखिल करना-किस जैनशास्त्रका फरमान है?—

८ खरतरगछके श्रीयुत बुद्धिसागरमुनिजी-अपनी बनाईहुई किताबके तिसरे पेजपर तेहरीर करते है -उपकेशगछवाले श्रीमान्-रत्नप्रभसूरिजीका-और-तपगछवाले अपने आचार्योंका-इसीतरह अन्य गछवाले अपने आचार्योंका प्रतिक्रमणमे कायोत्सर्ग करे-तो-इसमे खरतरगछवालोंको इर्षा भाव नही,—

(जवाव) तीर्थंकर-गणधरोंसें-कोई-जैनमजहबमे बडा नही, जितना फायदा उन्होने-जैनमजहबपर पहुचाया, उतना-कौन पहुचा सकेगा फिर खरतरगछवालोंकी देखादेखी-दुसरे गछवाले ऐसा क्यों करे? दुसरोंकी देखादेखी बरताव करना इसका नाम-जैनमजहबमे चरितानुवाद है, और चरितानुवाद-सर्वव्यापी नही.-जैनशास्त्रोमे

निर्विवाद सर्वव्यापी कहा -और-उसी मुआफिक बरताव करना सब जैनोका फर्ज है.-प्रतिक्रमणमे-किसी-आचार्यके नामसे कायोत्सर्ग करना हुकम नही.—

९ खरतरगच्छके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी अपनी बनाईहुई किताबके चतुर्थ पृष्टपर लिखते है. इद्रमहाराजकी आज्ञासे हरिणैगमेषी -देवने-श्रीवीरप्रभुकों-देवानदा ब्राह्मणीकी कुक्षीसे-गर्भापहारकेद्वारा त्रिशलारानीकी कुक्षीमे स्थापन किये उसकों अकल्याणकरूप कहना. मिथ्याप्रलाप है,—

(जबाब.) कल्पसूत्रके-मूलपाठमे गर्भापहारको कल्याणक नही लिखा, खरतरगछ इजाद होनेके पेस्तरकी-कल्पसूत्रकी कोई पुरानी टीका-जिसमे गर्भापहारको छठा कल्याणक फरमाया हो.-ऐसा-पाठ बतला सकते नही,-जैनाचार्य हरिभद्रसूरि-खरतरगछके इजाद होनेके पेस्तर हुवे-वेभी-पाचकल्याणक तीर्थंकर महावीरस्वामीके फरमाते है श्रीमान् अभयदेवसूरिजी-पचाशकसूत्रवृत्तिमे पाच कल्याणक बयान करते है,-इतने सबुत होते हुवेभी-गर्भापहारकों छठा कल्याणक कहना, और सबुत पेश करना नही बतलाइये! अब-मिथ्याप्रलाप किसका-समजना? तीर्थंकर महावीरस्वामी-जब-देवलोककी गतिकों खतम करके देवानदाकी कुक्षीमे पैदा हुवे,-शास्त्रकारोंने उस बातकों कल्याण कहा, लेकिन! गर्भापहारको कल्याणक नही कहा,-इसीलिये गर्भापहारकों कल्याणक मजुर रखना बेजा है,-तपगछवाले और दुसरे गछवालेभी इसीपर पावद है,-गर्भमे पैदा होना -जन्मपाना, दीक्षा इख्तियार करना, केवलज्ञान पाना, और-मुक्ति-हासिल करना, इन्ही पाच बातोंको-जैनमजहबमे-कल्याणक कहे,-गर्भापहारकों कल्याणक कहनेकेलिये-अगर खरतरगछके श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी-कोई-सबुत रखते हो-तो-पेश करे,—

१० अगर कहाजाय-श्रीमान्-अभयदेवसूरि-मुताफिक फरमान खरतरगछकी पटावलीके-खरतरगछमे हुवे है-तो-जबाबमे मालुम

हो.-पटावली-पिछेसें बनी है-और-एकमे-एक मिलती नही-खरतरगछके श्रीसुखहर्षगणिजीकी लिखीहुई पटावलीमें-(३४)मे पट्टपर श्रीजिनेश्वरसूरि लिखे, (३५) पट्टपर श्रीजिनचद्रसूरि, और(३६) मे पट्टपर श्रीअभयदेवसूरि लिखे, दुसरी पटावली-जो-सवत् (१६२९)की-सालके रचेहुवे ग्रथमे लिखी है, उसमे (४३)मे-पट्टपर जिनेश्वरसूरि (४४)मे-पट्टपर श्रीजिनचद्रसूरि, और (४५)मे-पट्टपर श्रीअभयदेवसूरि लिखे. एक पटावलीमें-(४१)मे-पट्टपर श्रीजिनेश्वर सूरि, (४२)मे-पट्टपर श्रीजिनचद्रसूरि, और-(४३)मे-पट्टपर श्रीअभ यदेवसूरि लिखे, एक पटावलीमे (४४)मे पट्टपर श्रीजिनेश्वरसूरि, (४५)पर-श्रीजिनचद्रसूरि और (४६) पट्टपर श्रीअभयदेवसूरि लिखे. और एक पटावलीमे (३९)पर-श्रीजिनेश्वरसूरि (४०)पर-श्रीजिनचद्र-सूरि, (४१)पर-श्रीअभयदेवसूरि, (४२)पर-श्रीजिनवल्लभसूरि, और (४३)पर-श्रीजिनदत्तसूरि लिखे है,-अब-कौनसी पट्टावली-गिनतीम शुमार करना,-और कौनसी गलत समजना. खरतरगछके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी-अपनि बनाईहुइ किताब प्रश्नोत्तरमजरीके पेज (४९) पर लिखते है भगवतीसूत्रकी टीकाके-प्रशस्तिके श्लोकोंमे-श्रीअभयदेवसूरिजीने अपने दादागुरु-श्रीवर्द्धमानसूरिजीकों चाद्र-कुलमे हुवे ठीक लिखा है,-(जवाब) चाद्रकुल-लिखनेसें-क्या हुवा? खरतरगछका नाम लिखा हो-तो-दिखलाइये!—

११ मेने-जो-जैन अखबारमे लिखा था,-दादाजीके सामने-थोडासा-प्रसाद चढाकर बाकीका श्रावकोंमे बाट देते है-और-कहते है, लिजिये! यह-गुरुदेवका प्रसाद, इसीतरह नारियलकों तोडकर-थोडासा दादाजीके चरनोंके सामने चढा देते है और बाकीका बाट देते है जैनशास्त्रोंमे देवद्रव्य खाना मना फरमाया, इसीतरह गुरुद्रव्य खानाभी मना कहा-अगर मोक्षके-इरादेसे कोई चीज दादाजीके चरनोंके सामने चढाना हो,-तो-लाईहुइ चीज पुरेपुरी चढा देना चाहिये, बाबत नारियल-या-मिठाई-जितनी लाये हो, सब पुरेपुरी

चढा देना, उसमेसे-आप-खाना नहेत्तर नही, दादाजीके चरनोकी छत्रीके पूजारी,-या-नोकर-चाकरको देदेना. इसपर खरतरगछके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी अपनी बनाई हुई-किताब-प्रश्नोत्तरमंजरीके पेज (७०)पर-लिखते है,-दादाजीको-केवलगुरुपनेकी भावनासें और संपूर्ण-प्रसाद चढादेनेकी भावनासे प्रसाद माननेमे नही आता.—

(जवाब) फिर किस भावनासे माननेमे आता है,-जवाब दिजिये. अगर सपूर्ण-प्रसाद चढादेनेकी भावनासे प्रसाद नही मानते हो, तो-फिर योडासा चढाकर बाकीका-श्रावकोंमे बाटते वख्त-लिजिये! गुरुदेवका प्रसाद ऐसा-क्यों-कहना? दलिल ऐसी देना चाहिये-जो-टुट-न-सके,-खरतरगछके श्रीयुत बुद्धिसागरमुनिजी-उपरके लेखमें-बयान करते है,-दादाजीका प्रसाद केवल गुरुपनेकी भावनासे नही मानाजाता.-इन्साफ पुछता है, फिर क्या! अपने ससारी मतलबकेलिये माना जाता है?-या-देवलोककी गति पाई इसलिये? दरअसल! ससारीक-मतलबकेलिये-और-देवलोककी गतिकेलिये-उनकों गुरु मानना जैनशास्त्रका हुकम नही—देवताको चतुर्थगुणस्थानसे आगे गुणस्थान नही. श्रावकको पाचमा गुणस्थान और साधुमहाराजकों-जमाने हालमे-छठा-सातमा गुणस्थानतक होना फरमाया, देवता-अविरति है, और श्रावक-साधु-व्रतनियम इख्तियार करनेकी ताकातवाले है,-इद्रभी-व्रतधारी-श्रावक-साधुको नमस्कार करके सभामे सिहासनपर जायेनशीन होते है, इसलिये दादाजीको अपने ससारीक मतलबकेलिये-या-देवभवके-सबब-मानना जैनशास्त्रका फरमान नही, असलमे! मनुष्यभवमे चारित्र पाला था, इसलिये-जब जब-दादाजीके चरनोके सामने जाना-तो-इच्छामि-क्षमाश्रमण-बोलकर नमस्कार करना. और दिलमे भावना लाना इन्होने पूर्वभवमे चारित्र पाला था-इसलिये गुरुभावसे मानता हु.—

१२ खरतरगछके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी-अपनी बनाईहुई

किताव प्रश्नोत्तरमजरीके (७०)मे-पेजपर वयान करते है, दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी-तथा-श्रीजिनकुशलसूरिजीआदि-महाराज देव-भवको प्राप्त हुवे है और भक्तलोगोके मनोवाछित पूर्ण करते है. इसलिये-वह-दादा गुरुदेव कहलाते है,—

(जवाव.) गुरुपद जैनमजहबमे-पचमहाव्रत पालनेके सबब-कहा-जाता है-देवलोककी गति हासिल करनेके सवब नही. जैनशास्त्रोंम -पूर्वकृतकर्मके उदयानुमार फल पाना फरमाया, चाहे कोई देवता हो, या-मनुष्य! किसीके पूर्वकृतकर्मके उदयको-कोई-रद-बदल-नही करसकता और किसीका मनोवाछित-शिवाय-पूर्वकृतकर्मके दुसरा पूर्ण नही करसकता तीर्थंकर ऋषभदेव महाराजको-एक वर्मतक-आहारका अतराय रहा, तीर्थंकर महावीरस्वामीको वारा वर्ष तक परिसहोकी तकलीफ पेश हुई -फिर इसी-प्रश्नोत्तरमजरी किता वके इसी पृष्टपर-खरतरगछके श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी-इस मज मूनको पेश करते है,-मनोगत भावनासे उक्त-दादा-गुरुदेवकी-देव पनेके भवकी भावनास उनकी मनोवाछितपूर्णसवधी-शक्तिका भवम सर्ण करके प्रसाद चढाना और वाटना,-यह-दोनों मनकी धारणासें माननेमे आता है-(जवाव) जो-शख्श-जिस मजहवपर एतकात रखता हो,-लाजिम है,-अपने-मजहवके-फरमानपर अमल करे, शास्त्रफरमानके सामने मनकी धारणा वडी नही. जैनशास्त्र फरमाते है,-पचमहाव्रत पालन-करनेके-सवव-गुरुके चरनोंको नमस्कार करो. -ससारीक मतलबकेलिये-किसी तरहकी मन्नत-न-करो अगर गुरुके चरनोकी छत्रीपर जाकर-वतौर नैवेद्य-या-फलकी जगह-मिठाई-श्रीफल वगेरा-चढाना हो-तो-मोक्षप्राप्तिकेलिये चढाओ, चढाईहुई -चीज-गुरुद्रव्य-होगया, जैसे देवद्रव्य अपने काममे-नही लाया जाता,-गुरुद्रव्यभी-अपने काममे-मत-लाओ, और-जैनशास्त्रके हुक्मकी तामील करो जैनशास्त्रोका फरमान है, चाहे कोई देव हो -या-मनुष्य!-अपने कियेहुवे कर्मोंके मुताविक-आराम-या-तक-

लीफ पाता है.-किसीका-मनोवांछित-शिवाय पूर्वकृत कर्मके दुसरा पुरा नही करसकता.-कल्पसूत्रमे सुना होगा, जब इद्रने तीर्थंकर महावीरस्वामीकों अर्ज गुजारी थी, अगर हुक्म हो-तो तकलीफके दिनोंमे बारा वर्सतक-में-हुजुरकी खिदमतमे हाजिर रहु. जवानमे तीर्थंकर महावीरस्वामीने फरमाया था,-मेरे कियेहुवे-कर्म-मेंही-दूर करुगा, अपने कर्म-दूर करनेमे किसीकी मदद कारआमद नही होती.—

१३ पर्यूपणके दिनोंमे-कल्पसूत्र वाचतेवख्त-जब-तीर्थंकर महावीरस्वामीके जन्मका बयान बचता है,-और-उसकी खुशीमें-जो-नारियल तोडे जाते है,-वे-दादाजीके प्रसादकी तरह मन्नत नही,-बल्कि! तीर्थंकर महावीरस्वामीके जन्मोत्सवका नमुना है. दादाजीकी मन्नतके प्रसादके-शाथ-इस जलसाका क्या! ताल्लुक है?-श्रीपालजीकों-और-मयणासुदरीकों-जो-फुलमाला और बीजोरा फल मिला था,-वो-उन्होंने खाया नही था, दादाजीकी मन्नतका प्रसाद खानेवाले खाते है,-मजकुर मिशाल-इस जगह-कोई-ताल्लुक नही रखती, सौचो! किताब प्रश्नोत्तरमजरीके (७१)मे-पेजपर-खरतरगच्छके-श्रीयुत-बुद्धिसागरमुनिजी-इस दलिलकों-पेंशे-करते है,-गुरुमहाराजका-वासक्षेप-श्रावकलोग सिरपर ग्रहण करते है,-जवाबमे तलब करे,-गुरुका वासक्षेप-श्रावकलोग-सिरपर ग्रहण करे-इसमे कौनसा गुन्हा हुवा? खुद तीर्थंकरदेव-जब-गणधरोंकों दीक्षा देकर त्रिपदीका ज्ञान बख्शते है,-अपने हाथसें गणधरोंके सिरपर वासक्षेप डालते है,-दादाजीका प्रसाद खानेवाले खाते है,-वासक्षेप-खाया-नही जाता जिनेंद्रभगवान्‌की मूर्त्तिका-न्हवण-जल-श्रावक-श्राविका-अगर अपने सिरपर डांटे-तो-कोई हर्ज नही, पिना नही चाहिये. मेने-जो-तारिख (२७) जुलाई सन (१९१३)के-जैनअखबारमे लिखाथा, कई-जैनश्वेतांबर-मदिरोंमे-काले-गौरे-भैरवकी-मूर्त्ति-एकतर्फ-स्थापन कराते है. -और-भैरवकी मूर्त्तिके हाथमें-मनुष्यका मस्तक-कटा-हुवा रहता

है. शांतमुद्राधारी जिनेंद्रके-मदिरमे-ऐसी-मूर्त्ति-स्थापन करना किस जैनशास्त्रका फरमान है ? जैनमजहब-अहिंसा-परमधर्म-बयान करनेवाला ठहरा,-प्रशमरसनिमग्न-जिनमूर्त्ति-हरेक जैनमदिरमे बतौर मूलनायकके तख्तनशीन किई जाती है,-उसमे-भयजनक मूर्त्तिकी स्थापना क्यों ? इसपर अगर कोई कहे,-श्रीपालचरितमे बयान है, धवलशेठके बुरी सलाह देनेवाले-मित्रकों चक्रेश्वरीदेवीने और क्षेत्रपालने-सजा-दिई उस वख्तका देखाव क्षेत्रपालका-भयजनक-था-या-नही ? (जबाब) यह बयान जिनमदिरका नही.-जब-धवलशेठ-और श्रीपालजी मुसाफरीकों गये थे-समुदरमे मजकुर बनाव बना था, धर्ममे खलल डालनेवालोंको-शासन देना धर्मशास्त्रका फरमान है,-तीर्थंकर-चक्रवर्त्ती-वगेरा-राजे-महाराजे जब दुनियादारी हालतमे-थे,-दीक्षा-इख्तियार नही किई थी, युद्धभी किया था,-मगर जब दुनिया छोडकर तप किया, और मुक्ति पाई उस हालतकी मूर्त्तिके सामने-भयजनक मूर्त्ति-स्थापन क्यों-करना ?-इसका कोई सबुत पेश करे,-बगेर सबुतके कोई कैसे मजुर करेगा, ?—

१४ जैनाचार्य-श्रीरत्नप्रभसूरि-जो-तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाण पिछे-(७०) वर्स बाद हुवे,-उन्होंने-ओशियानगरीमे-ओशवालवंशकी-स्थापना-किई जैनश्वेतांबरसंघमे-जो-जो-आलिम जैनाचार्य होते आये उन्होने धर्मकी तरक्की किई. इसमे कोई-शक-नही. चाहे जिस-गछके साधु हो. श्रद्धा-ज्ञान-और चारित्रमें पावद रहे, सब गछवालोंको काबिल माननेके है,-अपने अपने गछकी समाचारी करना कोई हर्ज नही, इसीतरह-श्रावकभी-अपने अपने गछके फरमान मुताबिक बरताव करे-कोई मना नही -चाहे किसी गछके श्रावक-या-साधुमहाराज-ज्यादेहो-या-किसी गछमे-कम हो -इससें कोई गरज नही, धर्मके काममे-सलाह-सपसे बरताव करना फायदेमद है -चाहे किसी गछके-साधु-या-श्रावक हो,-जैनश्वेताबर-मजहबकी-राहसें-सब-एक है,-ऐसा कहना कोई-बेमुनासिब

नही, जैनमुनिका फर्ज है.-तालीम धर्मकी देनेमे किसीका पक्ष-न-करे, चाहे कोई गरीब हो, या-दौलतमद हो, मुनिजनोंकेलिये-समान है,-शास्त्रफरमानके सामने-रूढी-या-परपरा बडी नही. इसलिये शास्त्रफरमानपर अमल करना जरूरी है.-व्यारयानके वख्त-या-तमामदिन-जैनमुनिकों मुखपर मुंखस्त्रिका बाधना नही लिखा. कल्पसूत्रमे-जैनमुनिकों श्वेतकपडे-पहनना कहा -मगर-कोई सबब आनपडनेपर-कथ्थे-चुने वगेराका-रग देनाभी हुक्म है.-जब श्वेतकपडे पहननेवाले-मुनिजनोंमे पचमहाव्रतकी कमजोरी हुई-निशिथ-सूत्रके सबुतसे पीले कपडे पहनना शुरु किया, निशिथसूत्रके (१९)मे-उद्देशेमे पाठ है,-अगर-साधुकों-नयावस्त्र मिले-तो-उसकों-कथ्थेसें-लोधसें-या-पद्मचूर्णसें रग लेने. जमाने हालमे-तपगच्छके और-खरतरगच्छके-मुनि-पीले कपडे पहनते है,—

[निशिथसूत्रमें बयान है -जैनमुनि-नये कपडेकों रग देवे -निशिथसूत्रके (१८)में उद्देशका-पाठ,]

जे-भिख्खु णवएमे वथ्थे लद्धेत्तिकट्टु-बहुदिवससिएण-कथ्थेणवा, लोधेणवा, कक्केणवा, णहाणवा, पउमचुन्नेणवा, वन्नेणवा, उल्लालेज्जवा, उवट्टेज्जवा, उल्लोलंतवा, उवट्टंतवा, साइज्जइ,—

देखिये! इसमे-नये कपडेकों-जैनमुनि-कथ्थेसे-लोधसे-या-पद्मचूर्णसें रग देवे-तो-हुक्म है,—

१५ किताब-रत्नसागर-मोहनगुणमालाके पेज(८२४)पर बृहत्-खरतरगच्छकी सिद्धातशुद्धसमाचारीके बयानमे लिखा है,-जो-एकम-तिथि-कम-हो-तो-प्रतिपदाका-प्रत्याख्यानव्रत-पिछली अमावास्यातिथिकों करे, अष्टमी-कम-हो-तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, और-जो-चतुर्दशी कम हो-तो-चतुर्दशीका उपवास अमावास -या-पुनमको करे, कारण इसका यह है, दोनों तिथि बराबर पर्व

है, जैसे चउदस बडी तिथि, वैसे अमावास पुनममी चिरतन पर्वोका दिन है. इससे यह-दो-दिन बडे है,—

(जवाब) खरतरगछवालोंका कहना हुवा. अष्टमीतिथि-अगर-टुट-जाय-तो-सप्तमीके रौज अष्टमी मानना. और अगर चौदस-टुटे-तो-तेरसकों छोडकर पुनमे जाना -इससे-तो-महिनेमे बारह पर्व तिथिकी जगह एक कम होजानेके सबब ग्यारह होगई. जिस शख्शकों बारहपर्वतिथिके रौज-हरी-वनास्पति खानेका नियम हो-उसकों-ग्यारह पर्वतिथि रही एक पर्वतिथिके नियम भग होनेका दोप आया. फर्ज करो! किसी शख्शको चौदस तिथिके रौज-और-पुनम तिथिके रौजभी-उपवास करनेका नियम हो.-उसकोंभी-एक-उपवासभग करनेका दोप हुवा.-दो दिनके उपवास एक दिनमें कैसे करेगें? इसका कोई माकुल जवान पेंश करे —

१६ आगे किताब रत्नसागर-मोहनगुणमाला पृष्ट (८२४)पर-बयान है. जो-चउदस पुनमका-बेला करे-या-हरी छोडे-तो-दोनो दिन माने.—

(जवाब) दोनों दिन कौनसे माने? तेरस-या-पुनम?-या-पुनम-एकम? सबब-चतुर्दशी-तो-टुटी हुई है-गिनतीमे शुमार नही किइ जासकती, अगर तेरसमें मानाजाय-तो-चौदसका-कार्य-तेरसमे होगया,-जैसा तपगच्छवाले मानते है,-और अगर पुनम-टुट-जाय-तो पुनमके व्रतनियम किसमे शुमार करना? अगर कहाजाय, चौदसमें-तो-फिर बतलाना होगा, चौदसके व्रतनियम किसमें करना? इसका कोई माकुल जवाब पेंश करे, अगर एक महिनेकी बारह पर्वतिथियों-मेसें कोई-पर्वतिथि टुट जाय-तो-पहले दिनमे उसकों शुमार करना, और अगर कोई पर्वतिथि-बढजाय-तो-आगेके दिनोंमें शुमार करना. जैसे तीन शख्श-एकपिछे एक रास्ता चलते हो, उनमेसे बीचला शख्श थकजाय-तो-पिछलेकों मिले, और अगर वही-शख्श चलता-

हुवा ज्यादह चलजाय-तो-आगे चलनेवालेकों मिले, यही इन्साफ पर्वतिथियोंके बारेमेभी समजो. चौदस-टुटे-तो-तेरसमे चौदसकों शुमार करना. पुनम-टुटे-तो-चौदसकों तेरसमे और पुनमकों चौदशमे शुमार करना. यही इन्साफ और शास्त्रसमत बात है, खरतरगच्छवालोंसे दरयाफ्त कियाजाता है. आपलोग-जब दुज टुटे-तो-एकममे, पंचमी-टुटे-तो- चौथमें-अष्टमी-टुटे-तो सप्तमीमे और एकादशी टुटे-तो-दशमीमे-जाते हो. फिर वही-न्याय-चौदश टुटे-तों-तेरसमे-क्यौं नही अमल करते?—

१७ किताब-रत्नसागर-मोहनगुणमालाके (८२४)में पृष्टपर तेहरीर है,-कोई-तिथि-दो-हो-तो पहली तिथि माननीक-है, साठ घडीकी अखंड तिथि छोडकर घडी-आध-घडीकी दुसरी तिथि-कौन माने?—

(जबाब.) इसी बातपर कायम रहिये! फर्ज करो, अष्टमी तिथि-टुटी नही है,-और-बहुत घडीये उसकी सप्तमीमे चलीगई है.-सिर्फ! घडी-आध-घडी अष्टमीके रौज बाकी है,-बतलाइये! अष्टमी किस रौज मानेगें? अगर कहाजाय-घडी-आध-घडी-वालीको शुमार करेगें-तो-फिर इसीतरह-दो-अष्टमीमेभी-थोडी घडीवाली दुसरी अष्टमीकों मानना कौन बेइन्साफ था? पुनम-टुटे-तो-खरतगच्छवाले चौदसका धर्मकृत्य पुनममे करने जाते है, सोचों उस पुनमके रौज चौदस तिथिकी घडी-आध-घडीभी नही होती, फिर विना घडी-आधघडीसेंभी-पर्वतिथिके कैसे-मान लिई? और तेरसके रौज-जो -चौदसकी बहुत घडी है,-उसकों-इनकार कैसे किया?

१८ किताब-रत्नसागर-मोहनगुणमालाके पेज (८२५)पर-बयान है,-कातिक महिना बढे-तो-पहले कातिकमे चौमासा करे, फाल्गुन बढे-तो-दुसरे फाल्गुनमे करे, और आषाढ बढे-तो-दुसरे आषाढमे चौमासा करे,—

(जवाब) जब-किसी वर्समें अधिक महिना पेंश-हो,-तो-आप लोग-दो-महिनोंमें-पेस्तरके अधिक महिनेकों गिनतीमें शुमार करते हो?-या-दुसरेको?-दो-फाल्गुन हो-तो-कहते हो, दुसरे फाल्गुनमें-चौमासा करना.-ख्याल करनेकी-जगह है,-फिर-उस हालतमे आपकों-फाल्गुन चौमासा पाच महिनेमे हुवा,-और-चौमासा चार महिनेका होना चाहिये. अगर अधिक महिना गिनतीमें शुमार करना है-तो-जब-दो-आषाढ पेंश हो,-पहले आषाढमे चौमासा-क्यों-नही वेठाते? और जब-दो-पौष महिने-आवे-तो-तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजका जन्मकल्याणक किसमे शुमार करेंगें? अगर दोनों पौषमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका शुमार करेंगें-तो-जन्मकल्याण-दो-होजायगें. अगर एक-पौषमे जन्मकल्याणक करेंगें-तो-एक-पौष महिना-खुद-आपलोगोंने गिनतीमें शुमार करना छोड दिया साबीत होगा. अन्यमतके पचागकी-रूहसें जब-दो-चैतमहिने-पेंश-हो. आपलोग-नवपदजीका-तप-एक-चैतमे करेंगें-या-दोंनोंमे? फर्ज करो! अगर कभी-दो-वैशाखमहिने आगये-तो-आपलोग-अखात्रीज पर्व-एक वैशाखमे करेंगें-या-दोंनोंम-इसका जवाब दिजिये.-

१९ अधिक महिना गिनतीमें लेना मानते हो-जब-कभी-अन्यमतके पचागकी रूहसे-दो-भादवे आजाय-पाच महिनेका चौमासा मानकर-चौमासी-प्रतिक्रमण पाच महिनेके अतरेसें क्यों करते हो? अधिक महिना गिनतीमें शुमार करके एक महिना पहले-ही-चौमासी प्रतिक्रमण करलेना चाहिये,-और-चौमासा-खतम हुवा-समजकर मुनिजनोंकों विहार करदेना चाहिये सोचो! उसवख्त-अधिक महिना गिनतीमें शुमार करनेका-पक्ष-कहां चलाजाता है? जैसा कहना वैसा वरताव करके वतलाना चाहिये,-हरेक महिनेके तीस दिन शुमार कियेजाते है,-और-उसी गिनतीपर धर्म क्रिया किईजाती है-मगर किसी महिनेमें तीस दिन आते है,-किसीमें नही आते. चालु-पचागकी रूहसें कोई-पखवाडा सोलह

दिनका जाता है,-और कभी-कोई-पखवाडा चौदह-दिनकाभी-आता है, उसवख्त-कमी-वेंसी दिनकों गिनतीमे-क्यौं-नही शुमार करते? और पुरे-पनराह-दिन-मानकर-क्यौं-पाक्षिक प्रतिक्रमण करलेते हो? ऐसे-मुद्देके सवालोंका जवाब देना चाहिये.-जिससें दुसरोंकोंभी-इस-चर्चाका-फायदा मिले.-तपगछवाले बयान करते है, अधिक महिना-वार्षिक-चातुर्मासिक-और-कल्याणक पर्वके-व्रतनियमकी रूहसें गिनतीमें शुमार नही करना, सबब-वो-कालपुरुषकी चोटी है.-जैसे आदमीके शरीरकी उंचाईका-माप-किया-जाय-तो-चोटीका-माप-उसमें सामील नही कियाजाता, इसतरह अधिक महिना कालपुरुषकी चोटी है. गिनतीमे शुमार नही करना.—

२० किताब महाजनवंश मुक्तावली-जो-युक्तिवारिधि-उपाध्याय-श्रीरामलालजी-गणिकी बनाईहुई-दुसरीवार छपी है, उसकी-प्रस्तावनाके पृष्ट (१०)पर-बतौर सवाल जवाबके लिखा है-(प्रश्न.) देवगुरुकेअर्पणकी वस्तु भक्ष्य नही-तो-दादा-गुरुदेवकी-चढाईहुई-शेष-सीरणी-लोक कैसे भक्ष्य समजते है? (उत्तर.) देव-वीतराग-तो-मुक्त-शिव होगये, उनके-तो-मंदिर स्थापनामें गतभोग वस्तु अलीन है,-और-दादा-श्रीजिनदत्तसूरि-प्रथम देवलोकमे महर्द्धिक-देव-है. आगे लिखते है,-इसप्रकार चारों दादासाहब स्वर्गवासी देव है,-उन्होके निमित्त करीहुई-शेष-सीरणी लीन है.-उसमेसें-जो-दादासाहबके सन्मुख चढाई जाती है,-वह-सीरणी कोई चढानेवाला नही खाता. किंतु-स्वस्थानमें रही सीरणीका भाग खानेमे दोष किंचित्‌भी नही.—

(जवाब.) दोष क्यों नही.? चाहे सीरनी-(यानी) मिठाई-स्वस्थानमें रखी हो-या-दादाजीकी चरणछत्रीके सामने शाथ लेगये हो,-जो-चीज जिस निमित्तमे कहीगई-वो-उसी निमित्तमें जाना चाहिये. जो-शख्श-जिस मजहबपर एतकात रखता हो, उसकों उस मजहबके धर्मशास्त्रपर अमल करना पडता है.-विना सबुत-

अपने दिलसें कहीहुई-बात दुसरे कैसे मान्य करसकते है? खयाल करो! दादाजीकों जैनलोग किस सबबसें-गुरु-मानते है? जवाबमें कहना होगा, उन्होंने मनुष्यभवमे चारित्र पाला था, शुद्ध-श्रद्धा-ओर ज्ञानमे सावीत कदम रहे-थे, उस सबबसें जैनलोग धर्मगुरु मानते है, इसवख्त-वे-चाहे देवलोकमे तशरीफ लेगये है, इससें क्या हुवा? जैनलोग उनकों देवलोक जानेके सबब गुरु नही मानते, --न-अपने ससारिक मतलबकेलिये मानते है,-जैनशास्त्र फरमाते है, जन-गुरुमहाराजके चरनोंकी छत्रीके सामने जाना, इछामि-क्षमाश्रमणके-पाठसें वदना करना, उनके गुणोंकी इबादत-करना. और मुक्तिकेलिये नैवेद्य चढाना. ससारिक मतलबकेलिये उनकी मन्नत करना नही, जैनमजहब-कर्म-प्रधान है -जो-जैसी करनी करे, वैसा फल हासिल करे, किसीका मनोरथ कोई पूर्ण नही करता. पूर्वकृत-कर्मके उदयानुसार आराम तकलीफ पाता है,-सबुत हुवा, श्रीफल-या-मिठाई वगेरा-दादागुरुके चरनोंके सामने-मन्नत-करके चढाना नही. और अगर मुक्तिकेलिये नैवेद्य चढाना-तो-वो आप खाना नही.—

२१ किताब महाजनवश मुक्तावलीके इसी (१०)में-पेजपर-खरतरगछके-उपाध्याय-श्रीरामलालजी-गणि-इस दलिलकों पेंश करते है एक श्रावक-साधुगुरुको मोदक आदि नैवेद्य-भक्षवस्तुका पात्र भरालेकर प्रतिलाभने खडा होता है, भावभी उसका ऐसा है,-गुरु-साधुजीकों सपूर्ण प्रतिलाभ दु,-उसमेंसें साधुजी किंचित्मात्र लेते है, अवशेष-पात्रमे रहा-मोदकआदि-क्या! सपूर्ण-गुरुद्रव्य हो-जायगा? कदापि नही, सर्व-श्रावकजन अवशेष पात्रस्थित वस्तुकों खाते है.—

(जवाब.) साधुमहाराजकों-खानपान देनेकेलिये कोई श्रावक खडा रहे,-यह-बात-मन्नतमे सामील नही होसकती, दादाजीका प्रसाद उनके निमित्त बोला जाता है. दादाजीके चरनोंके सामने थोडासा

हिस्मा चढाकर वाकीका श्रावकोंकों वांट देते है,–और वाटते वख्त कहते है, लिजिये! दादाजीका प्रसाद! साधुमहाराजकों देनेकेलिये श्रावक थालभरके चीज लावे. और देनेके वाद वचीहुई चीज खावे –तो–यह–कुछ मन्नत किईहुई–चीज नही, इसका दादाजीके प्रसादके शाथ क्या ताल्लुक था? इसपर खयाल करो, दलिल–वो–लाना चाहिये,–जो–उससें ताल्लुक रखती हो, गुरुद्रव्य–वो–होजाता है,–जो–गुरुके निमित्त वोला गया हो,–या–उनके सामने चढादिया हो, दोंनों–गुरुद्रव्य है,–चाहे–दादाजीकेनिमित्त वोलीहुई–मिठाई हो, –या–श्रीफल वगेरा दुसरी चीज हो,–चाहे–घरमें रखी हो, या–दादाजीके चरनोंके सामने लेगये हो,–जवसें मन्नत करदिई–या–वोल दिई–उसी वख्तसें–वो–गुरुद्रव्य होगया, जैसे जिन–मदिरमें–पूजाका –घी–वोला,–उसका द्रव्य–चाहे घरमें पडा हो –या–शाथमें लाया हो,–मगर जवसें पूजानिमित्त वोल दिया, देवद्रव्य होगया,—

२२ कितान महाजनवंश–मुक्तावलीके इसी (१०)मे–पृष्टपर–खरतरगछके–उपाध्याय–श्रीरामलालजी–गणि–इस मजमूनकों–पेश करते करते हैं, जहा–गुरुमहाराज उपाश्रय–आदिमें व्याख्यान करते है, वहां –श्रावक प्रभावनाकेलिये मोदक आदि गुरुके–पट्टपर–प्रथम आरोपण करके–अवशेष वाटते है,–तो–क्या! वो–गुरुद्रव्य होजायगा? कदापि नही. इसप्रकार दादागुरुदेवकों चढाये अनंतर–शेष–सीरणी–लीन है,–

(जवाव.) व्याख्यानके वख्त–वाटनेंकेलिये–जो–प्रभावना लाईजाती है–वो–गुरुकेलिये मन्नत किईहुई चीज नही, और–वो–गुरुलोग लेतेभी नही.–धर्मगुरुओंकों–जैनशास्त्रका फरमान है,–जव–भिक्षाकेलिये जाय–और–उसवख्त–गृहस्थोंके घरसें–जो–निर्दोष–चीज मिले–वो–लेवे. इसलिये प्रभावनाकी चीज गुरुद्रव्य नही होसकती, आपलोग–जो–दादागुरुदेवके प्रसादकी चीज–शेष–सीरनी खानेके काविल फरमाते हो,–उसमें कोई शास्त्रसबुत पेश कीजिये.–जैनशास्त्र–साफ तौरसें फरमाते है.–दादाजीको–शुद्ध श्रद्धा–ज्ञान और

चारित्रकी अपेक्षासें धर्मगुरु मानो, मुक्तिकेलिये वदना नमस्कार करो और नैवेद्यभी-मुक्तिकेलिये चढाओ, मगर सासारिक मतलबके-लिये उनकी मन्नत-मत-करो, और उनके नामसे बोलाहुवा-प्रसाद -मत खाओ,—

२३ किताब-महाजनवश-मुक्तावलीकी-प्रस्तावनाके पृष्ट (११) पर-खरतरगछके उपाध्याय-श्रीरामलालजीगणि-तेहरीर करते है,-श्रीसघकों-सहायकर्त्ता-भक्तजनोंका वाछितपूरक दादा-गुरुदेवकी महान्-आचार्योंकी तरह पूजास्मरणके योग्य है —

(जवाब.) मुक्तिकेलिये-पूजा-स्मरण चाहे-जितना-करो, जैनशास्त्रका हुक्म है,-मगर-सासारिक मतलबकेलिये-पूजन-स्मर्ण करना हुक्म नही,-भक्तजनोंकी वाछना पूरी करनेके बारेमे जैनशास्त्र साफ फरमाते है, चाहे-इद्र-धरणेंद्रभी-हो -भक्तजनोंकी वाछना पूरी नही कर-सकते, दुसरोंकी कौन गिनती,-जैनमजहबका-उसूल-है,-हरशख्श-अपने-पूर्वकृतकर्मके मुताबिक आराम-या-तकलीफ पाता है,-किसी -शख्शकी कर्मप्रकृतिके उदयको कोई रदबदल नही करसकता,-आगे इसी किताब महाजनवशमुक्तावलीकी-प्रस्तावनाके (११)मे-पेंजपर -खरतरगछके-उपाध्याय-श्रीरामलालजी-गणि-लिखते है,-उन्होंके देवलोक होनेके अनतर-उन्होंके शिष्य-सतानी, स्थानस्थानपर-अब -आत्मारामजी [आनदविजयसूरि,]जीकी मूर्त्तिया-स्थापनकर पूजवाते है,-गौतमादि पूर्वाचार्योंकी स्थापना पूजा-क्यौं नही कराते?

(जवाब) पूर्वाचार्य-श्रीधनेश्वरसूरिजी-श्रीहेमचद्राचार्यजी-श्री हीरविजयसूरिजी वगेराकी-मूर्त्तियें-स्थापन कराते है,-इसीतरह-विजयानदसूरि-अपरनाम-श्री-आत्मारामजी-आनदविजयकीभी-मूर्त्ति -स्थापन कराते है,-उनकी मूर्त्तिके सामने धर्मगुरु मानकर मुक्तिके लिये वदन-नमन करते है,-मगर-मन्नत करके प्रसाद नही चढाते, न-उस प्रसादको खाते है, अगर कोई सासारिक मतलबकेलिये माने -पूजे-तो बेशक! बेजा समजते है,—

२४ किताब महाजनवंशमुक्तावलीके पृष्ट (११०)पर-खरतरगछके उपाध्याय-श्रीरामलालजीगणि-इस मजमूनकों-पेश करते है,-विजयानदसूरि-अपर नाम-आत्मारामजी-आनदविजयजीने-शहर-अहमदाबादमे-सोरठदेश-शत्रुंजयतीर्थकों-अनार्यदेशकी प्ररूपणा करी,-

(जवाब.) संवत् (१९४३)-के अर्सेकी बात है,-जब-श्रीविजयानदसूरि-शहर अहमदाबादमे तशरीफ लाये थे,-जैनागम-बृहत्कल्पसूत्र-टीका-और निर्युक्तिका-व्याख्यान चला था,-उसमे-जमाने तीर्थंकर महावीरस्वामीके-मुनिविहारकी-अपेक्षा-अयोध्यानगरीसें-पूर्वदिशातर्फ-अग-और-मगधदेशतक-दखनकीतर्फ-कोशाबीनगरीतक-पश्चिमतर्फ-स्थूणाविषयतक-और-उत्तरतर्फ-कुणालदेशतक-आर्यक्षेत्र है, इतनेमेही-साधु-साध्वीकों-सफर करना चाहिये.-सोरठदेश-उस मर्यादाक्षेत्रसें बहार है,-तीर्थंकर महावीरस्वामीके जमानेमे-जैनमुनि-मुल्क सौराष्ट्रतर्फ सफर नही करते थे,-बस! बात इतनी थी. इस बातको बगेर तलाश किये कहनेवालोंने कहदिया.-देखलो!-विजयानदसूरि-अपर-नाम-आनदविजयजी-साहबने शत्रुंजयतीर्थको-अनार्य-कहदिया, तीर्थंकरोके कल्याणककी अपेक्षा -और-चक्रवर्त्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेवकी जन्मभूमिकी अपेक्षा जैनमजहबमे-जो-साढेपचीस आर्यदेश-बयान किये है,-तीर्थभूमिकी-अपेक्षा आर्यही है, सौराष्ट्रदेश-आर्यदेशोंमे सामील है,-मगर-मुनिविहारकी-अपेक्षा-तीर्थंकर महावीरस्वामीने जब-बृहत्कल्पसूत्र अर्थरूप बयान फरमाया. उसवख्त-उतनाही-क्षेत्र-आर्य-शुमार कियागया था. जितना उपर बतलाया है, बृहत्कल्पसूत्रका-मूलपाठ -टीका-और निर्युक्तिका-बयान यहा देताहु. आपलोग-देखिये! और अपना शक रफा कीजिये!—

२५-[बृहत्कल्पसूत्रका मूलपाठ-उद्देशा-पहेला,]

कप्पइ निग्गथाणवा, निग्गथीणवा, पुरथिमेण-जाव-अग-मगह उएत्तए, दक्खिणेण कप्पइ निग्गथाणवा, निग्गथीणवा, जाव-को-

सत्ती-उएत्तए, पचथ्थिमेण-जाव-थूणाविसया-उएत्तए, उत्तरेण जाव-कुणालाविसया, उएत्तए,-एतवत्ता च-कप्पइ, एतावत्ताच-आयरिए खित्ते, णोसे कप्पइ-एत्तोवहि, तेणपर जथ्थ-णाणदसणच-रित्ताइ-उस्सप्पति,-इति,—

[जैनाचार्य-मलयगिरि-विरचित टीका,-]

कल्पते निर्ग्रंथाना वा, निर्ग्रंथीना वा, पूर्वस्या दिशि-यावदग-भगवान् एत्तु-विहर्त्तु, अगो नाम-चपाप्रति बद्धो-देशः,-दक्षिणस्या यावत् कौशाम्बीमेत्तु-उत्तरस्या दिशि-कुणाला-विषय-यावदेत्तु, सूत्रे पूर्वदक्षिणादिभ्यः तृतीयादिनिर्देशो लिंगव्यत्ययश्च प्राकृतत्वात्-एतावत्तावत् क्षेत्रमधिकृत्य विहर्त्तु कल्पते, कुत इत्याह-एतावत्तावत्-यस्मादार्यक्षेत्र, नो-से-तस्य निर्ग्रंथस्य निर्ग्रंथ्या वा-कल्पते, अतएव-विधादार्यक्षेत्राद् बहिर्विहर्त्तु-ततःपर बहिर्देशेपु-यत्र ज्ञानदर्शनचारि-त्राणि उत्सर्पंति स्फातिमासादयति, तत्र विहर्त्तव्य, इति परिसमाप्तौ -ब्रवीमिति, तीर्थंकरगणधरोपदेशेन-नतु-स्वमनीपिकयेतिसूत्रार्थ.—

[अथेद् सूत्र-भगवता यत्र क्षेत्रे-य-च-
काल प्रतीत्य-प्रज्ञप्त-तदेवाह -]

[बृहत्कल्पसूत्रकी निर्युक्तिका पाठ -]

(गाथा,)

साएयमि पुरवरे-सुभूमिभागमि वद्धमानेण,
सुत्तमिण पणत्त-पडुच्च-त-चेव कालतु. १
मगहा कोसंविया-थूणाविसउ-कुणालविसउय,
एसा विहारभूमि-एतावत्तारिय खित्त, २

देखिये! बृहत्कल्पसूत्र-उसकी टीका-और-निर्युक्तिका पाठ दिखला दिया, जिनकों-शक हो,-मजकुरसूत्र तलाश करके बखूबी देखलेवे,-जिस जमानेकेलिये तीर्थंकर महावीरस्वामीने-जिस क्षेत्रकों -आश्रित होकर मजकुरसूत्र फरमायाथा, उसका-खुलासा-निर्युक्ति-

कार-भद्रबाहुस्वामी-बयान फरमाते है,-उसी कालकेलिये-मुनिविहारकी अपेक्षा-अयोध्यानगरीसे पूर्वमे अंग-मगधदेश, दखन तर्फ-कौशाबी नगरी, पश्चिममे-स्थूणाविषय और-उत्तरमे कुणालविषयतक-आर्यक्षेत्र है, सौराष्ट्र वगेरा-कई-मुल्क-उस हदसे बहार है,-उनमें जैनमुनियोंका विहार उसवख्त नही होता था. तीर्थंकर महावीरस्वामी-छद्मस्थ हालतमे-मुल्क-पूर्वतर्फही-विहारहारकरते रहे, गणधरोंका विहारभी बहुतसा उधरही हुवा है,-इसलिये-मुनिविहारकी-अपेक्षा-उस जमानेमे-उतनाही-आर्यक्षेत्र था, ऐसा-बृहत्कल्पसूत्रका पाठ फरमाता है,-महाराज-श्रीविजयानदसूरि-अपर-नाम-आत्मारामजी-आनदविजयजी-साहबने शहर अहमदाबादमे-यही-बृहत्कल्पका पाठ-सभामे वाचा था,-थोडे पढेहुवे विना समजे चाहे-सो-कहे,-अबभी जिनकों शक हो, उपर लिखाहुवा पाठ देखलेवे अगर-अपने-गाममे-हस्तलिखित जैनपुस्तकोंका-भंडार-मौजूद हो, बृहत्कल्पसूत्र निकालकर तलाश करे,—

२६ खरतरगछके-श्रावक-जब सामायिक करते है,-पेस्तर-करेमिभतेका-पाठ तीन दफे बोलकर फिर इरियावहीका पाठ बोलते है. तपगछके-श्रावक-अवल इरियावहीका पाठ बोलकर पिछें-करेमिभतेका पाठ बोलते है,-सूत्रमहानिशिथमे फरमान है,-अवल इरियावहीका पाठ बोलना,—

[सूत्रमहानिशिथके तीसरे अध्ययनका पाठ -]

गोयमा! अपडिक्कंताए इरियावहियाए,-न-कप्पइ, चेव काउं किंचिवि चिइवदणसझायझाणाइय-फलासायममिकउुणा,—

(अर्थः) तीर्थंकर महावीरस्वामी गौतमगणधरकों फरमाते है, कोईभी धर्मक्रिया शुरु करना-तो-अवल इरियावहीका पाठ पढना करना,-देखिये! मजकुर सबुत-तपगछ-और-खरतरगछ-नाम-शुरु होनेके पेस्तरका है,-इसलिये इसके मजुर करनेमे-कोई-इनकार नही कर-सकता,—

[दशवैकालिकसूत्रकी-बृहद्वृत्तिका पाठ -]

इर्यापथप्रतिक्रमण-अकृत्वा-नान्यत् किमपि कुर्यात्
तदशुद्धापत्ते.—

देखिये! इस पाठमेंभी तेहरीर है,-इरियावहीका पाठ विना कहे, कोईभी धर्मक्रिया नही करना,-सबब उसमें अशुद्धताका-दोष-आता है,—

[सूत्र-पचाशककी चूर्णिका पाठ.]

तओ राइए-चरमजामे-उट्ठिउण, इरियावहिय पडिक्कमिय, पूव्वि पोत्तिपेहिये, नमोकारपूव्व सामाइयसूत्त कड्ढिय,-सदिसाविय-सज्झाय कुणइ.—

(अर्थ) श्रावक पिछली रातको उठकर इरियावही प्रतिक्रमे-मुख-वस्त्रिका प्रतिलेखन करे फिर नमस्कारमत्र बोलकर सामायिकसूत्र-करेमिभतेका पाठ बोले, और-स्वाध्याय करे,-देखिये! इसमेंभी-करेमिभतेके अवल इरियावही करना फरमाया —

[विवाहचूलिका सूत्रमेंभी-लिखा है,-]

देवड्ढीकुसुमसेहर-मुचइदव्वाहिगारसङ्घमि-ठवणायरिय ठविउ पोसहसालाण-तो-सिहो, उम्मुकभुसणोइर्या-पुरस्सरच मुहपत्ते पडि-लेहिउण,—

(अर्थः) सिंह-नामके श्रावकने-दौलत-फुलमाला-और गेहने वगेराको छोडकर पौषधशालाके मकानमें-स्थापनाचार्यजीके सामने अवल इरियावहीका पाठ कहा. और बादम-मुहपत्तिकी-प्रतिलेखना किई इस पाठसेभी-साफ-जाहिर है,-अवल इरियावहीका पाठ बोलना चाहिये,-ऐसे पुख्ता सबुतोंकी-मौजूदगीमें-कोई-कैसे-इस बातका इनकार करसकता है? ये-सबुत-खरतरगछ-तपगछ-नाम इजाद होनेके पेस्तरके है,-इससे सावीत हुवा,-तपगछवाले-सूत्र-सिद्धातके फरमानपर चलते है,-कितनेक अपने गछके आचार्योंका

सबुत पेश करते है,-मगर तपगछवाले-दोनों-गछोंके-पेस्तरका सबुत देते है,-इसपर खयाल करना चाहिये,—

२७ अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे,-श्रावकको पौषधव्रत-अष्टमी-चतुर्दशीके-रोज-करना चाहिये.-दुसरे रोज नही,-जवाबमे मालुम हों,-ऐसा कोई शास्त्रफरमान नही, सिवाय अष्टमी-चतुर्दशीके दुसरे रोज-पौषधव्रत नही करना, धर्मकी पुख्तगीका-काम-चाहे जिस रोज करे अछा है,—

[इसपर तत्त्वार्थभाष्यवृत्तिका पाठ,]

पौषधः पर्वेत्यनर्थांतरः-सोऽष्टमीं-चतुर्दशीं-पचदशीं-अन्यतमा-वा, तिथिमभिग्रह्य-चतुर्थाद्युपवासिन.-व्यगतस्नानानुलेपन-गधमाल्यालंकारेण-न्यस्तसर्वसावद्ययोगेन-कुशसस्तारफलकादीनामन्यतम सस्तारकमास्तीर्यस्थान वीरासननिषद्याना-वा-अन्यतममास्थाय-धर्मजागरकापरेणानुष्ठेयो भवति,

(देखिये!) इस पाठमे-अष्टमी-चतुर्दशी-पौणिमा-तिथिके शिवाय दुसरी तिथिके रोजभी-पौषधव्रत-करना फरमाया,-घास-वगेराका-बिछोना-करना,-या-वीरआसन वगेरा-आसनमे-रहकर धर्मजागरन-करना-जरूरी है, सबुत हुवा,-पौषधव्रत-चाहे जिस रोज करसकते है,-अष्टमी-या-चतुर्दशीतिथिके रोजही करना ऐसा कोई खास नियम नही.—

२८ किताब महाजनवशमुक्तावलीके पृष्ट (१७०)पर-खरतरगछके उपाध्याय श्रीरामजीगणि-लिखते है,-न-तो-जिनवल्लभसूरिका कुर्चपुरी गछ था.-न-षट्कल्याणकी इन्होने प्ररुपणा किई, षट्कल्याणक प्ररूपणेवाले श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी है-नही माननेवाले आपलोक-हो —

(जवाब) श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामीने कल्पसूत्रमे तीर्थंकर महावीरस्वामीके गर्भापहारकों कल्याणक नही कहा.-बल्कि! एक तरहका आश्चर्य बनाव कहा,-अगर श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी-तीर्थंकर महा-

वीरके-छह-कल्याणक बयान करते-तो-पचाशकसूत्रके बनानेवाले श्रीहरीभद्रसूरिजी-पचाशकसूत्रके मूलपाठमे-तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणक-क्यों-फरमाते! और आपके श्रीअभयदेवसूरिजी-उसी-पचाशकसूत्रकी टीकामे पाचकल्याण क्यो बतलाते? क्या!-वे -कल्पसूत्रके पाठको नही जानते थे? देखिये! यह-किसकदर पुख्ता सबुत है? जिसको कोई गलत नही कहसकता,-अगर कहाजाय,-पचहथ्थुत्तरेहोथ्था,-साइणापरिणिव्वुए,-भयव,-इस पाठसें तीर्थंकर -महावीरस्वामीके पाचकल्याणक कल्पसूत्रमे भद्रबाहुस्वामीने फरमाये है,-जवाबमें मालुम हो,—जैसें नक्षत्रकी साम्यतासे-तीर्थंकर महावीरस्वामीके आपलोग-छह-कल्याणक मजुर रखते हो,-तो-जैनागम -जबूद्वीपप्रज्ञप्तिमे-तीर्थंकर ऋपभदेव महाराजकेलियेभी-वैसाही पाठ है,-फिर-उनकेभी-छह-कल्याणक-कहो.—

[पाठ-जबूद्वीप-प्रज्ञप्तिका,]

उसभेण अरहा कोसलिये, पच उत्तरापाढे,-अभिइ-छठे होथ्था, तंजहा, उत्तरापाढाहि चूए-चइत्ता, गब्भवक्कते, उत्तरापाढाहि जाए, उत्तरापाढाहि रायाभिसेय पत्ते, उत्तरापाढाहि मुडे भवित्ता आगाराओ -अणगारिय पव्वइए, उत्तरापाढाहि अणते जाव समुप्पने, अभिइणा परिणिव्वुडे,—

[व्याख्या] उसभेणमित्यादि, ऋपभोऽर्हन् पचसु-च्यवन, जन्म, राज्याभिषेक, ज्ञानलक्षणेपु वस्तुपु, उत्तरापाढानक्षत्रे-चद्रेण भुज्यमान यस्य-स-तथा-अभिजिन्नक्षत्र, षष्ठे निर्वाणलक्षणे वस्तुनि यस्य, यद्वा अभिजिति नक्षत्रे षष्ठ निर्वाणलक्षण वस्तु-यस्य-स-तथा-उक्तमेवार्थ भावयति, तद्यथा, उत्तरापाढाभिर्युते चद्रेणेतिशेष' सूत्रे बहुवचन प्राकृतशैल्या-एवमग्रेपि, च्युतः सर्वार्थसिद्धनाम्नो महाविमानात्-निर्गत. च्युत्वा गर्भव्युत्क्रांत'-मरुदेवाया कुक्षौ अवतीर्णवान् इत्यर्थः-जातो गर्भावासान्नि'क्रांत. राज्याभिषेक प्राप्तः-मुडो भूत्वा,-आगार मुक्त्वा अणगारतां साधुता प्राप्त. इत्यर्थ., पचमी चात्र क्यब्लोपजन्या-अन-

तर यावत् केवलज्ञानं समुत्पन्न, यावत् पदसग्रहः पूर्ववत् अभिजिद्‌युते चद्रे प्रतिनिर्वृतः-सिद्धिं गतः—

देखिये! जबूद्वीप-प्रज्ञप्ति जैनागममें-क्या! लिखा है? इसमें साफ लिखा है, तीर्थंकर ऋषभदेव महाराजके-च्यवन, जन्म, राज्याभिषेक, दीक्षा, और-ज्ञान-ये-पांच-उत्तराषाढा नक्षत्रमे हुवे. और छठा निर्वाण अभिजित् नक्षत्रमे हुवा.-क्या! इसपरसें-तीर्थंकर ऋषभदेव महाराजके-राज्याभिषेककोंभी-खरतरगछवाले कल्याणक कहेंगे! इसका कोई जवाब पेंश करे,-यातो-इस-जबूद्वीपप्रज्ञप्तिके पाठसें तीर्थंकर ऋषभदेव महाराजकेभी-छह-कल्याणक कहो,-या-तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाच कल्याणक कहो. ऐसे मार्केके जवाब-न-देसके -तो-फिर कोरी बातोंसें क्या फायदा? अगर कोई-इस दलिलकों-पेंश-करे, गर्भापहारकों-आश्चर्यकारक बनाव बना, इसलिये गिनतीमे -शुमार नही करते, तो-तीर्थंकर मल्लिनाथजी-स्त्रीहालतमे हुवे,-यहभी-आश्चर्यकारक बनाव बना है,-इसकोंभी-तीर्थंकर-न-मानो. (जवाब.) मल्लिनाथजीकों शास्त्रोंमे तीर्थंकर हुवे लिखा है, मगर गर्भापहारकों-कल्याणक हुवा-नही लिखा. अगर लिखा हो-तो-कोई-शास्त्रका पाठ जाहिरकरे, बिनासबुतके-कोई कैसे-मजुर करेंगे?—

२९ अगर कोई इस मजमूनकों-पेंश-करे,-जैनाचार्य श्रीरत्नप्रभसूरिजीने-ओशियानगरीमें ओशवाल बनाये, और ओश वशका बीज बोया, उसकों हमारे गछके आचार्योंने प्रफुल्लित किया.—

(जवाब) तीर्थंकर महावीरस्वामी निर्वाण होनेके बाद-(७०) वर्स पिछे जैनाचार्य-श्रीरत्नप्रभसूरिजीने ओशवाल-जैन-बनाये-जिसकों आज करीब (२३८२) वर्ष हुवे. जैनधर्म-तीर्थंकर ऋषभदेवजीसें-चला आया है,-कई राजे-महाराजे हुवे.-और-जैनधर्मकों तरकी दिई,-क्षत्रिय, ब्राह्मण, और-वैश्य-वगेरा-कोंममे-जो-जैनधर्म पालते थे,-वे-जैन कहलाते थे, व्यापार-रोजगार-करनेवाले बहुत करके वणिक कहलाते है,-सबुत हुवा, जैनाचार्य-श्रीरत्नप्रभसूरिजीसें-पेस्तर-

भी-जैनधर्म चलता था,-जो-जो-जैनाचार्य-जिस जिस गछमें होते रहे,-धर्मकों तरकी पहुचाते रहे,-कई जैनाचार्योंने-कई शख्शोंकों-जैन बनाये, इद्रभूति-गौतम-गणधर-और सुधर्मा-गणधर वगेरा (११) गणधरोंने जैनमजहबकों तरकी दिई और-द्वादशांग-वानीके-फरमानसें जैनमजहबरूपी-कल्पवृक्षकों-हरा-भरा करदिया,—

३० तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (२९०) पीछे सप्रति राजा जैनमजहबपर कामील एतकात हुवा, और जैनधर्मकों तरकी दिई, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (३७६) वर्स पीछे श्यामाचार्य नामके जैनाचार्य हुवे, जिन्होंने प्रज्ञापनासूत्र बनाया, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (४५३) वर्स पीछे कालिकाचार्य हुवे, जिन्होने गर्दभिल्ल-राजाकों-अधर्म करते रोका जैनाचार्य-वृद्धवादी, और जैनाचार्य-पादलिप्तसूरि-बडे आलिमफाजिल हुवे,-तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (४७०) वर्ष पीछे विक्रमादित्य राजा हुवा, जैनाचार्य-सिद्धसेन-दिवाकर इनके जमानेमे मौजूद थे, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (५७०) वर्स पीछे जावडशाहशेठने-तीर्थ-शत्रुजयपर उद्वार करवाया, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद-(५८४) वर्स पिछे जैनाचार्य वज्र स्वामीका इतकाल हुवा,-तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (९८०) वर्स पीछे-वल्लभीनगरीमे पाचसो जैनाचार्योंकी सलाहमे-देवर्द्धिगणि-क्षमाश्रमण-जैनाचार्यने जैनागमोंका-जो-कठाग्रज्ञान था, पुस्तकाकार लिखा, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (१००८) वर्स पीछे-जैन मुनि-गाव-नगरम रहने लगे. पेस्तर बाग-बगिचे-और-बनखडमे कयाम करते थे, तीर्थंकर-महावीर निर्वाणके बाद (१०५५) वर्स पीछे जैनाचार्य हरिभद्रसूरि हुवे, जिन्होंने कई जैनग्रथ बनाये, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (११५०) वर्स पीछे-जिनभद्रगणिक्षमा श्रमण हुवे, जिन्होंने बहुतसें-जैनशास्त्रोंपर भाष्य बनाया, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके-बाद (११७०) वर्स पीछे शैलकाचार्यजी हुवे, जिन्होंने जैनागम-आचाराग-और-सूत्रकृतागपर टीका बनाई.-

बादमें-जैन-श्रीअभयदेवसूरिजी हुवे,-जिन्होंने-स्थानांग-समवायांगसूत्र-वगेरा-नव अंगशास्त्रपर टीका बनाई, बाद श्रीजिनदत्तसूरिजी-जैनधर्मकों तरक्की पहुचानेवाले हुवे. राजा-कुमारपालके जमानेमें जैनाचार्य-हेमचंद्रसूरि हुवे, इनके जमानेमें जैनधर्मकी-बेहद-तरक्की हुई, आचार्य-मलयगिरिजी जिन्होंने-कई-जैनशास्त्रोंपर टीका बनाई, जैनाचार्य-मानतुंगसूरि जिन्होंने भक्तामरस्तोत्र बनाया, जैनाचार्य-देवेंद्रसूरी जिन्होंने कर्मग्रंथ शाया किया, जैनाचार्य-हीरविजयसूरि-जिन्होंने बादशाह-अखबरसें जैनतीर्थोके फुरमानपत्र निकलवाये,-जो-अबतक जैनसंघको-फेज-बक्ष रहे है,-इसका-मतलब यह हुवा-कई-गछके-कई-जैनाचार्य हुवे,-जो-अपने अपने जमानेमें धर्मकों तरक्की देते रहे, एक-गछके-आचार्योंनेही-जैनधर्मकों तरक्कीपर नही पहुंचाया. मगर सबने मिलकर जैनधर्मकी इज्जत बढाई है. चाहे कवलगछके हो,-तपगछके हो. खरतरगछके-या-अचलगछके हो. चाहे पायचंद-या-लोंकागछके हो,-जिन्होंने जैनधर्मकों रोशन अफरोज किया. उन्हीको-धर्मपर फेज बक्षनेवाले समजे गये, हर इन्सानकों चाहिये धर्मपर कामील एतकात रहे, अपने-गछकेलिये-जिद-न-करे. चाहे किसी गछके साधु-श्रावक हो,-जो-श्रद्धा, ज्ञान, और चारित्रमें पाबंद हो,-उनकों माने, जैसे ओशवालज्ञातिमें-कई-गोत्र होते है,-मगर ओशवाल कहनेसें सब उसमें आजाते है,-इसीतरह जैनधर्ममें-कई-तरीके होते हुवेभी-धर्मकी-राहसें सब एक है,-मतभेदपर खयाल नही करना और धर्मकों-तरक्की देना अछे लोगोंका फर्ज है.-जमाने हालमें-कवलगछ, तपगछ, खरतरगछ, अचलगछ, पायचंदगछ, और लोंकागछ वगेरा-कई-फिरके जैनश्वेतांबर मजहबमें-मोजूद है,-उनमें-तपगछके-साधु, श्रावक,-बनिस्बत और गछोंके तादादमें ज्यादा निकलेगें, शत्रुंजय-गिरनार-समेतशिखर वगेरा जैनतीर्थोमें-तपगछवालोंके तामीर करवायेहुवे जैनमंदिर-और-जिनमूर्त्तियेभी-बहुतायतसें मिलेगी,-

३१ जैनमुनिकों-व्याख्यानके वख्त-या-तमामदिन-मुखपर-मुखवस्त्रिका-बाधना नही फरमाया. बल्कि! ओघनिर्युक्तिशास्त्रमें-हाथमें-रखकर व्याख्यान बाचना फरमान है. जिससें शास्त्रकी बेअदबी-न-हो. जैनमजहबकी साध्वीकों-मर्दोंकी-सभामे व्याख्यान धर्मशास्त्रका देना मना है,-तीर्थंकर मल्लिनाथजीके समवसरणमें-जब-बारा तरहकी बेठक श्रोताजनोंकी बेठती थी,-तो-उसवख्त-तीर्थंकर मल्लिनाथजीके सामने-मर्द-नही बेठते थे औरते बेठती थी,-सबब तीर्थंकर मल्लिनाथजी औरत थे इसलिये जैनमजहबकी-साध्वी औरतोकी सभामे व्याख्यान धर्मशास्त्रका देवे, मर्दोंकी सभामे-न-देवे, ज्ञानी शख्श-लंबे खयालातवाले होते है, उन्होंने अखीर नतीजा-देखकरही-फरमाया है चाहे किसीके खयालीमें-बेठे-या-न-बेठे, इसकी कोई परवाह नही,-अगर-कोई कहे-निशिथसूत्रकी चूर्णिमे-और-उपदेशमालामे जैनसाध्वीकों मर्दोंकी सभामे व्याख्यान देना हुक्म है,—

(जबाब) अगर-हुक्म है,-तो-पाठ-छपवाकर जाहीर किजिये, जिससे पढनेवालोंकों आगाही-हो, विना शास्त्रसबुतके कोई कैसे मंजुर करेंगें? अगर कोई कहे, साधुमहाराज अपनी नामवरी घटजानेकी वजहसें साध्वीजीको व्याख्यान देनेकी-सायत! मना करते होगें, जबाबमे तलनकरे, नामवरी-घटे-या-बढे इसकी कोई परवाह नही, मगर धर्मशास्त्रके बनानेवाले तीर्थंकर-गणधर क्या फरमाते है,-उसतर्फ देखो! और असली नतीजेपर खयाल करो, धर्मशास्त्रोंमे पुरुषोंका दर्जा हमेशा बडा कहा, औरतका-दर्जा-पुरुषोंसें दोयमदर्जेपर है,-जो-शख्श जिस मजहबकों मंजुर रखता हो उस मजहबके शास्त्रपर अमल करना जरूरी है,—

३२ जैनशास्त्रोंमे-जो-आचाम्ल-तप-करना कहा, उसके तीन-दर्जे फरमाये, अवलदर्जा, दोयमदर्जा, और तीसरा दर्जा,-आचाम्ल-तप-उसका नाम है, दिनमे एकही-दफे-लुखा अनाज खाना, इस

तपमे-घी,-तेल,-दुध,-दही,-गुड,-और मिठाइ खाना सख्त मुमानीयत है,-गेहु, बाजरी, मुग, मोंठ-चने-चावल वगेराकी-बनी-हुइ चिजें-इस्तिमाल करसकते है, काली मीर्चे, सेंधा नमक-और-सोंठ खाना हर्ज नही. कोई शख्श एक तरहका अनाज खावे, कोई -दो-तरहके खावे. कोई आलादर्जेका आचाम्ल करे, या-कोई दोयमदर्जेका-जैसी जिसकी मनशा हो, वैसा करे, दोंनों-आचाम्ल कहे जायगें, जैसे कोई शख्श चौविहार उपवास करता है. और कोई -तिविहार उपवासभी करता है, मगर दोनों-उपवास व्रतमे-शुमार किये जाते है,-इसी तरह आचाम्ल-तपके लियेभी समजो,—

[बयान खरतरगछ-मीमांसाका खतम हुवा -]

[जहुरे-आलम,-]

१ इसमे दुनयवी कारोबारका बयान, मुल्क-बमुल्ककी सैर, और शहर बशहरके हालात दर्ज है, जिसके पढनेसें बेहद फायदे हासिल होमकेगें, बखुबी देखलो! आर्यदेशोंमे ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, और-शूद्र-ये-चार जातियें कदीमसे चली आई, धर्मशास्त्रोंमें इसका नाम वर्णाश्रम कहा. वर्णाश्रमधर्मकी हिफाजत होनेका सबब है, वर्णाश्रमसें-धर्मकी तरकी होती है,-जो-लोग सलाह देते है,-अत्यजोंको-मिलानेसें देशकी तरकी होगी, गलतीपर खडे है. हिंदका सिर धर्मके बारेमें-जो-गेरमुल्कोंसें उचा है, बदोलत वर्णाश्रमकेही समजो. -जो-लोग-वर्णाश्रमको मिटाकर धर्मको फेज बखसना चाहते है, बडी भूल करते है, ब्राह्मण, क्षत्रिय, और-वैश्य-शूद्रोंके शाथ रोटी व्यवहार और वेटी व्यवहार नही करसकते, और महाशूद्रोंके शाथ स्पर्शव्यवहारभी नही होता,-मगर-उनके कार्य-ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्योंके कार्योसें अलग तौरके है, थोडे शख्शोंने-वर्णाश्रमको-न-माना, और दो-चार-शहरवालोंने वर्णाश्रमको गिनतीमे शुमार नही

किया-तो-इससें क्या! हुवा? जैसे जैनश्वेतावरसघमें थोडे श्रावकोंनें केशरकों नापाक समजकर इस्तिमाल करना छोडदिया था. मगर बाद चदरोजके फिर जारी होगया, तीर्थ-शत्रुजय, गिरनार, समेतशिखर, आबुजी, अतरिक्षजी, शखेश्वरजी-और-केशरीयाजी वगेरामे देवपूजनमे मणोमद केशर-इस्तिमाल कियाजाता है, थोडे शख्शोंने देवपूजनमे केशर इस्तिमालकरना छोडदिया-वो-बात कौन गिनतीकी है,? हा! पाक और साफ केशर तलाश करना अछी बात है! मगर बिल्कुल छोडदेना ठीक नही,—इसीतरह वर्णाश्रम मिटानेकी बातभी चद रोज चलेगी, हिदमे धर्मकी-नींव-बडी पुख्तगीके शाथ डाली-गई है,-किसी जगह-कम-तो-किसी जगह-ज्यादह, मगर धर्म बिल्कुल नेस्तनाबुद नही होसकता, तीर्थंकर,-गणधर, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, बलदेव, माडलिक, और छत्रपति, राजे महाराजे होचुके, बदौलत-उन्हीके-धर्मकी-जड-हरीभरी रहती चली आई.—

२ हिदमें-पेस्तर-जैसी शिल्पकला मौजूद थी,-अब नही रही.-मगर हिंदकी जमीन इसकदर फल देनेवाली है, अगर एक साल-उमदा बारीश होजाय-कई सालतक उसकी तरी बनी रहेगी.-तरह तरहके फल-फूल-और-अनाज-इतने-पैदा होते है,-जो-खानेवाले -खा-नही सकते, जमाने पेस्तरके विद्याधरलोग-बजरीये विद्याके आसानमे सफर करते थे, हिंदकी चित्रकला मुल्कोंमे मशहूर थी,-और-अबभी-है, हिदकी पैदा होइहुई वनास्पतिमे-जैसा-रस-कस है, दुसरे देशकी वनास्पतिमे-कम-देखोगें, चाहे-रग-बेरगी-फूल हुवे-तो-क्या! हुवा? खुशबू नही-तो-अकेले रगकों क्या करना? तवारीख पढनेवालोंकों मालुम होगा, जमाने तीर्थंकर और चक्रवर्त्तीयोंके हिदमें किसकदर-दौलत-और जवाहिरात था? आदमीयोंकी तकदीरके सितारोंने-जोफ-खाया, दौलत कम होती गई, जिस जमानेमे-जो-चीज हाजिर हो बजरीये उसीके काम लेना चाहिये, एरो-

पलेन,-रैल, तार टेलिफॉन, ष्टीमर,-फोनोंग्राफ, और हारमोनियम-वगेरा चीजें जमाने हालमे मौजूद है,-उन्हींसें काम लेना वहेत्तर है, -जैसा वख्त देखना-वैसा वरताव करना. अगर शस्ति और दिल-पसंद चीज हयात है,-महेंघी-और-नापसद चीज कौन खरीदेगा? संचेसें-सूत-जल्दी-काता-जाता है, फिर हाथसें सूत कौन कातेगा? जिससे वख्त ज्यादा लगे और खर्चमे तगी पडे वैसा काम करना क्या! जरुरत? गुजरान चलाने जितनी पैदाश-न-हो, खान-पान -और दुनयवी कारोबार चलानेमे फायदा-न-मिलता हो,-तो-दिनभर-सूत-कातनेमेही वख्तकों-क्यौं-वरबाद करना? दुनियामे मिशल मशहूर है,-"कमाइमे सब समाई है,"-और कमाई होना-न-होना तकदीरके ताल्लुक है,-अगर कोई कहे-आत्मबलसें कार्य करना चाहिये. मगर पूर्वसचित-कर्मके-आगे-आत्मबल-क्या कर-सकता है? अशुभकर्मके उदयसें दिलीइरादे नापाक होजाते है, निका-चित-कर्मके-सामने चाहे जितनी कोशिश करो कारआमद नही होसकती, जब पूर्वसचितकर्म-हट-जायगें जभी आत्मबल चल स-केगा, चाहे स्वदेशीकपडा पहनो,-या-दुसरे देशके बनेहुवे पहनो,-जबतक तकदीरका सितारा बुलद नही-तो-कुछभी नही, कितनेक कहते है-चाह-पिना कम करो, मगर-चौं-कमहोना पिनेवालोके ताल्लुक है,-कहनेवालोंके ताल्लुक नही.—

३-पाक-और-नापाक चीजपर खयाल कियाजाय-तो-सरगी-तबले चमडेके बनेहुवे होते है,-मगर इरादे धर्मके देवमदिरमें लाये-जाते है,-शंख-दरअसल' बेइद्रियजीवका कलेवर है, मगर इरादे धर्मके देवमदिरमे बजाया जाता है,-कुवेके-या-नदीके पानीमे कबू-तरकी वीठ-और-दुसरे परींदोंके-हाड चामभी-पडे रहते है, फिर पानीको पाक और साफ कैसे माना? और जिनमूर्त्तिके-स्नानक-रानेके काममे कैसे लायागया? अगर कहा जाय,-व्यवहारमार्गकी अपेक्षासें पानीको-पाक और साफ माना है, इसीलिये जिनमूर्त्तिके

स्नानमे लायाजाता है -तो-फिर-व्यवहारमे-जो-चीज-पाक मानी गई उसकों पाक समजो, खयाल करो, चमडेकी मशकमे भराहुवा पानी व्यवहारसे पाक माना गया है, और इसीलिये पीनेके काममे लाते है,-हिंग-जन-तयार होती है, चमडेमे बाधीजाती है,-वना-स्पति पैदा होनेके खेतोंमे-पेस्तर खात डालाजाता है,-खातमें-कई चिजें अशुद्ध मिली रहती है-मगर जन-खेंत-हराभरा होजाता है, तो -सब-उसमे मिलजाता है, सबुत हुवा,-वस्तुकी शुद्धाशुद्धि पैदाशके खयालसें शुमार नही किइजाती, मगर दुनयवी खयालसें शुमार किई जाती है, पेस्तरके लोग केशर, कस्तूरी, जायफल, जवत्री, बादाम पिस्ते-वगेरा चिजोंसे मिलाहुवा-गरम-दूध पिते थे, आजकल चाह-पानीका रवाज चलगया है,-झुकनाडकी चाह, लिपटनकी चाह, नीलगिरिकी चाह, जिसकों-जो-पसद हो पीवे,-कई लोग चाह पीते है,-उसमें पानी ज्यादह, और-दूध-शकर-बहुत कम, ऐसी चाह -फायदेकी एवजमें नुकशान पैदा करेगी. चाह पीना हो-तो-तीन हिस्से दूध-और एक हिस्सा चाहका पानी-शकर-न-बहुत कम-न -ज्यादह-उमदा तरकीनसें बनीहुई-चाह पीना फायदेमद है,-कई जगह चाह और अकेला पानी उकालकर खूब गरम करते है,-और-फिर उसमें तोलाभर शकर और एक चमचा दूध डालकर पिते है,-और शिकायत करते है, हमकों चाहसें नुकशान पहुचा, खयाल कर-नेकी जगह है,- ऐसी-कडवीचाहसें नुकशान-न-हो-तो और क्या हो? कइलोग सकर-और पानी खूब गर्म करके उसमे चाह डालते है, और थोडी देरके बाद जब चाहका असर उसमे आगया, उतारकर उसमे दूध मिलाकर पीते है, कइलोग-दूधकों-विना गरम किये मि-लाते है, मगर दूधको अलग गरम करके फिर चाहमे मिलाना चा-हिये,-कइलोग (४०) तोले दूध, और (२०) तोले पानी मिलाकर उसमे (१०) तोले सकर डालते है, और खूब गरम करके जब दश तोले पानी-जलजाय पाव तोला-चाह-डालकर ढकना बद करके

दश मिनिट गरम होनेदेते है,-और-फिर-चुलेपरसे-उतारकर वारीक कपडेसे छानते है, और चद्रस्वरमे पीते है,-यह एक शख्शकेलिये-चाह दूधका इतजाम हुवा समजो,-दो-तीन-चार शख्शोकेलिये-दुगुना-तीगुना-चारगुना सामान लेना होगा, बहुतसें लोग-चद्रस्वरका तरीका जानते नही. अगर जानते है-तो-उसपर अमल करते नही, और सूर्यस्वरमें चाह दूध पिते है,-इससें फायदेकी ऐवजमे नुकशान उठाते है, चाह-दूध-पानी-शरबत-या-ठडाई वगेरा प्रवाही पदार्थ -चद्रस्वरमे पीना फायदेमंद कहा.—

४-तमाखू-सिगरेट-चिलम-बीडी-वगेरा चीजे नशेकों पैदा करनेवाली है, इनसें परहेज रखना चाहिये, कितनेक शख्श चार चार-या-आठ आठ आनेकी सिगरेट हरहमेश पीते है, अगर उनको कोई मना करे-तो-सुनते नही, अपने ज्ञानततुओंकों-बिगाडकी-सुरत पैदा करते है, जैसे साफ मकान धुआ लगनेसें-कालाशाह होजाता है,-नशेकी चीजोंसें ज्ञानततु बिगडजाते है, हर इन्सानको कमसे कम-आठ रोजमे कपडे बदलदेना चाहिये.-शेठ-साहूकार-वगेरा दोलतमद शख्शोको-चार चार-रोजमे कपडे बदलना, और राजे-महाराजे अगर हरहमेश नयी-पुशाक-पहने-तो-पहनसकते है, दौलत पाकर अछे कपडे नही पहने-खानपान अछा नही किया, और धर्ममे खर्च नही किया-तो-क्या! किया? दिलके दलेरोंको यहबात जरूर पसंद होगी, मगर-जो-कजुस है, इस बातको कभी पसद नही करेंगे केश-डाढी-मुछ-और नख ज्यादा बढाना बहेत्तर नही,-मामुली तौरसे रखना चाहिये. केश एक तरहकी खुबसुरतीका सबब है औरतोंकेलिये-तो-उमदा शिंगारही है. मगर तेल-फुलेलसें खुशबूदार बनाये रखना चाहिये,-बरना! केशोंका बढाना-तकलीफकी निशानी है,-अगर कोई इस दलिलको पेश करे-बालकोंका मरना-कम हो-वेसी-कोशिश करना चाहिये,-मगर-इन्साफ कहता है,-मरना किसीका कोई रोक नही सकता,-साफ रहना और नापाक

आर हवासें बचना वेशक! अछा है.-आयुष्य कर्मके आगे किसीका जोर नही दुनियामे मिशल मशहूर है, इटीकी घुटी नही.-उम्र-खतम होनेपर उसको कोई बढा-नही सकता, जैसे बालकोंका मरना कम हो,-इस बातका फिक्र किया जाता है,-तो-जइफोंकेलियेभी-इस बातका फिक्र-क्यों-न-करना? मगर करे कौन? मरनेकी आफतही ऐसी है,-जो-इसके सामने कोई उपाय कारआमद नही होता, -वेशक! इतना उपाय करसकते हो. कपडोंसें-खानपानसें और-गदनसे साफ रहना,-और-जहातक बने मकानमेभी सफाई रखना.—

५ हिंदमे जब संयुक्तप्रांतकी प्रदर्शनी-इलाहाबादमे हुई तरह तरहकी चीजें उसमे आई थी. जिन्होने मजकुर प्रदर्शनी देखी होगी मालुम होगा, इसका हाता (१२०) एकर जमीनमे बना था, रस्ते वगेराकी जगह मिलाकर-कुल्ल (२५०) एकर जमीन रोकी गई थी, बेंडस्टेड-जहां-बेंड-बजाया जाता था, चाहपानी और हलवाइयोंकी दुकाने लगीहुई थी प्रदर्शनीमे जानेवालोंको-टिकिट-लेनापडता था, तरह तरहके-खेल-तमाशे-और-खानपानकी चीजें उसवख्त वहां आई थी, हाथीदांतकी बनीहुई चीजें-जडाव चीजें-नकासीदार चीजे-रेशमी और सूतकी बनीहुई चीजें-मिट्टीकी बनीहुई चीजें तरह तरहके बाजे और जवाहिरातकी चीजें-पत्थर तोडनेकी कल, रोल बनानेकी कल, कचे रबरकी कल, तेल पेलनेके कोलुके ओजार, और गोली बनानेकी कलभी-बहुतसी आई थी, मोटार-साइकल-बगी-रेशम साफ करनेकी कल, सोडा-वोटर बनानेकी कल,-एरोपलेन, और मोडेलरेलवे, तरह तरहकी जेबघडी, टाइमपिस, और बडी-बडी घडियेभी इस प्रदर्शनीमे रखीगई थी,—

६ टेबल, मेज, खुर्शी, शीशेकी आलमारी, लकडेजी आलमारी, कागज बनानेकी कल, बरफ बनानेकी कल, दियासलाई बनानेकी मशीन, कपडेपर कलप चढानेकी कल, सोने-चांदीके बनेहुवे पाकीट, दूधसे मख्खन निकालनेका यत्र, छाता बनानेका कारखाना, आस्ते-

लियाके रगीन शंगेमर्मर, विजलीकी बत्तीका सामान, और रोंशनी देनेवाली मशीन वगेरा चीजेंमी-लाइगई थी. तरह-तरहके गालिचे शतरज-पेंशानरके बनेहुवे कपडे, लखनउ शीतापुर और बुलदशहरके छपेहुवे-रगीन कपडेमी-मौजूद थे, गोटे-कनारीका-काम-सल्मे-सितारेका काम, लखनउके कसीदेका काम-बतौर नमुनेके दिखाया गया था. इत्र बनानेकी तरकीबके नमुने, ओरिसा-आगरा-मथुराका नकसीदार काम और उसके नमुने, मद्रास-लाहोर और सगनोंरके बनेहुवे कामके नमुने, जवाहिरात-सोने और चादीके असवाव और मोतीयोंके-हारमी-रखेहुवे थे, मुल्क तिब्बतकी बनीहुई चीजें और लकडीका काम, बुधदेवकी मूर्त्ति-वहाका कबल और लेपसा-चादरभी दिखलाई गई थी. खुदेहुवे कामकी जालिया-निहायत उमदा फोटोग्राफ और हाथकी बनीहुई तस्वीरे,-और-वजन करनेकी-एक-कल-जिसपर मर्द-या-औरत खडी होजाय उनका कितना वजन हुवा अदरसे अवाज देकर कहदेती थी, हिंदमे नजीकके दिनोंमे-कई-प्रदर्शनीयें हुई, उनमे-यह-सयुक्तप्रातकी प्रदर्शनी सबसें बडी थी. प्रदर्शनीकी चारोंतर्फ किलेके मेंदानमे-खेंमे-गाडे गये थे, वाइस्कोप और नाटकमी-एक तर्फ था, जमना कनारे एक खूबसुरत-वेल्कम-कलब-बमुजब हिंदके रीतरवाजपर सजायागया था, जहा-बेठकर कुछ देरतक-आराम करनेका-बातचित और अखबार पढनेकामी मौका था, गगा-यमुना-कनारे इलाहाबाद एक-रवन्नकदार शहर है, और प्रदर्शनीके वख्तका-तो-कहनाही क्या? बेंशक! चदवर्सोंमे ऐसी प्रदर्शनी हिंदमे नही हुई.—

७ दौलतमद शख्शोंकों मुताबिक अपनी हेसीयतके किसीतरहकी सवारी रखना चाहिये,-चाहे बगी घोडा-मोटार-या-बाइसिकल-यह उनकी मरजीकी बात है. मकानमे-एक-कमरा-ऐसाभी-मुकरर कररखना चाहिये. जिसमे बेठकर सलाह किइजाय, रसोइघर अलग होना चाहिये. सोने-बेठनेका-मकान-और-तिजारतकेलियेमी-अ-

लग-मकान होना जरूरी है.-नोकर चाकर ऐसे रखे-जो-नेक और हुक्मअदुली -न-करे, स्नान मज्जन करनेका मकान-और हाजत रफा करनेकेलिये मकान साफ और अलायदा होना चाहिये, हरशख्शको लाजिम है,-मुताबिक-अपनी खानदानीके-पुशाक अछी पहने, उमदा कपडोंसे अपनी इज्जत है,-मगर यहभी-याद रहे! आमदनी देखकर खर्च करना. दुसरोंका कर्जा लेकर उमदा कपडे पहने-इससे क्या हुवा? इमसें-तो-सादा-पुशाक पहननाही बहेत्तर है, जहोरी और इत्रफरोस उमदा कपडे पहनेगें-तो-उनके मालकी तारीफ बढेगी, कोट, जाकीट, पघडी, दुपट्टा, खमीश, धोती, मोंजे, उमदा बुट, जेंबघडी, और उमदा चेन रखना मुताबिक जमानेके अछा है,-दौलतमदोंकों मुनासिब है,-जब-घरसे बहार निकले-तो-पांचदश रुपये शाथ रखना.-न-मालुम किस वख्त कोई काम आनपडे कइ लोंकों यह बात नापसद होगी मगर दिलके दलेर शख्श इसकों जरूर पसद करेंगें,-जो-लोग गरीब है,-रुपये-पैसे-शाथ नही रखसकेंगें, मगर कपडे धोयेहुवे-साफ-जरूर पहना करे, मेले कपडे पहनना-कम-अकलोंका-काम है.—

८ अगर किसीके घर जाना हो-अबल-उनकों इत्तिला देकर जाना चाहिये अपने शाथ कोई भी-आदमी-न-हो. मकानके बहारसे अवाज देकर अदर-कदम-रखना, जिससें घरवाले लोग समजमके कोई साहब हमारे घर तशरीफ लाते है, जिनके घर-जानेस अपना-मान-मरतबा-न-रहता हो, वहा जाना कोई जरूरत नही. अछे लोगोंका फरमाना है,-अपनी-इज्जत अपने आप रखना, जिसके मकानपर जानेसें अपना मरतबा-न-रहता हो, वहा क्यों जाना? चाहे मर्द हो-या-औरत इस बातकों जरूर याद रखे अपने-घर-कोई महमान आये उनकी खातिर-तवजे करना फर्ज है उनके घर जानेपर अपनीभी खातिर-तवजे होगी, अगर कोई सोदागिर गेरमुल्कसे अपनी दुकानपर आवे-उनकी खातिर करना-अपना फर्ज है,—

९ बाग-बगिचे-एक तरहके आराम लेनेकी जगह है,-अछे लोग -जन काम करतेहुवे-थक-जाते है, बागबगिचोंकी सेरकों जाते है, -और मग्जको आराम देते है. चाहे दौलतमद हो-या-गरीब-शुभह -शाम-हवाखोरीको जाया करे. अगर अपने घर-बगी घोडा-या- मोटार हाजिर हो,-तो-उनसें सवार होकर जाना चाहिये. पैदल जानेवाले-पैदल जाय जिससें शुस्ति रफा होगी और तदुरुस्ती बढेगी. दौलतमद शरशोंकी औरते घरमे नोकर चाकर होनेकी बजहसे कामकाज करती नही. खाना हजम-न-होनेसें बदन शुस्त होजाता है, फिर खानिंद्में शिकायत करती है, हमारी तबीयत दुरुस्त नही. तबीयत दुरुस्त कैसे रहे? अगर तनक पसीना आजाय उतनी मेहनत उठाया करे तबीयत मजेमे रहेगी,-जिनके घर-औरतोंकों-पर्दा -है, बहार जाना आना बनता नही. और देवदर्शन वगेरा धर्मके काममेभी-खलल पहुचता है,-ऐसा पर्दा-किस कामका जिससें धर्मम नुकशान हो,—

१० पेस्तरके जमानेमे जैनमुनि-उद्यान-बनखंड-और बागबगि- चोंमे कयाम करते थे, जिससें उनकों साफ हवा मिलती रहती थी. -शहरमे भिक्षाकों जाना आना यह एक तरहकी-कमरत समजो - चलने फिरनेसें-बदनमे फुर्त्ती रहेगी, नवकल्पी विहार करना इसी- लिये कहा, बदन तदुरुस्त रहे,-और-हरजगहके लोगोंको-तालीम धर्मकी देनेका मौका मिले.-बहुत अर्सेतक एक जगह बेठे रहनेसें- बदहजमी होकर बदन खराब होजाता है,-जैनमजहबकी साध्वीकों- भी-इसीलिये-विहार करते रहना फरमाया, विहार-न-करे,-और- एक जगह बहुत अर्सेतक रहे-तो-जरूर तदुरस्ती बिगडेगी. मुनासिब है,-एक गावसें दुसरे गाव और दुसरे गावसे तीसरे गाव-सफर करते रहना. और धर्मशास्त्र पढते रहना,—

१० थियेटर और खेल-तमाशे दुनियादारोंकेलिये एक तरहकी खुशी पैदा होनेके सबब है,-अगर किसीका दिल दुनयवी कारोबारसे

रंजिदा होजाय-तो-धर्मपुस्तक-जो-अपनी समजमे आसकता हो वाचना शुरु करे, समजमे-न-आसके ऐसा पुस्तक वाचना कोई फायदा नही, तीर्थयात्राकों जाय-या-दुसरी तरहके काममे दिलकों लगावे. अगर किसी मर्दने औरतसे-या-किसी औरतने मर्दसे दगा पाया हो-और-दिल नाराज हो-तो-लाजिम है, आपसका मिलना छोड देवे. चिठी लिखनाभी बंद करदेवे चंदरोजमे दिल हठ जायगा और चैन मिलेगा. एक शख्सकी औरतका इतकाल होगया. और उसका दिलनिहायत रंजीदा हुवा, मगर जब बाद चंदरोजके दुसरी औरत विवाही-पहलीकों भुलगया.-इसीतरह एक औरतका-खाविंद गुजर गया औरत-बडा-रंज करनेलगी. मगर जब चार-छह-महिने बीत गये,-खाविंदको बिल्कुल भुलगई, दुनियाफानी-सरायका-यही किस्सा है, धन-दौलत-और सुख चैन पाना तकदीरके ताल्लुक है. -बकरी चरानेवाले अपनी तकदीरसे राज्य पाते है,-और राजे महाराजोंको कभी जंगलमभी बसर करना पडता है,-ये-सब अपनी तकदीरके खेल है. अगर कोई चाहे-मे-दौलतमंद बनजाउ-तो-विना आलादर्जेकी तकदीरके कैसे बनसकेगा? पूरवजन्ममे दान पुन्य-किया-नही तो यहां दौलत कैसे मिले? अगर कोई-इस सवालकों पेश करे फलां दौलतमंद शख्श पापकर्म करता है,-फिरभी-उसकी दौलत क्यों बढती जाती है, जवाबमे तलब करे, उसने पूर्वजन्ममे पुन्य किया था, जिससे इस जन्ममे उसकी दौलत बढती जाती है और यहां-जो-पापकर्म करता है,-उसका फल उसकों आइंदे मिलेगा, गरीब शख्श अगर यहां पुन्य करेगा, अगले जन्ममें दौलत पायगा धर्मशास्त्रोंमें-१-पुन्यानुबंधि-पुन्य, २-पापानुबंधि-पुन्य, ३-पुन्यानुबंधि-पाप, और-४-पापानुबंधि-पाप,-ये-चार तरीके फरमाये, इनको बगौर समजना चाहिये जिसने पूर्वजन्ममें पुन्य किया था-यहां-सुख चैन पाया. और यहाभी पुन्य करता है, इसलिये अगले जन्ममे चैन पायगा इसका नाम पुन्यानुबंधि पुन्य है, दुसरा

तरीका पापानुनधि पुन्यका, जिसने पूर्वजन्ममे पुन्य किया था-यहा -दौलत पाई, मगर यहा पुन्य नही करता इसलिये अगले जन्ममे तकलीफ उठायगा,-तीसरा तरीका पुन्यानुनधि पापका-जैसे किसीने पूर्वजन्ममे पाप किया था, यहा उसको दौलत नही मिली, मगर यहां पुन्य करता है, इसलिये-अगले जन्ममे सुख चैन पायगा, चौथा तरीका, पापानुनधिपापका, जो-बिल्कुल निकम्मा है, जैसे किसीने पूर्वजन्ममे पाप किया था,-तो-यहा तकलीफ पाया, अवभी फिर पाप करता है. आगेकों तकलीफ पायगा, इसका नाम पापानुनधि पाप हुवा. इन चारों तरीकोंमे पुन्यानुबधिपुन्यका तरीका सबसें बहेत्तर, दोयम-दर्जे-पुन्यानुबधिपापभी-अछा, शिवाय इनके बाकीके पापानुनधि पुन्य-और पापानुबधिपाप-ये-दो-तरीके काबिल छोडनेके है,—

११ जो-शख्श अधर्मसे मुक्ति चाहता है.-वो-तेजभालेकी नोंकसें अपनी आखकी खुजली मिटाना चाहता है, जैसे आखोंका-अधा-साप-अपने दरसें निकसकर फिर उस-दरमे-नही पहुचसकता, इसीतरह फुटी तकदीरवाला शख्श-गुमाईहुई दौलतकों फिर नही पासकता, कितनेक शख्श-बोलनेमे ऐसे होशियार होते है,-जो-लेनदार उनके सामने आजाय-तोभी-बडी खूबीसें जवाब देते है,-फर्ज करो! एक शख्शके पास दुसरा शख्श तीस रुपये मागता था. -वो-आनकर कहनेलगा, चार-चार-महिने होगये, आप फिरभी तीस रुपये देते क्यों नही, कर्जदारके पास उसवख्त दशही रुपये थे, कहनेलगा, दश देयगें, दश दिलवायगें, दशकी-बात-क्या है? लिजिये! ये-दश रुपये. गरज! दश रुपये देकर लेनदारकों रवाना किया, देखिये! चतराई इसका नाम है.-बेशक जिसका कर्जा लियाहोगा-वो-तो-देनाही पडेगा, इस जन्ममे नही-तो-दुसरे जन्ममे-मगर देना जरूर होगा, हर इन्सानकों लाजिम है.-जितनी आमदनी उतना खर्चा रखे. आमदनी-कम-और खर्चा-ज्यादा रखना कौन चतराइकी बात?—

१२ कइ-शख्श ऐसे शुस्त होते है,-जो-खुद कोई कार्य कर-सक्ते-नही, और अगर दुसरा कोई कार्य करदेवे-तो-उसमेंसें गलती निकालते है,-एक शख्श इसकदर शुस्त था, अपने बदनके कपडेभी साफ नही रखता था, एक रोज दोस्तने कहा, आपके कपडें साफ नही, लाइये! मे-नलपर जाकर साफ करदु, उसने उसी तरह कपडे साफ करके-ला-दिये, शुस्तने कहा, ऐसे क्यों धोये. इमसे-तो-मे अछे धो-सकता था, देखिये! आप कामकरना नही और दुसरा करदे-तो-उसकी गलती निकालना, दुनियामे कइ ऐसे शख्शभी मोजूद है,-जो-धर्मकों कुछ चीज नही समजते, और कहते है,-धर्म-धुर्म-उठ गया, परलोक किसने देखा? मगर इतना नही सोचते-दुनियामे सारवस्तु धर्म है, बदौलत धर्महीके सुखचैन पाया और आगेको पायगें,—

१३ कइयोका कहना है,-हिंदमे करीब (२५००) वर्स-पेस्तर कितनी दौलत और आरामचैन था, मगर इतना खयाल नही करते इस बातकों कितना अर्सा गुजरा? सो-पचास वर्समे फेरफार देखते हो-तो-पचीससो वर्सकी बातही क्या करना? अगर कोई कहे, हमारी सातमी पीढीवाले बडे दौलतमद थे, हम नौकरी करते है, खयाल करनेकी बात है,-सातमी पीढीवालोंकी दौलत अपनेकों क्या काम आइ? कोरीबातें बनाना क्या फायदा?-अपनी ताकात देखकर चलना चाहिये,-चाहे जितनी सभा भरो, और ठहराव पास करो,-जबतक उसपर अमल नही किया-तो-वे-ठहराव कहनेमात्र समजो,—

१४ मुल्कोंकी सफर करनेसें चतराइ हासिल होगी. जिस जिस मुल्ककी सफर किइ जाय वहाकी रीतरश्म-खानपान और पुशाक देखकर कइ तरहकी माहिती मिलेगी. कइ शख्शोंके शाथ मुलाकात होगी तीर्थोंकी जियारत, शिलालेख, पुरानी इमारतें, कोट, किले, मंदिर, और राजमहेल देखनेका मौका मिलेगा. पेस्तरके लोग पैदल

मुसाफरी करते थे, जमाने हालमे-ब-जरीये रैल, मोटार, ष्टीमर और एरोपलेनके करते है, जिस जमानेमे-जो-चीज मिलजाय उसीसें काम लेना ठीक है,-अपने मुल्ककी चीज बेशक! अपनेकों पसद होती है, मगर दुसरे मुल्ककी चीजभी अगर उमदा बनी हुई हो, जरूर पसंद होगी, कभी कोई शहर आबादीमे-कम-और कोई ज्यादा कभी विरान जमीन आबाद और आबाद विरान होजाती है,-इसमे कोई ताज्जुबकी बात नही, पेशावर, कोहाट, क्वेटा, कश्मिर हिमालय और नयपालमे-मेवा कसरतसे पैदा होता है,-काबुलके अनार, सेब, और अंगुर उमदा, बबइके-कलमी हाफुस, और पायरी आम, बनारसके लगडे आम, दखन-हैदराबाद और मद्रासके मलगोबा आम, उमदा होते है,—

१५ मकान बनानेमे पेस्तर कलि चुना लगाया जाता था, आज कल कलिचुना और सिमेट ज्यादा लगाइ जाती है, बडे बडे-कारखाने-और ओफिसोंके बाधकाममे यही सिमेट ज्यादा देखोगे, रेलमे विजलीके लेप और पखे लगे हुवे चलते मुसाफिरोंकोंभी-काम देते है, देहलीसें लगाकर कलकत्तेतकके शहरोंमे इक्के चलते है, और उनमे तीन आदमी-सवार हो सकते है,-गोरखपुरतर्फ-पालखी उमदा बनती है,-काश्मिरके बने हुवे दुशाले-और ढाकेकी मलमल एक मशहूर चीज है,-अफगानीस्तान और काबुलतर्फ-चमडेके-कोट बनाये जाते है,-और ठडके दिनोंमे पहने जाते है,-बुखारा-तुर्कस्तान और अफगानीस्तानमे-गालिचे-कबल और खेमेके सामानोंकी तिजारत ज्यादा, फारस-कासगर-और-यारकदके गालिचे उमदा, जब जब मेहफील-मजलीज ओर दरबारे आम-भरनेका मौका आनपडे गालिचे जरूर बिछाये जाते है, और इससे जमीनकी खूबसुरती बढती है,—

१६ दुनियामे अगर-रग-न-होता-तो-हरचीजकी-खूबसुरती भी-न-होती, रगसेही तरहतरहकी पुशाक सजाइ जाती है, मका-

नकी दिवारपर अगर-रग-लगाया गया हो, देखनेवाले खुश होकर तारीफ करते है,-चित्रकारीके लिये-तो-पुछनाही-क्या! रगहीसें चित्रकी खूबसुरती बढती हैं,-अपने-बदनमेही-तरह तरहके रग देखलो! केश काले, आखोंकी-कीकी-काली, दात सफेद, होठ लाल, और कइ शख्शोके बदनकी चमडी तरह तरहके रगकी देखी जाती है, सबुत हुवा, दुनियामे रगभी-एक-खुबसुरती बढानेका सबब है,-झडे और झडीये रग-बरगी हो-जभी उमदा मालुम देगी, वनास्पति, फल, फुल, और पत्ते-तरह तरहके रगदार होनेपर बाग-बगिचे अछे दिखाइ देते है,-पघडी दुपट्टे, रगीन मलमल,-धोती-कमीज, कोट, तरहतरहके बिछौने-और-फौजके सिपाहीयोंकी-रगदार पुशाक-देखनेवालोंके दिलकों खुशी-पैदा करती है,-नी लारग-नीलसें बनता है,-हलदी-केशुके फुल-और हारशिगारके फलोसें पीलारग तयार होता है,-पीले और नीलेरगकों मिलानेसें हरारग बनता है,-लाल और नीलेरगको मिलानेपर-बेंगनीरग बन जाता है,-पुद्गल परमाणुओमे-तरह तरहके वर्ण-गध-रस-और स्पर्श-होना-जो-तीर्थंकर-गणधरोंने फरमाया बहुत-बहेत्तर है,—

१७ अगर मकानकी सजावट करना चाहते हो, इर्दगिर्द बगिचा होना जरूरी है, रग रोशन किया हुवा मकान, टेबल, खुर्शी, फरनीचर, आइने, उमदा तस्वीरे, हडी, तक्ते, खुबसुरत काचकी अलमारीये, छोटे-बडे खिलौने, चादीके बर्तन, फोनोग्राफ, हारमोनियम, सरगी, तबले, सितार, और तरहतरहकी खुशनुमा चीजे रखना चाहिये. अमेरिकाके ऑर्गन, और फ्रासके बने हुवे हारमोनियम मशहूर चीजें है, हिंदम सरगी, तबले, बीणा, और तबुरे उमदा बनते है,-बीणा-सगीतकलाकी-एक-महारानी है,-जिसकों-श्रीपालराजाने-मज लीशमे बजाकर आमलोगोंको खुश किये थे,-बीणा और सितार-गत-तोडे-और आलाप देकर राग-रागिनीकों बतलाते है,-गानेवालेके-स्वरकी-सगत करनेमे सरगी बढकर है, देखिये! सरगीकी

तातपर-गज-उपरसें फिराया जाय और निचेकी-तरबें-जबान दे. कितनी ताज्जुनकी बात है? सरगी-वो-बजायकेगा-जो-रागरागिनीका-पुरा-जानकार होगा.—

१८ तीर्थंकरदेव-समवसरणमें-मालकोश-राग और भीमपलाशी रागिनीमे आमलोगोंको तालीम धर्मकी देते थे. और इंद्रदेवते दिव्यबाजोंसे उनके गायनकी सगत करते थे आवश्यकसूत्रवृत्तिमे तीर्थंकरोंके समवसरणका बयान है, उसमे साफ लिखा है. तीर्थंकरदेव रागरागिनीसें तालीम धर्मकी देवे, इंद्रदेवते उनका स्वर पुरे, और आमलोग सुने,-जिससें सुननेवालोके दिलपर ज्यादा असर हो.-अगर कोई जैनमुनि-रागरागिनीके जानकार हो. और ताल-स्वरसे-गायन करसकते हो-तो-सवेर वख्त व्याख्यानमें-जब-धर्माधिकारमें सूत्रसिद्धांतकी वाचना खतम हो, और भावना-अधिकार वाचना शुरु करे-कालिगडा-या-भैरवी-रागिनीमे तालीम धर्मकी देवे, हारमोनियम-तबले बजानेवाले उनके गायनकी सगत करे-तो-कोई मना नही. तीर्थंकरोंको-या-मुनिजनोंको-पाच इंद्रियोंकी विषयपुष्टिका गायन करना मना है,-मगर धार्मिक-गायन करना मना नही. अगर सवाल कियाजाय-तीर्थंकरदेवकों चौतीश अतिशय मौजूद थे,-इंद्रदेवते उनकी खिदमतमें रहते थे, और उनकी बराबरी-मुनिलोग-कैसे करसकेगें, जवाबमे मालुम हो, फिर मुनिलोगोंकों-इच्छामि क्षमाश्रमणके पाठसे वदन क्यों कियाजाता है? तीर्थंकर देव-तालीम धर्मकी देते थे. मुनिलोगभी देते है.-इससेभी-बराबरी होजायगी -इसलिये व्याख्यानभी नही देना चाहिये, अगर कहाजाय-इरादे धर्मके वदन और-इरादे धर्मकेही व्याख्यान दियाजाता है,-तो-जवाबमे मालुम हो, रागरागिनीसे व्याख्यान देना यहभी-इरादे धर्मके-समजो, इस बातका कोई-कैसे-इनकार करसकते है?—

१९ धर्मशास्त्रका फरमान है,-देवदर्शन,-तीर्थयात्रा, स्वधर्मिवा-

त्सल्य, परभावना-और शास्त्र सुननेमे-शोंकसताप-नही रखना. मर-नेवालोके पिछें जन-उठमना कियाजाता है, शोंकको उठादेना चाहिये एक शख्शका-जवान लडका इतकाल होगया -मगर उसने दुसरेही दिन-शास्त्र सुननेमे खलल नही डाला और दिलमे खयाल किया, एक-मेहमान-अपने घर आया था. वो-चला गया. इसका शोंकसताप करनेसें क्या! फायदा,? तारीफ करना चाहिये,-ऐसे शख्शोकी जिसने दुनियासे नढकर धर्मकों समजा, एक शख्श घरसें रवाना होकर तीर्थोकी जियारतकों गया. इधर घरपर उसका कोई रिस्तेदार मर गया. और उसकों खबर पहुची, मगर उसने लिखा, जबतक मेरी जियारत खतम-न-होगी पिछा-न-लोटुगा,-धर्मकी कदर करना इसीका नाम है -जिसने धर्मकी-धर्मपुस्तकोंकी-देवम-दिरोंकी और तीर्थोंकी कदर किई, उसने धर्मकों-तरकी दिई इसमें कोई शक नही, पेस्तरके जमानेम-हाथके लिखे-धर्मपुस्तक होते थे. जमाने हालमें छापखानोंम छपते है, और आसानीसें मिलसकते है,-जो-लोग-कहा करते है धर्मपुस्तक छपवाना बहेत्तर नही जिनवानीकी बेंअदवी होगी, जवाबमे तलब करे, धर्मपुस्तक छपवानेवालोंका इरादा ज्ञान फेलानेका होनेसें-उनकों पुन्य है,-पाप नही,-जो-लोग-धर्मपुस्तकोंकी बेंअदबी करेगें,-उसका-पाप-बेंअदबी करनेवालोंको लगेगा, छपवानेवालोंकों नही, छपवाने वालोंका इरादा धर्मकी तरक्कीका होनेसें उनकों-पुन्यही है,-सब बात इरादेपर दारमदार है फर्ज करो! पेस्तरके धर्मपावद शख्शोंने जगह-जगहपर जिनमदिर और जिनमूर्त्तियें तामीर करवाई उनका इरादा धर्मकी तरकीका था. पिछेसें किसी इन्सानने उनकी-बेंअदबी किई, बतलाइये! उसका पाप क्या मदिरमूर्त्ति तामीर करानेवालोकों लगेगा? हर्गिज! नही, उनका इरादा-धर्मका था, इसलिये उनकों पुन्य हुवा इसीतरह धर्मपुस्तक छपवानेकी बातभी समजलो,-जो-जो-शख्श-धर्मपुस्तक छपवाते है,-उनका इरादा धर्मकी तरकीपर

होता है,-जहा इरादा धर्मका है, वहा भावहिंसा नही. और वगेर भावहिंसाके पाप नही.-इस मिशालको समजलेनेसें तमाम शक रफा होजायगें,—

२० छोटे लडकोंकों-इल्म पढाना-तो-अवल मजहबी तालीम देना चाहिये, जिससें उसके दिलमे धर्मकी-नींव-पुख्ता लगजाय, और फिर-वो-तानेउम्र धर्मपर सावीत कदम बना रहे, आजकल कइलोग अवल तालीम धर्मकी देते नही, और कहते है.-हमारे लडके धर्मपर पावंद नही.-अगर आपकों धर्मपर कामील एतकात है,-तो -लडकेको अवल धर्मकी तालीम दो. धर्म-बना रहा-तो-सब बना रहेगा, हीरा, पन्ना, माणक, पुखराज-और मोती-धर्मसें कोई बढकर नही, हिंदमे पेस्तर सोना महोरें चलती थी,-जो-किम्मतमे पचीस रुपयोके अंदाजकी शुमार किईजाती थी, तरह-तरहके जवाहिरात- इस मुल्कसे खरीदकर दुसरे मुल्कके सौदागिर लोग लेजाते थे, जि- नकों तवारिख पढनेका शौख है,-बखूबी-जानते होगें,-राजतरंगिनी, हर्षचरित, पृथिवीराजविजय, प्रबंधकोश, वगेरा तवारिख ग्रंथ है, जैन- मजहबका इतिहास देखना हो, आवश्यकसूत्रवृत्ति, ज्ञातासूत्र, उत्तरा- ध्ययन, उपासकदशाग,-रायपसेणी, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र प्रबंध- चिंतामणि, और कुमारपालप्रबंध-वगेरा देखो, इतिहासकी बातें- पुरानी कही जासकती है,-मगर इतिहास लिखनेवाले-कब हुवे, इस- पर खयाल कियाजाय-तो-करीब तीन हजार-या-अढाई हजारवर्स पेस्तरके लिखनेवाले-कम-मिलेगें, फर्ज करो! किसी इतिहास लिख- नेवालोंने लिखदिया,-फला चीज-पेस्तर-ऐसी ताहसीरवाली थी.- मगर-वो-चीज केवलज्ञानीकी फरमाईहुई हो-तो-सची समजना, अगर अल्पज्ञानीकी कहीहुई-हो,-उसमे-गलतीभी होसकती है,—

२१ हिंदमे पेस्तर संस्कृत जबानकी तरक्की थी. जिसजिस जमा- नेमें-जिसकी अमलदारी तरक्कीपर हो, उनकी जबान तरक्कीपर आती है, पेस्तर हिंदमे मर्दलोग-बहत्तर कला-और-औरत चौसठ कलाकी

तालीम लेती थी, दरअसल! इल्म-पढना-आसान नही, चाहे कोई वदनमें ताजा मोटा हो. मगर इल्मसें ताजा-मोटा-होना जरूरी है. जो-लोग-टनल-खुर्शीके शौकीन है,-उनकों-टेबलक्लॉथकीभी जरूरत होगी. तरह-तरहके रुमाल-रेशमी-उनी-इमीटेशन-रंग-वेरंगें चार खानेदार-या-वेलबुटेवाले जिनको-जो-पसद हो-रखे, मुसाफरीमें-बिछानेकी-दरी-या-रगवेरगी शतरंजीभी-अमीरोंकेलिये एक सोकातकी चीज है,-तरह-तरहके-साफे-जरीयान-या-सुती-मलमलके पल्लुदार-या-सादे जिनकों जैसे पसद हो-बाधे.-शर्दीके दिनोंमे-अमीर लोग-शाल-दुशाले ओढते है. गुल्बद, खालीशउनी-स्वदेशी पट्टु, बादामी कंबल, चारखाना शाहबनल-और पश्मीनेके अलवान-जब-जोरसे ठड पडती है-काममें लायेजाते है.-तरह-तरहकी-गर्म-लोई-ठडको रफा करके जिश्मकी हिफाजत रखती है. इत्र-मुश्क-अंवर, और हीना इन्ही दिनोंकी सौकात है,-ऐसे बढिया इत्र-अमीरलोगही-खरीद सकते है.-कजुसलोग-सायत! इस बातसें नफरतही करेगें,—

२२ सोने-चादीके वर्तन दौलतमदलोगही रखसकते है.-कजुस लोग इस वातपर खयाल करेगें-सोने-चादीके वर्त्तन रखनेसें-मेल मुलाकातवाले मागने आयगें, और देने पडेगे. मगर इतना नही सौचते-इसीसे-तो-दौलतमदोंकी इज्जत है,-दौलत पाकर इज्जततर्फ-खयाल नही किया-तो-क्या किया. तावे-पित्तलके वर्त्तन तो हरेक शख्श रखसकते है-पेस्तर दौलतमदोंके-घर-घीके-चिराग जलते थे, खोपरेल तेलके चिरागभी-जलाये जाते थे,-और तिल्लीके तेलके चिराग-तो-गरीबोंके घरमी होते थे, आजकल तरह-तरहके लेंप-और-लालटेनोकी रौशनीका रवाज होगया है,-बडीबडी नदीयोंसें-नेहरें-निकालकर खेती-वाडीको तरक्की देना एक कदीमी रवाज है, और इससे दुकालकेवख्त दुनियादारोंकों मददभी मिलती है,-कई मुल्कोंमें मोटार ऐसी बनाई जाती है,-जो-दिनभरमें-बहुत

लंबी सफर करसकती है,-जहा जहा प्रदर्शन भरताहो वहा जाना इसलिये फायदेमद है, तरह-तरहकी चीजे नजरसें गुजरेगी, और पुराने हालात मालुम होसकेगें,-जैनागम स्थानागसूत्रमे बयान है,- जिस मुल्कके रहनेवालोंकी तकदीरतेज हो,-वहा-उमदा बारीश हो, और जिस मुल्कके रहनेवालोकी-तकदीर-कमजोर हो,-उधर बारीश कम-गिरे,-शेर-जानवर आधमीलके फासलेसें-आदमीकों बजरीये खुशबूके जानसकता है,-कई-मनुष्य-ऐसेभी मौजूद है,-जो- सात-सात रोजतक दिन-रात-नींद नही लेते, मगर उनको बीमारी जरूर पैदा होजाती है,-बहुत वख्ततक जागते रहनेसे तदुरस्तिमे- बिगाडकी सुरत है,—

२३ एक शख्शका दुसाला-उंदरोंने काट खाया, दुसरे रोज- उसने एक-उदरेको पकडकर मारडाला, धर्मगुरुने उसकों कहा. तुम -बेइन्साफ करते हो. उसने कहा,-इन्साफ मेरे-बडेरे जानते थे,- में-नही जानता.-दुनियामे ऐसेभी शख्श मौजूद है,-जो-धर्मकों कुछ चीज नही समजते अगर कोई मुनि-या-कोई हकीम, या न- जुमी खयाल करे-मेरे-पास-कोई क्यो नही आते?-तो-यह खयाल महेज-गलत है,-जिसकों ख्वाहेस होगी,-वो-मुनिलोगोंके पास आप चलकर आयगा. बीमार शख्श-हकीमके पास-खुद-बखुद तलाश करता चला आयगा.-जिसकों अपना भविष्य पुछना होगा खुद तलाश करतेहुवे नजुमीके पास चले आयगें, इसीलिये कहागया, अपनी मतलबसें सब आते है,-कोई शख्श पानीका-लोटा-भरकर दुकान दुकानपर जावे, और कहे आपकों-जल-पिना है-तो कहेगें -नही पिना और-जिनकों-प्यास लगेगी-वे-खुद आपसे आप- पानीकी तलाश करतेहुवे-चले-आयगें,-जिसको-रोटी-कपडे सुखसें मिले-और-थोडी दौलतमे शब्र करे-वो-आदमी-ज्ञानीयोंके ज्ञानसें आरामतलब है,-लखपति-या-करोडपति होकरभी अगर दिलमे- शब्र नही-तो-ज्ञानीयोंने उसकों आरामतलब नही कहा,—

२४ अगर कोई-इस दलिलकों पेंश करे हमारा धदा-रोजगार आजकल क्यों नही चलता? जवानमें तलन करे, अपने पास अगर धर्मखातेकी रकम जमा हो,-धर्ममें जल्द खर्च दो. और अपनेसें चनसके उतना दानपुन्य करो, सन अच्छा होगा.-मगर दान-पुन्य करना नही धर्मखातेकी बोलीहुई-या-निकालीहुई रकम खर्चना नही, फिर फायदेकी सुरत कैसे होगी. पुन्यकर्मसें दौलत मिलती है पुन्य पूर्वजन्ममें किया नही, और यहा करते नही, फिर-फायदा कैसे होगा? इसपर खयाल करो, अगर कोई-शख्श-अपने धर्मगुरुके पास जाकर अर्ज करे, हमारा दिल आजकल रजमें रहता है, पैदाशकी सुरत नही, और हर व्यापारमें नुकशान होता है.-कोई ऐसा उपाव बतलाइये! जिससे हमारा अछा हो, (जवाब) अवल-वो-देवगुरु धर्मपर-एतकात रखो धर्मखातेकी रकम-तुमारे वहां जमा हो. वो-धर्मखातेमें खर्च दो -तीर्थोकी जियारत करो और पापकर्मसें परहेज रखो,-अशुभ-अनिकाचित-कर्म-दूर होकर-आराम-मिलेगा.—

२५ बाप-बेटे-खेंती करते हो उनमें बेटेकों-अमल्दारी मिल-जाय और बाप खेंती करता रहे, यह तकदीरकी बात है,-शहरमें-बसनेवालोकों-रैल-बगी ट्राम वगेराका आराम रहता है लंबी-लंबी -सडके द्रख्तोंकी छाव, नाग-बगिचे-नाचरग और तरह-तरहकी चीजें तयार मिलती है, मगर खजाना-तर-नही तो कुछभी नही - जहा-न-सडक है.-न-बगी घोडे-न-रैल है, खानपानकी चीज मिले नही. न-मदिर है,-न-मूर्त्ति है,-न-सद्गुरुका योग है, -न-शास्त्र सुननेका मोका है ऐसी-जगह रहना बहेत्तर नही -इसीलिये कहा गया, शहरमें रहना, और दौलत झलाझल होना बडी तकदीरकी बात है. जिनोंने पूर्वजन्ममें पुन्य किया था-यहा-उनकों सुख चैन मिला है -एक शहरसें दुसरे शहरतक-अगर-टेली-ग्राफ-मौजूद हो-तो-दो-घटेमें-जबाब आसकता है,-रैल हो-तो-थोडे अर्सेमें-एक दुसरोंकी मुलाकात होसकती है,-जिनको अखबार

पढनेका शौख है,-व-खूनी जानते होगें, कई मुल्कोंमें बडेबडे उचे गुलानके द्रख्त चढते है. और उन द्रख्तोंसें सालभरमे हजारो गुलानके फूल उतरते है.-कई-मुल्कोंमे (१२०) वर्सकी-उम्रके आदमी-पायेजाते है.-जिनके-घर-(६५)वर्सके-लडके मौजूद है.-मलयाचलमे चदनके द्रख्त बहुतायतसें खडे है,-और कई मुल्कमे देवपूजनकेलियेभी चदन नही मिलता,-मुल्क कश्मिरमे भोजपत्र-कसरतसे पैदा होते है,-मगर कई जगह-तलाश करनेपरभी नही मिलते. जिस जिस मुल्कमे नारीयलकी पैदाश ज्यादा हो, नारीयलको तोडकर पानी पिइलेते है - और-खोपरेकों फेंक देते है,-मगर कई मुल्कोंमे खोपरा मिलनाभी दुसवार है.-कई मुल्कोमे-बडीबडी-उम्रवाले-जइफभी-विदुन लकडीके चलसकते है.-और कई-मुल्कोंमे छोटी उम्रवालेभी-कम-जोर होनेकी वजह-लकडीके सहारे-चलते है,-यह-अपनी अपनी ताकातकी बात है,—

२६ एक-शख्शने-अपने बगिचेमे-दाखके पेंड लगाये. कुछ दिनोंके बाद दाखकी वेले फेली. दिलमे इरादा किया,-कब दाख पैदा हो,-और-मे-खाउ-आखीरकार! जब दाखें पैदा हुई और पक-कर -तयार होगई. उस शख्शके गलेमे बीमारी पैदा हुई-और-गला-बद होगया. दाखें-खुद बखुद सुक गई-मगर-वो-शख्श-खा-नही सका,-सबुत हुवा, बगेर तकदीरके चाहे जितनी कोशिश करो, कारआमद नही होती, चाह पिनेकेलिये-कप-हाथमे लिया,-मगर उसकों मुहतक पहुचानेमें-न-मालुम क्या क्या मुसीबतें आन पडे, फर्ज करो! चाह पिई लिई, मगर गलेके अदर-न-जाय. बीमारीके सबब-गला-रुक जाय-कोई क्या करे, तकदीरकी बात है,-तदबीर करके-चाहकों-गलेतक पहुचाई. मगर तकदीरने उसको उल्टी फेर दिई,—

२७ अगर किसी शहरमे जैनपाठशाला हो-लडके-लडकीयोंकों -इल्म हासिल कराना जरूरी है. इल्म पढाहुवा-शख्श जींदगी सुखसे

असर करेगा, मगर इस बातकोंभी-याद रखना,-जिसकी तकदीरके सितारेने जोफ खाया है,-उसकों-इल्मभी-फायदा नही पहुचासकता. -चाहे किसीके पास दौलत-न-हो, लेकिन! इल्महि-उसका-एक-उमदा खजाना समजो -इल्म पढनेसें जाहिली मिटकर नेकी पैदा होती है -इल्म-दो-तरहके-एक धार्मिक-दुसरा व्यवहारिक, धार्मिक इल्ममे धर्मकी बाते और व्यवहारिक इल्ममें-दुनयवी-कारोंबारकी बाते बतलाई जाती है,-हिंदी-इग्रेजी-उर्दू-भूगोल-इतिहास-गणित वगेरा विद्या पढाना जरूरी है,—

२८ इल्म पढानेवाले मास्तरोंकों पुरी तनख्वाह देना, और-लड-के-लडकीकों-इम्तिहानमे पास होनेपर-इनाम-देना उनका होसिला बढानेका सबब है,-इल्म पढतेवख्त साफ साफ जबान बोलना चाहिये अटक-अटककर बोलना बहेत्तर नही, ह्रस्व दीर्घ अनुस्वार-विसर्ग-उदात्त-अनुदात्त-स्वरित वगेरा आगाही होना जरूरी है,-ध्रुवका तारा हमेशा उत्तर दिशामे रहता है,-जहाज चलानेवाले उसीकों खयालमें रखकर रातके वख्त-जहाज चलाते है,-नींद लेनेसें बेशक! वख्त जाता है -मगर नींद-न-लिइजाय-तो-बदनकों आराम नही मिलता, इसलिये नींद लेना जरूरी है,-पेस्तरके लोग अपने नामकी अंगुठी पहनते थे. और उसपर कोतरा हुवा नाम बनारहता था, पेस्तर सोनामहोरे चलती थी-उनपर जो-महोर छापी जाती थी.-यह एक तरहका छापा समजो, आदमीकों-बेंकाम-बेठे रहना अछा नही,-अगर कुछभी-कामकाज-न-हो-तो-धर्मकी किताब बाचते रहना अछा है -बेंकाम बेठे रहनेसें वख्त जाता नही, और कामकाजमें वख्त निकल जाता है,-साधुलोग अगर दिनभर धर्ममें दिल लगाना चाहे-तो-लगासकते है, मगर दुनियादारलोग इसतरह नही करसकते. सबब उनके पिछें दुनियाके कारोंबार करना लगाहुवा है -घटे-दो-घटेमी अगर धर्ममे दिल लगावे-तो-लगा-सकते है,-अगर कोई-शख्श लेख लिखना चाहे-या-किसी पुस्तकका तरजुमा

करके छपनाना चाहे, शुस्ति-न-रखे, वरत चला जाता है,-गया वख्त फिर नही आता.—

२९ पेस्तर हिंदमें बडेबडे शहरोंके अतराफ-कोट-बनानेका रवाज था, बडी-बडी-बावडीयें गहरे जलकी भरीहुई दुकालकेवख्तमी काम देती थी, सरोवर,-नेहरें,-औषधालय,-दानशाला-और इल्म पढानेकेलिये पाठशाला होती थी. मुल्क मालवेका पुराना शहर उज्जेन नजुमकेलिये मशहूर था,-सस्कृत इल्मकेलिये बनारस-और-मुल्क काश्मिरका श्रीनगर नामी ग्रामी था,-बनारस-तो-अबभी सस्कृत-इल्मकेलिये मशहूर है,-नदीयोंपर बडेबडे-पुल-लकडी और इट-पथ्थरके बनेहुवे होते थे, कई जगह नावोंपरभी पुल बनाया जाता था, रास्तोंमे लबी लबी-सडके-दोनोंतर्फ दरख्तोंकी कतार-ठडीठडी छावमें मुसाफिरलोग आराम लेते थे, राजसभामे अष्टागनिमित्तके जाननेवाले और सस्कृत-प्राकृत जबानके पढेहुवे पडित-अपनेअपने करीनेसें शरीक-होते थे,-जब-राजाकी सवारी निकलती थी,-सोने-चादीकी पालखी-जिनमे-मोतीयोंके झुमखे-लगेहुवे-तरह तरहके-बाजे-और गवैये साथ चलते थे,-जिनको पुरानी तवारिख पढनेका शौख है,-बखूबी जानते होगें,-हिदकी-उत्तरमे हिमालय पहाडकी गिरिमाला करीब (१६००) मील-पूरबपश्चिम-लबी चलीगई-नयपाल-भोटान-सिकिम-हिमालयकी तराईमें एक दुसरेसें नजीक-नजीकके मुल्क है,-हिंदमे विंध्याचलसें दखनकी तमाम जमीनकों-मुल्क दखन बोलते है-अजंटेकी-मशहूर गुफाये-मुल्क दखनमे-औरगाबादसें आगे दौलताबादके करीब मोजूद है,-जो-शिल्पकारीमे आलादर्जेकी शुमार किईगई है.—

३० युरोप, एशिया, आफ्रिका, अमेरिका-और-आस्ट्रेलिया-ये-बडेबडे खड है,-मुल्क फ्रासमे-पेरिस-शहर-मोजशोखमें ज्यादा,-मुल्क इंग्लाडका-लदन-शहर-इसवख्त-तरक्कीपर है,-और-कल-कारखानोंसें तिजारत अछी चलती है,-मुल्क अमेरिकामे बनास्पतिसें

[अफ़नके फ़व्वार]

[अकलके-फवारे -]

१-एक हकीमसाहब-बीमारकी तबीयत देखने गये,-बीमार-सोरहा था, हकीमसाहबने पुछा, क्या! सो-रहे हो? बीमारगरशने जबाब दिया,-जी! नही, जरा लेट रहाहु, हकीमसाहबने कहा, सो रहना और लेट रहना क्या जुदी बात है? हकीमसाहबने फिर पुछा, क्या! तुमारे सिरमें दर्द है? बीमारने कहा, नही साहब! सिरमे दर्द नही है, दर्दमे सिर है,-हकीमसाहब कहने लगे, क्या खूब गुस्ताखीके जबान है,-बीमारीकी हालतमे इसकदर गुस्ताखी करना नही छोडते, -न-मालुम अछे होनेपर क्या क्या जबाब देयगें, ?

२ [एक फकीरसाहब और दुकानदारका लतिफा.-]

एक दुकानदार अपनी दुकानपर बेठे-रुपये पैसे गिनरहा था,-चुनाचे! एक-फकीरसाहब ऊधरहोकर निकले, और दुकानदारसे कहने लगे, मालिकके नाम कुछ खेरात दीजिए,-दुकानदारने कहा, फकीरसाहब! पहले दिया था-तो-यहा दौलत मिली, और गिनते गिनतेमी-थक-गये,-अब हर्गिज न-देयगें,-आईंदे दौलत मिले,-और गिननेकी तकलीफ उठाना पडे, फकीरसाहब दुकानदारको आलादर्जेका गुस्ताख समजकर आगेको चले गये,—

३ [एक धोबी और तेलीका लतिफा]

एक शहरमें एक धोबी और तेली नजीक नजीकमे रहते थे, तेलीको बडी पैदाश होतीथी और धोबी देख-देखकर-चिडता था, और हमशा आसानतर्फ-मुह-उचाकर परमेश्वरसे अर्ज करता था, इस-तेलीका-बेल मरजाय-तो-निहायत उमदा हो, इस तरह कई रोज गुजर गये,-इत्तिफाक! ऐसा हुवा, चद रोजमे धोबीका गधा मरगया, धोबी-नाराज होकर-आसानतर्फ देखके कहने लगा. ए! परमेश्वर! दुनियाकी अमलदारी करते हुवे इतने दिन होगये, अब तक गधे-और-बेलकी पहचान नही हुई? मेने अर्ज क्या! गुजारी थी? और क्या करदिया? धोबीको इतना मालुम नही परमेश्वर-

किसीका-भलाबुरा क्यों करे ? जैसी तुमारी नियत, वैसी बरकत, अगर कोई किसीका-बुरा चाहे-अवल उसीका-बुरा होगा, इसमें दुसरेकी खता क्यौं निकालना ?

४ [एक नाव-और बेठनेवालोंका-लतिफा -]

कई लोग नावमें बेठकर समुंदरमे-जा-रहे थे,-नाव-जब आगेकों पहुची भमरमें पडकर चक्कर खाने लगी, कितनेक लोगोंने कहा, नाव-डूब-न-जाय, ऐक-बेवकुफ बोला, डूब-जाय-तो-डूबने दो, अपनेकों क्या ? जिसकी नाव है, उसकों-फिक्र होगा,-किरायाभी -तो-दुगुना लिया है-इसके डूबनेका-गम-हमे-तुमे क्यौं करना ? एक जइफनें कहा,-अबे ! तुमी-तो-नावके शाथ-डूबेगा,-उसने कहा, मुजे डूबनेका उतना-गम-नही, जितना किरायादेनेमें-गम-हुवा है, -देखिये ! ऐसेभी-शख्श दुनियामे है,-जो-मरनेसेंभी-पैसेकों बढकर समजते है,—

५ [एक-कमअकलकी-रहमदिली -]

एक-कुवेके-नजदीक एक गाय पानी पिनेकी गरजसें इर्द गिर्द फिरती थी, कुवेकों कठहरा नही था,-एक-कमअकल आदमी-जो -वहा खडा था, उसने उस गायकों कुवेमे धकेल दिई, इस माजरेकों देखकर एक मुसाफिरने कहा, अबे ! कमअकल क्या किया ? उसने कहा, कुवेमें जाकर पानी पिइलेगी देखिये ! ऐसेंभी कमअकल होते है, जो-अपनी कमअकलीसें दुसरोंकी-जानकों-जोखम पहुचाते है,—

६ [एक-पडोसीका लतिफा]

एक शख्श दुसरे रौज सवेरे मुसाफरी जानेवाला था, पडोसीने अपने दिलमें खयाल किया, इसकों-कल-चलते वख्त अपशकुन करदेना चाहिये, गरज ! दुसरे रौज अपने माथेमे जरा-चाकु-मारकर लोही निकाला, और मुसाफरी जानेवालेके सामने माथेसें-लोही-गिराता आया, मुसाफरी जानेवाला बोला ! मुजे-तु ! बुराशकुन दे-

नेकी गरजसें आया है,-खेर!-मे आज-न-जाउगा, कल-जाउगा. मगर तेने-तो-अपने सिरमे चाकु मारकर अपना अपशकुन कर लिया, देखिये! ऐसेभी-कम-अकल हुवा करते है,-जो-अपने विगाडपर खयाल-न-कर, दुसरेकों अपशकुन करनेका इरादा रखते है,—

७ [एक-अमीर और नोकरका-लतिफा]

कोई अमीर खाना नोश फरमा रहे थे, नोकरसें कहा, तरकारीमे नमक कम है जरा नमक लाओ, नोकर-बेतमीज था, हाथमे नमक लेकर मालिकके सामने आया, और कहा,-लिजिये! नमक हाजिर है,-मालिकने कहा, कोई काम करना-तो-लियाकतसें करना चाहिये, नमक जैसी चीज रकाबीमें धरकर लाया करो,-उस रौजसें-वह-हरचीज रकाबीमे धरकर लाता रहा,-मगर कमअकल होनेकी वजह -कभी-कमी भुल जाता था, एक रौज-मालिकने बहार जानेकी तयारीमें उसी नोकरकों-पहननेके-बुट-लानेका हुकम दिया, नोकरने-मुताबिक फरमान मालिकके बुटकों-रकाबीमे रखकर लाया, मालिक इस वातकों देखकर हसे, और कहने लगे, खाने पिनेकी चीज रकाबी लाना-या-सब चीज! खेर! आईंदे खयाल रखो, कोई काम कराना-तो-सोच समजकर करना,—

८ [एक मालिक और नोकरका किस्सा]

एक-मालीक-अपने नोकरपर-उसकी-बेतमीजीसें नाराज होकर कहने लगे, तु! बडा गधा है,-मे-कहता हु कुछ, और-तु-करता है-कुछ,-जा! बहार जाकर दूर बेठ,-वो-बहार जाकर मकानके दरवजेपर बेठा, थोडी देरके बाद जब-मालिककों कुछ कामकी जरूरत पडी,-तो-पुकारा, बहार कौन आदमी हाजिर है,? नोकरने कहा, आदमी-तो-इस वख्त यहा कोई हाजिर नही. मालिकने कहा,-तु कौन है? नोकर बोला, अभी-तो-आप कह चुके-तु! बडा गधा है,-मालिक कहने लगे, उल्टा काम करनेवालेकों-ऐसा-न-कहे-तो

-क्या कहे? अगर लियाकत-रखता-तो-आठ रुपयोंकी जगह-साठ रुपयोकी तनखाह-क्यों-न-पाता?

९ [दो-मुसाफिरोंकी-बातचित -]

एक दफे-किसी चलती हुई-ट्रेनमें-दो-मुसाफिर आमने सामने बेठे थे, उनमेसें-एक-मुसाफिरने कहा, आप क्या पढरहे है? उसने कहा-अखबार पढता हु, पुछनेवाले मुसाफिरने अर्ज किई, जरा मुजेभी देखने दीजिये! कौनसा अखबार है,-जिसका अखबर था, उसने उसको अखबार दिया, उसकों लेकर फिर कहने लगा, बराये महेरबानी जरा चश्मेभी दीजिये, उसने जवाब दिया, क्या! खूब बात है? मेने अखबार दिया-तो चश्मेपर निशाना लगाया, लाइये! अखबार वापिस दिजिये, और आपके पास अगर सिगरेट हो तो-इनायत किजिये!

१० [एक खाविंद और औरतका लतिफा -]

एक खाविंद किताब पढनेके बडे शौखीन थे, उनकी औरतने कहा, क्या ही! अछा होता, अगर-मे-किताब होती, आपके सामने हरवख्त बनीरहती, खाविंदने कहा, बात बहेत्तर है,-मेभी-इस बातसें खुश था, मगर अमरलाचारीका है,-तुम मुहसेंही कहती है, बनकर नही बताती,-औरत इस माकुल जवाबसे चुप होगई.—

११ [एक काणा शख्श और थियेटरका टिकिट -]

एक-काणा-शख्श किसी थियेटरमे तमाशा देखने गया, टिकिट बाबुसें बोला, मुजे आधा टिकिट दीजिये! बाबु साहब कहने लगे, आधा टिकिट क्यों लेतेहो? काणे शख्सने कहा, दोनों आखोंवाले पुरा टिकिट लेते है-में-तो-एक आखसें देखुगा, टिकिट बाबुने कहा, हम-तुमकों-कब कहते है,-एक आखसे देखो. हमारी तर्फसें -तो-किसी डाक्तरसें काचकी बनी हुई आख लगाकर दोंनों आंखोंसें देखो, यह सुनकर काणा शख्श-शर्मिंदा-हुवा और पुरा टिकिट

लिया, काणे शख्शकी-चालाकी-चालाक पार्टीमे वसर होसकी नही.

१२ [एक शेठ और नोकरकी वातचित -]

एक-दौलतमद-शेठका-पेंट-वादीके सवव बडा था, और-वे-पलगपर लेटे हुवे-एक-नये नौकरसें पाव दवा रहे थे, नोकरने हसकर पुछा! शेठजी!! आपका पेट इतना बढा हुवा क्यौ? शेठजी कहने लगे-इसमें तमाम दुनियाकी वातें भरी है,-तुमकों छोटे पेटवालोंकों क्या मालुम? नोकर लाजवान हुवा,

१३ [एक कजुस और उसका कफन -]

एक कजुस आदमी-मरनेकी तयारीमे-बिछोनेपर लेटा हुवा था और एक नोकर उसके पास वेठा था, कजुसने नोकरसें कहा, एक पुराना-कफन-लाकर-रखो, नोकरने पुछा, क्यौ क्या जरुरत है? कजुसने कहा, मेरे मरनेके वाद काम लगेगा, और पेसोंकी किफायत होगी, नोकरने कहा, आपके मरनेके वाद किफायत किस कामकी? कजुसने कहा. तु! नहीं समजता, मे-कहताहु,-सो-कर,-कंजुस हो-तो-ऐसे हो-जो-मरनेके वख्तमी-कफनका-फिक्र करते है,-और-कजुसाइकों नही छोडते,-

१४ [एक पडितजीका लतिफा -]

एक पडितजीका लडका विवाह होतेही तुर्त काशीकों पढनेके लिये गया, पढते पढते वारा वर्स होगये, इधर उसकी औरतने अपने ससुरके-पास जाकर कहा, मे-वगेर अपने खाविंदके वरवाद होगई और रडापा भोग रही हु,-पंडितजीने अपने वेटेकों खत भेजा, और लिख दिया तुमारी औरत कहती है,-मे-रडापा भोग रही हु तुम जल्द आओ, खत पहुचतेही-लडकेने पढा, और फिक्र करने लगा, दोस्तोंने पुछा क्यौ भाई! क्या-माजरा है? लडकेने कहा,-मेरी औरत रांड होगई, दोस्त वोले, तुमारे जीते हुवे तुमारी औरत रांड कैसे होजाय? लडकेने जवाब दिया, घरसें वालिदका ॰

उसमे लिखा है इस बातके फिक्रमे गायब हु. दोस्तोने कहा,- नाहक! फिक्र करते हो, इतनेपरभी-दिल-न-माने-तो घर चले जाओ, दुसरे रोज रवाना होगये, और-घर-पहुचे,-पढे मगर गुने नही, इसका नाम है,--

१५ [एक अफीमचीका-किस्सा]

एक अफीमचीका-घोडा-गुम्म गया, और-वो-अपने आपको सुक्रिया अदा समजने लगा, लोगोने पुछा, क्यौ भाई! आज किस बातकी खुशी मना रहे हो. उसने जवाब दिया, मेरा घोडा गायब होगया, अछा हुवा-जो-मे-उसपर सवार नही था, वरना! मेमी-गुम्म जाता, लोग हसने लगे,-नशेबाज-हो-तो-ऐसे हो,—

१६ [एक बनियेका-लतिफा -]

एक बनिया रातकों अपने मकानमे-सो-रहाथा, इत्तिफाक! एक चूहा-उसके पेंटपर होकर निकल गया, बनियेकी आंखे खुली, और चिल्लाने लगा, पडोसी इकठे हुवे, और उसके चिल्लानेका सबब पुछा, उसने जवाब दिया, मेरे पेंटपर चूहा निकल गया,-न-मालुम कल-साप-निकल जायगा, कहीं-मेरा-पेट आमरास्ता-न-बनजाय, पडोसीयोंने कहा, ऐसा फिक्र आता हो-तो-जमीनपर सोना छोडकर-चारपाइपर-सोया करो, यह सुन बनिया कहने लगा,-मे-कजुस हु-मुजसे-इतना खर्च कैसे हो सकेगा? पडोसीयोंने कहा, फिर खाम-ख्वाह! हल्लाकर मचाकर हमारा सिर क्यों पकाते हो? या-तो -कजुसाई छोडो,-या-चूपचाप पडे रहो, चाहे-तुमारे पेटपर चूहा क्या! हाथी क्यौ-न-चला जाय, हमकों क्या? ऐसा कहकर चले गये,

१७ [एक-मस्करेका-किस्सा.-]

एक डाक्तरसाहबने एक मस्करेकों भुलसें बजाये दवाके स्याही-पिला दिई, मालुम होनेपर डाक्तरसाहबने कहा, माफ करना, मुजसें आज बडी खता होगई है, दवाकी एवजमे मेने आपकों स्याही पिला दिई है,-मस्करा बोला, फिक्र-न-किजिये,-में-अभी ब्लाटिंग पेपर

निगल जाताहु. वो-अदर जाकर स्याही चूस लेगा, डाक्तरसाहन हसने लगे, क्या! खून आदमी है,-मश्करा-हो-तो-ऐसा हो,—

१८ [अफीमचीयोंकी मुसाफरिका-लतिफा -]

दो-तीन-अफीमची मिलकर मुसाफरीकों चले, शामकों अपने शहरके बहार पहुचे, और नशेमे वहाही-सो-रहे, जन बिल्कुल शाम होगई और चिराग रौशन हुवे, आखे खुली, और आगेको सफरके लिये चल पडे, मगर नसेमे-चकनाचूर-थे, अपने शहरहीकी तर्फ लोट गये, जब शहरके करीन आये, लोगोंसे पुछा,-इसशहरका नाम क्या है? लोगोने जबाब दिया, इसशहरका-नाम-वसंतपुर है, अफीमची कहनेलगे, हमारेशहरका नाममी-वसतपुरथा, आगे जन करीब दरवजेके पहुचे, लोगोंसें पुछनेलगे, कौनसा दरवजा है? लोगोंने कहा, चाद-पोल दरवजा,-अफीमची-बोले,-हमारे शहरमेभी चादपोल दरवजा बनाहुवा है,-आगे जन बाजार आया, पुछनेलगे कौनसा बाजार है? लोगोने कहा, धानमडी, अफीमची कहने लगे, वाह! भाइ खूब हुवा, यह-शहरतो-हुबहु-हमारे शहरकी-शान-रखता है,-आखीरकार वही बाजार और वही महोला-आगया, और जाते-जाते अपने घर पर पहुचगये, नोकर चाकर और उनकी औरतें हाजिर हुई, अफी-मची-अपनी अपनी औरतोंकों देखकर कहने लगे, वाह! इसतरह-तुमभी-सफरमे हमारेशाथ चली आई, इसतरह पिछेपिछे फिरोगी-तो-हमारा-सफर कैसे होगा? मगर इतना मालूम नही हमही अपने शहरकों वापिस लोट आये है,-अफीमची-हो-तो-ऐसे हो,-जो-अपने नशेमे अपने गाव-नगरकों भुलजाते है, और-अपनीही तुती बजाते है,—

१९-एक शख्शने दोस्तोंसे पुछा,-मे-एक खूबसुरत लडकीसें-सादी करुं-या-पढी-लिखी चतर लडकीसें? तुमारी क्या राय है? एक दोस्तने जबाब दिया, तुम किसीसे सादी-न-करसकोगे,-खूबसुरत लडकी तुमकों इसलिये पसद-न-करेगी, तुम खुद-खूबसुरत नही,

और पढीलिखी चतरलडकी तुमारीवातोंहीसें समजजायगी -ये-खूब सुरतीकी कदर करनेवाले हैं, इल्मकी नही, दरअसल ! जिस शख्शकी तकदीर आलादर्जेकी हो, उसीकों पढीलिखी खूबसुरत औरत मिले, जिस औरतकी आलादर्जेकी तकदीर हो, उसीकों पढालिखा-खूबसुरत और दौलतमद खाविंद मिले, जिसरौज-खानपानकी चीजोंमें तरकारी बिगडगइ, उसरौज खाना खराबहुवा समजो, जिससाल-आमका-मुरब्बा बिगड गया-तो-वो-साल बिगडगइ समजो, दुसरीसाल फिर आम पैदा हो-और-मुरब्बा बनाया जाय, इसीतरह जिसशख्शकों नापसद औरत-और-जिस औरतकों नापसद खाविंद मिला, उसकी जिंदगी खराबाद हुई समजो.-

२० [एक देहाती शहरमें गया,]

एक देहाती जो-चद रौजसें शहरमे रहने गयाथा-जब तीनमहिने होगये उसके एक-दोस्तने-पुछा, क्या ? मजेमें रहतेहो,-कोइ तकलीफ -तो-नही ? उसने-जबाबदिया,-चैनमें रहताहुं, मगर कुछ बचता नही, जितना पैदा करताहुं,-उतना खर्च होजाता है,-दोस्तने-कहा, जरा-हाथकों काबुमे रखो, जिससे खर्च-कमहो, देहातीने कहा, हाथ-तो-खेर ! काबुमेभी-रखलुगा, मगर दिल काबुमे नही रहता, कभी किसीका-चटकीला और रगदार कपडा देखकर दिल कहता है,-आपनभी-ऐसा कपडा खरीद लो, कभी किसीका गहना देखकर दिल होजाता है, ऐसा गहना आपनभी बनवा-लो,-खानपानमें-रगरागमें और मकानके किरायेमेही खर्च होजाता है,-बिल्कुल बचता नही, दोस्तने कहा, किसीकी दुकानपर कुछ रकम-जमा-रखो, देहातीने कहा,-मै-अपनी रकम दुसरोंके पास जमा रखना कभी पसद नही करता,-शास्त्रोंमे बयान है, " गरथ गाठे, विद्या पाठे,-" मैने-अपनेदिलमे-मुकरर करलिया है, कुछ रकम बचे-तो-सोनेका-कडा बनवाकर हाथमे पहन लेना, वखख्त जरुरीके काम देवे, दोस्तने कहा, यह बात बहुतबेहतर है,--

२१ [एक शख्शने थोडीदेरकेलिये पचीस रुपये उधार लिये,-]

एक शख्शने अपनेदोस्तसे कहा, मुजे थोडी देरकेलिये पचीसरुपयोंकी जरुरत है, अगर देदो-तो-बडी महेरबानी होगी, दोस्तने रुपये देदिये और उसबातकों-दो-महिने होगये, मगर उसशख्शने रुपये लोटाये नही, एक रौज दोस्तने कहा, सुनते हो! भाइ!! आज-दो-महिने होगयें, तुमने रुपये लोटाये नही, उसवख्त-तो-आपने कहा था, थोडी देरकेलिये चाहिये, इसपर खयाल-किजिये, दोस्तने कहा, मेने विल्कुल सच कहाथा, मेरेपास-वह-रुपये थोडी देरही रहेयें,-दोस्तने कहा, क्या खूब बात है,-अवल-तो-कर्जा लेना, वापिसदेना नही, और-ऐवजमे गुस्ताखीके जबान पेंश करना, आखीरकार! दोनोंकी बडी तकरार हुइ, और कर्जलेनेवालोकों शर्मिंदा होनापडा.—

२२ [वालिद और बेटेका-किस्सा,]

एकरौज वालिदने अपने बेटेकों हिदायत किइ, बेटा! दुनियामे इमानदारी बडी अछी चीज है,-फर्ज करो! तुम अपने किसी दोस्तका कोट मागकर लाये, और उसकोटमेसें तुमकों कुछ रुपये मिले, तुमकों लाजिमहै,-फौरन-उन-रुपयोंकों उनकेपास जाकर-दे-देना, अपनेपास कभी नही रखना, इसीमे तुमारी इमानदारी है, और इज्जत पाओगे, बाद चदरौजके वालिदने अपने बेटेसें पुछा, क्यौं बेटा! मैने कलरौज तुमको अपना कोट-धोबीके-वहा-पहुचादेने केलिये दियाथा, -वो-तुमने पहुचा दिया? बेटेने कहा,-उसीदम-मे-अपनेआप जाकर देआयाथा, वालिदने कहा, कोटकी जेबमें-कुछ-था-तो नही? बेटेने-जबाबदिया,-उसमे पाचरुपये थे, वालिदने कहा-वे-रुपये कहा है? मुजकों दिये क्यौं नही? बेटेने कहा, आपने कहाथा, पराया -धन-अपनेपास नही रखना, मेने कलरौजही उनकों खर्च कर डाले, वालिदने कहा, अपने मतलबकी बात याद रखतेहो,-और रुपये जिसके हो-उनकों देदेनाचाहिये,-उसबातकों याद नही रखते,-वालिदने

उसीदम-अपने बेटेको घरसे निकाल दिया, और कहनेलगे, ऐसा बेटा-किसकामका-जो-वालिदकी-हिदायतकों सुने नही, अपने मत लवपर सवार रहे, और फिर गुस्ताखीके जवाब पेश करे.

२३ [एक डाक्टरसाहब और एक बीमारकी सलाह,]

एक बीमारशख्श-बहुत दिनोंसें दवा खाताथा, मगर उसकी बीमारी-हठती नही थी,-बीमारने सलाह पुछी,-अब-क्या ! करना चाहिये ? डाक्टरसाबने सलाह दिई चदरौंजके लिये बहारगाव चलेजाओ, आब हवा बदलनेसें आराम होगा.-बीमारशख्श बहारगाव गयानही, बाद एक सप्ताहके रास्ते चलते मिलगया, डाक्टरसाहबने कहा, तुम अभीतक बहारगाव गये नही ? उसने कहा, बहारजानेकी क्या जरुरत है ? आब हवा तो बदल गई, डाक्टरसाहबने पुछा, कैसे बदल गई ? बीमारने कहा, पेस्तर पश्चिमकी हवा-चालतीथी, अब पूरवइया चलने लगी है,-पेस्तर-म-कूवेका पानी पीताथा, आजकल पपका पीने लगाहु आब हवा-तो-बदल गई डाक्टरसाहबने कहा, मेने क्या कहाथा ? और आप जवाब क्या देरहे हो ? ऐसाकहकर चलेगये.—

२४ [एक कजुस और अमीरका किस्सा]

एक कजुस शख्शसे एक अमीरकी दोस्ती थी, दोनों जब कही खेल-तमाशे-या-घूमने फिरने जाते तो-अमीरही खर्च किया करतेथे, कजुस कभी पैसाभी खर्च नही करताथा, एक रौजकी बात है, दोनोंन एक दुकानपर जाकर शरबत पिया, अमीर-जब-अपने पाकीटमे पैसेनिकालने लगे, कजुस बोला, भाई ! हरहमेश आपही खर्च करते है, यह बात बहेत्तर नही, अमीर हसकर कहनेलगे इसमे हर्जही क्या है ? आपने दिया-या-मेने दिया बात एकही है,-कजुसने सोचा ! आजतो-मे-फसा,-ऐसा-न-होगा, एक पैसा उछालदो, अगर चित गिरे-तो-आप दो, और पट गिरे-तो-में-दु, दुकानदारने कहा, आप, बाते पीछ बनाइये ! पैसा अवल रखदिजिये !

आखीरकार अमीरशख्शनेही पैसे चुकाये, और कजुस कोरी जिद करता रहा.-

-२५ [एक शख्शका उधारदेना-और पीछेसे घबडाना]

एक शख्शने अपने दोस्तसे कहा, क्यौ ! भाई ! तुम-मुजकों पाच रुपये उधार दोंगे ? दोस्तने कहा,-हा ! दुंगा, लिजिये ! पाच रुपयोंकी बातही क्या है ? कर्ज लेनेवालेने रुपये लेकर अपनी जेंबमें रखते हुवे कहने लगें,-में-आपकी इसमहेरबानीका बदला कभी-न -देसकुगा, दोस्तने कहा, महेरबानीका बदला चाहे-न-देसको, मगर पाच रुपये-तो-दे-सकोगे-या-नही ? कर्ज लेनेवालेने कहा, आपकी बडी महेरबानी है, दोस्त घबडाने लगा, और दिलमें खयाल करने लगा, मेने दोस्तानेमें लेनदेनका काम शुरु किया-अछा नही किया, हरशख्शकों लाजिम है,-दोस्तानेमें पाचदश रुपये लेने रहगये-तो-फिक्र-न-करे, नोकर-चाकरके पाससें हिसाब बेशक ! लेना सयन-वडोंका फरमाना है, हिसाब कोडीका-बक्षीश लाखकी,-अगर हिसाब लियेबाद रुपये-दो-रुपये-या-आने-दो-आनेबाकी रहगये -तो-बतौर पानबीडीके दियेथे, ऐसा समजकर-माफ-करदेना,—

२६ [एक अफीमची और रेवडी -]

एक-अफीमची-रेवडीयां खाता चला-जा-रहाथा, इत्तिफाक ! एक-रेवडी-रास्तेमे गिरगई, अफीमची उसे ढूढने लगा, एक राहगीरने पुछा,-क्या ! ढूढते हो ? अफीमची-बोला ! कुछ नही, एक रेवडी गिरगई है, राहगीर कहने लगा, गिरगई-तो-जाने दो, एक रेवडीके लिये क्यौं इतनी मेहनत उठारहे हो ? अफीमचीने-कहा, इसबातका-तो-कुछ फिक्र नही, मगर-मे-इसबातके खयालमे हु-अगर किसी-नाकदरदानके हाथ-लग-गई-तो-एकही दफे उसकों -खा-जायगा-में-उसकों तोडकर आहिस्ते आहिस्ते खाता, राहगीर -बोला, क्या खूब ! रेवडीके खानेमेभी-इतनी नुक्तेचुनी, फिर बर्फी,-पेंडे-खानेमें-न-मालुम कितनी देर करेंगे ?—

२७ [एक मेहमान और खातिर-तवजे.-]

एक शख्श-अपने दोस्तके यहा बतौर मेहमानके गया, और उनके यहा ठहरा, दोस्तने उसकी घडीखातिर-तवजे-किई, मगर-वो-जानेका नाम नही लेता, हरशख्शकों लाजिम है,-किसीके घर बतौर मेहमानके जाना-तो-तीन-चाररोजसें ज्यादा-नही ठहरना, आखीर कार दोस्तने उसको-कहा, आपकों यहां रहते बहुतदिन होगये. आपके बालबचे और बीबी फिक्र करती होगी, मेहमान बोला! आपका फरमाना-बजा-है,-बेशक! फिक्र करते होगें, मेरा इरादा है,-उन -सबको-मे-यहा बुलवा लू,-दोस्तने कहा, क्या खूबबात है,-मेने -सलाह दिई,-तो-आपने-उसकी एवजम रायतलब किई, अछा! जिस कमरेमे आप ठहरे है,-वह-किराये दिया जानेवाला है,-उसे खाली करदिजिये, आखीरकार! कमरा खालीकरना पडा, और अपनेघरकी-राह लेना मुनासिब समजा,-देखिये! जो शख्श-किसी कामकेलिये अखीर नतीजा नही सौचते-पिछेसें रज उठाते है,

२८ [एक देहाती और मनीओर्डर]

एक देहाती-मनीओर्डर भेजनेके लिये डाकखानेकों गया. डाक मास्तरने मनीओर्डरका फार्म देखकर कहा, इसका महसूल आठआने पडेगा, देहातीने कहा, मे-गरीब हु-चारआने दूगा, डाकमास्तरने कहा, इससे-कम-नही होगा, भेजना-हो-तो-भेजो, वरना! चले-जाओ, देहाती-मनीओर्डरका फार्म लेकर ऐसा बोलताहुवा चला गया, मुह-मागे दाम-कभी किसीकों मिलते है?-मे-दुसरे डाक खानेमे चला जाउगा, देहातीकों इतना मालुम नही.-चाहे जिस डाकखानेमें जाओ कायदे सबजगह एकसरीखे होते है,—

२९ [एक सिगरेट पीनेवालेकी-तरकीब,-]

एक-शख्श-रेलमें-सफरकों-जा-रहा था, और उसकों सिगरेट पीनेकी जरुरत पडी, अपनी जेबमे देखता है,-वो-सिगरेटका-बकस -खाली था, उसरेलके डब्बेमे-एक-मुसाफिरको सिगरेट पीते देख-

कर उठा, और उसके पास पहुचा, नजीकमे बेठकर कहनेलगा. ओहो!-आप है? बहुतदिनोंसे मुलाकात हुई,-मुसाफिरने ताज्जुब होकर उसकी तर्फ देखा, सिगरेट पीनेका ख्वाहेसमद बोला! आपने सायद! मुजकों पहचाना नही, दो-महिने पेस्तरकी-बात है,-इसी-रैलमे आपकी मुलाकात हुई थी, और एक-उमदा-सिगरेट आपने मुजको पिलाई थी, मुसाफिरने अपनी जेंबसे एक सिगरेट-केस-निकालकर उमदा सिगरेट दिई, सिगरेट पिनेके ख्वाहेसमंदने उसको सुलगाई और एक-दो-दफे धुआ खीचकर कहने लगा. वाह! क्या उमदा सिगरेट है,-इसतरह खूब तारीफ करने लगा, करीब दुसरे मुसाफिर बेठे थे-कहने लगे, खूब! चलता पूर्जा-है,-सिगरेट पि-नेकी गरजसें तारीफ करता है, सिगरेट देनेवाले-मुसाफिरने-कहा, चाहे जिसगरजसे तारीफ करता हो, एक सिगरेट देनेमे कोनसी दौलत चलीगई? अमीर लोग अपनी अमीरी तर्फ खयाल रखते है,-

३० [एक स्कूलमास्तर और पढनेवाला लडका]

एक दौलतमदका लडका जिसका नामभी दौलतचंद था, एक-रोज-स्कूलमे जाना नही चाहताथा, उसके घरमे टेलिफोन लगा था, और स्कूलमेभी-टेलिफोन लगाहुवाथा, फौरन! टेलिफोन उठाकर स्कूलसें मिलाया, और बोला, हेडमास्तर साहब है? उधरसे अवाज आइ, हा! मेही हेडमास्तर हू,-कहो! लडका बोला, आज दौलत-चदकी तबीयत नादुरुस्त है, स्कूलमे नही आसकेगा, उधरसे अवाज आई-यह-कौन बोल रहा है? लडकेने घबडाकर जबाब दिया-मेरे वालिद, हेडमास्तर साहबने कहा, इल्मपढनेमे सुस्ति नही रखना चाहिये.—

३१ [अलिफस्सा-लाभचद्र और फकीरचद्र,]

एकरोज ऐसा बनाव बनगया, लाभचद्रजी-और-फकीरचद्रजी-आमने सामने मिलगये, लाभचद्रजी-फकीरचद्रजीकी तर्फ मुखातिब होकर कहने लगे, आपका नाम-फकीरचद्रजी साहब है, फिर इसका

दरदौलत-जमा-क्यौं-कर रखी है? किसी रोटियोंके मोहताजोंकों खैरात करदिजिये, जभी आपका नाम जाइज होगा, इसपर फकीर-चद्रजीने इल्तिमाश किया, जनाब! आपका नाम लाभचंद्रजी है,-फिर आपने आइंदाकेलिये-धर्मका-कोनसा लाभ हासिल किया, जबाब दिजिये,-लाभचद्रजी बोले, क्या खुब बात कही, मेने-जो-कुछ पुछा, उसका जबाब दिया नही,-और दुसरोकी पचायतमें पडगये, फकीरचद्रजी, क्यों साहब! मेने इसमें क्या राय-गेरमुमकीन किई? जैसा आपने पुछा, वैसा मेने जवाब दिया, दोनों चूप होगये, और अपना अपना रास्ता लिया, बाद चदरोजके फिर एकरोज दरियाकिनारे उनकी भेट होगइ, लाभचद्रजीने-फकीरचद्रजीसे जाहिर किया, -शातिचद्र और प्रकोपचद्र-नाहक! किसीबातपर-जिद-कर रहे है, आप चलकर उनका तस्फिया करदीजिये, फकीरचद्रजीने कहा, शानिचद्रजी अगर मुताबिक अपने नामके शातिपकड लेयगें-खुद-बखुद तस्फिया होजायगा, लाभचद्रजी बोले-शातिचद्रजी-तो-बातबातपर आसानमें-चढतेजाते है,-फकीरचद्रजीने कहा, फिर मुजसें क्या कहते हो,-मुताबिक नामके उसूल होना, इसीलिये-तो-मुश्किल है,-एकशख्शका नाम-ज्ञानचद्र था, मगर तारीफ उनमें यह थी,-खत-किताबभी नही लिख-पढ-सकते थे,-कहो! इनकों ज्ञानचद्र कहना -या-अज्ञानचद्र? जबाब दिजिये,-

३२ [धर्मगुरुकी-चतराई]

एक शख्श-अपने धर्मगुरुके सामने जाकर कहनेलगा, मुजे-इन -इन बातोंकी कसम देदिजिये, कभी-साबत नारीयल-मुहमें डालकर खानानही,-शेरकी मूछके-बाल-उखाडना नही, और उंदरोकी गाडीमें बेठकर मुसाफरीकों जाना नही, धर्मगुरुने कहा, व्रत-नियम लेना नही, और कोरीबाते बनाना इसीका नाम है,-याद रहे! हर हमेश पानीमें तेरनेवाला-कभी-उसीमें खता पायगा, सापके खेलारी -कभी-उसीखलमें तकलीफ, उठायगें, और-नशाकरनेवाले-कभी-

नशेमेही-गाफिल होकर तकलीफ पायगें, आदमी-विदून तकलीफके धर्मकों याद नही करता, अगर कोइ विनातकलीफ-आरामचैन-मेभी-देव-धर्मकों याद करे, उसकी हजार-हजारतारीफ है,-धर्मगुरुकी इस-धर्मतालीमकों सुनकर-वो-खुश हुवा, और धर्मपावंद वना.-

३३ [धर्म-पुन्य-करना-इसीका नाम परलोककी तयारी हैं]

एक शख्श-चंदरोज वीमार रहा, और जब उसकी वीमारी वढतीजाती थी, उसके मुलाकातीलोग उसकों मिलने आये,-एक-दोस्त वीमार शख्शके करीब बेठ गया, वीमार वोला,-बहुतरोजतक तुमारा और मेराशाथ रहा, अब-मे-जाता हु. दोस्तने कहा, किधर जाते हो, वीमारने कहा, परलोककों,-दोस्तने पुछा, फिर आप लोटेंगें कब? महिनेभरमे-या-दो-महिनेमे? वीमारने कहा, नही, नही, कभी नही,-दोस्तने पुछा, आप-जहा-जानेवाले है, वहाके-लिये तयारी क्या कररखी है? वीमारने-जवाब दिया, कुछ नही,-दोस्तने कहा, वडे ताज्जुबकी वात हैं,-एक गावसें दुसरे गावकों जाना हो-तो-खानपान और विस्तरकी तयारी किइजाती हैं, आपने पर-लोककेलिये कुछभी तयारी नही किई, वीमारने कहा, खेर! अबभी तयारी करसकता हु,-लो! धर्म-पुन्यमें-पाच हजार देता हु, ती-र्थोंमे दश हजार-और-अनुकंपादानमें-पाच-हजार-देताहु. ऐसा कहकर फौरन! उसउसकाममें-नगद रुपये भेजवा दिये. बस! इसीका नाम परलोककी तयारी है,-कितनेक लोग-तुर्त-रकम देते नही, और हाथसें धर्म करते नही, पिछले वारीशोंकों कहजाते है, मेरे पिछे -इतने रुपये धर्ममे खर्चना, पिछले वारीश-कहे मुजब करते नही, और कहनेवाले धर्मके गुन्हेगार बनते है,-मुनासिब है. जीते-जी-जो -कुछ-करना हो-कर लेवे,-इसीका नाम-परलोककी तयारी है,-

३४ [दो मुसाफिरोंका-सफर,]

दो-मुसाफिर सफरकों-जा-रहे थे,-दुफेरके वख्त-एक-मुकामपर

बेठकर खाना खाया, और दो-घंटे आराम किया, चलते वख्त एक मुसाफिरने इधर उधर देखकर कहा, मेरा रुमाल-मिलता नही, जब यहा -आये थे,-तनतक मोजूद-था, अब-न-मालुम-कहा गया ? दुसरे मुसाफिरसें रायतलब किई-आपने-तो-सायत ! नही लिया, उसने जबाब दिया, मेने नही लिया-और इधरसे उठकर गया नही, आप खुशीसे तलाशी लेसकते है,-रुमालके मालिकने कहा, आप-नेकशख्श है,-आपका सचफरमानाही-काफी है,-इतनेमे दो-चार-राहगीर लोगभी-वहा-जमा होगये और कहने लगे, वगेरसबुतके किसीकों कुछ कहना बहेत्तर नही, पेस्तर अपने असबाबको अछी तरह देखलो ! इतनी देरमे देखभाल करते अपने सिरकी टोपी अचानक गिरपडी,-और उसीमे- रुमाल दिख पडा, रुमाल छोटाही-था, रुमालका मालिक रुमाल मिलनेसे खुश-हुवा, और कुछ शर्मींदाभी हुवा,-रुमाल अपनेही हाथसे टोपीमे रखा था-अपनीभूल अपनेकों मालुम नही होती.-

३५ [कभी छोटे आदमीकी अक्कलभी कामदेती है]

एक शख्श लोहेके कारखानेमे काम करता था, और लोहेके हथियारसे लोहेकी चीजमे छेद गिराता था, इत्तिफाक ! उसमेसे- खसखसके दाने जितनी लोहकीकणी उसकी आखमे-जा-पडी. उसकों तकलीफ हुई और डाक्तरके पास वास्ते इलाजकों गया. डाक्तर-साहबने बडी देरतक कोशिश किई, इतनी देरमे वहां दवालेनेकों आया हुवा एक शख्श बेठा था,-उसने कहा, अगर लोहचुबक हाजिर हो,-और-आखके करीब-थोडी देर रखाजाय-लोहेकी बारीक कणी -खुद-बखुद निकल जायगी, डाक्तरसाहबने ऐसाही किया और तुर्त -लोहकण-निकल आया डाक्तरसाहब कहने लगे, बेशक ! तरकीब अछी है,-

३६ [एक मलाह और साहूकारका-किस्सा -]

एक वख्तकी बात है,-एक-साहूकार-नावमें बेठकर समुदरकी

मुसाफरीको-जाताथा,-साहूकारने मलाहसे पुछा, तुमारे वालिद मौजूद है-या-नही? उसने कहा, मौजूद नही, साहूकारने पुछा, उसका मरना कैसे हुवा? मलाहने कहा, एकरोज वडा तूफान आयाथा,-उसी तूफानमे मेरे वालिद इसी समुदरमे डुब मरे, फिर साहूकारने पुछा, तुमारे दादा-कहा-मरे? उसने जबाबदिया, इसी समुदरमे, फिर परदादेके बारेम पुछा, उसके जवाबमभी-यहा, ईसी समुदरमे डुब मरे, साहूकारने कहा, जब तुमारे वडेरे इसीमे-डुब-मरे-तो-फिर-तू! इस धंदेको क्यो नही छोडता? मे-तो-समुदरकी मुसाफरीसे-जब-कनारेपर पहुचु-दुसरी जुंदगी मिली समजता हु,-मलाहने साहूकारसे रायतलब किई, अगर हुक्म-हो-तो-मेभी आपसे एक-दो-सवाल पुछ लउ, साहूकारने कहा, शोखसे पुछो, मलाहने सवाल किया, आपके वालिद कहापर इंतकाल हुवे? साहूकारने जवाब दिया, -वे-दुसरी जगह कहा मरते, घरमेही इतकाल हुवे, मलाहने पुछा, आपके दादा कहा गुजरे,-साहूकारने-कहा वेभी घरमे, फिर सवाल किया, आपके परदादा कहा मरे? साहूकारने जबाब दिया-वेभी-घरमें मरे, मलाहने कहा, जब-आपके वडेरे-सब-घरमे-मरे-तो-आप-खुद-घरको छोडकर कनारा क्यो नही लेते? और परलोकका -रास्ता-साफ करो, मलाहके इसमाकुल जबाबसे साहूकार चुप होगये, और कहनेलगे भाइ! तुमारा कहना बजा है.

३७ [एक लडकीकी-चतराई,]

एक पडित-नजीकमे रहतेथे,-और-लडकोंको इल्म पढातेथे, पडोसीकी एक लडकी-थोडीसी-आग-मागनेकेलिये आई, पडितजीने कहा, तूं! आग-लेगी किसपर? ऐसाकहकर-पडितजी-घरके-अदर -कुछ-बर्तन-लेने गये, इतनेमे उस लडकीने-ठडी-राख-लेकर अपनी हथेलीपररखी और उपरसे-छेणके-दो-तीन-टुकडे रखे, पडितजी-अदरसे बहार आये-और लडकीकी चतराइ देखकर खुशहुवे,

और कहने लगे, लडकी छोटी है, मगर-उसकी-अकल-लाईक तारीफके है,—

३८ [नसीहतकी-बाते,-]

तकदीर जिसकी हाजिर नाजिर है, उसका कोई-बाल-बांका नही करसकता,-इसीलिये कहागया, तक्दीर बडी चीज है,-हार पहनना किस्मतमे नही ताज पहनना कैसे मिले, तीर्थंकर-गणधरोंकी फरमानबरदारी करनेवाला-जन्नत-या मुक्ति पाता है,-धर्मपर कामील एतकात-रखो,-दुनियामे उमदाचीज धर्म है,—

[शेयर]

जैसे दुनियाकेलिये-आफतानरोशन है,
इन्सानकेलिये कामील-एतकात रोशन है,-१

शास्त्रके हुक्मकी नाफरमानी करना-इससे-तो-नास्तिकबन-जाना बेहत्तर है, अपनी जालसाजी अपनेकोंही होटेसे गिराती है, -अगर बदकारी अछी होती-तो-अछे लोग इससें-नफरत क्यों करते? गुस्सेमे दिवाना होना अपनेही बिगाडकी सुरत है,-बेइमानीके गुब्बारे उडाना, अखीरमे पस्ताना होगा, कमालहुस्न और मुबारक चेहरा अगर नियत-बद है-तो-कौन कामका? जिस हीरेकों-सचा-समजते थे-काचका-टुकडा निक्ला यहभी किस्मतकी बात है,-किस गरजसे दुनियाम तशरीफ लाये थे, और क्या करचले इसपर खयाल रखो जवानी चदरोजकी-है,—

३९ जो-लोग दुनियाके एश आरामपर धर्मकों भुलगये है आखरकार पस्तायगें. इश्कमे गिरफतार हुवा शख्श-धर्म-नही करसकता, जिसका दिल पथ्थर उसकों धर्मका क्या असर? किस्मतकों तस्लीमकरके-आदमी-जब-जान्हमरसीद होता है, यादकरता है,-मैने-आगपतके लिये कुछ नही किया, जईफीमें-जब-अजर पजर ढीले होजाते है,-न-धर्म-बनसकता है,-न-दुनयवी कारोबार, बदकामोंमे जबानकों लगामदेना बेहत्तर है,-तंदुरस्ती एक किमती

खजाना है, बुजुर्गोंका कौल है-लाख नियामते एक तदुरस्ती, झनुनी मिजाज दोजकका रास्ता है, जहांतक बने दिलमें रहम रखो, दुनयवी कारोबारमें बडी बडी सखावत किई, धर्मके लिये क्या ! किया ? दुनियाके एशआराम-एक-खूबसुरत-बला है,मगर-तारीफ है, जिनका-धर्म-रोशने चिराग है,-जिसकों दोजकजाना मंजुर होगया-अगर-धर्मसें नफरत करे कौन ताज्जुबकी बात है ? मोहकर्म-जिसके गिरफतार होगया उसके दुसरे कर्म-खुद-बखुद गिरफतार होजायगें,-गयेगुजरे दिनोंमे धर्म किया नही, अब जइफीमें क्या करसकेगें ? अकेले आये अकेलाजाना है,-शिवाय धर्मके दुसरा क्या लेजाना है,—

४० तीर्थोंकी जियारत जानेमें-बहानेबाजी-मत करो, तीर्थमें जाना बडी तकदीरकी बात है,-शुक्र गुजारो, तीर्थोंकी जियारत नियामत हुई, किस्मतकी कमनसीबीपर किसीका मिजाज नही चलता,-आदमीकों अपना लिबास-बमुजब अपनी हेसियतके रखना चाहिये-दुनियामें मिशल मशहूर है,-एक-नुर-आदमी, हजार नुर कपडा, जबानकी बरछिया जिगरकों पार करदेती है, सोच समज कर बोलना चाहिये, पथ्थरकों मोंम करना शिवाय-मालकोस रागके दुसरोंकी ताकात नही, दौलतखाना और गरीबखाना यहाही रहजायगा, एक-जिगरका-दोस्त-धर्महीं शाथ चलेगा, दुनिया दुरंगी है, चाहे-सो-कहे, आप अपनी नेकीपर साबीत कदम रहना चाहिये, आदमीका-चोला-पाकर ऐसा-न-हो-जो-धर्मसें नेंरग रह जाओ, जब तुमारे घर खुशीके नगारे बजतेथे, सबलोग हाजिर होतेथे, मगर दौलत चलीजानेपर कोई नही आता,—धर्मकी राह-पर-कुछ खेरात दो, बडेबडे आलिमोंने धर्मकों तस्लीम किइ है,-किस्मतका सितारा रोशन है,-तो-सब काम मरजीके मुवाफिक होते जायगें,-फिक्र मत करो.-

४१ [पोथीके-बेंगन,]

एक पंडितजी हमेशा दुसरोंकों कथा सुनाया करतेथे, ईत्तिफाक ! उसमे बेंगन खाना-या-नही, इसके बारेमे बात चली, पडितजीने फरमाया, बेंगन नही खाना चाहिये, पडितजीकी औरतभी-उसदिन -कथासुननेको-आइथी, और बातकों सुनतीथी, जब कथा-खतम हुइ,-सबलोग अपने अपने-घर चले गये, दुसरे रोज पडितजी-बाजारसे-बेंगन खरीदलाये, और अपनी औरतसे कहा, इसकी तरकारी बनावो, औरतने कहा, आपने पोथी बाचते वख्त बेंगन खाना मना फरमाया था, फिर आप क्यों लाये ? पडितजीने कहा, वो-पोथी बाचतेवख्तके बेंगन दुसरे थे, और-ये-दुसरे है,—

४२ [तदवीरसे तकदीर बडी है-इसपर-मिशाल,]

एक साहूकार ष्टीमरम सवार होकर समुद्रकी मुसाफरी-जा-रहाथा, ष्टीमरम उसको खयाल पैदा हुवा, देखना चाहिये, तकदीर बडी है,-या-तदबीर ? ऐसा सोचकर अपनी अगुठी जिसपर अपना नाम कोतराहुवा था, समुदरम-डाल दिई, और दिलमे खयाल किया, विना तदबीर किये मिलती है,-या-नही -इसी खयालसें आगेकों-गया, जिसशहरको जाना था-वहा-तिजारतकरके वापिस अपने घर आया. उधर समुदरम-जब-अगुठी डाली थी, एक मछली उसे निगल गई थी, और चदरोजम-वो-समुद्रके-कनारे जिस-शहरमे उससाहूकारका घर था-उसशहरके कनारे आई,-और मरगई, मछीमारोने उसकों-उठालिई-देखते है-तो-उसके पेटमेंसे अगुठी निकली उस-पर नाम लिखा हुवा था. एक मछीमारने सोचा,-फलाने साहूकारकी अगुठी होना चाहिये-और वो-मछीमार उस साहूकारसें लेन-देन-करता था, उसने जाकर अगुठी साहूकारको दिई, साहूकार-खुश हुवा और दिलमे कहने लगा. वाहरे ! तकदीर तेरी तारीफ है, देखो ! समुदरमें डाली हुई-अगुठी-बगैर तदबीरके घर-बेठे आ-मिली.-खयाल करनेकी बात है,-तकदीर कितनी बडी

है ? अगर कहाजाय-मछीमारने तदबीर करके अगुठी लाई जब साहू-कारको मिली, जवावमे मालुम हो, साहूकारने कब तदबीर किई थी ? उसको तो विना तदवीर किये तकदीरके जोरसें मिली, इसीसे कहाजाता है,-विना तदवीर कियेभी अगर तकदीर तेज हो-तो-चीज घरबेठे मिल जाती है,—

४३ [उतने पांव पसारिये,-जितनी चादर होय,-]

हरेक शख्शको लाजिम है,-मुताविक अपनी ताकातके खर्च करे, और सोते वख्त उतनी दूर-पाव-पसारे जितनी लबी चादर हो.-मकान छोटा और सामान ज्यादा,-सो-रुपये पास नही और हजा-रका माल खरीदना कैसे वनेगा ? इस वातकों सौचो ! अगर अपने पास-सो-रुपये जमा है,-तो-पोनसोका माल खरीदो और पचीस जमा रखो, पासमे पैसा नही और विवाह सादीकी वाते बनाना क्या फायदा ? जिस कामके अखीर नतीजेमें फिक्र पैदा हो-वो-काम-क्यौं करना ? साधुजनोको मुनासिव है, मुताविक अपनी ताकातके -तप-करे, वगेर ताकातके तप करना-फायदेकी जगह नुकशान है, -दिलमे वुरे वुरे इरादे पेंश होगे. इल्म पढना-न-हो सकेगा, और अखीरमे वीमारी पैदा होगी.—

४४ [फिजहूल वाते वनाना वहेतर नही]

दो-शख्श-नजीक-नजीकमे हल खेड रहेथे, एकशख्शने दुसरेसें पुछा, फला गाव यहासे कितना दूर है ? दुसरेने कहा, चार कोश है, पुछनेवालेने कहा, नही ! तीन कोश है, दुसरेने कहा, नही ! चारही कोश है,-इसतरह-वातवातमे-दोनोंकी खुब जीद होगई, तमाशा देखनेवाले जमा होगये, उनमेंसें एकशख्शने कहा, आपकी वातोंमे सिर्फ एक कोशका फर्क है, जाने दो,-फिजहूल लडाइ क्यौं लडते हो, चारकोश कहनेवालेकों कहा, तुम एककोश छोडदो, उसने कहा, मुफतमे एक कोश कैसे छोडु ? इसतरह जीद करते रहे, मगर अपनी वात किसीने नही छोडी, तमाशादेखनेवाले चले गये,-और-वे-

४१ [पोथीके-बेंगन,]

एक पंडितजी हमेशा दुसरोंको कथा सुनाया करतेथे, ईत्तिफाक ! उसमे बेंगन खाना-या-नहीं, इसके बारेमें बात चली, पंडितजीने फरमाया, बेंगन नही खाना चाहिये, पंडितजीकी औरतभी-उसदिन -कथासुननेको-आइथी, और बातकों सुनतीथी, जब कथा-खतम हुइ,-सबलोग अपने अपने-घर चले गये, दुसरे रोज पंडितजी-बाजारसे-बेंगन खरीदलाये, और अपनी औरतसें कहा, इसकी तरकारी बनाओ, औरतने कहा, आपने पोथी बाचते वख्त बेंगन खाना मना फरमाया था, फिर आप क्यों लाये ? पंडितजीने कहा, वो-पोथी बाचतेवख्तके बेंगन दुसरे थे, और-ये-दुसरे है,—

४२ [तदबीरसें तकदीर बडी है-इसपर-मिशाल,]

एक साहूकार ष्टीमरमें सवार होकर समुदरकी मुसाफरी-जा-रहाथा, ष्टीमरमें उसको खयाल पैदा हुवा, देखना चाहिये, तकदीर बडी है,-या-तदबीर ? ऐसा सोचकर अपनी अगुठी जिसपर अपना नाम कोतराहुवा था, समुदरमें-डाल दिई, और दिलमे खयाल किया, विना तदबीर किये मिलती है,-या-नही.-इसी खयालसें आगेकों-गया, जिसशहरको जाना था-वहा-तिजारतकरके वापिस अपने घर आया उधर समुदरमें-जब-अगुठी डाली थी, एक मछली उसे निगल गई थी, और चदरोजमे-वो-समुदरके-कनारे जिस-शहरमे उससाहूकारका घर था-उसशहरके कनारे आई,-और मरगई, मछीमारोंने उसको-उठालिई-देखते है-तो-उसके पेटमेंसे अगुठी निकली. उसपर नाम लिखा हुवा था. एक मछीमारने सोचा,-फलाने साहूकारकी अगुठी होना चाहिये-और वो-मछीमार उस साहूकारसें लेन-देन-करता था, उसने जाकर अगुठी साहूकारको दिई, साहूकार-खुश हुवा. और दिलमे कहने लगा. वाहरे ! तकदीर तेरी तारीफ है, देखो ! समुदरमें डाली हुई-अगुठी-बगेर तदबीरके घर-बेठे आ-मिली-खयाल करनेकी बात है,-तकदीर कितनी बडी

है ? अगर कहाजाय-मछीमारने तदबीर करके अंगुठी लाई जब साहू-कारकों मिली, जवाबमे मालुम हो, साहूकारने कब तदबीर किई थी ? उसकों तो विना तदबीर किये तकदीरके जोरसे मिली, इसीसे कहाजाता है,-विना तदबीर कियेभी अगर तकदीर तेज हो-तो-चीज घरबेठे मिल जाती है,—

४३ [उतने पांव पसारिये,-जितनी चादर होय,-]

हरेक शख्शकों लाजिम है,-मुताबिक अपनी ताकातके खर्च करे, और सोते वख्त उतनी दूर-पांव-पसारे जितनी लंबी चादर हो.-मकान छोटा और सामान ज्यादा,-सो-रुपये पास नही और हजा-रका माल खरीदना कैसे बनेगा ? इस बातकों सौचो ! अगर अपने पास-सो-रुपये जमा है,-तो-पोनसोका माल खरीदो और पचीस जमा रखो, पासमे पैसा नही और विवाह सादीकी बातें बनाना क्या फायदा ? जिस कामके अखीर नतीजेम फिक्र पैदा हो-वो-काम-क्यौ करना ? साधुजनोको मुनासिब है, मुताबिक अपनी ताकातके -तप-करे, बगेर ताकातके तप करना-फायदेकी जगह नुकशान है, -दिलमें बुरे बुरे इरादे पेश होगे. इल्म पढना-न-हो सकेगा, और अखीरमे बीमारी पैदा होगी.—

४४ [फिजहूल बाते बनाना बहेतर नही]

दो-शख्श-नजीक-नजीकमें हल खेड रहेथे, एकशख्शने दुसरेसें पुछा, फलां गाव यहासे कितना दूर है ? दुसरेने कहा, चार कोश है, पुछनेवालेने कहा, नही ! तीन कोश है, दुसरेने कहा, नही ! चारही कोश है,-इसतरह-बातबातमे-दोनोंकी खून जीद होगई, तमाशा देखनेवाले जमा होगये, उनमेसें एकशख्शने कहा, आपकी बातोंमे सिर्फ एक कोशका फर्क है, जाने दो,-फिजहूल लडाइ क्यौ लडते हो, चारकोश कहनेवालेकों कहा, तुम एककोश छोडदो, उसने कहा, मुफतमे एक कोश कैसे छोडुं ? इसतरह जीद करते रहे, मगर अपनी बात किसीने नही छोडी, तमाशादेखनेवाले चले गये,-और-वे-

दोनों दिनभर जीद करते रहे,-एक वख्तकी बात है,-दो-मुसाफिर रास्ता चलते थे, उनमेसें एकने कहा, हमारे शहरकी मिठाई अछी होती है, दुसरेनें कहा, हमारे शहरकी मिठाई अछी होती है,-इस बातपर दोनोंकी बडी जीद हुइ, और दोनोंके मिजाज गर्म होगये, तीसरे-मुसाफिरने-कहा, अपने अपने-शहर जाकर तसल्ली करना, यहा रास्तेमे-क्यौं जीद करतेहो, चीज हाजिर नही नाहक! बातोंसें लटना क्या फायदा? जाइये! अपने अपने रास्ते को,

४५ [एक शेठके घर मेहमान आये-और चलेगये,-]

एक शेठके घर चार मेहमान आये, शेठ लोभी था,-दिलमे ख्याल किया, नाहक! खर्च पडेगा, कोई ऐसी तरकीब करनाचाहिये, -ये-लोग नाराजभी-न-हो, और चलेजाय, ऐसा सोचकर अपनी औरतकों घरमेसे बुलवाई, और मेहमानोंके सामने कहनेलगा, सुनती है? चिराग जलाओ! मेहमानोंने-कहा,-अभीतो-आफताब रोशन है, चिराग जलानेकी क्या जरुरत? लोभीशेठ-कहने लगा,-मेरे घरवाली ऐसी सुस्त है,-जो-अभी-काम कहु-वो-शामकों करेगी, इस बातकों-सुनकर मेहमानोंने सोचा! अगर रसोइ बनाते शाम करदेगी, और आपनलोग भूखे रहेगें और जिसकामकों आये है,-वो-कामभी-न-होगा मुनासिब है, कोई बहाना करके यहासे चले जाय, थोडी देरके बाद चारों मेहमान उठे-और कहने लगे, इसवख्त जरुरीकाम है अभी-तो-हम-जायगें फिर कभी जरुर आयगें. आपसे कुछ जुदाई नही है,-लोभी शेठने जाना, अछा हुवा, एकही -तरकीबसे-चले गये,-वरना! दुसरी तरकीब करना पडती, ऐसेभी लोभी शख्श दुनियामे होते है,-जो-अपने मेहमानोंकोंभी दगा देनेसें बाज नही आते, और ऐसाभी नही सौचते-आपनकभी-उनके-घर-जायगें-तो-अपनी खातिर कैसे होगी. मेहमानोंकी खातिर करना अपनीही-खातिर है,-

[बयान अकलके फवारोंका खतम हुवा-]

[गुलदस्ते-जराफत,]

१ इसमें नसीहतके गुलदस्ते दर्ज है, पढकर-इम्तिहान करलिजिये.—

[फुरसद् नही-इसपर एक मिशाल.-]

एक साधुमहाराज एक दुकानदारसें कहने लगे,-इसवख्त-शास्त्र-बचता है, तुम सुनने नही जाते? दुकानदारने कहा. क्या करे! फुरसद नही, साधुमहाराजने कहा,-तीर्थोंकी जियारत जाते हो-या-नही? दुकानदारने कहा, घडीभर फुरसद नही,! साधुमहाराजने कहा. कुछ खेरातभी करते हो-या-नही? दुकानदारने कहा, क्या करे! फुरसद् बिल्कुल नही. साधुमहाराजने कहा,-सोचो!-तुमको-फुरसद-तो-कभी मिलनेवाली नही-तो-क्या धर्म नही करना, मगर दुकानदारने-वो-बात सुनी-अनसुनी करगया, बाद चदरोजके ऐसा-मौका-बना, वही दुकानदार बीमार पडा, और महिने तक-बिछौनेपर पडा रहा, इत्तिफाक! एकरोज वही साधुमहाराज भिक्षाके-लिये फिरतेहुवे उसी दुकानदारके घर गये, मुलाकात हुई, और पुछने-लगे,-क्या बीमार पडे हो, उसने जबाब दिया, महाराज! सनाम-हिना होगया. बिल्कुल घरके बहार कदम नही रखा, साधुमहाराजने कहा, इतनी फुरसद कैसे मिली? उसवख्त कहते थे,-घडीभर-फुरसद नही मिलती, दुकानदारने कहा, बात बहुतसच है,-बेशक! फुरसद नही मिलनेके जुठे बहाने है, अगर फुरसद मिलाना चाहे मिलसकती है,-मे-सनामहिनेसें-फुरसदही-मिला रहा हु,—

(दोहा,-)

दुखमे सब समरन करे, सुखमे करे-न-कोय,
जो-सुखमें समरन करे,-दुख काहेको होय.-१

दुकानदारने कहा, आपका फरमाना बहुत बहेत्तर है, अगर मे-इस बीमारीसे फतेह पाया, जरुर फुरसद निकालकर धर्म करुगा, बाद चदरोजके-वो-आराम तलब हुवा, और धर्म-करने लगा,—

२ [दो-शुस्त आदमीयोंका-किस्सा,-]

एक मकानमें-दो-शुस्त आदमी जागते हुवे सोते थे,-एक सुस्तके मुहपर मख्खी बेठी, उसने दुसरे शुस्तको कहा मेरे मुहपरसें मख्खी उडादो, अछी बात! दुसरा शुस्त कहने लगा, मेरे हाथपर चींटीये-काट-रही है जरा खाज करदो-तो-अछा है,-दोनों शुस्त पडे रहे, मगर-एक-दुसरेका काम नही किया, इतनेमे उसमकानकों आग लगी, लोग जमा हुवे, और कहने लगे-उठो,-आग-बुझाओ, वरना! जल मरोगे, मगर दोनो उठे नही आखीरकार! लोगोंने खींचकर बहार निकाले, लेकिन!-ये-खुद उठकर बहार नही आये,-शुस्त आदमी ऐसे होते है,-जिनकों अपने मरनेकीभी दरकार नही, शुस्ति रफाकरना चाहिये,-और-जो-काम करनाहो, थोडा थोडा करते रहना, जिससें एकशाथ तकलीफ उठाना-न-पडे, और कामभी पुरा होजाय.—

३ [दूधकी एवजमें पानीके घडे -]

अगले जमानेमे-एक-शहरका बादशाह खुशहालनजर और जवाहरसें मालोमाल था, एकरोज सेरदरबार अपने-दश-नोकरोंकों बुलवाकर हुकम दिया, महेलके पिछाडी-मेरा होज खालीपडा है, रातके वख्त एक-एक-घडा दूधका भरकर उसमें डालजाओ! दशही-नोकरोंने कहा, जो-हुकम बादशाहका, उसी मुआफिक किया जायगा. रातके वख्त दश नोकरोमेसें-एक-नोकरने खयाल किया, अगरमे-दूधकी एवजम पानीका घडा डालदुगा-तो-कौन देखने आयगा? इसतरह दुसरेनेभी-सौचा! आखीरकार सब ऐसाही सौचकर-पानीके-घडे-होजमें डालगये, बादशाहने शुभहके वख्त देखा-तो-अपने होजमे दूधकी एवजमे पानीभरा पाया, दिलमे सौचने लगा. -ये-सब-नोकर बडे बदनियत है, सबकों बुलवाकर कहा, मेने क्या हुकम दिया था, और तुमने क्या! तामील किई, सच बोलो! वरना! सजा पाओगे, सबने अपने अपने इरादे जाहिर किये,-बादशाहने

सौचा! सनके दिलमे-वदी है,-अन इनकों नोकरीसें-रुकसद-कर-देना चाहिये, वजीरको बुलवाकर कहा, इनको अपने मुल्कसे बहार करदो.—

४ [जो हुवा-सो-अच्छेकेलिये हुवा]

(इसपर एक मिशाल,-)

पेस्तरके जमानेमे-तारापुर-शहरमे-एक दौलतमंद शेठ रहता था, उसके खजानेमे जवाहिरात और अशफिया अनगिनतीके-थी. उसके शेठानी-लडका-और लडकेकी औरतभी-मौजूद थी. एक रौज-सास-बहूका झगडा हुवा और-बहू-नाराज होकर अपने वालिदके-घर-चली गई, शेठानीने आनकर शेठकों कहा, बहू-उसके-वालिदके घर चली गई, शेठने कहा, जो-हुवा-सो-अछा हुवा, दुसरे रौज घरका एक-कुत्ता-मरगया, शेठानीने आनकर-कहा. आज-अपने घरका कुत्ता मरगया, शेठने कहा, जो-हुवा-सो-अछेके लिये हुवा. तीसरे रौज-शामके वख्त शेठानीने कहा, आज अपने घरका दरवजा गिरपडा है, जिससे-रातकों-किवाड बद-न-होसकेगें,-शेठने कहा, जो-हुवा-सो-अछा हुवा,-शेठानी गुस्साखाकर कहने लगी, न-मालुम आपको क्या हुवा है?-जो-बात कही जाय, जवा-वमे जो-हुवा-सो-अछेके लिये कहदेतेहो, आगा-पिछा-सौचते नही, घरके किवाड-बद-न-होसकेगें-और-माल-असबाबका क्या होगा, शेठने कहा, मेरे खयालसे सब अछा होगा,-गरज!-रातके वख्त-घरका दरवजा-खुला रहगया,-और बारीशके सबब थोडी दिवार गिरगई, और-उसमेसें अशर्फियोंकी संदुक निकल पडी, शेठानी खुश होकर कहने लगी, आज-तो-शेठजीका फरमाना बेशक! सचा हुवा, शेठने कहा, अगर तकदीर अछीहो-तो-सबबात अछी होसके इसमें कोई शक नही,— * --

५ [अज्ञानसे जीव कर्म बाधता है-मगर मालुम होनेपर पस्ताताहै -]

एक-शेठ-अपनी औरतकों हमलवाली छोडकर-तिजारतके लिये दुसरे मुल्कको गया, और बारा वर्सतक तिजारत करता रहा, इधर घरपर औरतको लडका पैदा हुवा और-वो-बारा वर्सका होगया, शेठकों तिजारतकरते दौलत मिली, जवामर्दी-दिलेरी और नामवरीके शाथ तेरहमे वर्स-वो-अपने वतनकों लोटा, रास्तेमें-एक-गावके वहार एक सरायमे ठहरा, और-नाचनेवाली एक तवायफको बुलवाकर-नाच-देखने लगा गरज! नाचका समा-रागका बयान कुछ कहा नही जाता, इत्तिफाक! उसीरोज-उस-शेठकी औरत-बारा वर्सका लडका-एक दासी शाथ लेकर अपने वालिदके घर जाती थी उसी सरायमे रातकों आनकर ठहरी थी-मगर-न-शेठको मालुम-न- शेठकी औरतकों-यहा कौन कौन मुसाफिर ठहरे है,-गरज! जिस कोठरीमे शेठ ठहरे थे, नजदीककी कोठरीमे उसकी औरत और लडका वगेरा ठहरे थे,-शेठकी कोठरीके सामने गानाबजाना होरहा था, चुनाचे! बनाव ऐसा-बना उसके लडकेकों -हैजेकी-बीमारी होगई और-मारे तकलीफके चिल्लाने लगा, गानासुननेमे खललपडा, और शेठ गुस्सेमे आकर कहने लगे-कौन -रोता है? चुप करा दो, लडका-दो-तीनघटे तक-तकलीफपाकर मरगया -चिल्लानेकी अवाज बदहोनेसे-शेठ-खुश हुवा, और शुभहतक मजेमे-गाना-सुनता रहा, आफताब रौशनहुवे बाद उस लडकेके मुर्देकों-दाग-देनेके लिये बहार लेजाने लगे, शेठने अपनी औरतको-और-दास-दासीयोंकों देखा, तलाश किई, और-जब मालुम हुवा रज-करने लगा, इसी तरह जीव-अज्ञानसे-पापकर्मबंध बंधता है,-मगर-जब-उन पापकर्मोंका फल मिलता है यादकरके पस्ताता है,—

६ [वख्त देखकर चलना चाहिये]

एक ब्राह्मणने अपने गांवमें इसबातको जाहिर कर दिई,-में-मेरी लडकीको उसके साथ विवाहुगा. जो-वख्तका जानकार हो, इसी जीद्-पर लडकी बडी होगई-मगर वख्तका जानकार शख्स मिला नही, दुसरे गावका एक ब्राह्मण आया, और उसने सब बात सुनी, उस लडकीके वालिदके पास गया और कहा-मेरा-इम्तिहान करलो, वख्तका पहचा-ननेवाला हु-या-नही ? उसने इम्तिहान किया, और अपनी लडकी उसे विवाह दिई.-वो-वख्तका पहचाननेवाला ब्राह्मण अपनी औरतको लेकर अपने वतनकों गया, हरशख्शको लाजिम है-इनबातोंकों अवलसें सोच लेवे,-आजकल वख्त कैसा है ? मेरे मददगार और दोस्त कोन कोन है ? मेरी आमदनी और खर्च कितना है-मकान, खेती और सवारी कितनी और उनका खर्चा कितना है ? अगर कोई बडा काम आनपडा-तो-मे-कहातक करसकुगा ? मैने धर्मके कोन-कोनसे काम शुरु किये है ? और कितने बाकी है ? जिसवख्त-जो-जो-कामकरना चाहिये अगर-उसवख्त-न-किये जाय-तो-पिछेसे रंज उठाना पडता है,-इसीलिये ज्ञानीयोने कहा वख्तकों चुकना नही.

(दोहा)

बुधजन समय-न-चुकिये,-कहत गुणीजन कूक,
सज्जनको खटकत हिये,-समय चुककी हूक,-१

अकलमदोंका कौल है,-वख्तपर उसकामके लिये-गलती करना नही, गलती करनेसें-वो-बात दिलमे चुबती रहेगी, इसीलिये कहा गया वख्त देखकर चलनेवाला-आराम चैनसें-रहता है,-

७ [नन्यानवेके-फेरमें-पडना नही -]

एक शहरमे एक दौलतमद शख्श रहता था, उसके मकानके करीन एक शख्श ऐसाभी रहता था-जो-मौज-शौखमे दौलत खर्च करदेता था, जितनी पैदाश हुई दुसरेदिन उडा देता था, दौलतमद शख्शकी औरतने इसबातकों देखकर अपने खाविंदसे कहा, अपनेघर दौलतके होते हुवेभी खाते पिते नही, देखो! नजदीकका रहनेवाला शौखीन कितना मजा-उडारहा है? खाविंदने कहा, अनतक-यह -नन्यानवेके फेरमे नही पडा, अगर पड जायगा-तो-सन मौज -शौख-भुलजायगा, देख! अगर इसनातका इम्तिहान लेना हो,- तो-अपने घरमेंसे-नन्यानवे-रुपये लेकर एक-थेलीमे-भर ओर उसके घरमे चुपकीसे डाल-दे,-फिर देखलेना क्या! होता है? दौलतमद शख्शकी औरतने दुसरे रौज-ऐसाही किया, नन्यानवे रुपयोंकी-थेली-उसके घरमे चुपकीसे डालदिई, दुसरे रौज-वो-थेली उस शख्शने अपने घरमे पडी देखी, रुपये गिने-तो-नन्यानवे निकले. और दिलमें सौचा! अगर एक-रुपया-इसमे डालदिया जाय, पुरे (१००) रुपये होजायगें. एक-रौज-पानबीडी-कम-खाओ, ऐसा -समजकर थोडा-खर्च-कम करनेलगा, दुसरे रौज-फिर करकसर करने लगा, इसतरह करते-दोसो-रुपये होगये,-आहिस्ते-आहिस्ते -तीनसो-चारसो-और अखीरमें हजाररुपयेतक इकट्ठे करलिये, -खानापिना-एश आराम और मौजशौख भुलगया, और नन्यानवेके फेरमें पड गया.-दौलतमद शख्शने अपनी औरतकों कहा, देखले! अब-वो-किस हालतमे है? उसके मौज-शौख कहा चले गये,? जा-तलाश कर, उसने तलाश किई. और पुछा,-तो-मालुमहुवा, और उसके खाविंदका कहना करार पाया,-दिलके दलेरोकों कर्मपर भरुसा रखना, और नन्यानवेके-फेरमें नही पडना,-जो-शख्श इसके फेरमे पडजायगा-न-खानपान करसकेगा-न-धर्म-करसकेगा, -हां! इतना याद रहे! अपनी दौलत देखकर खर्च करना, कर्जदार

बनकर खर्च करना अछा नही. कजुसोको खयालकरलेना चाहिये. दौलत शाथ चलेगी नही, जो-कुछ-दानपुन्य-करलोगे, वही शाथ चलेगा,—

८ [एक घरमें-बेहरोंका-कुटुब -]

पेस्तरके जमानेकी बात है,-एक-गावमे-एक बेहरोंका-कुटुब-बसता था, खाविंद और उसकी औरत बेहरी, उनका बेटा बेहरा, और बेटेकी-औरतभी-बेहरी, सासु-रसोई बनाती थी. और फुरसतके वख्त-चरखाभी कातती थी, सुसर खेतमेसें अनाज लाता था, बेटा-खेतमे-जाकर-हल-खेडता था, और उसकी औरत-खाना लेकर खेतमें देनेजाती थी,-एक रोज-हल खेडनेवाले-बेटेकों-चलते मुसाफिरोंने रास्ता पुछा, उसने जाना,-मेरे-बेलकी किंमत पुछते है, जबाब दिया, बेल बडे किमती है, बेचनेके नही, मुसाफिर इसकों बेहरा समजकर चलेगये,-पीछेसें उसकी बेहरी औरत खाना लेकर आई, बेहरा अपनी औरतको कहने लगा, मुसाफिर लोग-बेल-लेनेकों आये थे,-वो-उल्टा-समजगई, और कहने लगी, अगर तरकारीमे-नमक-ज्यादा है-तो-मुजे क्या ! कहते हो. तुमारी अम्माजानने रसोई बनाई है-उनकों कहना, ऐसा कहकर-घर-आई और अपनी सासकों कहने लगी, तरकारीमें नमक ज्यादा डाला होगा. तुमारे बेटे-मेरे पर-गुस्सा-करते थे, सास-चरका कातती थी, कहने लगी, सूत-मोटा कातु-या-पतला-तू-मुजे कहनेवाली कोन? इतनी देरमे ससुर खेतमेसें अनाजकी गठरी लेकर आया, सास-बहूका-झगडा चलता था,-वो-समज गया, आज-मेरेपर गुस्सा क्यों करते है,? मे-तो-अनाज पुरेपुरा लायाहु,-कम-नही लाया,-उधरसें बेहरा लडकाभी-बेल-लेकर घर आया,-अम्मा-वालिदकों और अपनी औरतको बोलते झगडते देखकर कहने लगा, आज-मुसाफिर लोग-बेल-लेने आये थे, मगर-मेने दिये नही, इसतरह बोलते

देखकर पडोसी लोग जमा होगये,-और-कहने लगे-क्या लडते हो? सबकी हकीकत सुनी, मगर उसमे कुछ मतलबकी बात नही देखी, -पडोसी कहने लगे, सब बात सुनलिई है-खानपान करो, और चुपरहो,-बेहरेहो-तो-ऐसे हो बेहरोंसे बात करना बडी मुसीबत है. जिस शख्शकों बेहरी-औरत मिले, उसको-निहायत तकलीफ पेश होगी बेहरा-नोकर-या-बेहरा-मालिक क्या! बातचित करसकेंगे -इसलिये मुनासिब है, जहातक बने-बेहरोंसे अलग रहना,—

९ किसीका दिल दुखाना बहेत्तर नही जैसी अपनी-रूह-दुख रोकीभी समजो. बेलगाडीवाले बेलोंकों और बगीवाले घोडोंकों-दोडाते है,-मगर उनकी चालसें चलनेदेना-रहमदिलोंका काम हैं, -बेजबानोंकों तकलीफ देना-कोई इन्साफ नही,-जो-शख्श धर्मकों चिनेगा, उसके दिलमे रहम जरुर होगा, कइलोग परींदोंकों पिजरेमे डालकर रखते है, मगर-यह-उनके लिये एक तरहका कैदखाना है, जगलमे खेलना, आस्मानमे उडना, और दरख्तोंमे कलोलें करना यही उनके लिये आराम चैन है,-अगर किसीने-तोता-मेना वगेरा परींदे पिंजरेमे रखकर पाले है,-और-उनको छोडदेना चाहे पिंजरेकों जगलमे-ले-जाकर छोडदेवे,-वे-उड-जायगें और मुताबिक अपनी तकदीरके आराम-या-तक्लीफ पायगें,-तुमारा इरादा रहम करनेका है,-इसलिये तुमकों पुन्य है,-अगर कहाजाय-पिजरसें छोडेबाद-वे-मरजायगें-उसका पाप अपनेको लगेगा, जबाबमे मालुम हो -तुमारा इरादा रहमका है-इसलिये तुमकों पाप नही, जैसा इरादा-वैसा-उसकों फल, धर्मशास्त्र फरमाते है,-परिणामे-बंध, (यानी) जिसके जैसे मन परिणाम-वैसा-उसकों कर्मबंध हो अगर अपना इरादा किसी जीवको मारनेका नही-तो-अपनेको पाप कैसे?—

१० अगर कोई कहे-जीवकों-बचानेसे एक जीव-बचानेका पुन्य होगा, मगर वो-जीव-बचेबाद अठारा तरहके पापकर्म करेगा, उसका-पाप-जीव बचानेवालोकों लगेगा, मगर धर्मशास्त्र इसना-

तकों मंजुर नही रखते, जीव-बचानेवालेका इरादा-रहमदिलीका है,-उसको पाप कैसे लगे, ? उसको-तो-पुन्य होगा,-जो-बचाहुवा -जीव-जो-कुछ पुन्य-या-पाप करेगा, उसका-फल उसीकों-लगेगा, बचानेवालोंकों नही, अगर कहाजाय-रहमदिलीसेभी-जैनमुनि -जीवोंकों बाधे-नही. और छोडेभी-नही, मगर यहबात किस खयालसे कही गई है, इसको समजना चाहिये. धर्मशास्त्रमे लिखा है,-धम्मस्स जणणी-दया,-धर्मकों पैदाकरनेवाली-दया है,-दया कहो-या-रहम कहो, बात एकही है,-जहा-रहम-नही वहा धर्म कैसे रहसकेगा ? जैनशास्त्रोमे बयान है-जैनमुनि-किसी-दुनियादारके घरमे-या-बहार बाग-बगिचेमे ठहरेहो, और-वो-दुनियादार घरसे बहार जाताहुवा जैनमुनिको कहे, मेरे-गौ-भेंस-वगेरा जानवर जंगलसे आवे-तो-इसजगह बाध देना, और शुभहके वख्त छोड देना, जैनमुनि-इसबातको-मजुर-न-करे, और कहे हम साधु है,-दुनयवी कारोबार छोड दिये है,-हम-ऐसा नही करसकते,-इसबातकों अगर कोई उल्टा समजजाय-तो-उसकी मरजी ! फर्ज करो ! किसी मकानमे-आग-लगी, और उसमे गौ-भेंस-घोडा-वगेरा जानवर बधेहो, तो-उस मकानका दरवजा-खोलकर-उन जानवरोंकों बचाना फर्ज है, तीर्थंकर नेमनाथमहाराज-जब-दुनियादारी हालतमे थे,-और-जब विवाहने गये थे, उस वख्त पशुओंकों बचाये थे. अगर जीव बचानेमे पाप होता-तो-क्यौं बचाते ?-वे-पशु-छुटेबाद चाहे-सो-बरताव करे, उसका पुन्य पाप-उनकों है, बचानेवालोंकों उससे कोई ताल्लुक नही,-तीर्थंकर पार्श्वनाथ-महाराजने-एक-जलते हुवे सापकों बचाया. अगर जीवबचानेमे-पाप-होता जानते-तो-क्यौं बचाते ? हरेक तीर्थंकर जब दीक्षा इख्तियार करते है,-पेस्तर-एक-बर्सतक-दान-देते है, लेनेवाले शख्श-उस दानसें चाहे-सो-काम करे, उसका-पुन्यपाप-करनेवालोंपर है, तीर्थंकरोंने रहमदिलसें

दान दिया, और उनको-जो-कुछ पुन्य हुवा,-वो-उनोंने उसी भवमे भोगा —

११ किताब ऐसी बनाना चाहिये-जिसमे-दिलचस्प बातें दर्ज हो, और पढनेवाले उससे फायदा हासिल करे, जिस कितावके पढनेसे शर्त्तिया-फायदा-न-हुवा-तो-वो किताब क्या? कागज-स्याहीका -रदिया है,-जिसमे उमदा इबारत लिखी गई हो, अपशब्दका नाम -निशान-न-हो, वही किताब उमदा समजो, जब कोई शख्श दुन यवी-कारोबारसे-हेरान-होजाय उमदा किताब पढना चाहता है, उसकों-जब-उस किताबसे फायदा-न-पहुचा-तो-वो-किताब क्या? कोरे कागजोंका बंडिल है.—

१२ दौलतकी चाहना सब दुनियादारोंकों रहती है, मगर मि लना-न-मिलना तकदीरके ताल्लुक है,-कोई तिजारतसे-या-कोई नोकरीसे दौलत पैदा करता है, कोई-खेतीकरके दौलत पाता है, और कोई-विद्यासें पाता है. कोई हकीमीसे-कोई मजदूरीसे और-कोई हाथी-घोडोंकी तिजारतसे दौलत पाता है, इन्साफ-धर्मकी हिफाजत होनेका सबब है,-अगर इन्साफी कानुन-न-हो-तो-धर्म -बरबाद होजाय, अगर कोई शख्श देवमदिरमे-नेकीसें नोकरी करे. -और देवद्रव्यसें तनख्वाह-ले-तो-उसकों देवद्रव्य खानेका पाप नही, सबब अपनी नोकरीके दाम है, दुकानदारकों मुनासिब है, तोले-मापे कम-न-रखे, मालमे अदल-बदल-न-करे, और व्याज-बीदाम लेवे, पैदाशमेसें चौथा हिस्सा धर्ममें खर्च करे, धर्मादेकी रकम-तुर्त-धर्ममे खर्च करदेवे, अपने चौपडेमे-जमा-कर-न -रखे लोभकों मारना-और-दिलके दलेर होना बहादूरोंका काम है,-सच बोलनेसें-स्नेह-बढता है,-इसजन्ममें अगर कोई शख्श दुस रेका देना-न-देवे,-तो-अगले जन्ममे देना पडेगा,-जो-लोग पर-लोक मानते नही, उसकी मरजीकी बात है,-मगर-परलोक जरूर

है, और वदौलत धर्महीके आराम चैन पाता है,-फर्ज करो ! किसीके -घर-लडका-पैदाहुवा, उसके वालिदने उसकी खुशीमें जलसा किया, और-एक-हजार रुपये सर्फ किये, मगर-लडकेकी-उम्र-कम-थी, चदरोजमें उसका इतकाल होगया,-जितना-दाना-पानी लेनेका था-लिया-और-चला गया,-इसीलिये कहाजाता है, सब-तकदीरके खेल है,—

१३ दौलत चलीजाय-तो-उसका-रज-करना बहेत्तर नही. चाहे जितनी तदवीर किई जाय-मगर-मिलेगा उतना जितना तकदीरमे लिखाहो.-एक-कविने कहा है.—

[दोहा]

अजनगति है कर्मकी,-राखे प्रतीति कोय,
आरभा यूही रहे,-अवर अचिंतित होय.-१

पूर्वसचित कर्मकी वडी अजनगति है,-किसीकिसीकोंही इसपर भरुसा आता है,-देखलो-और-तजरुवा करलो, शुरु किईहुइ वात रहजाती है.-विना शुरु किईहुइ वात वन जाती है,-कइजगह देखागया है,-तीर्थोकी जियारतके लिये जानेकी तयारी किई,-वीचमे ऐसा वनाव वनगया जिससे रुक जाना पडा,—

[दोहा]

तदुलमछ नरके बसे, मनसे करता पाप,-
चाहे-मे-सबकों भखु,-खा-नही सकता आप, १

धर्मशास्त्रोंमे वयान है, तदुलमछ छोटा होता है, वो-मनसे पाप करता है,-और-ऐसी चाहना रखता है,-मे-अगर बडा होता-तो-सब मच्छोंकों-खाजाता, मगर-वो-खुद छोटा होनेसे-खा-नही सकता, नाहक ! पाप बाधकर दोजकको जाता है.-लाजिम है,-जहातक वने दिलके इरादे अछे रखना,—

[दोहा]

कामभोग सुख भोगता, तीनपल्योपम आय,
मन निर्मल-युगलीक जना, मरकर स्वर्ग जाय, १

शास्त्र फरमान है-जिसका-दिली-इरादा पाक और साफ हों-उसकों कर्मोका बंधन नही होता, देखो! युगलीक मनुष्य-जो-पेस्तर इस भारतवर्षमेंभी होते थे, अब नही रहे जंबूद्वीप वगेराके देवकुरु-उत्तरकुरु-वगेराम अबभी होते है, जिनोंकी-उम्र-तीन-पल्योपम-कालतक लंबी होती हैं, दुनयवी एश-आराम-भोगते है मगर उनका दिल निहायत-पाक-और-साफ होनेकी वजहसें-बहिस्त-पाते है, मखुतहुवा, मनके इरादोंसेंही-पुन्य-या-पाप बंधता है, अगर अंतर्मन-साफ-हो-पापकर्म-नही बंध सकता,—

[दोहा]

१४ दातबत्तीसी खिसगइ,-नेन हुवे निस्तेज,-
कान दोंनो बेहरे भये, गया जोबनका तेज, १

जब जवानी चली जाती है, दात-गिरजाते है आंखोंका तेज कम-होजाता है, और कान बेहरे बजाते है,-इसलिये-जो-कुछ धर्मकरना हो जवानीमें करलो, जइफीमें आराम चैन खुद-बखुद विदा होजाते है,-चाहे कोई मर्द-हो-या-औरत बदनकी खूबसुरती पाना तकदीरके ताल्लुक है, पूर्वजन्ममें जिसने जीवोंपर रहम कियाहो, -इसजन्ममें खूबसुरती पाता है,-दुनियामें अक्ल एक-दौलतका खजाना है, हाजिर जबाब-आदमी-हरजगह इज्जत पायगा,—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे,-नारी गृहद्वारि जन श्मशाने,
देहश्चिताया परलोकमार्गे,-धर्मानुगो गच्छति जीव एक'-१

दौलत यहा रहजायगी हाथी-घोडे जहाके वहा खडे रहजायगें-औरत घरके अगनतक-नोकर-चाकर स्मशानतक-और-शरीर-चिता-तक शाथ चलेगा,-परलोकके रास्ते-जीव-अकेला-और-धर्म-

शाय-आयगा,-इसपर सौचो! दुनियामे चढती पडती सनचिजपर आती रहती है,-दिनमें उतना कार्य करो जिससे रातकों अच्छीतरह नींद आय, जैसे कसोटीसें-सोनेका-इम्तिहान होता है,-तकलीफ पेंश होनेपर आदमीका इम्तिहान होजाता है,-सनदिन-एक-सरखे नही होते,-कभी आराम-और कभी-तकलीफ-दुनियामे-मिशल मशहूर है.—

"पडी गरज मन और है-सरी-गरज मन और-"

जन-किसीकामकी गरज होती है,-उसवख्त-मन-और तरहका होजाता है, गरज मिट गई-तो-वही-मन-दुसरी तरहका होजाता है.-मगर अछेलोग अपके मनपर कावु रखते है,-गरज मिट जानेपरभी मनको वदलते नही. इसीलिये उनकी तारीफ बयान किइगई,—

[बयान-गुलदस्ते जराफत खतम हुवा -]

[सवाल-जवाव,-]

१ सवाल, जैनमजहनमे आश्रव, सवर, और निर्जरा. किसको कहते है, ? (जवाव.) शुभाशुभकर्मके आनेका रास्ता आश्रव, उस रास्तेकों वंद करनेका नाम सवर, और शुभाशुभ कर्मकों-उदय आनेपर भोगकर बिल्कुल बरबाद करदेना इसका नाम निर्जरा है, जैसे किसी तालाबमे पानी आनेका रास्ता हो-वो-आश्रव, उस रास्तेको वंद करदेना इसका नाम संवर, और जितना पानी आया हो,-उसकों सुकादेना-इसका नाम निर्जरा है,—

२ सवाल, आराम और तकलीफ होनेके-सवव-पूर्वकृत-कर्म है-तो-पुन्य पापका भागी जीव क्यों समजा गया ? (जवाव.) पुन्य पापका भागी-जीव-इसलिये समजा गया, उसका-करनेवाला वही है, जिसने पुन्य किया था-यहा आराम-तलव है,-जिसने पाप

किया था,-वो-तकलीफ उठारहा है,-मिली हुई-दौलतमे शब्र नही करते, मिलताहुवा-नफा-न-लेकर ज्यादा लोभमें पडते है,-और-फिर दौलत चली जानेपर फिक्र करते है,-अगर मिलताहुवा-नफा -ले-लेते-तो-फिक्र क्यों होता ?—

३ सवाल, इन्सानकों किसीपर मोहब्बत-और-किसीपर नाराजी क्यों होती है ? (जवाब.) अपने अपने पूर्वकृत कर्मके उदयानुसार मोहब्बत और नाराजी पैदा होती है,-जैनागम-आवश्यक सूत्रके अ-वल अध्ययनकी टीकामे-बयान है,—

[अनुष्टुप्-वृत्तम्-]

य दृष्ट्वा वर्धते स्नेहः-कोपश्च परिहीयते,
स विज्ञेयो मनुष्येण-एप-मे-पूर्वबाधवः १
य-दृष्ट्वा वर्धते कोपः-स्नेहश्च परिहीयते,
स विनेयो मनुष्येण-एप-मे-पूर्ववैरिजः- २

४ सवाल, जीव-जन्ममरणके बंधनोंमे-क्यों-फसता है ? (जवाब.) पूर्वकृत-कर्मके-उदयानुसार उदयमें आये हुवे कर्मोंको भोगते वख्त -अगर-रागद्वेषमें पडजाय-तो-नये कर्म-पैदाकरे और जन्ममरणके बधनोंमे फसे, अगर पूर्वकृत कर्मकों-सहन-करते वख्त अपने आ-त्माकों समताभावमें-रख-सके-तो-आइंदे नये कर्म-न-बधे, और जन्ममरणके बधनोंमे न-फसे,-यह-एक सीधी बात है,—

५ सवाल, पुन्यकर्म और पापकर्म-बंधके हेतु है-या-मोक्षके ?-(जवाब) पुन्यकर्म-जीवको-धर्मके नजीक लाता है,-पुन्यके उदयसें जीव धर्म करसकेगा, और धर्मकरनेसे मुक्तिभी पासकेगा तीर्थंकर नामकर्म-पुन्योदयसें मिलता है,-पुन्यकर्म अगर छोडने कानिल होता-तो-अभयदान-सुपात्रदान-और अनुकंपादान देना शास्त्रकार क्यों फरमाते ? पुन्योदयसें-जीव-मनुष्यजन्म पाता है, निस्पृह होकर धर्म करे-मुक्ति-पामके,—

६ सवाल, जीवका लक्षण-और-गुण-क्या है ? (जवाव.) चेतना लक्षणो जीवः और-सम्यग् दर्शन-ज्ञान-चारित्र वगेरा जीवके गुण है,—

७ सवाल, जीवकों कर्मसें जुदा समजना-या-एक ? (जवाव.) जबतक-जीव-कर्मोंसें बधा हुवा है,- जुदा-नही, कर्मोंसें रहित होगा, शरीरसे जुदा समजा जायगा,—

८ सवाल, मन, बुद्धि, और इंद्रिया-कर्म करनेमें स्वतत्र है-या-परतत्र ? (जवाव.) बुद्धिः कर्मानुसारिणी, जीवने-जो-जो-कर्म-पूर्वजन्ममे किये है,-मुताबिक उसके बुद्धि पैदा होगी,-शुभ कर्मके उदयसे दिली इरादे सुधरते है, और अशुभ कर्मके उदयसें दिलके इरादे विगडते है,-सवुत हुवा, जैसा-जिस जीवका-कर्मोदय होगा वैसा काम करनेका उसका इरादा होगा, इसलिये-मन, बुद्धि और इद्रिया-कर्म-करनेमे स्वतत्र नही, परतत्र है,—

९ सवाल, गुणी होते हुवे गुणका अभाव हो सकता है-या-नही ? (जवाव.) गुणीके होते हुवे गुणका अभाव नही हो सकता. अगर गुणीके होते गुणका अभाव हो जाय-तो-वो-गुणी कैसे हो सके ? मगर असली गुणोंके लिये मजकुर वात है,-उपाधिजन्य गुणोंकी वात नही,-जैसे-जीवके-सम्यग् दर्शन-ज्ञान-चारित्र वगेरा असली गुण है,—

१० सवाल, मुक्तिका माइना क्या है ? और-वो-किस हालतमे मिलसकती है ? (जवाव.)-सवतरहके कर्मोंसें-छुटकारा-पाना इसका नाम-मुक्ति है. और-वो-राग द्वेष-काम-क्रोध-मोह वगेरा गनीमोंकों गिरफतार करनेसें मिल सकती है,-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोह कर्म-और-अतराय कर्म-वगेरा आठ तरहके कर्म-है,—

११ सवाल, जीव-विना शरीरके कुछ कर्म करसकता है-या-नही ? (जवाव.) विदुन शरीरके-जीव-कुछ-कर्म नही करसकता,

मनसे तरह तरहके इरादे करसकता है,-मगर-चलना-फिरना-बोलना-ये-कार्य शरीरहीके ताल्लुक है,—

१२ सवाल, रागद्वेष-काम-क्रोध वगेरा किसकी वृत्तिया है.? (जवाब) रागद्वेष-काम-क्रोध वगेरा-जीवके किये हुवे अशुभ कर्मोकी वृत्तिया है, जीव-अगर पूर्वजन्ममें अशुभ कर्म-न-करता-तो-अशुभ कर्मकी वृत्तियाभी-न-पैदा होती.—

१३ सवाल,-कर्म-शब्दका अर्थ-और-कर्त्ताका अर्थ क्या है,? (जवाब.) कार्य करे उसका नाम कर्त्ता, और-कर्त्ता-जिस कार्यको करे उसका नाम-कर्म-है,-कर्म-जड है, और जीव-चेतन है,-पूर्वकृत-कर्मके-उदयानुसार-जीव-शुभाशुभकर्म-करता है, और उदय आनेपर भोगता है,-जब-रागद्वेषसे बचकर-निस्पृह-होकर धर्म करेगा-मुक्ति पायगा —

१४ सवाल, कर्म-कर्त्ताके विना हो सके-या-नही? अगर-कर्मोकी-पैदाश वगेर कर्त्ताके होती हो-तो-दोनों-अनादि कैसे हो सके? (जवाब) कर्त्ताके विना कर्म नही और कर्मके विना कर्त्ता नही, दोनों-अविनाभावी है,-सबुत हुवा,-जीव और कर्म-प्रवाहरूपसे अनादि और-एक-भवकी अपेक्षा आदी है,-कार्यरूप-कर्म-आदी और परमाणुरूप-कर्म-अनादि है, ऐसा कहना कोई गलत नही.

१५ सवाल,-जीव-आकारवाला है-या-निराकार? (जवाब,) जबतक देहधारी है, साकार है,-जब-सबकर्मोसे मुक्त होगा निराकार होगा —

१६ सवाल, अगर कोई-जीव-माताके गर्भमेही इंतकाल हो जाय-तो-उसने परभवका आयुष्य कब बाधा समजना? (जवाब,) गर्भमेही परभवका आयुष्य बाधकर इतकाल होवे, वगेर दुसरे-घरके पहलेवाला-घर कैसे खाली किया जाय.?—

१७ सवाल, धर्म और पुन्यमें क्या तफावत है? (जवाब,) धर्म अरूपी और पुन्य रूपी है, आत्मिक गुण पैदा होना उसका नाम धर्म -और-शुभकर्मके-पुद्गलोंका सचय करना-इसका नाम पुन्य है.

१८ सवाल, कइ लोग कहते है,-अवल-गुरु-सुधरे-तो-चेला सुधरेगा, (जवाब,) यह बात गलत है, चाहे-गुरुहो-या-चेला, जैसी करनी करेगें वैसा फल पायगें, इसमें एक-दुसरेका-बहाना बतलाना बहेत्तर नही,—

१९ सवाल, मूर्तिपूजामे-पानी, फल, फूल, धूप-दीप वगेरा कार्य करने पडेगे, उनमें अपकाय-तेउकाय-और वनास्पतिकायके जीवोंकी बरबादी होगी,-(जवाब,)-पूजा करनेवालेका इरादा पाच इद्रियोंकी विषय पुष्टिका नही, धर्मका है, इसलिये भावहिसा नही, और वगेर भावहिसाके पाप नही,-अगर इसबातकों मानना मजुर नही-तो-बतलाना चाहियें स्थानक बनवानेमे-मीट्टी-पानी-और वनास्पति-कायके-जीवोंकी क्या बरबादी न-होगी? किसी साधुमहाराजका-कोई -चेला बने और उसका जलसा किया जाय-तो-दीक्षाके जलसेमें बगी-घोडे-बाजे वगेरा लवाजमा लानेमें सूक्ष्म जीवोंकी क्या बरबादी-न-होगी. दीक्षालेनेवाला शख्श अपने हाथोंसें रुपये पैसे उछालता है, इसमे-वायुकायके जीवोंकी बरबादी होगी, दीक्षाके जलसेमें बहारगावसें आये हुवे श्रावकोंकों खानपान बनाकर जिमानेमें सूक्ष्म जीवोंकी क्या बरबादी-न-होगी? इन्साफ कहता है, जरुर होगी, इन कामोंकों छोडना नही, और मदिर-मूर्त्तिकों मानना पूजना छोड देना कौन इन्साफ हुवा?—

[सवाल जवाब-खतम हुवे -]

[बयान-जैन-तेहवार -]

१ जैनमजहबमें-पर्यूषणपर्व-जैसा-दुसरा कोई तेहवार नही, हिं दीभाद्रपद और गुजराति श्रावणवदी बारससे लेकर भाद्रपदसुदी चतुर्थीतक यह तेहवार मानाजाता है,-पेस्तरके-तीनरौज-जैनमुनि-अष्टान्हिका व्याख्यान और पिछले पाचरौज-कल्पसूत्रका व्याख्यान देते है, और श्रावक-श्राविका-सुनते है,-कल्पसूत्रका जलसा-तीर्थंकर महावीर स्वामीके जन्मका अधिकार-पालनेका-जलसा-और अखीरके रौज चैत्यपरिपाटीका जलसा किया जाता है,-आठरौजतक दुनयवी-कारोबार-कम-धर्मकी पुख्तगी ज्यादह और-अखीरके रौज-धर्मदिनके वैर-विरोधकी क्षमापना किई जाती है,-

२ आसोजसुदी सप्तमीसें नवरौजतक-नवपदकी ओलीका तेहवार, इनदिनोंमें आचाम्लतप किया जाता है,-कातिकवदी अमावास्याके-रौज जब-स्वातीनक्षत्रमे-चंद्रमा-था, तीर्थंकर महावीर स्वामिका निर्वाण हुवा, इसलिये उसरौज जैनलोग-तेहवार-मानते है,-दीवालीपर्व-तो आम लोगोंके लिये तेहवार है,-मगर-मुल्क पूरबके पावापुरीमें तीर्थंकर महावीर स्वामिका निर्वाण हुवा, उसरौज वहापर निर्वाण महोछवका जलसा होता है,-कातिकसुदी पचमीके रौज ज्ञान पचमीका-तेहवार-इसरौज धर्मपुस्तकोंका पूजन किया जाता है,-ज्ञान -और ज्ञानीकी खिदमत करनेसें अपने ईल्मकी तरकी होती है, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यायज्ञान, और केवलज्ञान-ये-पाचतरहके ज्ञान फरमाये, आजकल-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान मौजूद है,-अवधि-मन पर्याय-और-केवल ज्ञान मौजूद नही, ज्ञान पचमीका तेहवार पाचवर्स और-पाचमहिनेतक अमलमे लाना, हरमहिनेकी सुदी पचमीके रौज उपवास करना, और-"नमो-नाणस्स"-इसपदकी(२०)माला फिराना चाहिये,-कातिक सुदी चौदसके रौज-चातुर्मासिक पर्वका तेहवार-उसरौज-चौमासा खतम हुवा, और बाद उसके-जैनमुनि-सफर करना-शुरु-करते है,-

३ मृगशीर्ष-सुदी-ग्यारसके रौज-मौन एकादशीका तेहवार माना गया है, उसरौज उपवासव्रत करना, और दुनियादारीके कामोंमें-मौन-रहना मुनासिब है, मगर शास्त्र वाचनेमे-पढने-गुणनेमे और स्तवन बोलनेमे-मौन-रहना बहेत्तर नही, मजकुर तेहवार ग्यारह वर्सतक दरसाल मृगशीर्ष सुदी एकादशीके रौज मानना होगा, हिंदी फाल्गुन वदी और गुजराती-माघ वदी त्रयोदशीके रौज-मेरु त्रयोदशीका तेहवार, इसरौज-तीर्थंकर-ऋषभदेव-महाराजका-निर्वाण कल्याणिक हुवा, उसरौज उपवासव्रत-करना-सोनेके-चांदीके -या-घृतके छोटे छोटे पाच-मेरु पर्वतके आकार बनाना,-उनके सामने-धूप-दीप-करना, और-"तीर्थंकर ऋषभदेव पारगताय नमः"-इस पदकी (२०) माला फिराना, दरसाल-इस त्रयोदशीके रौज-तेरह सालतक ऐसा करनेसें-मेरु त्रयोदशी तेहवारका आराधन-होसकता है,-मजकुर तेहवार-तीर्थंकर अजितनाथ महाराजके-शासन कालसे जारी हैं, फाल्गुन-सुदी चतुर्दशीके रौज-फाल्गुन चातुर्मासिक-तेहवार,-और चैत सुदी-सप्तमीसे पुनमतक-नवपदजीकी-ओलीका तेहवार-इसमेंभी-नवरौजतक आचाम्ल-किये जाते है, वैशाख सुदी-तीजके-रौज-अक्षय तृतीयाका-तेहवार-इसरौज -तीर्थंकर-ऋषभदेव-महाराजने-इक्षुरसके-एक घडेसें हस्तिनापुर नगरमे वार्षिक तपका पारना किया था, किताब वारपर्वकी कथाके पेज (२३) पर लिखा है, तीर्थंकरऋषभदेव-महाराजने (१०८) इक्षुरसके घडेसें पारना किया, मगर यह बात गलत है, आवश्यक सूत्रवृत्ति और कल्पसूत्रवृत्तिमे बयान है.-इक्षुरसके एकही-घडेसे पारना किया,—

४ आषाढसुदी चतुर्दशीके रौज चातुर्मासिकपर्वका तेहवार, जैन-मुनि-उस रौजसें सफर मौकुफ करके चारमहिनेतक एक जगह कयाम फरमाते है,-कातिकसुदी और चैत्री पुनमके रौज तीर्थ-शत्रुंजयकी जियारत करनेका तेहवार-इसरौज-जैन लोग तीर्थ-

शत्रुजयकी जियारतकों जाते है, हिंदी पौषवदी और गुजराती मृगशीर्षवदी दशमीके रौज पौषदशमीका तेहवार इसरौज तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजका जन्म हुवा था, उसरौज एक दफा खानपान करना और "ॐह्रीँ श्रीपार्श्वनाथाय-अर्हते नमः"-इसपदकी (२०) माला फेरना चाहिये, अष्टप्रकारी पूजा करना, पौषदशमीका व्याख्यान सुनना और उसरौज ब्रह्मचर्य-पालना जरुरी है,-मजकुर तेहवार-दरसाल, पौषदशमीके-रौज दशवर्सतक पौषदशमीके रौज-माना जाता है,—

५ रोहिणी पर्वका-तेहवार वैशाख महिनेकी रोहिणी नक्षत्रके रौज सें-शुरु-करना. जिस जिस महिनेमे-जब जब-रोहिणी नक्षत्र आता है, उस रौज-मजकुर तेहवार माना जाता है, सातवर्स और सात महिनेतक रोहिणी नक्षत्रके रौज उपवास करना, और-"तीर्थंकर वासुपूज्य-सर्वज्ञाय नमः-" इस पदकी (२०) माला फिराना, मजकुर तेहवार तीर्थंकर वासुपूज्य महाराजके शासन कालसे चला है, जैन शास्त्रोंमे-पर्व-दो-तरहके माने गये, एक-लौकिक पर्व-और -दुसरे लोकोत्तर पर्व-जिनमें लोकोत्तर पर्व-धर्मकी पुख्तगी देनेवाले शुमार किये गये, उसरौज इरादे धर्मके तप-जप-पूजन-पाठ करना, जिससे अशुभ-अनिकाचित कर्म-दूर हो. दुनियामें एश-आराम-गीत गान-और-नाच रग कमी-कम-न-हुवे, और-न-होगें, मगर धर्मकी पुख्तगी करना तारीफकी बात है,—

[बयान-जैन-तेहवारोंका खतम हुवा]

[अगस्फुरण-निमित्त,]

[अनुष्टुप्-वृत्तम्,]

अग स्वमः स्वरश्चैव-भौमं व्यंजनलक्षणे.
उत्पातमंतरिक्ष-च-निमित्तं स्मृतमष्टधा,-१

१ पहला अगस्फुरण-निमित्त, दुसरा स्वमशास्त्र, तिसरा स्वर विज्ञान, जिससे मनुष्य-जानवर और परींदोकी बोली सुनकर आगेका हाल जानाजाय, चौथा भूमिकंप निमित्त,-पांचमा व्यजन निमित्त, छठा रेखाविज्ञान निमित्त, सातमा उत्पात निमित्त, और आठमा अतरिक्षनिमित्त, इन आठों निमित्तोंसें-जो-जो-बाते काबिलजाननेके है,-इसमें-खुलासा दिया जायगा, निमित्त ज्ञानके-कई-शास्त्र देखनेमे-आये-मगर-जो-अगविद्यानामका शास्त्र आठ हजार श्लोकका है,-उसकी-सानी-दुसरा कोई नही देखा गया,-निमित्त ज्ञान-जैनशास्त्रोंमे आठ तरहके बयान फरमाये, इसीलिये इसका नाम अष्टागनिमित्त कहा गया, अष्टागनिमित्त-चौदह पूर्वके-ज्ञानसे जुदा नही, कल्पसूत्रमे-जो-स्वमलक्षण पाठकोंकों सिद्धार्थ राजाने बुलाकर चौदह स्वमोंका बयान पुछा था,-वे-पूर्वोके-ज्ञानसें-वाकिफ थे. चौदह पूर्वोका ज्ञान इस वख्त मौजूद नही. एक-पूर्वके पढे हुवेभी अब नही रहे, अष्टागनिमित्तके पुस्तकभी आजकल-कम-मिलते है,-जितने हाजिर है,-उनके सहारे-यहा-कुछ-कुछ-बातें लिखी जाती है,—

२ [जैनशास्त्र उत्तराध्ययनके आठमें अध्ययनकी टीकामें बयान है.-]

सिरफुरगे किररज्ज,-पियमेलो होइ बाहु फुरणंमि,-
अछिफुरणमि-अ-पिय,-अहरे पियसगमो होई,-१

दाहनी तर्फका मस्तक फुरके-तो-उस शख्सकों अमलदारी मिले, दाहनी तर्फका हाथ फुरके-तों-प्यारेका मिलापहो, दाहनी आख

फ़ुरके-तो-प्रियवस्तु मिले, और नीचेका होठ फरके-तो-स्नेहीक
मिलाप हो, यह बात मर्दोंकेलिये कही गई है, इस अगस्फुरण नि
चमे-जो-जो-बात मर्दोंकेलिये दाहने अगकी कहीजाय-वो-औ
तोंकेलिये वामे अगकी समजो. और-जो-मर्दोंकेलिये
बात कही जाय-वो-औरतोंके लिये दाहने अगकी समजो, सब
इसका अगफुरकनमें मर्दोंका दाहना और-औरतोंको बामा अच्छा
कहा,—

३ मर्दका दाहना मस्तक और-औरतका बामा मस्तक फ़ुरके-तं
-हरतरहसे फायदा मिले,—

४ मर्दका दाहनी तर्फ-और-औरतका बायी तर्फका निलार फु
रके-तो-तरहतरहके फायदे हासिल हो, और हुक्म-होदे-मिले,-

[निमित्तज्ञानके ग्रथोंमें लिखा है -]

"शिरस' स्पदने राज्य,-स्थानलाभो ललाटके,"

५ मर्दका दाहना और-औरतका बाया-कान-फ़ुरके-तो-अपन
तारीफ सुनाई दे,—

६ मर्दकी दाहनी-और-औरतकी बायी-भ्रू-फ़ुरके-तो-खुशी
पैदा हो, और-दोनो भ्रूओंके बीचमें फरके-तो-स्नेहीका मिलाप हो.-

७ मर्दकी दाहनी और-औरतकी बामी आख उपरसें फ़ुरके-त
-दिलके इरादे पार पडे. अगर नीचेसे फ़ुरके-तो-मुकद्दमा हा
जाय,—

[निमित्तज्ञानके शास्त्रोंमें बयान है]

"नेत्रस्याध.स्फुरणसमकत्-समरे भगमाहु'
नेत्रस्योर्ध्व हरति सकल-मानुप दुःखजाल,-"

८ मर्दका दाहना और-औरतका बामा-कपोल-फ़ुरके-तो-ए
आराम मिले,

९ चाहे मर्द-या-औरत कोई हो उपरका होठ फुरके-तो रज-दा हो,-और नीचेका फुरके-तो-ऐश-आराम मिले —

१० निमित्त शास्त्रोका फरमाना है,-चाहे-मर्द-हो-या-औरत-[illegible] भाग फुरके-तो-बुरा है नाराजी पैदा होगी,—

११ मर्दका-दाहना और औरतका बाया गला फुरके-तो-दौलत मिले,—

१२ मर्दका दाहना और-औरतका बाया स्कध फुरके-तो-प्यारेका मिलाप हो,—

१३ मर्दकी दाहनी तर्फकी और-औरतकी बायी तर्फकी छाती फुरके-तो-प्यारेका मिलाप हो,—

१४ मर्दका दाहना-और-औरतका-बामा-पासा-फुरके-तो-खुशी पैदा हो,—

१५ चाहे मर्द हो-या-औरत-पेटका फुरकना अछा है, मगर नाभिका फुरकना अछा नही,—

१६ मर्दकी दाहने हाथकी-और-औरतकी बामे हाथकी हथेली-फुरके-तो-फायदा हो.—

१७ मर्दका दाहना और-औरतका बामा-पाव-फुरके-तो-मुल्कोकी सफर करे और फायदा हासिल करे,—

१८ जितना अगस्फुरणका बयान उपर-लिखा गया है,-वो इस खयालसे लिखा है,-अगर-थोडी-देर-फुरके-तो ठीक है, बडी देरतक फुरके-तो बादी प्रकृतिसे-फुरकता है ऐसा जानना, कई दफे देखा गया है-दो-दो-दिन-या-तीन दिन एकही बाजुका-अग-फुरकता रहता है,-वो-गिनतीमे शुमार नही करना,—

[बयान अग स्फुरण-निमित्तका खतम हुवा -]

[बयान-स्वप्नशास्त्र.]

१ इसमें कौनसा स्वप्न देखनेसें क्या! नफा और कौनसा स्वप्न देखनेसें-क्या! नुकशान पेंश होगा,-इसका बयान दर्ज है स्वप्न कितनी तरहके होते है, वगेरा केफियत इसमे दिखाई है, स्वप्न शास्त्रमे बडे स्वप्न (७२) उनमे (३०) स्वप्न ज्यादा बडे, और उनमेमी (१४) सबसें बडे फरमाये, तीर्थंकरदेव और चक्रवर्त्तीकी माता सबसे उमदा-(१४) स्वप्न देखे, उन चौदह स्वप्नोंके नाम-इसतरह है, १-हाथी, २-वृषभ, ३-केशरीसिंह, ४-लक्ष्मीदेवी, ५-फुलोंकी माला, ६-सूर्य ७-चाद, ८-धजापताका, ९-कलश, १०-पदम सरोवर, ११-समुदर, १२-देवविमान, १३-रत्नराशि, और-१४-अग्निशिखा, ये-चौदह स्वप्ने सबसें उमदा-और-बडे है,- वासुदेवकी माता चौदह स्वप्नोंमेंसे-सात स्वप्न,-और-बलदेवकी-माता इनमेसें चार स्वप्न देखे.—

[अनुष्टुप्-वृत्तम-]

२ रात्रेश्चतुर्षु यामेषु,-दृष्टः स्वप्नः फलप्रदः,
मासैर्द्वादशभि' पड्भिस्त्रिभिरेकेन-चक्रमात्,-१
निशात्यघटिकायुग्मे,-दशाहात् फलति ध्रुव.
दृष्ट' सूर्योदये स्वप्न.,-सद्यः फलति निश्चित,-२
मालास्वप्नोन्हि दृष्टश्च,-तथाधिव्याधिसंभवः,
मलमूत्रादिपीडोत्थः,-स्वप्नः सर्वो निरर्थकः-३

रातके वख्त पहले प्रहरमे देखाहुवा स्वप्न बारा महिनेमें-फल-देगा दुसरे प्रहरमें देखाहुवा छह-महिनेमे, तीसरे प्रहरमें देखाहुवा तीनमहिनेम-और-चौथे प्रहरमे देखाहुवा स्वप्न एक-महिनेमे-फल देगा, दोघडी रात बाकी रहते वख्तका-देखाहुवा दश रोजमे और सूर्योदयके वख्तका देखाहुवा स्वप्न जल्द फल देगा, दिनमे सोतेवख्त कोइ स्वप्न देखाजाय-वो-गलत है,-कई-शख्शोंकों दिनमे सोतेहुवे

स्वम आते है, कमी उनका फलमी हो-जाता है, मगर शास्त्रकारोंने-वो-वात-शुमारमे नही लिई, रातभर एकपिछे-एकस्वम-आते रहे, उसकों मालास्वम बोलते हैं,-शरीरकी तकलीफसें-और-तरह तरहकी हाजतसे-जो-जो स्वम आते है,-वे-सन गलत समजना, उसका फल-न-होगा,—

[अनुष्टुप्-वृत्तम्,-]

२ अनुभूतः श्रुतो दृष्टः-प्रकृतेश्च विकारजः,
स्वभावतः समुद्भूतश्चितासततिसभवः, १
देवताद्युपदेशोत्थो,-धर्मकर्मप्रभावजः,
पापोद्रेकसमुत्थश्च,-स्वमः स्यान्नवधा नृणा, २
प्रकारैरादिमैः षड्भिरशुभश्च शुभोपि-वा,
दृष्टो निरर्थकः स्वमः-सत्यस्तु त्रिभिरुत्तरैः-३

अनुभूत किई हुई चीजका स्वम आता है,-लेकिन!-वो-जूठा समजना, जैसे कोई कपडेका व्यापारी स्वममेंमी कपडा वेचे-वो-अनुभूत स्वम हुवा, सुनी हुई वातका स्वम दिखाई देवे-वोमी-जूठा, जैसे भूत-पिशाचकी वात सुनते सोगये, और स्वममेंभी उसका खयाल आया, यह सुनी हुई चीजका स्वम हुवा, देखीहुई चीजका स्वम आता है-वोमी-गलत समजना, जैसे दिनमे-या-रातकों सोनेसें पेस्तर कोई चीज देखी स्वममेंभी-वही-चीज-दिखाई दे, यह दृष्टस्वम हुवा, प्रकृतिके विकारसें स्वम आता है, जैसे पित्त-प्रकृतिवाला मनुष्य जल, फूल, अनाज, जवाहिरात,-लालपीले-रगकी चीजे-बाग-बगिचे,-और पानीके फवारे देखता है,-वो-स्वममी गलत है, सबब प्रकृतिके विकारसे उसकी पैदाश हुई, वादीकी प्रकृतिवाला मनुष्य-पहाडपर चढना, दरख्तोके उपर-जा-बेठना, मकानपरसें सरक जाना, और आसानमें उडना, वगेरा बनाव स्वममे ज्यादा देखता है, यहमी-प्रकृतिके विकारका स्वम हुवा, इसलिये-फल-न-देगा, इसतरह कफविकारसे आया हुवा

स्वप्नभी गलत है, स्वभावसें स्वप्न आता है,-वोभी-गलत, और सोच-फिक्रसेभी स्वप्न आता है,-वोभी-गलत समजना, देवताकी प्रेरणासे-जो-स्वप्न आवे-वो-सच्चा जानना, उसका फल जरूर होगा, अपने सत्यधर्मके प्रभावसें-जो-स्वप्न आवे-वोभी-सच्चा जानना, और उसका -फलभी-होगा, पापके उदयसें-जो-स्वप्न-आवे-वोभी सच्चा जानना. उसका फलभी उस शख्शको जरूर मिलेगा,-करनीका-फल विना भोगे नही छुटता,—

[आर्या वृत्तम्-]

४ इष्ट दृष्ट्वा स्वप्न-न-सुप्यते नाप्यते फलं तस्य,
नेया निशापि सुधिया-जिनराजस्तवनसंस्तवतः, १
स्वप्न इष्ट दृष्ट्वा-सुप्यात् पुनरपि निशामवाप्यापि,
नाय कथ्यः कथमपि-केषाचित् फलति-न-स-तस्मात्, २
धर्मरत' समधातुर्य -स्थिरचित्तो जितेंद्रिय सदय',
प्रायस्तस्य प्रार्थितमर्थं स्वप्नः सदा प्रसाधयति, ३

अछा स्वप्न देखा और नींद खुलगई-तो-फिर नींद लेना नही, जागते रहना चाहिये, याते फिर कोइ बुरा स्वप्न आकर पहलेका फल -विगाड-न-डाले, बुरा स्वप्न देखकर जाग गये, और रात बाकी रही हो-तो-फिर सो-जानाभी-बहेतर है, लेकिन! अफशोस है, भलेबुरेकी पहचान सबलोग नही जानते, पहले अछा स्वप्न देखा और पिछेसे बुरा दखा,-तो-अछेका फल गलत हो जायगा, और बुरा स्वप्न फल देगा, सबब-वो-पिछेसे आया है, पहले बुरा देखा, और पिछेसे अछा देखा,-तो-पिछला अछा फल देगा, सबब पिछलास्वप्न पहलेवाले स्वप्नका फल-रद-करदेता है,-जो-शख्श साफदिल हो. जितेंद्रिय हो, और रहमदिल हो, उसकों आयाहुवा अछा स्वप्न उमदा फल देता है,—

५ अछा-या-बुरा जैसा स्वप्न आया, सवेरे जिन प्रतिमाके सामने जाकर बयान करदो, मगर जिन प्रतिमाके सामने खाली हाथ नही जाना, फल, नैवेद्य, रुपया, पैसा, या-सोनामोहर जैसी अपनी ताकात-हो-लेकर जाना, और दर्शन कियेबाद जिन प्रतिमाके सामने खडे होकर मनमे बोलदेना फला-स्वप्न आज मुजे दिखाई-दिया, अगर अपने शहरमें निर्ग्रंथ मुनि मौजूद हो,-तो-उनके सामने जाकर वंदन-नमन-करना, और आयाहुवा-स्वप्न सुनाना, और जो कुछ-वे-फरमावे उसपर अमल करना, निर्ग्रंथ मुनि रुपये-पैसे-रखते नही, उनकों ज्ञानके पुस्तक, या-वस्त्र-पात्र-कमल वगेरामे-मदद करना,-

६ अगर अपने शहरमे जिनमदिरका योग-न-हो,-या-निर्ग्रंथ मुनि-मौजूद-न-हो, और अष्टागनिमित्त जाननेवाले कोई निमित्तज्ञानी मौजूद हो-तो-उनके सामने जाकर आयाहुवा स्वप्न बयान करना, और मुताबिक निमित्तज्ञानके उसका फल दरयाफत करना, मगर उनके सामनेभी खाली हाथ नही जाना, रुपया-नारीयेल-या-ताकात हो-तो-सोनामोहर लेकर जाना, और अवल उनके सामने भेटकरके फिर स्वप्नका फल दरयाफत करना, कितनेक कंजुस आदमी कहदेते है,-ये-पडितजी-तो-हमारे घरके है, उनके सामने भेट रखना क्या जरुरत? मगर नही, इसमे बहानेबाजी करना बहेत्तर नही, मुताबिक अपनी ताकातके रुपया-दो-रुपया-या-नारीयल-मिठाई वगेरा जरूर भेट रखना चाहिये, पेस्तरके जमानेमे पूर्वगत आम्नायके जाननेवाले आलादर्जेके निमित्तज्ञानी मौजूद थे, भूत-भविष्य-वर्त्तमानकी बातें अमुक वर्समे महिनेमे-या-फलाने रोज-हुई-होती है, और होगी, बतलादेते थे, जमाने हालमें वैसे निमित्त ज्ञानी रहे नही जैसे मौजूद है, उनहीसे दरयाफत करना चाहिये, पहले जैसे दिलके दलेर गृहस्थ नही रहे. वैसे पहले जैसे निमित्त ज्ञानीभी-नही रहे, जैसा जमाना है,-वैसा सबकुछ मौजूद है,—

७ ख्वाबमें-जो-शख्श हाथीपर सवार होकर समुदरमें चला जाय-वो चदरौजमें सलतनत-पावे, और राजा बने, सफेद हाथीपर सवार होकर-जो-शख्श ख्वाबमें नदी कनारे चावलोंका खाना खावे-वोभी-बादचदरौजके अमलदारी पावे, और राजा बने, ख्वाबमें अपने हाथोंसे समुदर-तीर जाय-वो-चदरौजमें बडी पदवी पावे, ख्वाबमें देव-गुरुका-या-तीर्थ भूमिका-देखना निहायत फायदेमंद है, अपनी मुराद हासिल करे, देखी हुई चीजका ख्वाब आना गलत फरमाया, मगर देवगुरुधर्मकी-और-देखी हुई तीर्थभूमिकी यादी बनी रहना अछा है, इसलिये उसका ख्वाब आनाभी अछा फरमाया, ख्वाबमें कोई शख्श फुल-गजरे पहने,-या-उसपर फुलोंकी वारीश हो-तो-उसकों चद-रौजमें दौलत मिले,—

८ ख्वाबमें-जो-शख्श जलसे भराहुवा-तर-ब-तर तालाव नदी-होज-या-समुदर देखे उसकों चदरौजमें दौलत मिले, मगर इसबा तको यादरहे! अगर पित्तप्रकृतिके सबब मजकुर ख्वाब देखा-हो-तो-उसका फल-न-होगा, ख्वाबमें आसमानपर उडना बहेत्तर फरमाया, मगर इसमेंभी शर्त है-अगर-मजकुर ख्वाब-वादीकी प्रकृतिसें देखा गया हो-तो-उसका फल-न-होगा, सबब वादीकी प्रकृतिके वि-कारसेभी-ऐसा ख्वाब आता है,—

९ ख्वाबमें हजार पाखडीके कमलपर बेठकर-जो-शख्श-खीरका खाना खावे,-वो-चदरौजमें सलतनत पाकर-राजा-बने, ख्वाबमें बडे जोरके पवनसें तुफान आया देखे उसकों चदरौजमें आफत पेंश हो, ख्वाबमें जिसके दात-सोनेके-बनजाय उसकों-एश-आराम-मिले, ख्वाबमें गेहु-या-सफेद-सरसों दिखाई देना अछा है, फायदा होगा, ख्वाबमें-हाड-या-खाख-दिखाई देना बुरे दिनोंकी निशानी है, ख्वाबमें दावानल अग्नि दिखाई-दे-उसको तकलीफ होगी, ख्वाबमें बडे बडे रौनकदार गाव-नगर-दिखाई देना खुशी पैदा होनेकी निशानी है,—

१० स्वप्नमे-फुल-गजरोंसें-या-गेंदसें खेल खेले, उसकों चंदरोजमे दौलत मिले, स्वप्नमें आसानके सितारोंका खिजाना देखे. उल्कापात-या-भूमिकंप होना देखे, उसको चदरोजमे-रंज-पैदा हो, शरीरकी हाजतसें-या-तकलीफसें कईतरहके ख्वाब दिखाई देते है, मगर उनकों सचे नही समजना, सचे ख्वाब-वे-है, जो-देवताकी प्रेरणासें, धर्मसें-या-पापकर्मसे दिखाई दिये हो, ख्वाबमे बुगला, क्रौंच,-या-कालीमुर्घी दिखाई देना अछा है, फायदा होगा,—

११ स्वप्नमे तेल, कपास, रुई, और लोहा दिखाई देना बुरा है, नुकशान होगा, स्वप्नमे वगेररोशनीके-चाद-सूर्य-दिखाई देना अछा नही, तकलीफ होगी, स्वप्नमे जिसके-हाथ-पाव-कान-नाक-काट-दिये गये दिखाई दे-तो-मरनेकी आफत पेंश होगी. स्वप्नमे भूत-पिशाचके शाथ शराब पिते हुवेको कुत्ते खेंचरहे है, दिखाई देना मरनेकी निशानी है, स्वप्नमें क्षयरोगकी बीमारीवाला-शख्श उंट, भेंसे, कुत्ते, या-गधेपर सवार होकर दखन दिशा तर्फ चला जाय उसका मरना नजदीक आगया जानो,—

१२ स्वप्नमे मकान-या-पहाड गिर गया देखे-या-मगरमछ-आपनेकों खा-गया-देखे-तो-बुरा है, तकलीफ पेंश होगी, स्वप्नमे जिसके हाथ-पावकों बेंडी लगी दिखाई-दे-तो-अछा है, फायदा होगा,—

[दोहा –]

वैरीका मर्दन करे,-पूरब उत्तर जाय,
जीता मित्र मिले सुपन,-ये-सुपना सुखदाय, १
शुभ सुपनेकों देखकर,-शीघ्र उठो-रख ध्यान,
परमपुरुषका ध्यानकर,-शुभफल चिंतो ज्ञान, २

१३ बीमार शख्श-म्याने-पालखीमे बेठकर दखन दिशातर्फ जाय उसकों मरनेकी आफत पेंश हो,

[जैनशास्त्र उत्तराध्ययनसूत्रकी टीकामे बयान है,]

गायने रोदन विद्यात्,-नर्तने वधनधन,
हसने रोदन ब्रूयात्,-पठने कलह तथा,-१

स्वप्नमे कोई शख्श गायन करे उसको रोना पडे, नाच करे उसकों वधनच हो स्वप्नमे कोई शख्श हसे-तो-फिक्र पैदा हो, स्वप्नमे पाठ-करे-तो-उसे तकलीफ पेश हो, भगवतीसूत्रके (१५)मे-शतक उठे उद्देशेमें तहरीर है, स्वप्नमे किसी शख्शको कोई दुसरा शख्श आनकर हाथमे पकाहुवा फल देवे, उसकों चदरोजमे फायदा हो, और दौलत मिले, स्वप्नमे कोई शख्श अपने आपको हाथीपर सवार हुवा देखे, उसकोभी चदरोजम दौलत और हुकम होदा मिले, स्वप्नमे घोडेपर सवार होकर सफर करना देखे, उसकों चदरौजमे फायदा होगा. स्वप्नमे किसीने तुमकों कहा यहांसे चले जाओ-तो-बुरेदिनकी निशानी है, स्वप्नमे दूध झरती हुई-गौ-दिखाई-दे-उसकों जमीनसें फायदा हो,—

१४ स्वप्नम अरिहतदेव, चांद, सूर्य, देवविमान, समुदर, तालाव, कल्पवृक्ष, राजा, हाथी, वृषभ-या-लक्ष्मीदेवी दिखाई-दे-उसकों चदरौजम फायदा हो, और हकुमत पावे. स्वप्नमे भूत, पिशाच, राक्षस, गधर्व, चाडाल, श्मशान, कुत्ता, हाड, बदशिकल औरत, चमडा, लोही, पत्थर, काटेवाला-दरख्त, अधेरा, लुला लगडा, या-वामना आदमी दिखाई देना अछा नही, बडी हवा-या-बडी धूप दिखाई-दे-तो-बुरादिन पेश हो,—

१५ स्वप्नके कोई अपने आपकों हसपर सवार हुवा देखे, उसकी इज्जत बढे, सिंहपर सवार हुवा देखे-तो-उसकों इनाम मिले, स्वप्नमे दोस्तकी मुलाकात-हो-तो-फायदा हो, स्वप्नम अपने आपकों कपडे धोते देखे-तो- कर्जेसे छुट जाय, स्वप्नमे अपने हाथ धोते देखे-तो -एश आराम मिले, पांव धोते देखे-तो-इज्जत बढे, स्वप्नमें अपने

दाहने हाथपर सर्प काट गया दिखाई-दे-तो-दौलत मिले, स्वप्नमें सफेद रंगका-सर्प-दिखाई-दे-तो फायदा हो,—

१६ स्वप्नमे कोई शख्श कुवा उलंघ जाय-तो-अचानक दौलत मिले, स्वप्नमें अपने आपकों कडुवा तेल पिते देखे,-तो-उसकों मरनेकी-आफत-पेंश हो, स्वप्नमें आगके अंगारे, पत्थर, धूल,-या-लोहीका बरसाद हुवा देखे-तो बुरेदिनोंकी निशानी है, स्वप्नमें बानर, शियार,-या-कुत्ता अपने बिछोनेपर आन बेठे-तो-अपनेकों बीमारी पेंश होगी. राक्षस, वेताल, या-भूत-अपने बिछोनेपर-या-शरीरपर आ बेठे-तो-जानना मरनेकी आफत पेंश होगी,—

१७ स्वप्नमे अगर कोई शख्श-जहेर पिना देखे-तो-उसकी उम्र लंबी है,-ऐसा जानना,-जो-शख्श स्वप्नमे-वीणा-बजावे-तो उसकों खूबसुरत औरत मिले,-स्वप्नमे जिसके मस्तकपर-काग-बीठ-करे उसकी इज्जतमें धब्बा लगे, स्वप्नमे-जो-शख्श अपने आप सफेद-या-हरेरंगके कपडे पहने देखे,-या-आगसें अपने आपकों जलता हुवा देखे-तो-उसे-दौलत मिले, स्वप्नमे जिसकों शिंगारी हुई कन्या दिखाई-दे-उसको अछी औरत मिले, स्वप्नमे-जो-शख्श तेजदार हथियारोंसें पहाडकों तोड डाले उसकों चंदरोजमे सलतनत मिले, और राजा बने,—

१८ स्वप्नमें जिसको नाचता हुवा-मोर-दिखाई-दे-उसपर राजा-मेहरबान हो, और जमीन देवे, स्वप्नमे सफेद रंगके कपडे पहनी हुई औरत दिखाई-दे-तो-फायदा हो, स्वप्नमे जिसके-नख-या-केश बढजाय उसकी इज्जत बढे, या-अछा इल्काब मिले,—

१९ स्वप्नमे सूर्योदयका देखना, विनाधुवेकी जलती हुई आग देखना, ग्रह-नक्षत्र दिखाई देना, जिनमंदिरके शिखरपर-या-राजमहेलपर चढ गये-देखना,-फायदेमद है, इरादा पार पडेगा, स्वप्नमें शरीरपर चंदनका लेप होना, जवाहिरातके गेहने पहनना,-या-दुसरेकों शिंगार पहने हुवे देखना, अछा है, फायदा होगा,—

२० [जैनशास्त्र-उत्तराध्ययनके आठमे अध्ययनकी टीकामें बयान है,-]

[अनुष्टुप्-वृत्तम्]

अलकृताना द्रव्याणा,-वाजिवारणयोस्तथा,
वृपभस्य-च-शुक्लस्य,-दर्शने प्राप्नुयाद् यशः-१

शिंगारी हुई-कोई चीज-या-शिंगारे हुवे-हाथी-घोडे दिखाई देना अच्छा है,-फायदा-होगा, सफेदरगका बेल दिखाई दे-तो-अच्छा है, इज्जत बढेगी,—

२१ स्वममे जिसका घोडा, रथ, आसन, गाडी,-या-कपडा चौर लेजाय उसका मानभग हो, स्वप्नम-जो-शख्श केसरीसिंह, व्याघ्र, हाथी-या-घोडे-जोडे हुवे रथपर सवार होकर मुसाफरी करे उसकों चदरोजमे सलतनत-मिले-और फायदा हो, स्वप्नम घोडेपर सवार होकर सफर करे तो चदरोजमें उसका इरादा पार पडे, स्वप्नमें जिसकों मोतीयोंके भरे हुवे-थाल-दिखाई-दे-उसकों फायदा होगा, और धर्मकी तरक्की करगा, स्वममे जिसकों-छत्र-चवर-दिखाई-दे-राज्यकी तर्फसे उसकों फायदा मिले, और इज्जत बढे,—

२२ अगर कोई बीमार शख्श बीमारीकी हालतमे चाद-सूर्यका -स्वम देखे-तो-अच्छा है, बीमारी-रफा-होगी, स्वप्नमें अपने घर-जलता-हुवा देखे-तो-खुशी पैदा होगी, स्वप्नमे अगर अपने पर विजली गिरी देखे-तो-केद होगी, स्वप्नमे वीणा और आरिसा दिखाई देना अच्छा है, फायदा होगा, स्वप्नमे जिसकों वीणा इनाम मिले, उसकों औरतकी तर्फसे फायदा होगा, स्वप्नमे जिसकों धजा-पताका इनाम मिले, चदरोजमें उसकी इज्जत बढे, और सुख चैन पावे,—

२३ स्वप्नमें अगर कोई मिट्टीके बने हुवे हाथीपर सवार होकर समुदरम प्रवेश करे और डूबे नही,-तो-चदरोजमें राजा बने, और

जहागिरी पावे, स्वममें सोने-चांदीके थालमे खीरका खाना खावे, उसकों खुशखबरी मिले, स्वममे पका हुवा-फल दिखाई देना-अछा हैं, फायदा होगा, स्वममें जहाजपर-चढकर-समुंदरकी मुसाफरी करे-तो -दौलत मिले, अगर बीमारीकी हालतमे ऐसा देखे-तो-बीमारी-रफा हो, और तदुरस्ति हासिल करे, स्वममें नाचरग दिखाई देना-अछा है, खुशी पैदा होगी, मगर खुद नाच करना अछा नही,—

२४ स्वममे गायन करना ठीक नही, मगर जिनमदिरमे-गायन -करना अछा है, स्वममे-काले-रगकी चीजें दिखाई देना बहेत्तर नही, मगर हाथी, घोडे, गौ,-या-देवी,-देवता, काले रगके दिखाई देनाभी बुरे नही, स्वममे सफेद रगकी चीजें दिखाई देना अछा, मगर-कार्पास-और-नमक देखना अछा नही,—

२५ स्वममे जिस शख्शकी औरतको-चौर-लेजाय उसकों नुकशान हो, स्वममे जिसका पलग-या-जुते चौर लेजाय उसकों तकलीफ पेश हो, स्वममें अपने आपकों-मर-गया देखे-तो-अछा है, सुख चैन मिलेगा, स्वममे उट, बकरे,-या-रासभपर सवार हुवा देखे-तो-बुरा है, दिलगिरी पैदा होगी, स्वममे चदन, कपुर, नागरवेलके पान और फुल दिखाई देना अछा है,-फायदा-होगा, स्वममें कनेर-या-केशुके-दरख्तपर चढना बुरा है, रज पैदा होगा,—

२६ स्वममे-जो-शख्श-गलेतक कीचडमें फस जाय उसका मरना नजदीक आया जानना, स्वममे जिसके-हाथपाव-लबे-चढगये दिखाई-दे-उसकी इज्जत बढे, स्वममे-गांव-नगर-मकान-या -पहाड अगिसे-जल-रहेहो-और उसके शिखरपर कोई शख्श अपने आपकों सही सलामत खडा देखे-तो-उसकों चदरौजमे खुशी पैदा होगी, स्वममे जिसके सोना-चादी-जवाहिरात-या-हथियार-चौर -ले-जाय उसकी इज्जतमे धक्का पहुचे,—

२७ स्वममे गेहने-आभूषण-कपडा-मकान-सवारी-या-आसन जिसकों इनाममे मिले अछा है, खुशी पैदा होगी, स्वममे जिसकों

काले कपडे पहनी हुई-कालेरगकी औरत दखन दिशातर्फ घसीट-कर लेजाय उसकों मरनेकी आफत पेंश हो, खममे जिसके मस्तकपर खजुरका-द्रख्त उग-गया दिखाई-दे-चदरोंजमे उसकों मरणात कष्ट हो —

२८ खममे-जो-शख्श काले कपडे पहनकर काले घोडेपर सवार होके दखन दिशातर्फ जाय उसकों बुरेदिन भोगने पडे, खममे के-लेके द्रख्तपर चढगया दिखाई-दे-चदरोंजमे उसकों दौलत मिले, खममे-जो-शख्श गर्म-जलताहुवा-पानी पिया देखे, उसकों बी-मारी पैदा हो,—

२९ खममे चाद-या-आफतावकों अपने हाथोंसें स्पर्श करे उसको हुकम-होदा मिले, खममे जिसकों-मेवा-मिठाई-बतौर इनामके मिले, उसको खुशी पैदा हो,-और-बीमारीसे आराम पावे, खममे जिसकों जवाहिरात लगीहुई-अगुठी इनामम मिले उसकों फायदा हो, और जिसकी अगुठी-गुम्म-जाय उसकों नुकशान हो, खममें जिसको आसानके सितारे-चमकतेहुवे दिखाई-दे,-उसपर राजा मेहरवान हो, और इनाम देवे,—

३० खममे कोई शख्श मोतीयोंके भरेहुवे-थाल-बाट-दे-वो-चदरोंजमे दौलत पैदा करे, और धर्मकों-तरकी-दे,-खममे जि-सको मिश्रीके भरेहुवे-थाल-दिखाई-दे-उसकों खुशी पैदा हो,-खममे-बाग-बगीचे और हरी वनास्पति दिखाई दे-उसकों फायदा मिले, खममे जिसके मस्तकके बाल खिर जाय और दात गिरपडे उसकों तकलीफ पेंश हो, श्मशानके लकडेपर-या-धनुष्यपर अपने आपको चढाहुवा देखे-उसकों मरनेकी आफत आवे.—

३१ खममे अपनेकों गिरफतार करनेके लिये कोई आदमी आते है दिखाइ दे-उसको राज्यकी तर्फसे तकलीफ पेंश हो, खममे-रीछ -जानवर दिखाई देना बुरा है, तकलीफ पेश होगी, खममे कुत्तोंका

भोंकना दिखाई-दे-तो-रज पैदा हो, स्वप्नमें जिसके पेटपर द्रख्त उगे उसकों बीमारी पैदा हो,—

३२ स्वप्नमे लंबे सिंगवाले जानवर जिसकों भगाये फिरे, सुअर -या-बंदर जिसकों डरावे उसकों राज्यकी तर्फसे खौफ पैदा हो, -स्वप्नमे-काले-या-पीलेरंगके आदमी जिसको इजा देवे. उसकों मरनेकी आफत पेंश हो,—

३३ स्वप्नमे पानीसे भरेहुवे तालावमे बेठकर-जो-शख्श खीरका खाना खावे,-वो-चंदराजमे सलतनत पावे, स्वप्नमे-जो-शख्श अपने शरीरके आतरडोसें किसी-गाव-या-शहरको लपेट देवे अमलदारी पावे, और-राजा-बने,—

३४ स्वप्नमे कोई-शख्श-अपने शरीरपर तेलसें मालीश करवाई देखे उसकों बुरेदिन पेंश हो, स्वप्नमे-जो-शख्श अपनी ताकातसें पहाडकों उखेड डाले, उसकों चंदराजमे अमलदारी मिले,—

३५ स्वप्नमे-जो-शख्स-चूहा, बिलाव, गोह,-या-मुगस (नोलिया) देखे-तो-तकलीफ पेंश होगी, स्वप्नमे-जो-शख्श अपने शिरसें लोहीकी धारा गिरती देखे, चंदराजमे-सलतनत-पाकर हुकुमत करे, स्वप्नमे जिसकों जलता हुवा चिराग दिखाई-दे-उसका इरादा पूर्ण हो, स्वप्नमे-जो-शख्श आमके द्रख्तकों-फल-लगे हुवे देखे उसकों फायदा मिले,-जो-चीज-अपनेकों नापसंद हो-स्वप्नमे उसका देखना-अछा नही.-जो-चीज पसंद हो,-उसका देखना अछा है,-यह-स्वप्नशास्त्रोंका-इत्र है,—

३६ स्वप्नाध्याय प्रवक्ष्यामि,-यथोक्तं गुरुभाषितं,
फल विज्ञायते सम्यग् नित्यमेव शुभाशुभ, १
स्वप्नस्तु प्रथमे यामे-संवत्सरविपाककृत्
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैः त्रियामके, २
तुर्ये यामेषु यः स्वप्नः-मासेन फलदः स्मृतः
अरुणोदयवेलाया-दशाहेन फलप्रद.—३

स्वप्नाध्यायमे लिखा है,-रातके-पहले प्रहरमे-जो-स्वप्न दिखाई देवे एक वर्समें उसका-फल-हो, रातके दुसरे प्रहरमे दिखाई-दे-तो -आठ महिनेमे फल हो, मतातरसे छह महिनेमे फल होनाभी-लिखा है,-रातके तीसरे प्रहरमे-जो-स्वप्न दिखाई-दे-वो तीन महिनेमे फल देगा, मतातरसें-छह-महिनेमे फल होनाभी-फरमान है,-रातके चौथे प्रहरमे-जो-स्वप्न दिखाई दे-वो-एक महिनेमें फल देवे, मतांतरमे तीन महिनेमे फल होनाभी तेहरीर है, सूर्योदयके वख्तका दिखलाई दिया हुवा स्वप्न दश दिनमे फल देगा,—

३७ यस्तु पश्यति स्वप्नांते-राजानं कुंजरं हयं,
सुवर्णं वृषभं गां-च-कुटुंबं तस्य वर्धते,—१
तांबूलं दधि वस्त्र-च-शस्त्र मौक्तिकचंदनं,
जातीनकुलकुंद-च-पद्म वक्ति धनागमं,—२

स्वप्नमें-जो-शख्श-राजासाहबको देखे-उसकी तरकी हो, हाथी, घोडा, सोना, बेल,-या-गौं देखे तोभी-उसके कुटुंबकी बढवारी हों, स्वप्नम-जो-शख्श पानबीडी, दही, कपडा शस्त्र, मोती, चंदन, जाइजुहीके फूल, बकुलके फूल-कुंद-या-पद्म देखे उसकों दौलत मिले,—

आम्रबिल्वकपित्थेषु,-अन्येषु फलवृक्षेषु,
फलिते फलितं विंद्यात्,-पुष्पिते बुद्धिरुत्तमा, १
प्रासादस्थस्तु-यो-भुंक्ते,-समुद्रं तरते-नरः
अपि दासकुले जातः,-सोपि राजा भविष्यति, २
दीपमन्न फलं पुष्पं,-कन्या छत्रं तथा ध्वजं,
स्वप्ने च लभते मत्र,-यदिच्छति तत्प्राप्नुयात्,—३

स्वप्नमें-जो-शख्श आम्र, बिल्व, कपित्थ,-या-दुसरी तरहके फलवाले दरख्त, फले हुवे देखे उसकों फायदा हो, अगर उनकों फूल लगे देखे-तो-दिलमे अछे काम करनेके इरादे पैदा हो, अगर कोई शख्श स्वप्नमे मकानपर बेठकर खाना खावे,-या-समुदरकों-तिरे,

उसको चदरोजमे सलतनत मिले, और राजा बने,-ख्वममें जिसकों-चिराग-खानपान-फल-फूल-कन्या-छत्र-या-धजापताका-इनाममें मिले और गुरुसें-मंत्र-विद्याका इल्म हासिल करे, उसके इरादे कामयाब हो,—

३९ दंता यस्य विशीर्यंते,-स्वमाते निपतंति च,
धननाशो भवेत्तस्य,-पीडा तस्य शरीरजा, १
आदित्यमंडलं स्वप्ने-चंद्र-वा-यदि पश्यति,
व्याधितो मुच्यते रोगा, दरोगी श्रियमश्नुते,—२

स्वममें जिस शख्शके दांत खिर पडे या-गिरजाय-उसकों बीमारी पेंश हो, जो-शख्श-स्वममें सूर्यमंडल-या-चंद्रमंडल-देखे उसकों फायदा हो, और बीमारीसें फतेह पावे,-

४० दधिलाभे भवेदर्थो,-घृतलाभे ध्रुवं जयः
तैललाभे ध्रुवं क्लेशो,-यशस्तु दधिभक्षणे. १
सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि,
कार्पासभस्मास्थिच-तक्रवर्जं,
सर्वाणि कृष्णाण्यति-निन्दितानि,
गोहस्तिवाजिद्विजदेवर्वर्जं, २

स्वममे जिसकों दही मिले, उसकों रुपये-पैसोंसे फायदा हो, स्वममे जिसको-घीका-लाभ हो, उसकी फतेह हो, स्वमम जिसकों तैलका लाभ हो,-उसकों-रंज-पैदा हो, और अगर कोई शख्श स्वममें दहीका खाना खावे, उसकी इज्जत वढे, स्वममे सफेद रंगकी जितनी चीजे दिखाई देवे अछी है, मगर कपास, सफेद रंगकी-राख-हाड, और छास दिखाई देना अछा नही,-काले रंगकी-जितनी चीजें दिखाई देवे, बुरी है,-मगर काले रंगकी-गौं-हाथी-घोडे-द्विज-और-देवी-देवता-काले रंगके दिखाई देनाभी बुरे नही,—

४१ यस्तु मध्ये तडागस्य,-भुंजीत घृतपायसं,
अखडपद्मिनीपत्रे, तं विंद्यात्पृथिवीपतिं, १

अन्नाणि यस्य वेष्टयते,-ग्राम-वा-नगर तथा
ग्रामे मांडलिको राजा, नगरे पार्थिवो भवेत्,-२
आसने शयने याने, शरीरे वाहने गृहे,
ज्वलमाने विबुध्येत, तस्य श्रीः सर्वतोमुखी,-३

स्वप्नमे-जो-शख्श तालावके बीच-पद्मपत्रपर बेठकर खीरका खाना खावे,-वो-चद्रराजम-राजा-बने, स्वप्नमे-जो-शख्श अपने आतरडोंसे गांवको लपेट दे,-वो-माडलिक राजा बने और-अगर नगरकों लपटे दे-तो-बडा राजा बने स्वप्नमे-जो-शख्श-अपने आशनकों जलता हुवा देखे, और उसकी नींद खुलजाय-तो-उसकों दौलत मिले,-स्वप्नमे-जो-शख्श-अपने बिछौनेकों जलता देखे,-वोभी-दौलत पावे,-सवारीकों-शरीरकों-या-अपने-घरकों-जलता हुवा देखे,-वोभी-दौलत हासिल करे,

४२ अशोक कर्णवीर च,-पलाश वापि पुष्पित,
स्वप्नाते शाल्मली दृष्ट्वा,-नर' शोकमवाप्नुयात्, १
श्वेताम्बरधरा नारी, श्वेतगधानुलेपना.
अवगूहति-य-स्वप्ने,-तस्य श्रीः सर्वतोमुखी, २

स्वप्नमे-जो-शख्श-अशोक वृक्षको, कनेरकों, केशुकों, और शाल्मली वृक्षकों फुल लगे देखे, उसकों-रज-पैदा हो,-स्वप्नमें जिस शख्शको-सफेद कपडे-पहनी हुई, और श्वेतगध करके अनुलेपन किइ हुइ-औरत दिखाइ दे-या-मुलाकात हो. उसकों चदराजमे दौलत मिले. कालेरगके कपडे पहनी हुइ-औरत-दिखाई देना-या-उसकी मुलाकात होना-अछा नही,-नुकशानकी-सुरत होगी,—

यस्तु श्वेतेन सर्पेण,-दश्यते दक्षिणे करे,
सहस्रलाभो भवेत्तस्य,-सपूर्णे दशमे दिने, १
वडवा कुकुटीं क्रौंचीं,-लब्ध्वा-यः प्रतिबुध्यते-
सकुला लभते कन्यां,-भार्यां-च-प्रियवादिनीं, २

स्वप्नमे जिस शख्शके दाहने हाथपर सफेद रंगका सर्प काटे जाय, उसकों दशमेरोज हजार अशर्फी-या-रुपयोंका फायदा हो, स्वप्नमे जिसको-घोडी-मुर्गी-या-क्रौंची-इनाममे मिले,-उसको पढी लिखी उमदा औरत मिले,—

४३ नावमारोहयेद्यस्तु,-अभिन्नायामपि तरेत् ,-
प्रवासो निर्दिशेत्तस्य,-सधनः पुनरागमः १

(आर्या-वृत्तम् -)

आरूढः शुभ्रमिभ,-नदीतटे शालिभोजन कुरुते,
स भुनक्ति भूमिमखिला,-स जातिहीनोपि धर्मधनः २

स्वप्नमे-जो-शख्श नावपर सवार होकर जलकी मुसाफरी करे, उसकों मुल्कोंकी सफर हो, और दौलत मिले,-जो-शख्श सफेद हाथीपर सवार होकर नदीकनारे चावलोंका खाना खावे,-उसकों-सलतनत मिले, और चैन पावे,—

४४ स्वप्नमे देव-गुरुका-दर्शन होना अछा है, इरादा पूर्ण होगा, स्वप्नमे इक्षुरस-या-इक्षु-(यानी) सेलडीका साठा दिखाइ देना उमदा है, खुशी पैदा होगी, स्वप्नमे-जो-शख्श आसानकी सफर करे, उसको चद्‌रोजमे हुक्म-होदा मिले, स्वप्नमे मोरपक्षी दिखाई देना फायदेमद है,-तरकी होगी, स्वप्नमे जलसा देखे-तो-खुशी पैदा हो, स्वप्नमे अगर अपनेपर बिजली गिरी देखे-तो-उसकों कैद हो, स्वप्नमे -वीणा-या-आरिसा दिखाई देना अछा है, फायदा होगा, स्वप्नमे-सोने चादीके-थालमे-खीरका खाना खावे उसकों खुशी पैदा हो, स्वप्नमे पका हुवा फल दिखाईदे-तो-फायदा-हो,-स्वप्नमे जिनप्रतिमा हसती या-रोती-दिखाई देना-बुरा है,-तकलीफ पेश होगी, स्वप्नमे -घीका-घडा, दूधका घडा,-या-सहेतका घडा, दिखाई देना या-अपने सिरपर उठाना अछा है,-फायदेकी सुरत है,-स्वप्नमे जवाहिरात सोना चादी-ताबा-या-सीसा दिखाई देना,-निहायत फायदेमद है,—

४५ [आर्या-वृत्तम्-]

दृष्टा स्वप्ना-ये-स्व,-प्रति-तेत्र शुभाशुभा नृणां स्वस,
ये-प्रत्यपर तस,-ज्ञेयास्ते-स्वस-नो किंचित्, १
दुःस्वप्ने देवगुरून्-पूजयति करोति शक्तितश्च तपः,
सतत धर्मरताना,-दुःस्वप्नो भवति सुस्वप्न' २

जो-स्वप्न अपनेको आया उसका फल अपनेकों होगा, और-जो स्वप्न अपनेको आया, मगर उसमे ऐसा दिखाई दिया, फलानेकों दौलत मिली,-तो-उसका फल उसको होगा, अपनेकों नही, बुरा-स्वप्न आया-तो-उसके लिये-देवगुरूकी पूजा करना, और मुताबिक अपनी ताकातके-तप-करना चाहिये.-जिससे अपना अछा हो,-

[बयान-स्वप्नशास्त्रका-खतम हुवा,-]

[बयान-स्वर विज्ञान,-]

१ इसमे मनुष्य-जानवर-और-परींदोकी बोलीका बयान होगा, जिसमे मनुष्यकी कुदरती अवाज किस स्वरमे है. और उससे उसको क्या फायदा होगा, जानवर और परींदोकी बोलीका बयान जिसमे जानवरोंकी बोलीके सुननेसें क्या! नफा नुकशान होगा? जैनशास्त्र अनुयोगद्वारसूत्रके फरमानसें उसके देखनेकी तरकीब बतलाई है,- राग-रागिनीके तरीके और केफियत इसमे उमदा तौरसें मिलेगी,-

२ षड्ज, ऋषभ, गाधार, मध्यम, पचम, धैवत, और निषाद, इन सातोस्वरोंसे स्वरविज्ञान देखा जाता है,-दुनियामे-जितने मनुष्य, जानवर,-या-परींदे है,-उनकी बोली इन सात स्वरोंसें जुदी नही, किसीकी कुदरती अवाज-षड्जस्वरमे-किसीकी ऋषभस्वरमे-और किसीकी गाधार स्वरमे होती है,-

३ मोरकी कुदरती अवाज षड्जस्वरमे निकसती है,-मुर्गेकी ऋषभस्वरम, हसकी गाधार स्वरम, बकरेकी मध्यम स्वरमे, कोकिलाकी

पंचम स्वरमे, क्रौंचकी धैवत स्वरमें, और हाथीकी कुदरती अवाज निषाद स्वरमें, निकसती है,—

४ जिस मर्द-या-औरतकी कुदरती अवाज षड्ज स्वरमें निकसती हो,-उसकेपास दौलत बनी रहे. खानपान एश आराम और सुखचैन भोगे, अगर कोई इस सवालको पेश करे, मोरकी अवाज षड्ज स्वरमें बयान फरमाई, तो-उसकोंभी यह फल होगा, जवानमें मालुम हो. मनुष्य और-परींदोंकी तकदीरमे बडा फर्क होता है,-जो-बात मनुष्योंकेलिये कही गई हो-वो-परींदोंकेलिये नही समजना.—

५ [उत्तराध्ययनसूत्रकी टीकामें पाठहै -]

सज्जेण लहइ वित्तिं,-कयंच-न-विणस्सइ,
गावो पुत्ताय मित्ताय,-नारीणं होइ वल्लहो,-१

जिस मर्दकी कुदरती अवाज षड्जस्वरमे हो, उसका गुजरान उमदा तौरसे चले, गौ-वगेरा जानवर उसके-घर-बने रहे, कुटुंनपरिवार-और दोस्त अछे मिले, और-औरतकी तर्फसे उसकों सुखचैन बना रहे, मुल्कोकी सफर करे, नसीबेदार हो, बडा नामीग्रामी शख्श हो, दुश्मनलोग-कदम कदमपर खडे रहे, मगर सामने हुवे बाद कुछ बोल-न-सके, अपनेपास दौलत-कम-रखे, मगर उसके हुकममे दौलत बहुत हो, देवगुरुधर्मकी खिदमत करे, खुशमिजाज हो, व्रत-नियम उससे बनसके नही, मगर धर्मपर कामील एतकात हो, तिजारतकरनेमें होशियार, जिसकामकी शुरआतकरे उसमे फतेह पावे, उमदा पुशाक पहने, और सवारीका सुख रहे,—

६ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज ऋषभस्वरमें निकसती हो,-उसकों हुकम होदा मिले, खजाना उसका-तर-बना रहे-इत्र-फुलेल-गेहने और उमदा कपडे पहननेकों मिले, औरत उसके तावेमे रहे, और-अपनी भुजासे दौलत पैदा करे, धर्मपर साबीतकदम रहे,-दुनियामे इज्जत पावे, दौलतमद हो, बेपरवाह हो, तीर्थोंकी

जियारत करे, दुश्मनोंसे डरे नही, मगर शरीरमे एक तरहकी कमजोरी वनी रहे, लबी मुसाफरी करे, दिलका दलेर हो, दोस्त दगा देजाय,-दुसरे लोग उसकी सलाह लेवे, पराये दुखमे सामील हो जाय-रहमदिल हो, और दुसरोंको तालीमधर्मकी देवे—

७ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज गधारस्वरमें निकसती हो,-वो-सगीत कलाका जानकार हो, और धर्मशास्त्रकामी पढाहुवा हो नाचाहिये,-अकलतेज हो, खूबसुरत और कमालहुस्न हो, सभामे-भाषण-दे-सके, व्यापारमे होशियार हो, मुल्कोंकी सफर करे, देव गुरुकी खिदमत करे, दुनियामे इज्जत पावे,-दुसरोंकी सगतसें-धर्मके व्रत-नियम-टूटजाय-कुटुबके लोगोंको मदद करे, मगर-वे-लोग यश-न-दवे, जमीनसे फायदा हो, दुश्मन उससे डरते रहे, राज्यकी तरफसें इज्जत पावे, और धर्मको तरकी पहुंचानेवाला हो,—

८ जिसमनुष्यकी कुदरती अवाज मध्यमस्वरमे निकसती हो, वो-दिलका दलेर और हिम्मतवहादूर हो, खुशमिजाज बना रहे, एशआराम-भोगे, उमदा पुशाक पहने, खूबसुरत हो, अल्पवीर्य-हो, पापकर्मसे वचता रहे-और दिलमे परलोककी चिंता रखे-जातनिरादरीमे नामी हो, सवारीका सुखरहे,-धर्मात्मा हो, बोलनेमे चतर हो, उसकी दलिलकों कोइ तोडसके नही, किसीकी खुशामद-न-करे, प्रतापी हो, देवगुरुकी खिदमत करे, मुल्कोंकी सफर करे, तीर्थोंकी जियारतमे दौलत सर्फ करे, राज्यकी तर्फसें इनाम पावे, अछी औरत मिले,-और-तावेउम्र सुखचैन भोगे, नयामकान बनावे,-और दुश्मनोंको हठानेवाला हो,—

९ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज पचमस्वरमे निकसती हो, उसकों सलतनत मिले, बडेबडे इल्कात पावे, हिम्मतवहादूर हो,-बेपरवाह ऐसा-जो किसीसे दबे नही, फौजका अपसरहोकर फतेह पावे, और इनाममे उसको जमीन मिले, निहायत खुवसुरत हो, इज्जत बनी रहे, उमदा पुशाक पहने, दुश्मन कदम कदमपर खडे रहे, मगर उनका

जोर–न–चले, नयेमकान बनावे, आमदनीसे खर्च ज्यादह हो, मुल्कोकी सफर करे, रिस्तेदारोंका गुजरकरे,–मगर–वे–लोग–यश–न–देवे, दुसरोंका–काम–सुधार दे, मगर अपने काममे गाफिल रह–जाय, इकबालमद हो, मुबारक चेहरा हो,–सच बोले, उसकेघर–सवारी बनीरहे, उम्र लबी पावे, देवगुरुधर्मपर कामील एतकात हो, परलोकमे अछी गतिपावे, आखोंमे तकलीफ रहे, पुन्यात्मा हो, इज्जतकेलिये ज्यादह खर्च करना पडे, मुद्दतके इरादे पार पडे और उसका ख्वाब बनारहे,—

१० जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज धैवतस्वरमे निकसती हो, उसको धर्मकी बात पसद नही, दुनयवी कारोबारमे खुश रहे, जिस–बातको इख्तियार करलेवे, उसको छोडे नही, कुस्तीलडनेमे होशि–यार हो, हमेशा बीमारीकी शिकायत बनी रहे, मुल्कोकी सफर करे, सख्तजबान बोले, दौलत पैदाकरनेकेलिये बडी बडी कोशिश करे, मगर फायदा–न–हो, एकदफे मरनेकी आफत पेंश हो मगर बच जाय, दोस्त दगा देजाय, दिलमे एकतरहका फिक्र बना रहे, सतसग मिले नही, रुधिर विकारसे शरीरमे तकलीफ रहे,–कर्जदार हो, औरतका वियोग रहे, खानेपिनेमे कजुमाई करे, और–उम्र लबी पावे,—

११ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज निषादस्वरमे निकसती हो, वो–दुसरोकी नोकरी करे, और तकलीफ पावे, दिलमे रहम नही, हमेशा टटे–झगडोमें खुश रहे, भाइयोसें अनबनाव रहे, दुश्मनलोग बहुत सतावे, औरत और बेटोंसें तकलीफ पावे, मातापिताका सुख नही, जन्मभूमिमें रहना पसंद नही, मुल्कोकी सफर करे, दुश्मनोंसे शकिस्त पावे,–कर्जदार बना रहे,–औरत–और सतानका वियोग रहे,–व्यापारमे कभी अचानक नुकशान आजाय, धर्मकाममे उसको अतराय आन पडे, खर्च ज्यादा होनेके सबब दौलत जुडे नही, दिलमे फिक्र बना रहे, सफरमे दौलत गुमावे,–बडी कोशिश

करके कोई कार्यकरे मगर उसमे मर्जी मुजब-फायदा-न-मिले, अकलसें दुसरोंका-काम सुधार देवे.-मगर अपने कामम गाफिल रहजाय,-अल्पवीर्य हो,-पिछली उम्रमे आराम पावे-और-धर्म करे,-

१२ षड्ज स्वर जबानके अग्रभागसे निकमता है, ऋषभस्वर छातीसें निकसता है, गंधारस्वर कंठसे-मध्यमस्वर जबानके मध्यभागसे, पचमस्वर नासिकासे, धैवतस्वर दांत-और होठसे, और निषादस्वर-भ्रुकुटीसें निकमता है,—

१३ सफरके वख्त-या-अछे कामकी शुरूआतमे मनुष्य-या-जानवरकी षड्ज, ऋषभ,-या-गाधार स्वरम अवाज सुनाई-दे-तो-जानना फतेह होगी, मोरकी अवाज सुनाई-दे-तो इरादा पूर्ण होगा. अगर नाचता हुवा मोर दिखाई-दे-तो-निहायत उमदा है, -सफरके वख्त-या-अछे कामकी शुरूआतमे चकोरकी अवाज सुनाई-दे, या-खुद चकोर वहापर नजर आजाय-तो-उमदा है, काम -जल्द-होगा, अगर दुसरा शख्श-उस वख्त-चकोर ऐसा शब्द मुहसे बोले और अपने कानपर अवाज आवे-तो भी-अछा है, भारद्वाज-पखी-जिसको मुल्क मारवाडमे रूपारेल बोलते है, सफरके वख्त-या-अछेकामकी शुरूआतमें बोलता हुवा सुनाई-दे-या-सामने आजाय-तो-फतेह होगी,—

१४ सफरके वख्त-या-अछे कामकी शुरूआतमें हसकी अवाज सुनाइ-दे-या-खुद-हस वहा नजर आजाय निहायत उमदा है,-काम-फतेह होगा, सफरके वख्त जिसका-घोडा-दाहने पावसें जमीन उकेरे-या-अवाज करे सवारकी फतेह होगी,-सफर जाते वख्त पाले हुवे-तोतेकी अवाज बामीतर्फ और घरआते वख्त दाहनीतर्फ सुनाइ-द-तो-अछा है,-खुशी पैदा हो,—

१५ सफर जाते वख्त-थोडी दूर गये बाद बनके तोते उडकर सामने आवे-तो-उमदा है, इरादा पूर्ण होगा, सफरके वख्त-गृध्र-पखी-बामा-निमना-या-सामने चाहे जिस तर्फ-बोले अछा नही,

अगर पिछाडी गोले-तो-अछा है, अछेकामकी शुरूआतमे-या-सफरके वख्त-रोनेकी अवाज सुनाइ-दे-बुरा है,-छोटा-लडका-रोता हो-तोभी-बुरा जानना, जिस घरके उपर रातके वख्त-उल्लू-बोले तो बुरे दिनोकी-निशानी है,-उस घरके रहनेवाले मनुष्य बरबाद होते जायगे, सफरके वख्त-या-अछे कामकी शुरूआतमे-घटे-घडियाल-सरगी-तबले-या-कोई सुरीले वाजोंकी अवाज सुनाइ-दे-तो-अछा है, काम फतेह होगा,

१६ षड्ज, ऋषभ, गधार, मध्यम, पचम, धैवत, और निषाद-इन सातस्वरोंको-जो-शख्श नही पहचानता-वो-संगीत कलाकों क्या समजेगा?

सप्तस्वरात्रयो ग्रामा,-मूर्छना ह्येकविंशतिः
ताना एकोनपचाशत्,-इत्येतत्स्वरमडलं, १

सातस्वर, तीनग्राम, एकइस मूर्छना, और उनंचास तान-विना-तालीमपाये नही आसकते, विना तालस्वरके-गाना-गवैयोकेलिये शर्मींदे होनेकी बात है, अछी अवाजसें ताल-स्वरमे-गाना-गवैयोंकी तारीफ है,—

१७ सा, रि, ग, म, प, ध, नि,-ये सातस्वरके बीज अक्षर है, छह-राग,-छत्तीस रागिनी, और उनके अडतालीस बेटे, कुछसख्या मिलानेसे (९०) हुवे, इनको जानना जरूरी है,-जो-शख्श स्वर्गकी गति भोगकर आया हो, उसको गाने बजानेका शौख होगा, वाजोंमे सबसे उमदा बाजा-वीणा है, जितनी गुजाश इसमे रही है, दुसरे बाजोमे नही, गवैयेलोग गानेका जितना काम गलेमे करते है,-बजानेवाले बाजोमे नही करसकते, गानेके-सग-जो-काम-सरगी करसकती है. दुसरे बाजे नही करसकते, वीन, सितार, दिलरुबा, ताउस, सुरशिगार, जलतरग वगेरा कोई-साज-हो, गत-तोडे और आलाप देसकते है, मगर गानेवालेके अवाजकी-नकल-करना सरगीकाही काम है,-बाजोंम-वो-ताहसीर है,-जिनके बज-

नेसे लडाइमें नामर्दभी-मर्द-बनजाते है और दुना जोश पैदा होता है,—

१८ भैरवराग, मालकोश राग,-दीपक राग,-हिंडोल राग, मलार राग,-और-श्रीराग-ये-छह रागोंके नाम हैं, जमाने पेस्तरके इन रागोकी वडी ताहसीर थी, अगर विनाबेंलकी घाणीके सामने बेठकर आलादर्जेका-गवैया-साफ तौरसें भैरवराग गाता था, विना बेंलके-घाणी-फिरने लगती थी, गवैयेके मुखसें-भैरव रागके गानेमे-जो-परमाणु-निकसते थे,-वे-उस-विनाबेलकी घाणीकों फिरादेते थे,-जैसे सरगीकी तरबे अगर ठीक तौरपर मिलाइ हो-तो-उपरकी तातपर गज फिरानेसे नीचेकी तरबें-थडक-जाती है, और अवाज देती है,—

१९ पेस्तरके जमानेमे पथ्थरकी शिलाके सामने बेठकर आला दर्जेका-गवैया-साफ तोरसें मालकोश राग गाता था,-पथ्थरकी शिला-बतौर-मोमके मुलाइम होजाती थी, पाच-दश चिराग तेल -बत्ती लगाके विनादिया सलाइ लगाये तयार रखकर उनके सामने बेठकर आलादर्जेका गवैया साफ तौरसे दीपकराग गाता था-तो-वे-चिराग खुद-बखुद-जल-उठते थे, (यानी) दीपकरागके परमाणु-जो-गवैयेके मुखसें निकसते थे,-उन चिरागोंको जला देते थे, अगर कोई आलादर्जेका गवैया झुलेके सामने बेठकर हिंडोल--राग-गाता था,-झुला-खुद-बखुद झुलने लगता था,—

२० मलार-रागके गानेसें वरसात वरस जाता था, और अगर कोई-आलादर्जेका गवैया श्रीरागके वख्त-श्रीराग गाता था,-उसकों हरसुरतसें दौलत मिलती थी,-जमाने हालमे-वो-ताहसीर-कम-होगइ, पेस्तरके जैसे आलादर्जेके-गवैये-कम-रहगये, और रागकी ताहसीरभी-कम-होगइ, जैसा जमाना है,-वैसे-गवैये और राग मौजूद है,—

२१ तीर्थंकरदेव समवसरणमे मालकोश रागसें-लोगोंकों-ताली-मधर्मकी देते थे,-और इंद्रदेवते दिव्य-वाजोंसें-सगत करते थे, तीर्थंकरदेव-जैसे-गानेवाले-और-इद्र-जैसे उनके गानेकी सगत करनेवाले जहा मिले फिर किस बातकी-कमी-रहे? आजकल तीर्थंकरदेव मौजूद नही, इंद्रवगेरा देवतोंका आनाभी बंध होगया, जमाने हालमे अगर कोई-मुनि-राग-रागिनीके जाननेवाले हो,-और-व्याख्यान धर्मशास्त्रका देवे-तो-कोई मना नही,—

२२ भैरवी, कालिंगडा, आसावरी, सारग, गोडसारग, पीलु, बरवा, धनासीरी, श्रीराग, दीपक, कल्याण, कानडा, सोरठ, जेजेवंती, बिहाग, खमाज, जिला, झिंझोटी, मलार, छाया, टोडी, केदार, दरबारी कानडा, कामोद, काफी, बसत, और ख्याल वगेरा गाना जानते हो-तो-देवमदिरमे इबादत करो, जमाने तीर्थंकर-चक्रवर्तीयोके (३२०००) देशीय-रागिनी-मौजूदथी, जमाने वासुदेवोंके (१६०००) मौजूद थी, जमानेहालमे जितने राग-रागिनी मौजूद है,-अगर उतनीभी-जानसके-तो-गनीमत है,—

२३ अगर कोइ महाशय-वीणा, सितार, दिलरुबा, ताउम, सरगी,-या-हारमोनियम-बजाना जानते हो-और-वे-देवमंदिरमे जाकर-राग-रागिनसे इबादत करे निहायत खुशीकी बात है, इबादत करतेवख्त अगर दिलमे-वैराग्य आजाय और रोम-रोम-खिलजाय-तो-जानो धर्मका असर खुब हुवा. ऐसी इबादत करनेसें हजाराह-जन्मके पापकर्म-कट-जाते है,-कईजगह-जिनमदिरोंमे-श्रावकलोग-जब पूजन पढाते है, राग-रागिनी-जानते नही, बेताला और बेसुरा गायन करते है,-इससे-तो-तालसरसें-गानाबजाना सिखकर गावे-तो-क्या उमदाबात हो,? कई शहरोंमे-श्रावकलोग-तालसुरमें गाना-बजाना जानते है,-वे-उमदातौरसे पूजन पढा सकते है,-सरगी हारमोनियम,-बशरी,-अलगोजा,-वेला,-गानेकेसाथ अछा सग देते है, चाहे-मर्द हो-या-औरत अछे बाजेके साथ-धर्मके-पद रागरा-

गिनीसे गावे निहायत फायदेमद है, जिसशख्शकी-अवाज-मीठी-और सुरीली-हो, वही उमदातौरसें गाना-गासकता है, जिसकी अवाज सुरीली नही, उसका गाना नेंकार है,-अछीअवाज पाना-पुन्यके ताल्लुक है,-जिन्होने पूर्वजन्ममे-पुन्य-किया है,-मुबारक चेहरा और खुश मिजाज है,-अवाजभी-उनकी सुरीली होनेसे उमदा गाना करसकते है,—

[बयान-स्वर विज्ञानका-खतम हुवा,-]

[बयान-भूमिकप -]

१ इसमे जमीन-काप-उठनेसे क्या! फल होगा? उसका-जिक्र है,-सबचिजे-जमीनपर ठहरी है, जब जमीनही-काप-उठे-तो-फिर इससें ज्यादा आफत और क्या होगी? धर्मशास्त्रोंका फरमाना है,-जब-दुनियादारोंका नसीबा कमजोर हो जाय ऐसी आफत पेंश हो,-जैनशास्त्रोंमे बयान है,-जिसजमीनके-बाशिदोंकी तक़दीर अछी हो,-उसजगह बारीश अछी हो, अनाज-घास-और फल-फुल-अछे पैदा हो, और-लोग-चैन-करे, जिसजमीनके बाशिंदोकी तक़दीर-कमजोर हो, बारीश-कम हो-अनाज बगेरा चिजे-कम-पैदा हो,-और तरहतरहके उत्पात पैदाहो, सुनागया है, जमीन कपनेसें-गाव-के-गाव-जमीनमे दब गये, पाच-सात-चींमटी बजाइ जाय उतनी-देरभी-अगर-जमीन कपजाय-तो-भारी नुकशान होजाता है, अगर ज्यादादेर जमीन कापती रहे-न-मालुम क्याक्या आफत पेंश हो जाय? पहाड, नदी, सरोवर, बाग-बगिचे-द्रख्त-घर-हाट-हवेली-मकान-कोठी-कमरे-चूरचूर होजाते है,-नदीयोंका-पानी-उछल उछलकर कहीका कहीं जागिरता है,-रास्ते बरबाद होजाते है,-और जानका जोखम इसी उत्पातसे उठाना पडता है,-सुना होगा कइ-जगह-आदमी-बात करते जमीन कपनेसे दबगये,-कइ सोते हुवे और कई चलते फिरते गिरकर जमीनदोस्त होगये?

२ [जैनशास्त्र-उत्तराध्ययनसूत्रकी टीकामें पाठ है,-]

शब्देन महता भूमि,-र्यदा रसति-कंपते.-
सेनापतिरमात्यश्च,-राजा-राष्ट्रं च पीड्यते,-१

जब कभी जमीनमेसे जोरसे अवाज हो,-या-काप उठे-तो-राजा दिवान सेनापति और मुल्ककों तकलीफ पेश हो, बीमारी चले,- लोगोंमे अनबनाव पैदा हो,-या-दुसरीतरहकी आफत आवे,-मगर तमाम जगहकेलिये यह बात नही, जिसजगह जमीन कपी हो, उसीके लिये जानना,-अष्टांगनिमित्तका बयान बराबर मिलता है,-इसलिये- ज्ञानीयोंने इसको काबिले गौर फरमाया,—

३ जमीनकंपनेका सबब जब कभी पातालवासी देवते आपसमें लडाई लडे-या-गुस्सेमे आकर जमीनपर लात मारे-तो-पाचपची- सकोशतक जमीन कप जाय, कमी-सो-दोसो-या-पाचसोकोशतक काप उठनाभी कोई ताज्जुब नही, जमीनके नीचे कभी खारी पदा- र्थोंमे किसीतरहका फेरफार होजाय-उससबबसेंभी जमीन कप जाती है,-कई जगह-पानीके कुड हमेशां गर्म बने रहते है,-इसका सबब- यही अदाज कियाजाता है,-उसजगहकी-जमीनमे-गर्म-परमाणु ज्यादह होना चाहिये,-शास्त्रोंमे जमीनकों-"बहुरत्ना-वसुधरा,"- फरमाइ, दरअसल! जमीनमे तरहतरहके पदार्थ रहे हुवे है,-इसमें कोई शक नही, बरसात-वायु-खेती-फल-फूल-और घास-जीवोंके पुन्यानुसार होते है,-जिनको-पुन्य-पाप मानना मजुर नही, उनकी बात अलग है,-मगर पुन्यपापकी सडक एसी है,-जो-अखीरमे- उसपर-आनाही पडता है, कइलोग निमित्तज्ञानको मजुर नही रखते, -मगर-ज्ञानीयोंने इसकों सचा फरमाया,-जिसकी मरजीहो माने- न-मरजीहो,-न-माने,

[बयान-भूमिकंपका-खतम हुवा,-]

——⟶∘⟵——

३ आखपर तिल-हो-तो खाविंदकी उसपर अछीनजर बनी रहे,
४ गालपर तिल-हो-तो-एशआराम भोगे,
५ कानपर तिल-हो-तो-गेहने जेवर बहुत पहने,
६ गलेपर तिल-हो-चो-अपने-घरमे-हकुमत चलावे,
७ छातीपर तिल-हो-तो-पुत्रवती हो,
८ हाथपर तिल-हो-उसका खानिंद उसपर मुरवत रखे,
९ जाघपर तिल-हो-उसके पास नोकर चाकर बने रहे,
१० पावपर-तिल-हो-मुल्कोंकी सफर ज्यादा करे,
११ औरतकों बामे अगपर तिल-मसा-या-लहसन-हो,-ज्यादा फायदा करे, अगर दाहने-अगपर-हो-तो कम करे, मगर बिलकुल गलत नही हो,—

[बयान-व्यजन-निमित्तका खतम-हुवा,-]

[दोहा]

परालब्ध पहले बनी, पिछे बना शरीर,
तोभी यह आश्चर्य है, मनुष्य-न-धारे धीर, १
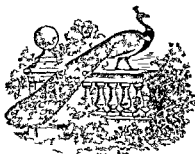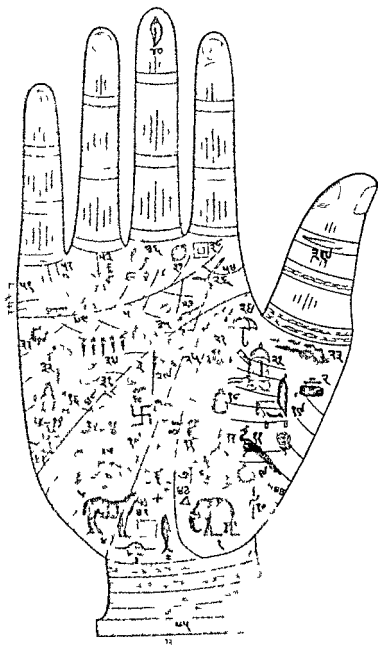
धर्मचर्चामे होशियार होगा, जिनमंदिरकी प्रतिष्ठा और जियारत करेगा, और धर्मपर कामील एतकात होगा,

८ जिसके हाथमे देवविमानका निशान हो-वो-देवमंदिर फरवायगा, तीर्थोंकी जियारत करे, दुसरोंकों तालीमधर्मकी दे, -स्वर्गकी गति हासिल करे,

९ जिसके हाथमे सूर्यका निशान हो,-वो-बडा-तेजस्वी तामसीप्रकृतिवाला होगा, किसीकी परवाह-न-रखे और बहादूर बना रहे,

१० जिसके हाथमे अंकुशका निशान हो, उसके-घर-हाथी दौलतमद हो, और फौजमे-फतेह पावे,

११ जिसके हाथमे मोरका निशान हो,-वो-संगीतकलाक नकार हो,-हरजगह इज्जत पावे, और एश-आराम-भोगनेवाला

१२ जिसके हाथमे-योनिका-निशान हो, दुनियाम मशहूर हो, प्रतापी हो, और सुखसें जींदगी-तैर-करे,

१३ जिसके हाथमे कलशका निशान हो,-वो-हरजगह फतेह पावे,-देवमंदिर तामीर करावे और तीर्थोंकी जियारत करे,

१४ जिसके हाथमे तलवारका निशान हो,-वो-लडाइमे फतेह पावे, खुशनसीब हो, और राज्यकी तर्फसे इनाम पावे,—

१५ जिसके हातमे जहाजका-निशान हो,-समुदरकी तिजारत करे,-जवाहिरातसें-फायदा हासिल-करे, और लबीउम्र पावे,—

१६ जिसके हाथमे लक्ष्मीदेवीका [illegible] हो उसका खजाना-तर-रहे, जहांगिरी पावे, [illegible] दौलतकी-

[बयान-हस्त-रेखा,]

इसमे हस्तरेखा देखनेका तरीका, उसका फल और आसानीके लिये हस्तरेखाके पंजेका चित्रभी इसमे दाखल करदिया है, जिसके देखनेसें अकलमदोंकों-वो-खुशी होगी, गोया ! इल्म-हस्तरेखाका -एक-खजाना मिलगया, हस्तरेखाके चित्रमें देखलो !-(५५) नंबर लगे है, एक नंबरसें पचवननंबरतक चित्र और रेखा मिलाते रहो. व-खूबी मालुम होगा, किसका क्या ! फल है ? शिवाय इसके औरभी ज्यादा सबुतदेकर बयान दिया है,-अवलसें अखीरतक पढनेसें मालुम होगा,

१ जिसके हाथमे हाथीका निशान हो,-वो-राजा हो, जहागीरदार-हो-या-हाथीयोंकी तिजारत करनेवाला हो,-पेस्तरके जमानेमे -खुशनसीव और इकबालमदोंके हाथमे-ऐसे निशान होते थे,

२ जिसके हाथमे मछका निशान हो-वो-दौलतमंद और आरामतलब होगा, और समुदरकी मुसाफरी करेगा,

३ जिसके हाथमे म्याने-पालखीका निशान हो, उसका खजाना -तर-रहे, जहागीरदार हो, नोकर-चाकर-उसकेपास बनेरहे, और म्याने पालखीकी सवारी मिले,

४ जिसके हाथमे घोडेका निशान हो,-वो-शख्श-फौजमे अफ्सर बने, दुसरोंपर हुकम चलावे, राज्यमे उसकी इज्जत बढे और उसके घर-घोडे-बधे रहे,—

५ जिसके हाथमे केशरीसिहका निशान हो,-वो-राजा हो, हकुमतकरनेवाला हो,-फौजमे शकिस्त-न-खावे, और बडाबहादूर हो,

६ जिसके हाथमे फुलकी मालाका निशान हो,-वो-देवगुरुकी -खिदमत करे, तीर्थोमे-मदिर-मूर्त्ति-या-धर्मशाला तामीर करावे, हरजगह फतेह पावे, इरादे उसके पूर्ण होते रहे,-और नामी ग्रामी-शख्श हो,

७ जिसके हाथम त्रिशूलका निशान हो,-वो-धर्मध्वज-और

धर्मचर्चामें होशियार होगा, जिनमदिरकी प्रतिष्ठा और तीर्थोंकी जियारत करेगा, और धर्मपर कामील एतकात होगा,

८ जिसके हाथमे देवविमानका निशान हो-वो-देवमदिर तामीर करवायगा, तीर्थोंकी जियारत करे, दुसरोंकों तालीमधर्मकी दे, और -स्वर्गकी गति हासिल करे,

९ जिसके हाथमे सूर्यका निशान हो,-वो-बडा-तेजस्वी और तामसीप्रकृतिवाला होगा, किसीकी परवाह-न-रखे और हिम्मत बहादूर बना रहे,

१० जिसके हाथमे अकुशका निशान हो, उसके-घर-हाथी-बधे, दौलतमद हो, और फौजमें-फतेह पावे,

११ जिसके हाथमे मोरका निशान हो,-वो-सगीतकलाका जा नकार हो,-हरजगह इज्जत पावे, और एश-आराम-भोगनेवाला हो,

१२ जिसके हाथमें-योनिका-निशान हो, दुनियामें मशहूर शख्स हो, प्रतापी हो, और सुखसें जींदगी-तैर-करे,

१३ जिसके हाथमे कलशका निशान हो,-वो-हरजगह फतेह पावे,-देवमदिर तामीर करावे और तीर्थोंकी जियारत करे,

१४ जिसके हाथमें तलवारका निशान हो,-वो-लडाइम फतेह पावे, खुशनसीब हो, और राज्यकी तर्फसें इनाम पावे,—

१५ जिसके हातमे जहाजका-निशान हो,-समुदरकी तिजारत करे,-जवाहिरातसें-फायदा हासिल-करे, और लबीउम्र पावे,—

१६ जिसके हाथमे लक्ष्मीदेवीका निशान हो, उसका खजाना-तर-रहे, जहागिरी पावे, खजानची हो, और उसकों दौलतकी-कमी-न-हो,

१७ जिसके हाथमे स्वस्तिकका निशान हो, उसके-घर-हमेशा आनद-मगल बने रहे,-उसकी सलाह दुसरेलोग लेने आवे,-उसके लेखोंकों-लोग-मजुर करे, और-इल्मसें दुनियामे मशहूर हो,

१८ जिसके हाथमे कमडलका निशान हो,-वो-सुखी और धर्मी

हो, साधुलोगोंकी खिदमत करे-या-खुद साधु बनकर मुल्कोंकी सफर करे और दुसरोकों तालीम धर्मकी देवे,

१९ जिसके हाथमें सिंहासनका निशान हो,-वो-राजाधिराज होकर राज्यसिंहासनपर तख्तनशीन हो,-या-दिवान हो,-सलतनत पावे,-और अमलदारी करे,

२० जिसके हाथमे पुष्करिणी-बावडीका-निशान हो,-वो-दिलका दलेर हो, दौलतमंद हो, धर्मपर कामीलएतकात रखे,-दुसरोको मदद पहुचावे और उसकों जमीनकी पैदाश हो,—

२१ जिसके हाथमें-रथका-निशान हो,-वो-दुश्मनोसें फतेह पावे, उसका-खजाना-तर-बनारहे,-बाग-बगिचे और-खेतीसें फायदा मिलता रहे, उसके घर-रथ-हाथी-घोडे वगेरा सवारी बंधी रहे, और-कभी-पावपेदल मुसाफरी-न-करे,

२२ जिसके हाथमे कल्पवृक्षका निशान हो,-बडी खेरात करनेवाला हो, दौलतमद और खुशनसीब हो, जमीन जहागिरी बनीरहे, दिलके इरादे पूर्ण हो, और खानपानसें-खुसी-रहे,

२३ जिसके हाथमे पहाडका निशान हो,-वो-जवाहिरातकी तिजारतसे फायदा हासिल करे,-बडे बडे कट्राक्ट लेवे, नदी-नालोंपर पुल बांधे-और-उसके घर-जमीनकी पैदाश हमेशा बनीरहे,

२४ जिसके हाथमे छत्रका निशान हो,-वो-हरजगह-इज्जत पावे, छत्रपति राजा हो,-और-धर्मको तरकी देवे,—

२५ जिसके हाथमे धनुष्यका निशान हो,-वो-लडाईमे फतेह पावे, दुश्मन लोग-कदम कदमपर खडे रहे-मगर-सामने हुवे बाद उनका-जोर-चले नही,-बहादूर हो,-उसपर कोई-मुकद्दमा-पेश करे तो-शकिस्त-न-खाय,-और फतेह पावे,—

२६ जिसके हाथमे-हलका-निशान हो,-वो-खेतीकरनेवाला हो. जमीनसे फायदा हो, नये मकान बनवाने और-राज्यकी तर्फसे जमीन इनाम पावे,

२७ जिसके हाथमें गदाका निशान हो,-वो-फौजमें फतेह पावे, दुसरोंपर हकुमत करे और बडाबहादूर शरश हो,-दुश्मनोका-जोर चले नही,-

२८ जिसके हाथमें सरोवरका निशान हो, उसके कभी-दौलतकी कमी-न-रहे, जमीनसे और खेतीवाडीसे फायदा हो, दुसरोंकों दौलत देता रहे मगर-खुद-कभी कर्जदार-न-बने,

२९ जिसके हाथमे धजाका निशान हो,-उसकी इज्जत हमेशा बनी रहे, अपने कुलमे प्रतापी हो, और धर्मकों तरक्कीदेनेवाला हो,

३० जिसके हाथमे पदमका निशान हो,-चक्रवर्त्तीराजा हो,-नव-निधान और चौदह-रत्न-उसकेपास मौजूद रहे,-मुल्कोंमे-फतेह-पावे, और-धर्मको तरक्की देवे,—

३१ जिसके हाथमे चद्रमाका निशान हो,-वो-बडानसीबेदार और खूबसूरत हो, उसके-घर-पद्मिनी-औरत हों, नोकर-चाकर-और-सवारी उसके-घर-बनी रहे, हमेशा-सुखचैन-भोगे और-दौलत झलाझल हो,

३२ जिसके हाथम चवरका निशान हो,-वो-सलतन पावे और राजा हो,-या-दिवानपदवीपाकर-राज्यकी तरक्की करे, देवमदिर तामीर करावे, तीर्थोंकी जियारत करे-और-धर्मको-तरक्की दे,—

३३ जिसके हाथमे काचवेका निशान हो-वो-भूमिपति हो, अमलदारी पावे, समुदरम जहाज चलावे,-या-खुद-समुदरकी मुसाफरी करे और विमाका व्यापारी हो.—

३४ जिसके हाथम तोरणका निशान हो, उसके-घर-आनंद मगल बने रहे, जहागिरदार हो, जमीनकी पैदाश हो, घर, हाट, हवेली, वगेरा मकानात ज्यादा हो,- और बाग-बगीचेकी सैर करनेवाला हो,

३५ जिसके हाथमे चक्रका निशान हो,-वो-चक्रवर्ती राजा हो, उसके घर-नवनिधान चौदहरत्न-और दौलत बेशुमार हो, पद्मिनी

औरते हो,-और-हाथी-घोडे डके निशान आगे चले, विद्वानोंकों मदद देवे, और धर्मकी तरक्की करे,

३६ जिसके हाथमे आरिसेका निशान हो,-वो-दिवान मुत्सद्दी होकर दुसरेपर हकुमत करे, जमीन इनाममे पावे और तीर्थभूमिमे देवमदिर तामीर करावे, पिछलीउम्रमे दीक्षा इख्तियार करे और साधु बने, दुनियाकों तालीम धर्मकी देवे. और आत्मज्ञानी हो,

३७ जिसके हाथमें वज्रका निशान हो, उसकों हुकम-होद्दा-मिले, सलतनत पावे और दौलतमद हो, किसीसे शकिस्त-न-खावे, और-बेपरवाह हो,

३८ जिसके हाथमे वेदीका-निशान हो,-वो-धर्मके बडेबडे जलसे करे, प्रतिष्ठाके जलसेका विधिविधान उसके हाथसें हो, मत्रविद्याका जानकार हो, और धर्मपर कामीलएतकात बना रहे,—

३९ जिसके हाथके दोनों अगुठोंमे-जवका-निशान हो, वो-इल्म पढा हुवा हो, और इल्मसेही दुनियामें मशहूर हो, दौलतमद-और उसका जन्म-वहुतकरके शुक्लपक्षसे होना चाहिये, तरह-तरहकी सपदा उसके पास बनीरहे और दुसरोंको तालीमधर्मकी-देवे, स-भामें-भाषण-दे-सके, और लेखलिखनेमे होशियार हो,—

४० जिसके हाथमे शखका निशान हो,-वो-हमेशा दौलतमद बनारहे, समुंदरकी मुसाफरी करे, और फायदा-उठावे,-पिछली उम्रमे देवमंदिर तामीर करावे, और तीर्थोंकी जियारत करे,

४१ जिसके हाथमे षट्कोणका निशान हो, वो-जहागीरदार हो, उसको जमीनसें फायदा मिले-और उसके पास-इनाममे मिले हुवे गाव और बाग-बगीचे बनेरहे,

४२ जिसके हाथमे नद्यावर्त्त-स्वस्तिकका निशान हो, वो-इज्जत-दार बनारहे, दौलतमद हो, और तीर्थोंकी जियारतकेलिये-सघ-निकाले, और धर्मके काममे फतेहमद हो,

४३ जिसके हाथमे त्रिकोणका निशान हो,-वो-जहागिरदार हो, जमीनसें फायदा उठावे, गौ-भेंस-घोडे वगेरा जानवर उसके घर बधे रहे, और सवारीका सुख हो,—

४४ जिसके हाथमें मुकुटका निशान हो,-वो-राजाधिराज-हो, और सिरपर ताज पहने, विद्वान् हो, सहस्र अवधान करे और आम-दुनियाको तालीम धर्मकी देवे. शिघ्रकवि और सायरी हो,

४५ जिसके हाथमे श्रीवत्सका निशान हो,-उसके इरादे पूर्ण होते रहे, कभी तकलीफ पेंश-न-हो, खुशमिजाज और मिलनसार हो, धर्मम साबीतकदम बना रहे-और बहिस्त पावे,

४६ जिसके हाथमे यशरेखा-लंबी हो, टुटी फुटी-न-हो,-वो-दुनियामे इज्जतदार हो, हरेक काममे यश मिले, और-दुश्मनोंसे-फतेह -पावे यशरेखाका दुसरानाम-इज्जतरेखाभी बोलते है,-मजकुररेखा-टुटी-फुटी-हो-तो-उसशख्शकी इज्जतम धन्ना लगे,-और-कभी-राज्यकी-तर्फसे नुकशान पेंश हो, यशरेखा-मणिबधसें निकलकर अगुठेके नीचे और तर्जनीके विचलेभागमे विभवरेखासे मिलती है,

४७ जिसके हाथमे ऊर्द्धरेखा-मणिबधसे निकलकर तर्जनीअगु-लीतक-जा-कर मिली हो,-वो-राजा-या-दिवान होगा, मुल्कोंमे उसकी अमलदारी बनीरहे, बडेबडे लोग उसकी सलाह लेवे, नोकर -चाकर-और-सवारीका सुख हो, विना नोकरके-घरसें-बहार कदम-न-रखे,

४८ जिसके हाथमे विभवरेखा-टुटी-फुटी-न—हो, और लंबी हो,-वो-अपने खानदानम नामीग्रामी शख्श हो,-विभवरेखाका-दुसरा-नाम-मातृरेखाभी-बोलते है,-विभवरेखा-हथेलीके बीचले भागसे निकलकर अगुठेके नीचे और तर्जनीके उपर यशरेखाकों-जा -कर-मिलती है,-विभवरेखा और यशरेखा-सधिकी-जगहपर जा-कर-न-मिले और जुदी पडजाय-तो-उसशख्शको औरतका वियोग रहे,-अगर उसके औरत मौजूद हो,-तो-मुल्कोंकी सफरके सबब-

या-नार्दत्तिफाकी रहे,-इसीतरह औरतकेलियेभी-जानना, उसके खा-
विंदसें मिलाप कम रहे, मर्दके हाथमें अगर यशरेखा और विभवरे-
खा-सधिकी जगह-न-मिली हो, और औरतके हाथमें मिली हो-तो
-जानना, मर्दका स्नेह-कम-और-औरतका-स्नेह-ज्यादा रहे, इसी-
तरह-जो मर्दकी मजकुररेखा-सधिकी जगह मिली हो, और औरत-
तकी-न-मिली हो-तो-औरतका स्नेह-कम-और मर्दका स्नेह ज्यादा
रहे, औरतकी विभवरेखा उसको-सोहाग-रेखा-तरीके फल देती
है,-विभवरेखा और यशरेखा अछीतरह पहचानना चाहिये, विना
पहचान फल कहना गलत है,—

४९ आयुष्यरेखा कनिष्ठाअगुलीके नीचे-हथेलीसें निकलकर
तर्जनी अंगुलीकी जडतक जाती है,-और-वो-जिसके अखंडित हो,
टुटी-फुटी-न-हो, लंबी हो-तो-जो लंबी उम्र पावे, जिसकी आयु-
ष्यरेखा-तर्जनीअगुलीकी-जडतक-चलीगई हो-तो-वो-आजकलके
जमानेमें (१००) वर्सकी उम्र पाता है,-मध्यमाअगुलीकी-जडतक
-गई हो-तो-(७५) वर्स,-और अनामिका अगुलीकी जडतक गई
हो-तो-(५०) वर्सकी उम्र पाता है,-उससे जितनी कमहो-तो (२५)
वर्स-या-उससेभी कम-उम्र पाता है, जमाने हालमें बहुतसे मनु-
ष्योंकी उम्र-जैनशास्त्रमें (१२०) वर्सकी फरमाई, इससे ज्यादा
उम्रभी-किसीकिसीकी हो-सकती है, मगर-वो-बहुत-कमदारशोंकी
होती है, इसलिये-वो-गिनतीमें शुमार नही किईगई, जिनकों अख-
बार पढनेका शौख है; उन्होंने पढा होगा, गैरमुल्कोंमें इसवख्त
(१३५)-या-(१५०) वर्सकी उम्रके मनुष्य पाये जाते है, मगर ऐसी
लंबी उम्रवाले-बहुत कम होनेकी वजहसें-गिनतीमें शुमार नही
किई,-शास्त्रकारोंने फरमाई, बाहुल्यतासें-आजकलके मनुष्योंकी उम्र
(१२०) वर्सकी फरमाई,

५० सपत्रेखा उसकों कहते है,-जो-आयुष्यरेखा और वैभवरे-
खाके बीचमें चौकडीका आकार हो, जितनी चौकडी हो,-उतना-वो-

दौलतमद हो,-जिसकों-एकभी-चौंकडी-न-हो-वो-मामुली दौलतमद हो, जिसकी-वैभवरेखा-लंबी-हो, उससेभी-दौलत देखीजाती है, और ऊर्द्धरेखासेभी-दौलतका होना-न-होना अदाज कियाजाता है, मगर शर्त-यह है, देखनेवाला-जानकर होना चाहिये, आजकल हस्तरेखा देखनेवाले बहुत है, मगर सपत्रेखाको जाननेवाले थोडे है, इसलिये उनका कहना मिलता नही,—

५१ आयुष्यरेखा और कनिष्ठा अगुलीके बीचमे जितनी आडीरेखा पडी हो,-उसकों-स्त्रीरेखा-कहीजाती है,-मगर-वो-रेखा अखडित और पूर्ण होना चाहिये, मजकुर रेखा जितनी पडी हो, उतनी-स्त्री-होना कहो, मगर मुताबिक जमाने और दर्जेके सोचसमजकर कहना चाहिये जैसे चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव-छत्रपति-राजे महाराजोंकेलिये उनके दर्जे मुआफिक और मामुली आदमीयोंकेलिये उनके दर्जे मुआफिक कहना, जैसे आजकलके मर्दको-अगर एकरेखा हो-तो-एक औरत होगी, ऐसा जानना,-और-पेस्तरके जमानेमे एकरेखा हो-तो-दश औरत और-उसके पेस्तरके जमानेमे एकरेखाकी जगह (१००) औरत होगी ऐसा जानना, राजे महाराजोंको-सेंकडों रानीयें होतीथी, और अबभी पाच-दश-रानीयें होती है,-और गरीबकों एकभी-नहीहोती, सब-बात अपनी अपनी तकदीरके ताल्लुक है,-

५२ कनिष्ठा अगुलीके नीचे-आयुष्यरेखाके उपर-और-स्त्रीरेखाके सामने-जितनी खडीरेखा पडी हो. उतनी-धर्मरेखा-समजना, और-वो-धर्मरेखा-दो-या-तीन होती है,-श्रद्धा-ज्ञान-और-चारित्र-इनसे देखेजाते है,-धर्मरखा टुटी-फुटी-न-हो, एकदम-साफ हो,-उस आदमीकों उतना-धर्मी-समजना,-जिसको धर्मरेखा-न-हो,-या-टुटी-फुटी हो, उस आदमीको अधर्मी-समजना,

५३ अनामिका अगुलीके नीचे और आयुष्यरेखाके उपर जितनी खडी-या-आडीरेखाहो-उसका नाम-विद्यारेखा है, उतनी उसश-

रेखको विद्या होगी. तीन-चार-पाच-या-सातरेखा हो, उतनी तरहकी-वो-विद्या पढेगा, व्याख्यानधर्मशास्त्रका देनेवाला-और-लेखलिखनेवालाभी होगा, विद्यारेखा जितनी साफ और अखंड हो, -उतनी उसकी अकल तेज होगी.

५४ तर्जनीअंगुलीके नीचे-वैभव-और-यशरेखाकी संधिके उपर-बीचलेभागसे आडीरेखा निकलकर आयुष्यरेखाके अग्रभागको -जो-रेखा मिलजाय उसरेखाका नाम-दीक्षारेखा जानना, और-वो-जितनी अखंड -या-साफ हो, उतना-वो-शख्श-निर्मल चारित्र पालेगा, मगर धर्मरेखा-और-दीक्षारेखाको देखकर धर्मश्रद्धाका बयान करना चाहिये, दीक्षारेखा और धर्मरेखा दोनो अखंडित और साफ-न-हो-तो-धर्मम-कम-श्रद्धावाला होगा ऐसा जानना, कोई शख्श धर्ममे श्रद्धावाला होता है, मगर उससे-व्रत-नियम नही होसके, और कोई शख्श ऐसेभी होते है, व्रत-नियम-करसके, मगर उसकी धर्मश्रद्धाका कुछ ठिकाना नही, सब बात धर्मश्रद्धापर दारमदार है,—

५५ हथेलीके नीचे-और-हाथकी संधिके-उपर-जो-तीन-रेखा होती है, उसको-जबमाला-बोलते है,-मणिबंधमे-जिसके एक-जबमालाका निशान हो-तो-वो-शख्श आरामतलब होगा, जिसके -दो-जबमाला-हो,-तो-वो-दुनियामे मशहूर होगा, और जिसके तीन-जबमाला हो-तो-वो-बडा दौलतमंद-या-तपस्वी-मुनि हो, जबमालाका-आकार-माला-जैसा होता है,-इस किताबमे दाखिल किया हुवा-हस्तरेखाका-पंजा-देखो और उसमें-एकसे-लेकर-पचावन-नबरतक-जो-रेखा और निशान दिखलाये है,-वो-इस लिखाणसें मिलाकर देखो, व-खूबी मालुम होसकेगा, आगे औरभी -बयान दिया है,-जो-इसी-रेखाविज्ञानको ज्यादा माहिती देनेवाला है —

५६ पूर्वमायु' परीक्षेत,-पश्चाल्लक्षणमेव च,
आयुर्हीना नरा नार्यो, लक्षणैः किं प्रयोजन, १

लक्षणशास्त्रका फरमान है,-अवल-आदमीकी उम्र देखना चाहिये, फर्ज करो ! उम्र छोटी है, और लक्षण बडे बडे पडे है,-इसमें क्या हुवा ? इसीलिये कहागया, पेस्तर उम्र देखना जरुरी है,—

पचदीर्घं चतुर्हस्व,-चतुःसूक्ष्म पडुन्नत,
सप्तरक्त त्रिविस्तीर्ण,-त्रिगभीर प्रशस्यते, २
बाहुनेत्रातर चैव,-जानुनासास्तथैव च,
स्तनयोरतर चैव,-पचदीर्घं प्रशस्यते, ३
ग्रीवाप्रजनन पृष्टि' ह्रस्वे जघे च पूज्यते,
ह्रस्वाणि यस्य चत्वारि,-पूजामाप्नोति मानव. ४

शरीरमे पाचचिजे लबी होना अछी है,-चार चिजें-छोटी होना उमदा, चारचिजे पतली होना बहेत्तर, छह चिजें उची होना अछी,-सात चिजे-लाल होना उमदा, तीनचिजे चोडी होना बहेत्तर, और तीनचिजे-गमीर होतो-अछी है,-हाथ, आख जानु नाक-और छाती-ये-पाच चिजे लबी हो-तो-दौलतमद हो, जिसका नाक तोतेकी चचुसमान अणिदार हो-वो-शख्श आरामतलब और धर्मपर साबीतकदम हो, गर्दन, पुरुषचिन्ह, पीठ, और जघा छोटी होना अछा है, नसीबेदार हो.

५७ सूक्ष्माण्यगुलिपर्वाणि, केशास्त्विदशनास्तथा,
चतुःसूक्ष्माणि येषा स्यात्-ते-नरा दीर्घजीविन. ५
कक्षकुक्षिश्च वक्षश्च,-घ्राणस्कधललाटिका,
सर्वभूतेषु निर्दिष्ट, पडुन्नत प्रशस्यते, ६

अगुलीके पोरवे, केश, हाड, और दात जिनके पतले हो-अ
है, लबी उम्र पावे काख, सिकम, छाती, नासिका, स्कध, औ
निलार उचे हो-तो-अछे आराम-चैन मिले,—

पाणिपादतलौ रक्तौ,-नेत्रातानि नखास्तथा,
तालुजिव्हाधरोष्ठौ च, सप्तरक्तोऽर्थवान् भवेत्, ७
उरः शिरो ललाट च,-त्रिविस्तीर्ण प्रशस्यते,
स्वर सत्व च नाभिश्च, त्रिगभीर प्रशस्यते. ८
मुख चार्धशरीरस्य,-सर्वं-वा-मुखमुच्यते,
ततोपि नासिका श्रेष्ठा, श्रेष्ठे तत्रैव चक्षुपी, ९

हाथपावके तलवे, आखोके कोने, नख, तालु, जबान और होठ जिसके लालरगके हो,-वो-एशआराम भोगनेवाला हो,-छाती-मस्तक-और निलार जिसके चौडे हो, उसको-सुखचैन मिले, और इकबालमद हो,-शरीरका-आधाहिस्सा-या-साराशरीर कहो,-मुख -सबशरीरका राजा है,-और उसमेभी-नाक अछा हो-तो-ज्यादा बहेतर हो, नाकसेभी-आलादर्जेपर आखे है, आखोसेही-अछे-बुरेकी पहचान होसकती है,-इसलिये शास्त्रोमे आखोको-रत्न-समान-उपमा दिई, शरीरमे बेशक आखें-रत्नही-है,-आखें नही-तो-कुछभी नही, अवाज-हिम्मत और नाभि-गहेरी होना अछा है,—

५८ न-स्त्री त्यजति रक्ताक्ष,-नार्थः कनकपिंगल,
दीर्घवाहु नचैश्वर्य-न-मासोपचितं सुख,-१०

आखके दोनोतर्फके कोने जिसके लालहो, उसको औरतका सुख मिले, सोने जैसी पिलीआखवालोंको-दौलत मिले, लबेहाथवालोंको -हकुमत और जमीन-जहागिर मिले, ताजे-मोटे-बदनवालोंको हरबातसे आराम मिलता रहे, इसमे कोई-शक-नही.

कनिष्ठागुलिमूलाच्च,-रेखा गच्छति तर्जनीं,
अविछिन्नानि वर्षाणि,-शतमायुर्विनिर्दिशेत्, ११
अगुष्ठोदरमध्यस्थो,-यवो यस्य विराजते,
उत्पन्नभक्षभोगी स्यात्,-स नरः सुखमेधते,-१२

कनिष्ठअगुलीके निचेसे-जो-रेखा तर्जनीअगुलिके मूलतक जाती उसको आयुष्यरेखा बोलते है,-जितनी अगुली-वो-रेखा-

ओलघजाय, एकअंगुलिके पिछे पचीस-पचीस-वर्स लेना, मतांतरसें -कई-आचार्य-वीश वीश वर्से-लेनाभी फरमाते है,-हर-शख्शकी आयुष्यरेखा देखकर उसकी उम्रका अंदाज करना चाहिये, जिसके दोनो हाथोंके अंगुठेमे-जवका-निशान हो,-वो-शख्श आरामतलब-और-पंडित होगा

५९ अतिमेधोतिकीर्तिश्च-विख्यातोतिसुखी तथा,
अतिस्निग्धा च दृष्टिः स्यात्तमल्पायुर्निनिर्दिशेत् १३
वर्तुला चातिगंभीरा, नाभिः पुंसां प्रशस्यते,
उत्तानविरला नाभि', सदा दुःखदरिद्रता, १४

निहायत अकलमंद, बडी इज्जतवाला, बडा आरामतलब-और-अतिस्निग्ध दृष्टिवाला मनुष्य इसजमानेमें-कम-उम्र-पाता है,-सबब-ज्ञानीयोंने पंचमकालमे-समय-समयपर उमदा चिर्जोकी हानि होना फरमाया, जिस शख्शकी नाभि-गोल-ओर गहेरी हो-वो-खानपानसे सुखी रहे, जिसकी नाभि-बहार-निकलीहुई हो,-मुसीबतसें अपना गुजर करे, और रुपये-पैसोंसे-तंग रहे,—

६० आतपत्रं करे यस्य,-दंडेन सहितं पुनः,
चामरं' सहितं वापि,-चक्रवर्त्ती स जायते, १५
स्वस्तिके जनसौभाग्य,-मीने सर्वत्र पूज्यते,
श्रीवत्से वांछिता लक्ष्मी, ग्रामाद्य दामकेन तु. १६
ध्वजवज्रांकुशच्छत्र,-शंखपद्मादयस्तले,
पाणिपादेषु दृश्यते,-यस्यासौ श्रीपतिः पुमान् ,-१७
शक्तितोमरदंडासि-धनुश्चक्रगदोपमाः,
यस्य हस्ते भवेद्रेखा-राजानं तं विनिर्दिशेत् ,-१८

जिसशख्शके हाथमे दंडसहित छत्रका निशान हो, चवर, पुष्करणी वावडी हो,-वो-चक्रवर्त्तीराजाकी पदवी पावे, जिसके हाथमे स्वस्तिकका निशान हो, उसके घर-हमेशा आनंद मंगल बने रहे, जिसके-हाथमे-मछका-निशान हो, उसकी इज्जत बढे, जिसके

श्रीवत्सका निशान हो, उसको दौलत मिले, जिसके हाथमे फूलमा-
लाका निशान हो, उसके-घर-गौ-भैंस-घोडा-वगेरा जानवर बंधे,
जिसके हाथमे धजा,-पताका, वज्र, अकुश, छत्र, शख,-या-पदमका
निशान हो,-वो-राजाधिराज पदवी पावे, और अमलदारी करे,
जिसके हाथमे बरछी, भाला, दड, तलवार-या-धनुष्यका निशान
हो,-वोभी-सलतनत पावे, और अमलदारी भोगे,—

६१ ऊर्ध्वरेखा मणेर्बंधादूर्ध्वगा सातु पचधा,-
अगुष्ठाश्रयिणी शिष्यराज्यलाभाय जायते, १
राजा राजसदृशो वा,-तर्जनीगतया तया,
मध्यमागतयाचार्यख्यातो राज्याय मैन्यपः, २
अनामिका प्रयात्या तु-सार्थवाहो महाधनी,
कनिष्ठागतया मत्या,-तया श्रेष्ठो भवेद् बुधः, ३

मणिबधसे पांच तरहकी ऊर्ध्वरेखा-जो-अगुली और अगुठेतर्फ
जाती है, उनका बयान सुनिये! पहली ऊर्ध्वरेखा,-जो-मणिबधसें
निकलकर अगुठेकी नीचेको-जा-मिले, उसके दोस्त बहुत मिले,
दौलतमद हो, सगीत सुननेका उसको शौख हो, उसके फरमानपर
अमल करनेवाले बहुत हो, और सलतनत पाये, जिसकी दुसरी
ऊर्ध्वरेखा मणिबंधसें निकलकर तर्जनी अगुलीतक-जा-मिले-वो-
राजा-या-दिवान हो, इस तरह जिसकी तिसरी ऊर्ध्वरेखा मणिब-
धसें चलकर मध्यमा अगुलीतक-जा-मिले,-वो-दौलतमद-हो,
फौजका अपसर हो, और बहुतलोग-उसकी-सलाह लेने आवे, अ-
गर-वो-दुनिया छोडकर साधु होजाय-तो-उसको आचार्य पदवी
मिले, जिसकी चतुर्थ-ऊर्ध्वरेखा-मणिबंधसे चलकर अनामिका अगु-
लीतक-जा-मिले,-वो-दौलतमद और इज्जतदार शख्श हो, जि-
सकी पाचमी ऊर्ध्वरेखा मणिबधसे लेकर कनिष्ठा अगुलीतक-जा-
मिले,-वो-धर्मतालीम देनेवाला हो. उमदा इमारत लिखे, और-
खानपानसें सुखी रहे,—

६२ अरेखा बहुरेखा वा,-येषा पाणितल नृणा,
ते स्युरल्पायुषो नि:स्वाः-दु खिता नात्र सशयः ४
मणिबधात्पितुर्लेखा,-करभाद्विभवायुषोः,
रेखे-द्वे-याति तिस्रोपि,-तर्जन्यगुष्ठकातर, ५
येषा रेखा इमातिस्रः-सपूर्णा दोषवर्जिताः
तेषा गोत्रधनायुषि,-त्रिसपूर्णान्यथा-नतु. ६

जिसके हाथमे बहुतसी-फिजहूल रेखा-हो,-या-बिल्कुल-कम-रेखा हो,-वो-अच्छा नही मामुली आदमी होगा, और मुसीबतसें अपना गुजर करेगा, जिसके यशरेखा, विभवरेखा, और आयुष्य रेखा,-ये-तीनों लबी हो, और टुटी फुटी-न-हो,-तो-उसकी इ-ज्जत अच्छी बनी रहे,-उसका-खजाना-तर-रहे, और उम्र लबी पावे इसमे कोई शक नही,-ये-तीनोंरेखा जितनी टुटी-फुटी-या-छोटी हो, उतना उसकों-कम-फल होगा, ऐसा समजो —

६३ जिसकी दाहने हाथकी विभवरेखा अखड हो, टुटी फुटी -न-हो, और-लबी हो-वो-अपने खानदानमे नामीग्रामी होगा, वि-भवरेखासें अगुलीतर्फ जितनी छोटी रेखा निकली हो,-उतने उसके दुश्मन, और जितनी मणिबधतर्फ निकली हो, उतने उसके-मदद-गार होगें —

६४ आयुष्य रेखामेसे जितनी छोटी रेखा विभवरेखातर्फ नि-कली हो, उतनी उस शख्शकों सपदा मिले, और जितनी छोटी रेखा-अगुलीतर्फ निकली हो, उतनी उस शख्शको विपदा मिले

६५ मणिबधसें आयुष्यरेखातक हथेलीकी-बाजुमे जितनी आडी रेखा पडी हो, उतने उस शख्शके बेटा-बेटी-जानना, जितनी-मजकुर रेखा-अखड और साफ हो, उतने उसके बेटा-बेटी-जीते रहेगें, और अखड और साफ-न-हो, उतने उसके सतान वि-नाश होजायगे कितनेक आचार्य-इस रेखाकों-भाइ-बहेनकी रेखा कहते है,—

६६ मणिबंधसें लेकर अंगुठेतककी सबितकके बिचले भागमे हथेलीपर जितनी खडी रेखा हो,-उतने उस शख्शके-भाई-बहेन-होगें, कितनेक आचार्य इन-रेखाकों-पुत्र-पुत्रीकी रेखाभी कहते है,—

६७ हथेलीपर यशरेखाकी दाहनी बाजु-अंगुठेतर्फ-जितनी आडी रेखा गई हो, उतनी-वो-शख्श मुल्कोकी-सफर करे, और फायदा उठावे,

६८ जिसशख्शके दाहनेहाथकी-यशरेखा-अखंड और साफ हो, -वो-मरेबाद स्वर्गकी गति पावे, और जिसकी विभवरेखा अखंड और साफ हो,-वो-मरेबाद मनुष्य गतिपावे,—

६९ जिस शख्शके बाये हाथकी यशरेखा-अखंड-और-साफ हो,-वो-बहिस्तगति भोगकर आया है, ऐसा जानना, और जिसके बाये हाथकी विभवरेखा-अखंड और साफ हो,-वो-मनुष्यगति भोगकर आया है-ऐसा जानना,—

७० जिस शख्शके बायेहाथकी विभवरेखा-अखंड-लंबी-और साफ हो, उसको-एशआराम-मिले,-जिसके बायेहाथमे धजा-या -चंद्रमाका निशान हो, उसको खूबसूरत औरत मिले. किसी शख्शकों-स्त्रीरेखा-मौजूद हो और वो-शख्श अगर दीक्षा लेवे-तो-उसकों-दीक्षाकी हालतमे गुरुभक्ति और धर्मके बारेमे हुकमकी तामील करनेवाली-भक्त-स्त्रीयें-मिले, और अगर उस शख्शकों संतानरेखा मौजूद हो, और-वो-दीक्षा लेवे,-तो-दीक्षाकी हालतमे गुरुभक्ति करनेवाली-और धर्मके बारेमे हुकमकी-तामील करनेवाले -चेले मिले,—

७१ कितनेक आचार्य फरमाते है, मर्दके बाये हाथमें-स्त्रीरेखाके -अग्रभागमे दीक्षारेखा होती है,-रेखाविज्ञानशास्त्री-धर्मरेखा-और-दीक्षारेखाका खयाल करके देखे, फिर धर्मश्रद्धा, ज्ञान, और चारित्रका बयान करे, रेखाचिन्ह-निशान-या-लक्षण-इनसबका

मतलब एक है,-इतना-जरूर है, बहारके लक्षणोंसे अतःकरणके लक्षण ज्यादा फायदेमद होते है, अतःकरणके-लक्षण-सत्व, धैर्य,-या-हिम्मत है,-जो-शख्श हिम्मतबहादूर हो,-वो-हमेशा सुख-चैन-भोगेगा,—

७२ [जैनशास्त्र-उत्तराध्ययनके आठमे अध्ययनकी-टीकामे-पाठ है,-]

अस्थिष्वर्थास्त्वचि भोगाः,-सुख मासे स्त्रियोक्षिषु,
गतौ यान स्वरे चाज्ञा-सर्व सत्वे प्रतिष्ठित, १

जिस शख्शकी हड्डीये मजबूत और वजनदार हो,-वो-दौलतमद होगा, जिसके शरीरकी चमडी मुलाइम हो, उसको एशआराम ज्यादा मिले,-जिसका बदन-ताजा-मोटा हो, हाथपावकी-नर्से-उसकी-न-दिखाई देती हो,-वो-सुखचैनसे-जिदगी-गुजारे, जिसकी आखोंके कोने लाल-तेजदार और खूबसुरत हो, उसको औरतकी तर्फसें सुख मिले, जिसकी चाल अछी हो, उसको सवारीका सुख रहे,-जिसकी अवाज-मीठी-और सुरीली हो, उसकी हकुमत बनी रहे, और-जो-शख्श तकलीफके वख्तभी-हिम्मतबहादूर बना रहे,-वो-हमेशा सुख चैन भोगे,—

७३ [जैनशास्त्र उत्तराध्ययनसूत्रके पनराहमे अध्ययनकी टीकामे-बयान है,-]

चख्खु सिणेहे सुभगो, दतसिणेहे-अ-भोयण मिट्ठं,
तयनेहेण-य-सोख्ख, नहनेहेण होइ परमधण. १

जिस शख्शकी आखोंमे-स्नेह हो,-वो-हमेशा-सौभाग्यवान् बना रहे, जिसके दात-स्निग्ध हो, उसको खानपान अछा मिले,-जिसके शरीरकी चमडी मुलाइम हो, उसको हमेशा आराम-चैन-रहे, और जिसके-नख-लालरगके हो, उसके पास दौलत हमेशा बनी रहे,—

७४ खडे होनेपर जिसके हाथ-गोडेतक-लबे हो,-वो-सुखी

और हिम्मत बहादूर हो, जिसके हाथपावकी अगुलीये लबी हो,-वो -बडी इज्जत पावे, होशियार और दिलका दलेर हो, जिसका निलार उचा हो,-वो-उच पदवी पावे, जिसकी तर्जनी अगुली लबी हो,-वो-तामसी-प्रकृतिवाला, मगर आरामतलब हो, जिसके हाथपावकी अगुलीयें-अणीदार हो-वो-शख्श नसीनेदार हो.—

७५ जिस शख्शके पुरे-(३२) दात हो,-वो-दौलतमद और धर्म पावद होगा, जिसके (३१) दात हो,-वोभी-अछा है, और जिसके (३०) दात हो,-वोभी-बहेत्तर-और-जिसके इससे-कम-दांत हो,-वो-तकलीफसें जींदगी गुजारे,—

७६ जिसके ललाटमे-पाच रेखा-आडी पडी हो,-वो-(१००) वर्स जियेगा, चार रेखावाला (८०) वर्स, तीन रेखावाला (६०)वर्स, -दो-रेखावाला (४०) और एक रेखावाला (२०)वर्स-जियेगा,—

७७ जिस शख्शका-मुख-हमेशा-खुश मिजाज और प्रसन्न रहे, -वो-कभी दुखी-न-होगा, और-आरामतलब-बना रहेगा,—

७८ जिस शख्शके हाथमे कमलका निशान हो, हमेशा सुख चैन भोगे, जिसके हाथमे भालेका निशान हो,-वो-जग करनेमे बहादूर हो,—

७९ जिसके हाथकी-सभी-अगुलीयोंमे-चक्र-हो-वो जैनमुनि -या-राजा हो, नवचक्र हो,-तो-दिवान, आठ चक्रवाला हमेशा दौलतमंद हो, सात चक्रवाला सुखी, छह-चक्रवाला-कामी, पाच-चार-तीन-दो-या-एक चक्रवाला गुणवान् होता है,—

८० जिसके दोनों हाथोंकी अगुलीयोंमे-और-अगुठेमे दाहनेमे दक्षिणावर्त्त और-वामेमे-वामावर्त्त-शंख-हो, वो-हर तरहसे -सुखी रहे,—

८१ जिसके हाथकी अगुलीयोंमे-या-अगुठोंमे-सीपका-निशान हो,-वो-मोहनी कर्मके उदयस तकलीफ पायगा,—

८२ जिसकी अनामिका अगुलीके तिसरे पोरवेसें-कनिष्ठा-अ-गुली-बढ गई हो-वो-दोलतमद और आराम-तलब-होगा, जिसकी मध्यमा अगुलीके तीसरे पोरवेस-तर्जनी अगुली-बढ गई हो,-वो-नसीबेदार होगा,—

८३ जिसके हाथकी अगुलीये खडी करके देखो, अगर आप-समे मिली हुई हो,-वो-शख्श दौलतकों इकट्ठी करे, और कजुस हो, जिसके बीच बीचम अतर पडा हुवा-हो,-वो-दिलका-दलेर-और दौलत सर्फ करनेवाला हो,—

८४ जिसके अनामिका अगुलीके मूलमे कनिष्ठा अगुलीका मूल नीचे हो,-वो-शख्श अकलमद होगा, और इसी तरह जिसके म-ध्यमा-अगुलीके मूलसे तर्जनी अगुलीका मूल नीचेको हो,-वोभी-अकलमद और सभामे व्याख्यान देनेवाला होगा,—

८५ अनामिका अगुलीके नीचले पोरवेमें जितनी आडी रेखा हो, उतनी-वो-शख्श हकुमत भोगे, और जितनी खडी रेखा हो-उतना-वो-शख्श धर्मपर कामील एतकात हो,—

८६ मध्यमा अगुलीके नीचले पोरवेमे जितनी आडी रेखा, और खडी रेखा हो, उतनी उस शख्शको हकुमतमे और धर्मश्र-द्धासें-कमी-हो, अनामिकासे मध्यमाका फल उल्टा कहा है,-क-निष्ठा अगुलीके नीचले-दो-पोरवेमे जितनी-खडी रेखा हो, उतना उस शख्शको सुख चैन बना रहे,—

८७ तर्जनी-मध्यमा-और-अनामिकाके-बीचले पोरवेमे जि-तनी खडी रेखा हो,-उतने उस शख्शके दोस्त हो, और आडी हो उतने उसके दुश्मन हो, तर्जनी अगुलीके नीचले पोरवेमे जितनी खडी और आडी रेखा हो, उतने उस शख्शके अवर्णवाद बोलने-वाले हो, अनामिका अगुलीके-बीचले-और नीचेके पोरवेकी खडी रेखाकों-धर्मरेखामेभी गिनी है,—

८८ मर्दके जैसे बाये हाथके लक्षण देखे जाते है,-वैसे-वामे

हाथकेभी देखना चाहिये, दाहने हाथके लक्षण पुरेपुरा-फल-देयगें, और बामे हाथके लक्षण-कम-फल देयगें, मगर गलत नही.—

८९ बत्तीस लक्षणोंमेंसें-एकभी-लक्षण जिसके हाथमे-या-शरीरमे-साफ हो,-तो-वो-एकही लक्षण तमाम उम्र-फायदा पहुंचाता रहेगा, अगर कोई-कुलक्षण साफ पड गया हो,-तो-वोभी-तमाम उम्रतक बुरा फल पहुंचाता रहेगा,—

९० जो-शख्श अपने हाथकी अगुलीयोंसे (१०८) अगुल उचा हो,-वो-तेजस्वी-होगा, जिस शख्शकी उचाई (९६) अंगुल हो,-वो-मध्यम, और-जो-शख्श (८४) अगुल उचा हो,-वो-मामुली शख्श होगा, और इससें-कम-उंचा हो,-वो-तकलीफके साथ-जींदगी गुजारेगा, शरीरकी उचाई मापनेकी तरकीब इस तरह हैं,-अवल एक-लंबी डोर लेना, और खडे होकर दाहने पावके अगुठेसें थोटी दबाकर मस्तकतक लेजाना, निलारपर जहांसे केशोंकी शुरूआत हुइ हो, वहांतक डोरसे मापना और उस डोरमे साहीसे निशान करलेना-फिर उस डोरकों अपनी अगुलीयोंसें इस तरह माप देखना कितनी अगुल प्रमाण-डोर लंबी हैं,-मापते वख्त-हाथकी अगुलीयोंके बीचले पोरवेसे मापना, नीचले पोरवेसे मापोगे-तो-माप ठीक-न-होगा, इसी तरह उपरके पोरवेसे मापोगे-तोभी-माप बराबर-न-होगा, मापनेकी तरकीब गुरुलोगोंसे सिखना चाहिये,—

९१ नाकके दोनों छिद्र छोटे होना उमदा है, जिसका नाक हमेशां सुका बना रहता हो,-वो-लंबी उम्र भोगेगा, जिसके-कान-नाक-हाथ-पांव-और-आखे लंबी हों, उसकी-उम्र-लंबी जानना,—

९२ जिसकी-आखे-कमल समान खुब सुरत हो, दोनों कोने लाल,-कीकी-श्याम और बीचमे सफेदी होना-यह-लक्षणवती आंखोंके निशान है,-हाथीके नेत्रोंकी तरह जिसके नेत्र हो,-वो-फौजका अफसर हो, मोरकी आंखों जैसी आंखवाला शख्श मामुली

तौरसें गुजर करनेवाला हो, और माजरी आखवाला आपमतलवी होता है,—

९३ जिसके बदनका-रग-हीरा-मानक-मोती-सोना-या-हर-ताल जैसा चमकदार हो,-वो-नसीबेदार और सुखचैन भोगनेवाला होगा, जिसके बदनका-रग-प्रवाल-या-चपेके जैसा हो, बडा इक बालमद-शख्श होगा,—

९४ चाहे-मर्द हो-या-औरत मुबारक चेहरा और खूबसुरती पाना बडी तकदीरके ताल्लुक है,—

९५ जिसकी कुदरती अवाज-सारस, कोकिल, चकवाक, क्रौंच हस, वीणा, और सारगीके स्वरकी तरह मीठी हो,-वो-सुखी होगा और-एश-आराम-करेगा. जिसकी कुदरती अवाज बरसादकी ग र्जना जैसी-बुलद हो,-बडा-नसीबेदार होता है,-मीठी-और-बु-लद अवाजवाला शख्श सुखचैन भोगे,—

९६ जिस शख्शकी चाल हसकी-तरह, हाथीकी सिंह या-वृष भकी तरह अछी हो,-वो-हरजगह इज्जत पायगा, जिसके बदनमें पित्तप्रकृति-ज्यादा हो,-वो-चाहे मर्द-हो,-या-औरत अकलमद धर्मपावद और ज्ञानी होगा,—

९७ तीर्थंकर-चक्रवर्त्तीके शरीरमे (१००८) लक्षण होते हैं,-वासुदेव, प्रतिवासुदेव और बलदेवके शरीरमें (१०८) और उनसें नीचेके दर्जेवालोंके-शरीरम (३२) लक्षण होते हैं,-आजकल-जिनके -शरीरमे-पाच-विजय लक्षण मिले, तोभी अछे समजो,—

९८ जिसके हाथम तराजुका निशान हो,-वो-गेरमुल्कोंकी स-फर करे और दौलत मिलावे जिसके हाथमे अष्टकोनका निशान हो,-वो-दौलतमद और खुशनसीब-होगा,—

९९ जिसके हाथमे-कुडलका निशान हो,-वो-दौलतमद शख्श होगा, जिसके हाथमें सर्पका निशान हो,-वो-तामसी प्रकृतिवाला होगा.—

१०० अगुठे और अगुलीयोंमें-जो-तीनतीन पोरवे होते है, और उनके नीचमे जो-जवके आकार जैसे डवल-कापे-रहते है,-वे -दशसें कमहो,-तो-ठीक नही, वाराहो-तो-दौलतमद, पनराहो-तो-ज्यादा दौलतमद, और अठारा-वीश-या-पचीसतक हो-तो-ज्ञानी और, आरामतलव होगा

१०१ जिस शख्शके हाथपर थोडे थोडे-केश-उगेहुवे हो,-वो-शख्श सुखचैन भोगेगा, औरतके-हाथपर-अगर केश उगेहुवे-हो-तो-अछा नही, जिसके हाथमे-नसें-न-दिखाई देती हो, मासकरके पुष्ट हो-तो-शख्श एश-आराम भोगे, जिसके हाथका अगुठा छोटा -हो-तो-बहेत्तर नही, अगुठेका पहला-पौरवा-लबा हो,-वो-शख्श धर्मपर कामीलएतकात रहे,-और ईसीतरह दुसरा पोरवाभी-लबा-होना अछा है.—

१०२ जिसशख्शकी पाचो अगुलीयोंके सीरेपर चक्रका निशान हो-वो-दुनियामें ईज्जतपावे, और उसकी हकुमत वनी रहे, जिसकी तर्जनी अगुलीके सीरेपर चक्र हो, उसके वडे वडे दोस्त हो, और उनसें-फायदा-मिले, मगर दक्षिणावर्त्त होनाचाहिये, वामावर्त्त होगा,-तो-कमफल-करेगा, ईसीतरह जिसके मध्यमा अगुलीके-सीरेपर-चक्र हो, उसको जमीनसें-फायदा-मिलेगा, ईसीतरह जिसके-अनामिका अगुलीके सीरेपर चक्र हो,-वो-विद्वान् हो, तरह-तरहके इल्मका जानकार हो, और-जो-कामकरना-शुरु करे उसमें फतेह पावे, अगर-वो-दुनियाको छोडकर दीक्षा-इख्तियारकरे-तो -राजाओंकाभी-धर्मगुरु वने कम देगा.—

१०३ जिसकी कनिष्ठा अंगुलीके-सीरेपर चक्र-हो,-वो-मुल्कोंकी-सफर करे, और दौलत पावे, जिसके पाचो-अगुलीयोंमे-शख हो,-तोभी-अछा है,-जिसकी पाचों अंगुलीयोंमें-सीपहो,-वो-शख्श कंजुस हो, जिसके दशो अगुलीयोंमे-चक्र-हो,-वो-राजा-या -योगिराज होगा,

१०४ जिसके पावमे-चक्रका-निशान हो,-वो-दौलतमद और दिलका-दलेर होगा, जिसके पावमे अगुठेसें निकलकर-नवअगुल-लंबी ऊर्ध्वरेखा पानीतक चलीगइ हो,-वो-राजा हो,-या-योगी हो.

१०५ जिसके पावमे धजाका निशान हो, उसकी दुनियामें-इज्जत बढे, जिसके पावमे-शखका-निशान हो-वो-वैराग्यपाकर साधु-हो जाय, जिसके पांवमें-चद्रमाका-निशान हो,-वो-देवकी तरह पूज नीय हो,-जिसके पावमे त्रिशूलका निशान हो,-वो-दुनियाछोडकर दीक्षा इख्तियार करे, मगर उससे पालन-होसके नही. जिसके पावमें मोरका निशान हो-तो-अछा है, ईरादे उसके पार पडते रहेंगें, जिसके पावमे काचवेका-निशान हो,-वो-जलमे तेरना सिखे, और समुदरकी मुसाफरी करे,

१०६ जिसके पावमें अष्टपाखडीका-कमल हो,-वो-राजाधिराज हो, और अमलदारी करे, जिसके पावम अगुठेके नीचे-जवका-निशान हो,-वो बडा-जग-बहादूर और दौलतमद होगा, जिसके पावमे पदमका निशान हो,-वो-राजाधिराज-या-राजरिषि होवे, जिसके पावमे धजाका निशानहो,-वो- दुनियामे-इज्जत पावे, और मशहूरशरश हो, जिसके पावमे छत्रका निशाल हो,-वो-छत्रपति-राजा-होकर अमलदारी करे, जिसके पावमे धनुष्यका निशान हो,-वो-हमेशा दुसरोसें-लडता रह,-जिसके पावम सर्पका निशान हो, उसका-मरना -जहेरसें-होगा

१०७ जिसके पावमे स्वस्तिकका निशान हो,-वो-दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार करे,-धर्माचार्य बने, और दुनियाकों तालीम-धर्मकी देवे, जिसके पावम-वज्र-हल-या-कमलका निशान हो,-वो राजा-या-निर्ग्रंथमुनि होवे, जिस शरशके पावमे-चक्रका निशान हो, उसके बडेभाग्य समजना

१०८ यशरेखा, विभवरेखा, और आयुष्यरेखाकों-अवल पहचा-

नना चाहिये, हस्तरेखा, नजुम, शकुन, गौतमकेवली, और-रमल, ब-जरीये इनके आइंदा जमानेका हाल बयान करसकतेहो.

१०९ जैसे किसी शख्सको पूर्वकृत-कर्मके उदयसे बीमारी पेश हुइ,-वो-जरुर भोगनाचाहिये, मगर बीमारीकी हालतमे बुरे-ईरादे किये,-या-दुसरोंपर गुस्सा किया-तो-नये-पापकर्म बधेंगे,-और फिर आगेको तकलीफ होगी, अगर बीमारीकी हालतमे किसीपर गुस्सा नही किया-समताभावसें-बीमारीको सहन किइ-तो-नये-पापकर्म-न-बधेंगे, और आगेकों तकलीफ-न-होगी.

११० फर्ज करो! पूर्वकृत-कर्मके-उदयसे किसी शख्शने दौलत पाइ, मगर उसमे शब्र नही किया, और खर्चा-बेशुमार बढा-दिया, आखिरकार पस्ताना होगा, अगर अपनेपास एकहजार रुपये मौजूद है,-तो-उसमेंसे आधे खर्च-करना और आधे-जमा-रखना, -कर्जदार बनकर खर्च करना और लोभ पडकर किसीको दौलत देदेना अकलमदोंका काम नही.

१११ राजासाहब, दिवान, नायब-दिवान, शेठ,-साहूकार, वकील, बारीष्टर,-या थियेटर कपनीके मालिक बनना, और उनमे फतेहमद होना तकदीरके ताल्लुक है, मगर सब काममे आमदनी देख-कर खर्च करना-ईसीका नाम चतराइ है, न-कजुस-बनो,-और-न -ऐसे दलेर बनजाओ. जिससे अपनेकों-कर्जदार होना पडे, और रज-उठाना पडे

११२ हस्तरेखा देखनेवाला-काबिलशख्श-दोनो हाथोंकी रेखा-देखकर फल बयान करे,-मर्दके-दाहने-और-औरतके बाये हाथकी रेखा ज्यादा फलदेनेवाली कही जिसका निलार-अर्धचद्रमाके आकार हो,-वो-शख्श दौलतमद और जमींदार होगा.

[बयान-औरतोंकी हस्तरेखाका -]

११३ जिस औरतके जीवने-पूर्वजन्ममे-देव-गुरु-धर्मकी खिद-

मत किई हो, तीर्थोंकी जियारत और व्रत-नियम किये हो,-वो-निहायत-खूबसुरत और कमाले-हुस्न-पाती है,-जिसने पूर्व-जन्मम धर्म-पुन्य किया नही, जिवोपर रहम किई नही और-न-तीर्थोंकी जियारत किई, वो-खूबसुरती और कमाल-हुस्न नही पाती,

११४ जिस औरतके हाथ-पावके तलवे लाल और मुलाइम हो, -वो-तकदीरवाली होती है, जहा जायगी आराम पायगी,

११५ जिस औरतके शरीरका रग-चपके फुल-या-सोने जैसा चमकीला हो,-या-गोरे-रगकी हो,-वो-राजाकी रानी-या-दौलतमद शख्शकी-औरत होगी,—

११६ जिस-औरतके सीरके-केश-लवे और शाम हो, निहायत उमदा है,-जिसके शरीरपर केश थोडे उगे हुवे हो, अछा है,—

११७ जिस औरतकी अवाज मीठी और सुरीली हो,-वो-हमेशां आरामतलब बनी रहेगी जिस औरतके पसीनेमे-बदबू-आती हो-वो-दुखसे जींदगी तेर करे, पद्मनी-औरतके शरीरम-कमल फुलकी तरह खूशबू आती है,-मगर आजकल पद्मनी औरत मिलना मुश्किल है,—

११८ जिस औरतके-होठ-लाल और पतले,-दात-खूबसुरत और-आखे-कमल जैसी हो,-वो-राजाकी रानी-या-अछे घरानेकी औरत-बने,

११९ जिस औरतका-नाक-तोतेकी-चञ्चुसमान अणीदार-और-दोनों तर्फके छिद्र छोटे हो,-वो-दौलतमद और धर्मपाबद बनी रहे,-माजरी-आखवाली औरत दगाबाज होगी, जिस औरतका निलार अर्द्ध चद्राकार-और-मस्तक गोल हो, उसके घर-नोकर चाकर बने रहे, और उनपर हुकम करे,—

१२० जिस औरतकी-भ्रू-लबी, नाभि-गहरी, सिकम खूबसुरत और उसम-त्रिवली-पडती हो, निहायत उमदा लक्षण है,-ऐसे लक्षणोवाली औरत रानी हो,-या-अछे घरानेकी औरत बने,

१२१ जिस औरतका बोलना दुसरोंको सोहावे नही,-या-सख्त जबान बोले,-जो-अछी नही, जिसकी बोली मीठी हो-सुखचैन-भोगे-जो-औरत दिलकी दलेर-हो, पापकर्मसें परहेज करनेवाली हो, और जिमका धर्मपर कामील-एतकात-हो, वो-कभी-तकलीफ-न-पायगी, और जहा जायगी इज्जत हासिल करेगी,—

१२२ अथात' संप्रवक्ष्यामि, स्त्रीणा लक्षणमुत्तम,
कीदृशी वरयेत् कन्या, कीदृशी परिवर्जयेत् १
पूर्णचद्रमुखी कन्या, बालसूर्यसमप्रभा,
विशालनेत्रा रक्तोष्ठी,-सा-कन्या-लभते सुख, २
अकुश कुडल चक्र,-यस्याः पाणितले भवेत्,
पुत्र प्रसूयते नारी, नरेंद्र लभते पति, ३

औरत कैसी विहावना कैसी नही विहावना उसका बयान, चद्रमाकी तरह जिसका खुबसुरत मुख हो, बाल-सूर्य-समान जिसके शरीरकी प्रभा हो, आखे-खूबसुरत और-होठ-जिसके लाल हो, ऐसे लक्षणवाली-औरत विवाहना चाहिये,-जिसके हाथमे अकुशका निशान हो, कुडल-या-छत्रका निशान हो, ऐसे लक्षणवाली राजाकी रानी होती है, और पुत्र-सतान होनेसे उसका मानमरतना बढता है,

१२३ मदिर पद्मचक्र वा,-पूर्णकुभ च तोरण,
यस्या. करतले छत्र, राजपत्नीत्नमाप्नुयात् १
मृद्वगी मृगशावाक्षी,-मृगग्रीवा मृगोदरी,
हसतुल्या गतिर्यस्याः, सा नारी नृपवल्लभा, २
यस्याः सकुतले केशा, मुख च परिमडल,
नाभिश्च दक्षिणावर्त्ता, सा नारी रतिमाप्नुयात्, ३

जिस औरतके हाथपर-मदिर, पद्म, चक्र, कलश-या-तोरणका निशान हो,-वो-राजपत्नी बने और सुखचैन भोगे, जिस औरतका शरीर मुलाइम, हिरनके नेत्रसमान जिसके नेत्र हो, गर्दन और सिकम जिसके अछे लक्षणवाले हो, हसकी तरह उमदा चाल चले,-वो

-राजाके शाथ विनाही जाय,-या-दौलतमद-साविंद मिले, जिस औरतके-केश-शाम और मुलाइम हो, मुहगोल और-नाभि-जिसकी दक्षिणावर्त्त हो,-वो-आरामतलब बनी रह

१२४ यस्याश्च हसमानाया,-ललाटे स्वस्तिको भवेत्.
वाहनाना सहस्राणा-माधिपत्यं च दृश्यते, १
वामपार्श्वे गले वाथ, स्तनयोर्लाछन भवेत्,
मसक तिलकं चापि, सुखी भवति सा वधूः, २
अल्पस्वेदा दभ्ररोमा,-निद्राभोजनदुर्बला,
गात्रेभ्यो-न च-रोमाणि,-स्त्रीणा लक्षणमुत्तम,-३

जिस औरतके हसते वख्त-निलारमे स्वस्तिकका आकार बन जाता हो, उसकों सवारीका सुख रहे, म्याने-पालखी-रथ-बग्गी-घोडे -या-मोटार वगेरा सवारी उसके घर बनी रहे, कभी पावसे चलनेका काम नही, जिस औरतकी गर्दनपर-स्तनपर-या-बायीतर्फ शरीरमे किसीजगह तील-मसा-या-लहसन पडा हो,-वो-हमेशा आराम चैन भोगे, और नोकर-चाकर उसके पास बने रहे, जिस औरतकों पसीना-कम-आताहो, शरीरपर-केश-थोडे हो, नींद थोडी-खान पान थोडा-और मिलनसारस्वभाववाली हो,-वो-दौलतमद साविंद पायगी और हमेशां सुशमिजाज बनी रहगी

१२५ यस्यास्तिलो मसे जघे,-रोमसौ-च-पयोधरौ,
पृष्ठोपरि च रोमाणि,-शीघ्र वैधव्यमादिशेत्,-१
अतिदीर्घा अतिह्रस्वा,-अतिस्थूला कृशा तथा,
अतिकृष्णा च रक्ता च-तादृशी वैरकारिणी, २

जिस औरतके जाघपर-केश-उगे हो, इसीतरह छातीपर और पीठपरभी-केश उगेहो,-वो-खाविंदका-सुख-कम-पावे और जल्द-बेवा -होजाय, बहुत उची औरत-या-बहुत नीची औरत, बहुत जाडी, बहुत पतली,-या-बहुत काली औरत-ठीक नही, ज्ञानियोंका फरमान है, अछे लक्षणपाना पूर्वजन्मके पुन्यके ताल्लुक है —

१२६ काकस्वरा काकजंघा-या-नारी घर्घरस्वरा,
लंबोष्ठी लंबदशना,-सा-कन्या परिवर्जयेत्-१

[स्रग्धरा-वृत्तम्]

पीनोरू-पीनगण्डा-समसित [illegible] दशना-पद्मपत्रायताक्षी.—
बिंबोष्ठी-तुंगनासा-गजपति [illegible] गमना-दक्षिणावर्त्तनाभिः,—
स्निग्धांगी चारुसुभ्रू पृथुकटि [illegible] जघना-सुस्वरा चारुकेशी,
भर्त्ता तस्याः क्षितीशो-भर्त्ता [illegible] च सुभगा-पुत्रयुक्ता च नारी, २

कौवेके अवाज जैसी अवाजवाली [illegible] औरत अछी नही, बेसुरे अवा-
जवालीभी ठीक नही, बाहे-मोटे [illegible] होठवाली और लंबे दांतवाली
औरतभी-बेहत्तर नही जिस औरतो [illegible] पूर्वजन्ममे-दान-पुन्य-किया
नही इसजन्ममें अछे लक्षन नही पा [illegible] ते, और तकलीफसें जींदगी
गुजारते है,-जिस औरतका-शरीर [illegible] -ताकतवर हो, जिसके दांत-खूब-
सुरत, कमलसमान-उमदा-नेत्र,-हो [illegible] ठ-लाल, तोतेकी चांच जैसी
नाक, दक्षिणावर्त्त नाभि, हाथीकी चाल [illegible] जैसी उमदा चाल, नाभि दक्षि-
णावर्त्तदार, मगर मुलाइम,-भ्रू-लंबी [illegible] और अवाज जिसकी सुरीली हो.
ऐसे लक्षनवाली औरत-रानी-बने [illegible] और सुखचैन भोगे, पुत्रसंतान
होनेकी वजहसे उसका मान-मरत [illegible] बा बढे, और आरामसे जींदगी
गुजारे-ये-सब लक्षन-उमदा-औरतके होतेहै,—

१२७ जैसे मर्दके दाहने अंगके [illegible] लक्षण अछे, औरतके बाये अंगके
लक्षन अछे, जिस औरतके निलारमें [illegible] बामीतर्फ छोटासा तिल हो,-
वो इज्जत इकबाल पायगी, जिस औरतके हाथमें चक्र, धजा, पताका,
छत्र, मत्स्य, हाथी, घोडा, रथ, पर्वत, मछली, महेल, कलश, पद्म,
स्वस्तिक, कमल, और फुलमालाका-निशान हो,-वो-दौलतमंद हो,
सुख-चैन-भोगे, और दुनियामें उनकी-इजत घनी रहे,—

१२८ कोयलकी अवाज जैसी मीठी अवाजवाली-औरतके-
बडे भाग्य समझना, जिस औरतके पांवकी तर्जनीअंगुली अंगुठेसें लंबी

हो,-चो-खाविंदके हुकममें-न-चले, जिस औरतकी नाभि बहारनिकली हुइ-हो,-उसको खाविंदका म सुख-कम-मिले, जिस औरतके पावमे सात अंगुल लबी-उर्द्धरेखा-हो-वो-रानी हो,-या-उसकों दौलतमद खाविंद मिले, जिस औरतके बत्तीस दात एकसरीखे खूबसुरत हो,-उसकों-हमेशा उमदा खाना मिले, जिस औरतके-गलेमेंतीन-आडीरेखा पडी हो,-वो-खुशनसीब-और आरामतलब बनी रहे,—

१२९ अगविद्यानिमित्तानामा-अष्टानामपि गीयते,
तस्या'शुभाशुभ ज्ञापन-तीर्थंकृद्भिर्निवेदित. १
दर्शनात्स्पर्शनाचापि,-तथा रेखाविमर्शनात्,
हस्तज्ञान त्रिधा प्रोक्त,-पुरातनमहर्षिभिः २

अष्टाग निमित्तमें अगविद्या निमित्त सबसें बडा फरमाया, और उसका ज्ञान तीर्थंकर देवोने जैनशास्त्रोंमें बयान किया, हस्तरेखा देखनेसें-स्पर्शकरनेसे-और देखकर उसके भलेबुरे नतीजेपर खयाल करनेसें तीन तरीके ज्ञानीयोंने बयान किये, आलादर्जेका निमित्त ज्ञानी उसकों-सोच-समजकर बयान करे, निमित्त शास्त्रोंका फरमान है,-निमित्त ज्ञानीके सामने-खाली हाथ-जाकर-पुछना नही, जैसी अपनी ताकात हो, पाच रुपये-दश रुपये-या-सोना महोर-और फल-फुल उनके सामने रखकर पुछना चाहिये.—

१३० अनामिकान्त्यरेखाया, कनिष्ठा स्याद्यदाधिका,
धनवृद्धिस्तदा पुसा, मातृपक्षो बहुस्तथा, १
मध्यमाग्रांत्यरेखाया,-अधिका यदि तर्जनी,
प्रचुरस्तत्पितु' पक्ष,-श्रियश्च विपदोन्यथा, २
मध्यमाया तु दीर्घाया,-भार्याहानिर्विनिर्दिशेत्,
अनामिकाया दीर्घाया विद्याभोगी भवेन्नर', ३

जिस शख्सकी अनामिका अगुलीके अखीरके पोरवेसें कनिष्ठा

अगुली बढगई हो, वो-शख्श दौलतमंद होगा, और उसकों माताकी तर्फसें ज्यादामदद मिलती रहेगी, जिस शख्शकी मध्यमा अगुलीके अखीरके पोरवेसे तर्जनी अगुली बढगई हो, वोभी दौलतमंद होगा, और उसकों वालिदकी तर्फसें ज्यादा मदद मिलती रहेगी, जिस शख्शकी मध्यमा अगुली ज्यादा लंबी हो,-उसकों औरतकी तर्फसें -हानि-उठाना पडे,-मध्यमा अगुली-सबमे-लंबी होती है,-मगर -यहा-मान प्रमाणसें ज्यादा लंबी हो,-उसकी बात है,-जिसकी अनामिका अगुली-लंबी हो,-वो-शख्श-इल्मदार और इल्मकेही-जरीये आरामसें जींदगी-तेर-करे,—

१३१ अनामिका पर्व-यदा-विलंघते, कनीनिका-वर्षशतं सजीवती।
नवत्यशीतिर्विगमे च सप्ततिः समानभावे खलु पष्टि जीवित्त, १

जिस शख्शकी अनामिका अगुलीके अखीरके पोरवेसें कनिष्ठांगुलि चार-जव-जितनी उची हो,-वो-(१००) वर्सतक जीयेगा, तीन जव-जितनी उंची हो,-वो-(९०) वर्स,-दो-जव-प्रमाण उंची हो, -वो-(८०) वर्स, एक-जव-जितनी उची हो,-वो-(७०) वर्स, और बराबर हो-तो-(६०) वर्स जीयेगा, इसी तरह जितने जव-प्रमाण नीची हो, पचास, चालिश, तीस, वगेरा वर्स-बयान करना,-रेखा विज्ञान-शास्त्री-इस बातकों सोचकर बयान करे,—

[बयान-हस्तरेखाका खतम हुवा]

[बयान-उत्पात-निमित्त,]

१ जब दुनियादारोकी तकदीर कमजोर होती है, अनहोते बनाव बनते है, इन्ही अनहोते बनावोंका दुसरा नाम उत्पात कहते है,-जो-जो-उत्पात आमलोगोंके लिये काबिल जाननेके है-इसमे बयान किये जायगे, उत्पात होनेसें क्या-क्या-फल होगा? उसकी तपसील इसमे दिई जायगी,-बिजलीके होंनेसें कितने कोशतक असर

हो,-वो-खाविंदके हुकममे-न-चाले, जिस औरतकी नाभि बहारनिकली हुइ-हो,-उसको खाविंदका सुख-कम-मिले, जिस औरतके पावमे सात अगुल लबी-उर्द्धरेखा-हो-वो-रानी हो,-या-उसकों दौलतमद खाविंद मिले, जिस औरतके बत्तीस दात एकसरीखे खूबसुरत हो,-उसकों-हमेशा उमदा खाना मिले, जिस औरतके-गलेमे-तीन-आडीरेखा पडी हो,-वो-खुशनसीन-और आरामतलब बनी रहे,—

> १२९ अगविद्यानिमित्तानां-अष्टानामपि गीयते,
> तस्याःशुभाशुभ ज्ञानं-तीर्थकृद्भिर्निवेदित. १
> दर्शनात्स्पर्शनाच्चापि,-तथा रेखाविमर्शनात्,
> हस्तज्ञान त्रिधा प्रोक्त,-पुरातनमहर्षिभिः २

अष्टाग निमित्तमे अगविद्या के निमित्त सबसें बडा फरमाया, और उसका ज्ञान तीर्थंकर देवोने जैनशास्त्रोंमे बयान किया, हस्तरेखा देखनेसें-स्पर्शकरनेसें-और देखकर उसके भलेबुरे नतीजेपर खयाल करनेसें तीन तरीके ज्ञानीयोने बयान किये, आलादर्जेका निमित्त ज्ञानी उसकों-सौच-समजकर बयान करे, निमित्त शास्त्रोंका फरमान है,-निमित्त ज्ञानीके सामने-खाली हाथ-जाकर-पुछना नही, जैसी अपनी ताकात हो, पाच रुपये-दश रुपये-या-सोना महोर-और फल-फुल उनके सामने रखकर पुछना चाहिये.—

> १३० अनामिकान्त्यरेखायां, कनिष्ठा स्याद्यदाधिका,
> धनवृद्धिस्तदा पुसां, मातृपक्षो बहुस्तथा, १
> मध्यमाप्रांत्यरेखायां,-अधिका यदि तर्जनी,
> प्रचुरस्तात्पितु' पक्षः,-श्रियश्च विपदोन्यथा, २
> मध्यमायां तु दीर्घायां,-भार्याहानिर्विनिर्दिशेत्,
> अनामिकायां दीर्घायां विद्याभोगी भवेन्नरः, ३

जिस शख्सकी अनामिका अगुलीके अखीरके पोरवेसें कनिष्ठा

अगुली बढगई हो, वो-शख्श दौलतमद होगा, और उसकों माताकी तर्फसें ज्यादामदद मिलती रहेगी, जिस शख्शकी मध्यमा अगुलीके अखीरके पोरवेसें तर्जनी अगुली बढगई हो, वोभी दौलतमद होगा, और उसकों वालिदकी तर्फसें ज्यादा मदद मिलती रहेगी, जिस शख्शकी मध्यमा अगुली ज्यादा लबी हो,-उसकों औरतकी तर्फसें -हानि-उठाना पडे,-मध्यमा अगुली-सबमे-लंबी होती है,-मगर -यहा-मान प्रमाणसे ज्यादा लबी हो,-उसकी बात है,-जिसकी अनामिका अगुली-लबी हो,-वो-शख्श-इल्मदार और इल्मकेही-जरीये आरामसें जींदगी-तैर-करे,—

१३१ अनामिका पर्व-यदा-विलघते, कनीनिका-वर्षशत सजीवती।
नवत्यशीतिचिगमे च सप्ततिः समानभावे खलु षष्टि जीवित, १

जिस शख्शकी अनामिका अगुलीके अखीरके पोरवेसें कनिष्ठागुलि चार-जव-जितनी उची हो,-वो-(१००) वर्सतक जीयेगा, तीन जव-जितनी उची हो,-वो-(९०) वर्स,-दो-जव-प्रमाण उंची हो, -वो-(८०) वर्स, एक-जव-जितनी उची हो,-वो-(७०) वर्स, और बराबर हो-तो-(६०) वर्स जीयेगा, इसी तरह जितने जव-प्रमाण नीची हो, पचास, चालिश, तीस, वगेरा वर्स-बयान करना,-रेखा विज्ञान-शास्त्री-इस बातकों सोचकर बयान करे,—

[बयान-हस्तरेखाका खतम हुवा]

[बयान-उत्पात-निमित्त,]

१ जब दुनियादारोंकी तकदीर कमजोर होती है, अनहोते बनाव बनते है, इन्ही अनहोते बनावोंका दुसरा नाम उत्पात कहते है,-जो-जो-उत्पात आमलोगोंके लिये कावील जाननेके है-इसमें बयान किये जायगें, उत्पात होनेसें क्या-क्या-फल होगा? उसकी तपसील इसमे दिई जायगी,-विजलीके होनेसे कितने कोशतक असर

होगा, और गर्जना होनेसें कितनी दूरतक उसकी अवाज सुनाई दे, -वगेरा केफीयत इसमे दिई है,—

२ जिस मुल्क-शहर-या-जगलमें उत्पातका होना देखो ! यकीन करलो ! इस जगह बुरे दिनोंकी निशानी है,-जिस शहरके दरवजे-या-देवमदिरके शिखरपर विजली गिरे वहा-छह-महिनेमें दुश्मनका-जोर-बढे,-जिस मुल्कमे नदीयोंका पानी जिस तर्फ बहता हो, बदलकर उल्टा-बहने लगजाय, वहा एक वर्समे अमलदारी-रद -बदल हो,—

३ जहा देवमूर्ति हसने लगे,-या-रोती हुई दिखाई दे, सिंहासनसें आपही नीचे उतर जाय,-वहा-राजाओंमे लडाई हो, और मुल्क बरबाद होजाय, जहां दिवारपर बनी हुई चित्रामकी पुतली रोने लगे, हसती हुई दिखाई दे-या-भ्रुकुटि चढाकर गुस्सा करे, वहां गदर मचे, लोगोंकों घर छोडकर भागना पडे, और मुल्क बरबाद होजाय,—

४ जहा आधीरातकों काक पक्षी बोले, वहां दुकाल पडे, और लोगोंकों बुरे दिन पेश हो,-चारघडी रात रहते वख्त-काक-बोलतेही है,-वो-वख्त-यहा शुमार नही करना, जिस मुल्कके राजेका-डका-निशान लडाइमे जाते वख्त विना सबब टुट जाय, उसकों लडाइमे शकिस्त हो, जहा देवमदिरके-या-राजाके चवरसें विना आतीशके आगके अगारे झरने लगे, वहां टटेझगडे होकर बहुतोंका नुकशान हो—

५ जहां-दरख्तोंसें लोहीकी धारा छुटे, वहा दगे-फिसाद बढे, और लडाई हो, जहा राजाके छत्रमे आग लगे, वहा राजद्रोह पैदा हो, जिस राजाके कोठार-या-शस्त्रशालामसे विदून आगके-धुआं-निरमने लगे, वहा लडाई और दगे-फिसाद बढे, जहां दरख्तोंमेंसें दूध, घी,-या-सहेतकी धारा छुटे, वहा लोगोंमे बीमारी पैदा हो,

और बुरे दिन-पेश-हो, जिस उत्पातका फल-छह-या-बारा महि-नेमें-न-हुवा,-वो-उत्पात गलत समजना,—

६ जहा देवमूर्ति अचानक टुट जाय,-या-आंखोंसें-आसु गिरे, पसीना आजाय-अगर मुखसें बोलना दिखाई दे, उस मुल्कके राजा साहबका-और-लोगोंका नुकशान हो और-आफत आवे,—

७ देवमदिर, राजमहेल, धजापताका-या-तोरण, आगसें-या-विजली गिरनेसें जल उठे-वहा-बुरे दिनोंकी निशानी है, जहां विना अग्निके धुनेका निकलना, आसानसें धूल गिरना,-या दिन होतेभी विना सवव अंधेरा होजाना, बुरे दिनोंकी निशानी है,-रातकों विना वारीश-या-वदलके आस्मानमे तारे-न-दिखाई-दे, और दि-नमे दिखाई-दे,-वो-ठीक नही,-जहा-दरख्तोंमेसे अचानक रोने जैसी-या-बोलने जैसी अवाज निकले-अछा नही, बुरे दिन-पेंश होगें, दरख्तोंके उत्पातका-फल-अंदाज दश महिनेमें मिलना चाहिये, अगर नही मिला-तो-गलत समजना,—

८ जहा आसानसें लोही-चर्वी-मांस-या-हड्डियोंकी वारीश हो,-वहा-किसी तरहकी बीमारी फैले, जिस जगह आसानसें को-लसे-या-धूल वरसे,-तो-उस शहरके लोगोंकों-आफत-पेंश हो,—

९ जहा किसी नदीमे लोही, मास, या-तेल वहता दिखाई दे,-तो-उसके आसपास वसनेवालोपर दुश्मनोंका-जोर-वढे, किसी कुवे-मेसें अग्निकी ज्वाला-या-धुआ निकलता दिखाई-दे-या-गाना वजाना सुनाई दे-तो-उसके इर्द गिर्द वसनेवालोंमे विमारी फैले,—

१० विजलीका होना (८०) कोशतक दिखाई देता है,-और आस्मानकी गर्जना (१००) कोशतक सुनाई देती है,-जमाने पेस्तरके पुष्करावर्त्त-मेघ-वरसते थे, उसके-पानीकी तरावटसें बारा वर्सतक जमीन-तर-वनी रहती थी, आजकल-वैसे-वरसात रहे नही, जैसा वख्त है,-वैसे-वरसात खेती-फल-फुल वगेरा पैदा होते है,- वर-

सात होते वख्त-मोरका बोलना-बहेत्तर है, जमाना अछा हो और लोग-चैन-करे,—

११ लडाइकों जाते वख्त राजासाहबका-मुकुट-हार-या-दुसरा गेहना टुट जाय तो-उनकी फतेह-न-होगी, जगलके बहुतसें जानवर-अचानक-शहरमें आजाय-तो-ठीक नही, आफत पेश होगी, जिस जगहके कुवोका मीठा पानी अकस्मात-खट्टा-खारा-या-कडवा होजाय-तो-उसके इर्द गिर्दके रहनेवालोंमें बीमारी फेले,—

१२ जिस जगह दरख्तोंमे एक-फलपर दुसरा फल-या-एक फूल पर दुसरा फूल आजाय-तो-उस जगह किसी तरहकी आफत आवे, जिस जगह जिन मंदिरके शिखरमेंसें बिना अग्निके धुआं निक्लना दिखाई-दे-तो-उस जगहके बसनेवालोंकों बुरे दिन पेश हो,—

१३ जिस मंदिरके शिखरपर-उल्लू-आनकर बेठे-उसजगह बसनेवालोंकों तकलीफकी निशानी है,-जिस जगह-सर्प-अपनी पुछकों उची करके चले-तो-वहा दगे फिसाद हो,

१४ जिस जगह जिन मंदिरके शिखरपर चढाई हुई-धजा-उसी रोज वापीस गिरजाय-तो उसजगह लोगोंकों नुकशान पेश हो,—

१५ जिस मनुष्यके-हाथसें-जिन मूर्तिका मस्तक टूट जाय उसकी दौलत चली जाय और तकलीफ पेश हो,-लडाइमें-जाते वख्त -जिस राजाके रथपर-उल्लू-आन बेठे-उसकी शकिस्त हो,—

१६ उत्पातका होना-न-होना जीवोंके पुन्य-पापके ताल्लुक है, -जिन जिन लोगोंकों पुन्य-पापपर यकीन नही,-वे-चाहे-न-मानें,-शास्त्रफरमान मंजुर करनेमे किसीकी जबरजस्ती नही, जिनकों शास्त्र फरमानपर-कामील एतकात हो-वे-मानें, पेस्तरके लोग निमित्त ज्ञानको खयालम रखते थे,-निमित्त ज्ञान बेशक! सचा है, मगर उनका जाननेवाला-चतर-होना चाहिये,—

[बयान उत्पात निमित्तका खतम हुवा -]

[बयान-अतरिक्ष-निमित्त,]

१ इसमें-जो-जो-उत्पात आसानके ताल्लुक है,-उनका बयान किया जायगा, जैसे-उल्कापात, दिग्दाह, गंधर्वनगर, और इंद्र-धनुष्यका निशान आसानमे दिख पडे-तो-दुनियाकों क्या क्या? नफा नुकशान होगा, दुमदार सितारा दिखाई-दे-तो क्या? फल होगा? वगेरा बयान दिया है,—

२ पुदगल-परमाणुके-तरह-तरहके आकार-आस्मानमे-जो-बनते है, और नजरके सामने दिखाई देते है, उनका नाम-उल्का है, भूत, प्रेत, राक्षस, उठ, वदर-या-हिरनके जैसी शिकलवाली उल्का बुरे फल देनेवाली होगी, सर्प, गोह,-या-दो-सिरवाली उल्काभी बुरी होती है,—

३ उल्का-जन-बाद सूर्यकों लगकर गिरे-तो-उस जगह राज्यका उल्था हो, सूर्यसें निकसी हुई उल्का सफर जानेवालेके सामने आती हुई आस्मानमे दिखाई-दे-तो-सफर जानेवालेकों फायदेमद है,—

४ जिस जगह देवमदिर-या-इद्र धजापर उल्का गिरे-तो-उस जमीनके राजासाहवकों और सलतनतकों आफत पेंश हो, उल्का जिसके घरपर गिरे-तो-उस घरवालोकों तकलीफ हो, दडेके-आकारकी उल्का आस्मानमे वडी देरतक दिखाई-दे-तो-राजासाहबकों खौफ पैदा हो,—

५ जो-उल्का उलटी चले-यानी-जहासें निकसी हुई हो, वहाही फिर लोट जाय-तो-व्यापारी लोगोंकों नुकशान पेंश हो, बाकी-टेडी-चलनेवाली उल्का राजाकी रानीयोंकों-और-उपरकों जानेवाली उल्का ब्राह्मणोंकों-तकलीफ पैदा करे, मोर पिंछीके आकारकी उल्का-दुनियाकों और मडलके आकारकी उल्का उस शहरकों नुकशान पैदा करे,-जो-उल्का वेंलके आकारकी बनकर आसानसे गिरे-तो-उस जगह-खेतीका-नुकशान हो, चक्रकी तरह फिरती हुई उल्का आसानसें गिरे-तो-उस-जगहके मनुष्य बरबाद हो,—

६ सिहके आकारकी उल्का, वाघके आकारकी वराह, श्वान, घोडा, धनुष्य, गदा, वज्र, तलवार, सियार, बकरा, काक, खरगोश, मगरमछ, रींछ, हल, और अजगरके आकारकी उल्का, आस्मानसें गिरे-तो-उस मुल्कवालोंकों नुकशान हो,—

७ अगर किसी जगह दिनभर उल्का गिरती रहे-तो जानना उस जगहके रहनेवालोंको तकलीफ पेंश होगी, और आबादी बरबाद हो जायगी,—

८ कमलके आकारवाली उल्का-लक्ष्मी देवीके आकारकी-या-दरख्त, चांद, सूर्य, नद्यावर्त्त, कलश, धजापताका, हाथी, छत्र, सिंहासन, रथ,-या-मुद्गरके आकारकी उल्का, आसानसे गिरे-तो-उस मुल्कके वाशिंदोंकों फायदेमद होगी, जिस वख्त बारीश जोरसें हो रही हो, उस वख्त अगर उल्कापात हो, और श्याम रगका पत्थर आसमानसें गिरे, वहा जानवरोमे बीमारी चले और उनका मरना-हो,—

९ जिस जगह सध्याके वख्त सूर्य अस्त होनेके बाद और चद्रमाके उदयसें पहले, आसान एकदम लाल रगका होजाय और कुछ देरतक बना रहे, उसकों निमित्त शास्त्रके जाननेवाले दिग्दाह बोलते है, जिस जगह-दिग्दाह-दिखाई-दे, उस जगह-लडाई दगे पैदा होगें, और लोगोंकों तकलीफ होगी, अगर उस दिग्दाहमेसें-एक-मूर्त्ति-आदमीके आकार हाथपसार निकले और छिपजाय और फिर पीछें-मस्तकपर-हाथ देकर रोती हुई दिखाई-दे,-वहा-गदर मचे, तलवार चले, और हजारोंका मरना हो, जहाके लोगोंकों आसानमें नकली बाजे बजते सुनाई-दे, वहा तकलीफ पेंश हो, और घर छोडकर चले जाना पडे,—

१० गधर्वनगर उसकों कहते है,-जो-आसानमे तरह-तरहके रग-बेरग पुद्गल-परिमाणु परिणमन-होकर नगर जैसा-आकार दिखाई-दे, अगर श्याम रगका गधर्वनगर दिखाई-दे-बुरा है, लाल

रगका दिखाइ-दे-तो-बुरा है, लाल रंगका दिखाइ-दे-तो-जानव-रोंकों-तकलीफ हो, हरा, पीला, सफेद, लाल,-या-शाम-किसी रगका हो, पूरब, पश्चिम,-या-दखन दिशातर्फ गंधर्वनगर होना अछा नही,—

११ उत्तर दिशाका गंधर्वनगर जिसमे गहेरा, साफ और चम-कीला रग हो, और उसमे किला, तोरण, द्रख्त, जानवर और परींदोंके आकार उमदा-तौरसे दिखाई दे, तो वहाके बाशिंदोंकों फायदेकी सुरत होगी,—

१२ ईशान, अग्नि-और वायुकोनम गंधर्वनगर-हो-तो-शूद्रोंकों तकलीफ पैदा हो, पाडुरगका गंधर्वनगर किसी दिशामें हो, मुल्कमे -तुफान-आवे, और हवाके जोरसे बडे बडे द्रख्त गिर जाय,—

१३ पीले रगका दिग्दाह दिखाई-दे,-तो-सलतनतमे-खौफ पैदा हो, आतीशके रग जैसा दिग्दाह दिखाई-दे,-तो-देश भग होनेका सबब है, जिस दिग्दाहमे-सूर्य-जैसी-रोशनी हो,-वो-राजाओंकों-खौफ पैदा करे,—

१४ पूर्व दिशामें दिग्दाह हो,-तो-क्षत्रियोंकों-पश्चिम दिशामे -हो-तो-किसानोकों, दखन दिशामे-हो-तो-वणिकोंकों,-और उत्तर दिशामे हो-तो-ब्राह्मणोंकों तकलीफ पेश होगी,—

१५ आसमान साफ हो, तारे दिखाई देते हो, और मामुली हवा -चलती हो,-उस हालतमे सोनेके-रग-जैसा चमकीला दिग्दाह दिखाई-दे,-तो-राजासाहबकों दिवानकों और रियायाकों फाय-देमद है,—

१६ हरहमेश सूर्य-अस्त होनेके बाद जबतक आसानमें-तारे-न-दिखाई-दे, तबतक सध्याकाल-कहा जाता है,-तावे जैसे रगकी और पीले रगकी सध्या फौजकों और फौजके अपसरोकों-तकली-फकी निशानी है,-हरे रगकी सध्या किसानोंके लिये बुरी है,-अनाज और जानवरोंकों बरबाद करे, धुवे जैसे-रगकी-सध्या गौकों

तकलीफ पेश करे, मजीठ जैसे रंगवाली सध्या–आतीशका खौफ पैदा करे, पीले रंगकी सध्या–हवाका तुफान लावे, और वारीश पैदा करे, राख जैसे रंगवाली सध्या–वारीशको–रोके और खेतीकी कमी करे,—

१७ सध्याकालके बादलम हाथी, घोडा, धजा, छत्र, और पहाडके जैसे आकार दिखाई–दे,–तो–अछा है, फतेह होगी, और लोग –सुख चैन पायगें,—

१८ जिस मुल्कम दुमदार सितारा दिखाई–दे, वहांके राजा और रियायाको खौफ पैदा हो, दुमदार सितारेकी–शिखा–जिस तर्फ झुकी हो, उस दिशावालोंकों–ज्यादा तकलीफ होगी, दुमदार सितारेके–छेडेपर–दुसरा सितारा दिखाई–दे–तो–उस मुल्कमे आफत पेश हो,–या– बीमारी चले और लोगोंकों तकलीफ हो,—

१९ वारीशके दिनोंम आस्मानपर इद्र धनुष्यका होना अछा है, –चाद–सूर्यकी चारों तर्फ–गोल–आकारका मडल होनाभी अछा, और उसका नाम शास्त्रोंमे परिवेष लिखा है, इद्र धनुष्य और परिवेष–ठडके दिनोंमे और गर्मीके दिनोंम होना अछा नही,—

२० आस्मानम पचरगी धनुष्यके–आकार–कमान–दिखाई देती है,–उसकों इद्रधनुष्य बोलते है, वारीशके दिनोंम इद्रधनुष्य दिखाई –दे–तो–जानना जल्दी वारीश होगी, ईशानकोनमे विजलीका होना दिख पडे–तोभी–जल्द वारीश हो,—

२१ चद्रमाकी चारों तर्फ–चाहे सफेद रगका परिवेष हो, काले रगका–या धूम्रवर्णका हो, वारीश अछी होगी. पचरगी परिवेष हो –तो–लडाई चले, हरे–या–पीले रगका परिवेष हो,–तो–बीमारी फैले,—

२२ सूर्यकी चारोतर्फ पीले रगका परिवेष हो,–राजासाहबकों और सलतनतकों–फिक्र पैदा करे, सूर्यकी चारो तर्फ दिनभर परिवेष बना रहे,–तो–वारीशकी–खेंच रहे और दुकाल पडे, अगर–हरे

-रगका-परिवेप हो-तो-अनाज-द्रव्व-और फल-फुल-वरवाद हो, शामरगका अर्ध परिवेप हो-तो-दुश्मनोका जोर नढे, पचरगी-परिवेप-हो-तो-जानवरोंका-मरना-ज्यादा हो,

२३ चाद-सूर्यकी चारों तर्फ परिवेप लगा हो,-और-उस परिवेपमे-शनि आजाय-तो-अनाज-कम पैदा हो, मंगल आजाय-तो फौजकों-और फौजके अपसरोंकों-तकलीफ पेंश हो,-बुध-आजाय -तो-नारीश अछी हो, वृहस्पति आजाय-तो-दिवान और पुरोहितकों आफत पेंश हो. शुक्र-आजाय-तो-फौजमे और राजाकी रानीयोंको तकलीफ पैदा हो,-राहु-आजाय-तो-लोगोंमे वीमारी चले, और-केतु-आजाय-तो दुकाल पडे, निमित्तज्ञानी-शख्श-इन वातोकों-जान-सकते है,—

[वयान-अतरिक्ष-निमित्तका-खतम हुवा,]

[वीच-वयान-शकुनशास्त्र]

१ शकुन-भले बुरेके दिखलानेवाले है,-और उसके तरीके-दो -है,-१-दृष्टशकुन, और-२-दुसरा शब्दशकुन,-दृष्टशकुन उसको कहते है,-जो-वस्तु-नजरसे दिखाई-दे, और शब्दशकुन उसकों कहते है,-जो अपने कानसे सुने जाय,

पद्मनी राजहसाश्च, निर्ग्रंथाश्च तपोधनाः,
य देश सम्रुपसर्पन्ति, तत्र देशे शिव भवेत्, १

पद्मनी औरत, राजहस और निर्ग्रंथमुनि, जिस मुल्कमे कदम रखे, उस जगह फतेहकी निशानी है,—

२ [जैनशास्त्र व्यवहारकल्पमें जैनाचार्य हरिभद्रसूरि-वयान-करते है -]

पुरुषेणाथवा नार्या, द्रष्टव्य-न-कदाचन,
चद्रबिंव निशि शुक्लचतुर्थीसभव किल, १

हरेक महिनेकी सुदी चौथका चद्रमा देखना अछा नही, अगर

सुदी-दुज-या-तीजका चद्रमा देख लिया हो,-तो-चौथका चद्रमा देखना कोई हर्ज नही,—

३ [आगे फिर इसी व्यवहारकल्पमें-जैनाचार्य-हरिभद्रसूरि-फरमाते है,-]

नक्षत्रस्य मुहूर्त्तस्य,-तिथेश्च करणस्य च,
चतुर्णामपि चैतेषा,-शकुनो दडनामक', १

नक्षत्र, मुहूर्त्त, तिथि, और करण, इनसबमे शकुन ज्यादा बलवान् है, अगर किसीका एतकात शकुन शास्त्रपर-कम-हो, और इस बातकों मजुर-न-रखे-तो-उसकी मरजीकी बात है, मगर शकुन भले बुरेके बतलानेवाले जरुर है,-अगर अपनी तकदीर आलादर्जेकी हो,-तो-अछे शकुन हो, और बुरी तकदीर पेंश हो,-तो-बुरे शकुन हो,-जिसका-जैसा-होनहार हो,-वैसी-बुद्धि पैदा होजाती है, सलाहगिरमी-वैसे मिलते है,-जैसी उसकी तकदीर हो,-

४ घरसे रवाना होतेवख्त अछे शकुन हुवे, और जहागये वहाभी अछे शकुन हुवे-तो-जानना इरादा पूर्ण होगा,-पहुचते वख्तके शकुनसे रवाना होते वख्तके शकुन-ज्यादा फायदेमद होते है,-कोश-दो-कोशगये बाद चाहे जैसे शकुन हो-गिनतीमे शुमार नही करना,-शकुन उसीका नाम है-जो-अपने घर-या-नजीकमे हो,-जो-शकुन नजीक दिखाइ-दे-वो-जल्द फल देयगें, दूरगये बाद दिखाइ-दे-वो-देरीसें-फल देयगें —

५ एक दफे बुरे शकुन हुवे,-थोडीदेर ठहरकर जाना, दुसरी दफे बुरे शकुन हुवे-तोभी-ठहरजाना, तीसरी दफे खोटे शकुन हुवे-तो-जानना सफरमे बिगाड होगा, लाजिम है,-उसवख्तको-जाना-बद रखना, दुसरे रोज-रवाना होना,-शकुनशास्त्रका फरमान है, सज्जन, शकुन,-या-निमित्तज्ञानी मना फरमावे उसवख्त सफरकों नही जाना, तकलीफ पेंश होगी,—

६ शब्दशकुन उसकों कहते है,-जो-रवाना होतेवख्त-वजरीये शब्दके-सुने-जाय, जैसे कोई शख्श घरसें निकला और सफरकेलिये रवाना हुवा, उसवख्त किसी दुसरेके मुखसें सुना, तुमारी फतेह होगी, तुमारी तकदीर तेज है,-फायदा उठाओगे,-तो-जानना शब्दशकुन अछे हुवे, अगर ऐसा सुना, तुमारे काममे गलती है,-मत जाओ, तकलीफ पाओगे,-तो-जानना शब्दशकुन अछे नही हुवे, इसलिये मुनासिब है,-शब्दशकुनभी खयालमे-रखना,—

७ धर्मशास्त्र और नजुमका फरमान है,-वारसें तिथि-बलवान्, तिथिसें नक्षत्र बलवान्,-नक्षत्रसें करण-बलवान्-, करणसें-लग्न,-लग्नसें निमित्त, निमित्तसें मनके भाव, मनके भावसें पूर्वसंचित-कर्म, और पूर्वसंचित कर्मसे धर्म-ज्यादा बलवान् है,-इसलिये-धर्मपर-ज्यादह ध्यान रखना.—

८ पहले अछे शकुन हुवे और पीछे बुरे शकुन हुवे-तो-पीछले फल देयगें, पहले बुरे शकुन हुवे और पीछे अछे हुवे-तो-पीछले फल देयगें, पहलेवाले-रद्-होजायगें, शकुन-सामने होना अछा, दाहनी तर्फभी-अछे, वायीतर्फके शकुन अछे नही, मगर आपना चद्रस्वर-चलताहो-तो-उसवख्त अपनेलिये वायीतर्फकेभी अछे, अगर अपना सूर्यस्वर चलता हो,-तो-दाहनी तर्फके शकुन ज्यादाफल देयगें,—

९ निर्ग्रंथमुनि, राजा, हाथी, घोडा, मोर, बैल, राजहंस, पद्मनी औरत,-या-मर्दऔरतका जोडला, सफरजाते वख्त सामने मिले-तो-काम फतेह होगा, कितनेक शख्श मुनिजनोंके शकुन अछे नही गिनते, मगर मुताबिक फरमान धर्मशास्त्रके-मुनि-धर्मके नायक है, उनके शकुन अछे क्यों-न-हो, जरूर हो,—

१० जिनप्रतिमा, फल-फूल, गेहनेआभूषण, वजापताका, छत्र, चमर, सोना, चादी, रथ, पालखी, बाजा, वीणा, सितार, सरगी, मृदंग, चदन, आरिसा, पानीका भराहुवा घडा, रसोइका थाल, दूध, दही गोरोचन, कमल, हथियार, पखा, झारी, सिंहासन, रत्न, अकुश,

विनाधुवेकी आतीश, सफेद सरसो, और धोयेहुवे कपडे लेकर-आताहुवा धोबी, कुमारी कन्या, तांबुल, मिठाई, इत्र, और उमदा वर्ण, गध, रस, स्पर्शवाली कोइभी चिज मुसाफरी जातेवख्त सामने मिले-तो-फतेह होगी, और इरादा पूर्ण होगा,—

११ मुसाफरी जातेवख्त खूबसुरत मर्द-या-औरत-शिगार पहनेहुवे सामने मिले-तो-अछा है,-मुसाफरी जानेवालोंको-रास्तेमे हिरन बायीतर्फसें दाहनी तर्फ आते दिखाई-दे-तो-बहेत्तर है, और घर आते वख्त दाहनीतर्फसे-बायीतर्फ-आते दिखाइ-दे-तो-अछे है,-खरोदयज्ञानका-खयाल इससेंभी करलेना चाहिये,-अपना-जो-स्वर-चलता हो-उसीतर्फके शकुन-अछे समजो.—

१२ सासरे जाते वख्त अगर कोइ औरत-रोती हुई जावे-तो-अछा नही, कइ औरत सासरे जानेके वख्त-रोती हुइ जाती है,-रिस्तेदारभी-रोने लगते है,-मगर ज्ञानीयोंने इसबातको-बेजा-फरमाइ, राजी-खुशीसें जाना चाहिये,—

१३ सफरके वख्त मुर्घा-बायी-तर्फ अवाज करे-तो-फायदेमद है, तोता और तीतर दाहनी तर्फ बोले-तो-अछा,-शेर-अगर-दाहनी तर्फ दिखाइ-दे-तो-बहेत्तर, सफरके वख्त-बुगला-चाहे जिस तर्फ बोले अच्छा है,-या-आस्मानकी तर्फ उड जाय-तोभी-उमदा शकुन है,—

१४ सफरके वख्त-सारसपखी-बायीतर्फ दिखाइ-दे-तो-अछा, -मोर-नाचता हुवा-चाहे-किसी तर्फ दिखाइ-दे-फायदेमद है,-सफरके वख्त-भमरा-बायीतर्फ गुजार करता मिले,-या-किसी-पेंड-पर बेठा दिखाइ-दे-तो-उमदा है.—

१५ सफरके वख्त-बदर-दाहनी तर्फ दिखाइ-दे-तो-अछा, कोयलभी दाहनीतर्फ दिखाइ-दे-या-बोले-तो-फायदेमद, सफरके वख्त अगर कोइ-कहे-रसोइ तयार है, तो-खाना-खाकर जाना-उमदा है,—

१६ सफरके वख्त काकपक्षी-बायींतर्फ बोले-तो-बहेत्तर,-रुपा-रैलपक्षी बायींतर्फसें दाहनी तर्फकों आवे-तो-फायदेमंद, सामने आवे-तो-निहायत फायदेमंद,—

१७ सफरके वख्त गर्भवती, रजस्वला, या-विधवा औरत सामने मिलना अछा नही, अपनी माता अगर विधवा हो,-तो-उसका-सामने मिलना बेटेकेलिये-बुरा-नही, माता-बेटेका हमेशा भला चाहनेवाली होती है,-नपुसक, लुला-लगडा,-या-अधा सफरके वख्त सामने मिलना बहेत्तर नही, भेंसे-या-उठपर चढा हुवा-आदमी सामने मिलनाभी अछा नही,—

१८ लडाइके लिये जानेवालेके निशान-या-रथपर-बाज पक्षी आन बेठे निहायत उमदा है, फतेह होगी,-मुसाफरी जानेवालेका पहेला कदम अटक जाय, हाथ-पावकों ठोकर लगे,-कपडा फस जाय,-या-ध्वजा-पताका गिर पडे-तो-अछा नही-तकलीफ पेंश होगी,—

१९ गाव-या-शहरमे प्रवेश करते वख्त खुद हसना-या-गाना नही, पेंशवाइमे आये हुवे हसे-या-गायन करे कोई हर्ज नही,—

२० मुसाफरी जातेवख्त अपने पीछे खाली घटा लेकर औरत-या-मर्द अपने पिछाडी आते हो,-निहायत उमदा है,—

२१ मुसाफरी जाते वख्त-सर्प, किरकाटिया, छिपकली,-या-गोंह, जानेवालेके रास्तेमे आडे उतरे-तो-बुरा है,-फण चढाया हुवा-सर्प-दिखाई देनाभी खराब है,—

२२ सफर जाते वख्त-अगर-काणा शख्श सामने मिलना बहेत्तर नही, लकडीका भारालेकर आताहुवा शख्श सामने मिले,-बिल्ली-लडतीहुइ दिखाइ-दे-या-बदबूकी चिजे सामने मिले, किसी सुरत अछा नही,—

२३ अगारे, राख, हाडके, पथ्थर, तेल, गुड, चमडा, चर्बी, फुटाहुवा भाडा, नमक, सुका घास, छास, कपास, अनाजके छिल्टे,

केश, कालेरंगकी चीज, लोहा, दरख्तकी छाल, अर्गला, लोहकी सां फल, खल, अशुभवर्ण-गंध-रस-स्पर्शवाली-चीज-सफरजाते वख्त सामने मिले-तो-तकलीफ होगी,—

२४ फल-फूल लेकर कोइ मर्द-या-औरत सामने मिले-तो-मुसाफरी जानेवालोंकी फतेह होगी, और इरादा पूर्ण होगा, छत्री हाथमे लेकर पानबीडी-खाता हुवा शख्श सामने मिले-तो-फतेह होगी, रोताहुवा-आदमी मीले-तो-बुरा है,-सफरके वख्त मुर्दा सामने मिलना निहायत बुरा है,—

२५ मुसाफरी जाते वख्त दाहनी-या-पीछाडीका पवन चलता हो-तो-फतेह होगी, घरआते वख्तभी-यही पवन अछे है,-सामने -या-बायीतर्फका पवन अछा नही,—

२६ सफरके वख्त-मुगस-(यानी)नोलिया-दिखाई-दे-या-उसकी अवाज सुनाई-दे-तो-फतेह होगी,-तीतर-या-मुर्घा-दाहने हाथकों दिखाई-दे-तो-अछा है,-गधा-बाये हाथकी तर्फ अवाज करे-तो-सफर जानेवालोंके लिये अछा है,-मगर गधेपर बेठा हुवा आदमी सामने मिले-तो-अछा नही,—

२७ मुसाफरी जाते वख्त खानेका थाल लेकर कोई सामने मिले -तो-बहेतर है, जब अपना चद्रस्वर चलता हो,-उस वख्त बायी तर्फ-जो-जो-शकुन पेंश हो, पूर्णफल देयगें, सूर्यस्वर चलते वख्त दाहनी तर्फ जितने शकुन हो, पूर्णफल देयगें, खालीस्वरमे अछे शकुनभी-कमजोर,-और-पूर्णस्वरमें-कमजोर शकुनभी-ताकतवर होते है,—

२८ सफरके वख्त-कोई-दिवाना-या-गीले कपडे पहने-आता हुवा शख्श सामने मिले-तो-बुरा है,-काममे खलल पडेगा,—

२९ हथियारसें सजा हुवा-कोई-बहादूर शख्श सामने मिले, फतेह होगी, चावल, गेहू,-जवारी लेकर कोई आदमी-सफरके-वख्त सामने मिले-तो अछा है,—

३० सफरके वख्त अपनेकों चाहनेवाला कोई मर्द-या-औरत सामने मिले बहुत बहेत्तर हैं,-इरादा पूर्ण होगा,—

३१ विवाह करके कोई दुल्हा, दुल्हन, शाथ आते हुवे सामने मिले, निहायत उमदा हैं, लडकेकों लेकर कोई-औरत-सामने मिले -वोभी-निहायत उमदा हैं, काम फतेह होगा,—

३२ म्याना-पालखी-नीलकंठ पक्षी-गौ-हिरन-या-तोता-सफरके वख्त-सामने मिलना-अछा है, इरादा-पूर्ण-होगा.—

[यीच बयान-शकुनशास्त्र-खतम हुवा -]

[बयान-नजुम-शास्त्र,-]

१ ज्योतिषशास्त्र एक दिव्यज्ञान हैं, और-उर्दू-जबानमे-उसकों नजुम कहते हैं, इसमें नजरीये नजुमके माल-दरसालके वखतारे निकालनेकी-तरकीबें,-रूड, सोना, चांदी, अलसी, एरडा, सूत, शैर, सरसों, मोती, गेहु, चावल, जवार, बाजरी, कपडे, खाड, और तील-वगेरा चीजोंकी-तेजी-मंदी-देखनेका तरीका, जन्मपत्री और आईंदा जमानेका हाल, और-वो-ऐसा-आम-फहेम-लिखागया हैं,-जो-हरखामुली आदमी उसकों समझ सके, रोगावली चक्र-इसमे-बीमारीसें सहेत पानेका बयान, किसनक्षत्रमें-कौनसी चीज-गुम्म होगइ है ? और-वो-कब मिलेगी, वगेरा हाल नजुमसें मालुम होसकेगा.

२ तीर्थंकरदेवोंने-जब-द्वादशांगवानीका बयान फरमाया, और गणधरोंने जब उसकी रचना किइ, आग्रायणीनामके पूर्वमें ज्योतिष् विद्या बयान-किइ, जैनागम चद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति, जैननजुमके -आलादर्जेके ग्रंथ हैं, नजुम सचा हैं, मगर जाननेवाला होशियार होनाचाहिये, नजुमकों अछीतौरसे देखागया-तो-इम्तिहानके मेदानमें सचा पाया, तीर्थंकर गणधरोंकी-यह-कमाल महेरबानी समजो-वे-नजुमकों जैनागममे बयान फरमागये,

३ बाद जब श्रुतकेवली-भद्रबाहुस्वामी हुवे,-उन्होंने-भद्रबाहु सहितानामका ग्रथ सवालाख श्लोकका बनाया, मगर मजकुर ग्रथ जमाने हालमें पुरा मिलता नही, भद्रबाहुस्वामी-जैनाचार्य थे, और उनके दुनियादारी हालतके-सगे-भाई-वराहमिहर थे,-जो-वैदिक मजहबपर-एतकात रखतेथे, उन्होंने वराहमिहरसहिता-ग्रथ-बनाया,—

४ बाद जैनाचार्य-हरिभद्रसूरि, कालिकाचार्य, पादलिप्ताचार्य, मलयगिरिजी, हेमचद्राचार्यजी, हेमप्रभसूरिजी-वगेरा बहुतसे जैनाचार्य नजुमके जाननेवाले हुवे, उनके बनायेहुवे-कइ-नजुमग्रथ जमाने हालमें मिलते है, और-कितनेक नेस्त-नाबुद होगये, पेस्तरके वख्त जैनपचाग चलताथा, जमानेहालमे अगर कोइ बनाना चाहे-बन-सकताहै, जैननजुमग्रथ बहुतहै, सिर्फ ! बनानेवाले और खर्चकरनेवाले चाहिये, जैनमजहबमे चद्र-सूर्यको ज्योतिषी देवोंके इद्र मानेहै, बाकीके ग्रह-नक्षत्र-और तारे मिलाकर पाचतरहके ज्योतिषी देव कहे, चद्र और सूर्य-कभी वक्र नही होते, और राहु-केतु-कभी मार्गी-नही होते, पेस्तरके जमानेमे (८८) ग्रहोंका गणित चलता था, जमाने हालमे (९) ग्रहोंका-गणितकरनाभी-मुस्किल होगया, मनुष्य-कमजोर, सुस्त, और-कमउम्रवाले रहगये इसलिये नवग्रहोंका गणित उमदा तौरसें कियाजाय यही गनीमत समजो,-जैनोंके नजुमग्रथ-उमदा बने हुवे है,—

५ असली नजुमी-वे-कहलाते है,-जो-यत्र वेधसें-ग्रह-नक्षत्रोंको आसानमे देखलेवे, करीब-दो-हजार वर्षके पेस्तर भारत वर्षमे-जो-ज्योतिष्विद्यार्थी-वो-आजकल नही रही, जैन मजहबमे ज्योतिष् चक्रकी गिनती और-छह-आरोंकी शुरुआत हिंदी श्रावण-वदी(गुजराती आषाढ वदी)एकमसें मानी गई है.

[ज्योतिष्करडक-जैन-ग्रथका पाठ]

सावण बहुल पडिवए,-बालवकरणे अभिइणखत्ते,
सव्वथ्थ पढम समये,-जुगस्स आइ वियाणाहि, १

हिंदी श्रावण वदी गुजराती आषाढ वदी एकमके रोज-बालव करण और अभिजित् नक्षत्रमे युगकी शरुआत शुमार किई गई है,—

६ चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, भद्रबाहुसंहिता, ज्योतिष्करडक, आरंभसिद्धि, जन्माभोधि, यत्रराज, त्रैलोक्यप्रकाश, मानसागरीपद्धति, मेघमाला, गणिविज्ञापयन्ना, मेघमहोदय, भुवनप्रदीप, और नारचद्र -ये-जैन मजहबके नजुमग्रंथ है,—

७ वराहसहिता, जैमिनीयसूत्र, पाराशरसूत्र, अगस्तिसूत्र, लंपाक, नीलकंठ, बृहज्जातक, पारिजातरत्नाकर,-सूर्यसिद्धात,-कमलाकर,- और-आर्यभट्टसिद्धात वगेरा दुसरे मजहबके नजुमग्रथ है,—

८ जैनमजहबमें द्वादशारचक्रमय कालचक्र माना है,-और-वैदिक मजहबके शास्त्रोंमे सत्य, द्वापर, त्रेता, और-कलि,-ये-युग माने गये है,—

९ अगर कोई इस सवालको पेशकरे-चांद-सूर्य-किसीका-भला बुरा-करडाले, यहभी एक तरहका बखेडा नही-तो-और क्या है! जवाबमे तलब करे, चाद-सूर्य-किसीका भलाबुरा नही करते,-जो-कुछ करनेवाले है, अपने पूर्वसंचितकर्म है, मगर जिस वख्त आदमीकी तकदीर अछी आती है, चाद सूर्य वगेरा अछे चिन्ह बतलाते है, जब बुरी तकदीर पेश होती है, बुरे चिन्ह बतलाते है, नजुमी लोकोंका फर्ज है,-जो-फायदे आमहो, जाहिर करे, आजकल-आलादर्जेके नजुमी-और-रमाल-नही रहे,-जो-गलती-न-खावे, भूल सबके पीछे लगी है,-जो-लोग इल्म नजुम पढते नही, और कहते है, नजुम झूठाहै-उनकी-आलादर्जेकी गलती समजो,—

१० चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आसोज, कार्तिक, मृगशीर्ष, पौष, माघ, और फाल्गुन ये बाराह महिनोंके नाम है, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमत, शिशिर, ये छह ऋतुओंके नाम

है, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ये चार दिशाओंके नाम हैं, अग्नि, नैर्ऋत्य, वायव्य, और ईशान ये चार विदिशाओंके नाम हैं, उर्ध्व और अधः ये उंची नीची दिशाओके नाम है,—

११ आदित्य, सोम, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनि ये सात वार है, एकम, दुज, तीज, चौथ, पचमी, छठ, सातम, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पौर्णिमा, और अमावास्या ये तिथियोंके नाम हैं,—

१२ अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, (अभिजित्,) श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, और रेवती, ये सताईस नक्षत्रोंके नाम है,—

१३ विष्कंभ, गीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगड, सुकर्मा, धृति, शूल, गड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्र, ब्रह्मा, ऐंद्र, वैधृति, ये सताईस योगोंके नाम है,—

१४ बव, बालव, कौलव, तैतिल, गरज, वणिज, विष्टि, शकुन चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न, ये ग्यारह करणोंके नाम है,—

१५ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, ये बारा राशियोंके नाम है, चद्र, सूर्य, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, और केतु ये नवग्रहोंके नाम हैं,—

१६ [शतपद-चक्रम्]

१ चू चे चो ला, अश्विनी,	५ वे वो क की, मृगशिरा,
२ ली लु ले लो, भरणी,	६ कु घ ङ छ, आर्द्रा,
३ अ ई ऊ ए, कृत्तिका,	७ के को ह ही, पुनर्वसुः,
४ ओ वा वी वू, रोहिणी,	८ हु हे हो डा, पुष्यः,

९ डी डू डे डो, आश्लेषा,
१० म मी मू मे, मघा,
११ मोटाटीटू, पूर्वाफाल्गुनी
१२ टे टो प पी, उत्तराफाल्गुनी,
१३ पू ष ण ठ, हस्तः
१४ पे पो रा री, चित्रा,
१५ रू रे रो ता, स्वातिः
१६ ती तू ते तो, विशाखा,
१७ न नी नू ने, अनुराधा,
१८ नो या यी यू, ज्येष्ठा,
१९ ये यो भ भी, मूल,
२० भू ध फ ढ, पूर्वाषाढा,
२१ भे भो ज जी, उत्तराषाढा,
२२ जू जे जो खा, अभिजित्
२३ खी खू खे खो, श्रवणः
२४ ग गी गू गे, धनिष्ठा,
२५ गो सा सी सू, शतभिषा
२६ से सो द दी, पूर्वाभाद्रपदा,
२७ दू झ ञ थ, उत्तराभाद्रपदा,
२८ दे दो च ची, रेवती,

[नजुमपढनेवाला इस चक्रकों जरूर कंठाग्र करे]

१७ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह कन्या, तुला, वृश्चिक, धन मकर, कुंभ, और मीन, ये बारां राशिके नामभी हिब्ज याद करे,-

१८ अश्विनी भरणी कृत्तिकापादमेक मेषः,
कृत्तिकाना त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोर्धं वृषः,
मृगशीरोर्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रय मिथुनः-
पुनर्वसुपादमेक पुष्य आश्लेपात कर्कः-
मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनीपादमेकं सिंहः,
उत्तराफाल्गुनीपादत्रय हस्तचित्रार्धं कन्या,
चित्रार्धं स्वातीविशाखापादत्रय तुला,
विशाखापादमेक अनुराधा ज्येष्ठात वृश्चिक,-
मूल च पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादमेकं धनुः-
उत्तराषाढापादत्रय श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः-

धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदापादत्रय कुंभः,
पूर्वाभाद्रपदापादमेक उत्तराभाद्रपदारेवत्यत, मीनः-
इसपाठकोंभी कठाग्र करे, जभी नजुमकी शुरुआत हुइ जानना,-

१९ जन्मपत्रिकाके बारह भुवनके नाम, तन, धन, सहज, सुख, सतान, शत्रु, जाया, मृत्यु, धर्म, कर्म, लाभ, और व्यय,—

२० पहेला, चौथा, सातमा, दसमा, केंद्र,
दुसरा, पाचमा, आठमा, ग्यारहमा, पणफर,-
तीसरा, छठा, नवमा, बारहमा, आपोक्लिम.-

[अनुष्टुप्-वृत्तम]

पणफराद् भाविकार्यं, ज्ञेयमापोक्लिमाद्गतं,
केंद्रे सर्वग्रहाः पृष्टाः त्रैकालिकफलप्रदाः १

(अर्थः) पणफरसे भाविकार्य देखा जाता है, आपोक्लिमसें भूत-कालकी बात देखी जाती है, और कद्रसें भूत भविष्य वर्त्तमान तीनोंकालकी बात देखी जाती है,—

२१ एक एक नक्षत्रके चार चार चरण और सवादो नक्षत्रकी एकराशि होती हैं, इसतरह सताईस नक्षत्र बारा राशिपर बटे हुवे हैं,-

शनौ चंद्रे त्यजेत् पूर्वां, दक्षिणा च दिश गुरौ,
सूर्यशुक्र पश्चिमा च, बुधे भौमे तथोत्तरा, १

(अर्थ) शनिवार और सोमवारके रौज पूरवमे दिग्शूल रहता है गुरुवारके रौज दखनमे रहता है, रविवार और शुक्रवारके रौज पश्चिमम और बुधवार मगलवारके रौज उत्तरम दिग्शूल रहता है

२२ मेपे च सिहे धनपूर्वभागे,
वृषे च कन्यामकरे च याम्यां, ।
युग्मे तुलाकुंभजपश्चिमाया
कर्कालिमीने दिशि ह्युत्तरस्या ॥

(अर्थ) मेष सिंह और धनराशिका चंद्र पूर्वदिशामें रहता है, वृषभ कन्या और मकरराशिका चंद्र दखनदिशामे रहता है, मिथुन तुला और कुंभराशिका चद्र पश्चिममे और कर्क वृश्चिक मीनका चद्र उत्तर दिशाम रहता है,—

२३ पू, उ, अ, न, द, प, वा, इ, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, पू, उ, अ, न, द, प, वा, इ ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५,)) अमावास्या, ये ये तिथियोंके रौज इनइन दिशामे योगिनी रहती है.

२४ प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशीकों नदा तिथि कहते है, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशीको भद्रातिथि कहते है, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी-कों जयातिथि करते है, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशीको रिक्ता, और पचमी, दशमी, पौर्णिमा, अमावास्याकों पूर्णातिथि कहते है,—

२५ जन्मपत्रिकाके पहले भुवनका नाम, तन, लग्न, मूर्ति, अग, और वपु वगेरा है, और इससे शरीर, वर्ण, चिन्ह, आयु, सुखदुख, जाति और ताहसीर वगेरा देखेजाते है, दुसरे भुवनका नाम, धन, कोश, स्वः अर्थ और कुटुंब वगेरा है, और इससे सोना, चादी, जवाहिरात, धातु, दोस्त और रुपये पैसे वगेराका हाल देखा जाता है, तीसरे भुवनका नाम सहज, सहोदर, और भ्रातृ वगेरा है, और इससे भाई नोकर चाकर वगेराका सुख कैसा होगा देखा-जाता है,—

२६ जन्मपत्रिकाके चौथे स्थानका नाम सुख, पाताल, तुर्य, अंब, हिबुक, सुहृद, नीर, जल वगेरा है, और इससें जमीन, जाय-दाद, गाव नगर, मकान और एशआराम वगेरा हालात देखे जाते है, पाचमे स्थानका नाम सतान, तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाक्स्थान, पचम, और तनुज वगेरा है, और इससे बेटा, बेटी, विद्या, मंत्र, यत्र, तत्र, और लक्ष्मी पेदा करनेके उपाव देखे जाते

हैं, आंखोका विचारभी इससे किया जाता है, छठे स्थानका नाम, शत्रु, द्वेप, वैर, षष्ठ, रिपु वगेरा है, और इससे दुश्मन, खोफ, बीमारी, और मामेका पक्ष देखा जाता है,—

२७ जन्मपत्रिकाके सातमे कोठेका नाम, जाया, जामित्र, अस्त, मदन, मद, और काम वगेरा है, और इससे मुल्कोंकी सफर, औरत, तिजारत, और चोराइ हुइ चीजोंके हालात देखे जाते हैं. आठमे कोठेका नाम मृत्यु, रध्र, आयु, छिद्र, यान, निधन, प्रलय, और अष्टम वगेरा है, और इससे मृत्यु, कुटुंब और बडे बुढोकी दौलत मिलेगी या नही वगेरा हालात देखे जाते है, नवमे कोठेका नाम, धर्म, भाग्य, गुरु, शुभ, तप, और नवम है, और इससें मजहबी एतकाव (धर्मश्रद्धा) दीक्षा, मुल्कोंकी सफर वगेरा देखे जाते है,—

२८ जन्मपत्रिकाके दशमे स्थानका नाम, कर्म, व्योम, ख-नभः तातआस्पद, गगन, आज्ञा, मान, मध्यम, व्यापार, और दशम है, इससे हुकमहोदा, पदवी, खिताब, इज्जत, और अपनी तरकी कितनी होगी वगेरा देखाजाता है, ग्यारहमे स्थानका नाम, लाभ, उपचय, उपात, आय, प्राप्ति, आगम, भव, और एकादश वगेरा है, और इससें किसी तरहका फायदा होगा या नही ? वगेरा देखा जाता है. बारमे स्थानका नाम, व्यय, अंतिम, द्वादश, रिप्फ, प्रात, वगेरा हैं, और इससें हरतरहके खर्चका बयान देखा जाता है.—

२९ जन्मकुंडली, प्रश्नकुंडली,-या-दीक्षाकुंडली देखना-तो-उसमे लग्न, चतुर्थस्थान, सप्तमस्थान, दशमस्थान, पचमस्थान, नवमस्थान, और लाभस्थान जरुर देखना चाहिये, इनके मालिक कहा-कहा-बैठे है, उच, नीच, स्वगृही, शत्रुक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, और अस्त-कौन-कौनसे ग्रह है, ?

३० हरेक ग्रह जहा बैठाहो,-उसस्थानको-और-सप्तमस्थानकों पूर्ण दृष्टिसें देखता है, एसा जानना.—

मास शुक्रबुधादित्याश्चंद्र: पाददिनद्वय,—
भौमस्त्रिपक्ष जीवोब्द, सार्द्ध वर्षद्वय शनिः,
राहुः केतुः सदा शुक्रे, सार्द्धमेक तु वत्सर,-इति,—

चंद्रमा एक-राशिपर सवादोदिन कायम रहता है, सूर्य एकमहिनेतक एक-राशिपर रहता है,-मगल देढमहिनेतक रहता है, बुध एक महिनेतक रहता है,-गुरु-एक राशिपर वर्षभर रहता है, शुक्र एक महिनेतक रहता है, शनि-एक राशिपर-अढाईवर्सतक रहता है, और राहु-केतु एक-एक-राशिपर देढ-देढवर्सतक रहते है,

३१ नजुमीकों पेस्तर लग्ननिकालनेकी तरकीव सिखना चाहिये, -किसीने आनकर नजुमीसे प्रश्न पुछा-तो-अवल लग्न निकालना, अगर उसमे मेपलग्न आया-तो-जानना सवालकर्त्ताके दिलमे सौच -फिक्र है,-और उसकेलिगे प्रश्न पुछा है,-अगर-वृपलग्न आया-तो-जानना चाहिये, मनुप्य-या-जानवरके वारेमे प्रश्न है, मिथुनलग्न आया-तो-सतान-नोकर-चाकरके वारेमे प्रश्न है, कर्कलग्न आया-तो-व्यापर-या-सफरकेलिये प्रश्न है, सिंहलग्न-आया-तो-जानवर और परींदाके वारेमे प्रश्न है, कन्यालग्न आया-तो-औरत-या-दास -दासीके लिये प्रश्न है, तुलालग्न आया-तो-तिजारत-सट्टा-वगेराके लिये पुछा है, वृश्चिकलग्न आया-तो-दुश्मनके वारेमे सवाल है,-धनलग्न आया-तो-फायदेकेलिये पुछा है, मकर लग्न-आया-तो-सौच-फिकरके वारेमे-प्रश्न है,-कुभलग्न आया-तो-धर्मके वारेमें सवाल है, और अगर-मीनलग्न आया-तो-जमीनके वारेमे-या-मकान वगेराके वारेमे पुछा है, ऐसा जानना,—

३२ चद्रमाका-फल, जन्मका चद्रमा फायदेमद कहा, दुसरा चद्रमा मध्यम, तीसरा चद्रमा फायदेमद, चौथा चद्रमा-अछा नही, पाचमा चद्रमा राज्यकाममे फतेहमद, छठा चद्रमा फायदेमद, सातमा चद्रमा-इज्जत देनेवाला. आठमा चद्रमा-अछा नही, नवमा चद्रमा

फायदेमद, दशमा चद्रमा पार पहुचानेवाला, ग्याहरमा चद्रमा फतेह-मद, और बारहमा चद्रमा निहायत बुरा समझो,—

३३ अगर कोई-शख्श-नजुमीसें किसी बातका दरयाफत करने आवे-और-उस वख्त-पचाग-हाजिर-न-हो-तो-नजुमी-उनसें कहे,-आप-सातवारमेंसें-कोइभी-एक-वारका-नाम मुहसें बोल दिजिये,-अगर-सवाल कर्त्ता,-रविवार-या-मगलवारका-नाम-लेवे-तो-कहना, आपका काम-आधा फतेह होगा, अगर सोमवार-या-गुरुवारका नाम लेवे-तो-कहना, आपका-काम-जल्द फतेह होगा, अगर बुधवार-या-शुक्रवारका नाम लेवे-तोभी-काम-जल्द होगा, अगर शनिवारका नाम लेवे-तो-कहना आपका-काम-आहिस्ते होगा,-या-न-होगा,—

३४ अगर कोई नोकर-नोकरी करने जाना चाहे-तो-पहले रौज अपने चद्रस्वर चलते वख्त जावे, फायदा होगा,-घर-हाट-कोट-किला-पुल-धर्मशाला-या-देवमदिर बनाना शुरु करे-तो-मृगशिर, -माघ, फाल्गुन, चैत,-या-वैशाख महिने [illegible]हेणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, शततारका, उत्तराभाद्रपदा और रेवती नक्षत्रके रोज जब अपना चद्र स्वर चलता हो,-नींव-डाले, मकान उमदा बनेगा और उसमें रहनेवाले चैनसें रहेंगे, सूर्य स्वरमें नींव डालोगे-या [illegible]रामे रहने जाओगे तकलीफ-उठाओगे,—

३५ शुक्रके अस्तमे, बृहस्पतिके उदय-अस्तमे, मगलके राशि छोडनेके वख्त, शनिके उदय-अस्तके वख्त-या-राशि छोडते वख्त बारीश जरुर हो, आषाढ सुदी-पुनमके रोज अगर पूरवतर्फसें निकसकर-हवा-पश्चिम तर्फको जाय-तो-उससाल उस जगह बारीश जरुर हो, दिनमे तीन भाग-ऐसी हवा-चलना चाहिये, थोडे अर्सेमे चली-तो-शुमारम नही लाना, जिस मुल्कमे-जैसी हवा-चले उस मुल्कके लिये वैसा फल जानना, एक मुल्कमे पूरवकी-हवा-चली-

तो-जानना उम मुल्कके लिये-वो-हवा अछी है, जिस मुल्कमें पश्चिमकी हवा चली तो-उस मुल्कके लिये-वो-हवा बुरी है,—

३६ मगलके नीचे गुरु और गुरुके नीचे शनि जिस अर्सेमें आ-जाय उस अर्सेम दुनियाकों तकलीफ पेंश हो, जैसे मेप राशिपर मंगल, मीनपर गुरु और कुंभ राशिपर शनि हो,—या मेप राशिके वीशसें तीस अशतक मगल, दशसें वीश अंशतक गुरु, और शून्यसें दश अशतक शनि हो,—मजकुर योग-चना समजना,—

३७ सूर्य-मगल-बृहस्पति और शुक्र-ये-चार ग्रह एक राशिपर इकठे हो, दुनियाको तकलीफका सवव है, वीमारी पेंश हो, और अनाज महेंघारीके, तमाम दुनिया कभी एकसरखी आरामतलव या -बेंचैन नही होती, बहुत हिस्सेमे-जो-वात पेंश हो,-वही-शुमा-रमे लाना,—

३८ वृप राशिपर मंगल, और राहु-इकठे-हो-तो-छठे महिने दुष्काल पडे, सू[illegible]गल, बुध, बृहस्पति, और शनि-ये-छह-ग्रह एक राशिपर इकठे-[illegible]ो, राजा और रियायाकों तकलीफ पेंश हो, सवत् (१९५६)मे-यह-योग आया था, और इसी तरह दुष्कालमी पडा था,—

३९ शुक्र-शनि-और-[illegible]-वृप राशिपर एकसाथ आवे-तो-मुल्कम-दगे-फिसाद वढे, बृहस्पतिसें सातमे शनि, वारहमें गहु, और दुसरे सूर्य-आजाय उस अर्सेमे गदर मचे, यह योग एक साथ मिले जव ऐसा वनाव वने,-एक-या-दो-योग-मिले-तो-कोई हर्ज नही,

४० रेवती नक्षत्रपर सूर्य हो, उम अर्सेमें स्वातिपर मंगल आजाय -तो-राजा-प्रजाम तकलीफ पेंश हो, जव मीनराशिपर शनि हो, उस अर्सेमे कर्कपर बृहस्पति, और तुलापर मगल हो-तो-दुनियाके तीन हिस्सोंमे दुष्काल पडे,—

४१ धनिष्ठापर शनि और मगल इकट्ठे हो–तो–चारीशकी खेंच रहे, दुष्काल पडे और घास महेंघा बीके, मजकुर योग सवत् (१९३४) मे–आया–था, और ऐसाही बनाव बना था,—

४२ सूर्य–मगल–बृहस्पति–शुक्र और शनि–ये–पाच ग्रह एक राशिपर इकट्ठे हो,–राजा–प्रजाकों भारी तकलीफ पेंश हो, मजकुर योग–सवत् (१९५६)मे–आया था, और उस वख्त ऐसाही बनाव बना था, एक राशिपर सात ग्रह–इकट्ठे हो–तो–बहुतसे–मुल्क–लुट जाय और दुष्काल पडे,—

४३ शनि–और राहु–एक राशिपर आवे जब अनाज महेघा बीके और रियायाको तकलीफ पेंश हो,–श्रवण नक्षत्रपर जब सूर्य, मगल, शनि, राहु,–या–केतु–आजाय–अनाज महेघा–बीके, मघा नक्षत्रपर –शनि–वक्र हो–तो–बडे बडे छत्रपति राजाओंकों तकलीफ पेंश हो, और दगे–फिसाद बढे,—

४४ तेरह दिनका पखवाडा अछा नही होता, मगर उस अर्सेमें दुसरे योग सुधरे हो–तो–कुछ हर्जकी बात नही, हरेक महीनेकी–बदी पक्षमे–तिथिका बढना, और सुदीपक्षमे–तिथिका–घटना, अनाजकी तेजी होनेका सबब है,–बदी पक्षम तिथिका घटना और सुदी पक्षमे तिथिका बढना अनाजकी मदी होनेका सबब है,—

४५ [दुकान खोलनेका–मुहूर्त्त,–]

जिस रोज अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढा, अभिजित्–उत्तराभाद्रपदा–और –रेवती–ये–नक्षत्र हो, चौथ, नवमी, और चतुर्दशीकों छोडकर दुसरी कोई तिथि हो,–शुभवार हो, उस रोज अपना चद्र स्वर चलते वख्त दुकान खोलनेका मुहूर्त करना चाहिये,–सवाशेर, सवा पाचशेर–या अपनी ताकात हो,–सवामण–मिठाई बाटना, जिनमदिरमे स्नात्रपूजन –और–अगी–रौशनी कराना, और स्वधर्मीभाइयोंकों प्रभावना तक-

सीम करना फर्ज है, दुकानमे फायदा होगा,-जो-शख्श-अपने सूर्य स्वर चलते वख्त दुकान खोलनेका मुहूर्त्त करेंगे फायदा-न-होगा, नजुमसें-स्वरोदय-ज्ञान-ज्यादा फायदेमद कहा,—

४६ सुखी भोगी धनी नेता,-जायते मडलाधिपः,
नृपतिश्चक्रवर्त्ती च, क्रमादुच्चग्रहे फल,-१

उच्च-ग्रहोका-फल,-सुखी, भोगी, दौलतमंद, सरदार, मंडलाधिप, राजा,-या-चक्रवर्त्ती-वगेरा है,-जिसके लग्नेश उंच, मित्रक्षेत्री, या-स्वगृही हो-वो-लंबीउम्र पावे, और खुशनसीब हो, धनेश-उंच, मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-वो-दौलतमद हो, तीसरेभवनका मालिक -जिसके उंच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो,-उसके भाइ-नेक-हो, सुखभवनका मालिक उच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-वो-हमेशा आरामतलब रहे,-पचमभवनका मालिक जिसके उच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-वो-अकलमंद और हाजिरजवाब हो, छठे भवनका मालिक जिसके उच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-उसकों हमेशा बीमारीकी शिकायत बनी रहे,—

४७ सप्तम भवनका मालिक जिसके उंच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-उसकों खूबसुरत औरत मिले, आठमे भवनका मालिक जिसके उच, मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-वो-लंबीउम्र पावे, भाग्यभवनका मालिक जिसके उच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो-वो-बडा खुशनसीब हो,-दशमे भवनका मालिक जिसके उच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हो -वो-दौलतमद और इज्जतदार हो, लाभभवनका मालिक उच-मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही हों-वोभी-दौलतमद हो, बारहमे भवनका मालिक उच मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही-हो-उसकों आमदनी-कम-और खर्च ज्यादा रहे, अगर बारहमे भवनमे शुभग्रह स्वगृही होकर-बेठा हो-तो-वो-शख्श धर्मध्वज हो-और धर्मकाममे-अपनी-दौलत सर्फ करे,—

४८ लग्नेश नीच, अस्त,-या-शत्रुक्षेत्री हो-तो-उसकों शरीरका सुख-न-हो, धनेश-नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसकों दौलत-कम-मिले, तीसरे भवनका मालिक नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसकों भाइयोंका सुख नही. सुखभवनका मालिक नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसकों सुख कम मिले, पाचमेभवनका मालिक नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो, उसके सतान जीये नही, छठे भवनका मालिक नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो, उसकों हमेशा वदुरस्ती वनी रहे,—

४९ सातमे भवनका मालिक जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसकों औरतका सुख नही, आठमे भवनका मालिक नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो, उसकी उम्र लवी-न-हो, भाग्यभवनका मालिक नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो, वो-अधर्मपावद शख्श हो, तीर्थोंकी जियारत जावे-तो-देवदर्शन-या-पूजनमे शुस्ति करे और तरह-तरहके वहाने पेंश करे, दशमेभवनका मालिक जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो, उसकों हुकम-होदा-न-मिले, दुसरोंकी तावेदारीमे उम्र पूरी करे, लाभ भवनका मालिक जिसके नीच-अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसकों फायदा-कम-मिले, और वारहमे भवनका मालिक जिसके नीच-अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो,-वो दोलतमद हो-मगर-उससे दौलत खर्ची जाय नही,—

५० सूर्य जिसके उच-स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो,-उसकों अमलदारी मिले, अगर-वो-दीक्षा इख्तियार करे-तो-उसकी पूज्यपदवी बनी रहे, चद्रमा जिसके उच-स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो-वो-हमेशां खुशमिजाज रहे, और किसीकी परवाह-न-करे,-मगल जिसके उच-स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री-हो,-वो-जगवहादूर हो, और तकलीफमेभी-हिम्मत वहादूर वनारहे, बुध-जिसके उच स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो-वो-तिजारतसें-फायदा हासिल करे, वृहस्पति-जिसके उच-स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो,-वो-अकलमद-और-पडित हो, शुक्र-

जिसके उंच-स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो,-वो-खूबसुरत और कमाल हुस्न हो, शनि-उंच स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो-उसकी उम्र लंबी हो,—

५१ सूर्य-जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसकों हुकम-होदा-मिले नही, चद्रमा-जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-वो-हमेशा तकलीफ पाता रहे, मंगल जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-उसके ईरादे नापाक रहे, बुध जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो,-वो-शख्श-मुंगा-हो,-या-सभामे बोलते शर्म करे, बृहस्पति जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो,-वो-कमइल्म-हो,-शुक्र-जि-के नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो-वो-पराई औरतसें दोस्ताना करे, और शनि-जिसके नीच अस्त-या-शत्रुक्षेत्री हो,-उसकी-उम्र-लंबी न-हो, कम-उम्रमे इतिकाल होजाय,—

५२ लग्नेश-या-धनेश जिसके जिस जिस वख्त उदय हो, उस वख्त उसकों दौलत मिले, भाग्येश जिसके लग्नमें पडा हो-या-लग्नेश भाग्यभवनमे पडा हो-वो-दुनिया छोडकर-दीक्षा-इख्तियार करे,-लग्नेश लग्नमें पडा हो,-या-भाग्येश भाग्यभुवनमे हो-उसकोंभी दीक्षा-उदय आवे, लग्नेश-लग्नको देखता हो-या-भाग्येश-भाग्यभुवनको देखता हो-तो-दीक्षा-उदय आवे, लग्नेश-नवमेशकों देखे, या-नवमेश-लग्नेशकों देखे-तोभी उसकों दीक्षा उदय आवे,—

५३ [जैननजुमग्रंथ-त्रैलोक्यप्रकाशमें बयान है,-]

> लग्ने तुगे सदा लक्ष्मी, तुर्ये तुगे धनागमः,
> तुगजायास्तगे तुगे, खेतुगे राज्यसभवः, १
> लाभे तुगे महालाभो-भाग्ये तुगे-च-दीक्षितः—इति,

लग्नमें जिसके उचका ग्रह पडा हो-वो-हमेशां दौलतमंद बना रहे, चौथे भवनमे जिसके उच ग्रह पडा हो,-उसकों हमेशां दौलत मिलती रहे,-सातमे भवनमे जिसके उच ग्रह पडा हो, उसकों खूब-

सुरत औरत मिले, अगर किसी औरतके सातमे भवनमे उच ग्रह पडा हो-तो-उसकों खूबसुरत खाविंद मिले, दशमे भवनमे जिसके उच ग्रह पडा हो, उसकों-सलतनत-मिले, लाभभवनमे जिसके उच ग्रह पडा हो, उसको-तरह-तरहके फायदे होते रहे,-और नवम भवनमे जिसके उच ग्रह पडा हो-तो-उसकों दीक्षा उदय आवे,—

५४ लग्नेश जिसके धनभवनमे पडा हो,-या-धनेश-लग्नमे पडा हो-तो-वो-शख्श दौलतमद होगा, लग्नेश-लग्नमें पडा हो-तोभी-दौलतमद होगा धनेश-धनभवनमे हो-तोभी-दौलतमद हो, लग्नेश-धनेश-दे. . एक शाथ धनभवनमे-या-दोनों एक साथ लग्नमे पडे हो-तोभी दौलतमद होगा, नवमेश-दशमे भवन हो,-या-दशमेश-नवमे भवनमे पडा हो, उस शख्शकों राज हुवा जानना, नवमेश-नवमे और दशमेश-दशमे हो-तोभी योग हुवा, नवमेश-दशमेश-दोनों-मिलकर नवमे पडे हो दोनों एक शाथ दशमे पडे हो, तोभी राज्ययोग बना जानना, तरहके राज्ययोगवाला-शख्श-अगर दीक्षा इख्तियार करे-आचार्य-उपाध्याय-गणी-प्रवर्त्तक वगेरा पदवी पावे,—

५५ [भावाद् भावपतिर्व्ययाष्टरिपुगो भावोत्थपीडाकः

जिसके जन्मपत्रमे-जिसभावका स्वामी-अपनेभावसे-छठे, या-बारहमे पडा हो,-उसभावकी उस शख्शकों तकलीफ करे, लग्नका स्वामी-लग्नसें छठे आठमे-या-बारहमे भवनम जाकर हो-तो-उसशख्शकों-दुश्मनोंसें-बीमारीसें और खर्चमे तकली सूर्य-चद्र-मगल-और बृहस्पति-नैसर्गिकमैत्रीमें-आपसमे मि और बुध-शुक्र-शनि-ये-तीनभी नैसर्गिकमैत्रीमे मित्र है,—

५६ आत्मकारक ग्रह-शुभराशिमे-या-शुभनवांशमे हो,- शख्श दौलतमद हो,-वो-कारकांश जन्मलग्नसें-केंद्रमें- उसमे कोई शुभग्रह पडा हो-तो-वो-राजाधिराज बने,—

५७ चद्र, बुध, बृहस्पति, और शुक्र-ये-चारों भग्रह जिसके केंद्रमे पडे-हो-उसकों हमेशा फायदा होता रहे, सूर्य, मगल, शनि, और राहु-केतु जिसके त्रिकोणमे बेठे हो-उसको हमेशा नुकशान होता रहे,—

५८ जिसके कोइभी शुभग्रह उंच-मित्रक्षेत्री-या-स्वगृही-होकर लग्न-या-धनभुवनमे पडा हो, उसकों फायदा जरूर हो,-जिसके-धनभावमे-या-ग्यारहमें भुवनमे उचका कोई ग्रह हो-या-बलिष्टचंद्रमा ग्यारहमे भुवनमे पडा हो-उसकोभी फायदा जरुर होता रहे,—

५९ सभी ग्रहोंकी दृष्टि लग्नपर जाती हो, और लग्नेश उच-मित्री-या-स्वगृही हो, ऐसे वख्तपर जन्मा शख्श राजा बने, भी ग्रह-केंद्रमे पडे हो, लग्नेश उदय हो, और लग्नको देखताभी , ऐसे वख्तपर जन्माहुवा शख्श-चक्रवर्त्ती-राजा-बने, जमाने लमे चक्रवर्त्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव मौजूद नही,

६० धनेश तुर्येश और भाग्येश उदय हो और तीनों मिलकर चोथे भुवनमे बेठे हो, ऐसे वख्तपर जन्माहुवा शख्श कोटिध्वज होगा, भाग्येश और चंद्रमाके बीचमे-या-लग्नेश और भाग्येशके बीचमे सभी ग्रह आगये हो, ऐसे वख्तपर जन्माहुवा शख्श-हमेशा-आरामतलब बना रहे,

६१ जिस शख्शके लग्नेश लग्नमे पडा हो, उसकी औरत उसके कहनेमे चले, जिसके लग्नेश-सप्तमभावमे पडा हो,-वो-खुद औरतके कहनेमे चले, जिसके लग्नेश सप्तमभावमे और सप्तमेशभी सप्तमभावमे पडा हो, उसके और-उसकी औरतके आपसमे बडा-स्नेह-रहे, सप्तमेश-लग्नमे और लग्नेश-सप्तममे पडाहो-तोभी उमदा स्नेह रहे, लग्नेश-सप्तमेश-लग्नमे-या-सप्तमेश-लग्नेश-सप्तमम पडे हो-तोभी निहायत उमदा स्नेह रहे,—

६२ जिसके सप्तमभावम उचका ग्रह बेठा हो, उसको निहायत

उमदा औरत मिले, जिसके सप्तमभावमे-गुरु-शुक्र-चंद्रमा-या-बुध इनमेसें कोइभी उचका होकर पडा हो, उसकोंभी खूबसुरत औरत मिले, जिसके सप्तमभावमे-राहु-पडा हो, उसके औरतका सुख नही, जिसके सप्तमभावमे-या-चतुर्थभावमे सूर्य, मगल, शनि, राहु-या-केतु-इनमेसें कोइभी ग्रह पडा हो, और शुक्र-नीच-अस्त-या-शत्रुक्षेत्री होकर चाहे जहा पडा हो, उसके-न-सादी किई हुइ-न-रखी हुइ-कोइभी औरत-न-होगी -चाहना बनी रहे-मगर मिले नही,—

६३ जिसके सप्तमभावमे-या-चतुर्थभावमे-शुभ-या-उचका कोइ भी-ग्रह-पडा हो, उसकों घरकी-या-पराइ-दोनोंतरहकी औरतसें स्नेह रहे, जिसके गुरु, शुक्र, चद्रमा-या-बुध-ये-चारों शुभग्रह-मित्रक्षेत्री होकर चाहे जहा पडे हो, उसको निहायत उमदा-औरत मिले, जिसके-ये-चारोंग्रह-शत्रुक्षेत्री हो, उसके पराई औरतसे स्नेह और घरकी औरतसे अनबनाव रहे, जिसके सप्तमभावमे सूर्य, मगल, शनि, राहु-या-केतु-इनमेसें कोइक्रूरग्रह पडा हो, और चतुर्थस्थानमे -चद्र, बुध, गुरु,-या-शुक्र-कोइ शुभग्रह पडा हो, उसकों अपनी विवाही हुइ और दूसरी रखीहुइ-दोनोंतरहकी औरतोसे सुख रहे,—

६४ चद्रमा-या-लग्नसे सातमे सूर्य हो-तो-उसको-दिलपसद औरत-न-मिले, मगल हो-तो-सख्तमिजाज औरत मिले, बुध हो -तो-हुकम अदुली-करनेवाली मिले, बृहस्पति हो-तो-नेकचलन-औरत मिले, शुक्र हो-तो-उसपर सौत आवे, और शनि हो-तो दिलपसद औरत-न-मिले,—

६५ कर्कलग्नमे-जन्मी हुइ औरत एशआराम ज्यादा भोगे, जिसके लग्नमे राहु-मगल-या-सूर्य-एकशाथ पडे हो,-वो-जल्द विधवा होजाय, जिसके एकीला राहु-मगल-या-सूर्य पडा हो,-वो-कुछ दिनबाद विधवा हो, जिसके सप्तमभावमे-सूर्य-मगल-या-शनि पडा हो, और शुभ ग्रह-उसकों देखता हो,-वो-अपने खाविंदको-छोड-

कर-चली जाय, जिसके मेष-सिंह-वृश्चिक-मकर-या-कुंभ-ये-लग्न हो, और लग्नेश-लग्नको-न-देखता हो, उसकों अपने खाविंदसें अनबनाव रहे,-जिसके कर्कराशिका मंगल हो-तोभी-अनबनाव रहे,-शुभग्रह-जिसके स्वगृही-या-उंचके हो-या-उचके नवांशमें हो,-वो-हमेशा सुखचैन भोगे, और उमदा-महेलपर फुलोंकी सेजमें सोवे,—

६६ [बयान दीक्षायोग-बजरीये नजुमके-]

भाग्येश उचका होकर लग्नमे बेठा हो, और लग्नेश उचका होकर भाग्यमे बेठा हो, उसशख्शको एक तरहका दीक्षायोग हुवा, नवमेश नवममे और लग्नेश लग्नमे बेठा हो, तोभी एक तरहका दीक्षायोग हुवा कहो, लग्नेश-लग्नको और भाग्येश-भाग्यकों देखता हो, तोभी एकतरहका दीक्षायोग हुवा जानो, लग्नेश-भाग्यकों और भाग्येश-लग्नकों देखता हो-तोभी एक तरहका दीक्षायोग हुवा कहो,—

६७ जिसके किसीभावमे चारग्रह-बलिष्ठहोकर पडे हो-वो-दुनियादारी हालमेभी सुखी हो, और अगर दीक्षाइख्तियार करे तोभी-उसकी पूज्यपदवी बनी रहे,-अगर चारग्रह निर्बलहोकर पडे हो,-दीक्षा-उदय-न-आसके, सिर्फ! धर्मश्रद्धामे पाबंदी बनी रहे,

६८ धर्मभावमे जिसके कोइभी-ग्रह-उचका होकर पडा हो, और शुभग्रह उसकों देखते हो,-या-वह-उचग्रह-नवमेशसें युक्त-और-बलिष्ट हो,-वो-धर्मधुरधुर आचार्य कहलायगा, उसके आगे धर्मध्वज चलेगा-और-राजाओंकाभी पूजनीक होगा,-गणधर गौतम स्वामी-जंबूस्वामी-वज्रस्वामी-हेमचंद्राचार्य-और-श्रीहीरविजयसूरी ऐसेही योगोंसें नामी होगये, जिनकी खिदमतमें-राजे-महाराजे-आते थे, और उसके मुखसें तालीमधर्मकी पाते थे,—

६९ चंद्रमा-जिसके शुभग्रहके नवांशमे रहे हुवेकों-और-उच

ग्रहको देखता हो, और शनि-जिसके बलिष्ट हो, उसकी-दीक्षा-उमदा तौरसे पलेगी,-नवमे भावमें जिसके शनि-उचका होकर-शुक्र-या-बृहस्पतिके शाथ पडा हो,-या-शुक्र-बृहस्पति उसकों देखते हो,-वो-खुद राजा होगा, और अगर दीक्षा इख्तियार करे,-सो-राजाओंकामी-पूजनीक-बनेगा,—

७० जिसके-दो-तीन-ग्रह बलिष्ट होकर नवमे स्थानमे पडे हो,-उसको-दो-तीन-मजहबकी दीक्षा उदय आवे, पेस्तर एक तरहका एतकात रहे, फिर दुसरी तरहका हो जाय, नवमे स्थानका स्वामी-जिसके बलिष्ट हो, और शुभग्रहकरके दृष्ट हो, उसके दिलमे धर्मपर हमेशा शामील एतकात रहे, नीचका हो, शत्रुक्षेत्री हो,-या-क्रूरग्रहके दृष्ट हो, उसका एतकात थोडे रौज अछा रहे, फिर बदल जाय, दीक्षा इख्तियार करे-तो-उसकी-दीक्षा-पुरीतौरसें-न-पले,—

७१ नवमे भावम जिसके-राहु-शनिके शाथ पडा हो,-वो-नये-मजहबको इख्तियार करे-या-खुद नयेमजहबको जारी करे, और अपने-खास-मजहबको छोड देवे, जिसके-बुधके शाथ-राहु-नवमे भावमे पडा हो-वो-धर्ममे साबीतकदम रहे, नवमे भावमे जिसके-सूर्य-मगल-पडा-हो-वो-तूरखभाववाला हो,-नवमे भावका स्वामी-जिसके राहुकरके सहित हो-उसको दीक्षा लेकर पतित होना पडे-व्रत-नियम उससे-पले-नही,—

७२ नवमेभावका स्वामी-जिसके-अस्त-नीच-या-शत्रुक्षेत्री हो, वो-दीक्षालेकर तोड देवे,-व्रत-नियम बने-नही, और भोगावली कर्मका उदय ज्यादा रहे, जिसके प्रबल-राज्ययोग पडा हो, जैसें नवमका मालिक दशम-और-दशमेका मालिक नवमे पडा हो,-वो-दीक्षा-इख्तियार करे-मगर-भोगावलीकर्मके उदयसें छोडना पडे. जैसे आद्रेकुमारजी और नदीषेणजीने छोडी थी.-मगर उनका-एतकात-सत्यधर्मपर-शामील-था, जिससे-वे-सुधर गये,-और उनकी

मुक्ति हुई,-जिसके-शनि-और लग्नपति-अस्त; नीच, वक्र,-या-शत्रुक्षेत्री हो, उसकोंभी-भोगावलीकर्मके उदयसें-उन-उन कामोंमे-रंजु -होना पडे,-मगर उसका-एतकात सत्यधर्मपर-कामील-बना रहे, -अगर-एतकात-कामील-रहा-तो सब काम सुधरे जानो, उत्तराध्ययनसूत्रमे-श्रद्धाका होना, परम दुर्लभ फरमाया,—

७३ [संवत्का-वरतारा-निकालनेकी तरकीब,-]

चैतसुदी एकमके रौज-जो-वार हो,-वो-वर्सका राजा, और मेषसंक्रातिके रौज-जो-वार हो-वो-वर्सका दिवान होता है,-राजा और दिवान सोम, बुध, गुरु,-या-शुक्र हो तो अछा, और रवि, मंगल, शनि हो तो बुरा जानना.-आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आवे उस रौज, ज्येष्ठसुदी एकमके रौज, आषाढमहिनेकी रोहिणीनक्षत्रके रौज, और दीवालीके रौज सोम, बुध, गुरु-या-शुक्रवार हो-तो-घर-घर आनंदमंगल हो,

७४ जिसवर्समें (३५५) दिन हो-वो-वर्स अछा, (३५४) दिन हो-वो-बुरा समजना, जिसवर्समे बारा संक्रातिके मुहूर्त्त (३६०) हो-तो-अछा, और कम हो-तो-बुरा है,-सालभरकी-सब पुनमकी -घडिया और सब अमावास्याकी घडिया जोडना, अगर पुनमकी घडियोंसें-अमावास्याकी घडिया बढजाय-तो-बुरा, और अमावास्याकी घडियोंसें पुनमकी घडिया बढ जाय-तो-संवत् अछा है, ऐसा जानना,—

७५ जिससाल अक्षयतृतीयाके रौज रोहिणीनक्षत्र-न-हो, पौषमहिनेकी अमावास्याके रौज मूलनक्षत्र-न-हो, श्रावणसुदी पुनमके रौज श्रवणनक्षत्र-न-हो, और कातिकसुदी पुनमके रौज कृत्तिका नक्षत्र-न-हो-तो-दुष्काल पडे,-ये-चारतिथि वर्सके-चार स्तंभ है,—

७६ चंड, प्रचंड, दहन, सौम्य, नीर, जल, और अमृत-ये-सात नाडी ज्योतिषशास्त्रमें बयान फरमाइ, उसका-चक्र-नीचे दियाजाता है, देखलो !

[-सप्तनाडी-चक्र,-]

इस सप्तनाडी चक्रको समजना चाहिये. जिससें बारीशका ज्ञानहो,

७७ चौमासेके दिनोंम आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, और हस्त, इनइन नक्षत्रोंपर सूर्य आता है, और इन नक्षत्रोंकी नाडी-सौम्य, नीर, जल, अमृत,-और फिर अमृत, जल, नीर, और सौम्य है, चंद्र, मगल, बुध, बृहस्पति,

शुक्र, शनि, राहु और केतु वगेराग्रहभी इनइन नक्षत्रोंपर अनुक्रमसें सफर करते है, चौमासेके दिनोंमे-जब-जब-सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र,-सौम्य,-नीर, जल-और-अमृतनाडीपर आवे, तब वारीश अछी हो, चौमासेके दिनोंमे जिस नक्षत्रपर राहु हो, उसपर जब जब चद्रमा आवे, उस उस रौज वारीश जरुर हो,—

७८ एकनाडीसमायातौ,-चद्रमाधरणीसुतौ,
यदि तत्र भवेज्जीवः,-करोत्येकार्णवा महीं,-१

चौमासेके दिनोंमे जबजब चद्रमा और मगल एक नाडीपर आवे, उसउस रौज वारीश जरुर हो, अगर उसमे बृहस्पतिभी सामील हो-तो उसरौज तीनहिस्से-गाम-नगरोंमे बडी वारीश हो, समरसारग्रंथमे लिखा है, मगल-वक्र-हो-तो-बुरा है, मगर जैननजुमग्रथ त्रैलोक्य-प्रकाशमे बयान है,-मंगल-वक्र हो-तो-अछा है, सुकाल होगा,—

यदा शुक्रेंदुजीवानामेकनाड्या समागमः,
तदा भवेद् महावृष्टिः,-सर्वत्रैकार्णवा मही,—

शुक्र चद्रमा और बृहस्पति एक नाडीपर आवे जबभी बडी वारीश हो,-शनि, सूर्य, या, बुधके शाथ चद्रमा एक नाडीपर आवे, उस-रौज वारीशकी खेंच रहे,—

७९ बुधः शुक्रः समीपस्थः-करोत्येकार्णवा महीं,
तयोरतर्गतो भानुः-समुद्रमपि शोषयेत्-१

बुध-शुक्र-चौमासेके दिनोंमें एकशाथ हो-तो-वारीश खूब हो, अगर-इनदिनोंमें इनके वीच-सूर्य-आजाय-तो-वारीशकी खेंच रहे, -जिस साल आषाढ सुदीमे बुधका उदय हो,-और-श्रावण महिनेमे शुक्रका अस्त हो-तो-जमाना विगडे और दुष्काल पडे.—

८० जिससाल चौमासेके दिनोंमे-कर्क, कन्या, मकर, और मीनराशिपर शुभग्रह हो-तो-उससाल वारीश अछी हो, अगर क्रूर ग्रह हो-तो-वारीस-कम-हो, आषाढ-श्रावणमे-कर्क, और भादवे आसो

-जैसे कन्यापर-बुध, शुक्र, आतेही हैं, मगर जब शनि, राहु-या-केतु आजाय-तो-बारीश रुक जाती हैं,—

८१ चित्रास्वातिविशाखासु,-यस्मिन्मासे-न-वर्षण,
तन्मासे निर्जला मेघा,-इति भद्रमुनेर्वचः, १

ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, और-भाद्रपदमहिनेमें दिननक्षत्र-जबजब चित्रा, स्वाति, विशाखा, आवे, उन तीन दिनोंमें बादल, बिजली, बुदपात,-या-वर्षा-न-हो, तो उसउस महिनेमें बारीश कम हो, और अगर बादल, बिजली, बुदपात,-या-वर्षा हो,-तो-उस-उस महिनेमें बारीश अछी हो, ऐसा-भद्रमुनिका-फरमान है,

८२ जबजब बुधशुक्रका मिलाप हो,-या-गुरु शुक्रका मिलाप हो,-या-बुधगुरुका मिलाप हो, उस अर्सेमें जमाना अछा रहे,—

८३ जब सूर्य-कृत्तिकानक्षत्रपर-आवे, और जितने दिनतक रहे, उनदिनोंमें-बादल, बिजली, बुदपात-या-बारीश हो,-तो-अछा है, -चौमासेके [illegible] खूब होगी [illegible] सूर्यमें बा-दल, बिजली, [illegible] दिनोंमें

८७ धन-या-मीनराशिपर मंगल, शनि, और राहु-इकठे होकर आवे-तो-अछा नही, मंगल, शनि-या-राहु-रोहिणीशकटकों वेधे-तो-निहायत बुरा है,

८८ शुक्र अगर शुक्लपक्षमें अस्त होकर शुक्लपक्षमेंही उदय हो-तो-निहायत बुरा है, राजासाहनकों और रियायाकों तकलीफ पेंश होगी, शुक्र जब पश्चिममे अस्त होकर पूर्वमे उदय हो-तो-अंदाज आठरोज लगे, और पूर्वमे अस्तहोकर पश्चिममे उदय हो-तो-अदाज अढाइमहिने लगे,

८९ जबतक मीनराशिपर शनि, कर्कपर बृहस्पति और तुलापर मंगल रहे, दुनियामे तकलीफ पेंश हो, जबजब सातग्रह एकराशिपर आवे और बहुतअर्सेतक रहे-तो-दुनियामे गदर मचे, मगर राहु-या-शनि-उनमे सामील-न-हो,-तो कुछ हर्ज नही, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, और शनि, एक राशिपर आवे राजा-प्रजामे तकलीफ रहे,—

९० शनि,-या-मंगल, हस्त, मघा, रेवती-या-आर्द्रापर वक्र हो, दुनियामे दगेफिसाद हो, एकराशिपर शुक्र शनि अस्त हो,-तो-दुनिया तकलीफ पावे,—

९१ आर्द्रानक्षत्रपर जब सूर्य आवे उसवख्त वृपलग्न हो, और बुध-शाथ हो,-तो-अछा है, सुकाल रहेगा, आर्द्राप्रवेशके रौज-जो-वार-हो,-वो-मेघाधिपति, और कर्कसक्रांतिके रौज-जो-वार हो,-वो सस्याधिपति होता है,—

९२ श्रावणमहिनेकी अमावास्याके रौज-अगर-सूर्यग्रहण हो-तो-बाद तीनमहिनेके बीमारी चले, और दुष्काल पडे, यह योग सवत् (१९२५) मे-था, उसअर्सेमे-ऐसाही-हुवाथा.

९३ दरसाल जेठसुदी-ग्यारस-बारस-और तेरसके रौज बहुतकरके दिननक्षत्र चित्रा, स्वाती,-विशाखा-होते है, इन दिनोंमे-बदल,

-जब कन्यापर-बुध, शुक्र, आतेही है, मगर जब शनि, राहु-या-
केतु आजाय-तो-बारीश रुक जाती है,—

८१ चित्रास्वातिविशाखासु,-यस्मिन्मासे-न-वर्षण,
तन्मासे निर्जला मेघा,-इति भद्रमुनेर्वचः, १

ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, और-भाद्रपदमहिनेमे दिननक्षत्र-जबजब चित्रा, स्वाति, विशाखा, आवे, उन तीन दिनोंमे बादल, विजली, बुदपात,-या-वर्सा-न-हो, तो उसउस महिनेमे वारीश कम हो, और अगर बादल, विजली, बुदपात,-या-वर्सा हो,-तो-उस-उस महिनेमें वारीश अछी हो, ऐसा-भद्रमुनिका-फरमान है,

८२ जबजब बुधशुक्रका मिलाप हो,-या-गुरु शुक्रका मिलाप हो,-या-बुधगुरुका मिलाप हो, उस अर्सेमे जमाना अछा रहे,—

८३ जब सूर्य-कृत्तिकानक्षत्रपर-आवे, और जितने दिनतक रहे, उनदिनोमे-बादल, विजली, बुदपात-या-वारीश हो,-तो-अछा है, -चौमासेके दिनोंमे वारीश खूब होगी, अगर कृत्तिकाके सूर्यमे बादल, विजली, बुदपात-या-वर्सा-न-हो, तो चौमासेके दिनोंमे वारीश अछी-न-होगी, ऐसा जानना,

८४ जबजब शुक्र वक्र हो, दुनिया चैन करे, बुध वक्रहो-तो-दुनियामे महोदय हो, शनि वक्र हो-तो-बीमारी चले, और मगल-वक्र-हो-तो सुकाल रहे, चड, प्रचड, दहन नाडीपर वक्र हो-तोभी कोई हर्ज नही. मगलका वक्र होना अछा है,—

८५ जिससाल सभी सक्राति (४५) मुहूर्तकी होजाय-तो-वो-साल निहायत उमदा होगी, जिससाल-धनसक्राति (४५) मुहूर्तकी-हो-तो-अछा, (३०) मुहूर्तकी हो-तो-मध्यम, और (१५) मुहूर्तकी हो-तो-अछा नही,

८६ जिस साल-अगस्ति-नामका सितारा चद्रशुकके होरेम रातके वख्त उदय हो-तो-अछा है,—

८७ धन-या-मीनराशिपर मंगल, शनि, और राहु-इकठे होकर आवे-तो-अछा नही, मंगल, शनि-या-राहु-रोहिणीशकटकों वेधे-तो-निहायत बुरा है,

८८ शुक्र अगर शुक्लपक्षमें अस्त होकर शुक्लपक्षमेंही उदय हो-तो-निहायत बुरा है, राजासाहनकों और रियायाकों तकलीफ पेंश होगी, शुक्र जब पश्चिममें अस्त होकर पूर्वमे उदय हो-तो-अंदाज आठरोज लगे, और पूर्वमें अस्तहोकर पश्चिममे उदय हो-तो-अंदाज अढाइमहिने लगे,

८९ जबतक मीनराशिपर शनि, कर्कपर बृहस्पति और तुलापर मंगल रहे, दुनियामे तकलीफ पेंश हो, जबजब सातग्रह एकराशिपर आवे और बहुतअर्सेतक रहे-तो-दुनियामे गदर मचे, मगर राहु-या-शनि-उनमें सामील-न-हो,-तो कुछ हर्ज नही, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, और शनि, एक राशिपर आवे राजा-प्रजामे तकलीफ रहे,—

९० शनि,-या-मंगल, हस्त, मघा, रेवती-या-आर्द्रापर वक्र हो, दुनियामे दगेफिसाद हो, एकराशिपर शुक्र शनि अस्त हो,-तो-दुनिया तकलीफ पावे,—

९१ आर्द्रानक्षत्रपर जब सूर्य आवे उसवख्त वृपलग्न हो, और बुध-साथ हो,-तो-अछा है, सुकाल रहेगा, आर्द्राप्रवेशके रोज-जो-वार-हो,-वो-मेघाधिपति, और कर्कसंक्रातिके रोज-जो-वार हो,-वो सस्याधिपति होता है,—

९२ श्रावणमहिनेकी अमावास्याके रोज-अगर-सूर्यग्रहण हो-तो-बाद तीनमहिनेके बीमारी चले, और दुष्काल पडे, यह योग संवत् (१९२५) मे-या, उसअर्सेमे-ऐसाही-हुवाथा.

९३ दरसाल जेठसुदी-ग्यारस-बारस-और तेरसके रोज बहुतकरके दिननक्षत्र चित्रा, स्वाती,-विशाखा-होते है, इन दिनोंमे-बदल,

विजली, और वारीशकी हिलचाल-न-हो,-तो चौमासेमे वारीश-न-होगी, और अगर इनदिनोंमे वदल, विजली,-या-वारीशकी हिलचाल हो,-तो-चौमासेके दिनोंमे-अछी वारीश होगी, और सुकाल रहेगा, मजकूर वात जेठसुदी ग्यारस-वारस-और-तेरसके रोज देखना चाहिये,

९४ जव सूर्य अगली राशिपर और शुक्र पिछली राशिपर हो, दरमयान उनके चद्रमा आजाय, तो उतने अर्सेतक अनाज सस्ता वीके, शुक्र शनि-जव-एक राशिपर हो, और उनके पीछे जव बुध आजाय तवभी अनाज सस्ता वीके, और रियाया चैन करे,—

९५ मगल शुक्र-जव-एकसाथहोकर तुलाराशिपर आवे-तो-राजाओमे लडाई रहे, रेवती-या-भरणीनक्षत्रपर जवजव शनि, राहु,-या-मगल आवे अनाजके भाव तेज रहे, मकरसक्राति-शुभवारी-हो-तो-अछा, अशुभवारी हो-तो-अछा नही

९६ नक्षत्रसवत् नक्षत्रसें वदले, ओर ऋतुसवत् ऋतुसें वदले, चद्र सवत् पौर्णिमासें, सूर्यसवत् सूर्यसक्रांतिसें, और अभिवर्द्धित-सवत्-तेरहमहिनेसे वदलता है, मगर जैनशास्त्र-कल्पसूत्रवृत्तिका फरमान है, अधिक महिना-व्रत-नियमकी अपेक्षा गिनतीमे शुमार नही करना

९७ जिसवर्समे आर्द्रानक्षत्रपर-सूर्य-रातके वख्त आवे-तो-अछा, दिनमे आवे-तो-अछा नही आर्द्रा-नक्षत्रसे लेकर हस्तनक्षत्र पर जवतक-सूर्य-रहे, वारीशके दिन-शुमार-किये जाते है,-और-उनदिनोंमे-सूर्य-सौम्य-नीर-जल-और अमृतनाडीपरही-सफर करता है, पेस्तर नाडीचक्रमे लिखागया है,-देखलो!

९८ चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, रोहिणी, मघा, मृगशिर, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा,-या-विशाखा-इनइन नक्षत्रोंकी उत्तरसे होकर-जवजव-चद्रमा चले,-उससाल-वारीश-अछी हो, और

सुकाल रहे, अगर-इनइन-नक्षत्रोंकी दरखनमे होकर चद्रमा चले-तो-उससाल वारीश अछी-न-हो, और दुष्काल पडे, मजकुर-योग -आसानमे देखनेका है,-जो-महाशय! ज्योतिष्चक्रकों आसानमें देखना जानते होगें, वखूबी जानसकेगें, जिसअर्समे दुमदार सितारा दिखाइ-दे-तो-लोगोंकों-तकलीफ-पेंश हो,

९९ चौमासेके दिनोंमे जबजब बुध-शुक्र-सिंहराशिपर आवे और उसअर्समें चद्रमाभी-सिंहराशिपर आजाय-तो-उनदिनोमे वारीश अछी हो, बुध, शुक्र,-या-मगल, एकशाथ-या-अलग-अलग-जब जब-आश्लेषा नक्षत्रपर आवे दुनिया आराम-चैन-करे, उसवख्त-ये -तीनोंग्रह अमृतनाडीपर रहते है,—

१०० [जैन नजुमग्रंथ-त्रैलोक्यप्रकाश,-]

[स्रग्धरा-वृत्तम्.]

शुक्रास्ते भाद्रमासे,-शुभभगणगते,-वाक्पतौ सौख्यहेतौ,-
ज्येष्ठाषाढे सुवारे,-शशिसितभगणेपूदिते निश्चयगस्त्ये,
क्रूरे भूपादिवर्गे-विघटिनिसमये-मंगले वक्रितेपि.—
चापाढ्याः पूर्वधिष्ण्ये,-प्रहरवसुगते-जायते दिव्यकालः,-१

त्रैलोक्यप्रकाश-जैननजुमग्रथमे-सुकाल दुकालदेखनेका तरीका इसतरह बयान किया,-और-इसका-मतलब-उपरके लेखमें आगया है,-इसलिये यहा नही लिखा,—

१०१ राहुकेतू सदा वक्रौ,-शीघ्रगौ चद्रभास्करौ,-
गतेरेकस्वभावत्वात्तेषा दृष्टित्रय सदा, १
वक्रगे दक्षिणा दृष्टि, र्वामा दृष्टिश्च शीघ्रगे,
मध्यचारे तथा मध्या, ज्ञेया भौमादिपचके, २
स्वक्षेत्रस्थे बल पूर्ण पादोन मित्रमे गृहे,
अर्ध समगृहे ज्ञेय,-पाद शत्रुगृहे स्थिते,-३

राहु-केतु-हमेशा वक्र, और चाद-सूर्य-हमेशा शीघ्र चलते है,

-और इनकी दृष्टि हमेशा तीनोंतर्फ रहती है,-मजकूर बयान सर्वतोभद्र-ज्योतिष्चक्रम देखनाचाहिये, जो-शख्श सर्वतोभद्रचक्रकों नही जानते-इसबातकों नही समज सकेंगें, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र-और-शनि-इन पाचग्रहोकी दृष्टि जब-ये-वक्रगतिसें चले-दाहनीतर्फ -शीघ्रगतिसे चले बायीतर्फ, और मध्यगतिसे चले-तो-मध्यमे रहती है, सब ग्रह जबजब-स्वक्षेत्रीहो-तो-पुराफल करते है,-मित्रक्षेत्री हो-तो-चारा आने, सम हो-तो-आधा, और शत्रुक्षेत्री हो-तो-चतुर्थांश फल देते है,—

१०२ ग्रहाः क्रूरास्तथा सौम्या,-वक्रमार्गोच्चनीचगाः,
स्थान च वेध्यमित्येव,-बल ज्ञात्वा फल वदेत्,-१
वक्रग्रहे फल द्विग्न, त्रिगुण स्वोच्चसस्थिते.—
स्वभावज फलं शीघ्रे, नीचस्थोर्धफलप्रदः,-२

चाहे क्रूरग्रह हो,-या-सौम्य हो, वक्र हो-या-मार्गी हो,-उच्च हो-या-नीच हो, स्थान और बल देखकर उनका-फल-कहना चाहिये,-जब-ग्रह वक्री हो,-तो-दुगुना फल करे,-उच्च हो-तो-तीन गुणा, शीघ्रगति हो-तो-मामुली और नीचस्थानका हो-तो-आधा फल करे,—

१०३ तिथि ऋक्ष स्वर राशि, वर्ण चैव-तु-पचम,
यद्दिने विध्यते चद्र'-तद्दिने स्यात् शुभाशुभ, १
ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि,-क्रूरमुक्तादिकानि च,
भुक्त्वा चद्रेण मुक्तानि, शुभार्हाणि प्रचक्षते, २

जिसरौज चद्रमा जिस तिथिकों-वेधे,-जिस नक्षत्रकों-वेधे, जिसस्वरकों, जिसराशिकों, और जिसअक्षरकों वेधे, उसकों सर्वतोभद्र चक्रम देखकर शुभाशुभ फल कहना चाहिये,-क्रूरग्रहोंसें-जो-जो-नक्षत्र वेधित हो, जिस जिस नक्षत्रपर क्रूरग्रह बेठे हो, अगर उनपर चद्रमा आनकर चलाजाय-तो-वे-नक्षत्र शुभ होजाते है,—

१०४ स्वचक्र परचक्र वा,–न–कदाचित् प्रजायते,
बाधनाः सुहृदस्तत्र,–शुभाना वेधसंभवे १

सर्वतोभद्रचक्रमें देखना चाहिये,–जब–शुभग्रहोंका वेध हो,–तो–मुल्कोंमे बारीश अछी हो, राजा–प्रजाको स्वचक्रपरचक्रका खौफ–न–हो, (यानी) अपने मुल्कमे–टटे–बखेडे–न–हो, गनीमोकी फौज अपने मुल्कपर चढकर–न–आवे, और भाइयोंमे मोहब्बत बढे,—

[संवत्के वरतारा निकालनेकी तरकीब खतम हुई,]

[वस्तुकी तेजीमंदी जाननेकी तरकीब,–]

१ वस्तुकी तेजी–मदी–जाननेकेलिये अवल उनकी राशिकों जानना चाहिये, विदून राशिजाने तेजी–मदी–मिलसकेगी नही, कपासकी मिथुनराशि, अलसीकी मेपराशि, एरडेकी वृपराशि, चादीकों शास्त्रोंमे–रजत–लिखा, इसलिये उसकी तुलाराशि हुई, सूत्रकी कुंभराशि, मोतीकी बोलतेनामसें सिंहराशि होती है, मगर उसकी पैदाश जलसें होनेकी वजहसें शास्त्रोंमे उसकी मीनराशि लिखी, खैरकी कुंभराशि, सोनेकी बोलते नामसें कुंभराशी आती है,–मगर–शास्त्रोंमे उसकी मेपराशि फरमाई, सरसोंकी कुंभराशि, गेहुंको शास्त्रोंमे गोधूम लिखा, इसलिये उसकी कुंभराशि हुइ, चावलकों शास्त्रोमे अक्षत–और शालि बोलते हैं,–अक्षतके नामसें मेपराशि–और–शालिके नामसें कुंभराशि होती है,–दोनोंतरहसें तेजी–मदी–मिलसकेगी, शास्त्रफरमान गलत नही होता, बाजरेकी वृपराशि, जवारकी वृश्चिकराशि, सनन–शास्त्रोंमें इसका नाम युगधरी लिखा, तिलकी तुलाराशि, खाडकों शास्त्रोंमें शर्करा बोलते है, इस लिये उसकी कुंभराशि हुइ, वस्त्रकी वृपभराशि, घृतकी मिथुनराशि, रेशमकी तुलाराशि, केशर और कर्पूरकी मिथुनराशि, और गुडकी कुंभराशि, है, इसतरह चीजोंकी राशि मुकरर करके आगे दिखलाइ हुइ तरकीबसें तेजी–मदी–देखना चाहिये,—

२ अनल पाच क्रूरग्रहोका बयान तेजी-मदीके लिये सुनिये! सूर्य, मगल, शनि, राहु, और-केतु-ये-पाच क्रूरग्रह है,-जिस राशिसें सूर्य, मगल, शनि, राहु,-या-केतु, तीसरे, छठे, दशमे, ग्यारहमे आजाय-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव मदे होजाय, सबब-ये-उपचयस्थान है,-जिसराशिसें इन्ही पाचग्रहोमेसें कोई क्रूरग्रह पहले, दुसरे, चौथे, पाचमे, सातमे, आठमे, नवम, बारहमे आजाय-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव तेज होजाय, सबब-ये-पीडास्थान है,—

३ चार शुभग्रहोका बयान तेजी मदीके लिये सुनिये! जिसराशिसें चद्रमा, चौथे, आठम, बारहमे आजाय-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव-तेज-होजाय -जिसराशिसें चद्रमा-पहले, दुसरे, तीसरे, पाचमे, छठे, सातमे, नवमे, दशमें, ग्यारहमें आजाय-तो-उसराशिकी चीजोंके-भाव-मदे होजाय.

४ जिसराशिसें बुध-दुसरे, पांचमे, आठमें दशमे,-या-ग्यारहमे आजाय-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव-मदे-होजाय, और जिसराशिसे बुध-पहले, तीसरे, चौथे, छठे, सातमें, नवम-या-बारहम आजाय-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव-तेज-होजाय.

५ जिसराशिसें बृहस्पति-दुसरे, चौथे, पाचमे, सातमे, नवमे, दशमे,-या-ग्यारहमे स्थानपर आवे-तो-उसराशिकी चीजोंके-भाव -मदे-होजाय, और जिसराशिसें-पहले, तीसरे, छठे, आठमें-या-बारहमे स्थानपर आवे-तो-उसराशिकी चीजोके भाव-तेज-होजाय.

६ जिसराशिसें शुक्र-पहले, दुसरे, तीसरे, चौथे, पाचमे, आठमे, नवम, दशमे, ग्यारहमे,-या-बारहमें स्थानपर आवे-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव-मदे-होजाय, और जिसराशिसें शुक्र-छठे, सातमें,-स्थानपर आवे-तो-उसराशिकी चीजोंके भाव-तेज-होजाय, मगर इतना-याद-रहे, जिसराशिसें कोईग्रह-तेजीकरनेके स्थानमें आजाय -और-उसवख्त उसराशिको कोइ शुभग्रह बलवान् होकर देखता हो

–तो–तेजी–न–करे, और–जो–उसराशिकों कोई–अशुभग्रह बलवान् होकर देखता हो,–तो–तेजी–जरूर करे,

७ चंद्र–या–सूर्य–जिसजिस राशिमे आजाय उसवरत अगर उस राशिमें मित्रग्रह–बेठे हो,–या–मित्रग्रह उनको–पूर्ण दृष्टिसें देखते हो –तो–तेजी करनेके स्थानपरभी मंदीकरनेके सूचक होजाय, और अगर–शनि, राहु,–या–केतुके शाथ होजाय–या–ये–अशुभग्रह उनकों पूर्ण दृष्टिसे देखते हो,–तो–मदी करनेके स्थानपरभी तेजीकरनेके सूचक होजाय, चंद्र, सूर्य, मंगल, और बृहस्पति–आपसमे नैसर्गिक मैत्रीसें मित्र है, बुध, शुक्र सौम्य है, अगर इनकेशाथ चद्र सूर्य आजाय, –तो–मंदी करे, और उपर दिखलाये मुजब–शनि,–राहु,–केतुके शाथ आजाय–तो–तेजी करे,

८ सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु,–ये–पाच, क्रूरग्रह और चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र–ये–चारा सौम्यग्रह–जो–उपर बतला चुके है, और उनके–तेजी–मदीके स्थानभी बतला चुके है, उसउस जगहपर समजो –वे–आये है,–या–उनके नवांशेमेंभी–उस उस जगहपर आये है, अगर उसवरत–ये–उच, मित्रक्षेत्री–या–स्वगृही हो,–तो–पुराफल करेंगे, अगर नीच, अस्त,–या–शत्रुक्षेत्री होगें–तो–कमजोर होनेसें अपनी–तेजी–या–मदी–कुछ–न–करसकेगें, यह सब नैसर्गिक–मैत्रीके खयालसें बयान किया गया,

९ तात्कालिक–मैत्रीसें–वस्तुकी तेजी–मंदी–देखनेकी तरकीब, तात्कालिक मैत्री किसकों कहना–उसका बयान सुनिये,—

"अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबधुस्थिताः–तत्काले सुहृदः"

जिसग्रहसे–जो–ग्रह दुसरे, तीसरे, चौथे, दशमें, ग्यारहमें, बारहमें, आजाय, वो–ग्रह तात्कालिकमैत्रीमे मित्र हुवा, उससेभी–तेजी –मदी–देखनाचाहिये, अगर इसबातकी किसीको पुरी मालुम–न–हो–तो–किसी अछे नजुमीको मिलकर पुछे, और इल्म हासिल करे, इल्म–नो–चीज है,–जो–विदून सीखे आसकता नही,—

१० फर्ज करो ! कार्पासकी-राशि-मिथुन है, और उसराशिका मालिक बुध हुवा, जिसवख्त बुध-जहा-बेठा हो, उसराशिका मालिक उसवख्त बुधसे दुसरे, तीसरे, चौथे, दशमे, ग्यारहमें-या-बारहमें हो-तो-मित्र हुवा, उसवख्त-बुध बलवान् होगया,-वो-पुरा फल देगा, अगर निर्बल हो-तो-फल-न-देगा,

११ चद्रमा जिसवख्त जिसजिस राशिमें आवे, उसवख्त उसरा शिके मालिकसे तात्कालिक मैत्रीमे मित्र है-या-शत्रु ? इसबातकों देखो, अगर मित्र है,-तो-पुराफल करेगा, अगर शत्रु है-तो-फल-न-करेगा,

१२ जो-ग्रह-राहुके शाथ वेठा हो, और राहुके अशोंसे-कम-अश हो, तो-राहुके मुखमें आगया जानना, फर्ज करो ! राहु-सिंह, राशिके (२०) अश है,-और चद्रमा सिंहराशिके (९) अश है, इनका अतर (११) अशका हुवा, उसवख्त चद्रमा-राहुके-मुखम है, ऐसा जानना, इसीतरह सबग्रहोके लिये समजो,-जो-ग्रह-राहुके मुखमें आया-वो-कमजोर होगया, उसवख्त-वो-कुछ फल-न-करेगा, (१२) अशस ज्यादा अतर हो-वो-ग्रह-राहुके मुखम नही ऐसाजानना, और-वो-ताकातवाला है,-फल-जरूर करेगा,—

[तात्कालिक मैत्रीसे वस्तुकी तेजीमदी देखनेकी तरकीब खतम हुइ]

[वस्तुकी तेजी-मदी देखनेकी तीसरी तरकीब,-]

१३ कौनसी चीजकी तेजीमदी देखना है, और-वो-चीज किसनक्षत्रके ताल्लुक है,-उसनक्षत्रपर-जब-जब-शुभग्रह आवे-तो-वो चीज सस्ती बीके, और क्रूरग्रह आवे-तो-महघी बीके, अगर शुभग्रह और क्रूरग्रह एकशाथ आवे,-तो-ज्यादाग्रह कौनसे है ? तेजीके -है, ? या-मदीके ? इसबातको देखना, और इनमें बलवान् कौन ? जो-ग्रह-उंच, मित्रक्षत्री,-स्वगृही, साशका-वर्गोत्तमी हो,

उसकों बलवान् समजना. और-जो-नीच, शत्रुक्षेत्री-शत्रुके नवाशका,-या-नीचाश हो,-वो-निर्वली समजना, हरेक महिनेकी वदीपक्षकी पचमीसें-सुदीपक्षकी पंचमीतक चद्रमा-अशुभ और वाकीके दिनोंमें चद्रमा शुभ समजना, इसतरह सौच-समजकर वस्तुकी तेजी-मंदी देखना चाहिये,—

[वस्तुकी तेजी-मदी-देखनेकी तरकीब खतम हुइ -]

---

१ [गइहुइ-चीज-मिलेगी-या-नही !-]

(उसके देखनेकी तरकीन-बजरीये-नजुमके,-)

" बाले भमइ पासे,-तरुणे जाइ-न-जायइ-थनीरे,—"

जिसवख्त-सूर्य-जिसनक्षत्रपर हो, उसनक्षत्रसें लगाकर-छह-नक्षत्र-बालसंज्ञावाले शुमार कियेजाते है, उसके आगेके बारा नक्षत्र तरुणसज्ञावाले कहेजाते है, और उसके आगे बाकी रहेहुवे नव नक्षत्र स्थविरसज्ञावाले कहेजाते है,-बालसज्ञावाले नक्षत्रमें गइहुई-चीज-नजीकमे है, दूर नही गइ, मिलजायगी, तरुणसज्ञक नक्षत्रमे गइहुई -चीज-मिलनेका सभव नही, और स्थविरसज्ञावाले नक्षत्रमे गइहुई चीज खौजकरनेसें मिल सकेगी,—

२ [दुसरी-तरकीब,]

जिसनक्षत्रमे चीज गइ हो, उसनक्षत्रसें नजरीये नजुमके देखना, और अगर-वो-याद-न-हो-तो जिस रौज उसकेलिये कोइ पुछने आवे, उस दिनके नक्षत्रसें देखना.—

---

१ अश्विनीमे गइहुई चीज (९) रौजम मिले,—
२ भरणीमे १५ दिन,
३ कृत्तिकामे चीज मिले नही,
४ रोहिणीमे ७ दिन,
५ मृगशिरामे ३० दिन,
६ आर्द्रामें मिले नही,
७ पुनर्वसुमें मिले नही,

८ पुष्यमे ७ दिनमें मिले,
९ आश्लेषाम मुश्किलसें मिले,
१० मघाम २० दिन,
११ पूर्वाफाल्गुनीम मिले नही,
१२ उत्तराफाल्गुनीम ७ दिन,
१३ हस्तमे १५ दिन,
१४ चित्रामे १६ दिन,
१५ स्वातिमे चीज मिले नही,
१६ विशाखामे १५ दिन,
१७ अनुराधामे तकलीफसें मिले,
१८ ज्येष्ठामे पता लगे, मगर मिले नही,
१९ मूलमे मिले नही.
२० पूर्वाषाढामें जल्दी मिले,
२१ उत्तराषाढामें देरसें मिले,
२२ अभिजित्‌म १२ दिन,
२३ श्रवणमे मिले नही,
२४ धनिष्ठामें जल्दी मिले,
२५ शतभिषामे देरसे मिले,
२६ पूर्वाभाद्रपदामे पता लगे, मगर मिले नही,
२७ उत्तराभाद्रपदामे मिले नही,
२८ रेवतीमे कोशिससें मिले,

१ [किसनक्षत्रके रौज कौनसी चीज खाकर मुसाफरीकों जाना ?-]

अगर कोइ शख्श कृत्तिकानक्षत्रके रौज मुसाफरी जाय-तो-चलते वख्त-पाच-साततोले-दही-खाकर जाय, काम फतेह होगा, आर्द्रा नक्षत्रके रौज जाय-तो-दो-चारतोले ताजा-मख्खन-खाकर जाय, मुराद हासिल होगी, पुनर्वसुनक्षत्रके रौज सफरको जाय-तो-चलते वख्त-दो-चार-तोले ताजा-घृत-खाकर जाय, इरादा पूर्ण होगा,

२ पुष्यनक्षत्रके रौज मुसाफरीको जाय-तो-खीर-खाकर जाय, दिलकी मुराद पार पडेगी,-चित्रानक्षत्रम सफरको जाय-तो-पकाइ हुइ मुगकी दाल खाकर जाय, काम फतेह होगा, स्वाती नक्षत्रके रौज मुसाफरीको जाय-तो-किसीतरहका मीठाफल खाकर जाय, मनोकामना पुरीहोगी, अभिजित्‌नक्षत्रके रौज सफरकों जाय-तो-गुलाब, चमेली, जाई, जुही, डमरा, मरुआ, वगेरा किसीतरहका खुशबूदार

फ़ल-खाकर जाय, इरादा पूर्ण होगा, श्रवणनक्षत्रके रौज अगर कोई मुसाफरीकों जाय खीर खाकर रवाना हो, दिलकी मुराद पारपडे.—

३ अगर कोई शतभिषा-नक्षत्रके रौज मुसाफरीकों जाय-तो-पकाइहुई तुअरकी दाल खाकर जाय, काम फतेह होगा, भरणीनक्षत्रके रौज-अगरकोइ सफरकों जाय-तो-पकेहुवे चावलमे तिल मिलाकर खाय, और रवाना हो, इरादा पूर्ण होगा, उपरदिखलाये हुवे-नक्षत्रोंमे अगरकोई शख्श चद्रस्वरमे बायापाव उठाकर रवाना हो-तो-उसका काम फतेह होगा, इसमे कोइ शक नही, मगर चलतेवख्त नासाग्रदृष्टि रखकर मन-वचन-कायाकी एकाग्रतासे तीनदफे परमेष्टिमहामत्रका मनमे जापकरना चाहिये और चौईस तीर्थंकरोंके नाम लेना चाहिये, मुराद हासिल होगी,—

[रोगावली-चक्र,-]

१ जिसरौज-जिसशख्शकों बीमारी पैदा हो, उसकेलिये पंचागमे देखना कौनसा-वार-और-कौनसा नक्षत्र है, उसकों देखकर इस-रोगावली चक्रकों देखना. और अदाज करना, यह बीमारी कितने रौज रहेगी,-जो-बीमारी-वख्तमरनेके आती है-वो-दूर-न-होगी,-जो-मामुली बीमारी आती है,-वो-कितने रौज रहेगी, इस चक्रके पढनेसें मालुम होगा, नक्षत्र मिले और इसमे लिखे मुजब-वार-न-मिले-तो-वो-बीमारी कमजोर समजना.

२ जिसरोज अश्विनीनक्षत्र हो, और रवि, सोम,-या-शुक्रवार हो, उसरोज बीमारी पैदा हो-तो-जानना (२१) रौज तकलीफ रहेगी, फिर आराम होगा, भरणी नक्षत्रके रौज बीमारी पैदा हो-तो-मरणात-कष्ट होगा, कृत्तिका नक्षत्र और गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-आठरौज तकलीफरहे, रोहिणी नक्षत्रके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(७) रौज तकलीफ-फिर-आराम,-मृगशिरनक्षत्रके रौज चाहे, कोईभी-वार-हो, बीमारी पैदा हो-तो-एकमहिना तकलीफ रहे, फिर आराम हो,

३ आर्द्रा-नक्षत्रके रौज-मगल-या-शुक्रवार हो, उसरौज बीमारी पैदा हो-तो-मरणात-कष्ट होगा, पुनर्वसुनक्षत्र-और-रवि, बुध, शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(२५) रौज तकलीफ-फिर आराम, पुष्यनक्षत्र-सोम, बृहस्पतिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(१३) रौज तकलीफ फिर आराम, अश्लेषा-नक्षत्र-सोम,-या-शुक्रवारके रोज बीमारी पैदा हो-तो-मरणात-कष्ट होगा,

४ मघानक्षत्र-रवि, बुध,-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(१९) रौज तकलीफ, फिर आराम, पूर्वाफाल्गुनि नक्षत्र-सोम, गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(११) रौज तकलीफ, फिर आराम, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र,-सोम, शुक्रवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(२५) रौज तकलीफ रहे, फिर आराम हो, हस्तनक्षत्र, रवि, बुध,-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(१५)रौज तकलीफ, फिर आराम,—

५ चित्रानक्षत्रम सोम-या-गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो,-तो-पनराह रौज तकलीफ फिर आराम, स्वातिनक्षत्र, रवि, बुध,-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो,-तो-दशरौज तकलीफ, फिर आराम, विशाखानक्षत्र, रवि, मगल-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-मरणात कष्ट हो, अनुराधानक्षत्र-बुधवारके रौजबीमारी पैदा हो,-तो-चाररौज तकलीफ फिर आराम, ज्येष्ठानक्षत्र गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-बीशरौज तकलीफ-फिर आराम,—

६ मूलनक्षत्र-रवि, मगल,-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-मरणात कष्ट होगा, पूर्वापाढानक्षत्र-सोम-या-बुधवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-पाचरौज तकलीफ फिर आराम, उत्तरापाढानक्षत्र-गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-तीनरौज तकलीफ, फिर आराम, श्रवणनक्षत्र-रवि, मगल, या-शनिवारके रौज-बीमारी पैदा हो-तो-पचीसरौज तकलीफ फिर आराम —

७ धनिष्ठानक्षत्रके रौज कोईभी वार हो, बीमारी पैदा हो,-तो-पचीसरौज तकलीफ फिर आराम, शतभिषानक्षत्र, गुरु, शुक्र-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(१००) रौजतक-तकलीफ फिर आराम. पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र-रवि, मगल,-या-शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-मरणातकष्ट हो, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र-सोम-या-बुधवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-आठरौज तकलीफ, फिर आराम, रेवतीनक्षत्र, गुरु,-या-शुक्रवारके रौज बीमारी पैदा हो-तो-(१००) रौज तकलीफ रहे,-फिर आराम हो.—

८ जिसशख्शकी जन्मराशि-मेष-हो, उसको अगर पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा-या-पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रमे बीमारी पैदा हो-तो-मरणात कष्ट हो, वृषराशिवालेकों हस्तनक्षत्रमे बीमारी पैदा हो-तो-सख्त-तकलीफ हो, मिथुनराशिवालेकों स्वातिनक्षत्रमें, कर्कराशिवालेकों अनुराधामे, सिंहराशिवालेको पूर्वाषाढामे, कन्याराशिवालेकों श्रवणमे, तुलाराशिवालेको शतभिषामे, वृश्चिकराशिवालेकों रेवतीमे, धनराशिवालेको भरणीमे, मकरराशिवालेकों रोहिणीमे. कुंभराशिवालेको आर्द्रामे, और मीनराशिवालेकों अश्लेषा नक्षत्रमे बीमारी पैदा हो,-तो-सख्त तकलीफ होगी,—

९ बीमारीकी हालतमेभी धर्मको भूलना नही चाहिये, जैनशास्त्रोमे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, पुस्तक, प्रतिमा, और मंदिर-इन सातों क्षेत्रोंमे दौलत सर्फ करना, और गरीबोंको रहेमदिलीसे खेरता देना कहा, बदौलतधर्मके इसजीवको आराम-चैन मिला और आइंदेमिलेगा, दुनियामे उमदाचीज धर्म है,—

[बयान-रोगावलीचक्रका-खतम हुवा,-]

———

[सूर्यवगेरा आठग्रहोंसे-आठकर्मोंका-हाल-
देखनेकी तरकीब-]

१ सूर्यसें ज्ञानावरणीय-कर्मका-हालदेखना, जिसकी जन्मपत्रीम -प्रश्नपत्रीम-या-दीक्षालग्नमे अगर सूर्य उच,-स्वगृही-या-मित्रक्षेत्री हो-तो-वो-शख्श बहुतज्ञानी होगा, चद्रमासे दर्शनावरणीय कर्मका हाल दरयाफ्त करना, जिसके चद्रमा-उच, स्वगृही,-या-मित्रक्षेत्री हो-मित्रग्रह-या-शुभग्रह उसको देखते हो, या-साथबेठे हो, उसकी धर्मपर निहायत उमदा श्रद्धा बनीरह,-और-वो-शख्श धर्मपर कामील एतकात हो, मगलसें वेदनीकर्मका हाल देखना, बुधसे मोहनीय-कर्म देखना, बृहस्पतिसे नामकर्मका हाल देखना, यानी-इज्जत आवरु केसी रहेगी वगेरा वात जानना,-शुक्रसे गोत्रकर्मका हाल देखना, शनिसें-आयुष्य कर्मका-और-राहुस अतराय कर्मका-हाल-देखना चाहिये

२ आसमानमें-ग्रह, नक्षत्र, तारा, और-जो-चद्र सूर्यके विमान दिखाइ-देरहे है, उनके मिलने-न-मिलनेके निमित्तसे ज्ञानीयोंने नजुमको बयान किया, और-वो-सचा है, मगर देखनेवाला सचा होना चाहिये, नजुम-बेशुमार है,-जितना-मालुमहुवा-यहा-दर्ज किया, ज्ञानीयोंने नजुमको अछीतोरसें-देखा, तो इम्तिहानके मेदा-नमे सचा पाया,—

[तफसील-औरतोंके जन्मग्रहोंकी-बजरीये नजुमके-,]

१ औरतके लिये उसके खाविंदका-सुख-जन्मपत्रिकामे सातमें भुवनसें देखना चाहिये, शरीरका सुख-लग्नसे-देखना, बेटा-बेटीके लिये पचमस्थानसे देखना, और वैधव्ययोग आठमेस्थानसे तेहकीकात करना —

२ वृषभलग्नमे जन्मीहुई औरत-खूबसुरत-पढीलिखी-और अपने खाविंदके हुक्मकी तामील करनेवाली होगी, कर्कलग्नमे जन्मीहुईभी इसीतरह पढी-लिखी-चतर, और खूबसुरत होगी,-सिंहलग्नमे जन्मी

हुई औरत वेपरवाह और सख्तमिजाज होगी. कन्यालग्नमें जन्मी हुई औरत सरल स्वभाववाली, और शुस्तमिजाज रहेगी. और मकरलग्नमे पैदा होनेवाली-औरत-खुशमिजाज और धर्मपावद वनी रहेगी,

३ जिसऔरतके लग्नमें सूर्य पडा हो,-वो-सख्तमिजाज हो, तीसरे स्थानमे सूर्य पडा हो-तो-वो-सुखचैन भोगे, लाभस्थानमे पडा हो-तो-उसके पास दौलत वनी रहे. जिस औरतके धनभावमें-या-सप्तमभावमे-चंद्रमा पडा हो-वो-दौलतमद और चतर होगी.

४ जिस औरतके दुसरे, तीसरे, चौथे, सातमे, नवमे, दशमे, या-ग्यारहमे स्थानमे बुध पडा हो, वो-आरामतलब-चतर-और दौलतमद होगी, जिस औरतके लग्नमे, दुसरे, चौथे, सातमे, नवमे, दशमे-या-ग्यारहमे बृहस्पति बेठा हो, वोभी आरामचैन भोगनेवाली दौलतमद और धर्मपानंद होगी.—

५ जिस औरतके शुक्र-लग्नमे, दुसरे, चतुर्थस्थानमे, पाचमे, सातमे, नवमें, दशमे,-या-ग्यारहमे पडा हो, वो-खूबसुरत पढीलिखी और धर्ममे निहायतपानंद वनीरहेगी, जिस औरतके जन्मलग्नमे समराशि हो,-और उसमे चद्र, बुध, गुरु-या-शुक्र बेठा हो, और इसीतरह सप्तमभावमेभी समराशि हो, और उनमे शुभग्रह बेठे हो,-या-उनपर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो, वो-नसीनेदार और आरामतलब होगी, नोकर चाकर उसके पास वने रहेंगे,—

६ जिस औरतके शुक्र-लग्नमे पडा हो, वो-खूबसुरत हो, मगल-पडा हो-वो-सख्तमिजाज हो, बृहस्पति पडा हो-वो-नेकचलन-और शनि पडा हो-वो-दुखसे जींदगी गुजारनेवाली हो, जिस औरतके सप्तमभावमे-दो-शुभग्रह पडे हो, या-दो-शुभग्रहोंकी दृष्टि हो, उसकों दौलतमद खाविद मिले और आरामतलब हो, जिस औरतके सप्तमभावमे तीन शुभग्रह पडे हो-या-उसभावपर तीनशुभग्रहोंकी दृष्टि हो, वो-राजाकी रानी हो, नोकर-चाकर उसकी खिदमतमे वने रहे. और आरामचैनमें रहे,—

७ जिस औरतके सप्तमभावमें वृषराशिका चद्रमा पडा हो,-वो-खूबसुरत हो, और उमदा पुशाक पहने,-उसके पास नोकर-चाकर और सवारीका-सुख बना रहे,-जिस औरतके लग्नमें-या-सप्तमभावमें-बुध-उचकाहो वोभी निहायत आरामतलब बनीरहे, उमदा पुशाक और जवाहिरातके गेहने पहने, उसका खाविंद उसपर खुश रहे, जिस औरतके सप्तमभावमे-उचका बृहस्पति पडा हो, वो-धर्मपर साबीतकदम रहे, अपने खाविंदके हुक्मकी तामीलकरे और सुखचैन भोगे, जिस औरतके सप्तमभावमे उचका शुक्र पडा हो, वोभी -निहायत आरामतलब-खूबसुरत और सगीतकलाकी जानकार हो. वीणा-सितार वगेरा बाजा बजा सके और उमदा गाना गावे, नवमे स्थानमे शुभग्रह पडा हो-तो-तीर्थोकी जियारतकरे, धर्मशालावगेरा बनावे, और धर्ममे कामीलएतकात रहे,

८ जिस औरतके सप्तमभावमे-शनि-या-राहु-पडा हो,-वो-तकलीफसें जींदगी गुजारे, उमदा पुशाक-या-गेहने-उसकों मिले नही, और खानपानसेभी तग रहे, अगर सप्तमभावमे उचका-शनि-या-उचका राहु-पडा हो,-तो-खाविदका उसको सुख रहे —

९ जिस औरतके लग्नसे सातमे-या-चद्रमासे सातमे स्थानमे कोई पापग्रह पडा हो, उसको खाविंदका सुख नही, दोनोंका नाईत्तिफाक रहे-या-दोनोंमेसे एकका-इतकाल होजाय.—

१० जिस औरतके सप्तमभावमें-या-अष्टमभावमे पापग्रह-न-हो, और शुभग्रह पडा हो, वो-भसीबेदार हो, उसका खजाना-तर-रहे, -और-आरामचैनसे जींदगी गुजारे, जिस औरतके लग्नमे-बुध-उचका हो, ग्यारहमें स्थानमे गुरुहो, दुसरे शुक्र और दशमे चद्रमा हो, ऐसे वख्तमें जन्मीहुई-औरत-राजाकी-रानी हो, नोकर-चाकर उसके पास बने रहे, धर्ममें साबीतकदम-और आरामचैनसें जींदगी गुजारे.

११ लग्ने व्यये च पाताले-यामित्रे चाष्टमे कुजे
कन्या भर्तृविनाशाय-भर्ता कन्याविनाशक.-१

जिस औरतके लग्नमें-बारहमें स्थानमे-चौथे-सातमे-या-आठमें स्थानमें मंगल पडा हो, उसको खाविंदका वियोग होजाय, अगर किसी मर्दके जन्मग्रहोंमें-ऐसा योग हो-तो-उसकों औरतका वियोग होजाय.—

१२ जिस औरतके आठमें-या-बारहमे भावमें-क्रूर-ग्रहके शाथ मंगल पडा हो,-या-लग्नमे पापग्रहकरके युक्त-राहु-हो. वो-जल्दी विधवा होजाय, लग्नमे सूर्य-मंगल-या-शनि पडा हो-तो-तकलीफसें जींदगी-तेर-करे, जिस औरतके सप्तमेश-अष्टमस्थानमे-और-अष्टमेश-सप्तमस्थानमें पडा हो, और उसपर पापग्रहोंकी दृष्टि हो, तो-वो-छोटीउम्रमें विधवा होजाय,

१३ जिस औरतके पंचमस्थानमें सूर्य पडा हो.-तो-उसकों एक-लडका पैदा हो. मगर-वो-राजकुमार जैसा-तेजदार हो, जिसके पंचमभावमें मंगल पडा हो, तीन लडके हो, और जिसके पंचम भावमें बृहस्पति पडा हो, उसके पांच लडके पैदा हो,—

[तपसील-औरतोंके जन्मग्रहोंकी ब-
जरीये-नजुमके खतम हुइ-]

—

[लग्न-निकालनेकी-तरकीब -]

१ यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्टे, घट्यादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत्.—
तत्तुल्यघट्यादि भवेद् हि यत्र, तत्तिर्यगूर्ध्वांकमितं हि लग्न, १

जिस राशिका सूर्य हो, उसराशिके घटी आदिमे इष्टघटीकों मिलाना, फिर-सारिणीको देखना. जिसकोठेमे-वो-अंक-मिले, अथवा उससें-कमअंक-मिले, उसकी बायीतर्फ-लग्नकी-राशि जानो, और उपरकी तर्फ अंश जानो.

[अनुष्टुप्-वृत्तम]

आगतं पृच्छकं दृष्ट्वा,-तत्काल लग्नमादिशेत्,—
शुभाशुभ फल वाच्य,-सर्वदा-गणिकोत्तमैः-१

सवालपूछनेवाला-जन-सवाल-पुछने आवे, नजुमी उसीवखतका -इष्टशोधन करके लग निकाले, और उसलग्नमें देखे, लग्नेश-बलवान् -है-या-नही ? लाभेश-या-भाग्येशकोंभी देखे, बलवान्-है-या-निर्बल ? लग्नेश, लाभेश-या-भाग्येश, इनमेसें-तीनों-या-दो-या-एक-बलवान् हो-वो-पुछा हुवा सवाल फायदेमद होगा -इसतरह-नजुमी-सौच समजकर जवाब देवे,—

[बयान-नजुमशास्त्रका-खतम हुवा,-]

[बयान-चिकित्सा-विद्या]

१ चिकित्साविद्याके इल्मकों जाननेवाले वैद्य-हकीम-और-डोक्टरोंकों मुनासिब है, पेस्तर बीमारकों कौनसी बीमारी शुरु हुई है, ? तलाश करे, कौनसी दवा देना और कौनकौनसी चीजोंका परहेज कराना, इसबातकोंभी सौचे, हरशख्शकों खुद खयालकरना चाहिये.-मै-फला चीज इस्तिमाल करताहु, मुजे इमसे फायदा होगा -या-नुकशान ? बदहजमीकों-वैद्यलोग-अजीर्ण कहते है, और अजीर्ण -सब बीमारीकी-जड-है, बदहजमीवालोंको-एक-दो-रौज फाका कराना, और शखरटी-या-द्राक्षादि चूर्ण-खिलाना बहेत्तर है,-भूख-लगनेकेलिये हिंगाष्टकचूर्ण, दाडिमादि चूर्ण,-या-लवणभास्करचूर्ण-इस्तिमालकराना जरुरी है,—

२ दिलपसद खानपान करना और तनक पसीना आजाय उतनी मेहनत उठाना जरुरी है, पेंशाब-पाखानेकी हाजतकों रोकना बहेत्तर नही,-वरना ! बीमारी पेश होगी, सौच-फिक्रसे हरेक शख्शकों नींद नही आती, और नींदकी गेरहाजरीमे तरह-तरहकी बीमारी पैदा होती है. हेजेकी बीमारीवालेको शुरुआतम लघन कराना पीनेकेलिये मीठीछास-या-बर्फवाला पानी देना, हाथपावमे तकलीफ होती हो-तो-राईको पीसकर लेप लगाना. फायदेमद होगा

३ अजीर्णसे बुखारकी पैदाश होती है, बुखारकेदिनोंमे-कम-

खाना. स्नान नही करना, और चढतेबुखारमे तीनदिनतक दवा नही लेना-अछा है. जितने दिन बुखार रहे ब्रह्मचर्य पालना, फायदेमंद होगा, खासी, दमा, और श्वासवालेकोंभी ब्रह्मचर्य पालना जरुरी है, बीमारीका मूल-खासी-क्षयरोगकी पैदाशभी इसीसें है,-छाती दुग्ना बुखार, आना सब इसीके फितुर है, इस बीमारीकी-दवा-सनत्त अवल करना चाहिये, और खानपानकी चीजोंमे तेल, मीर्च, खटाई छोडदेना चाहिये,-उमदा दतमंजनसे-या-दातूनसे दातकों हमेशां साफरखना जरुरी है,—

४ बीमारकों अछे मकानमे रखना, और जहातक बने हलका खोराक देनाचाहिये, अंधेरी कोठरीमे जहा सूर्यके किरण-न-आते हो, बीमारको रखना बहेत्तर नही, जाडेकेदिनोंमे ठडे पानीसे स्नानकरना बीमारीकों बुलाना है,-गिलीजमीनपर-वगेरबिछौनेके सौना, बासी रोटी-खाना, और रातकों नींद नही लेना,-ये-सब बीमारी पैदा होनेके सबब है,-गेहु, बाजरी, घी, दूध, दही, सकर, केशर, कस्तूरी, इत्र, फुलेल, हाट, हवेली, मकान, और कपडे-ये-चीजें वख्तपर कामकी है, मगर शर्त है-यही-चीजें अछी और साफ होना चाहिये.—

५ खाना-खाकर तुर्त-ज्यादाजल पीनाबदहजमी पैदा करना है, -बुखारवालेकों जितनेदिन बुखारचढता रहे-स्नान-नही करना चाहिये, स्नान करनेसे बुखारकों सहारा मिलेगा, बुखारमे-देवपूजन-करना हो-तो-उतनीदेर देवमूर्त्तिके सामने बेठकर देवकी इबादत करना, इसका नाम-भावपूजा-है,-क्षयरोगवालेकों खुलीहवामे रहना अछा, अमरसुदरीगुटिका-खानेसे-सन्निपात-दमा-और-खासीकी-बीमारी मिट सकती है,—

६ कुवा, बावडी, नदी, तालाब, और पहाडके झरनोंका पानी पीना फायदेमद है, मगर-वो-मेला-न-होनाचाहिये, वहती नदी और पहाडके झरनोंका पानी-बीमारशख्शकेलिये फायदेमंद कहा,

हुवा-जितना उडाहो उतना अछा,-और-उसका पानी बदनको ताका-तदेनेवाला होता है,-मैलापानी-पीनेसे-खुजली और दादकी बीमारी दरपेश होती है, खाना-अछीतरह पकाहुवा-होगा-तो-तुर्त हजम होसकेगा. खाना-खाकर थोडी दूर फिरना चाहिये, जिसस खाना जल्दी हजम होजाय,

७ चनेकी बनीहुइ जितनी चीज होगी. शरीरमे वादीको बढाने-वाली होती है,-मुग-या-मुगकी बनी हुइ-जितनी चीजे हो, शरी रको फायदा पहुचानेवाली समजो. जिस रोज उपवास वगेरा तपका पारना कियाजाय मुग-या-मुगकी दाल पकाकर खाना अछा है,-बुखारवालेकों वीश-तोले-दूधम-एक-तोला-साबुदाना-डालकर पकाई हुइ खीर खाना फायदेमद है, बुखारकी हालतम पानी-कम-पीना, और जबतक बुखार-न-उतरे, कम-खोराक लेना अछा है,—

८ हरशख्शकों मुनासिब है,-रातको-नवघटे-नींद लेवे, दिनकों नींद लेना और रातको बडीदेरतक जागतेरहना, तदुरस्तिमे खलल पहुचाता है, खाना खाकर तुर्त-स्नानकरना-अछा नही, गलीच-मकानमे रहना बीमारीकों बुलाना है, जबतक किसीतरहका फिक्र होगा खानपान अछा-न-लगेगा, नींद-नही आयगी, और नींद नही आइ-फौरन ! बीमारी पेश होगी, सन्निपात बुखारवालेकी-नाडी-जल्द चलती है. वादीकी प्रकृतिवालेकी नाडी-आहिस्ते-चलती है, और तदुरस्त आदमीकी नाडी मझले दर्जेपर चलती है,—

९ कोढ-बीमारीवालोंको-अछे-वैद्यकी-सलाहसें चोपचीनीचूर्ण खाना मुफीद है, शार्ङ्गधरसहिता-वगेराम मजकुर चूर्ण-बनानेकी तरकीब लिखी है,-और बडेबडे शहरोंमे-चोपचीनी-चूर्ण तया-रभी मिलता है,-शीतोपलादि चूर्ण-दमा, खासी, और रक्तपित्तरोग और पुराने बुखारको मिटानेवाला है,-और मजकुर चूर्णभी-बडेबडे शहरोंम तयार मिलता है,-गुलाबका-शरबत गर्मीयोंके दिनोंमें पीना

फायदेमंद है, अनारका-या-नींबुका शरबत सिरकी बीमारीवालोंको मुफीद है,-हरडेका मुरब्बा-दस्तकों-साफ करनेवाला है. और-दस्त-साफ हुवा-तो-तन-बदन साफ है,—

१० अकरकरा-मुहमें-रखनेसें कंठ साफ होता है. और अगर जबानपर बादीकी तकलीफ पेंश हो-तो-दूर होसकती हैं,-अगरकी-लकडीका-निकाला हुवा-इत्र-पानमे एक-बुद-डालकर खानेसें शरीरमें ताकात बढती है, शरीरमें जलन होती हो-चदन और अगरकी लकडी पानीसे पत्थरकी शिलापर घीसकर शरीरपर लगानेसें जलन मिटसकती है,-अगथीया-वनास्पतिका-रस-दो-बुद-नाकमें डालनेसें आधाशीशी-और-चित्तभ्रम-बीमारी दूर होसकती हैं,—

११ अमरवेल वनास्पति-जो-जगलसें पैदा होती हैं,-लाकर-जिसके शरीरमें वाला-निकला हो, उसजगह बाधनेसें मजकुर बीमारी नेस्तनाबुद होसकेगी, अरडुसेका-रस-एक-तोला लेकर आधे-तोले-सहेत और पांच पीपरके शाथ-सातरोजतक खानेसे खासी, दमा, और स्वासबीमारी-मिटसकती है,-खासी, दमा, और स्वासकी बीमारीवालोंकों-तेल, खटाई, मीर्च-और-कच्चा-घी-ईस्तिमाल-करना, नुकशान पैदा करता है,—

१२ सुके-अजीर-जो-मुल्क अरबस्तानसे आते हैं, शुभहके वख्त-तीन-या-चार, सात बादामकी गिरी, सात-मनका-द्राख, और तीन-अखरोटके मींज-चबाकर खावे और उपरसे (२०) तोला गर्म दूध-मिश्रीडाला हुवा पीवे निहायत फायदेमंद है, बदनमें ताकात आयगी, और फुर्ती बढेगी,-ककडीकेबीज-खरबुजेके बीज, तरबुजके,-कोलेके-और दुधीके बीज-इनकों चिकित्साशास्त्रमें पचबीज बोलते है, दो-दो-तोले लेकर शिलापर बारीक पीसना और चूर्ण बनाना, हरहमेश तीन-तीनमासे चूर्ण-शुभह-और शाम-फाक-कर उपरसे (२०) तोले गर्म दूध-मिश्रीडाला हुवा पीनेसें बदनमें ताकात-बढेगी. और पेंशानकी गर्मी-नेस्त-नाबुद होगी,—

१३ कच्चेके पानीसें कुरलाकरनेपर मुहकी गर्मी-और-छाले मिटसकते हैं, नागरवेलके पानकी-सुकी-जड-मुहमें रखनेसें-कंठ-साफ होता है,-और-मामुली-खासी-मिटसकती है, कुवार-पनास-तिका-दो-तोला-रस, दो-तोले मिश्रीके शाथ-सातरोजतक पीनेसें वातरोग, बुखार, कलेजेका दर्द, पेटकी गाठ और खासनीमारी दूर होसकती है,-औरतोंका-प्रदर-रोगभी इससे मिटसकता है,-दो-रत्ती-केशर वीशतोले दूधमें डालकर गर्म कियाजाय और मिश्रीडाल-कर पियाजाय-तो-बदनम ताकात वडसकती है,-और शुस्ति दूर हो-सकती है,-जिस शख्शकों त्वचागर्मीकी-बीमारी हो,-दो-पके-केले-हरहमेश-रोटीकेसाथ-या-चाह जिसवख्त दिनमे एकदफे खानेसें फायदा होगा, कोकमका घृत-जो-सुकाहुवा बाजारमे तयार मिलता है, जिसके पावके तलवोंमे-फाट-पडगई हो, लगानेसें आराम होगा,

१४ जिनके मुहमें छाले पडगये हो, खेरसार लगानेसें दूर होस-कते हैं,-खेरसार पीसाहुवा-बाजारमे-तयार मिलसकता है,-दो-तीन-मासे लगाना काफी है,-पावतोला-गुगल-आधेतोले-गुडके शाथ हरहमेश सातरोजतक शुभहके वख्त खानेसे सधिवात, कटि-शूल, पुराना बुखार, और त्वचा बीमारी नेस्त-नाबुद होसकती है,-पलाशके फुल-जिसको-केशुके फुलभी-बोलते हैं, सुके-हुवे-आधे-तोले लेकर-एक-तोले मिश्रीके शाथ खानेसें अतिसार और जलोदर बीमारी मिट सकती है,—

१५ गुलाबके उमदा-फुलोंका-बना हुवा-गुलकंद गर्मीयोंके दिनोंमे शुभहके वख्त-दो-तोलेभर इस्तेमाल करनेसें-मगज-तर-बनारहगा, और गर्मी-न-सतायगी,-एक-तोले गुलाबके सुकेहुवे फुल-चावलके शाथ-पकाकर उसमे पांच-तोले-मिश्री-मिलाकर खानेसें पेट-साफ होगा, एक-या-दो-रोज इसकदर मामुली जुलाब लेलियाजाय निहायत फायदेमंद होगा-रतिभर-जवखार-पानके शाथ खानेसें-खासी-और सिकमकी मामुली बीमारी मिटसक्ती

है,-जायफल खूशबूदार और ताकातदेनेवाली चीज है, इसीलिये-सालमपाक-बादाम पाक-और-केशरपाक वगेरामे डालाजाता है,—

१६ चंदलाइकी-भाजी-जिसको मुल्क गुजरातमे ताजलजेकी भाजी-बोलते है, तरकारीबनाकर खानेसे सिकमकी गाठ-चली जाती है, इसकी ताहसीर रेचक और शीतल है, अनारके छिल्टे मुहमे रखनेसें खाची बंद होसकती है, धमासा-सुकाहुवा-दशतोलेभर लेकर पानीमे-डालना, और उसपानीको-गर्म-करके स्नानकरनेसे शरीरकी बीमारीमिटसकती है,-काली-द्राख-बुखार, खासी, और बधकुष्ट-बीमारीवालोंको खाना फायदेमद है, धनियातोले-दो-बिशतोले पानीमे डालकर शामकों मिटीके बर्तनम भीजोना. शुभहके वरूत उसकों कपडेसें छानना और उसमे दो-तोले मिश्री डालकर पीनेसें उल्टीहोती बंद होगी, दाह मिटेगा, प्यास बुझेगी, और बुखारभी चलाजायगा,—

१७ पपैये वनास्पतिका-फल-खानेसे पेटकी गाठ चलीजाती है, धात बीमारी मिटकर खानपान हजम होसकता है,-पोदिना वनास्पति जो-चटनीमे डाली जाती है, दरअसल! गर्म और पाचक चीज है, इसकी चटनी बनाकर खानेसें भूख लगेगी. और तंदुरस्ति नियामत होगी, बादामकी गिरी मिश्रीके शाथ चबाकर खानेसे मगजकों-तर-करती है, और आखोंको रोशनी पहुंचाती है, नारीयलकी-गिरी-मिश्रीके शाथ चबाकर खानेसे मुहकी गमी मिटसकती है, और बदनमे ताकात पैदा करती है. खोपरेल-तेलका चिराग लिखनेपढनेवालोंको फायदेमद है,

१८ ममीरा नामकी लकडी सुकी हुइ लेकर उसका-घीके-साथ काजल बनाना ओर-वो-काजल आखोमे डालनेसे आखोकी तमाम बीमारीये रफा होसकेगी, मालकाकणीका-तेल-हरहमेश (२०) तोले गर्मदूधमे-दो-बुंद डालकर एकीसरोजतक पीनेसे अकल-तेज-होगी, दूधमे थोडी मिश्रीडालकर पीना चाहिये, मालकाकणीके तेलसे

दूधमे थोडा कडुवापन आजाता है,-रतनजोत वनास्पतिका सुकाहुवा -मूल-पथ्थरकी शिलापर पानीसे घीसकर एकतोलाभर हरहमेश सात रौजतक जलोदर बीमारीवालोंकों-पिलानेसे-जलोदर बीमारी मिटसक्ती है, लजवती जडीका-मूल-पावतोलालेकर आधेतोले मि-श्रीके शाथ सातरौजतक खानेस पेटका मरोडा दूर होसकता है,—

१९ शिलाजित बदनमे ताकातदेनेवाली है,-मगर अछे वैद्यकी सलाहसे काममेंलाना चाहिये. सोंठ-अजीर्णको मिटानेवाली रौचक और पाचक चीज है,-बदनमें जिसजगह-सोजा-आगया हो,-पथ्थ-रकी शिलापर पानीसे घीसकर लगानेसे-सोजा दूर होसकता है,-सुपारी तबोलके शाथ आमलोग खाते है,-अगर उसकों जलाकर खाख बनाईजाय, और दातोंपर घीसी जाय-तो-दात-मजबूत होसकते है,-हिंग-एकतरहकी वनास्पतिका-रस है,-और ईसकी ताहसीर गर्म है, छोटी पीपरका एकरति चूर्ण-मिश्रीकी चासनीके शाथ शुभहके वख्त सातरौजतक खानेसें बदहजमी, खासी, और बुखार मिट सकता है,

२० बादामपाक अगर अछे-वैद्यकी सलाहसें बनाया हुवा-हो,-हरहमेश, अढाईतोले खानेसे बदनमे ताकात बढती है,-मगर उसपर बीशतोले गर्म दूध मिश्रीडाला हुवा-पीना-चाहिये, परहेजम-तेल, मीच, और खटाई खाना छोड दना अछा है, सालमपाकभी-अगर -अछे-वैद्यकी सलाहसे बनाया हुवा हो, हरहमेश एकतोला-इस्ति-माल करनेसें-बदनमें फुर्ती आती है,-मजकुर-पाक-गर्म होनेकी वजहसे ठडके दिनोमें खाना चाहिये,-गर्मीके दिनोम नही,

२१ जिसको हिचकी आती हो, लाजम है,-सोंठ तोला पाव, छोटी पीपर तोला पाव, आवले तोला पाव, लेकर-पथ्थरकी शीला-पर बारीक पीसना और कपडछानकर-बारीक चूर्ण-बनाना, उस-मेसें तीन मासे-चूर्ण-आधेतोले-घीम-मिलाकर चाटनेसें-हिचकी-बीमारी नाबुद-होसकती है,-ब्राह्मी-वनास्पति सुकी-तोले-दो,-और आसमानीरग-जैसे-रगवाले-कोलेके-बीज-तोले-दो,-पथरकी

शिलापर कुटकर कपडछान करना. और बारीक चूर्ण-बनाना, हरह-मेश तीन मासे चूर्ण-मिश्रीकी चासनीकी शाथ-चित्तभ्रमवालेकों खिलानेसें उसके मगजमें ताकात आयगी और फायदा होगा, तोले-भर बादामकी गिरी, शामके वख्त पानीमें भीजोंकर रखना, और शुभहकेवख्त-उसके छिल्टे उतारकर बारीक टुकडे करना, उसमें छोटी एलायचीकेदाने-तीनमासे-मिलाना, फिर बारीक पीसी-हुई -तोलेभर मिश्री,-और-दो-तोले ताजा-गौंका-घी-लेकर उसके शाथ खाना, सातरोज इस तरह खानेसें मस्तककी बीमारी दूर होगी, और तदुरस्ति बढेगी,

२२ दो-रति-सोनेके वर्क, एक-रति-केशर, तीन रति-चांदीके वर्क,-दो-तोले बादामकी गिरी, और-दो-तोले मिश्री, इनसब चीजोंकों खरलमें बारीक पीसना, जब खूब-बारीक होजाय, तीनतोले ताजे-गौके-घीमे-मिलाकर खानेसें बदनमे ताकात आयगी, और दिमाग-रोशन होगा. लिखने-पढनेवालोंकों-और-भाषण-या-व्याख्यान देनेवालोंकों-मजकुर उपाव निहायत फायदेमद है,-सार-स्वतचूर्णभी-अगर-अछाबनाहुवा-हो-पाव-तोला लेकर एक-तोले घृतके शाथ हरहमेश एकीसरोजतक खानेसे मगजकों ताकात मिलेगी, -और विचारवायु मिटसकेगा,

२३ ब्राह्मीका-तेल-अगर अछा बनाहुवा-हो-एकीसरोजतक हर हमेश-मालीश किईजाय-ज्ञानतंतु-सुधरेगें, और इससेभी विचारवायु मिटेगा,-लिखनेपढनेवालोंकों-मास्तरोंकों-और-भाषण-देनेवालोंकों शुभह-शामकी-हवामे-मील-दो-मील फिरनेजाना फायदेमंद है,-बदनकी मेहनत उठानेवालोंकों-और थियेटरके एकटरोंकों हरहमेश कमसें-कम-छह घंटे नींद लेना जरुरी है,-दिलकों हमेशा बेपरवाह रखना, हमेशा स्नानकरना. सूर्यस्वर चलते वख्त भोजन जिमना, और चंद्रस्वर चलतेवख्त-पानी-दूध-चाह-बगेरा पीना, तदुरस्ति बढानेका सबब है,-अगर भोजन जिमना सूर्य-

स्वरमे-न-वनसके-तो-हर्ज नही, मगर पानी-और-दूध-चाह वगेरा प्रवाहीपदार्थ-चद्रस्वरमे पीना ज्यादा फायदेमद है,—

२४ रोटी-दाल-दूध-घी-भाजी-तरकारी-और ताजी मिठाई-वदनको ताकात पहुचानेवाली चीजे है,-पुराने बुखारकी-हरारतम -और दिल-दिमाग कमजोरीमे वसतमालती दवा-अगर-अछी वनी हुई-हो-तो-ताकात वक्षनेवाली है, कफ-खासी-नजला-और जिगरकी खरावी,-ये-बीमारीये अछे हकीमकी-दवा-इस्तिमाल-करनेसें मिटसकती है,-पित्त और वातवीमारीवालोंको-मातदिल-दवा लेनाचाहिये, अभ्रकभस्म अगर अछी वनी हुई हो-वडी फायदेमद चीज हैं,-स्वर्ण-भसमभी-अछे वैद्य-वनासकते है-और इसके इस्तिमाल करनेसें-वदनको तदुरस्ती नियामत होती है, छोटे मोटे जहरकोभी-असर होने नही देती, अमीरमिजाजवाले और दिलके दलेरही इसकी कदर करसकते है,-और-लाजवाव-दवा-अछे वैद्य -या-हकीमही वनासकते है.—

२५ वीमारको वीमारी मिटनेपरभी (१५) रोजतक खानपानमे परहेज करना चाहिये, जिनकों वीमारीकी हालतमे चार-या-छह -महिने होगये हो, और वीमारीस तनक आराम पाया-तोभी-बहुतअर्सेतक परहेजकरते रहना जरुरी है,-वीमारीने पिछा छोडा-तो-ऐसानही समजना-हम-तदुरस्त होगये, जब-अछी भूखलगे खानपान हजमहोजाय और वदनमे ताकात आजाय-जब-समजना -हम-बीमारीसे-फतेह-पाये, वीमारीस-फतेह पाये-तो-समजो हमने नयी जींदगी पाई, अब-तुमकों लाजिम है,-धर्म-करो,-मुकाबिले धर्मके दुसरी कोई चीज नही, परलोकके रास्तेकों साफकरनेकेलिये-धर्महीं-एक-लाजवाव-दवा है,—

२६ जो-शख्श नहानेस अवल अपने वदनपर वेला-या-चमेलीके तेलकी मालीश करेंगे, उनके वदनमे खुजलीकी वीमारी पैदा -न-होगी, एक-तोलाभर-त्रिफला-शुभहके वख्त-फाक-जानेसें

बदहजमी दूर होगी, अनाजखानेकी अरुचिहोनेपर अष्टांगलवणकी टीकडी खाना फायदेमद है,-अष्टांगलवणकी टीकडी बडेशहरोंमे तलाशकरनेपर मिलती है,-शरीरपर कोइ-फोडा-हुवाहो-तो-उसके लिये मामुलीउपाव अलसीका-पोटीस है, दश-तोले-अलसीकों शिलापर पीसकर लुगदी बनाना, और फिर उसमे दशतोले पानी मिलाकर आगपर रखना, जब-गर्म होजाय कपडेमें-लेकर फोडेपर बाधनेसें दर्द मिटसकेगा,

२७ अगर कोइ-शख्श-दिवारसें गिरगया हो,-या-लाठीयोंका मारसे शरीरमे लोही जमगया हो-तो-उसपर आबाहलदी और मेदालकडी एक शिलापर पानीसें घीसकर एक-बर्तनमे-लेना और आगपर चढाकर गर्म-करके जहा-दर्द-हो लगाना, फायदा होगा,

२८ चूर्ण अनारदाना,-पनरा तोले अनारदाने, पांचतोले गुलाबके सुकेफुल, सवातोले कालीमिर्च, सवातोले सोठ, अढाईतोले सेधानमक, इन पाचचीजोंकों-कुट-छानकर-बारीक बनाना, फिर बीशतोले मिश्रीकी चासनी बनाकर उसमे-वो-चूर्ण मिलाना, पाचतोले-मिश्री-जुदी-पीसकर उपरसें डालना, चूर्ण अनारदाना-तयार -होजायगा,-छोटे बेर-जितनी-गोली बनाकर उपरमें चादीके वर्क लगाना, और एक बोतलमे भररखना, हमेशा खाना खाकर उपरसें एक-या-दो-गोली खानेसें दिल खुश होगा. और खाना हजम होगा.—

२९ उमदा-दंतमंजन-हरडेदल तोले दश, बहेडेदल तोले दश, आवलेदल तोले दश, माजुफल तोले दश, अनारके छिल्टे तोले पाच, चणिकबाब तोले दो,-एलाची तोले दो, जीरा तोले दो, और चाक तोले बीश, इन-चीजोकों-कुट-छानकर-बारीक बनाना, फिर इल्मेटके फुल तोले आधा लेकर पाचतोले चूर्णके शाथ मिलाना, फिर कपुरतोले आधा-लेकर-पाचतोले चूर्णमे जुदा मिलाना, फिर-वो-दशतोले चूर्ण-सब-चूर्णके शाथ मिलादेना, उमदा चूर्ण बनजायगा, एक-बोतलमे-भर-रखनेसें निगडेगा नही. हमेशा-

दो-मासे-दतमजन लेकर दातोंपर मसलना, दांतोंका तमाम दर्द मिटसकेगा, और-दात मजबूत होते जायगें,—

३० पेंठापाक अगर अछे वैद्य-या-हकीमका बनायाहुवा हो,-हरहमेश पाच तोले-और-गर्मीयोंकेदिनोंमे अढाइतोले इस्तिमाल करनेसे फायदाहोगा, पेंठाकों-हिंदीजबानमे-कोला-और शास्त्रोंमे कुष्माड कहा है,-बालक हो, जवान हो,-या-जइफ हो, पेंठापाक इस्तिमालकरना सबको फायदेमद है,-ब-शर्ते-चिकित्साविद्याके फरमानसें बनाहुवा होना चाहिये.—

[बयान चिकित्सा-विद्याका खतमहुवा-]

[बयान-धर्मशास्त्र,-]

१ चतराइसें बोलना-एक-बडीचीज है, जिसकों बोलना नही आया उसकों कुछ नही आया समजो. दरअसल! जबानमे-बो-ताहसीर है,-जिससे-तमाम-दुनिया उसतर्फ रजु होसकती है,-यूतो -सभी बोलते है, मगर चतराइसें बोलना अलगचीज है, धर्मशास्त्रोंका फरमान है, चतराइसे बोलो. और चतराइसें बरताव करो, कइ कहते है, सीरीजबान बोलना वशीकरण है, मगर अकलमदोंका फरमान है-सचबोलना उससेभी-ज्यादा-वशीकरण है,-सभामे खडे होकर बोलना-खेल-तमाशा नही है, मगर जिसने ज्ञानावरणीय-कर्मसें फतेह पाया हो, वही सभामे चतराइसें बोलकर फतेह-पासकता है,-जैनमुनि-जो-सभामे हरहमेश व्याख्यान देते है, यह एक तरहकी चतराइका-काम है,-जो-जो-जैनमुनि-खिलाफजैन शास्त्रके बयान फरमाकर दुसरोंकी-हाम-हा-मिलाते है, उनकी आलादर्जेकी गलती समजो.—

२ अगरकोई-शख्श-बडीसभामे-खडेहोकर भाषणदेना चाहे,-तो-अवल छोटीछोटीसभामे भाषण देवे, अपने शहरमे-कोई-पाठशाला हो,-या-कोइ दुसरी-धर्मसस्था हो-उसमे-थोडा थोडा

बोले, और फिर बडी बडी सभामेभी बोलते रहे, बोलतेवख्त-शर्म -करना बहेत्तर नही, मगर-जो-कुछ बोलना सभ्यताके साथ- उमदा लब्जोमे बोलना चाहिये, तीर्थंकरोंके समवसरणमेभी-कई- जैनमुनि-वादितरीके बेठतेथे, और आयेगये विद्वानोसे मजहबी बहेसकरतेथे,अदालतोंमे-वकीलोंका-भाषण सुननेसें-अकल तेज होती है,-जमाने तीर्थंकर गणधरोंके-तीर्थकरोंने-गणधरोंने-जैनाचार्योंने -जैन उपाध्यायोंने-और-जैनमुनियोंने धर्मको खूब-तरक्की दिई,

३ पूर्वसंचित-शुभकर्मके उदय विना-कोईशख्श-प्रसिद्धवक्ता -या-आलादर्जेका ज्ञानी नही होसकता, सभामें भाषणदेनेवालोंकों -अवल-धर्मशास्त्रका-इल्म-हासिलकरना चाहिये, बिदून-शास्त्रीय ज्ञानके भाषणदेना-कभी-लाजवाब होनेका सबब है, जिस वक्ताकी बोलीमे रस होगा,-सुननेवाले उसीके व्याख्यानकी तारीफ करगे, व्याख्यानदेनेवाला-शख्श-हाजिर जवाब होनाचाहिये, सभामे कि- सीने सवाल किया और उसका माकुल जवाब नही दिया-तो- उसव्याख्यान देनेवालोंकी हसी होगी, व्याख्यानमे किसविषयपर बोलना किसपर नही बोलना इसबातका शुमार-दिलमें-अवलसें करलेना चाहिये.—

४ सभामे बोलते वख्त व्याख्यानका सिलसिला टुट गया-तो -सुननेवालोंकों-खुशी-पैदा-न-होगी, कोई श्रोता-अपने-सचे व्याख्यानसेभी-नाराज रहे-तो-उसकी मरजीकी बात है,-अपनी समजी हुई-बात-दुसरोंकों समजाना-कुछ-सहज बात नही है,- जैसे वकील बननेवालोंकों कायदेकी किताबपढना जरूरी है, व्या- ख्यान देनेवालोंकों धर्मशास्त्र पढना जरूरी है,-जिसविषयका- भाषणचला हो, उसकी पुख्तगीके सस्कृत-श्लोक-और-भाषाके कवित्त-हिब्ज-यादकर रखना चाहिये. शास्त्रसबुत और इन्साफसें खिलाफ बयानकरना बहेत्तर नही,-जो-बात कहीजाय उसकों शास्त्र सबुत और इन्साफ कबूलरखे-जभी-उनके व्याख्यानकी तारीफ है,

५ भापण देते वख्त-विपयातर-जाना मुनासिव नही, कभी-थोडासा विपयातर जाना पडा-तो-हर्ज नही, मगर फिर जिस विपयको शुरु किया हो उसीपर आजाना चाहिये, कितनेक विपय ऐसे है-जो-उसम-उसकी पुख्तगीकी मिशाल देनेके लिये विपयातर जाना पडता है,-जैसे धार्मिक विपयपर भापणदेनेको खडे हुवे-तो-उसमे-कइतरहकी मिशाल-देना-जरुरत होगी, उसको विपयातर नही कहा जासकता,-लेख लिखना-वक्तृत्वकलाके लिये सहायक विपय है, देखा होगा-अखबारोंमे-लेख लिखनेवाले-सभामे अछा भापण देसकते है, जिनको अखवार पढनेका शौख है,-वेभी-अछा भापण देसकते है, लेकिन! शास्त्रीयज्ञान-हासिल करनेकी-उनकोंभी-जरुरत होगी,

६ फर्ज करो! चलनेवालोंको-अगर-कोई ठोकर लगजाय-तो-वे-आगे नही चल सकते, इसतरह सभाम-भापणदेनेवालोंके-भापणका किसीने खडन किया-तो-वक्ता-आगे नही चलसकते, मगर-जो-वक्ता-शास्त्रके ज्ञानस कमजोर-न-हो-तो-उनका माकुल जवाब देकर अगाडी बढ सकते है,-अगर-कोई वक्ता पहलपहले सभामे भापण देनेको खडे हो-तो-उनके दिलम इस वातका जरुर खौफ रहेगा, मेरी वातको कोई हसे नही,-मगर शास्त्रसवुत और इन्साफसे खिलाफ वात-न-कहकर चाहे जितना वोलो, अकलमद लोग जरुर पसद करेंगें, व्याख्यानधर्मशास्त्रम-या-भापणमे कोइ उमदा मिशाल पेश किइ जाय-तो-सुननेवालोंको जरुर असर होगी, मगर-वो-मिशाल छोटी होना चाहिये, वहुत लबी मिशाल सुननेवालोंको पसद न-हो सकेगी,

७ भापणमे थोडा हास्यरसभी लाना चाहिये, जिससें सुननेवालोंको-वो-भापण पसद पडे, भापण देतेवख्त-अगर-वक्ताका-कठ-रुकजाय-या-खासीके आजारसें-वोल-न-सके-तो सभामे उनकी हसी होगी, इसलिये व्याख्यान देनेवालोंको-वीडी-तमा

खूसें परहेज करना चाहिये, व्याख्यान ऐसा होना जिससें सुननेवालोंका दिल-धर्मपर-मोम-जैसा होजाय-या-हास्यरसमें मशगुल बने, अगर व्याख्यानका ढंग बिगड गया-तो-गयावख्त-फिर हाथ नही आता, व्याख्यान देते वख्त-सुननेवाले चाहे जितना हसे, मगर व्याख्यानदाताकों खुद हसना नही चाहिये, व्याख्यान देते वख्त-सभामें अगर कोई-शोर-गुल करे-तो-सुननेवालोंकों लाजिम है-खुद-सभामें शांति फेलावे, मे-जहां-व्याख्यान देता हु-तो-व्याख्यान धर्मशास्त्रके (१२) कानुन छपेहुवे-जो-मेरे पास रहते है, आइनेमें जडवाकर मकानकी दिवारपर लगादिये जाते है,-सुननेवाले उनकों पढकर अमल करते है, जिससें शोरगुल हर्गिज नही होने पाता.

८ व्याख्यान देनेवालोंको-बदन-कपडे-मुह-ओर दांत साफ रखना चाहिये चाहे जितनी बडी-सभा-हो,-व्याख्यान देनेवाले उसको देखकर गभडावे नही, ओर अपने व्याख्यानको शुरु करे, व्याख्यान-या-भाषण शुरु करना तो-अव्वल-देव-गुरुको नमस्कार करना फर्ज है,-जिस वक्ताकी जबान अटकती हो-उसकों व्याख्यान देना बहेत्तर नही. व्याख्यान देते वख्त-हाथ उतना हिलाना चाहिये जितनी जरुरत हो, अगर अपनी तर्फसें कोई पुस्तक बनाया गयाहो-तो-उसकी अर्पणपत्रिका उनको देना चाहिये-जो-इल्ममे अपनेसें ज्यादहहो, पुस्तककी प्रस्तावना उपोद्घात-या-भूमिका लिखना बडी अकलके ताल्लुक है,

९ अगर सवाल कियाजाय-जानकार शख्शने-कोई-व्रत-नियम खंडनकिया उसकों पाप ज्यादा-या-अनजानशख्शने कोई व्रत-नियम खंडन किया उसकों ज्यादा ? जवाबमे तलब करे, जानकारकों दिलमें पश्चात्ताप होना संभव है,-अनजानकों संभव नही, श्रद्धा-ज्ञान-ओर-चारित्र इनमे श्रद्धा बडी चीज है,- विनाचारित्रके इस जीवकी मुक्ति होसकती है, मगर विनाश्रद्धा मुक्ति नही होसकती, कर्म-ताकातवाले है,-उद्यम-ताकातवाला नही, उद्यम

खाली जाता है, कर्म-खाली नही जाते इसलिये कर्म-ताकातवाले है,-किसी शख्सने हिसककों कुछ रुपये देकर-जीव-छुडवाया, उन-रुपयोंसे हिसक शख्श दुसरा-जीव-लाया, और हिंसा किई, उसका पाप हिंसा करनेवालेको है, जीव-छोडानेवालेकों नही, सबब उसका इरादा-जीव-छोडानेका था, धर्मशास्त्रोंका फरमान है, जैसा इरादा-वैसा-फल,-"ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्ष'-" यह-सामान्य वाक्य है, और-' सिझति चरणरहिया,-दंसणरहिया-न-सिझति,-" यह विशेष वाक्य है, सामान्यसे विशेष वाक्य बल वान् कहा, सबूत हुवा-श्रद्धा-बडी चीज है,-

१० खगोल, चिकित्सा, नजुम, शिल्पशास्त्र-नाटक,-संगीत और कवित्व शक्ति-ये-चीजे जानना बडी तकदीरके ताल्लुक है, जमाने पेस्तरके लोगोकों-चीजे-शस्ती-मिलतीथी, धर्मचुस्त लोग-तकली-फके वख्तभी धर्मको नही भूलतेथे, गरीबोंको मुफ्त दवा देना अनु-कंपादान है,-तीर्थंकरोंके मंदिरोंमे-खुबसुरती, जिनमूर्त्तिपर सोने-जवाहिरातके गेहने-हांडी-नग्ते-और झलाझल रोशनी-मुताबिक फरमान धर्मशास्त्रके हमेशा होती चली आई द्रव्यशुद्धि-भावशुद्धिका कारण है, थोडे पडे हुवे कहदेते है, जिनमंदिरमे इतनी-धमाल-क्यों ? मगर इतना खयाल नही करते, विवाह सादीमे हजारोंका खर्च किया जाता है,-इसका सबब क्या ? मकान-हाट-हवेली-बगी-घोडे-और -आरामके लिये बाग-बगीचोमें-हजारों रुपये सर्फ किये जाते है, इसका क्या सबब है ? इसका कोई जवाब देवे,-क्या ! दुनयवी कारोबारसें-धर्म-कमदर्जेपर है ? इसबातको सौचो !

[अनुष्टुप् वृत्तम्]

११ गृहीत्वा पुण्यपापे द्वे,-नाणके स्वयमर्जिते,-
शेषं विमुच्य निःशेषं,-जीवा याति भवांतरे,-१

-इस दुनियामे पुन्य और पापरूपी-दो-तरहकी पैदाश है,-और-परलोकमे जातेवख्त वही पैदाश साथमे लेजाता

है,-और दुसरी तमाम चीजें यहा रहजाता है,-जिसकी हिफाजत उम्रभर किइगई-वो-शरीरभी शाथ नही जाता, इसलिये लाजिम है, धर्म करना, धन,-दौलत, औरत-बेटाबेटी-और बागबगीचे यहाही रहजायगें, बडे बडे राजेमहाराजेभी-अपनी-सलतनत यहा छोडकर चले गये, इसतरह सबकों छोडकर जाना है,-

१२ एक राजासाहब जब इंतकाल होनेपर आये, अपने दिवान वगेराकों कहनेलगे, जब-मेरा-अंतकाल होजाय-अपने शहरमें जितने वैद्य-हकीम है,-मेरे मुर्देके अगाडी चलाना, मेरी पालखी-पर-हीरे-जवाहिरात-और-मोतीयोंके-झुमखे लटकाना, और दिवान, नायबदिवान, कोतवाल, शेठ-साहूकार-सब शाथ चलना, इसतरह-बडेजलसेके साथ-मशानमे जाना, जिससे सबलोगोंकों खयाल हो, राजे-महाराजेभी-खाली हाथ जाते है, सिर्फ! पुन्य और पाप शाथ लेजाते है,-दवा-हकीम-और वैद्य होतेहुवे-बीमारी मीटी नही, और दुनिया छोडकर जाना पडा, इसजीनको जब-मरना-नजीक आता है, तो न-वैद्य-बचासकते, न-कोइ दवा-कारआमद होती, न-दौलत-खजाना-और-दिवान मुसद्दी बचासकते है,-समज सको-तो-समज लो! दुनियामें सारवस्तु धर्म है,—

१३ मनोबल पूर्वसंचितकर्मके उदयानुसार-होसकता है, अगर किसीके पूर्व सचितकर्म ताकातवाले-न-हो,-तो-चाहे जितनी कोशिश करो, फायदा-न-होगा, किसी शख्शकी-आदत-जन्मसेंही अछी होती है, और किसीकी जन्मसेंही बुरी होती है, बतलाइये इसका क्या सबब ? (जवाब,) इसका यही सबब है,-उसके पूर्व-सचित कर्म-वैसेही थे, जैसा पूर्वजन्ममे-कर्म-किया हो, वैसा फल मिले,-इसमे कोई ताज्जुबकी बात नही, इसपर मिशाल दिइ जाती है, सुनिये,-दो-शख्श एक उस्तादके पास गाना सिखने गये, एककों-छह-महिनेमे उमदा गाना आगया, और एककों-छह-बर्ष-

तक नही आया, उस्तादने दोनोंको एकसरखी तालीम दिई, जिसके पूर्वसंचितकर्म अछे थे,-उसको संगीत कलाका-इल्म-जल्दी हासिल हुवा, दुसरेके पूर्वसंचित-कर्म-अछे नही थे, उसको इल्म हासिल-नही हुवा,

१४ एक-सरकसके मालिकने एक सौदागिरसें-दो-घोडे लिये, और उनको कसरतका इल्म सिखलाने लगे, एक-घोडेकों-एक-दो-दफे सिखलानेसें इल्म-आगया, दुसरे घोडेको कइदफे इल्म सिखलाया, मगर उसकों कसरतका इल्म हासिल नही हुवा, और रसी तोडकर चलागया, बतलाइये ! इसका क्या सबब ? इसका यही सबब समजो, उस घोडेके-पूर्वसंचित कर्म अछे नही थे, इसलिये उसकों इल्म हासिल नही हुवा हरेक आदमी अपनी अपनी तकदीरके मुताबिक फल पाते है,-एक-अमीर-और एक-गरीब दोनों इन्सान है,-मगर जिसकी तकदीर आलादर्जेकी थी,-वो-अमीर बना, और बुरी तकदीरवाला-गरीब बना, इसका सबब पूर्वसंचित कर्म है,-चाहे कर्म कहो,-या-तकदीर कहो दोनो एकही बात है.

[अनुष्टुप्-वृत्तम्-]

१५ तदेव हि तप. कार्य,-दुर्ध्यान यत्र-नो-भवेत्—
येन योगा-न-हीयते, क्षीयते नेंद्रियाणि च,-१

तप ऐसा करना चाहिये, जिससे-अपने दिलमे-बुरे बुरे इरादे पैदा-न-हो, जिससे मन-वचन-कायाके योग बिगडे नही, और इंद्रियोंको हानिभी-न-पहुचे, अपने बदनकी ताकात देखकर तप करना फायदेमंद है,-ज्ञान पढना, स्वाध्याय करना. और धर्मीशरवोंकी खिदमत करना, यहभी-बडा तप है,-तीर्थोंकी-जियारत जाना धर्मकाममे दौलत सर्फ करना, और-दुसरोंकों इल्म सिखलाना -ये-सब-धर्मकी पुख्तगीके सबब है,—

१६ जिणसासणस्स सारो,-चउदस पूव्वाण-जो-समुद्धारो,
जस्समणे नवकारो,-ससारो तस्स कि कुणई,-१

हरइ दुहं कुणइ सुह,-जणइ जस सोसए भवसमुद्दं,
इहलोए परलोए,-सुहाणमूल नमकारो,-२
एसो मगलनिलयो,-भवविलओ सयलसतिजणओ अ,
नमकारपरममंतो-,चिंतिज्जमित्तो सुह देइ,-३

चौदहपूर्वके ज्ञानसे उद्धार किया हुवा और जैनआगमोंका सार नमस्कारमहामत्र जिसके दिलमे बसाहुवा है, उसको संसारिक तकलीफ क्या करसकती है,-नमस्कारमहामत्र तरह-तरहकी-बला-ओंको हठानेवाला और आराम-बख्शनेवाला है,-इसका स्मर्ण करनेसें ससारसमुदर विलय होजाता है, इसलोक-परलोकमे चैन मिलता है, और तरह-तरहकी नियामतें हाजिर होती है,—

१७ भोयणसमये सयणे,-विबोहणे पवेसणे-भए-बसणे,
पंचनमुक्कार खलु,-समरिज्जा सव्वकालंपि, ४
अपुव्व कप्पतरु चिंतामणि-कामकुभ कामगवी,
जो-झायइ-सयलकाल,-सो-पावइ-सिवसुह विउल-५
वाहि-जल-जलण-तक्कर, हरि-करि-सगामविसहरभयाइं.
नासति तक्खणेण-जिणनवकारप्पभावेण, ६

खानपानके वख्त,-सोते जागतेवख्त,-गांवनगरमे प्रवेशकरते-वख्त, खौफके वख्त, और तरह-तरहकी आफतके वख्त अगर नमस्कार महामत्र पढलिया जाय, सब तकलीफें मिटसकेगी, नम-स्कारमहामत्र-एक-अपूर्व कल्पवृक्ष, चितामणिरत्न,-कामकुभ, और कामधेनु-समान है,-जो-शख्श-हरहमेश-इसका पाठ करेगा, मोक्षका सुख हासिल करेगा.-नमस्कारमहामत्रके पढनेसें तरह-तर-हकी बीमारीयें मिटसकती है,-पानीकी आफत, आतीशकी आफत, चोर-सिंह-और हाथीकी आफत दूर होसकती है,-रणसग्राममें फतेह मिलसकती है, और साप-वगेराके खौफमेंभी नमस्कारमहामत्र पढनेसे बचाव होसकता है,

१८ जो गुणइ लरकमेग,-पुइए-विहिए-जिणनमुकार,
तिथ्थयरनामगोय,-सो-पावइ सासयं ठाण,-७

जो-शरस-विधिके शाथ साफदिलसे एकलाख-दफे-नमस्कार महामत्रका जाप करे, अगले जन्ममे तीर्थंकरनामगोत्र हासिल करे, और मुक्ति पावे,-उपशमश्रेणीपर चढेहुवे,-चौदह पूर्वज्ञानी-और-यथाख्यात चारित्रके पालनेवाले-मुनि-मिथ्यात्व-कर्मके-उदयसें नीचे गिर जाते है-तो-दुसरोंकी कौन गिनती? पापकर्म-अगर-निकाचित होकर बधजाय-तो-अधोगतिकों आनेस-रोक-कर बुरी-गतिकों पहुचाते है,—

१९ करोति यत्कर्म-मदेन देही,-हसन्स्वधर्मं-सहसा विहाय,
रुदन्निर रौरव-रध-मध्ये,-भुक्ते फल तस्य किमप्यवाच्य,१

अपने कर्तव्यधर्मकों भूलकर-जीव-ऐसे पापकर्म बाधलेता है, -जो-निकाचित होजानेपर रुदन करनेसेभी विदूनभोगे नही छुटते, इसलिये लाजिम है, पापकरनेसे पहले सोचना, और धर्मम साबीत कदम रहना,

सह कलेवरदु.खमचिंतयन्,-स्ववशताहि-पुनस्तव दुर्लभा,
बहुतर-हि-सहिष्यति जीव! हे! परवशो-नच-तत्र गुणोस्ति-ते,२

आत्मा! तकलीफसें छुटनेकी कोशिश करता है, मगर-निकाचित-पूर्वसचित-कर्म-जो-पूर्वभवम बाधलाया है, विदूनभोगे कैसे छुट सकेंगे? आदमीका-चोला बारबार पाना दुसवार है-अगर ज्ञानसे जानकर इरादेधर्मके यहा थोडीसी तकलीफभी बरदास्त किई जाय तो आइदे तकलीफ उठाना-न-होगी, पराधीनपने तकलीफ उठानेमे-कर्मोकी निर्जरारूप-गुणभी-हासिल-न-होगा,

२० जातिचातुर्यहीनोपि-कर्मण्यभ्युदयावहे,
क्षणाद्रंकोपि राजा स्या-च्छत्रछन्नदिगंतर.-१

जाति-और-होशियारीसें-कम-होनेपरभी-जिसकी तकदीर तेज -है,-वो-गरीबभी-छत्रपतिराजा-बनसकता है,-समज सको-तो-

समज लो-तकदीर कितनी वडी चीज है, जिसके सामने तदवीर कुछचीज नही, अक्ल-सोभर, नसीबा जबभर, इसका मतलब यह हुवा, अकल अगर किसीकी-सो-तोलेभर-हो, मगर जबभर नसीबेकी बराबरी नही करसकती,-जो-कुछ अपनी तकदीरमे होगा वही मिलेगा, अगर तकदीर अछी हो-तो-उसके जोरसें दुसरा शरश-चीज घरआकर देजाय, और अगर तकदीर अछी-न-हो-तो-कोशिश करनेपरभी-न-मिले,

२१ दुर्गतिप्रसृतान् जतून्,-यस्माद्धारयते ततः,
धत्ते चैतान् शुभे स्थाने,-तस्माद्धर्म इति स्मृतः-१
आश्रवो भवहेतुः स्यात्-सवरो मोक्षकारण,
इत्येपा चार्हतीमुष्टि-रन्यदस्याः प्रपचन,-२

बुरी गतिजातेकों रोककर अछी गतिम दाखिल करे उसका नाम -धर्म है, कर्मके आनेके रास्तोंको-आश्रव-और उनकों वदकरदेना इसका नाम सवर-है,-जितनेकर्म-आत्माके अदर आये है, उनकों दूर करना इसका नाम-निर्जरा-और सवकर्मोंका क्षय होना इसका नाम-मोक्ष है,-और-यह जैनधर्मका सार है:—

२२ जैनमुनियोंमे और जैनगृहस्थोंम आलादर्जेके-व्रतनियम-इख्तियार करनेवालेभी है, और व्रतनियममें कमजोर वरताव करने-वालेभी है, पेस्तरभी थे, और आइदेभी होंगे, इसमे ताज्जुब करना कोई जरुरत नही,-गौतमगणधर जैसे जैनमुनि-और आनद-काम-देव-जैसे श्रावक इसवख्त मौजूद नही,-देखो! आर्द्रकुमार और अरणिकमुनिजीने दीक्षाभी छोडदिइथी, मगर धर्मपर कामील एतकात-वालेथे, इसलिये पीछेसे सुधरगये, जैन मुनिको नवकल्पी विहार करना कहा, एक गावमे-या-एकशहरमे एकमहिनेसे ज्यादा रहना हुकम नही, चौमासेके दिनोमे चारमहिनेतक ठहरना, इससे ज्यादा ठहरना हुकम नही, अगर कोई जैनमुनि-एक-गावमे-या-शहरमे-

घर्स-या-छह-महिनेतक ठहरे-तो-यह नवकल्पीविहारकी अपेक्षा एकतरहकी शिथिलता है.—

२३ जैनशास्त्रोंमे बयान है-जैनमुनिकों दिनमे नींद नही लेना, और तीसरे प्रहर भिक्षाकों जाना. उपवासव्रत करना-तो-पहले रौज एकाशना-करना और-इसीतरह-पारनेके रोजभी ऐसाही करना, अगर-कोई-ऐसा-न-करे-तो-यह-एकतरहकी धर्मक्रियामे शिथिलता है, जैनमुनिकों-योगवहन-करना-तो-जिस शास्त्रका योग चलता हो-उस शास्त्रका मूलपाठमय-अर्थके कठाग्र करना चाहिये. अगर कोई जैनमुनि-कोरी-क्रिया करके योगवहन करे और उस शास्त्रकों कठाग्र करे नही-तो-यहभी-एकतरहकी धर्मक्रियामे कमजोरी है,—

२४ श्रावकोंकेलिये जैनशास्त्रोंका फरमान है, मिथ्या प्रचारसे बचना, श्रावकके (२१) गुण-हासिल करना, बारहव्रत-इख्तियार करना और हमेश चौदह नियम-धारना, अगर इसतरह बरताव-न-कियाजाय-तो-यह-धर्मक्रियामे एक तरहकी शिथिलता हुई-या नही? अपने माता-पिताके इतकाल होतेवख्त-जितनी-रकम धर्मकामकेलिये निकाली हो, तुर्त-उस काममे खर्च करदेना, अपने घरमे जमाकर रखना नही अगर अपने रिस्तेदारका अपने घर-इतकाल होजाय-तो-जब उसका उठमना किया, तुर्त शोककों उठा देना, ज्यादा वख्त-शोक-रखना बेहत्तर नही. कितनेक श्रावक-नवकारशी-या-स्वधर्मीवात्सल्यके जिमनमे जाना परहेज करते है व्याख्यान धर्मशास्त्रकी सभामे अगर कोई प्रभावना तकसीम करे-तो-लेते नही यह बाते खिलाफ जैनशास्त्रके है,-संसारके कामको मदद पहुचाकर धर्ममे खलल डालना मुनासिब नही,—

२५ श्रावकको हमेश सामायिक-प्रतिक्रमण-जो-हरहमेशकी धर्मक्रिया है करते रहना चाहिये,-और दरसाल एक जैनतीर्थकी जियारतको जाना चाहिये, अगर-न-जावे-तो-यह एक तरहकी

धर्मक्रियामे कमजोरी हुई-समजो,-श्रावककों-रात्रीभोजन-खाना-हुकम नही, पनराह-कर्मादानसें बचाव रखना-ओर उम्रभरमे नव-लाखदफे नमस्कारमहामत्रका जाप करना फर्ज है. अगर-न-करे-तो-यह-एक तरहकी शिथिलता हुई-या-नही?—

२६ पूजा-आरती-चौदह स्वप्न-ओर पालनेकी बोली जिनेंद्रोंके निमित्तसें बोली जाती है.-जो-जिसके निमित्तसे बोलीजाय-उसका द्रव्य उसी खातेमे जाना चाहिये, कल्पना करके-साधारण खातेमे-लेजाना-कोई जैनशास्त्र नही फरमाता. अगर किसी जैनशास्त्रका-फरमान-हो,-पाठ-दिखलावे.-पर्यूषणोंके दिनोंमे-प्रतिक्रमणमे-जो-वदित्तासूत्र वगेरा बोलनेकी बोली किईजाती है,-वो-ज्ञानके निमित्तसें है, इसलिये-वो-ज्ञानखातेमे जाना चाहिये, इसमेंभी कोई किसी-तरहकी-कल्पना-करे-तो-वोभी-मुनासिब नही, जैनलोग शुबह-शाम-प्रतिक्रमण करते है,-इसमे पापकी माफी मागनेकी बात है,—

स्वस्थानात् यत्परस्थान,-प्रमादस्य वशाद्गत,
तत्रैव क्रमण भूयः-प्रतिक्रमणमुच्यते,-१

अपने आत्मिकगुणकों भूलकर प्रमादमे पडगये हो,-वहासे फिर अपने आत्मिकगुणमें वापिस आना,-इसका नाम प्रतिक्रमण है,-देवसिकप्रतिक्रमण, रात्रिकप्रतिक्रमण, पाक्षिकप्रतिक्रमण, चातुर्मासिक-प्रतिक्रमण, ओर सावत्सरिकप्रतिक्रमण, यह-पाच तरहके प्रतिक्रमण-जैनशास्त्रोमे बयान फरमाये,—

२७ एक दृष्ट्वा शत दृष्ट्वा-दृष्ट्वा पचशतान्यपि,
अतिलोभो-न-कर्त्तव्यः-चक्र भ्रमति मस्तके, १

एक रुपया मिला देखकर-सो-रुपये मिलनेका इरादा पैदा होता है,-सो-रुपये मिलनेपर पाचसोका इरादा होता है, इसतरह लोभ बढता जायगा, इसलिये मुनासिब है, मिलीहुई चीजमे शब्र करना, सिरपर चक्र फिर रहा है,-धर्म करना फायदेमद है,-जिसके दिलमे शब्र है-उसकेलिये सबजगह दौलत हाजिर है,—

सुखस्यानतर दुःख,-दुःखस्यानतर सुख,
चक्रवत् परिभ्राम्यति,-दुःखानि च सुखानि च, १

आरामके पीछे तकलीफ और-तकलीफकेपिछे आराम, इसतरह आराम ओर तकलीफका चक्र-सबपर-फिरता रहता है, इसलिये धर्म करना अछा है, इन्सानको सोचना चाहिये मुजसे-धर्म-कितना बना?—

२८ लेख लिखतेवख्त-सरत-लब्ज लिखना मुनासिब नही, मजहबी बहेस करतेवख्त-या-भाषण देतेवख्त-दुसरे मजहबके-देव-गुरुका-नाम बोलना-तो-अछे शब्दोंमे बोलना चाहिये. अगर कोई अपने मजहबपर ब-जरीये लेखके किसी तरहकी दलिल पश करे-तो-उनका लेख-पूर्वपक्षम लिखकर उत्तरपक्षमे उसके नीचे माकुल जवाब देना चाहिये,-यूतो मजहबी बहेस चलतीही रहती है, इसका फिक्र करना कोई जरूरत नही,—

२९ देवमदिरमे बेठकर ताल-स्वरसे राग-रागिनीमे-गायन करना-दोनो तरहसें फायदेमद है, जो-शख्श-तालस्वरसे हमेशां गाता रहेगा, उसकी छातीमे-कफ-जमा-न-होगा, दमा, खासी और क्षयरोगकी बीमारी-न-होगी. दुसरा फायदा यह है-अगर साफ दिलसें देवकी इबादत किईजाय-तो-पुन्य-हासिल होगा, और अगले जन्मम सुख मिलेगा जिससे-धर्म कर सकोगे और अखीरमे मुक्ति पाओगे, गायनकरनेवालोंकों हिंग-मिर्च-इमली और तेलसे परहेज करना चाहिये. सुपारीभी-जहातक बने-कम-खाना चाहिये चद्रस्वरम मिश्री डालाहुवा दूध पीना, द्राक्ष, एलाची-और सौंफ खातेरहनाभी-अछा है,-अगर किसीका कठ बेठगया हो, और गानेकी जरूरत हो,-तीन घटे-पेस्तर-दो-तीन टुकडे खडीमकर ओर दो-चार दाने कालीमीचके मुहमे रखनेसें कठ खुलजायगा, जैसे थियेटर हाउसम नृत्यकरनेवाले आते है, और थोडे रोज रहकर चले-जाते है, इसीतरह दुनियामे आना और पूर्वसचितकर्म-भोगकर-

चलेजाना है,-जो-कुछ धर्म कियाजाय वही शाथ चलेगा, किसीने अपनेलिये मकान बनवाया, मगर जब तयार हुवा-तो-व्यापारमें कुछ नुकशान आजानेपर बेचदेना पडा, देखिये! इरादा क्या था,-और बनगया क्या?—

३० जन्मदुःख जरादुःख,-मृत्युदुःखं पुनःपुनः,
संसारसागरे दुःख, तस्मात्-जागृत-जागृत, १

ससारमें जन्म-मरनका दुख लगाहुवा है,-ज्ञान पाकर-अपने आत्माके लिये कुछ धर्मसाधन करना फर्ज है, जिससें आइंदे मुक्तिका रास्ता हासिल हो, क्रोध-लोभ-मोह-वगेरा-षड्रिपु-जो-बुरेफल देनेवाले है. इनसें जहातक बने बचना चाहिये,-नोकरीमे-तकलीफ और स्वतत्रतामे आराम यह बात किसीसे छिपीहुई नहीं, मगर स्वतत्रता पाना आलादर्जेकी तकदीरके ताल्लुक है, जिसने पूर्वजन्ममे पुन्य किया होगा-वही-स्वतत्र होगा,—

३१ तिजारत करना और हिसाब लिखना नही यह कैसे बनेगा? मगर रातकों बडीदेरतक हिसाब करते रहना और नींदमे खलल डालना बहेत्तर नही, बीमारी पैदा होगी, और तकलीफ उठाओगे, दुनियामे सबसे नीचेदर्जेपर भिक्षा है, मगर साधुजनोंके लिये नीचीबात नही, साधुजनोंकों-भिक्षावृत्तिसें-गुजर करना शास्त्र फरमान है,-मगर शाथमे-ऐसामी-फरमान है, अपने-साधुपनेमें कायम रहना-लोभमे पडना नही, बडे शहरमे जानेसें खर्च जरूर होगा, उमदा चीज देखकर खरीदनेकी मरजी होजायगी, मगर ताकात देखकर खर्च करना, "-गरथ गाठे-विद्या पाठे-" मजकुर कहावतभी काबिले गौर है,—

३२ विना गुरुभ्यो गुणनीरधिभ्यो,-जानाति तत्त्व-न-विचक्षणोपि,
आकर्णदीर्घोज्वललोचनोपि,-दीप विना पश्यति नांधकारे,-१

चतर और होशियार आदमीभी-विना-गुरुके तत्त्वज्ञानकों नही जानसकता, अधरेमे रहीहुई चीज जैसे उमदा नेत्रवालाभी विदून

चिरागके नही देखसकता,-अगर कोई इस दलिलकों पेश करे,-रहम-दिलसें खेरात देना जैनलोग मुमकीन नही समजते, जवाबमे तलब करे, जैनलोग रहमदिलसें खेरात देना मुमकीन समजते है,-जैन-शास्त्रोंमे अनुकंपादानका बयान दर्ज है,-इसका माइना यह हुवा, रहमदिलसे दान देना किसीकों मना नही फरमाया, देखिये! तीर्थंकर महावीरस्वामीने दीक्षा इख्तियार कियेबादभी एक गरी-बकों अपने बदनका आधा कपडाभी देदियाथा, जैनशास्त्र कल्पसूत्र-वृत्तिमे जहा तीर्थंकर महावीरस्वामीकी सवानेउम्रीका बयान है, वहां देखलो! अलावा इसके जितने तीर्थंकर हुवे, उन्होंने दीक्षा इख्ति-यार करनेके पेस्तर रहेमदिलीसें सावत्सरिक दान एक-वर्सतक दिया है,—

३३ अगर कोई सवाल करे जैनके आषाढभूति-नामके-मुनि-चदअर्सेतक-एक-नटकी-बेटीके शाथ रहते थे जवाबमे तलब करे, जैनशास्त्र नही फरमाते जैनमुनि-ऐसा करे, जैनमुनिकों जैनके कायदे मुआफिक चलना चाहिये एकने शास्त्रके खिलाफ कोई काम किया -वो-दुसरेने करना ऐसा कोई फरमान नही जबतक आषाढभूति-जैनमुनि-नटकी बेटीके शाथ रहे-जैनलोग उनकों जैनमुनि-नही मानतेथे-शास्त्र फरमोनसे वे-जैनमुनि नही कहे जा सकते जब-वे-उस हालतकों छोडकर शास्त्रफरमानकों अमलमे लाये, उस हाल-तकों छोडकर जब मुनि हालतमे आये जब-जैनलोग उनकों जैन मुनि-मानते थे ऐसा जानना.—

३४ इन्सानकों लाजिम है-जो-काम करे अपनी तकदीरके भरु-सेपर करे, तकदीरकों कोई-रद-नही करसकता. जैसा अपना होने-वाला होगा अकल-दिलमे वैसी बुद्धि पैदा होगी, धर्मशास्त्रका फर-मान है,-पूर्वसंचित-कर्मके-उदयानुसार-दिलके इरादेहोते रहेगें. जैसा अपना होनेवाला होगा वैसाही बयान जबानसें अल्फाज होगा, एक-गुजराती-सायरनेभी-कहा है.

[दोहा]

शकुनां मांहि शिरोमणि,-वाणी-शकुनसोहाय,
सुखदुखना अनुसारथी,-वाणी उपजत आय,-१

इसका माइना जाहिर है, जैसा होनेवाला हो-मुंहसें वेसाही वचन निकलता है,-इसलिये इन्सानकों लाजिम है,-जिस कामकों शुरु करे उसकी अव्वलमे अछे अल्फाजोसें बयान करे, और उसमु-आफिक बरताव करे, जिससे सब काम फतेह होगा,—

[शार्दूलविक्रीडित]

३५ आयुर्वर्षशतं नृणा परिमित-रात्रौ तदर्धं गतं,
तस्यार्धस्य परस्य चार्धमपर-बालत्ववृद्धत्वयोः,
शेष व्याधिवियोगदुःखकलित-चायुः परिक्षीयते
जीवे वारितरंगचंचलतरे-सौख्यं कुतः प्राणिना,-१

आज कलके बहुतसें मनुष्योंकी-उम्र-करीब-सो-वर्सकी अदाज किइजाय-तो-उसमेसें आधी उम्र रातके वख्त नींदमे गई समजो, बाकी रही हुइमे आधी उम्र बालपनमे और उससे आधी-उम्र-जइ-फीमे खतम होती है, और दिलके इरादे किसीकिसीके पार पडते है, किसीके नहीभी-पडते, दुनियाका यही किस्सा है,-किसी सा-यरीने कहाभी-है,

दुनियाके मजे हर्गिज ! कम-न-होगे,
मगर अपसोस है-आखिर हम-न-होगे,

३६ चौइस तीर्थंकर, बारहचक्रवर्त्ती, नववासुदेव, नवप्रतिवासु-देव, और-नव-बलदेवोंका-आयुष्य-निमित्त मिलनेपरभी नही टुट सकता. बाकीके जीवोंका आयुष्य निमित्तमिलनेपर टूट सकता है, इसीलिये आयुष्यके-दो-तरीके बयानकिये, अवल नोपक्रम-आयु, जो-निमित्त मिलनेपरभी-न-टुटे, दुसरा-सोपक्रम आयु,-जो-निमित्त मिलनेपर-टुट-जाय,

[आवश्यक-सूत्रके अवल अध्ययनकी निर्युक्ति और टीकाका पाठ,-]

अज्झवसाण-निमित्ते, आहारे-वेयणा-पराघाए,
फासे-आणापाणे, सत्तविह झिज्झए आउ,-१

रागाद्यध्यवसानेन क्षीयते-आयु',-स्नेहाध्यवसानेनाप्यायुः क्षीयते, भयाध्यवसानेनाप्यायु' क्षीयते,-बहुत रागसें, बहुत स्नेहसें, और बहुत खौफसें आयुष्य टुट जाता है, दिलमें सदमा पहुचनेसे-इतकाल होजाता है,—

३७ दुसरा तरीका,-निमित्त,-मिलनेसे आयुष्य टुटजाता है,—
निमित्तादप्यायु' क्षीयते, तचानेकधा-स्यादिति,—
दडकस सथ्थ रज्जु,-अग्गीउदग पडण, विस वाला,
सीउन्ह अरइ भय,-खुहा पिवासाय-वाहीय,-१
मुत्तपुरीस निरोहे,-जिन्नाजिन्नेय भोयणे बहुसो,
घसण घोलण पीलण,-आउस्स उवक्कमाएए,-२

दडकसशस्त्ररज्जवः-अग्न्युदकयोः पतन, विष, व्यालाः सर्पाः-शीतोष्ण, अरतिः-भय-क्षुत्-पिपासा व्याधिश्च, मूत्रपुरिषनिरोध -जीर्णाजीर्णे च भोजने बहुशः-घर्षण चदनस्येव,-घोलन अगुष्ठागु लिभ्या यूका इव, पीडन-इक्ष्वादेरिव आयुष उपक्रम-हेतुत्वात्-उपक्रमा एते. कारणे कार्योपचारात्-यथा-तदुलान् वर्षति पर्जन्यः-यथा-चायुर्घृत,—

३८ किसीको कोइ शख्श दडोसें-मार-मारे-तो-मारखानेवा-लेका आयुष्य टूट जाता है, कोरडे मारनेसे-तलवार वगेरा हथियारसें-और-रस्सोंसें गलाफासीसें आयुष्य टूट जाता है,-कई-आगमे पडकर मरजाते है,-कई-पानीमें डुब मरते है, कई जहेरखानेसे-मरजाते है,-सांप-काटजाय तो आयुष्य टूट जाता है,-निहायत ठड और सख्ततापसेभी-कई शख्शोंका मरना होगया है. खौफसे कई-

शख्शोंने अपनी जान-खो-दिई है, ज्यादा भूख-प्याससेंभी-कई-शख्शोका मरना होगया है. सख्त बीमारी पानेसें और पेंशान-पाखाना रोकनेसे कईयोका इतकाल होजाता है,-बदहजमीसें-आयुप-टूट-जाता है,-किसीकों कोई-चदनकी-तरह घीसडाले-बहुत दान देवे-या-घाणीमे घालकर पीले-तोभी-आयुष्य-टूट-जाता है, इसतरह कई तरहके निमित्त आयुष्य टूटनेके फरमाये, कारणमे कार्यका उपचार करके बारीश होती देखकर कहा जाता है, अनाज बरसता है,-घृत-खानेसें तदुरस्ति बनी रहती है, इसलिये -घीकों-कईलोग-आयुष्य कहदेते है,-इसीतरह- उपर बतलाये हुवे निमित्त मिलनेपर आयुष्य टूट जाना फरमाया,—

३९ तीसरा तरीका, ज्यादा खाना खानेसे आयुष्य-टूट-जाता है, चौथा तरीका, बदनमे सख्ततकलीफ पैदा होनेसें आयुष्य टूट जानेका सबब है,-पाचमा तरीका, दिवार-या-छतपरसे गिरनेसे-कईशख्श मरजाते है, किसीपर विज विजली गिरी और मरगया यह बातभी कई दफे सुनते हो. छठा तरीका,-जहरीली चीजके-छुनेसेभी-कई मरजाते है, और सातमा तरीका-श्वासोच्छ्वास रुकजानेसेंभी आदमीका-इतकाल होजाता है,-ये-सातसबब आयुष्यटूटनेके फरमाये जैसे किसीने पचासहाथका-रस्सा-जमीनपर बिछाकर एक -सीरेसें-आग-लगाई,-वो-रस्सा-धीरेधीरे जलता रहेगा, अगर -वही-रस्सा आधाजला हुवा-लेकर कोई शख्श-हलवाइकी भट्टीमें डालदेवे-तो-जल्दी जल जायगा,-जो-रस्सा आहिस्ते जलनेवाला था,-वो-भट्टीमें डालनेसे जल्द जल गया, इसीका-नाम-ज्ञानीयोंने आयुष्य टूटना-फरमाया, सबुत हुवा, तीर्थंकर चक्रवर्ती वगेरा तेसठ-शिलाका-पुरुषोंका आयुष्य निमित्त मिलनेसेंभी नही टूटता, दुसरे शख्शोंका टूट जाता है,-स्थानागसूत्रमेंभी-इसीतरह आयुष्य टूटनेका बयान है,—

४० अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे, साधुलोगोंकों दुख-

सुका-आहार खानाचाहिये, जिससें बदन पतला बनारहे, घी, दूध, मिठाई वगैरा-खानेसें-बदन ताजा मोटा होजायगा, और पठन-पाठनवगैरा-धर्मके काम-न-होसकेंगें, जवाबमें तलब करे, बदन पतला-या-ताजा-मोटा होना खान-पानके ताल्लुक नही, बल्कि! तकदीरके ताल्लुक है,-अछीगति-या-बुरीगति होनेका-अदाज शरीरके पतले-या-ताजेमोटेसें नही किया-जासकता, जिसका-मन-पापकर्मसें पतला हो, उसीकी अछीगति-होगी,—

[आवश्यक सूत्रके अवल अध्ययनमे सबुत है,]

"न-दौर्बल्य बलित्व-वा,-सद्गत्यै किंतु भावना,-"

शरीर पतला होनेसे अछीगति और ताजा-मोटा होनेसे बुरीगति हो, ऐसा कोई नियम नही, अछी-बुरी-गतिहोना-मनके इरादेपर दारमदार है,-एक वख्तका जिक्र है,-जब तीर्थंकर महावीर स्वामीके बडे चेले गौतमगणधर तीर्थअष्टापदकी जियारतको गये थे, और रातकों वहा ठहरेथे-बहिस्तके-दो-देवतेभी-वहा तीर्थकी जियारतको आये थे. एकका-नाम-वैश्रमण और दुसरेका नाम जृंभक देव -था, रातके वख्त-अशोकवृक्षके नीचे गौतमगणधर द्वादशांगवानीका-पाठ करनेलगे,-उसमे बयान आया, साधुलोगोंकों-लुखा सुका आहार खाना चाहिये, बहिस्तके-दो-देवते-जो नजीकमे खडे हुवे-इसपाठकों-सुनतेथे, उनके दिलमे-शक-पैदा हुवा, महाराज बोलते है,-साधुलोगोंको लुखा-सुका-आहार खाना, और-आप इतने ताजे- मोटे बने हुवे है, उसवख्त उन्होंने गौतमगणधरसे दरयाफत किया, और-महाराजने उसपर जवाबदिया, शरीर-ताजा-मोटा-या-पतला होना अछीगतिका सबब नही. जिनके मनकी अछीभावना होगी-वे-अछीगति हासिल करेगे, ऐसा फरमान है, बहिस्तके देवतोंका-शक-रफा हुवा, और खुशहोकर अपने वतनको गये, इधर गौतमगणधर तीर्थअष्टापदसे रवाना होकर तीर्थंकर महावीर स्वामीकी खिदमतमें पेश हुवे,—

४१ मजहबकी पाबदीकेलिये-या-समाजसुधारके लिये अगर सभा किईजाय और-जो-जो-ठहराव पासकिये जाय-उनपर अमलकरना चाहिये, अगर अमल नही किया-तो-सभाभरनेसें क्या फायदा? फर्ज करो! एक कागजके टुकडेपर-दशमण अग्नि-ऐसा लिखकर उस टुकडेकों-रुईके-भरेहुवे मकानमे रखदिया जाय-तो-इससें क्या! रुई-जलेगी? हर्गिज नही, अगर सच्ची अग्नि एक-तोलेभर डालदिई गई हो-तो-तमाम रुई जलकर खाख होजायगी, इसका मतलब यह निकला-जो-कुछ-ठहराव करना उसपर अमल करना जरुरी है-कोरी बातोंसें क्या फायदा होगा?

४२ जैनमुनि-किसीके लडकेको विना हुक्म उनके वारीशोंके दीक्षा-न-देवे, ऐसा शास्त्रफरमान है, बारा-पनरा वर्सके लडकेकों दीक्षा देना, जोखमका-काम है, जवानीमे उनसें सयम पाला जायगा-या-नही? यहभी-एक-खयालमे लानेकी बात है,-एक-वज्रस्वामी-और-हेमचद्राचार्यकी मिशाल देना-यह-चरितानुवाद हुवा. चरितानुवाद-सर्वव्यापी नही. विधिवाद सर्वव्यापी होता है, विधिवादमे छोटी उम्रवालेकों दीक्षा देना शास्त्रफरमान नही, जमाने पेस्तरके-मुनि-ज्ञानी होते थे,-वे-अपने ज्ञानसें जानसकते थे, फला शख्शकी तकदीरमे दीक्षायोग है-या-नही? हस्तरेखा-देखकरभी-कह-सकते थे, आजकल उतनी माहिती नही, और छोटी उम्रवालेकों दीक्षा देनेका पक्ष करना यह-चेलेका-लोभ-नही-तो-और क्या हुवा? छोटी उम्रमे दीक्षा लेकर-जवानीमे कई शख्श दीक्षा छोड देते है,—

४३ नये दीक्षित-चेलेके माता-पिता वगेरा जब जैनमुनिके सामने आनकर दिलगिर होते है, उस बातपर खयाल नही करना और कहना, दीक्षा लेनेवालेकों रोकना नही, यह-चेले करनेके लोभकी बात है-या-नही? इस बातकों सोचो! जैनशास्त्र-साफ-साफ बयान करते है. जिस धर्मकाममे ज्यादा नुकशान-और-कम-फायदा देखो,

-वो-काम मत करो, अगर कहाजाय-हम-दुसरोंको दीक्षा देकर उनका सुधारा करते है,-जवाबमे मालुम हो अवल अपना सुधारा करना चाहिये,-फिर दुसरोंके सुधारेकी बातें करना ठीक है,—

४४ जिस जिस जैनतीर्थोंमे-या-जिनमदिरोंमे देवद्रव्यकी-रकम -जमा-हो, उस उस जैनतीर्थोंकी-या-जिनमदिरोंकी मरम्मतमें लगादेना चाहिये.-या-दुसरे जैनतीर्थोमे-जहा-मरम्मत दरकार हो -देदेना चाहिये, चौईस तीर्थंकर सब जगह-एक है, कई-तीर्थोंमें और गावोंके जैनमदिरोंमे पूजाका इतजाम कम है,-उसजगह देव-द्रव्य देना चाहिये, आगेका-फिक्र करना जरुरत नही. जैनसघ-पाचमे आरेकी अखीरतक चलता रहेगा, और-द्रव्य-चढाते रहेगे, जिन-जिन-श्रावकोंके हस्तगत-देवद्रव्य है,-वे-समजते होगें-हमको पुछनेवाले कौन है? जवाबमे तलब करो, तुमको पुछनेवाला जैनसघ है,-सघमें-साधु,-साध्वी,-श्रावक,-श्राविका-मौजूद है,-साधुमहा-राजोंकी-सलाह लेते नही -और श्रावकलोग अपने मनमुजब बरताव करते है श्रावकको देवद्रव्य अपने-घर-जमा-नही रखना चाहिये. सब दिन-एकसरिखे नही होते, धर्मका-जो-काम-करलिया-वही-अपना है,-आजकलके श्रावकलोग-धर्मम-जल्दी खर्च करते नही, विवाह-सादीमे-और मौज-शौखमें तुर्त-खर्च करदेते है, और कहते है,-क्या करे! विवाह-सादीमे और मौज शौखमे-खर्च-न-करे-तो-काम नही चलता, मगर इतना खयाल नही करते दुनयवीकारो-बारमे-धर्म-बडा है,-बदौलत धर्महीके आराम-चैन-मिला, और आइदे मिलेगा,—

४५ कितनेक श्रावक-अध्यात्मज्ञानी बनकर सामायिक-प्रतिक्र-मण और देवपूजा-करना छोड देते है,-और कहते है, हमने-आत्मज्ञान -जान लिया है, मगर यह-बात-कहनेमात्र है, असली नही, उपा-श्रय-पसद नही, तो-योगाश्रम-नाम-रखना पडा. सामायिक-नही, तो-योगसाधन-नाम-रखना पडा,-

असीरमे बात क्या हुई? कई अध्यात्मज्ञानी श्रावक कहते है, शिथिल -आचारवाले जैनमुनियोंपर हमारा एतकात नही जमता, और हम उनकों नही मानते, (जवाब.) नकली अध्यात्मज्ञानीश्रावकोंपर जैन-मुनियोंका एतकात कब जमता है? और उनको व्रतधारीश्रावक तरीके कब मानते है? जो-जो-श्रावक-कहलाते है,-वेभी-पडितश्रावकोंको धर्मप्रचारक तरीके-मानतेही है, सोचो! फिर बात क्या हुई? क्या मुनिजनोंसेभी शास्त्रके इल्ममे श्रावक बढगये? जो-धर्मशास्त्रके ज्ञानमे कम इल्म होनेसें भाषण देतेवख्त-रुक-जाते है, अगर कहाजाय-मुनिजनोंमे सप नही, जवाबमे-तलब करो. श्रावकजनोंमे कहा सप है,-गाव-गाव-और-शहर-ब-शहरमे तड पडेहुवे है. एक-तडवाले कहते है,-फलाना काम ऐसा करो,-दुसरे तडवाले कहते है, दुसरी तरहसे करो,-देवद्रव्यकेलिये-एक-कहता है.-दुसरे तडवाले-देयगें -तो-हम देयगें, कठी-विशाओशवाल और दशाओशवाल-जैनश्वेतावरमूर्त्तिपूजकसघमे है, नमस्कार महामत्र पढनेवाले और जिनमूर्त्तिकों माननेवाले जैनसगमे क्या नही? इस बातको सोचो?—

४६ कई कहते है जैनोंकी सख्या घट रही है, कई फरमाते है मतमतातर बहुत चलगये, कइयोंका कहना है बालविवाह होनेसें मृत्यु ज्यादा होते है,-जवाबमे मालुम हो, बालविवाह होना बेशक! अछा नही, मगर उस बातपर अमल करनेवाले कितने है, इसपर खयाल किजिये, जैनोकी सख्या घटना बढना किसीके ताल्लुक नही, पैदा होना और मरना कदीमसे चला आता है, मरते है-वैसे पैदाभी होते है,-मजकुर चक्र हमेशा फिरताही रहता है, इसका फिक्र करना क्या! जरुरत? हा! तदुरस्तिकेलिये-नापाक चीजोंसे परहेज करना बेशक! अछी बात है,-इस दुनियामे-तीर्थंकर-गणधर-चक्रवर्त्ती राजे-महाराजे-बडेबडे आलीम तत्त्ववेत्ता और ज्ञानी पैदा हुवे और उम्र खतम होनेपर चलेगये-तो-दुसरोंकी कौन गिनती? अगर बदनकी तदुरस्ति रखना चाहो,-शुभहके वख्त दतमजनसे मुहकों साफ

करके मिश्री डालाहुवा गर्म दूध, पुरी-कचौरी-चाह-ताजी मिठाई -बादाम-पिस्ते-सुके अजीर-अखरोट वगेरा मेवा-इस्तिमाल करते रहो. और गाजा-भग-बीडी-चिलम-हुका-और अफीम वगेरा नशीली चीजोंसे परहेज करो,—

४७ अगर कोई श्रावक इस दलिलको पेश करे, पेस्तरके जैनाचार्य, जैनउपाध्याय और जैनमुनियोंने जैनतीर्थोंके बारेमे कितनी हिफाजत किईथी? आज उन्हीकी पुस्तानपुस्तम होनेवाले जैनाचार्य-जैनउपाध्याय-गणी-प्रवर्त्तक-विद्यासागरवगेरा इल्काब धरानेवाले मौजूद है, फिर जैनतीर्थोंकी हिफाजत जैसी होनाचाहिये होती नही. इसका क्या सबब? (जवाब-) इसका यही सबब है,-पेस्तरके जैनाचार्योंको हुवे-कईसकडों-वर्स-होगये-उसजमानेकी मिशाल-आजकलके जैनाचार्य-उपाध्याय-गणी-प्रवर्त्तक-विद्यासागर वगेराके शाथ लगाना कैसे कारआमद होगी? उनकी तक्दीर आलादर्जेकी थी, आजकल वैसी आलादर्जेकी तकदीर कहा है? मिशाल -वो-देनाचाहिये,-जो-कारआमद हो.-मुताबिक जमानेके जैनतीर्थोंकी हिफाजत-आजकलभी होतीही है यूतो-धर्ममे और दुनयवी कारोबारमें वाद विवाद चलताही है,-इसका फिक्र-कहातक-करना? जहातक बने कोशिशकरते रहना यही-मुनासिबबात है,-पेस्तरके श्रावक-आनद-कामदेव-वगेरा धर्मम कितनेचुस्त थे? उदायनमत्री-और-वस्तुपाल-तेजपाल-कैसे धर्मपाबद थे? आजकल-कई-श्रावक दिवान, रायबहादूर,-जे पी.-बारीष्टर, सोलीसिटर-और वकील वगेरा मौजूद है, जैनतीर्थोके-बारेमे-उनोने क्या किया? जैनतीर्थोंके खजानेमे देवद्रव्यकी रकम होतेहुवेभी-जिनमदिरोकी-और जैनके तीर्थस्थानोकी मरम्मत होती नही,-तो-घरके रुपयेलगाकर मरम्मत कराना कैसे होगा? जैनश्वेताबर कोन्फरन्समेभी-जैनमुनियोकी सलाह लेते नही. मगर जब काम अटक जाता है,-सलाह पुछने आते है,—

४८ कई-गाव-नगरोंमे-जहा-जैनोंकी आबादी-और जैनमंदिर कसरतसें है, जिनमूर्त्तियेंभी वहा ज्यादा होती है-उसहालतमें किसी दुसरे गावके श्रावक-अपने गावके जिनमदिरकेलिये-जिन मूर्त्ति-मागने-आवे-तो-कहते है,-नकरा-दो,-यानी-इतने रुपये-दो-तो-मूर्त्ति देयगें. उसवख्त-वहा-कोई जैनाचार्य-उपाध्याय-गणी-प्रवर्त्तक-विद्यासागर वगेरा मौजूद हो, और श्रावकोंकों कहे जिनमूर्त्ति-देनाचाहिये,-श्रावकलोग उसवख्त-सुनतेभी-नही. और कहदेते है आप-अपना धर्मध्यान किजिये-इसमे आपको बोलनेकी जरुरत नही, बडे ताज्जुबकी बात है,-श्रावकोंकों अपनी भूलपर खयाल नही आता, और बाते बडीबडी बनाते है,-अगर कहाजाय मूर्त्तिकी एवजमे-जो-नकरेकी-रकम लिई जाती है-वो-देवद्रव्यके खजानेमें डाली जाती है,-जबाबमे मालुम हो.-मूर्त्तिके लिये रकम मागना क्यो? वहाभी जिनमदिर है,-और यहाभी-जिनमंदिर है,—

४९ अगर कोई-श्रावक इससवालकों पेंश करे. आजकल-मुनिजनोंमें ऐसा रवाज देखा जाता है,-यह-हमारा श्रावक है,-यह-दुसरोका है,-आचार्य वगेरा पदवीके बारेमे श्रावकोंके सेकडो रुपये खर्च कराये जाते है, जबाबमे तलबकरे, श्रावकोंकों खुद सोच लेना चाहिये, अपनी मरजी न-हो-तो-क्यो-खर्च करना, आचार्यवगेरा पदवी इख्तियारकरनेसे पेस्तर खुद-उसमुनिकों सोचना चाहिये, आचार्यपदवीके गुण-मैने-हासिल किये है-या-नही? यह हमारा श्रावक है.-और-वह-दुसरोका-है,-ऐसा खयाल करना मुनिजनोंकों मुनासिब नही, श्रावक किसके? और मुनि-किसके? सब-जैनसघ-तीर्थंकरदेवोंके शासनमें है,-ऐसा समजना चाहिये,

५० अगर कोई शख्श इसदलिलको पेंश करे, जैनोंके अवल तीर्थंकर रिषभदेवजीने जब-वे-दुनियादारी हालतम थे, विधवाविवाह किया था,-जबाबमे मालुम हो, तीर्थंकर रिषभदेवजीने विधवा

विवाह नही किया, उनोको-सुमंगला ओर सुनदा नामसे-दो-औरतें थी, सुनदानामकी औरतके बारेम-जो-लोग-कहते है,-वो-विधवाथी मगर नही,-वो-विधवा नही थी, बल्कि! कुवारी थी, देखो! जैनागम-आवश्यकसूत्रके-अवल-अध्ययनकी निर्युक्ति और टीकामे क्या पाठ है ?

[आवश्यकसूत्र-निर्युक्ति-अध्ययन पहेला.]

पढमो अकालमच्चू-तहिं ताल फलेहि दारओ पहओ,
कन्नाय कुलगरेण-तए-गहिया-उसभपत्ती.-१

[आवश्यक सूत्रवृत्तिका-पाठ,-]

स्वामिनः किंचिदुनाब्दस्यैन किंचन युग्मक,
जातापत्य अपत्ये-स्वे-मुक्त्वा तालतरोरधः-१
रिरंसार्थः प्रविवेश,-लीलाललितमदिर,-
तदा तालतरोर्वातकंपितादपतद् द्रुत,-२
फलमेक शिलेनाद्रे,-र्निपन्नस्तेन दारक.,
युग्म तदापि संवर्ध्य,-कन्या दिनानि कत्यपि, ३
देवलोकममान्मृत्वा,-कन्यैका दिव्यरूपिणी,
दृष्टा मिथुनकैः शिष्टा,-नाभयेग्राहि-तेन-सा,-४

तीर्थंकर रिषभदेव जब पैदा हुवे-और उसके बाद जब एक वर्सका अर्सा गुजरा, दुसरे युगलीक मनुष्यकी औरतको एक-जोडला-पैदा हुवा -यानी-लडका-लडकी शाथ जन्मे, कितनेक रोजके बाद एक द्रख्तके नीचे उस-जोडलेको सोलाकर उसके अम्मा-वालिद्-द्रख्तोंके निकुजमें फिरनेको गये, इत्तिफाक! ननीरुके तालवृक्षसें-एक-फल हुटा, और-उस-जोडलेपरा, उनमेस लडकेका इतकाल हुवा, लडकी -बच-गई, उसके अम्मा-वालिद्-जब आनकर देखते है-तो-लडका मरा पाया, लडकी अकेली-जींदी-देखी, चदरोज उनका-पालन-करते रहे, जब उनका-इतकाल होगया, दुसरे-युगलीक-मनुष्योंने-उस कन्याको-लाकर-नाभिकुलकरको दिई,-उनोने कहा, हाल-

रखो, रिषभदेवके शाथ विवाह दिई जायगी,-उस कन्याका नाम-सुनंदा-थी, जब-वो-बडी हुई-रिषभदेवजीके शाथ विवाह दिई गई. उपर लिखागया है,-तीर्थंकर रिषभदेवजीको-दो-औरते थी. वडी-सुमगला और छोटी सुनदा, देखिये! इस पाठमे विधवाविवाहका बयान कहां है.? समज करसें चाहे-सो-कोई कुछ कहे, मगर तीर्थंकर रिषभदेवजीने विधवा विवाह नही किया था,—

५० जैनमुनिकों गृहस्थके घर भिक्षाकों जाना-तो-थोडा आहार लेना शास्त्रहुक्म है, जिससे उसगृहस्थको खानपानमें तगी-न-पडे, जहां विवाह-सादी-या-वास्तुनवेराके सबब-खानपान होरहा हो,-या-मृत्युके पिछाडी-जीमन-कियाहो, वहा भिक्षाकों जाना हुक्म नही, जहा स्वधर्मिवात्सल्य-या-नवकारसी वगेराका धार्मिक-जीमन-हो, और उसका मालिक आनकर अर्ज करे-तो-उसजगह भिक्षाकेलिये जाना हुक्म है,

५१ ज्ञानीशख्श सोताहुवाभी-अपने मनःपरिणामसे-जागता है, और अज्ञानी-जागता हुवाभी-अपने अज्ञानसे सोता है,-एक-श्वासोच्छ्वास लेते जितना वख्त लगे, ज्ञानीशख्श-अपने मनःपरिणामसे जितने पापकर्म-काट-सके, उतने पापकर्म-अज्ञानी क्रोड पूर्वतक-तपकरकेभी नही काट-सकता, इसीलिये धर्मशास्त्रोंका फरमान है, अज्ञानके बराबर कोई-इसजीवका दुश्मन नही, और ज्ञानके समान कोई दोस्त नही.-जीवोंकी-हिंसाकरना-सब धर्मशास्त्र मना फरमाते है. कितनेक लोग-चमडेकेलिये जानवरोंकी हिसा करते है. कितनेक केशोकेलिये-कितनेक पीछोकेलिये-कितनेक शिंगोकेलिये-और चरबीकेलिये जानवरोंकी-हिसाकरते है,-धर्मशास्त्रोंका फरमाना है,-जैसा अपना जीव है,-वैसा-उनकाभी-है, और अपनेकों -तकलीफ होती है,-वैसे-उनकोंभी-होती है,-जहातक बने-जीवों पर रहम करो. और सत्यधर्मपर साबीतकदम रहो,

५२ कितनेक शख्श इसदलिलको पेश करते है,-हमने इसज-

न्ममे-किसीका बुरा किया नही. किसीको जानसे मारा नही, फिर हमको इतनी तकलीफ-क्यो होती है;-जवानमे मालुमहो, पूर्व जन्मम-जो-कुछ पाप बनगया होगा-उससबबसें यहा तकलीफ होती है, वगेरपापकिये तकलीफ-होती-नही, कितनेक शख्श कह देते है,-धर्म-धुर्म-सब गप्प है, खानपान-और-एश करना यही मुनासिब है मगर-इतना खयाल नही करते यहा-जो-सुखचैन-मिला है, पूर्वजन्मके कियेहुवे-शुभकर्मोका फल है,-जब मरनेकी आफत पेश होगी, खानपान और एश-आराम नही बचा सकेंगे, धर्मही-फायदेमद होगा.—

[दोहा-]

५३ मे-मेरा-इसजीवकों,-बधन मोटा जान,
म-मेरा-जाकों नही,-सोही मोक्ष पहचान, १

मेरा मकान और धनदौलत-मेरी औरत-और बेटे-यही-ममता -इसजीवकों-बधनरूप है,-अगर-मे-और मेरापना छुटजाय-फिर इसजीवकी मुक्तिहोनेम-देरही-क्या है, ? जबतक ममता नही छुटी -पापकर्म-लगता रहेगा, पुन्य-या-पापका होना-मनःपरिणामके ताल्लुक है,—

५४ हरशख्शको लाजिम है-अपने दिलमे खयालकरे-मे-किस गतिसे आया हु ? मरेस धर्मपुन्य कितना बना ?-और-आइदे मेरी क्या गति होगी ? आजकल-कोई-केवलज्ञानी मौजूद नही, धर्मशास्त्रके फरमानपर एतकात लाना फर्ज है, कइलोग कहते है,-खान पानकेलिये-अनाज-जल-और वनास्पतिकायके जीवोकी-जो-हिसा -करना पडती है,-इसमे पाप नही लगता अगर ऐसा-न-करे-तो-काम नही चलता, मगर धर्मशास्त्र-फरमाते है,-अपने मतलबके लिये-जो-कुछ-हिसा किइजाय उसमें पाप लगता है खानपानकी गरजसे-अनाज-जल-और वनास्पतिके जीवोकी हिंसा किई जाती है-पृथिवीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय और वनास्पतिकायके

जीवोंने कहा नही-तुम-हमारे शरीरको अपने काममे लो, मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके इनमें जीवोंका होना साबीत है,-जानवर-और -परींदोंम कीडे-मकोडे और डास-मछरवगेरामे त्रसजीवोंका होना साबीत है. उन-जीवोंके आरामचैनमे खलल पहुंचाकर अपना आराम चाहना-इसमे भावहिंसा-लगती है, जहा-भावहिंसा हो ? वहा-पाप-क्यौं नही ? इसका कोई जवाब देवे, अगर कोई श्रावक इस मजमूनकों पेश करे, आजकलके जैनमुनियोंमे-आलादर्जेकी धर्म-क्रिया नही रही, जवाबमे मालुम हो,-श्रावकोंमे श्रावकधर्मके (२१) गुण, -(१२) व्रत,-और (१४) नियमवगेरा-आलादर्जेकी-धर्म-क्रिया कहा है, ! मुताबिक जमानेके दोनोतर्फ व्रतनियममे कमजोरी आगई है,-ऐसा कहना कोई हर्ज नही.

५५ अगर कोई-इस मजमूनको पेश करे.-राजगृहीनगरीका श्रेणिकराजा-और उसका बेटा-कोणिक-जैन थे,-कोणिकने अपने वालिद श्रेणिककों पिंजरेमे डाला था. और बडी तकलीफ दिई थी, जैनोंकी पितृभक्ति यह है.-(जवाब.) जैनशास्त्र नही फरमाते बेटा वालिदकों तकलीफ पेश करे.-दुनियादारीकी अदावतसे कोई किसीसे लडे-इसमें धर्मशास्त्र-क्या करे, धर्मशास्त्र-हिदायत देनेवाले है.-अगर उसपर कोई अमल-न-करे-तो-उसका कोई क्या करे ? जो-शख्श जैसा करेगा,-वैसा-फल पायगा, धर्मशास्त्र नही फरमाते अधर्म करो. अगर कोई कहे, अभयकुमार नामका शख्श जैनमजहब-पर-साबीतकदम और तीर्थंकर महावीरस्वामीका-धर्मपावद श्रावक था. और उसकी एक-कसाईके बेटेसे दोस्ती थी, (जवाब) अभयकु-मार राजकुमार था. उसके शाथ-कोई-दोस्ती रखना चाहे,-दोंनोकी -दोस्ती होसकती है,-इससे क्या हुवा. दोंनोंका मजहब अलग अ-लग था. अभयकुमार मास नहीं खाता था.-ताहसीर अपनी अपनी जुदी होती है.-बाप-बेटेकी ताहसीर एक नही होती.—

५६ अगर कोई इस दलिलकों पेश करे, जैनशास्त्रोंमे स्वर्गकी

देवागना-और उनकी खूबसुरती बयान किई, जो-शख्श यहां पुन्य -धर्म-करता है. आइंदे स्वर्ग-और मुक्ति पाता है. (जवाब) इसमें जैनशास्त्रोंने कोनसी बेजा-बात फरमाई? दुसरे मजहबके शास्त्रममी -यही बात दर्ज है-स्वर्गके आराम-जैन-मनुष्यलोकसें बढकर होना कोई गलतबात नही, मनुष्योंकी खूबसुरतीसें देवतोंकी-खुबसुरती ज्यादा होती है,-जैसे यहा-मर्द औरत है. स्वर्गमे-देवते-देवागना है.-इस बातको तमाम शास्त्रकारोंने मंजुर रखी, जो-लोक-स्वर्ग- नरकका होना नही मानते वे-चाहे-न-माने, उनकी-मरजीकी बात है.—

[बयान-धर्मशास्त्रका खतम हुवा,-]

[दुनयवी-कारोबार]

१ दुनयवी कारोबारमें-रोटी-कपडा-और-मकानकी जरूरत सबकों होती है, चाहे साधु हो, या-दुनियादार हो. साधुलोग भिक्षा मागकर गुजरान करते है, दुनियादारलोग-दौलत कमाकर काम चलाते है, साधुलोगोंकों रुपयोंपैसोंसें जरूरत नही. दुनियादारोंको जरूरत होती है, दौलत मिलना-न-मिलना पूर्वसंचित-कर्मके ताल्लुक है, मगर चाहना सबको बनी रहती है,-चाहे जितनी कोशिश करो. अगर चीज मिलनेवाली-न-होगी-तो-हर्गिज! नही मिलेगी. और अगर अपनी तकदीरमें मिलनेवाली-हो-तो बिदून कोशिश किये- घरबेठे-चीज मिलजायगी दुसरा शख्श घर आनकर देजायगा, इसीका नाम तकदीरकी खूबी है,—

२ मोहब्बत उनके शाथ रखना चाहिये,-जो-अपने शाथ साफ दिलसें बरताव करे, चाहे मर्द हो,-या-औरत-जिनके शाथ मोह- ब्बत-न-रखना हो, उसके शाथ चीठी लिखनेका बरतावभी-बंद- करदेना चाहिये एक-साफ दिल-दुसरा छलकपटवाला-दोंनोका बनाव कैसे बनसकेगा? भारतके मध्यखंडमें-अंग, बंग, कलिंग,

मगध, कोशल,-पांचाल, कुरु, सिंध, विदेह, सोरठ, दशार्ण, शूरसेन, विराट, कुणाल, लाट, कोंकन, कर्णाटक, तैलग, द्राविड, मध्यप्रदेश, मालवा, राजपूताना वगेरा मुल्क मशहूर है, अयोध्या, राजगृही, मिथिला, चंपा, बनारस, पटना, हस्तिनापुर, शौरीपुर, कपिलपुर, कौशांबी, भद्दीलपुर, वीतभयपत्तन, मथुरा, पावापुरी, सावथ्थी, श्वेतविका, उज्जेन, भरुअछ, द्वारिका, नाशिक, लंका, श्रीनगर, अमृतसर, लाहोर, इलाहाबाद, कलकत्ता, नागपुर, बंबई, अहमदाबाद-कराची वगेरा बडेबडे शहर है, किसी मुल्क-या-शहरके-बाशिंदोंके शाथ अपना व्यापार-रोजगार हो, चीठी देते रहना नेकीसे उनके शाथ बरताव करना फायदेमद है,—

३ चीन, बर्मा, आसाम, कोरिया, तिब्बत, अफगानिस्तान, और बलुचिस्तान, हिंदके-करीब-करीबके मुल्क है, युरोप, एशिया, आफ्रिका, अमेरिका, और आस्ट्रेलिया-बडेबडे खड है. इग्लाड, फ्रास, जर्मनी, स्पेन, नोर्वे और रुस-ये-जमाने हालमे मशहूर मुल्क है, लडन, पेरीस, मार्सेल्स, वियेना, बर्लीन, सेंटपिटर्सबर्ग, बगदाद, बसरा, काबुल, एडन, पेकिन, टोकियो, रगून, मंडाले, सिंघापुर, न्यूयार्क और चिकागो वगेरा नामी और मशहूर शहर है.—

४ रैलमुसाफरी करते वख्त-माल-असबाब जहातक बने-कम-रखना अछा है, मगर अपना बिस्तर जरूर शाथ रखना चाहिये,-अगर आप-दौलतमंद शख्श है,-तो-सेकंड क्लास-या-इटरक्लासकी गाडीमे मुसाफरी करना अछा है,-आराम-और इज्जत दोंनों बने रहेगें, इत्र लगानेका-जिसकों शौख हो, जेबी इत्रदान जिसमे छोटी छह-शीशी-इत्रोसें भरीहुई रहसकती है पास रखो. लोंग-साइड-या सोर्ट-साइड-चश्मे-डबल ब्रीचफ्रैमके बनेहुवे जिसकों जरूरत हो. डोक्तरोंकी सलाहसे खरीदे और काममे लावे, अपने नामकी रबर स्टाप उमदा बनीहुई इसलिये पास रखो, वरवख्त चीठीपर लगानेकों-काम देवे. और अगर तुमकों टाईम देखनेकी जरूरत है-तो-

एक जेंबी घडीभी पास रखना चाहिये, अगर तुमकों ठीक वख्त नींद-मेसें-जाग-जाना है तो-आलारम लगीहुई-टाइमपीस-अपने बि-छोंनेके पास रखकर सोजाओ.-जिससें-आलारमकी घटी बजनेसें फौरन! नींद खुलजाय,—

५ कापूरके अर्ककी एक-दो-शीशी पासरखो, जिससे कोलेरा और बदहजमी वगेरा बीमारीयें रफा होसके, पींपरमींटके अर्ककी-एक-दो-शीशीभी जरुर पासरखना चाहिये. जिसके इस्तिमालसें बादी मिटसके बदहजमी रफा हो और-भूख-लगे,-पेन्सील-होल्डर-या-फाउटन पेनभी-पास रखो -नोटबुक-अछे-कागजोंकी बनी हुई-उमदाछाप जिल्द और लकीरवाली हरवख्त पासरखो, बरवख्त याददास्त लिखनेको कामद, उमदा पोस्टकार्ड-लिफाफे-और नोट-पेपर खुबसुरत देखकर खरीदना चाहिये, दैनिक-सप्ताहिक-मासिक-या-पाक्षिक वगेरा अखबार पढतेरहो, जिससे नये नये समाचार मालुम होते रहे, रजीष्टर लेटर, वी-पी-पार्सल, मनीओर्डर-या-टेलीग्राफ करनाहों-तो-पोस्टओफिस-या-तार ओफिसमे खुद-जाकर-नजरके सामने करो, दुसरोंके भरुसेपर रहना बहेत्तर नही, -रुपये-पैसे-या-नोट रखनेके लिये-छोटासा पाकीट-जो-जेंबमें रहसके हरवख्त पासरखो, जिससे सुभीता रहे —

६ अगर कोई दुसरा शख्श अपनाकाम-बिगाडदे-तो-धर्मशा-स्त्रका फरमान है-अपने अशुभकर्मके उदयसें ऐसाहुवा समजना, और दिलमे गुस्सा नहीलाना, अगर आजाय-तो-उसकों घटानेकी कोशिश करो, कितनेशख्श तावेउग्र-गुस्सा रखते है,-यह मुनासिब नही,-आतबिरादरीमें-मेल-मुलाकात रहे तो-उमदाबात है, तड-पाडनेकी कोशिश नहीं करना चाहिये,-इससे नाइत्तिफाकी बढेगी,—

७ एक-धर्मगुरुने अपने सेवककों-कहा तुमने लाखो रुपये पैदाकिये धर्ममें क्या! खर्चा?-उसने जवाब दिया. आजकल-क-

माई घटगई है, नाणेकी भीड बहुत है, धर्ममें कैसे खर्च करसके. ? बाद चंदरोजके जब उसके लडकेका विवाह आया. धर्मगुरुने फिर पुछा,-बेटेके विवाहमे कितना खर्च करोगे ? उसने जबाबदिया-ब-मुजब अपनी हेसीयतके पाचहजार रुपये जरूर खर्चने पडेंगे, धर्मगुरुने कहा, धर्मकेलिये-तो-नाणेकी भीड बतलातेथे, और दुनयवी कारो-बारके लिये पाचहजार खर्चनेकों तयार होगये.-क्या खूब बात है ?

८ पेस्तरके जमानेमें जब-युद्ध होता था,-धनुष्य-बाण-और भाले-तलवारसें लडतेथे, लडाईके वख्त-हाथी-घोडोंपर और रथों-पर बेठकर लडने आते थे,-और लोहेके वख्तर पहनते थे, चक्र-वर्त्ती-वासुदेव-और-प्रतिवासुदेवराजे-महाराजे सिंहनाद करके ल-डाईमे सामील होतेथे, शुरुआतमे-शंख-बजातेथे. और अखीरमें चक्रके जरीयेभी युद्ध होताथा, जैनरामायण-और जैनग्रंथपांडवचरित देखिये ! उनमें मजकुर बयान दर्ज है,-विवाह-सादीके बारेमे पेस्त-रके जमानेमें स्वयवरमंडप-होताथा, और-कन्यायें-इच्छासें-विवाह -करतींथीं, माता-पिताकी मरजीसेंभी-वर-कन्याका विवाह होता था. कई-वर-कन्या-गाधर्वविवाहभी-करतेथे,-तीर्थंकरोंके जमानेमें विद्याधरोंके विमान आस्मानमें चलतेथे,-समुदर और बडी बडी नदीयोंमें नाव चलतीथी, और माल-असबाब एकमुल्कसे दुसरे मुल्क और एक-शहरसें दुसरे शहर पहुचाया जाताथा, बैल-और-घोडोंकी गाडी हमेशा चलती है, जमाने हालमे रैलका प्रचारजारी है,-उमदा मकान, हीरेजवाहिरातके गेहने, उमदा फल-फुलोंसें लदे हुवे द्रख्त,-जलके झरने, फवारे, नेहेरे, और बाग-बगिचे-हमेशासे होते चले आये,-कभी-कोईचीज शस्तिमिलती है,-कभी-कोई महें-घी मिलती है, मगर मिलती जरुर है,

९ कितनेक शख्श-सर्प-और-विछूकों जहेरी जीव समजकर जहा नजर पडे मार देते है,-मगर धर्मशास्त्रका फरमान है, उनको मारो नही. और अपना बचाव करो—

१० पापकरनेसें पहले,-पापकरतेवख्त-और इसीतरह पापकिये बादमी-जिसकेदिलमे पश्चात्ताप हो, मेने फलाकाम अछानही किया -तो-उसकों निकाचितकर्म-न-बंधेगें, सबब उसका दिल पापकरते वख्तभी-उसमें-रजु-नहीथा, कर्मके उदयसें होगया. उसने इरादा-पूर्वक नही किया, इसलिये उसकों निकाचित कर्म-कैसे बंध सके ? अपनी पाचइंद्रियोंकी विषयपुष्टिकेलिये गुस्सा करना शास्त्रफरमानसें पाप है,-मगर धर्ममे खललडालनेवालोंकों-रोकना-फर्ज है,-किसी दौलतमद शख्सके पास दौलतहोतेहुवेभी दिलमे-उसपर ममताभाव नही है-तो-उसकों ज्ञानीशरशोंने त्यागी कहा, जिसके पास दौलत नही मगर दिलमें चाहना बनी है-तो-उसकों त्यागी नही कहा,

११ जो-जो-श्रावक बयान करते है,-जिनप्रतिमाकी पूजनमें-पाक और साफ चीज चढाना चाहिये, मगर-जो-चीज-व्यवहारमे साफ मानीगई हो,-उसकों साफ मानना यहभी-तो-शास्त्रफरमान है,-अगर ऐसा-न-मानाजाय तो-बतलाना चाहिये,-जिनप्रतिमाकों-पानीसें-स्नान क्यों कराते हो ? पानीमें कबूतरोंकी-बीठ, हाठ, चाम, वगेरा बने रहते है, इसलिये पानीकोंभी-नापाक-कहो, सरंगी-तबले-जो-जिनमदिरमे गायनके वख्त बजाये जाते है,-दरअसल !-वेभी-चमडेके बनेहुवे-नापाक-है,-फिर जिनमदिरमे क्यों लेजाते हो ? चमरी गौंके पुछके बालोंसें बनेहुवे-चमरभी-नापाक है,-जिनमदिरम-नही लेजाना चाहिये, मगर-ये-चीजे व्यवहारमार्गमे साफ मानीगई है, इसलिये जिनमदिरमे लेजाना कोई हर्ज नही,-कइलोग जातबिरादरीके काममे कजुसाई करते है, मगर विवाह-सादीका काम आनपडे-तो-उसवख्त-दिलके दलेर बनजाते है,-

१२ अगर कोई कहे-जिस जिस मुल्कमे अनाज पैदा-न होता हो, वहाके लोग-मास-न-खावे-तो-क्या करे ? (जवाब) हरमु-

ल्कमे अनाज और वनास्पति पैदा होती है, अगर किसी मुल्कमें अनाज-पैदा-न-होता हो-तो-दुसरे मुल्कसेंभी आसकता है, धर्मशास्त्र फरमाते है, अनाज-या-वनास्पतिका खानपान करना चाहिये,-मास खाना मुनासिब नही,-अगर कोई इस मजमूनकों पेंश करे, हिंसा-न-किईजाय-तो-जानवर-और-परींदे बहोत बढजायगें, फिर दुनियामे उनकों रहनेकी जगह कैसे मिल सकेगी? (जवाव;) जैसे दुनियामे जीव-पैदा होते है, उम्र खतम होनेपर-इतकालभी-होजाते है,-जन्ममरणका चक्र-कदीमसें चला आया, इसकों-कोई रोक नही सकता, फिर जानवर-और-परींदोंके बढजानेका फिक्र क्यों करना?

१३ अगर कोई कहे रात्रिभोजन करना-धर्मशास्त्र मना फरमाते है,-मगर-रोशनी-अच्छी हो-तो-रातकों खानेमेंभी-क्या हर्ज है! जवावमें तलब करे, रातकों चाहे जितनी रौशनी हो, मगर दिनके जैसी रौशनी कभी नही होसकती, जैसे दिनमे सडकपर चलती हुई-चींटी-नजरआती है, रात्रीकों नजर नही आसकती, मछर और पतगीये वगेरा दुसरे जीव ऐसेभी मौजूद है,-जो-चिराग वगेराकी रौशनीके पास आजाते है, उनकों बचाना इन्सानका फर्ज है,-इस लिये-रातका-खाना मना फरमाया, धर्ममें जबरदस्ती नही होती,-जिनकी मरजी हो-माने, जिनकी मरजी-न-हो, न-माने,

१४ आजकलके श्रावकलोग-जिनमदिरमे-पूजाकरते वख्त अपने मनमुजब-बरताव करते है, केशर थोडा हो,-अगरबत्ती-न-हो, चिरागमे घी-कम-हो, पूजनकरनेकी रकाबी-कम-हो, और कोई दुसरा श्रावक-मदिरके वहीवटकर्त्ता-श्रावकको कहे-तो-जवावमिले -आजकल मदिरमे आमदनी थोडी होगई है, मगर इतना खयाल नही, आगेका-जमा है-वो-कब-काम आयगा? इन्साफ कहता है -जिनमदिरका-खर्चा-जैसे आज-चलता है, आगेभी-चलेगा, जैसे अब आपलोग-रोजिंदा चढावा चढाते हो. पूजा-आरतीका-घी-

बोलते हो,-वैसे-आदमी पिछले श्रावक-बोलते रहेंगें, और-जिन-मंदिरका-काम-चलता रहेगा, इसका फिक्र करना क्या जरुरत ?

१५ जिनके घरसें हमेशा जिनमंदिरमे स्नात्रपूजन कराई जाती हो, हरहमेश नयासामान भेजना चाहिये, पेस्तरका चढाया हुवा-नारीयल-बादामवगेरा सामान दुसरीदफेकी पूजनमें चढाना बहेतर नही, अष्टमंगलीक-चावलोंसे हरहमेश जिनमूर्तिके सामने बनाना चाहिये,-आजकल-कई-जिनमंदिरोमे-पीतलकी पटली-अष्टमंगलीककी-बनादिई गई है,-और फिर उसकी केशरसें पूजाभी-कईलोग-करते है,-यह-बजा-बात है,-जिनमंदिरमे-चक्रेश्वरी-पद्मावती-वगेरा-शासनदेवीयोंकी-और-माणिभद्रजी वगेराकी-जो-स्थापना-किईजाती है,-उनके सामने जाना-तो-जय-जिनेंद्रपद कहना, उनकी केशरसें पूजन करना, धूप-दीप-चढाना,-आरती उतारना बेजा है,-आरती-पूजा-तीर्थंकरदेवोंकी होती है—

१६ प्रतिक्रमण करते वख्त-या-पौषध करते वख्त-कोई श्रावक कहता है. यह स्तवन-नही बोलना, कोई कहता है-बोलना, मगर-धर्मशास्त्र-क्या-फरमाते है, इसपर अमल करना चाहिये, व्याख्यानधर्मशास्त्रको सुनते वख्त-एक-खयालसें शास्त्र सुनना हुकम है,-व्याख्यान सुनते वख्त-सामायिक नही करना,-माला-नही-फेरना. बाते नही करना नींद नही लेना -आजकल-कितनी जगह-रवाज पडगया है, व्याख्यान सभामे बेठकर-सामायिक करते है,-माला-फेरते है मगर यह-सब-बाते-शास्त्रफरमानसें-खिलाफ है,-एक-समयमें-दो-जगह-मनका उपयोग रहसकेगा नही,-खयाल रखकर शास्त्र सुनना यही श्रुतसामायिक है,

१७ जिस गाव-नगरमे-जैनपाठशाला चलती हो-तो-पढनेवाले-लडकोंकों इम्तिहानके वख्त इनाम देना चाहिये,-मास्तरोंकों-अच्छी तनख्वाह-देना, गर्मीयोंके दिनोंमे महिनेकी-छुटी-दशरविवारकी-छुटी-पर्युषणके दिनोमें आठ रोजकी छुटी-इसतरह मजहबी

तहवारके रोज-छुटी देते रहना चाहिये. मास्तरलोग दुनियादार है, दुनियादारोंकों कोई विवाह सादीका-काम आनपडे, रिस्तेदारोंका मिलना हो, घरका कोइ कामकाज करना हो. अगर छुटी-न दिइजायगी-तो-वे-कैसे करसकेंगें? और अपने कारगुजारमें कैसे शरीक होसकेंगें? बडे-बडे-शहरोंमें-ओफिसोमें और स्कुलोंमें गर्मीयोमे देढ महिनेकी छुटी दिइ जाती है. जैसी गर्मी अपनेकों सताती है, दुसरोंकोंभी-सताती होगी.

१८ रंग-रोशन किया हुवा मकान, तरह-तरहके-हंडी-तख्ते-झुमर वगेरा फरनीचर और रंग-बरंगी खूबसुरत चीजें दिलकों पसंद करदेती है. मगर-बगेर तंदुरस्तीके सबचीज अपनेलिये बेकार है,-जिन्होंने-पूर्वजन्ममें—जीवोंपर रहेम किइ होगी, उन्हीकों यहां तंदुरुस्ति नियामत हुइ है,-और दिनोंने जीवोंपर रहेम नही किइ यहा तकलीफमें है अहिंसाप्रचारफंडमे, बालाश्रममें और गरीबोंकी मददमें दौलत देना जरुरी है,-मगर इतना याद रहे! पुरीतौरसे तलाशकरके देना, कइ दौलतमंद शख्श हाथी-घोडे-बगी-या-म्याने-पालखीमें बेठकर एक-जगहसे दुसरी जगह जाते है, फिरभी-नोकरलोग-उनके पाव दबाते है. और कहते है,-आपकों तकलीफ हुइ होगी, इसबातपर गुरुलोगोंसें किसीने सवाल किया, -ये-किस रोजके थके हुवे है-जो-इसवख्त सवारीमें आये और पाव दबारहे है, गुरुजीने जवाब दिया, इनोंने पूर्वजन्ममें-तप-कियाथा, देव-गुरुकी खिदमत किइ थी, और धर्मकामकेलिये-खुले पावसें चले फिरेथे. उसजन्मके-थके हुवे इस जन्ममें पग दबारहे है.—

१९ जैन गृहस्थकों-समुंदरके पार-मुल्ककी मुसाफरी करना-छुट है,-मगर खानपानमें-मास-शराब वगेरासे परहेज रखना चाहिये.-मुल्क चीनकी हदपर एक दिवार सोहाइउइके पास बनी हुइ है.-वहापर-एक-फाटक-बनाहुवा जिसका नाम-सोहाई-गेट

बोलते है,-मजकुर दिवार करीब (१२५०) मीलतक लंबी, कइ जगह पथ्थरकी और कइजगह ईंट-चुनेकी बनी हुई, इसकी नींव (२५) फीट गहेरी और (१५) फीट चौडी है, उंचाइमें किसी जगह (३०) फीट होगी.-मुल्क तातार और चीनके बीच-इसक दर लंबी चोडी दिवार होनेसें एक्तरहकी बडी हिफाजत है,-मुल्क हिंदके पुराने शहरोंके अतराफ कोट होता था, जिससें रियायाकी हिफाजत होती थी-जमाने हालमेंभी-कइ शहरोंके इर्दगिर्द-कोट-किले देखे जाते है,-कइ मुल्कोंमे औरतें खेतीका काम, दुकानका काम-और ओफिसोंका कामकाज करती है, कइ मुल्कोंमे बर्फ ज्यादा और कइ मुल्कोंमे धुप ज्यादा. मुल्कोंकी ताहसीर अलग अलग है,-कइ मुल्कोंमे करोडो रुपयोंकी आमदनीवालेभी-मौजूद है, और कइ मुल्कोंमे हजारोंकी आमदनीवाले-है,-

२० सचेसे कागज बनानेकी तरकीब सन (१११७) में इजाद हुई, पेस्तर हाथसे बनाये जाते थे. सचोंसें बनानेपर कागजोंकी बहुतायत हुई, छापेमे बारीक कागजोंकी जरुरत रहती है, बारीक इबारत लिखनेवाले यहातक मौजूद है,-जो-बडे कागजमें लिखा-जाय उतना लिखाण-पोष्ट कार्डपर लिखदेते है,-कइ-चितारे ऐसे है -जो-अठअन्नीबराबर कागजपर-महेल चितर देते है. दुनियामे तरह तरहके सिक्के, तरह-तरहकी टिकिटे डाकखानोंकी चलती है, अनाज, नमक, खाड, सकर, घी, दूध, कपडे, पान, बीडी और दियासलाइकी जरुरत बनी रहती है,-बिदून इनके दुनयवी कारोबार चल नही सकते,-

[बयान-दुनयवी-कारोबारका-खतमहुवा -]

[बयान-स्वरोदय-ज्ञान -]

१ स्वरोदयज्ञानका बयान जैनशास्त्रोंमें और भाषामय-कवित्त-छंदोंमे मिलता है, अगर स्वरोदयज्ञानका इल्म-सिखनाचाहो-स्वरोदयज्ञानीको मिलकर सिखो, और उनके फरमानेपर अमल करो, योगकी-जो-दशभूमि कही गई-उनमे अवल स्वरोदयज्ञान है,-जिनके वडेभाग्य हो,-स्वरोदय-ज्ञानका इल्म सिखे, और मुताबिक उसके बरताव करे, तीर्थंकर-गणधर-और-जैनाचार्य-योगके वडे जानकर थे, पेस्तरके जमानेमे जैनमुनि-और श्रावक स्वरोदयज्ञानपर अमल करतेथे, स्वरोदयज्ञानकी मेहनत उठाना आसान नही, यह-काम-निर्लोभी और आत्मज्ञानीयोंका है, कमइल्म-और-कम-हिम्मतश-ख्श इसपर हर्गिज ! अमल-न-करसकेंगे.—

[दोहा,]

नाडी-तो-तनमे घनी-फुन चौइस प्रधान,
तीनमे-नव-फुन ताहुमे-तीन अधिककर जान, १
इगला पिंगला सुखमना-ये-तीनोंके नाम,
भिन्न भिन्न अबकहतहु-ताके गुन अरु धाम, २
भ्रकुटि चक्रसे होत है-स्वासाको परकास.
बंकनालके ढिगथइ-नाभिकरत निवास, ३
नाभिते फुन संचरत,-इंगला पिंगला धाम,
दक्षिण दिशहै पिंगला-इंगलानाडी वाम, ४
इनदोउके मध्यमे-सुखमनानाडी जोय,
सुखमनके परकासमे स्वर फुन चालत दोय.

२ शरीरमे बहुतसी नाडीये है. इनमे चौइसनाडी बडी,-चौइसमे-नव-और नवमें तीन सबसें बडी है, उनके नाम-इगला, पिंगला, और सुखमना है, भ्रकुटीचक्रसे स्वासका प्रकाश होकर बंकनालके रास्ते नाभिमे जाकर स्थिर होता है, नाभिमेसे फिर स्वास

निस्सकर-जो-दाहनीतर्फ चले उसका नाम पिंगला, वायीतर्फ चले उसका नाम इंगला, और इनदोनोंके बीचमें चले उसका नाम-सुखमना है, वाया स्वर चले-तो-उसका नाम चद्रस्वर जानना, और दाहना स्वर चले-तो-उसका नाम-सूर्यस्वर समजना, सौम्य और स्थिर-कार्यकों करनेकेलिये चद्रस्वर अछा, क्रूर और चरकार्यकों करनेकेलिये सूर्यस्वर उमदा है.-इसतरह स्वर देखकर कार्य करनेवाला सुखी होता है जब दोंनोंस्वर शाथ चले-तो-उसका नाम-सुखमनास्वर है. उसमें-जो-कुछ काम कियाजाय-नुकशानका सबब होगा,

३ हरमहिनेकी वदी एकमके रोज-सूर्योदयके वख्त-सूर्यस्वर चले तो-पनराह रोज-सुखचैनसें वतीत हो. हरमहिनेकी सुदी एकमके रोज सूर्यउदयके वख्त अगर चद्रस्वर चले-तो-पनरारोज उमदा तौरसें वतीत हो.—हरमहिनेकी सुदी एकमके रोज सूर्योदयके वख्त अगर सूर्यस्वर चले-तो-अछा नही, तकलीफ पेश होगी, हरमहिनेकी वदी एकमके रोज सूर्योदयके वख्त अगर चद्रस्वर चले -तो-फिक्र पैदा हो, और राज्यकी तर्फसें खौफ हो, अगर उन दोनों प्रतिपदाके रोज सूर्योदयकेवख्त सुखमनास्वर चले-तो-अछा नही, रज पैदा होगा,—

४ तीन पखवाडेकी एकमके रोज सवेरे सूर्योदयकेवख्त-जैसा उपर लिखा है,-वैसा स्वर-न-हो-तो-दोस्त दुश्मन होजाय, और जैसा उपर लिखा है,-वैसा हो-तो-दुश्मन दोस्त होजाय, हरमहिनेकी सुदी एकमके रोज सवेरे सूर्योदयके वख्त चद्रस्वर और वदी-एकमके रोज सूर्यस्वर होना चाहिये, तीनतीन रोज-जो-चद्र और सूर्यस्वर देखनेकी वात लिखी है,-वो-देखनेकी जरुरत नही. अगर वे एकम सुधर गई हो एक वर्षके (२४) पखवाडे होते है, उनमे शुक्लपक्षके वारा, और कृष्णपक्षके वारा, शुक्लपक्षकी वारा एकमके रोज सूर्योदयके वख्त चद्रस्वर चले. और कृष्णपक्षकी वारा एकमके

रौज सूर्योदयके वख्त-सूर्यस्वर चले-तो-निहायत उमदा है. तन-मन-और धनसे फायदा होगा, शुक्लपक्षकी एकमके रौज रविवार आवे,-या-वदीएकमके रौज सोमवार आवे-तो-वारके स्वरोदय देखनेकी कुछ जरुरत नही. वारसें तिथि-बलीष्ठ है,-इसलिये तिथिकी-बात-मंजुर रखना, चाहे कोइ मर्द-हो-या-औरत सबके-लिये यह एक कुदरती नियम है. दिनरात घंटेघटेभर चद्रस्वर और सूर्यस्वर अदल-बदल होते रहते हैं,-बीमारकेलिये यह नियम नही, ज्यादा-कममी होजाय. तंदुरस्तकेलिये यह नियम है.—

५ चद्रस्वर चलते वख्त-जो-जो-कार्य करने चाहिये, उसकी तपसील इसतरह है. नया मदिर बनाना. नये मदिर बनवानेकी-नींव-डालना. जिनमूर्तिकी प्रतिष्ठा करना, मूलनायकजीकी-मूर्ति-तख्तनशीन करना. जिनमंदिरके शिखरपर धजादड-या-कलश चढाना. पौषधशाला, दानशाला, घर, हाट, महेल, कोट, किला बनाना, संघमाल पहनना, तीर्थमे दान करना, दीक्षा देना, मत्र बतलाना वगेरा काम-चद्रस्वर चलते वख्त फायदेमंद है,-नये मकानमें रहनेजाना. गाव-या-नगरमे प्रथमप्रवेश करना, नया कपडा-या-नया-गेहना पहनना, किसी कामका कट्राक्ट लेना, योगाभ्यासकी शुरुआत करना, बीमारीके वख्त औषध खाना, खेतीकी शुरुआत करना, बाग लगाना, राजासाहबसें अवल मुलाकात करना चद्रस्वरमें फायदेमद है,-राजासाहबकों राजतिलक करना, नये किलेमें प्रथमप्रवेश करना, राजासाहब जिस रौज राजसिंहासन-पर बेठे-तो-चद्रस्वर चलतेवख्त बेठे, मठ, देवल, गुफा, पुल, बन-वाना, सब चद्रस्वरमे फतेहमद हैं, जितने स्थिरकामहो-चद्रस्वरमे करना अछा,—

६ सूर्यस्वर चलते वख्त-जो-जो-कार्य करने चाहिये, उसकी तपसील इसतरह है,-विद्या पढना शुरु करना-तो-सूर्यस्वरमे करना. ध्यानसमाधि करना-तो-सूर्यस्वरमे शुरु करना, देवताओंको प्रत्यक्ष

चौलानेकेलिये मंत्र पढना-तो-सूर्यस्वरमें शुरु करना. जमाने हालमें प्रत्यक्ष देवता आते नही. यह बात उस वख्तकी है, जब देवता प्रत्यक्ष आते थे, जमाने हालमें स्वप्नमे-या-आखों मीचकर देखनेसें देवताका आभास होता है, प्रत्यक्ष नही आते, राज्यके हाकिमको-अरजीदेना-तो-सूर्यस्वरमें देना, दुश्मनकों फतेह करनेकेलिये बीडा उठाना, जहर उतारना, भूत-पिशाचकों निकालनेकेलिये मंत्र पढना -तो-सूर्यस्वरमें शुरु करना किसी बीमारको-कोई-हकीम-या-डाक्तर दवा खिलावे-तो-अपना सूर्यस्वर चलते वख्त खिलावे, बीमारशख्स-जब-दवा खावे-तो-अपने चंद्रस्वर चलते वख्त खाय, किसी तरहकी आफतकों दूर करनेकेलिये शांतिजल डाले, या-किसीतरहकी तकलीफ मिटानेके लिये किसीकों उपाय बतलावे-तो -सूर्यस्वरमें बतलावे, हाथी घोडे, रथ,-या-किसीतरहका हथियार दुश्मनकों हरानेके लिये खरीद करना, स्नान करना, औरतकों ऋतु-दान देना, नया चोपडा लिखना शुरु करना,-या-व्यापार करना-सूर्यस्वरमें फायदेमंद है,-राजा-लडाइके लिये जावे-तो-सूर्यस्वरमें जाय फतेह होगी,-समुदरमें-जहाज चलाना-या-आप खुद समुद्रकी मुसाफरीकों जाना-तो-अपने सूर्यस्वर चलते वख्त-जहाजमें सवार होना अछा है, सहीसलामत मकानपर पहुचजायगें दुश्मनके सामनेजाना-तो-सूर्यस्वरमें जाना उठ, गौ, भेंस-वगेरा खरीदना-तो-सूर्यस्वरमें अछा,-सट्टा-करना, किसीको कर्ज देना-या-लेना, नदी उतरना.-ये-सबकाम-सूर्यस्वरमें फायदेमंद है,—

७ [दोहा,]

सुखमन चलत-न-कीजिये, चरथिरकारजकोय.
करतकाम सुखमन विषे, अवश्य हानि कछु होय, १
भवनप्रतिष्ठादिकमहु,-वर्जितसुखमनमाहि.
ग्रामावरजावा भणी, पगला भरीये नाहि २

दुखदोहगपीडालहे, चितसे रहे कलेश.
चिदानद–सुखमन चलत, जो–कोइ–जाय विदेश. ३
कारजकी हानि हुवे,–अथवा लागे वार.
अथवा मित्र मिले नही, सुखमन भाव विचार. ४
श्वास शीघ्र अतिपालटे, छिनचद्र छिनसूर,
ते–सुखमनस्वर जाणजो,–नाभि अनिलभरपूर, ५

८ सुखमना–स्वरचलते वख्त दुनयवीकारोबारका कोई काम नही करना, अगर करोगे नुकशान उठाओगे, मंदिरकी प्रतिष्ठा वगेराका –काम–और मुसाफरी जाना–वगेरा सब काम सुखमनास्वरमे करना मना है, अगर कोइ शख्श सुखमनास्वरमे मुसाफरीको जायगा, निहायत तकलीफ उठायगा. चिदानदजी–महाराज अपने बनाये हुवे स्वरोदय ज्ञानमे बयान करते है,–सुखमनास्वरमे–कियाहुवा–दुनयवी कारोबारका कोई काम फतेहमद–न–होगा. छिनछिनमे स्वर–बद-लता रहे. थोडी देर चद्र–और थोडी देर सूर्य–या–दोंनो एकशाथ –चले, उसका नाम सुखमना स्वर है.–सुखमनास्वर चलते वख्त आत्मध्यान करना अछा है,–सुखमनास्वर आधे घंटेसें ज्यादा नही चलता.

९–[दोहा,]

दक्षिणस्वर भोजन करे,–डावे पिवे नीर,
डावी करवट सोवता,–होय निरोग शरीर,–१
चलतचद्र भोजन करे,–अथवा नारी भोग,
जलपीवे सूरजविषे,–तो–तन आवे रोग, २

दाहने स्वर चलतेवख्त–भोजन–करना, पानी, चाह, दूध, शर-बत,–ठडाई, वगेरा प्रवाही पदार्थ–चद्रस्वर चलतेवख्त पीना, सोते वख्त डावीतर्फ सोना, इसतरह बरताव करनेसें शरीर तंदुरस्त रहेगा, अगर कोई चद्रस्वरमे खाना खावे,–या–मैथुन सेवे, और सूर्यस्वर

चलतेवरत पानी पीवे-तो-उसके तदुरस्ति नही रहेगी,-चैतसुदी एकमके रौज सवेरे सूर्योदयके वस्त अगर अपना चद्रस्वर चलता हो,-तो-अछा है, पनरा रौज सुखचैनमे गुजरेगें, जिनकों तत्वोकी पहचान हो, और देखे चद्रस्वरमे पृथ्वीतत्व-या-जलतत्व-चलता हो,-तो-उसकों वारा महिनेका हाल मालुम होसके, मेषराशिपर जिसवख्तपर सूर्य आवे, उसवख्त अगर जिसका चद्रस्वर चलता हो, -तो-समजलो,-वर्सभर-सुखचैन रहेगा, अक्षयतृतीयाके रौज सवेरे सूर्योदयके वस्त चद्रस्वर चलना अछा है,-वर्सतक आराम चैन रहेगा,—

१० चैतसुदी एकमके रौज दिनभरमे जिसका घटाभरमी चंद्रस्वर-न-चले-तो-उसकों तीन महिनेमे बीमारी पेश होगी, चैत सुदी दुजके रौज दिनभरमे जिसका चद्रस्वर घटाभरमी-न-चले उसकों-गेरमुल्ककी सफर करना पडे, चैतसुदी तीजके रौज दिनभरमें जिसका चद्रस्वर घटाभरमी-न-चले-उसके बदनमे पित्तज्वरकी बीमारी हो, चैतसुदी चौथके रौज दिनभर जिसका चद्रस्वर घटाभरमी-न-चले,-वो-शख्श उसीवर्समें-इतकाल होजाय,—

११ चैतसुदी पचमीके रौज दिनभरमे जिसका चद्रस्वर घटाभरमी-न-चले उसको राज्यकी तर्फसे जरीमाना हो, चैतसुदी छठके रौज दिनभरमे जिसका चद्रस्वर घटाभरमी-न-चले, उसका भाई उसी सालमे इतकाल होजाय, चैतसुदी सप्तमीके रौज दिनभरमे जिसका चद्रस्वर-घटाभरमी-न-चले, उसकी औरत उस सालमे-मरजाय, चैतसुदी अष्टमीके रौज दिनभरमे जिसका चद्रस्वर घटाभरमी -न-चले,-उसको उस वर्समे पैदाश-न-हो, इसतरह वर्स दिनका भला बुरा नतीजा अपनेलिये-आठ दिनमे देखना चाहो-तो-देखसक्ते हो,-ये-आठ रौज मानींद! वर्सरौजका बीज है,-जैसे जन्मग्रह सारीजींदगीका बीज है,—

१२ स्वरोदयज्ञानको-जानकर उसपर वरताव करे, जिससे मन

कावुमे होजाय. मनका कावुमे होना सहज बात नही. मगर जितना हो-उतना-बहेतर है,-मरुदेवी-माता, और भरतचक्रवर्त्ती मनकी स्थिरतासें ज्ञान पाकर संसारसमुंदरसे तीरे है,—

[चौपाई-छंद]

प्राणायाम भूमि दश जाणो, प्रथम स्वरोदय तिहां पिछानो,
स्वरप्रकाश प्रथम-जे-जाने, पचतत्त्व फुन तिहा पिछाने, १
कछु अधिक अन तास विचार, सुनो अधिक चित थिरताधार,
स्वरमे तत्त्व लखे नरकोइ-ताकों सिद्ध स्वरोदय होई, २

प्राणायामकी दशभूमिसें अवल भूमि स्वरोदय-ज्ञान-है,-फिर तत्त्वोंकी पहचान करना, जिसकों स्वरसें तत्त्वोंकी पहचान हुई-तो--समजो-उसकों-स्वरोदयज्ञान सिद्ध हुवा.—

१३ [दोहा]

पृथवी-जल-पावक-अनिल, पचमतत्त्व नभ जान,
पृथवी जल स्वामी शशी, अपर तीनको भान. १
पीतश्वेतरातो वरण, हरित शाव फुन जान.
पंचवरण-ये-पांचके, अनुक्रमथी पहचान. २
पृथवी सन्मुख अंचरे, करपल्लव पद् दोय,
समचतुरस आकार तस, स्वरसंगममे होय. ३

पृथवी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश,-ये-पाच तत्त्व है. उनमे पृथवी और जलतत्त्वका मालिक चंद्र,-अग्नि वायु और आकाश इन तीनोंका मालिक सूर्य है,-पृथवीतत्त्वका रग पीला, जलतत्त्वका-सफेद, अग्नितत्त्वका-लाल. वायुतत्त्वका-हरा. और आकाशतत्त्वका-रग-काला होता है,-पृथवीतत्त्व सन्मुख और नाशिकासे बारा अगुल लबा चलता है, और उसका आकार चोखुटा है,—

१४ [दोहा,]

अधोभाग जल चलत है, षोडश अगुल मान.
वर्त्तुल है आकार तस, चंद सरीखा जान. ४

फतेह होगा, अगर अग्नि, वायु,-या-आकाशतत्त्व चलता हो, और चद्रस्वरम कोई सवाल करे-तो-कहना काम फतेह-न-होगा, सूर्यस्वरमें अग्नि, वायु,-या-आकाशतत्त्व चलता हो, उसवख्त कोई शख्श आनकर जवाब देनेवालोंकी पूर्णदिशामें सवाल करे-तो-उसका काम फतेह होगा, पृथ्वीतत्त्व-या-जलतत्त्व चलता हो, और सूर्यस्वरम कोई सवाल करे-तो-कहना काम फतेह-न-होगा.—

१८ नींदमेंसें उठतेवख्त-अपना-जो-स्वर चलता हो, उस तर्फका पाव बिछौनेसे नीचे रखना. जिस शख्शका तीन रौजतक दिनरात सूर्यस्वर चलता रहे-तो-जानना एक वर्समे उसका मृत्यु होगा, अगर सोलह दिनतक जिसका बराबर सूर्यस्वर चलता रहे-तो-उसका मृत्यु एक महिनेमे हो, जिसका-एक-महिनेतक हमेशां सूर्यस्वर चलता रहे-वो-शख्श-दो-दिनमें-मर-जाय, ऐसा निमित्तशास्त्रका फरमान है,-जिस शख्शका चार दिन, आठ दिन, बारा दिन, सोलह दिन,-या-विश दिनतक बराबर दिन-रात चद्रस्वर चलता रहे-तो-उसकी लबी उम्र जानना,—

१९ [दोहा -]

चालत षोडश सोवता,-चलत स्वास बावीश,
नारी भोगवता थका,-घटे स्वास छत्तीश,-१
अधिका नाहि बोलिये,-नही रहिये पड सोय,
अति शीघ्र नही चालिये,-जो-विवेक मन होय, २
बधे भावना चित्तमे,-तनमनवचन अतीत,
तिमतिम सुखसायरतणी,-उठत-लहर सुन मीत, ३
इद्रतणा सुख भोगता,-जे-तृप्ति नवी थाय,-
ते-सुख एक छिनमे मिले,-शुद्ध ध्यानमें आय, ४
जो-रचना तिहु लोकम-सो-नर-तनमें जान,
अनुभव विन होवे नही-अतरतास पिछान, ५

२० जल्दी चलनेसे (१६) स्वासोस्वास-घटते है, नींदमें सोवे

रहनेसे (२२) स्वासोस्वास घटते है, और मैथुन सेवनेसें (३६) स्वासोस्वास-घट-जाते है. इसलिये जल्दी-जल्दी चलना. ज्यादा नींद लेना और ज्यादा मैथुन सेवन-करना मुनासिब नही. मन-वचन-और कायाकी एकाग्रतासे आत्माकों-जो-सुख मिलता है,-वो-इंद्रके सुखसेंभी-ज्यादा है,-जो-जो-रचना तीन लोकमे मौजूद है.-वो-रचना अपने तनमे है, मगर विदून अनुभवके मालुम होसके नही. अवल-ध्याता, ध्येय, और ध्यानके-भेदानुभेदकों-समजना चाहिये. आज्ञाविचय,-अपायविचय,-विपाकविचय, और-स्वस्थान विचय,-ये-चार-धर्मके स्तम है,-जिनेद्रोंके फरमान-पर अमल करना. राग द्वेष-कामक्रोध-लोभ-मोह-ये-आत्माके दुश्मन है,-शुभाशुभ कर्मकों मनन-करना. और चौदह-रज्जात्मक-लोकका-चिंतन करना,-यह-आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाक-विचय,-और स्वस्थानविचयके तरीके है,-

२१ पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, और रूपातीत-ये-प्राणायामके भेदानुभेद है.-आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, और शुक्लध्यान-ये-चार तरहके ध्यान है, इनमे-अवलके-दो-ध्यान काबिल छोडनेके-और पिछले-दो-ध्यान काबिले गौर है,-बहिरात्मा-जीव-दुनियाके-रग-रागमे मशगुल बना रहता है,-वो-ध्यानके काबिल नही, अंतरात्मा-जीव-कुछ-थोडासा-काबिल-ध्यानके होसकता है. परमात्माके भेदमे तीर्थंकर-गणधर-वगेरा है,-जो-तकलीफके वख्तमी-घबडावे नही. और अपने आत्मध्यानमे साबीत कदम-रहे, आजकल कितनेक श्रावक और श्राविका-आनदघनजीके बनाये हुवे-स्तवन-गाकर कहते है,-हमने-आत्माका स्वरूप-जान-लिया है,-मगर धर्मके बारेमे उनका बरताव देखो-तो-अध्यात्म-ज्ञानका-अशमी-साबीत नही होता,-मुताबिक फरमान धर्मशास्त्रके व्रत-नियम-करसकते नहीं, और-कोरीनाते बनाकर काम चलाते है,-

२२-[कमाच –]

एक योगी असनबनावे,-तम भखत असन अवनशन होत, एक,

ज्ञानसुधारस जलभर लावे,
चौका शील लगावे,
कर्मकाष्टकों चुनचुन वाले,
ध्यान अगनि सुलगावे, एक योगी, १

अनुभवभाजन निजगुनतदुल,
समता क्षीर मिलावे,
सोह मिष्ट निशंकित व्यंजन,
समकीत छोंक लगावे, एक योगी, २

स्याद्वादसतभंग मशाले,
गिनती पार-न-पावे,
निश्चयनयका-चमचा लेकर,
घृतभावना भावे, एक योगी, ३

आप बनावे आपही खावे,
खानत नाही अघावे,
आतमसुत भोजन अतिभावे,
नयनानंद गुन गावे, एक योगी, ४

२३-[उपदेशिक-पद-झींझोटी –]

कुमतप्रीतके सतायेहुवे हैं,-विषयभोग धोखेमे आयेहुवे हैं, कुमत,—

शुद्ध है-न-तनकी-न-वतनकी खबर है,-
फिरे जाओ द्रव्य उठाये हुवे है, कुमत. १

कभी नर्कमे हम-कभी स्वर्गमे हम-
अरहटकी तरहस घुमाये हुवे हैं. कुमत. २

यही हालत होगइ मगर दिल बदिलकी,
दोबारा विषयरों बढाये हुवे हैं. कुमत. ३

कमी-तो-कमी हम मिलेगें तुमतसें,
वही-लौ-प्रभुसें लगाये हुवे है. कुमत. ४
पिता पुत्र भाइसें जाहिर जुदे है,
नही संग आये-न-जाये हुवे है. कुमत. ५
कोइ-न-हमारा हम-न-किसीके,
हजारों दफे अजमाये हुवे है. कुमत. ६
अब-तूं-सौच करे मत कुंदन,
किसी दिन मतलब बनाये हुवे है.-कुमत. ७

२४-[उपदेशिक-पद-झींझोटी.-]

गफलतमें सारी उमर गइ,-कारजकी सिद्धि कछु-ना-जो-भइ.
गफलतमे सारी-उमर गइरे,-ए तर्ज.-

काल अनादि सुखदुखमे खोया,-
मोह निद्रामे शुद्ध-ना-जो भइ-गफलत. १
ज्ञानदयासिंधुने अपने,-
कारज हितकी बात कही, गफलत. २
गइ-सो-गइ अब राख रहीकों,
अवसर देख विचारो सही.- गफलत. ३
तज प्रमाद अप्रमत्त होके-
मुगतपुरीकी राह ग्रही.- गफलत. ४
दासचुनी सद्गुरु सचेकी,-
आज्ञा सिरपर धार लही, गफलतमें. ५

२५ [उपदेशिक पद-रागिनी भैरवी.-]

जिया-तूं! भ्रमत सजीव अकेला. कोइ सग-न-साथी तेरा,-
जिया तू भ्रमत सजीव अकेला.-ए-तर्ज.

अपना सुख दुख आपही भोगे,
होत कुटंब नही भेला,-

स्वारथभये सब विछड जात है,
विछड जात ज्यूं मेला,-जिया. १
तनधन योवन थिर मत जानो,-
इद्रजालका खेला,
फुटत पारके नही जैसा,-
दुर्धर जलका ठेला.-जिया.- २
पूरन भये कोइ राख सके नही,
आवे अतकी वेला,
भागचद्र-यु-लखकर भाइ,-
हो-सतगुरुका चेला. जिया. ३

२६ [कवाली]

जिनके हृदे समकीत नही, करनी करी-तो-क्या करी,-ए-तर्ज.

पट्खडको स्वामी भयो,
ब्रह्माडमे नामी भयो.
दिये दानचार प्रकारके,
रक्षा करी-तो-क्या करी. जिनके १
तिल तुष परिग्रह तजदिये,
उग्र जपतप व्रतयेकि.
पाली दया पट्कायकी,
दीक्षा धरी-तो-क्या धरी. जिनके. २
गुरु ग्रुनका कहना और है,
दगसुख विना दुख ठौर है.
वीन मूल तरुवर फुलफल,
इछा करी-तो-क्या करी. जिनके ३

२७ [सद्गुरुकी स्तुतिपर-पद-सोरठ]

सुगुरु मेरे बरसत झरी.-
सुगुरु मेरे बरसत वचन झरी.

श्री श्रुत ज्ञान गगनतें उलटी.
ज्ञानघटा गहरी, सुगुरु मेरे. १
स्याद्वादनय विजरी चमकत.
देखत कुमती डरी.
अर्थ विचार गुहर ध्वनि गर्जत-
रहत-न-एक घरी. सुगुरु मेरे. २
सरधानदी चढी अतिजोरे,
शुद्ध सभाव धरी,
सुभर भर्यो समतारस सागर,
समकीत भूमि हरी. सुगुरु मेरे. ३
प्रकटे पुन्य अकुरे चिहूदिश.
पाप जवास जरी.
चातकमोर पपैया भविजन,
बोलत भक्ति भरी. सुगुरु मेरे. ४
दानदया व्रतसयम खेती,
भविक किसान करी,
हरखचद सुरनर-शिव सुखकी-
सहज सभाव खरी. सुगुरु मेरे. ५

[बयान-स्वरोदयज्ञानका-ग्वतम हुवा,-]

[एम. पी शाहके लेखका जवाब,-]

तारिख-१५-फरवरी सन (१९२४) के अखबार वीरशासनमें-"मर्यादानी-हद"-इस हेडिंगके लेखमे-एम. पी. शाह. बयान करते है.

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

આ-લગભગ-સાડાત્રણ માસ ઉપરની વાત આજે શું કામ યાદ થાતી હશે?—

(जवाब.) साढेतीन महिनेकी बात इसलिये याद होती है,— उसमें मुनिजनोंके बरतावपर टीका किइ गई थी, कोई श्रावक अपने धार्मिक बरतावपर खयाल-न-करे, और मुनिजनोंके बरतावपर कुछ लेख लिखे-तो-उसका जवाब देना मुनिजनोंका फर्ज है, -वही फर्ज-मे-अदा कर रहा हु.

आगे एम. पी. शाह तेहरीर करते हैं,—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

એથી કાઈ પ્રતિજ્ઞાને લઈ તે મુજબ નહી વરતનારા તથા તેનો દોષ નહી કબુલતા એજ શાસ્ત્રના નિયમો તથા તેના સૂચકોપર ઉતરી પડનારા અપરાધીયોનો બચાવ થોડોજ થઈ શકે એમ હતું —

(जवाब) अपराधी कौन है? बचाव कौन करते है? और धार्मिकप्रतिज्ञा लेकर उस मुजब बरताव कौन नही करते? एम. पी. शाह इस बातकों सावीत करे, और यहभी बतलावे? एम पी शाहने कुछ धार्मिक प्रतिज्ञा लिई है-या-नही? जैनमुनि-उस शास्त्रके नियमपर और उनके सूचकोंपर उलट सवाल क्या-न-करे,? क्या! तीर्थंकरोंका फरमान सब जैनोपर-कायम-नही है? तीर्थंकरोंके धर्मशासनम श्रावकोंकों कुछ छुट मिली है? जब कोई श्रावक अपने धार्मिक बरतावपर खयाल-न-करे, और जैनमुनिकों धार्मिकक्रियाके अपराधी ठहरानेकी कोशिश करे-तो-जैनमुनि उस श्रावकस-क्यों-न-दरयाफ्त करे? आपने श्रावकके बारहव्रत इख्तियार किये है-या-नही? चौदह नियम धारण करते हो-या-नही? देवपूजन-सामायिकप्रतिक्रमण करते हो-या-नही? बाइस अभक्ष्य-और बत्तीस अनतकायका -त्याग है-या-नही?—

फिर एम. पी. शाह इस दलिलकों पेश करते है,—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

૩ એ-પણ એક કુદરતનોજ વાક-કે-એક જણના વિરૂદ્ધ આચરણ સામે કોઈ આગલીજ-ન-કર સકે,—

(जवाब.) विरुद्ध आचरण किसका है इस बातकों साबीत करना चाहिये, और इसमे कुदरतका वाक क्या है? यह बातभी-बहुत बहेत्तर है-जो-शख्श माकुल जवाब देनेकी ताकात रखता हो, उसके सामने अंगुली कौन करसके? जो-शख्श अपने धार्मिक वरतावपर खयाल करे नही, और परउपदेशमे कुशल बने, उसका माकुल जवाब जैनमुनि क्यों-न-दे —

आगे एम. पी. शाह इस मजमूनकों पेंश करते है.—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

ભોગ-જોગે-કરે-તો-તે-કરનાર એકલોજ નહી પણ શાથે રહેલી જીવન શક્તિયોં શુદ્ધાયે ઉલટ પલટ દડાય,—

(जवाब.) लेख लिखनेवाले और शाथ रहीहुई जीवनशक्तियें-अगर-जैनमजहबपर पावंद है,-तो-उनको-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके चलना चाहिये, जैन कहलाना और जैनशास्त्रमुजब चलना नही, और फिर दुसरोंकों उपदेश देने आना-इससे-तो-अपनेआप -वरताव करके बतलाना चाहिये,—

फिर एम पी. शाह-इस दलिलकों पेश करते है.—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

એક-માણુસ બીજાને કહે તમોએ અમુક ખોટુ કર્યુ, ત્યારે-તે-બીજો માણુસ જવાબ આપે તમે બધુ કેમ પાલતા નથી,—

(जवाब.) बेंशक! शास्त्रफरमानपर अमल करे नही, और बातें बडीबडी बनावे उनकेलिये यह जवाब काफी है, चाहे कोई श्रावक हो, या-जैनसाधु हो, सबकों जिनेंद्रोंके हुवमपर तामील करना चाहिये. किसी जैनकों जिनेंद्रोंके फरमानमे छुट नही मिली है,—

आगे एम. पी. शाह बयान करते है,—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

તમારાથી-એક-પગથીયા ઉપર રહેનારા બધાએ ઉત્કૃષ્ટ કેમ પાલતા નથી,—

(जवाब) एक-पगथीया उंचे कौन है? और एक-पगथीया नीचे कौन है? इसपर गौर कीजिये! कोरी बातें बनाना जुदी बात है. मगर जैसा कहना वैसा बरताव करके बतलाना जरूरी है, अगर कोई जैनमुनि-अपने आपकों उत्सर्ग-मार्गपर-चलनेवाले आलादर्जेके सयमी समजते हो,-इस आगे लिखेहुवे लेखको पढलेवे, और इसी-तरह कोई श्रावक अपने आपको आलादर्जेके व्रतधारी और उत्सर्ग-मार्गपर चलनेवाले समजते हो,-वेभी-इस लेखकों पढे,-कौन कितने पगथीये उचे और कौन कितने पगथीये नीचे है,-बखुबी मालुम होसकेगा —

जैनशास्त्र फरमाते है जैनमुनि सफरके वख्त किसी श्रावक-श्राविका-या-नौकर-चाकरकी मदद-न-लेवे, अगर कोई जैनमुनि-तीर्थ समेतशिखर, राजगृही,-या-पावापुरी वगेरा-जैनतीर्थोंकी जियारत जानेमे-बनारस जैनपाठशाला वगेरामे इल्म हासिल करनेके-लिये जातेवख्त-या-मुल्क मारवाड, मेवाड, सिंध, पंजाब, राजपुताना, बंगाल, मध्यप्रदेश, विरार, खानदेश,-या-मुल्क दखनकी सफर करतेवख्त-श्रावक, श्राविका, विद्यार्थी, नौकर-चाकर शाथ चले, जैनमुनि खुद-इसबातकों-जानते हो -ये-सब हमारे विहारके-सबब शाथ चले हैं, ऐसी मदद लेना, उत्सर्गमार्गमे समजना-या-किसमें? इसका कोई जवाब देवे,—

जैनशास्त्रोंमे जैन मुनिकों नवकल्पी विहार करना फरमाया. एक गावमे-या-एक शहरमे एक महिनेसे ज्यादा ठहरना हुक्म नही. चौमासेके दिनोमे-चार महिनेतक एक-गाव-नगरमे रहना बेशक! हुक्म है इसके खिलाफ अगर कोइ जैनमुनि एक गाव-नगरमे एक महिनेसे ज्यादा कयाम करे,-या-चौमासेके बादभी-वर्स-छह-महिनेतक वहाही ठहरे रहे,-तो-बतलाना चाहिये, यह उत्सर्गमार्ग हुवा-या-अपवाद मार्ग? जैन शास्त्रोंमे बयान है, जैनमुनिकों दिवसके तीसरे प्रहर भिक्षाको जाना, अगर कोई जैनमुनि-सवेरेके वख्त

चाह-दूध-और दुफेरको आहार लेनेकेलिये और फिर शामकोंभी आहार लेनेकेलिये-जाय-तो-यह बयान उत्सर्गमार्गमें है-या-किसमे? जैनशास्त्रोंमें फरमान है, जैनमुनिकों दिनमें एक दफे आहार खाना, और दिनमे नींद नही लेना, अगर कोइ जैनमुनि-दिनमे-दो-दफे खाना खावे. और दिनमे नींद लेवे-तो-यह वर-ताव उत्सर्गमार्गमे समजना-या-अपवाद मार्गमे? इसका कोइ जवाब देवे,-

जैनशास्त्र फरमाते है, अगर कोई जैनमुनि, जैनसाध्वी-या-श्रावक-श्राविका उपवास व्रत-करे-तो-पहले रोज एकाशना करे,-और पारनेके रोजभी-एकाशना करे,-इसीतरह-दो-उपवास करे-तो-छह टक, और अठमकरे-तो-आठ-टक-छोडे. सोचो! आज-कल ऐसा उपवासव्रत करनेवाले कितने है? जैनशास्त्रोंमे साफ बयान है. जैनमुनि-किसीके लडकेको विदून हुक्म उनके वारीसोंके-दीक्षा-न-देवे. अगर कोइ शख्श जैनमुनिके सामने आनकर दीक्षा इख्तियार करनेका-इरादा-जाहिर करे, जैनमुनि-उसके रिस्ते-दारोंकों इत्तिला दे, रिस्तेदार लोग रुबरु मिलकर-या-बजरीये खतके इसबातकों मंजुर करे-तो-उसकी-उम्र-लाइक-देखकर दीक्षा देना, छोटी उम्रवालेकों दीक्षा देना जोखमका काम है,-जवानीमें इससे व्रत-नियम पार पडेगे-या-नही? इसबातको सोच लेना जरुरी है,-

जैनशास्त्रोंमे-योगवहन-करना-तो-जिस जैनशास्त्रका-योग च-लता हो. उस शास्त्रका-मूलपाठ,-मय अर्थके हिफ्ज-याद-करे, अगर कोई जैनमुनि-कोरी तपस्या करके-योग वहे-तो-वो-योगवहन जैन-शास्त्रोंकों मंजुर नही, और योगवहन करना-उस हालतमेंभी-बया-लीस तरहके दोषोंसें रहित आहार-लेना कहा, अगर किसी जैन-मुनिको आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, गणी,-या-गणावच्छेदक वगेरा पदवी इख्तियार करना हो, अवल उस पदवीके गुण हासील करे,

अगर कोई जैनमुनि-मजकुर पदवीके गुण-हासिल करे नही, और पदवी इख्तियार करे-तो-यह-बात खिलाफ जैनशास्त्रके-है,—

अगर कोई जैनयतिजी-हो, उनकोभी-पचमहाव्रत पालन करना कहा,-साधु, मुनि, यति, सयमी, अणगार, श्रमण-या-निर्ग्रंथ,-ये-सब मुनिपदके नाम है, किसी जैनयतिजीकों जैनशास्त्रसें छुट नही मिली, खिलाफ जैनशास्त्रके कोई बरताव करे, दशविध यतिधर्म-पालन-करे उन्हीका नाम-यति-है, जैनमुनिको शहरके बहार उद्यान, वनखड,-नागनगीचे-या-पहाडकी गुफामे रहना फरमाया सिर्फ! भिक्षाकेलिय वसतीमे आना और फिर बहार चले जाना, अगर कहा जाय, आजकल-वैसी-ताकात नही रही द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-देखकर गाव-नगरमे रहना पडता है,-तो-सबुत हुवा. आजकल उत्सर्गमार्गपर नही चलाजाता कोरी बात बनाना क्या! फायदा?—

श्रावक-श्राविकाकों मिथ्या प्रचारसे बचना चाहिये,-मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके बरताव करना फर्ज है,-हरेक श्रावककों अपनी सालियाना आमदनीमेंसें-आधा, चोथा, दसमा या-कमसे कम सोलहमा हिस्सा धर्मकाममे खर्च करना चाहिये, विवाह-सादीमे और दुसरे दुनयवी-कारोबारम हजारो रुपये-खर्च करते है तो-क्या! धर्मका-दर्जा-कम है? मातापिताके इतकाल होतेबख्त जितनी रकम-धर्मकेलिये बोली हो तुर्त उसकाममे खर्च करना हुक्म है, जैनशास्त्रोंमे श्रावकोंकेलिये बयान है किसी रिस्तेदारका अपने घर-इतकाल होजाय बहुत असेंतक शोक-सताप-न-रखे, कितनेक श्रावक-वर्स-वर्सतक शोक रखते है. जैनतीर्थोंकी जियारत नही जाते, नवकारसी-या-स्वधर्मीवात्सल्यके जिमनमें जाना परहेज करते है-अगर व्याख्यान धर्मशास्त्रके वख्त-प्रभावना तकसीम किइजाय-तो-लेते नही, यह-खिलाफ जैनशास्त्रके है,-धर्ममें खलल पहुचाकर दुनियादारीके कामको पुख्तगी पहुचाना बहेत्तर नही,

श्रावकों दरसाल एक-जैनतीर्थकी जियारत करना चाहिये, कितनेक श्रावक वर्सोतक जैनतीर्थोंकी जियारत जाते नही. श्रावकों तावेउम्र-नव-लाखदफे नमस्कार महामंत्र जाप करना चाहिये, बारह-व्रत-इख्तियार करना और हरहमेश चौदह-नियम पालन करना कहा, श्रावकको रात्रीभोजन करना मना है. हरहमेश सामायिक-प्रतिक्रमण करना फरमाया, कितनेक श्रावक करते नही, यह उनकी धर्मक्रियामे कमजोरी समजना-या-नही? श्रावकोंकों-कुछ-तीर्थंकरोंके फरमानमे-छुट-नही मिली. इन बातोंपर खयाल करके देखलो! कौन कितने पगथीयेपर उचे और कौन कितने पगथीये नीचे है,-

फिर-एम. पी. शाह-बयान करते है.

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

પોતાને તથા પોતાથી-લાગેલા બટ્ટા આડો હાથ ધરવા માટે શાસ્ત્રોના ઉંધાજ પાટા બાધે છે, તેને માટે કેટલી દયા ખાવી?—

(जवाब.) इसमे दया खानेकी कोई बात नही, जिसको-जो-लिखना हो, खुशीसे लिखे-जवाब देनेवाले जवाब देते रहेगें, शास्त्रोके उधे पट्टे कौन बाधते है? इसका खुलासा क्यों नही लिखा? धर्ममे किसीकी जबरजस्ती नही, जिसकी मरजी-हो-माने, जिसकी मरजी -न-हो-न-माने, जैनमुनि-किसीको कहने नही जाते तुम हमकों मानो, जिस श्रावकके खयालसे-जो-सच्चे जैनमुनि-मालुम हो-उनकों जैनमुनि माने, जैनमुनिभी-अपने खयालसे-जो-सच्चे श्रावक दिखाई देंगे उनकों सच्चे श्रावक समजेगें.—

आगे-एम. पी. शाह-तेहरीर करते है,—

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

નવકલ્પી વિહાર ઇત્યાદિક કહ્યુ છે, છતા તેનુ પાલન-કઈ-નથી કરતા, તેની શરૂઆત કોણે કરી? ખરેખર આતો ખરી ક્રોસ એક્ઝામીનેશન!—

(जवाब.) जैनशास्त्रके सबुतसें सामने सवाल कियाजाय उसका-नाम-अगर एम. पी. शाह-क्रॉस-एक्झामीनेशन-समजे-तो उनकी मरजीकी बात है,-इसमें हमारा कोई नुकशान नही, धर्ममें जबर जस्ती नही होती, जिसकी मरजी-न-हो, सो-न-माने,-मरजी हो -सो-माने, जैनमुनी किसीको कहने नही जाते तुम-हमकों-साधु मानो, जिस श्रावकके-खयालसें-जो-मुनि-श्रद्धावान् और क्रियापात्र दिखाई दे-उसको साधु माने. जिस जैनमुनिके खयालसें-जो-श्रावक श्रद्धावान्-और व्रतधारी दिखाई देगें, श्रावक तरीके मानेगें.—

अखीरमे एम. पी शाह-लिखते है —

(ગુજરાતી ભાષાંતર)

જેઓનું આચરણ પ્રત્યક્ષ તથા પરોક્ષપણે પોતાની લિખેલી અસાધારણ પ્રતિજ્ઞાઓ મુજબ નહિ વર્તવાથી માર્ગ વિરૂદ્ધ જતું પ્રસિદ્ધ છે,—

(जवाब) किसका आचरण-लिखेहुई-प्रतिज्ञासें विरुद्ध है? इसका खुलासा क्यों नही लिखा? अगर लिखते-तो-जवाब मिलता,-अगर माकुल जवाब पाना हो-तो-सबुतके साथ खुलासा लिखिये. दुसरी यहभी-बात-है,-जो महाशय! अपने मतव्यकों साबीत करना चाहे -तो-धर्मशास्त्रके पाठभी पेश-करे, कोरी बातोंसे-चर्चा-चलाना बहेत्तर नही, लिहाजा-शास्त्रसबुतके-साथ पेश आवे, दफतरहाजामे माकुल जवाबोंकी-कोई-कमी-नही है,—

[श्रीयुत-एम पी शाहके लेखका जवाब खतम हुवा,-]

[तालीम-धर्मशास्त्र -]

१ जैन मजहबमें दुनियाका होना कदीमसें मानागया, जो-शख्श-जैसा-कर्म-करे वैसा फल पावे,-इसको कोई रद-बदल-नही करसकता.-आदमी चाहे जहा जाय तकदीर उसकी-हरहालतमे शाथ है.-बडेबडे शख्शोकी अकल पूर्वकृत-कर्मके उदयानुसार बदल जाती है. राजा-रावण-क्षत्रिय वंशका बडा बहादूर शख्श था, उसकी अमलदारीमे खूबसुरत औरतोंकी किसी कदर कमी-नही थी, मगर पूर्वकृत-कर्मके-उदयसे उसका दिल-फिरा, और राजा-रामचद्रजीकी महारानी-सीताजीकों अपने-घर-लाया, बडे-बडे जंग हुवे-और अखीरमे-राजा-रावणकी जान गई, यह-सब-तकदीरके खेल है. जिसके दिलमे यह बात-नागवार गुजरे-न-माने, ज्ञानीयोका कोई नुकशान नही, जो-कुछ सच-बयान था, ज्ञानीयोंने फरमा दिया, मानना-न-मानना-मरजीकी बात है,-मकानात, देवमदिर, और शिलालेख हमेशासे होते चले आये, मगर करीब तीन हजार वर्सके बनेहुवे मकान, देवमदिर, और शिलालेख अबभी-पाये जाते है.-जो-लोग बुतपरस्तिको नही मानते. देवमदिरके बारेमे-न-माने-तो-उनको कोई जबरन नही किईजाती,-मगर इतना जरुर कहा जायगा-जो-शख्श जिसमजहबपर एतकात रखता हो, उस मजहबके शास्त्रफरमानकों कबुल रखे,

२ अगर कहे, जमाना बदलता जाता है. (जबाब,) जमाना क्या आजही बदला है, ? जमाना-तो-हरवख्त बदलताही रहता है. तीर्थंकर-ऋषभदेव-महाराजका जमाना-अजितनाथजीके वख्तमे बदला. इसीतरह सभी तीर्थंकरोंके वख्तमे जमाना बदलता चला आया. तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका-जमाना-तीर्थंकर-महावीर स्वामीके वख्त बदला.-इसमे कोई ताज्जुबकी-बात नही.-हां ! अपने दिलकों काबुमे रखो. दिलकों-न-बदलो-तो-जमाना-क्या-कर सकता

है,-? जमाना-चाह जितना बदले तुमरों क्या? तुम-अपने धर्म-पर-दार-मदार रहो, आजकल जैनश्वेतांबर-समाजमें-कइ-श्रावक इस दलिलको-पेश-करते है. श्वेतांबर-दिगंबर-और-स्थानकवासी धर्मके बारेमें-एक-होजाय-तो-अछा! मगर इतना नही सोचते, हरमजहबवाले-अपने अपने-उसूलोंम-फेरफार कैसे करेंगे? और बगेर फेरफार किये मजहबके बारेमें ऐक्यता कैसे होगी? श्वेतांबर फिरकेवाले-कहेगे,-जिनमूर्तिपर एतकात लाना चाहिये, और-जैन-तीर्थोंकी जियारत जाना चाहिये इधर स्थानकवासी फिरकेवाले कहेगें, जिनमूर्त्तिको मानना कोई जरुरत नही, दिगंबर फिरकेवाले-कहेगें-हम-नग्नस्वरुप जिनमूर्त्तिको मानेगे-बतलाइये! फिर-धर्मके बारेमें ऐक्यता कैसे होगी? आजकलके श्रावकलोग आगे-पिछे-सोचते नही और कहदते है. आपसमें-सप-करलो! फिर तारीफ इसबातकी है,-सप-या-ऐक्यता करके बतलासकते नही. याद रहे? जिनकी मान्यतामें फर्क हो उनकी ऐक्यता कभी-होसकेगी नही -यू-व्यापार-रोजगारमें-ऐक्यता-जरुरते! होसकती है, मगर मजहबके बारेमें नही होसक्ती -

२ कितनेक श्रावक-कहते है,-प्रतिष्ठा-महोत्सव,-रथयात्रा, और जैनतीर्थोंके संघ निकालकर हजारो रुपये-सर्फ करना बहेत्तर नही, जवाबमें-मालुम हो, विवाह-सादीमें-हजारो रुपये खर्च-करना कैसे बहेत्तर हुवा? मौज-शौखमें हजारो रुपये सर्फ किये जाते हैं —क्या! इनसे धर्मके काम करना कमजोर है,? कितनेक लोग -मंदिर-मूर्त्तिको नही मानते मगर-जब-अपनी-सभा-स्थापन करनेका दिन-आता है,-उस-रोज-जलसा करते हैं सभाका-मकान -सुधरवाते हैं -बाजे बजवाते हैं -धजा-पताकाके साथ जलसेमें सामील होते हैं,-इन बातोंमें-खर्च-कम-क्यौं नही करते? इसका कोई जवाब देवे-अगर कोई-अखबारमें लेख लिखकर पश-आवे-तो-जाहिर नामसे लिखे,-अगर कोइ सुधारक बने-तो-अछी बात है.

मगर धर्ममे-खलल-पहुंचाकर सुधारा करना बेहत्तर नही,-धर्मको सानीत रखकर चाहे-जितना-सुधारा करो,-अगर कोई सुधारक-धार्मिक-व्रत-नियम-कम-करसकते हो-कोई-हर्ज नही,-मगर-उसका-एतकात-धर्मपर-सानीतकदम होना चाहिये, और-उपदेशमी-मुतानिक धर्मशास्त्रके होना, जरुरी है,-

४ आजकल कितनेक श्रावक कहते है, जैनोंमें विद्याकी कमी-होगई है,-जैनोंमे जैनत्व नही रहा, जैनोकी पायमाली होगई. (जवाब,) जैनोंमें विद्याकी-कमी-कौन कह सकताहै? कई-वकील-बॉरीष्टर-ग्रॅज्युएट-और-डाक्तर है, मजहबी इल्मके लिये-कई-गाम-नगरोंमे जैनपाठशाला-और बोर्डिंग खुली हुई है. जैनोंमें-जैनत्व-मुताविक जमानेके-कम-नही, जैनोंकी-देवभक्ति-गुरुभक्ति और जीवोंपर रहमदिली हरजगह मशहूर है. इन्साफसें देखा-जाय-तो-जैनोंमे-धार्मिक बातोंका प्रकाश किसीकदर कमनही. सिर्फ! देवद्रव्यके बारेमे-और-बोलीहुई-धर्मखातेकी रकमके बारेमे-ज्यादा प्रकाश करनेकी जरुरत है,-दरअसल-देव द्रव्य और धर्मखातेकी-रकम-तुर्त-धर्मकाममे-खर्च करते रहना बेहत्तर है,-

५ महावीर विद्यालय-बम्बईके बारेमे-जो-चर्चा-चली थी,-मुताविक फरमान-जैनशास्त्रके यहा कुछ लिखता हु,-महावीर विद्यालय-जैनोंकी एक-जाहिर-संस्था है, किसी एक शख्शकी नही, उसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीका नाम-सामील कियागया है,-जैनोंको-मुताविक-फरमान जैनशास्त्रके अमल करना फर्ज है,-तीर्थंकर गणधर क्या! फरमाते है,-इस बातको सोचो!-जैनमुनिकों और जैनगृहस्थको तीर्थंकर-गणधरोका क्या हुक्म है,-यंत्रपीलनकर्म-और-जहरीली चीजोका व्यापार श्रावकको नही करना कहा, बारहव्रतकी पूजामें-खुद-श्रावक पढते है, विष-शस्त्र-हाथीदांत-और-चमडीका व्यापार करना मुनासिब नही, विधिवाद और चरितानुवाद-(यानी) कायदा-और जीवनचरित-इनमे कायदा क्या कहता

है, इसपर गौर करना जैनोंका फर्ज है, तीर्थंकर-गणधरोंके फरमाये हुवे-जैनशास्त्र बयान करते है, जीवोंपर-रहम करो-रेशमी कपडोंके बारेम कई श्रावक सलाह देते है, इसके बननेमें जीवोंकी हिंसा होती है,-इसलिये रेशमी कपडे पहनना नही चाहिये,-हिंसाको-छोडनेके-लिये शुद्ध कपडे पहननेकी सलाह दिईजाती है, फिर-महावीर विद्यालयमें जैनोंकेलिये-आयुर्वेदीय-चिकित्सालाईन दाखल करनेकी सलाह-क्यों-न-दिइ जाती, इन्साफ कहता है,-जैसा-बोलना-वैसे चलना चाहिये.-यही-असली मुद्देकी बात है. जिसमे जीवोंकी हिंसा करना पडे.-यह बात मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके मुनासिब नही, जैसे अपने शरीरमें जीवात्मा है,-वैसे दुसरोंके शरीरमेभी है. -जैसे अपनेकों दुख-दर्द-होता है -दुसरोंकोंभी होता होगा. इसमे कोई शक नही, महावीर विद्यालय तीर्थंकरके नामसें जारी किइगई है,-उसमे मुताबिक फरमान जैनशास्त्रके बरताव करना चाहिये.- जिस लाइनमे जीवोंकी हिंसाका होना मालुम पडे उसकों छोड देना, -या-महावीर विद्यालयकी जगह दुसरा नाम रखना,—

६ हरेक तीर्थंकरोंके शासनमे नमस्कार-महामंत्र-वही-है, इसमे रद-बदल-कभी नही होता. द्वादशांग-वाणी-कदीमसें है.-भारत-वर्षके तीर्थंकर-महाविदेहमे जाय नही. और महाविदेहके तीर्थंकर भारतवर्षमे आवे नही, उनोंकों उधरही-तालीम धर्मकी देनेकेलिये मुल्क बहुत है,-मेरु पर्वत-जो-जंबूद्वीपके मध्यम है. उसपर कदीमी जिनमूर्त्तिये मौजूद है.-मन-वचन-और काया-इनमे-कर्म बांधने-वाला-मन है, वचन और कायामे अगर-मन-सामील-न-हो-तो-बजरीये उसके-कर्मबंधन नही होसकता. वचन-काया-और-द्रव्य-मन-जड-है,-भावमन-चैतन-है अनुयोगद्वारसूत्रमे-बयान है,-बगेर उपयोगके जितनी-क्रिया-करो-वो-द्रव्यक्रिया है,-किसी शख्शने बहुवक्तसे पापकर्म किये हो, और अगर उसवख्त अशुभपरि-णामसे दुर्गतिका बंध-न-पडगया हो, पीछेसें उस पापकर्मको छोड-

कर धर्म करे-तो-उसकों अछी गति-मिल-सकती है,-अगर पेस्तर दुर्गतिका बंधन बांध लिया हो,-तो-वो-भोगना पडेगा, और पीछेंकी धर्मकरनीका-फलभी-मिलेगा, मुक्तिहुवे-बाद-अरिहतभी-सिद्ध-कहेजाते है.-चाहे-सामान्यकेवली हो-या-अरिहंत हो-मुक्तिहुवेबाद सिद्धमे सब एकसरखे है,—

७ अगर कोई कहे-अपवित्र-केशरसें जिनप्रतिमाकी पूजा-कैसे होसके? जवाब, पवित्र केशरकी तलाश करो. तलाश करनेसें पवित्र केशर मिलसकता है. जैसे खानपानकेलिये हरेक चीजकी तलाश करते हो,-केशरकेलियेभी-तलाश करो, अकेले चदनसें पूजा करना आज्ञाभग दोष है. आज-किसीने-केशर चढाना बद किया,-कल-कोई-कहेगा, पानीमेभी-कबूतरकी बीठ पडी रहनेकी वजह अपवित्र है. जिनप्रतिमाकों स्नान कराना छोड दो. कोई दलिल करेगा, सा-रगी-तबले-चमडेके बनेहुवे अपवित्र है. इनकोंभी-जिनमंदिरमे लेजाना छोडो, कोई कहेगा-चमरी गांके पुछोके बालसे बनेहुवे चम-रभी-जिनमदिरमें लेजाना मौकुफ करदो. सबब-नापाक है. मगर इतना खयाल नही करते-व्यवहारमार्गमे-जो-चीज-पाक-और साफ मानीगई है,-वो-पवित्रही-है.-शत्रुजय, गिरनार, आबुजी,-समेत-शिखर और केशरीयाजी, वगेरा जैनतीर्थोमें-केशर-चढाई जाती है. -सभी-अपवित्र है, ऐसा नही कहाजासकता, हा! पवित्र केशरकी तलाश करके लाना-बेशक! जरूरी बात है,—हरेक शख्सकों मुताबिक अपनी हेसीयतके कपडे अछे पहनना चाहिये. दुनि-यामे मिशल मशहूर है,-एक-नूर-आदमी,-हजार नूर कपडा,-रुपये-पैसोंकी-तगी-अछे कपडे पहननेसें नही आती, तकदीरके फिरनेसें तगी आती है,-कजुस शख्शोंकों यह बात सायत! पसद-न-होगी, जब जवानी तशरीफ-लाती है.-आदमी-गा-फिल बन जाता है. और खयाल करता है, मे-इसवख्त

कितना खूबसूरत है? मगर ऐसा खयाल करना-गलत है. दुनि-
यामें इससे भी बढकर खूबसूरत मौजूद है. कहांतक गिनती करे.
[illegible] [illegible] है,-दौलत-मिलनेपर-गरीबीको याद करता
रहे, [illegible] [illegible] आदमी-इकबालमद बनता है,-हरेक
[illegible] याद रखना चाहिये अपनी करनी आपपर आयगी, गुने-
हगारोंको माफी देना-बुजरोंको पढाना है,-गुनेहगारोंपर-न-मा-
[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] होगी जिसका दिल-नापाक-उसकी
इबादत झुठी, जैसे-गजलका-गाना मजलिसमें जमाव करता है.-
शोलके पढेहुवोंका भाषण-सभामें-जमाव करता है,-किसी-कमख
याल आदमीने-उसकी कदर नही किई-तो-इससे दिलावरोंको
ऐसी बातोंपर खयाल करना बहेत्तर नही.—

८ जैन मजहबके-स्थानांग-सूत्रमें-जो-दशतरहके कल्पवृक्षोंका
होना लिखा है,-उनमें बयान है, कल्पवृक्षोंसे मनुष्योंको खानपान
मिलताथा,-यह दुरुस्त और सही है. अबभी-कई-जजीरे-दरि-
यामें ऐसे है, जिनमें खजूर-और-केले-वगेराके दरख्त है, और व-
हांके-बाशिंदे-उन [illegible] अपना गुजर करते है. जैनशास्त्रोंमे
[illegible] बयान हुवा है, कल्पवृक्षोंसे कपडेभी इजाद होते थे,-अबभी
-कई-मुल्कोंमें-लोग-दरख्तोंकी छालसे-अपने पहननेके लिये
कपडे बनाते है,-सिवाय इसके जैनशास्त्रोंमें-जो-खुशबू देनेवाले
दरख्तोंका जिक्र-तेहरीर है,-वोभी-सही और दुरुस्त मालुम होता
है,-अबभी-कई-दरख्त ऐसे है,-जिनके पत्तों और फुलोंमे ऐसी
खुशबू रहती है,-जो-दिमागकों-तर-करदेती है, अर्क-और इत्र-
निकलना भी-तमाम लोगोंको जाहिर है,-कईमुल्क ऐसे है-जिनमे
दरख्तोंपर घर-बनाये जाते है -बडेबडे दरख्तोंपर सीढी लगाकर-दो
[illegible] घर तयार करते है और कइलोग-गर्मीयोंमे दरख्तों-
[illegible] आराम फरमाते है,-कइ-दरख्तोंपर रसोई-घरभी
जो [illegible] कल्पवृक्षोंका जिक्र है, यहभी

सही और दुरुस्त है, देखो! अवभी-ताडके द्रख्तोंसें-रस-निकाल-कर पीते है, शिवाय इसके ऐसे कल्पवृक्षोंका होना जैनशास्त्रोंमे तेहरीर है,-जिनसें भाडे-वर्तन मिलते थे. यहभी-बात-बहुत दुरुस्त है,-अबभी-तुंबे-और-नारीयलके द्रख्तोंके फलोंसें वर्तन तयार किये जाते है,-और काममें लायेजाते है,-

९ जैनलोग तीर्थंकरोंकों अरिहंत बोलते है, उनोंने अपने कर्म-रूपी दुश्मनोंको जब-मारा-तो-उनकी रहमदिली कहा रही? जबाब, अरिहंतोने अपने-राग-द्वेष-काम-क्रोध वगेरा दुश्मनोंकों इबादत करके मारे. यानी-नाश किये. कुछ किसी जीवोंकी-जान नही लिइ,—जिससे उनकी रहमदिली-न-रहे, और यहबात हरम-जहमें दुरुस्त और जाइज समजी गई है,-गुनाहोकी तर्फ जातेहुवे अपने दिलकों मारना,-जिसशख्शने अपने दिलकी हवसकों नाश किई उसीने दुनिया-या-आगपतसें बखीस पाई, (यानी) उसकी मुक्ति हुई. इसीतरह अरिहंतोंने अपने गुनाहोंको-इबादतसें नाश किये. जब उनकी मुक्ति हुई, और अगर-न-करते-तो-उनकी मुक्ति-न-होती, जिस शख्शने शेरकों मारा-या-अजगरको मारा-तो-उसकी वहादूरी नही समजी जाती. वहादूरी उनकी समजी जाती है,-जो-अपने दिलकों-मारे,-जैनमजहबके कई पुस्तक छप-गये है,-जैनशास्त्र-आचाराग-और-कल्पसूत्रका इंग्लिश जबानमेभी तरजुमा होकर छपगया है. जैनलोग-अरिहंतोंकोंभी-मुक्ति देनेवाले नही मानते. वल्कि! हरेक शख्श अपने सचे भावसे धर्म-करे-तो-उसकी मुक्ति हो सके मानते है.-सचेभावको और-सची इबादतकों मुक्तिका जरीया समजते है, कोई शख्श-बगेर इबादत और सचे दिलके मुक्ति नही पासकता.-

१० धर्मपुस्तकोंपर-रुपये पैसे-सोना महोर-या-जवाहिरात च-ढाना-यह-उनकी इज्जत है,-और-धर्मपुस्तककेलिये बोलाहुवा-द्रव्य -ज्ञानमें लगाना फर्ज है. जिनमूर्त्तिकी पूजामें-तीर्थयात्राके जलसेमें

-रथयात्रा,-और-प्रतिष्ठाके जलसेमे-और-जिनप्रतिमाकों तख्तन-शीन करतेवख्त-बोली-बोलते है,-बडेबडे-राजे-महाराजोने और गृहस्थोंने-देवद्रव्य-और-ज्ञानद्रव्यकेलिये बोली बोलकर धर्मकों तरक्की दिई है,-जो-द्रव्य-जिस कामकेलिये बोलाजाय-वो-उसीमें लगाना-चाहिये. देवद्रव्य-देवके काममें और ज्ञानद्रव्य-ज्ञानके काममे-देना हुक्म है, अपने खासगी काममें लगाना धर्मका गुनाह है.-देवद्रव्यकी बोलीमे-साधारण खातेकी कल्पना करना हुक्म नही,-साधारण खातेका-चदा करके अलग-रकम-इकट्ठी करना-और-सप्तक्षेत्रमे जहा जरुरत हो लगाना-वो-जुदी बात है.-मगर-देवद्रव्यकी बोलीमे-उसकी कल्पना करना जैनशास्त्रोंका-हुक्म नही -देवद्रव्यकेलिये-बोली-बोलकर चढावा-न-कियाजाय-तो-मदिर-मूर्त्तिका-हमेशाकेलिये खर्च कैसे चले, देवद्रव्य-जमा-रखना और-मदिर-मूर्त्तिके-कामम-या-पूजनके कामभे नही खर्चना यह-बेशक! धर्मका गुनाह है,-अगर कोई कहे-देवद्रव्य-जमा-न-रखेंगे-तो-आगेको-काम कैसे चलेगा? जवाब.-जैनसघ मौजूद है, जैसा अब चलता है-आगेकोंभी चलेगा, इसका फिक्र करना कोई जरुरत नही

११ मुल्क मारवाडमे औरतोंकेलिये-हाथीदांतका बनाहुवा चुडा पहननेका रवाज चलता है,-हाथीदातके-एक-चुडेकी-किमत पचास -या-साठ-रुपये लगते है -और-एक-औरतकों उम्रभरमे पाच-सात दफे-नये चुडे बनवाकर पहनना जरुरत पडती है, इस हिसा-बसे तीनसो-या-चारसो रुपये खर्च पडे अगर इतनेही रुपयोंसें सोनेकी वगडी-चुडी-या-बाजुबध बनवा दिये जाय-तो-कितना मुफीद और किफायतमी-है,-बडेबडे शहरोंमे-और-अपने अपने गावोंमे-जैनश्वेतावर श्रावक-अपनी कोमकेलिये ठहरावकरे-तो-होसक्ता है,-अगर-कोई-धर्मचुस्त-श्रावक अपने घरसें यह रवाज जारी करे-तोभी-बनसके,-अपनेसें बनसके नही-और बिरा-

दरीके रवाजका बहाना बतलावे-तो-उसकी मरजीकी-बात है,
-जैनशास्त्रोंमे-शोक-सतापका रखना जमीतक लाजिम है,-जबतक
उसका उठमना-न-कियाजाय. कई-शहरोंमे-और-गावोंमे जहा
जैनोकी आबादी है,-कइ जगह देखा गया, जैनश्वेतांबर श्रावक-
अपनेघर-रिस्तेदारोंका इतकाल होजाय वर्सोतक शोक-संताप-रखते
हैं. और-खाविंदके मरनेपर उसकी-विधवा-औरतकों-वर्सदिनतक
-घरके कोंनेमें बेठे रहना बहेत्तर समजते है,-मगर-मुताबिक जैन-
शास्त्रके-यह-एक आलादर्जेकी गलती है,-ब-वजह-शोक-सतापके
उस औरतको-न-देवदर्शन होसकते है,-न-गुरुभक्ति करसकती.
सबदिन घरमे बेठे रहना यह एकतरहकी बीमारी पैदा होनेका सबब
है, मरनेवाले मरगये,-मोहकर्ममें पडकर अपने शरीर-और धर्ममे
खलल पहुंचाना कोन चतराईकी बात है? अगरचे बिरादरीके
अग्रेसरी मिलकर मजकुर रवाज बद करे-तो-क्या! नेंजा है?
अगर कोई-धर्मपाबंद-श्रावक-पहले अपने घरसें शोक-सताप रूप
-बला-निकाल दे-तो-कोई हर्जकी बात नही बल्कि! दोनों
जहानमे उनकी तारीफ होगी, और आलीम लोग यह कहेगें, अगर
चे! धर्मपाबद और समाजसुधारक हो-तो-ऐसे हो, दुनिया-दुरगी
है,-इसपर खयाल करना जरुरत नही, अकलमदोंका-फर्ज है,-बुरे
-रवाजोंकों-छोडे,-

१२ अगर कोई कहे-आत्मा-पहलेके कियेहुवे-कर्म-यहां-
भोगता है,-और-समय-समयपर-नये कर्मभी-बाधता है,-फिर
इसका-छुटकारा कैसे होगा? जवाब. निस्पृह होकर-धर्म-करे-तो-
छुटकारा क्यों-न-हो? जब-गुनाहोकों छोडे और दिलकी हवस
दूर करे-तो-नये कर्म-न-बधेगें, और छुटकारा होजायगा. जिसने
पूर्वजन्ममे पुन्य कियाथा,-वो-आरामतलब है,-जिसने पाप कियेथे,
उसकों तकलीफ पेश है,-दरअसल! अपनी अपनी तकदीरके-सब-
खेल है,-अगर कोई इस दलिलकों पेश करे जैनशास्त्र-दशवैकालिक

-सूत्रमे जैनमुनिकों रातकेवख्त सफर करना मना फरमाया, और ओघनिर्युक्ति-शास्त्रमे हुक्म दिया रातको-सफर करे, इसकी क्या वजह है? जवाब -दशवैकालिक्सूत्रका मतलब इस बातपर है,-बिना सबब जैनमुनि-रातकों-सफर-न-करे. और-ओघनिर्युक्तिशास्त्रका मतलब इसपर है,-अगर कोई-बीमारीका सबब हो, खानपान-न-मिलता हो, जंगल-या-अटवीका रास्ता हो, मसलन! एक शहरका रास्ता इतनी दूरपर हो-जो-दिनभरमे तमाम-नही-होसकता, उस हालतमे रातको सफर करे, जिससें अपनी मंजिले-मक्सुदपर पहुंच जाय,—

१३ अगर कोई इस मजमूनको पश करे, जैनशास्त्र-उत्तराध्ययनमे लिखा है, साधुपना-लेनेम-समयमात्रभी-देर-न-करे, और जैनशास्त्र गणिविज्ञा-पयन्नेमे लिखा, फलाने-फलाने-नक्षत्रमे दीक्षा नही लेना, इसका क्या सबब?-जवाब,-उत्तराध्ययनसूत्रका मतलब इसपर है, नेक-काम करनेम देरी नही करना.-और-गणिविज-पयन्नेका-मतलब इसपर है,-इतने इतने नक्षत्रको छोडकर दीक्षा लेना, -मना-और-हुक्म-जो-दियाजाता है. सबबके साथ दियाजाता है. -वख्तपर कियाहुवा-काम-ज्यादा फायदेमंद कहा,-नजुम-भलेबुरेका-बतलानेवाला है -दरअसल!-भलाबुरा होना-आत्माके किये हुवे कर्मोंहीके-ताल्लुक है मगर तिथि, वार, नक्षत्र-और-स्वरोदय-ज्ञान-उस-उस कामके-भलेबुरेका होना अवलसें बतलाते हैं,-इसलिये उसको देखभालकर-काम करना मुनासिब फरमाया —

१४-ज्ञानस्य ज्ञानिनां चैव, निंदाप्रद्वेषमत्सरैः
उपघातैश्च विघ्नैश्च, ज्ञानघ्नं-कर्म-बध्यते,-१

ज्ञान और ज्ञानी शख्शोंकी निंदा करनेसे इस जीवको ज्ञानावरणीय-कर्म-बंधता है, निंदा-उसका नाम है,-जो-जुठी बात कही जाय, ज्ञान-और-ज्ञानीयोंपर-द्वेष-मत्सर-करना. किसी तरहकी

आफत पेश करना, या-किसीतरहका-विघ्न-डालना,-ये-सब-ज्ञाना-वरणीय कर्मबंधनेके सबब है.-इनसे परहेज करना चाहिये.—

एकोह नच-मे-कश्चित्,-स्वः परो वापि विद्यते.-
यदेको जायते जंतु,-म्रियते चैक एव-हि.-२

इन्सानकों खयाल करना चाहिये-मे-अकेला हुं-इस दुनियामे मेरा कोई नही, दरअसल! जीव-अकेला पैदा होता है, और अकेलाही मृत्यु पाता है,-कोई शाथ नही आता, धन-दौलत और मकानात यहाही पडे रहेगें,-सिर्फ! पुन्य और पापही शाथ चलेगें,—

१५ तीर्थंकरोंके हुक्मको जैनशास्त्रमे विधिवाद कहा. और विधिवाद सब जैनोंकों काबिल मंजुर करनेके है. चरितानुवाद-जिसकों किस्से-कहानी-कहते है,-वो-सबको मंजुर रखना, ऐसा कोई नियम नही, सबब-चरितानुवाद अल्पव्यापी है. चरितानुवादमे-जो-बयान मुताबिक विधिवादके-हो-वो-विधिवादमे आजाता है,-जो-बयान-मुताबिक विधिवादके नही वो-काबिल छोडनेके है, एक शख्शने-जो-काम खिलाफ हुक्म तीर्थंकरोंके किया-वो-सबने करना ऐसा-कोई नियम नही, चाहे कोई जैनाचार्य हो,-जैन उपाध्याय,-या-जैनमुनि हो, तीर्थंकर गणधरोंसे-कोई बडा नही, खिलाफ हुक्म-तीर्थंकर-गणधरोंके कोई रूढी किसीने चला दिई-तो-वो-सब जैनोको-मान्य रखना ऐसा कोई शास्त्र फरमान नही. किसी जैनाचार्य-जैन उपाध्याय-या-जैनमुनिने विना हुक्म वारीशोंके किसी शख्शकों दीक्षा दिई तो-सब जैनोंकों ऐसा करना हुक्म नही. सबब-यह-बात विधिवादसे खिलाफ है, किसी शख्शको दीक्षा देना-तो-सोच समजकर देना चाहिये, दुनिया छोडकर-साधु-होना, और तानेउम्र-व्रत-नियम पालना सहज बात नही.-दीक्षा लेनेवालेके मातपिता वगेरा वारीश लोग-हुक्म-न-देवे, और-नाराज रहे,-उनकों-मोहमे पडे कहना-तो-जैनशास्त्रोंमे-जैनमुनिको चेले करनेका

लोभ नही करना-जो कहा है और-अगर कोई चेलेका लोभ करे-तो-उनकोभी लोभमे पडे क्यों-न-कहना? चेला-ससारसमुंदरसें पार पहुचायगा नही, पार पहुचानेवाला अपना अपना धर्म है,-एककी करनी दुसरेकों पार नही पहुचाती —

१६ फर्क करो! किसी जैनाचार्यने विधिवादसें खिलाफ बर ताव किया-हो-तो-उनको खिलाफ बरताव करनेवाले कहना कौन हर्जकी बात हुई? वे-जैनाचार्यही-क्या-जो-तीर्थंकर-गणधरोंके फरमानसें खिलाफ बरताव करे तीर्थंकर गणधरोंने-दीक्षाके बारेम -या-दुसरे धर्मकामके बारेमे उपदेश देना बेशक! फरमाया, मगर शाश्रमे यहभी-फरमाया है-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखकर उप-देश दो,-दीक्षा लेनेवालेका एतकात धर्मपर कैसा है, इस बातकों देखलेना चाहिये, दीक्षा लेना कुछ-छोटीबात नही, दीक्षाका वेष पहनलिया इससे क्या हुवा! आत्मिक गुण-हासिल होना चाहिये, पेस्तरके जमानेमे मनुष्योंकी पुन्यवानी-श्रद्धा-और धर्मपाबदी ज्यादा थी, जमाने हालमे वैसी कहा है? पेस्तरके जैनाचार्य-अवधि ज्ञान वगेरा अतिशय युक्त-ज्ञानी थे, बजरीये उसके-वे-जानतेथे,-आगे-क्या होनेवाला है, आजकल अवधिज्ञान नही रहा इसलिये उनका-सहारा लेना-बेहत्तर नही, वख्त देखकर काम करना चाहिये. दीक्षा लेनेवाला ससारकी असारताकों जाननेवाला हो दुनियाके खेल-तमाशोंसे उसका दिल हटगया हो, ज्ञान हासिल करनेकी ख्वाहेसवाला हो,-और-बडी उम्रवालाहो-ऐसे-गुणवाला शख्श-अगर दीक्षा लेना चाहे-तो-उसकी मरजीकी बात है,-धर्म करनेमे किसीपर जबरदस्ती नही किई-जासकती

१७ जैनोंकों जन्मसस्कारसें लगाकर अत्यकर्म सस्कारतक जैनस-स्कार विधिके जरीये दुनयवी-कारोबार करना चाहिये, तिजारत करनेमे सच बोलना, जूठ बोलकर दौलत चाहना हर्गिज-न-ब-नेगा जहातक बने उधारका धदा कम-करो, किमत लेकर चीज

वेचना उमदा वात है, याद रखो ! किसीसे कर्ज-लेना-मुनासिव नही, अगर जरुरत पडे थोडा कर्ज-लो, जो-जल्दी दे-सको, ज्यादा कर्ज लेना जल्द-दे-सकोगे-नही, व्याजमे रकम वढजायगी, फिर देना मुश्किल होगा,

१८ जो-चीज-अपनी तवीयतकों विगाडकी सुरत हो, उसका इस्तिमाल करना वहेत्तर नही, खान-पान-उतना खाना जितना हजम-हो-सके. वदहजमी पैदा करनेवाली चीजे अवलसेंही छोड दो, सव वीमारीयोंकी-जड-वदहजमी है,-जहातक वने किसीको सख्त जवान मत बोलो. सख्त जवान बोलनेसे फिसाद् वढेगा, और वडी-वडी-मुसीवते पेश होगी, किसीके घर जाना-तो-वहारसें इत्तिला करके जाना,-न-मालुम, घरके लोग-किस काममें लगे होगें, तुम-चुपचाप चलेजाओगे-सायत ! उनको नागवार गुजरेगा.

१९ मुल्कोकी सफर करना-तो-जवानकी पावदी रखना, किसीके माल-असवावकों वगेर इजाजतके हाथ लगाना नही,-जो -चीज खरीद् करना-तो-तलाश करके खरीदना, विना चीज लिये अवलसें किम्मत देना वहेत्तर नही, जहातक वने-सट्टेका-व्यापार करना नही. अगर करना-तो-जो-चीज लिई-या-वेंची हो-थोडे नफे-या-थोडे-नुकशानसें निकाल देना, वहुत अर्सेतक--सोदा माथेपर रखना नही, न-मालुम किस रौज-उस चीजके भावमे घट -वढ होजाय, फायदा होनेपर वेशक ! खुशी होगी, मगर-एकदम नुकशान आजानेपर निहायत तकलीफ होगी,-इससे-तो-अवलसेंही होशियार रहना अछा है,--

२० रिस्तेदारोंकों विरादरीवालोंको-और जहातक वने पडोसीकों मदद देना चाहिये, कभी-कामपडनेपर-अपनेकोभी-मदद मिलेगी, जहातक तकदीरके सितारेने-जोफ-नही खाया, अपना कोई विगार करसकता नही. मगर अपने धर्म-नियमपर-कायम रहो, धर्मको छोड दोगे खता खाओगे, जैसे दुश्मनका खौफ रखते हो,

पापकर्मसे खौफ रखो, विदुन देवदर्शन-किये खाना मत खाओ, एक-थालमे-कची रसोई-और-प्रवाही-पदार्थ लेकर-शाथ-शाथ-खाना वहेचर नही, अगर-मिठाई-सेव-या-मेवा वगेरा एक-थालम लेकर खानेका काम पडे-तो-कोई हर्ज नही. आटा-दाल-घी-दूध -और मिठाई ताजी-काममे लाना अछा, बहुत दिनकी बनीहुई बिगारकी-सुरत-होगी.

२१ तप करना सहज है, मगर ज्ञान पढना-सहज नही, जमाने हालम केवलज्ञान, मन पर्यायज्ञान, अवधिज्ञान वगेरा अतिशय युक्त -ज्ञान-रहे नही, मतिज्ञान, और श्रुतज्ञान मौजूद है,-चौदह पूर्वके -ज्ञानी-दशपूर्व-या-नवपूर्व वगेराके ज्ञानीभी नही रहे, सिर्फ! एक पूर्वके ज्ञानका-जो-कुछ हिस्सा बाकी है,-उसपर अमल करना चाहिये —

[बयान तालीम धर्मशास्त्रका-खतम हुवा —]

[बयान औरतोंके बारेमे,]

१ इसमे-पदमिनी-चित्रिणी-हस्तिनी-और शखिनी वगेरा औरतोंका बयान और दुनयवी कारोबारकी तरकीबें लिखीगई है,- देखिये! दुनियाम चार तरहकी औरतोका होना ज्ञानीयोंने फरमाया पदमिनी औरत निहायत खूबसुरत, दुसरे दर्जेपर चित्रिणी, तीसरे दर्जे हस्तिनी, चौथे दर्जेपर शखिनी बयान किंटे. जिनकी आलादर्जेकी तकदीर हो, उनको पदमिनी औरत मिले, चित्रिणी और हस्तिनी औरतभी अछी होती है,-शखिनी औरतका दर्जा-अखीरका है,- जमाने हालम पदमिनी औरत दुनियामे कम है,-चित्रिणीभी कम- और इसीतरह हस्तिनीभी-कम समजो मर्दको-खूबसुरत-औरत- और-औरतकों खूबसुरत मर्द मिलना अछी तकदीरके ताल्लुक है - आराम और खजाना-तर-बनारहे,-यह-कुछ-कम-तकदीरकी बात नही, चार तरहकी औरतोंके-जुदे जुदे तरीके शुमार कियेजाय-तो

-सोलह होते है,-और फिर उनकेभी भेदानुभेद तलाश करे-तो-चोसठ होते है.—

२ जिस औरतका मुह-चंद्रमाकी तरह गोल, नाक तोतेकी चाच समान खूबसुरत, दात अनारकी कली, केश-शाम-और पतले, शरीर चपेनरन, हृदय खूबसुरत,-नाभि उडी, अगुली लबी, नख लाल, निलार पाच अगुल उचा, होठ पतले, रगबरगके कपडे पहने, हिरनीकी तरह नेत्र जिसके चमकीले हो, दिलकी दलेर, चतराईसे खाविंदका दिल खुश करे, चित्रकारीके काममे होशियार, तालखरसे उमदा गाना गावे, नाचरगमे वडी चतर, वीणा-सितार-वगेरा बाजा बजासके,-जवाहिरातके गेहने चाहकर पहने धर्मपर कामील एतकात और तीर्थोंकी जियारत करे, इल्म पढीहुई, लेख लिखनेमें चतर-और-उसका खजाना-हमेशा-तर-बना रहे,-ये-सब-उस औरतकी -बुलंद तकदीरकी बात है,-नोकर चाकरोको खुश रखे, रिस्तेदारोसे मिलकर चले-बडोंका लिहाज रखे, और देव-गुरुकी खिदमत करे, जिसने पूर्वजन्ममे पुन्य किया है.-उसको यहा-उमदा मकान, हाथी, घोडे, म्याना, पालखी, रथ, बग्गी, गेहने, कपडे, इत्र-फुलेल, और अछा खाविंद मिलता है, और जिस मर्दने पूर्वजन्ममे पुन्य किया हो-उसको-यहा-उमदा औरत मिलती है,—

३ चाहे मर्द हो-या-औरत-हमेशा स्नान करना, उमदा पुशाक पहनना. इत्र-फुलेल-लगाना और निलारमे तिलक करना अछे गरशोका फर्ज है,-औरतकेलिये नाकमे-चुनी-या-नथ-गलेमे किसीतरहका गेहना, हाथमे ककन,-चुडी,-या-बगडी,-अगुलीमे-अगुठी और पावमे नेवर शिगार है,-चाहे जितना शिगार पहना हो मगर चतराइसें बोलना-सबसे आलादर्जेका शिगार है,-बदनकी खुबसुरती वेशक! अछी है. मगर इल्मकी खूबसुरती नही-तो-कुछभी नही.—

४ धर्मशास्त्रोका फरमान देखो-तो-मर्दकेलिये औरत-और-

औरतकेलिये मर्द-एक तरहका बंधन है,-मगर-दुनियादारोंको जब-तक दुनियामें बेठे है, वगेर एक-दुसरोंके काम नही चलता, दुनिया छोडकर साधु होजाय-तो-अलग बात है, साधु होकर चेलेका लोभ करनाभी-मुनासिब नही, औरत अगर अपने पतिकों अपने वशमे करना चाहे-तो-सची-पतिव्रता होकर रहे, और पतिके हुक्ममें चले, अगर पतिका और अपना धर्म-जुदा हो, तो-इस बातकी तलाश करे सत्यधर्म-किसका है,-अपना-या-पतिका, जिसका सत्यधर्म ठहर उसपर दोनो-पावद होजाय,-घरका-कामकाज करना, रसोई बनाना और लडके-लडकीकों दुनयवी कारोबार सिखलाना औरतका -फर्ज-है,-जो-लोग इस खयालम है लडकीकों इल्म पढाना बहेतर नही, उनकी गलती समजो, कई शख्शोका खयाल है, इल्म पढीहुई लडकी बडी होनेपर नेकचलन नही चलेगी,-(जवाब) नेकचलन चलना-या-बदचलन होना अपनी अपनी तकदीरके ताल्लुक है.-मगर ज्ञानीयोंने इल्म पढाना हमेशाकेलिये फायदेमद कहा. पढी लिखी औरत अपने फरजदोंको-अछी तालीम-देशकेगी, और सौच समजकर चलेगी,—

५ मुल्क मारवाड-राजपुताना और मुल्कतर्फ-जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर-अपनी औरतोंको पर्देमे रहनेका रवाज है,-इससे जिनमंदिरोंमे तीर्थोमे और धर्मगुरुओकी व्याख्यानसभामे जानेआनेका खलल पडता है,-मुल्क गुजरात-काठियावाड-कछ-मालवा और दखनमे जहां जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी-औरतोंकों-पर्देमे रहनेका रवाज नही है,-चदा देखलो! जैनधर्मकी कितनी तरकी होरही है? औरतों वालपनमे मातापिताके ताबेमे रहना पडता है,-जवानीमे पतिके -और-जइफीम-लडकोंके ताबेमे रहना पडता है.-धर्मशास्त्रोंमे मर्दों का दर्जा वडा औरत चाहे जितनी पढी लिखी हो, मगर अकल-होशियारीमे मर्द-तेज है,—

६ जो-शख्श-औरतके स्नेहमे पडकर मातपिताकी इज्जत

करना छोडदेते है. और उनकों तकलीफ देते है, निहायत बुरी बात है,-कितनेक बेटे मातपितासें जुदे होजाते है, और कहदेते है-घरमे -बनाव-न-रहनेसें हम-जुदे होगये. मगर इतना खयाल नही करते, मातपिताकी जइफीमें उनकों आराम-देना-या-तकलीफ? कितनेक ऐसे शख्शभी देखेगये-जो-अपनी औरतके कहनेपर-भाइयोंसें-जुदे होजाते है.-मगर इतना नही सौचते, मात-पिता-और-भाइयोंका दर्जा बडा है.-दुनियामे ऐसा कोई द्रख्त नही. जिसकों हवा-न-लगी हो, मगर तारीफ उस द्रख्तकी है,-जो-उस हवासें गिरा नही, इसीतरह दुनियामें हरेक मनुष्यकों जवानीमें काम विकारकी -हवा-लगती है,-मगर तारीफ उनकी समजो-जो-उस हवासें गिर -न-जाय,

७ धर्मशास्त्रमे सुनतेहो,-कई-मर्द-और-कई-औरत-स्नेहमे-पडकर घर-छोडकर चले गये है.-स्नेहमे वख्त जाते मालुम नही होता, जिनोंने कामविकारसे फतेह पाया, उनकी तारीफ करो, तीर्थंकर-गणधरोंकी-जंबूस्वामीकी-धन्ना-शालभद्रजी और सुदर्शन शेठकी तारीफ बयान करना चाहिये-जिनोंने-कामविकारको शकिस्त दिई. चाहे मर्द हो-या-औरत! जिसका एकतर्फी स्नेह होगा-तो-वियोगमे एककों-दर्द-न-होगा. और एककों होगा. अगर-दो-तर्फी स्नेह होगा, एक दुसरोंकों जुदे पडनेपर-दोनोंकों एकसरखा दर्द होगा,-स्नेहीसें जुदे पडनेपर खानपान छुट जाता है. -और दिल-नाराज होता है.

८ जिसकों पूर्वजन्मका वैर है, उसकों देखकर दिलमें दुश्मनाई पैदा होगी. जिसकों पूर्व भवका स्नेह है,-उसकों देखकर-खुशी पैदा होगी, दुश्मनाई-या-दोस्ती पूर्वजन्मके संबंधसें हुई-या-इस भवमे नया-संबंध लगा, इस बातका-खुलासा-बगेर ज्ञानीके दुसरा नही करसकता.—फर्ज करो? एक-औरतकों एक मर्दपर पूर्वजन्मका स्नेह था, अगर-वो-मर्द उसपर कभी-नाराज होजाता था-

तोभी-वो-नाराज नही होती थी, और माफी मागकर पेश आती थी सबब उस औरतको उस मर्दपर पूर्वजन्मका स्नेह था.-एक वख्त ऐसा बनाव बना,—

[दोहा]

शीशी भरी गुलाबकी-भेजु किसके हाथ.
आनेवाला-है-नही,-लेलो ? हाथो हाथ,-१

एक औरत-गुलाबके इत्रकी शीशी-अपने स्नेही मर्दकों-देना चाहती थी,-इत्तिफाकमें-वो-मर्द उसकों मिलगया, औरत कहने लगी, मेने-इत्रकी शीशी आपकेलिये तयार किई है,-आनेवाला नोकर मौजूद नही जिसके हाथ भेजती आप मिलगये हो.-हाथो हाथ-लेलो, ऐसा कहकर—औरतने मर्दको-शीशी-देदिई. पूर्वभवके स्नेहसें-सायत ! ऐसी बात बनी हो,-तो-कोई ताजुब नही,—

९ कामविकारकों शकिस्त देना बडी मुश्किल बात है. चाहे-मर्द-हो,-या-औरत-इसम पडकर मोहित होजाते है. जिस मर्दका जिस औरतपर स्नेह है-उसका कहना उसकों पसंद होगा, जिस औरतका जिस मर्दपर स्नेह है उस मर्दका फरमाना उस औरतकों पसंद होगा दरअसल ! मोह कर्मसे फतेह पाना बडा दुसवार है-, एक मर्द-अपने दोस्तकों कहन लगा, मेरी खूबसुरत औरत मरगई मेरा-घर-टुटगया, मे-इसवख्त सख्त रंजमे हु इसतरह सेंकडो बातें कहने लगा, मगर जब बादचदरोजके दुसरी औरत विवाही और उसके मोहमे पडगया पहलेवाली औरतको भूल गया. यही किस्सा है,-इस दुनियाफानी-सरायका,-दरअसल ! कोई किसीका नही. सब अपने मतलबके साथी है,—

१० एक-औरतका-पति-इतकाल होगया-और-वो-लखपति था, औरत-अपने पतिके इतकाल होजानेपर दुसरी औरतको कहने लगी —मुजे अब इस दुनियाम क्या करना है ?-माल-असबाब-बेचकर तीर्थ भूमिमे-जा-रहुगी मगर चार-छह-महिने होगये,-

वो-बात भूल गई. उमदा खानपान होनेलगा. बाग-बगिचे-और-नाचरग देखना पसद हुवा,-पतिके मरनेपर-जो-बात कहती थी, उसकों यादभी-नही-करती, इसीलिये ज्ञानीयोंका फरमाना है,-कोई-किसीका नही, सब अपने मतलबके प्यारे है,-इन्सानकों इश्कमे गिरफ्तार होनेपर बडेबडे दुर्ध्यान होते है, और पापकर्म बधते है. अगर देवगुरु-धर्मपर-ध्यान लगावे-तो-कितनी उमदा बात हो? अकलमदोंकों लाजिम है,-इश्कके फदेमे-न-फसे. और जहातक बने इस बातसें परहेज करे,

११ अगर कोई शख्श-गेरमुल्कमे है. मगर अपने दिलमे-उमपर स्नेह हो-तो-वो-नजीक है,-ऐसा समजो जिसपर अपना स्नेह नही. और वो-नजीकमे है,-तोभी दूर है, ऐसा जानो,-जैनशास्त्रोंमे-एक धनदत्तशेठका बेटा-एलाचिकुमार-एक-नटनीकों देखकर-मोहित होगयाथा. और घर छोडकर उसके शाथ-नट-होगयाथा, गाना-बजाना सिखा. मुल्क-ब-मुल्कमे फिरा. और दौलत कमाई. मगर जब-उसके दिलमे ज्ञान हुवा,-उसका निस्तार हुवा. ज्ञान-वो-चीज है,-जो-नापाक-दिलकों पाक और साफ करदेता है, असलमे-वो-नटनी-उनकी पूर्वभवकी औरत थी, उसकोंभी जब ज्ञान हुवा, उसका दिल सुधरा और दुनियासे निस्तार पाई, पूर्वभवके स्नेहसें एक -श्रीमती-कन्या-एक आर्द्रकुमार मुनिकों देखकर मोहित होगई, जो -उनकी पूर्वभवकी औरत थी.-इसीलिये उस कन्याकों उस मुनिपर स्नेह पैदा हुवा, तीर्थंकर-शांतिनाथ महाराजके चरितमें एक-अमर-दत्त-और-मित्रानदकी कथा आती है, जब-अमरदत्त और मित्रा-नद अपने घरसें रवाना होकर गेरमुल्ककी सफरकों चले, एक शह-रमें एक-रत्नमंजरी राजकुमारीकी पुतली देखकर अमरदत्तकुमार मोहित होगयाथा, दरअसल!-वो-रत्नमजरी-अमरदत्तकुमारकी पूर्व-जन्मकी औरत थी. यह सब-पूर्वसचितकर्मकी बात है.-निका-चित-कर्म-बिदून भोगे नही छुटते,—

१२ स्नेह-दो-तरहका, एक सचा, दुसरा नकली चाहे मर्द हो -या-औरत-स्नेहका इम्तिहान करना चाहे-इसतरह करे, अगर किसी औरतके पास कोई-मर्द-गया, और उस मर्दकों देखतेही खडी होगई बेठनेकेलिये-आसन दिया, और खुश होकर कहनेलगी, बहुत दिनोंसें आप तशरीफ लाये. शुक्र है आज आपका दिदार हुवा खानपानकी चीज लाकर खातिर-तवज्जे किई-तो-जानना उसके दिलमे अपनेलिये स्नेह है इसीतरह फर्ज करो! कोई औरत किसी मर्दके-घर-गई-और-उसवख्त मर्दने-खुश होकर खातिर--तवज्जे-किई.-इज्जतसे बेठाई.-और-खानपानकी चीज मगाकर मिजमानी किई-तो-जानना-उस मर्दका स्नेह उस औरतपर है - यह बयान-व्यवहारमार्गकी-अपेक्षासे लिखा गया, दोनोंके दिलमे सचा स्नेह-है,-या-नकली?-इस बातका माजरा ज्ञानी करसके,- किसीके दिलमे-क्या-बात है-इसका असली हाल-ज्ञानीही-जान सक्ते है,—

१३ जहां-स्नेह-वहा दुखभी-है.-दोनोंके वियोगमे जिसका सचा स्नेह होगा, उसकों दुख होगा, इसीलिये-स्नेहका-दुख मिटना ज्ञानियोने दुसवार फरमाया, जबतक जिस जीवके पूर्वसचित-राग-कर्मके-परमाणु-उदयमें-है,-स्नेह-छुट सकेगा नही थोडे रौज छुट गया-तो-क्या हुवा? फिर उदय होगा, जब-रागकर्मके-परमाणु उदयमे आकर भोग-लियेजाय-तभी-स्नेह छुटेगा, दुसरा रास्ता-स्नेह छुटनेका नही, व्यवहारनयकी अपेक्षा कहसकते हो-स्नेह छोडनेकी कोशिश करना. मगर निश्चयनयकी अपेक्षा कर्मका उदय-बलवान् है, उदयमे आइहुई-कर्मप्रकृतिकों कोई-रद्-नही करसकता -जो-कर्म-प्रकृति-भोगनेपरही स्नेह छुट सकता है,-अकलमदोंकों-मुनासिब है,-पापकर्मको पहले-पीछे-और बीचमे बुरा समजे, और अपने आत्माकी भुल कबूल करता रहे, जिससें आगेकों अशुभ-कर्म-न-बधे, अगर कोई मर्द चाहे-मे-फलां-औरतकों अपने दिलसें भुल

जाउं.-या-कोई औरत चाहे-मे-फला-मर्दको अपने दिलसें भुल जाउं. मगर जबतक पूर्वसंचित-रागकर्मके-परमाणु क्षय नही हुवे हर्गिज! भुल-न-सकेगें. शास्त्रोंमे सुनते हो,-भावी-बलवान् है, हान-लाभ-जीवन-मरण-सयोग और वियोग कर्मके ताल्लुक है,-कर्मोदयके सामने किसीका जोर नही चलता.

१४ धर्मशास्त्रोंमें सुनते हो,-पेस्तरके जमानेमें-अछे-गृहस्थोंके-घर-एक-मर्दकों-आठ-आठ औरतें-या-बत्तीस-बत्तीस औरतें होतीथी, और-वे-अपने खाविंदके हुक्ममें चलती थी, सबब-उस जमानेके मर्दोंकी तकदीर आलादर्जेकी-होती थी. आजकल-ऐसी तकदीर रही नही.-आजकल-दो-औरत विवाहनेपरभी-आपसमे अनबनाव-चलता है,-अकलमर्दोंकों लाजिम है. स्नेहीके-वियोगमे-फिक्र-न-करे, और धर्मपर साबीतकदम रहे, कई-मर्द-औरत-स्नेहमें पडकर-धर्मके व्रत-नियम-तोड देते है,-अगर उनकों कहाजाय-स्नेह-बुरी चीज है-तो-हर्गिज! मानेगें नही. जब कभी-उस बातसें-खता-खायगें, जभी सायत! मानेगें.— वेश्या-या-पराइ औरतके सबबसें दौलत चली जाय-और खानपानसेंभी-मुश्किली आनपडे कुछ-अकल ठिकाने आसकती है, और उस वख्त दुसरोंका-कहना असर हो सकता है.—

१५ जिसको पूर्वभवका वैर होगा, देखकर दुश्मनाई पैदा होगी, जिसको पूर्वभवका स्नेह होगा, देखकर खुशी पैदा होगी, दुश्मनाई-या-दोस्ती पूर्वजन्मके सबबसें हुई-या-इसभवमे-नया-स्नेहबधा इसका खुलासा वगैरज्ञानीके दुसरा नही-करसकता, इतना-याद रहे! कोई किसीके पास विनामतलबके नही आता, दुसरा तरीका पूर्वजन्मका स्नेह हो-तोभी-आता है, उमदा-पुशाक पहनना-और लुखा-खाना-अछा है, मगर इश्कमे पडकर इज्जत और दौलतकों-खो-बेठना अछा नही. इन्सान-वो-है-जो-अपने दिलकों कावुमे रखे, अगर किसी औरतसें किसी मर्दका स्नेह-छुट गया,-

-या-किसी मर्दसें किसी औरतका स्नेह छुट गया, दिलमें समजना अछा हुवा,-एकतरहकी तकलीफ छुट गई, इज्जतदारोंकों इश्कके फंदेमे पडना-दोनोंतरहसें नुकशान है,-अगर दिल-कायुमें-न-रहे -धर्मपुस्तक वांचते रहो और अपना दिल दुसरे काममे लगानेकी कोशिश करो,-जब-पूर्वसंचित-रागकर्मके-परमाणु-क्षय-होजायगें, -खुद-ब-खुद दिल-कायुम-आजायगा, अछे शख्शोंका फरमाना है,-इश्क आफतसें भरा है, और नतीजा उसका बुरा है,—

१६ कई-मर्द-एक-दुसरेके मिलनेपर हसी करते है,-मगर अछे -शख्शोंका फरमाना है-इनबातोंसें कभी-नाराजी-पैदा होगी, नेक-मर्द-और नेक औरत इसतरह हसी नही करते. ज्यादा-हसी -करना बहेत्तर नही, जो-मर्द-या-औरत रास्ते चलते वख्त-रास्ता -छोडकर इधर उधर देखे-स्नेहके वचन कहकर एक-दूसरोंकों हसावे,-तो-यह-बात मुनासिब नही, सच-बोलनेसे-अपनेपर दुसरोंका स्नेह बढता है, और जूठ बोलनेसें स्नेह घटता है,-दुनियामें मिशल मशहूर है,-"जूठ-किसीका-सगा नही,-और साचकों आच नही,-" दुश्मन लोगभी-सच-बोलनेवालोंकी तारीफ करते है,-और-दोस्त बनजाते है, अगर कोई कहे-बगेर जूठ बोले आजकल-काम-नही चलता, मगर यह बात बहेत्तर नही, सच-बोलना हमेशाकेलिये फायदेमद है,

१७ ज्यादा-कामविकार सेवनेसें-आखोंकी रौशनी-कम-होगी, कानोंसे बहेरे होना और स्वास चढना इसीके नतीजे है,-खान-पान-रग राग और नाटक वगेरा काम-विकारकी चीजें है-तप करना-जगलबासी बनना सहज है,-मगर जवानीमे कामविकारसें फतेह पाना सहज नही.—

[दोहा,]

ज्ञानी ध्यानी सजमी, शुरा धीरा अनेक,
रुपिया-वो-दिसे घना.-शीलवत नर एक,-१

एक शख्शने अपनी औरतकों-दश-हजार-रुपयोंके गेहने बनवा दिये थे, चद रोजमे उसके खाविंदकों-सट्टेके व्यापारमें नुकशान आया, औरतकों कहा,-गेहने देदो, फिर बनवा देयगें. औरतने कहा. आपतो-हरवख्त-खोते-और-कमाते हो, मे-क्या करू! गरज! औरतने गेहने नही दिये. और चद रोजकेलिये-अपने वालिदके-घर-चली गई. आखीरकार! उस शख्शने बडी तकलीफसें देना चुकाया.-दुनियामे तरह-तरहके बनाव बनते है.-कहातक! बयान करे. एक-शख्शने-अपनी औरतकों-तीस-हजार रुपयोंके गेहने-बनवा दिये थे,-मगर जब उसके खानिंदको व्यापारकेलिये-कुछ-रकमकी जरूरत पडी, फौरन! उसकी औरतने-गेहने-उतारदिये,-और-कहा, आपसें गेहने-कुछ-ज्यादा नही.-नेक-औरत हो-तो-ऐसी हो,—

[दोहा]

१८-कज्जल तजे-न-शामता, मोती तजे-न-सेत,
दुर्जन तजे-न-कुटिलता, सज्जन-तजे-न-हेत, १

कज्जल अपनी शामताकों नहि छोडता, मोती अपनी सफेदीकों नही छोडता, दुर्जन अपनी कुटिलताकों और सज्जन अपनी सज्जनताकों नही छोडता, नेक-औरत-अपने-खाविंदके गुस्से होनेपर नाराज नही होती. और खाविंद कुछ-नसीहत करे-तो-नेक औरत उस नसीहतकों कबूल-करती है.-और अपनी गलतीकेलिये माफी चाहती है,-नेक-औरत हो-तो-ऐसी हो,-

[बयान औरतोंके बारेमें खतम हुवा -]

[अष्टाग-निमित्त-प्रश्नावली -]

१ कईलोग कहा करते है,-नजुम, रमल, और प्रश्नावली-वगेरा वहेमी-लोगोंकेलिये है, मगर जब कभी-आफतकी पुडिया पेश गुजरती है,-कोई खौफ आनपडता है,-या-बीमारी दरपेश होती है वडेवडे-हिमतबहादूरभी-नजुमीयोंके घरकी राह पुछते है.- या-रास्तेमे कोई रमल देखनेवाले मिलजाय-तो-उन्हीसे दरयाफ्त करते है, मेरेपर फला गजब आनपडा है.-या-आनेवाला है.- उसका क्या होगा! और-मे-इस-वलाये आजमसें कैसे फारिग होउगा-वगेरा सवाल पुछते है,-दरअसल! नजुम, रमल, और प्रश्नावली गलत नही, जब कभी-किसी आफतमे गिरफतार होना वनता है उसवरत इसका तजरुवा होसकता है.—

जिस कामकेलिये प्रश्न देखना हो-अपने दिलमे चिंतन करना- और अपने हाथमे एक रुपया लेकर अष्टाग निमित्त प्रश्नावलीके सामने रखना, फिर-एक-एलाची-या-लौंग-हाथमे -लेकर आगे लिखाहुवा मत्र (२१) दफे मनम पढना,—

"ऊॅनमो अट्ठग-निमित्त कुशलाण-ऊॅ ह्रीँ क्रौ क्रौ क्ष्रौं-क्ष्रौँ-स्वाहा-"

इसमत्रको उपरलिखे मुनव एकीसदफे मनमे पढना, और उस एलाची-या-लौंगको मत्रित करके-यत्रके-जो-(१६) कोठे है, उन-मेसे अपनेदिल चाहे उस अकपर रखना, और उस अकका-फल- जो-आगे लिखा हुवा है, उसीम अपना अक देखकर तलाश करना, और उसम लिखा हुवा फल-आपके सवालका जवाव है,-ऐसा- जानना, एक-सवाल दुसरीदफे नही देखना. एकदफे देखलिया उसीको मजुर करना,-जो-रुपया प्रश्नावली चक्रपर रखा था.-वो- ज्ञानकामम-पुस्तक वगेरामे खर्च करदेना. और-वो-पुस्तक पाठशा-लाम ज्ञानभडारम-या-लाइब्रेरीमे दे-देना, प्रश्नावली चक्रपर-एक -रुपया-रखना मामुली शख्शके लिये है, अगर कोई दौलतमद शख्श-व-जरीये-इस-चक्रके कुछ दरयाफ्त करना चाहे और सोना

महोर वगेरा भेट-रखे-तो निहायत उमदा बात है,-और-वो-रक-मभी ज्ञानके काममे-दे-देना चाहिये.—

[अष्टांग-निमित्त-प्रश्नावली -]

(प्रश्न देखनेका-चक्र,-)

३१४	३२१	३२४	३४१
१२३			२३१
१२४			२३४
१४२			२४१
१४३			२४३
४१२	४१३	४२३	४३१

[अष्टाग-निमित्त-प्रश्नावलीके सोलह कोठोंका अलग-अलग-फल इसतरह है -]

१२३ मे अकका फल,-तुमारे कामकी फतेह होगी, जिस चीजकी दिलमे आर्जू रखते हो-वो-कामयाब होगी, मुकदमेक बारेमे फायदा हासिल होगा. जो-काम-शुरु-किया है,-उसकी कोशिश करते रहो,-इरादा पार पडेगा, मगर उसमें कुछ मुदत है,- कुटुंबके लोगोंसें मुलाकात होगी, दुश्मन-कदम-कदमपर तैनात हैं, मगर तुमारी तकदीर-आलादर्जेकी है,-हिकमत करते रहो, तीर्थ करोंकी इबादत करो जो-काम करना चाहते हो, होशियारीसें करो, गाफिल मत रहो, धर्मकी राहपर खैरात करो, दौलतके बारेमें अ[illegible] अपने मनपसदकी चीजकेलिये ख्वाहेस है,-उसमे कामयाबी होग[illegible] जहां सफर करनेकी उमेद रखते हो-उसमेभी आ[illegible] मिलेगा - [illegible] विलाफ

१३४ म अकका फल, तुमारे दिलमे-दौलत[illegible]कर आगे [illegible] है-[illegible]

[illegible]के बारेमे,-देव-गुरुका खिदमत करो, तुमारा इरादा दुरुस्त [illegible] फिक्र मत करो तुमकों मकानसें ओर जमीनसें फायदा होगा, जिस कामकों शुरु किया है,-उममें गाफिल रहना बहेत्तर नही, मुल्कोंकी सफर करनेका इरादा है, और दिलमे तयारीभी कररखी है -लेकिन ! जल्दी-न-करो जिस चीजका फिक्र लगा है,-वो- -मिलेगी, जो-बात तुमने सुनी है,-वो-काबिल भरुसेके नही, अखीरमे नतीजा अछा आयगा दुश्मनलोग दिकतें पेंश करेगें, मगर उससे डरना नही,

१४२ मे-अकका-फल तुमकों-घरका-और रिस्तेदारोंका फिक्र है, अब अछे दिन आयगें. तुमारे हाथसें जो-चीज गई-वो-फिर मिलेगी.-जो-काम सोचा है,-वो-करसकते हो, उसमें हरकत नही, जो-इरादा किया है-वो-पार पडेगा, मगर दुश्मनोंसे होशियार रहना. आमदनीसें ज्यादा खर्च मत करो. नियत साफ रखो,

धर्महीसे कामयाबी हासिल होगी, धर्मकी राहपर कुछ खर्च करो, तुमारेको वनिस्वत दौलतके इज्जतपर ज्यादा खयाल है, सोंचा हुवा काम चदरोजमे फतेह होगा. इसवख्त मुसाफरीकरना जाईज नहीं.- घरवेठेही मदद मिलजायगी.—

१४३ मे अकका फल, जो-काम-तुमने दिलमे सोचा है,- उसकों हाल मुलतवी रखो, उस कामकेलिये देरी है,-जो-काम करते हो, उसमे सुधारा करो, दुसरोंके भरुसे रहना बहेत्तर नही, दुश्मन लोग-कदम-कदमपर खडे है,-वे-खलल पहुचायगें,-तुमारी तकदीरका सितारा वुलद है. अखीरमे फतेह-होगी, तुमारा-इरादा पाकीज़ा खयालातोंसे-भराहुवा है, मगर एकशख्श उमराहपर चलनेमे हरकत डालता है,-ओर धर्मकी राहपर खर्च करो, जिससें तुमारी मुराद हासिल हो,-जो-काम तुमने शुरु किया है,-उमीद है-कुछ मुदत-पाकर होगा,—

२३१ मे-अकका फल,-चदरोजमे अचानक फायदा मिलेगा,- ओर-इरादा पार पडेगा, जिसवातका फिक्र दिलमे लगा है,-वो- रफा-होनेमे देरी नही, देव गुरु-धर्मकी खिदमत करो. व्यापारसे फायदा मिलेगा, दुश्मन लोग तकलीफ पहुचाते है, मगर तुमारी तकदीर अछी है, उसीसे सब मुराद-बर-आयगी, जो-काम शुरु किया है, उसमे तुमको कोई मददगार मिलेगा. और उमसे तुमारा सोंचाहुवा-काम-सलामत पार पडेगा, धर्मपर कामील एतकात रहो, अभी कोई नया काम मत छेडो, जिस चीजकी आर्जू रखते हो-वो- मिलसकेगी, फिक्र मत करो,—

२३४ मे अकका फल,-तुमकों-अपनी इज्जतका फिक्र होता है. -तुमारा दिल साफ है,-दुश्मन-कदम-कदमपर खडे है,-मगर उनका-न-चलेगा आमदनीमे खर्च कम करो, नयामकान बनाना चाहते हो-वो-काम पार पडेगा, मुल्कोंकी सफर करनेसे फायदा

होगा धर्मकी राहपर कुछ खैरात करो, बदौलत धर्महीके तुमफतेह पाओगे, तुमारा काम पायेदार है,-डिगनेवाला नही, दिलमे जिस चीजकी हवस रखते हो,-वो-मिलेगी, मगर उसमे चदरोजकी देरी है,-जल्दी मतकरो, इतनेदिन पापकर्मके थे,-बडी बडी तकलीफे उठाई अब अच्छेदिन आनेवाले है, धर्मके-पैसे-तुर्त खर्च दिया करो, घरम जमा-न-रखो,-तुमको परदशमें-फायदा होगा,-धन-और-सपत्तिकी बढवारी चाहते हो-वो-होगी, और-आगेको-तुमारे हाथसें धर्मके काम बनेगें. मुद्दतके किये हुवे इरादे पार पडेगें,-बदौलत धर्महीके सुख हुवा है,-और होगा,—

२४१ मे-अकका-फल -अतरायकर्मके उदयसे दिलका इरादा आजतक पार नही पडा मिलताहुवा फायदा चलाजाता है -धर्मके कामकरनेकी तयारी करतेहो-मगर-वख्तपर अतराय आन पडता है.-जो-कामकरनेका इरादा रखते हो,-फिलहाल! मुलतवी रखो, इनदिनोंमे सौच समजकर चलो, तिजारतमे दुसरोंका हिस्सा मत रखो, मुबारकबादी मिलनेपर देरी है,-देव-गुरु-धर्मकी खिदमत करो अशुभकर्म-क्षय-होनेपर-सब काम ठीक होंगे, पच-परमेष्ठिका ध्यान करो, दुनियामे सारवस्तु धर्म हैं,-दुसरोका-काम-मेहनतसे पार पहुचाया-मगर अशुभकर्मके-उदयसें अपने कर्तव्यमे गाफिल रहगये,-बदौलत धर्महीके-तुमारी-नाव-दरिआये-आजमसें पार होगी,

२४२ मे अकका फल,-फिक्र मिटकर आराम चैनके दिन आते है, जिस चीजके तुम ख्वाहेसगार हो-मिलेगी, तुमारा इरादा गेरमुल्ककी सफर करनेका है-मगर हाल मौकुफ रखो, घरबेठे तुमारा काम पुरा होगा, तकदीर अछी है, दौलत और फायदेका सवाल है, -वो-जल्द पार पडेगा,—दुश्मनलोग आफत पेश करना चाहते है, मगर परवाह नही, तुम अपना कार्य किये जाओ जमीन वगेरा दिगर मनमुआसें फायदा होगा, और खुशखबरीके पेगाम आयगें, तीर्थ-

करदेनोंकी इबादत करो. और धर्मकी राहपर खैरात दो, धर्मकेलिये –जो–कार्य करना चाहते है–पार पडेगा, जिस बातका तुमारे दिलमे खौफ है–वो–रखनेकी कोई जरुरत नही. जिसकी मुला-कात चाहते हो–वो–होसकेगी,–और–अपनी दिली–मुराद–बर आयगी.—

३१४ मे–अकका फल, जिस चीजकी आर्जू रखते हो,–वो–मिलेगी. जो–काम करना इख्तियार किया है, उसमे फायदा उठा-ओगे. तुमारी तकदीरका सितारा रोशन है, बुरेदिन–रफा–होगये, अच्छे दिन पेश हुवे है, बेपरवाह बने रहो और देव–गुरु–धर्मपर कामील एतकात रखो, बदौलत धर्महीके तुमको सुख हुवा और होगा, गेरमुल्कोंकी सफरसें फायदा मिलेगा –धर्मका मकान बना-नेका इरादा करते हो–वो–पार पडेगा, तीर्थंकर देवोकी इबादत करो. और धर्मकी राहपर–खर्च–करते रहो. ब–मुआफिक तुमारे दिली इरादेके चदरोजमे उमदा पेंगाम मिलेंगे,—

३२१ मे अकका फल,–तुमारा–दिली–इरादा पुरीतौरसें कामयाब होगा, चंदरोजमे मुबारकबादी मिलेगी, और इज्जत पाओगे, तुमारा दिल अछाकाम करनेका है.–जिस शख्शकी मुलाकातके आर्जूमद हो–वो–पुरी होगी, लेकिन! धर्मकी राहमे कुछ खर्च करते रहो, बदौलत उसीके तुमारा–दिली–इरादा तरक्तताउस होगा, जिस कामकों करनेकी ख्वाहेसरखतेहो, उसकों फिलहाल! बरतर्फ रखकर दुसरी कोशिश करो, बाद एक–मुद्दतके खुशी पैदा होगी, धर्मका कामभी तुमारे हाथसें होगा, तुमारी किसतका सितारा बु-लद है, जमीनसें तुमकों फायदा है,–जिस कामकेलिये कदम आरा स्ता करोगे, फतेह पाओगे.

३२४ मे अकका फल.–तुमकों जिस चीजकी ख्वाहेस है,–वो–मिलजायगी, फिक्र करना बहेतर नही,–जो–कामकररहेहो,–उसी-पर अटल रहो, उसीमे कामयाबी होगी, कोई मददगारभी–आपहुं-

चेगा, जिसकाममें कदम रखा है,-वो-पार पडेगा, दुश्मनलोग-आफत पेंश करेंगे-मगर-कुछ परवाह नही. तुमारे दिलकी मुराद हासिल होगी. तीर्थंकरोंकी इबादत करो, खुशी नियामत होगी. जिस बातका फिक्र पैदा हुवा है. उसका फिक्र करना जरुरत नही. जिस गनीमने आफत पेंश कीई है-वो-नेस्त-नाबुद होगी, तुमारा कुछ बिगाड-न-होगा,-देव-गुरु-और धर्मके काममें दौलत सर्फ करो, सलामती मिलेगी, उमदा पेंगाम मिलनेपर धर्म करना फर्ज है, -धर्मके काममे देरी करना-मुनासिब नही,

३४१ मे-अकका फल -जिसकी मुलाकात करना चाहते हो-वो-सलामतीके शाथ होगी -बुरादिन बतीत हुवे, अछे दिन आने वाले है,-जिस कामको शुरु करना चाहते हो, उसमे कामयाबी होगी,-जो-फिक्र तुमारे दिलमे लगा है-वो-मिटजायगा. चदरोजमें मुबारकबादी मिलेगी. और इज्जत पाओगे, तुमारी किसमत-तेज -है,-दुश्मनलोग आफत डालेगे, मगर उनका जोर-न-चलेगा,-देव-गुरु-धर्मके कामम दौलत सर्फ करो.-खुशीके पेंगाम मिलेगें, -मुराद-बर-आयगी,-और-आराम मिलेगा,-मुल्कोंकी सफर होगी,-दिलपसद चीजके लिये-आर्जू है,-वो-चदरोजेके बाद पुरी होगी,-फिक्र मत करो,—

४१२ मे-अकका-फल -तुमको दौलत-और-औरतके बारेमे फिक्र है,-तुमारी दौलत दुसरोंमें रहगई-और-इज्जतकेलिये अपने पासकी रकम-दुसरोको देना पडती है,-अब तुमारे बुरेदिन रफा होगये, अछेदिन पेंश हुवे है -जो-काम शुरु करना चाहते हो, उसमे फायदा उठाओगे, दुश्मन-लोग-खलल पहुचानेकी कोशिश करेंगे,-मगर तुमारी तकदीरका सितारा रोशन हुवा है, फिक्र मत करो, तुमारा काम पार उतरेगा. धर्मकी राहपर कुछ खर्च करो. पचपरमेष्ठि-महामत्रका ध्यान करो. तुमको जिस चीजकी ख्वाहेस है,-वो-सलामत मिलेगी, तुमारा इरादा धर्मपर साबीतकदम है,-

अखीरमे मुबारकबादी हासिल होगी,-और खुशीके पेंगाम मिलेंगे, दुसरोंके भरुसे रहना बहेत्तर नही,-जिसबातका तुमारे दिलमे खौफ है, उसमे खौफ रखनेकी जरुरत नही, बनिस्बत दौलतके तुमकों इज्जतका ज्यादा खयाल है-वो-बनी रहेगी,—

४१३ मे-अकका-फल,-कुछ अर्सेसे दिलमे एकतरहका-फिक्र -पेदा हुवा है,-जितना फायदा चाहते हो,-उतना होता नही,-जो -काम करना चाहते हो,-वो-मुलतवी रखकर दुसरी कोशिश करो, उसकी फतेहमदीमे हाल कुछ देरी है,-कुछ-अतराय-कर्मभी जोर देरहा है, देव-गुरु-धर्मकी खिदमत करो, तुमारा इरादा-सफरकरनेका है, मगर हाल मोकुफ रखो, अतराय कर्म-क्षयहोनेपर घरबेठेही-काम-पुरा होगा, कोई मददगार मिलेगा, और दिलकी मुराद बर-आयगी, जो-कुछ नुकशान हुवा है,-वो-मिट सकेगा, जिस कामको करनेके उमीदवार हो.-उसमे कामयाबी हासिल होगी,- मगर धर्मकी राहपर कुछ दौलत सर्फ करो,-बदौलत धर्महीके तुमकों फायदा मिला है.-और आइंदे मिलेगा.—

४२३ मे-अकका-फल,-तुमारा इरादा पार पडेगा, दुश्मनलोगोका-जोर-नही चलेगा, बुरे दिन खतम हुवे और आगेकों अच्छे-दिन आते है,-धन-धान्य ओर जमीनसे फायदा मिलेगा,-जिस शख्शकी मुलाकातकेलिये आर्जू रखते हो, वो-सलामत-होगी, मुआफिक तुमारे दिली-इरादेके-चदरोजमे उमदा पेंगाम मिलेंगे,-और मुबारकबादी हासिल होगी,-तुमारी किसमतका सितारा-तेज-है,- जिसकाममे-कदम-आरास्ता-करोगे, फायदा उठाओगे, तीर्थंकरदेवोकी इबादत करो,-जो-काम-चलरहा है, उसीपर पाबद रहो, दिलपसंदकी-चीज-मिलेगी,-तुमारा काम पायेदार है,-हाल-डिगनेवाला नही. तुमारे दिलमे एकतरहका फिक्र-पेश है,-वो-चंदरोजमे दूर होगा, और दिलकी-मुराद-पार उतरेगी, धर्मपर-साबीत कदम-बनेरहो,

४३१ मे-अकका फल,-जिस शख्सकी मुलाकातके लिये-रगाहेश रखते हो,-वो-होगी, और तुमारे दिलकी-मुराद-पार-पडेगी, फिक्र मत करो,-गेरमुल्कका सफर होगा. और उसमें फायदा मिलेगा, तुमारा-दिली-इरादा पुरीतौरसें कामयाब होगा, चदरोजम मुबारकवादी मिलेगी -जो-चीज चलीगई है,-वो-मिलेगी, मगर उसमे कुछ मुद्दत बाकी है, धर्मकी राहपर कुछ-खर्च-करते रहो, बदौलत धर्महीके तुमको आराम और चैन मिला है, और आगेको मिलेगा,-मजकुर अष्टाग-निमित्त-प्रश्नावली-फायदे मद समजकर यहा दाखिलकिई गई है, आजकल-कोई-केवलज्ञानी मौजूद नही, मतिज्ञान और श्रुतज्ञानका-जो-कुछ हिस्सा-बाकी है,-मुताबिक उसीके-यहा-इतना लिखागया है.—

[बयान अष्टाग-निमित्त-प्रश्नावलीका-खतम हुवा -]

[बयान-मत्रशास्त्र]

१ कईतरहके पडित दुनियामे मौजूद है-उनमे व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, अलकार, नाटक, चपू, ज्योतिष, और वैद्यक वगेरा इल्मपढे हुवे अकसर ! ज्यादा देखोगे, मगर धर्मशास्त्रके पढे हुवे-पडित-बहुतकम-मिलेगें,-मत्रविद्या सच है, मगर जमानेहालमे जीवोंकी तकदीर-कम-होनेकी वजह-कम-फल-देती है,-कोई विद्या-विना गुरुगम फल नही देती, मगर मत्रविद्याके लिये-तो-गुरुगमकी ज्यादा जरुरत है,-मत्रविद्यापढनेवाला शख्श-धर्म-पर-कामील एतकाद रहे,-और-विधिके साथ-साफ-जबानसे मत्र पढे अगर अपनी तकदीर अछी है,-तो-मत्र-जरूर फल देगा, दुनियामे जितने अक्षर है, सब ताकातवाले है,-और अक्षरोंके सयोगका नाम मत्र है,-अगधिष्ठानी देवते स्वर्गमे बेठे हुवेभी अपने मानस-जानसकते है.-फला शख्श-मत्रपढने लगा है, और हमकों

याद करता हूँ,-पेस्तरके जमानेमे-जन-मनुष्योंकी तकदीर आलाद-र्जेकी-थी, देवते प्रत्यक्ष आतेथे, जमाने हालमे वैसे खुशनसीन रहे नही, अधिष्ठायक देव-अदृष्ट रहकर जवाब देयगें-मगर प्रत्यक्ष नही आयगें.—

२ कई मंत्र ऐसे हैं-जिनके पढनेसे-आत्माका निस्तार हो, पंचपरमेष्ठि-महामंत्रका-पाठ-करनेसे-अशुभ-अनिकाचित-कर्म-टुटकर पुन्यानुबंधि-पुन्य-हासिल होगा, वर्द्धमानविद्या, अपराजिता महाविद्या, और सूरिमंत्र वगेरा जैनशास्त्रोंमे लिखे हैं,-जैनमुनिजनोंको-जरूर पढते रहना चाहिये,-जिससे अशुभ-अनिकाचित-कर्मोंकी निर्जरा होगी.-और पुन्यानुबंधि-पुन्य-हासिल होगा, जमानेहालमे मंत्र-यंत्र-तंत्र,-जडी-बूटी-और फल फूलोंकी ताकात -कम-होती जाती है,-जीवोंकी तकदीर पेस्तरके जैसी नही रही, इस हालतमे-अगर-मंत्र-कम-फल-देवे-तो-कोई ताज्जुबकी बात नहीं,-चिंतामणि-रत्न-जैसे-रत्न-रहेनही, पारसमणि-और-चित्रावेलभी-जमानेहालमे मिलना दुसवार है,-मुताबिक अपनी-तकदीरके -जो-चीज मौजूद है,-उसीमे-शब्र-करना चाहिये,-मुक्तिके लिये पंचपरमेष्ठिमंत्र पढना-तो-सफेदमालासे पढना अछा है,-सूतकी चांदीकी और मोतीकी-ये-सफेदरंगकी माला कही जाती है,-सोनेकी और कहरवेकी माला पीलेरंगमे शुमार किईजाती है,-रक्तचंदन और मुंगेकी माला लालरंगमे शुमार किई गई है,—

३ जिस मकानमे बैठकर-मंत्र-पढना हो, पाक और साफ होना चाहिये, दिवार रंगरोशन किई हुई-उत्तम चांदनी, और-फुलमालावगेरासे-सिंगाराहुवा होना,-मकान-चाहे भूमितलका हो,-या-छतपर हो,-कोई हर्ज नही, मगर पाक-साफ-एकांत होना जरुरी है,-अतिशययुक्त तीर्थभूमि-ज्यादा-पसंद किईगई है, मंत्रपढनेवालोंको-एक शख्श-अपनेपास बतौर उत्तरसाधकके रखना चाहिये,-याते-जिस चीजकी दरकार हो लाकर देवे, जमानेहालमे अगर जी-

अग्निज्वालासमाक्रांत–मनोमलविशोधकं.
देदीप्यमान हृत्पद्मे,–तत्पद नौमि निर्मल. २
अर्हमित्यक्षर ब्रह्मवाचक परमेष्ठिनः—
सिद्धचक्रस सद्बीज.–सर्वतः प्रणिदध्महे, ३
ॐनमोर्हद्भ्य ईशेभ्यः–ॐसिद्धेभ्यो नमोनमः
ॐनमः सर्वसूरिभ्यः–उपाध्यायेभ्य ॐनमः ४
ॐनमः सर्वसाधुभ्य'– ॐज्ञानेभ्यो नमोनमः
ॐ नमस्तत्वदृष्टिभ्यश्चारित्रेभ्यस्तु–ॐनमः ५
श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेतदर्हदाद्यष्टक शुभ,
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्त,–पृथग्बीजसमन्वित. ६
आद्य पद शिखा रक्षेत्,–पर रक्षतु मस्तक.
तृतीय रक्षेन्नेत्रे द्वे,–तुर्य रक्षेच नासिका. ७
पचम तु मुख रक्षेत्,–षष्ठ रक्षेच घटिका,
नाभ्यत सप्तम रक्षेद्रक्षेत् पादातमष्टम ८
पूर्वप्रणवत. सातः सरेफो ह्यब्धिपचखान्,
सप्ताष्टदशसूर्याकान्–श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक्, ९
पूज्यनामाक्षरा आद्या –पचातोज्ञानदर्शनः
चारित्रेभ्यो नमोमध्ये,–ह्रींसातः समलकृतः, १०
ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः–(मूलमत्रः)
जबूवृक्षधरोद्वीप'–क्षारोदधिसमावृतः,
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलकृतः ११
तन्मध्यसगतो मेरुः, कूटलक्षैरलकृत',
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारामडलमडितः, १२
तस्योपरि सकारात,–बीजमध्यास्य सर्वग,–
नमामि बिंबमार्हत्य,–ललाटस्थ निरजन, १३

अक्षयं निर्मल शांत,-बहुल जाड्यतोज्झितं,
निरीह निरहंकार,-सार सारतर घन, १४
अनुद्धतं शुभं स्फीत-सात्विकं-राजसं-मतं,
तामसं चिरसबुद्ध,-तैजसं शर्वरीसम, १५
साकार च निराकार,-सरसं विरसं पर,
परापर परातीतं,-परपरपरापर, १६
एकवर्ण द्विवर्ण च,-त्रिवर्ण तुर्यवर्णक,
पचवर्ण महावर्ण,-सपर च परापर, १७
सकल निष्कल तुष्टं,-निवृत भ्रांतिवर्जितं,
निरजन निराकार, निर्लेपं वीतसश्रयं, १८
ईश्वर ब्रह्मसबुद्ध,-बुद्ध सिद्ध मतं-गुरु.
ज्योतीरूप महादेव, लोकालोकप्रकाशक. १९
अर्हदाख्यस्तु वर्णातः सरेफो बिंदुमडितः
तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नादमालितः २०
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे,-ऋषभाद्या जिनोत्तमाः
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र सगताः २१
नादश्चद्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः
कलारुणसमासातः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः २२
शिरःसलीन ईकारो, विलीनो वर्णतः स्मृतः
वर्णानुसारसलीन, तीर्थकृन्मडल स्तुमः २३
चद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ,
बिंदुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ. २४
पद्मप्रभवासुपूज्यौ,-कलापदमधिष्ठितौ,
शिरईस्थितिसलीनौ, पार्श्वमल्लिजिनोत्तमौ. २५
शेषास्तीर्थकृतः सर्वे,-हरस्थाने-नियोजिताः
मायाबीजाक्षर प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हतां, २६

गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः
सर्वदा सर्वकालेषु,-ते भवतु जिनोत्तमाः २७
देवदेवस्य यच्चक्र,-तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग,-मा-मा-हिनस्तु डाकिनी. २८
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिनस्तु राकिनी. २९
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मां-हिनस्तु लाकिनी, ३०
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिनस्तु काकिनी, ३१
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिनस्तु शाकिनी, ३२
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिनस्तु हाकिनी, ३३
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिनस्तु याकिनी, ३४
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिंसतु पन्नगाः ३५
देवदेवस्य यच्चक्र,-तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग-मा-मा-हिंसतु हस्तिन. ३६
देवदेवस्य यच्चक्र,-तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिंसतु राक्षसाः ३७
देवदेवस्य यच्चक्र-तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मां-हिंसतु वन्हयः ३८
देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मां-हिंसतु सिंहकाः ३९

देवदेवस्य यचक्रं-तस्य-चक्रस्य-या-प्रभा.
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिंसतु दुर्जनाः ४०
देवदेवस्य यचक्र, तस्य चक्रस्य-या-प्रभा,
तया छादितसर्वांग, मा-मा-हिंसतु भूमिपाः ४१
श्रीगौतमस्य-या-मुद्रा, तस्या-या-भुवि लब्धयः
ताभिरभ्युद्यतज्योतिरर्हः-सर्वनिधीश्वरः ४२
पातालवासिनो देवाः-देवा-भूपीठवासिनः
स्वर्वासिनोपि-ये-देवाः-सर्वे रक्षंतु-मामितः, ४३
येवधिलब्धयो-ये-तु-परमावधिलब्धयः
ते सर्वे मुनयो देवा-मा-संरक्षंतु सर्वदा, ४४
दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा.
ते सर्वेप्युपशाम्यतु,-देवदेवप्रभावतः ४५
ॐ ह्रीं श्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी-,गौरी चंडी सरस्वती,
जयाम्रा विजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा, ४६
कामांगा कामबाणा च,-सानंदानंदमालिनी.
माया मायाविनी रौद्री,-कला-काली-कलिप्रिया, ४७
एताः सर्वा महादेव्यो,-वर्त्तंते-या-जगत्रये.
मह्य सर्वा प्रयच्छतु,-कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं, ४८
दिव्यो गोप्यः स दुःप्राप्यः-श्रीऋषिमंडलस्तवः
भाषितस्तीर्थनाथेन,-जगत्राणकृतेनघः ४९
रणे राजकुले वन्हौ,-जले दुर्गे गजे हरौ,
श्मशाने विपिने घोरे,-स्मृतो रक्षतु मानवं, ५०
राज्यभ्रष्टा निज राज्य,-पदभ्रष्टा निज पदं,
लक्ष्मीभ्रष्टा निजा लक्ष्मीं,-प्राप्नुवति-न-संशयः ५१
भार्यार्थी लभते भार्या, पुत्रार्थी लभते सुतं,
वित्तार्थी लभते वित्त, नरः स्मरणमात्रतः, ५२

स्वर्णे रूप्ये पट्टे कास्ये,-लिखित्वा यस्तु पूज्यते,
तस्यैवाष्टमहासिद्धि, गृहे वसति शाश्वती, ५३
भूर्जपत्रे लिखित्वेदं,-गलके मूर्भि-वा-भुजे,
धारित सर्वदा दिव्य-सर्वभीतिविनाशक, ५४
भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः,-पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः.
वातपित्तकफोद्रेके, मुच्यते नात्र सशयः ५५
भूर्भुव'स्वस्त्रयीपीठ-वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः
तै' स्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, यैत्फल तत्फल श्रुतौ, ५६
एतद्गोप्य महास्तोत्र,-न देय-यस्य कस्यचित्
मिथ्यात्ववासिने दत्ते,-बालहत्या पदेपदे. ५७
आचाम्लादितप' कृत्वा,-पूजयित्वा जिनावलीं,
अष्टसाहस्त्रिको जापः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे. ५८
शतमष्टोत्तर प्रात, यें पठति दिनेदिने,
तेषा-न-व्याधयो देहे,-प्रभवति न चापदः ५९
अष्टमासावधि यावत्,-प्रात. प्रातस्तु यः पठेत्
स्तोत्रमेतन्महास्तेजो,-जिनबिंब स-पश्यति. ६०
दृष्टे सत्यर्हतो बिंबे,-भवेत्सप्तमके ध्रुव
पदमाप्नोति शुद्धात्मा,-परमानदनदितः ६१
विश्ववद्यो भवेत् ध्याता,-कल्याणानि च सोश्नुते.
गत्वा स्थान पर सोपि,-भूयस्तु-न-निवर्तते, ६२
इद स्तोत्र महास्तोत्र-स्तुतीनामुत्तम पर,
पठनात्स्मरणाज्जापात्-लभ्यते पदमुत्तम. ६३

[ऋषिमडलस्तोत्रका-मूलपाठ-खतम हुवा,-]

ऋषिमडल-कल्पकों देखकर यह-स्तोत्र-शुद्ध करके लिखा है-क्षेपक श्लोकछोडदिये गये हैं,-असली श्लोक-जो-थे,-वेही इसमें-दर्ज है,—

७ [ऋषिमंडलयंत्र बनानेकी तरकीब,]

यंत्रके बीचलेभागमे पाचअंगुल लंबा चौडा गोलाकार चक्र बनाना, और उसमे ह्रींकार दोहरी लकीरका लिखना, उस दोहरी लकीरमें आध इंच जितनी जगह रखना. जिसमे जिनेंद्रभगवान्के नाम लिख सके, ह्रींकारके उपर अर्द्ध चद्रमाके आकार जो सफेदरंगकी कला होती है, उसमें सफेदवर्णवाले तीर्थंकर चद्रप्रभपुष्पदंतेभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना, फिर उस कलाके उपर जो शामरंगका बिंदु होता है, उसमे शामवर्णवाले मुनिसुव्रत नेमिनाथेभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना, आगे रेफके नीचे और ह्रींकारके उपर मस्तककी जो लालरगकी लकीर होती है, उसमे लालवर्णवाले पद्मप्रभवासुपूज्येभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना, ह्रींकारका जो दीर्घ इकार हरेरगका होता है, उसमे हरेवर्णवाले मल्लिपार्श्वनाथेभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना. ह्रींकारका जो बाकीरहा हुवा हकार रकार पीलेरगका होता है, उसमें बाकी रहेहुवे स्वर्णवर्णवाले सोलह तीर्थंकर ऋषभ, अजित, संभव, अभिनदन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयास, विमल, अनंत, धर्म, शाति, कुंथु, अर, नमि वर्द्धमानेभ्यो नमः ऐसा लिखना, ह्रींकारके बीचमे जो खुलीजगह रहती है, उसमे ॐ ह्रीं अर्हं नमः ऐसे बीज अक्षर लिखना,–

फिर ह्रींकारकी चारोतर्फ आठ कोठेवाला गोलआकार मंडल बनाना, और ह्रींकारके बिंदुके उपरसें पहलेकोठेकी शुरुआत करना, पहले कोठेमें अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह्म्ल्व्र्यूं, ऐसा लिखना, आगे दुसरे कोठेमे क ख ग घ ङ भ्म्ल्व्र्यूं, ऐसा लिखना, तिसरे कोठेमे च छ ज झ ञ म्म्ल्व्र्यूं, लिखना, चौथे कोठेमें ट ठ ड ढ ण, र्म्ल्व्र्यूं लिखना, पाचमे कोठेमें त थ द ध न, घ्म्ल्व्र्यूं, लिखना, छठे कोठेमें प फ ब

भ म, झ्म्ल्वर्यूं, लिखना, सातमे कोठेमे य र ल व, सम्ल्वर्यूं, लिखना, और आठमे कोठेमे श ष स ह, स्म्ल्वर्यूं, ऐसा लिखना

फिर दुसरे मडलकी चारो तर्फ आठ कोठेका गोलआवा तिसरा मडल बनाना, उसकी शुरुआन अआ कोठेके उपर करना, और सब कोठे दाहनी तर्फसे लिखते जाना, पहले कोठे ॐ ह्रॉं अर्हद्भ्यो नम. ऐसा लिखना, दुसरे कोठेमे ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नम' ऐसा लिखना, तिसरे कोठेम ॐ ह्रुं आचार्यभ्यो नम लिखना, चौथे कोठेमे ॐ ह्रूं उपाध्यायेभ्यो नमः लिखना, पाचमे कोठेमे ॐ ह्रैं सर्वसाधुभ्यो नमः लिखना, छठे कोठेमे ॐ ह्रैं सम्यग्दर्शनेभ्यो नम लिखना, सातमे कोठेमे ॐ ह्रौं सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः लिखना, और आठमे कोठेमे ॐ ह्रः सम्यक् चारित्रेभ्यो नमः ऐसा लिखना.—

आगे इसी तिसरे मडलकी चारोंतर्फ चौथा सोलह कोठेका मडल बनाना, और उसकी शुरुआत उपरमुजब अनुक्रमसें करना पहले कोठेमे ॐ ह्रीँ भुवनेंद्रेभ्यो नमः ऐसा लिखना, दुसरे कोठेमे ॐ ह्रीँ व्यतरेंद्रेभ्यो नमः लिखना, तीसरे कोठेमे ॐ ह्रीँ ज्योतिष्केंद्रेभ्यो नमः लिखना, चौथे कोठेमे ॐ ह्रीँ कल्पेंद्रेभ्यो नम. लिखना, पाचमे कोठेमे ॐ ह्रीँ श्रुतावधिभ्यो नमः लिखना, छठे कोठेमे ॐ ह्रीँ देशावधिभ्यो नमः लिखना, सातमे कोठेम ॐ ह्रीँ परमावधिभ्यो नम. लिखना, आठमे कोठेमे ॐ ह्रीँ सर्वावधिभ्यो नमः लिखना, नवमे कोठेमे ॐ ह्रीँ बुद्धिऋद्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, दशमे कोठेम ॐ ह्रीँ सर्वौपधिप्रासेभ्यो नमः लिखना, ग्यारहमें कोठेम ॐ ह्रीँ अनंतवललब्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, बारहमे कोठेमे ॐ ह्रीँ तपर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, तेरहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ रसर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, चौदहमे कोठेमे ॐ ह्रीँ वैक्रेयर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, पनरहमे कोठेमे ॐ ह्रीँ क्षेत्रर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना,

ौर सोलहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ अक्षीणमहानसर्द्धिप्रासेभ्यो
नमः ऐसा लिखना.–

फिर इसी चौथे मंडलकी चारोतर्फ चौइस कोठेका गोलआकार
मंडल बनाना, और उसकी शुरुआत उपरमुजब अनुक्रमसें करना,
पहले कोठेमे ॐ ह्रीँ ह्रीँदेवीभ्यो नमः ऐसा लिखना, दुसरे
कोठेमे ॐ ह्रीँ श्रीदेवीभ्यो नमः लिखना, तिसरे कोठेमें ॐ ह्रीँ
धृतिभ्यो नमः लिखना, चौथे कोठेमे ॐ ह्रीँ लक्ष्मीभ्यो नमः
लिखना, पाचमें कोठेमें ॐ ह्रीँ गौरीभ्यो नमः लिखना, छठे
कोठेमे ॐ ह्रीँ चडीभ्यो नमः लिखना, सातमे कोठेमे ॐ ह्रीँ
सरस्वतीभ्यो नमः लिखना, आठमे कोठेमे ॐ ह्रीँ जयाभ्यो
नमः लिखना, नवमे कोठेमे ॐ ह्रीँ अंबिकाभ्यो नमः लिखना,
दशमे कोठेमें ॐ ह्रीँ विजयाभ्यो नमः लिखना, ग्यारहमे कोठेमे
ॐ ह्रीँ क्लिन्नाभ्यो नमः लिखना, बारहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ
अजिताभ्यो नमः लिखना, तेरहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ नित्याभ्यो
नमः लिखना, चौदहमे कोठेमे ॐ ह्रीँ मदद्रवाभ्यो नमः
लिखना, पनरहमे कोठेमे ॐ ह्रीँ कामांगाभ्यो नमः लिखना,
सोलहमे कोठेमे ॐ ह्रीँ कामबाणाभ्यो नमः लिखना, सतराहमे
कोठेमें ॐ ह्रीँ सानंदाभ्यो नमः लिखना, अठराहमे कोठेमें
ॐ ह्रीँ आनदमालिनीभ्यो नमः लिखना, उन्नीसमे कोठेमें
ॐ ह्रीँ मायाभ्यो नमः लिखना, वीसमे कोठेमें ॐ ह्रीँ माया-
विनीभ्यो नमः लिखना, एकीसमे कोठेमें ॐ ह्रीँ रौद्रीभ्यो
नमः लिखना, बाईसमे कोठेमें ॐ ह्रीँ कलाभ्यो नमः लिखना,
तेईसमे कोठेमे ॐ ह्रीँ कालीभ्यो नमः लिखना, और चौईसमे
कोठेमें ॐ ह्रीँ कलिप्रियाभ्यो नमः लिखना, इसतरह पाच
मडलका ऋषिमंडलयत्र बनाना, और यत्रकी दाहनीतर्फ ॐ, उप-
रकी तर्फ ह्रीँ बायीतर्फ स्विं और यंत्रकी नीचेकी तर्फ क्षः
अक्षर लिखना.–

फिर इसयत्रकी चारोतर्फ गोलआकार (१०८) ह्रींकार लिख-कर यत्रकों वेष्टित करना, मगर ह्रींकार छोटे छोटे इसतरकीनसें लिखना. जो बराबर एकसो आठ ह्रींकार यत्रकी चारोतर्फ वेष्टित होजाय, जिससे ऋषिमडल यत्र पूर्ण हो, कितनेक लोग इससें ज्यादामडल बनाते है, और उसमे देव, देवी, इद्र, दशदिग्पाल, पनरा, वीशायत्र वगेरा डालते हैं, मगर वो मत्र गलत हैं, असली रिषिमडल यत्र जितना उपर लिखा है, उतनाही है, इस यत्रकी बराबरी करनेवाला दुसरा कोई यत्र नही, कल्पवृक्ष या चितामणिरत्नकी तरह मनके इरादे पूर्ण करनेवाला बडा प्रभाविक हैं, धर्मपर कामीलएतकात शख्श अगर इसकों विधिसहित आराधन करे, और इसके बीजमं-त्रका जाप करे अपनी मुराद हासिल करेगा इसमें कोइ शक नही.-

इस ऋषिमडलयत्रके पाचमे मडलके छठे कोठेमे जो चडी देवीका नाम है, नवमे कोठेमे अंबिका देवी, एकीसमे कोठेम रौद्री देवी, और तेईसमे कोठेमें जो कालीदेवीका नामलिखा है. वे सब देवीया जैनमजहबपर कामील एतकातवाली और सम्यक्त्ववासिनी जानना, उनको शराब मास वगेरा कोई अपवित्र चीज नही चढती. और वो अपवित्र चीजकी चाहनाभी नही रखती, इसलिये उनको मिथ्यात्ववासिनी नही समजना,-

[ऋषिमडलयत्र बनानेकी तरकीब खतम हुई]

[बयान ऋषिमडलस्तोत्र-और-मत्रके बारेमें.-]

८ ऋषिमडल-स्तोत्र-तीर्थंकरोका फरमाया हुवा है, तीर्थंकरदेव -अर्थरूप-द्वादशाग-वाणी बयान करते है, बाद गणधर महाराज उसको पाठरूप बनाते है,-अगर कोई सस्कृत-इल्म-पढा हुवा-साफ जबान बोलनेवाला ऋषिमडल-स्तोत्र-गुरुसें रुबरुमिलकर सिखे, और धर्मपर कामीलएतकात रहे. कर्मपर भरुसा रखे, बेपरवाह बना रहे, मास-शराब-लहसन-प्याज-वगेरा जमीकद-न-खावे. और परस्त्री

सेवनसे परहेजकरे. पाक और साफ मकानमें बेठकर हरहमेश सवेर-वख्त-धूप दीपके शाथ-सिद्धचक्रजीके सामने-या-ऋषिमडल-यंत्रके सामने पढे, इसतरह आठमहिनेतक पढनेसें उसको जिनेंद्र देवकी मूर्त्ति-स्वप्नमें दिखाइ देगी. यह-ऋपिमंडलस्तोत्र-अशुभ-अनिकाचित-कर्मको क्षय करनेवाला-और-पुन्यानुबंधि-पुन्य हासिल करानेवाला-मानींद ! चिंतामणिरत्नके-है,—

९ ऋपिमडल-स्तोत्रका-मूलमत्र (१०८) दफे कोई शख्श हमेशा पढता रहे-तो-खान-पान और इज्जतसें आरामतलब रहे, मोक्षकेलिये-सफेद्-मालासें पढे. दौलतकेलिये-पीलेरगकी मालासे पढे.-अगर कोई शख्श-इस मूलमंत्रकी-आराधना करना चाहे-तो-इस मत्रकी हरहमेश दश-दश-माला आठरोजतक पढे,-(८०००) आठहजार जाप होगा, आठरोजतक-जिन मूर्त्तिकी अष्ट द्रव्यसे पूजा करे. और आचाम्लतप करे.-अगर आचाम्ल-न-हो--तो-एकाशना व्रतकरे. (यानी) दिनमे एकदफे खाना खावे. रोटी-दाल-दूध-चावल-घी-सक्करवगेरा पाक और साफ चीजे इस्ति-मालकरे, दिलकों कायुमे रखे, देव-गुरु-धर्मपर कामील एतकात रहे-तो-दिलकी मुराद हासिल हो १०-मत्र पढते वस्त्र-मकान-साफ होना चाहिये.-धूप-दीपके शाथ-तीर्थंकरकी तस्वीरके सामने-या-सिद्धचक्रजीके सामने-या-ऋपिमडलयत्रके सामने पढे, आठ-रोजमे जब आठहजार जाप पुरा होजाय-या-आगेलिखाहुवा पाठ (२१) दफे पढलेवे.

आज्ञाहीन क्रियाहीन-मत्रहीन च यत्कृतं,
तत्सर्वं कृपया देव !-क्षमस्व परमेश्वर !-१

मंत्र पढनेमें-किसी तरहकी-बेअदबी हुई हो. उसकी माफीके-लिये मजकुर पाठ है,-इसतरह साधन करनेसे दिलका इरादा पूर्ण होगा.-और-किसीतरहकी-आफत पेश हुई-हो-वोभी रफा होगी.-

[बयान-ऋपिमडलके बारेमें खतम हुवा -]

११-[बयान-अपराजिता-महाविद्या,]

तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात्-एष योगः फलतु.

सद्गुरु-प्रसादात्-एष योगः फलतु-एसा एक दफे

बोलकर आगे लिखीहुइ महाविद्या-पढे,-

ॐ नमो-चउविसाए तीथ्थयराण, ॐ नमो तीथ्थम्म, ॐ नमो -सुयदेवयाए, ॐ नमो-सुयकेवलिण, ॐ नमो-सबसाहूण, ॐ नमोसिद्वाण ॐ नमो-अरहओ, भगवओ,-सिझउ-मे-भगवइ महइ महाविजा, वीरे-महावीरे-जयवीरे-सेणवीरे-सेणवीरे-वद्धमाणवीरे -जयते-अपराजिये स्वाहा,--

(विधि.) उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रके रौज-या-दिवालीके रौज उपवास करके तीर्थंकर महावीर स्वामीकी मूर्त्ति-या-तस्वीरके सामने धूप-दीपके साथ दशमाला पढे, महाविद्या सिद्ध होगी. फिर जब कभी-सभामे व्याख्यान देनेका काम पडे.-धर्मचर्चा वगेराका सबब हो-या-दुसरा कोई अपनी तरक्कीका काम हो-तो- (२१) दफे पढनेसे-जय-हो, और धर्मकी फतेह हो,-मजकुर महाविद्या निहायत उमदा है,-इस महाविद्याकी पढनेवाला शरश-मास-शराब-लहसन-प्याज-वगेरा जमीकद-न-खावे, और परस्त्री-सेवनसे परहेज रखे,-जब-फल देगी.-अतिशय-युक्त-तीर्थभूमिमें अपराजिता महाविद्या पढनेसे ज्यादा फल होगा,—

१२-[उपसर्गहर-स्तोत्रके-बारेमे बयान -]

(तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात्-एष योगः फलतु-भद्रबाहुस्वामि प्रसादात्-एष योग. फलतु-एसा एकदफे बोलकर उपसर्गहर स्तोत्र -पढे,-)

अगर किसी शख्शको-कोई-खौफ-पैदा हुवा हो,-या-कोई-आफत पेश हुई हो-तो-अपने घरमे-पाक और साफ जगहपर एक -बाटकी-चौकी पूर्व-या-उत्तर दिशामे रखकर उसपर तीर्थंकर-

पार्श्वनाथजीकी तस्वीर-या-सिद्धचक्रयंत्र जायेनशीन करे, और उसके सामने-बनात-या-कंमलका सवाहाथ-लंबा-चौडा-पीला-आसन बीछाकर साफ कपडे पहनकर बेठे, धूप दीपके शाथ-उपसर्गहर-स्तौत्र सताइस दफे पढे,-मजकुर-स्तोत्र-पंच-प्रतिक्रमणकी किताबमे छपगया है, इसतरह हरहमेश उपसर्गहरस्तोत्र सताईस दफे-सताईस रौजतक पढनेसें-उसशख्शका-खौफ-रफा होगा, और आईहुई आफत मिटेगी, तीर्थंकर-गणधरका नामलेना बहुतही-अछा है,-उपसर्गहर-स्तोत्र जैनाचार्य-भद्रबाहु स्वामीका बनाया हुवा होनेसें उनका नामभी लेना फर्ज है,-इसस्तोत्रकों-पढनेवाला शख्श-मांस, शराब, और लहसन-प्याज वगेरा जमीकंदकी चीजे-न-खावे, और परस्त्रीसें परहेज करे,-तो-फल देगा,—

१३-[भक्तामरस्तोत्रके बारेमे बयान,]

(तीर्थंकर-गणधरप्रसादात् एष योगः फलतु,-मानतुंगसूरिप्रसादात् एष योगः फलतु-एसा एकदफे बोलकर आगेलिखा हुवा काव्य-पढे,-)

[काव्य,-]

आपादकंठमुरुशृखलवेष्टितांगाः
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।
त्वं नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति,—

अगर किसीकों किसीतरहका खौफ पैदा हुवा हो,-या-तकलीफ पेंश हुई हो,-तो-अपने घरमे साफ जगहपर लकडेकी बनीहुई चौकी-पूर्व-या-उत्तरदिशामें रखकर-तीर्थंकर-ऋषभदेव-महाराजकी-तस्वीर-या-सिद्धचक्रजीका यंत्र उसपर जायेनशीन करे, और उसके सामने बनात-या-कंमलका सवाहाथ-लंबा-चोडा-पीला आसन बिछाकर साफ कपडे पहनकर बेठे, फिर उपर लिखा-

हुवा काव्य (१०८) दफे-धूप-दीपके शाथ पढे, इसतरह सात रौज -पढनेस-उसशरशका खौफ-और तकलीफ रफा हो,-हरेक मनके पहले तीर्थंकर-गणधरका-नाम-लेना जरुरी है,-और भक्तामर-स्तोत्र-जैनाचार्य-मानतुंगसूरिका बनाया हुवा होनेसें-उनका-नाम लेनाभी अछा है, मत्र-या-काव्य पढनेवाला शख्श-मास, शराब, और-लहसन-प्याज-वगेरा जमीकंदकी चीजें-न-खावे, और परस्त्रीसेवनसें परहेज करे, यह-एक-जरुरीबात है.—

१४ (तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात एष योगः फलतु,-सद्गुरु प्रसादात् एष योगः फलतु,-एसा एकदफे बोलकर आगे लिखा हुवा पाठ पढे,)

"ॐ-नमो-भगवत्केवलिण-स्वाहा.-"

यह-भविष्यज्ञान-बतलानेवाले-बीजअक्षर है,-इन बीजअक्षरोंकों पढनेवाला शख्श-मास-,-शराब,-लहसन-प्याज-वगेरा जमींकंदकी चीजे-न-खावे, और परस्त्री-सेवनसें परहेज करे, अपने गांव-या-शहरके नजदीक कोई प्रभाविक-जैनतीर्थ हो, वहा-जाकर एक मकानमे-लकडेकी बनीहुई एक हाथ लंबी चोडी चौकी पूर्व-या-उत्तर दिशामे रखे-और उसपर-रुमाल बिछाकर-सिद्धचक्र-जीका-यत्र-जायेनशीन करे, और सवाहाथ लंबा-चोडा-बनातका -या-कंबलका पीला आसन बिछावे, और फिर धूप-दीपके शाथ हरहमेश-दिनमे (१४०) माला गिने, एक-मालाके मणके (१०८) होते है,-एकसो चालीश मालाकी गिनतीसे चौदह हजार हुवे ऐसा शुमार करे. नवदिनमे एकसो छत्तीस हजार पुरा-पढे,-खान-पानमे रोटी, दाल, दूध, चावल, घी, सकर, वगेरा साफ चीजें खावे, बीज अक्षरोंका पाठ करते वरत किसीसें बोले नही, दिलकों काबुमे रखे, और बीजअक्षर लालरंगके चिंतन करे, दशमे रौज रातके वरत-दशमाला गिनकर-चटाई-या-शतरंजपर सोजाय, ख्वाबमे अपनी रौजाना-तरक्कीका हाल मालुम होगा शास्त्र

फरमानसे लिखा गया है. मनकल्पित नही लिखा, आगे अपनी-करनीके मुताबिक फल होगा. पेस्तरके लोग-उपवास-या-आचाम्ल तपकरके बीज अक्षरोंका जापकरते थे, आजकल उपर लिखेमुजब एकाशना करके पाठ करे तोभी बहेत्तर है,—

१५ [शक्रस्तवकल्पके बीजअक्षरोंका बयान,]

(तीर्थंकरगणधरप्रसादात् एष योगः फलतु, सद्गुरुप्रसादात् -एष योगः फलतु-एसा एकदफे बोलकर आगे लिखाहुवा पाठ पढे,—)

"ॐ नमो अरिहंताणं-अपडिहय-वरनाण-दंसण-
धराण-वियट्ट-छउमाण-ऐँ-स्वाहा.-"

अपने मकानमें साफ जमीनपर लकडेकी हाथभर लंबी-चौडी -चौंकी रखकर उसपर सफेद कपडा बिछावे, और सिद्धचक्रजीका यंत्र-जायेनशीन करे, और-सवाहाथ लंबा-चौडा-बनात-या-कंबलका पीले रंगका आसन बिछावे. और साफ कपडे पहनकर धूपदीपके शाथ उपर लिखे हुवे-बीज अक्षरोंका पाठ सात रौजमे साढे-बारां हजार पुरा करे—खानपानमें-रोटी, दाल, दूध-चावल-और सकर वगेरासें- एकदफे खाना खावे.-और-अचितजल पीवे, फिर आठमे रौज रातके वख्त-पूर्व-दखन, पश्चिम-उत्तर दिशामें मुह करके चार माला गिने, और फिर-चटाई-या शतरजपर सोजावे, ख्वाबमें अपनी-रौजाना-तरकीका भविष्य हाल मालुम होगा, इन-बीज अक्षरोंका पढनेवाला-शरत्श-मांस, शराब, और लहसन-प्याज वगेरा जमीकंद-न-खावे. और परस्त्री-सेवनसें-परहेज करे-जब -फल-देगा. शास्त्र फरमान देखकर लिखा गया है, आगे अपनी करनीका-फल-जैसा होगा,-वैसा मिलेगा,—

१६ (तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात् एष योगः फलतु. सद्गुरु-प्रसादात्-एष योगः-फलतु. एसा एकदफे बोलकर आगे लिखे हुवे बीज अक्षर पढे,)

"ॐ ह्रीँ-नमो-पयाणुसारीण,-ॐ ह्रीँ-क्रौँ-क्रौँ-झ्राँ झ्राँ-स्वाहा,"

एक मकानमे साफ जमीनपर-पूर्व-या-उत्तरदिशामें-लकडेकी एक हाथ भर-लंबी चौडी-चौकी-रखे और उसपर सफेद कपडा बिछाकर सिद्धचक्रजीका यंत्र जायेनशीन करे, फिर-उसके सामने -बनात-या-कमलका पीला आसन सवाहाथका-बिछावे, और साफ कपडे पहनकर धूप-दीपके साथ उपर लिखे हुवे-बीज अक्षरोंका पाठ सातरोजमे-साढबारा हजार पुरा करे सातरोजतक एकाशना-व्रत-करके खानपानमे उपर लिखे मुजब-रोटी, दाल, दूध, चावल, घी, वगेरा साफ चीजे इस्तिमालकर और-अचितजल-(यानी)-गर्मकिया हुवा-पानी-ठंडा करके पीवे. फिर आठमे रोज रात्रीके वख्त-पूर्व, दखन, पश्चिम, उत्तर-ये-चार दिशामें मुहकरके चार माला गिने. और फिर चटाई-या-शतरंजपर-सोजावे, स्वप्न अपनी -रोजाना-तरक्कीका भविष्य हाल मालुम होगा.-इन बीज-अक्षरोंका पढनेवाला शख्श-मांस, शराब, और-लहसन-प्याज वगेरा जमीकंदचीजें-न-खावे, और परस्त्री-सेवनसे परहेज करे, जब फल देगा, शास्त्रफरमान देखकर लिखा है, आगे-अपनी करनीका फल-जैसा होगा,-वैसा मिलेगा,—

१७ (तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात् एष योगः फलतु. सद्गुरुप्रसादात् एष योग'-फलतु-एसा एकदफे बोलकर आगे लिखा हुवा पाठ पढे.-)

"ॐ ह्रीँ-परमोहि-जिणाण-ॐ-ह्रीँ क्रौँ-क्रौँ-झ्राँ-झ्राँ स्वाहा,-"

इसपाठको (१०८) दफे पढतेजाना और मोर पीछीसें या-रजोहरणसें झाडते रहना. इससें आधाशीशी वगेरा मस्तकका दर्द मिट सकता है,—

१८ (सर्पके जहेर उतारनेकी पाठसिद्ध जांगुली नाम-महाविद्या.)

ॐ-इलिमिचे, तिलिमिचे, इलितिलिमिचे, दुब्बे-दुब्बालिए,

दुग्गे-दुग्गालिए, दुस्से-दुस्मालिए. तक्के-तक्करणे, अक्के-अक्करणे, जक्के-जक्करणे, मम्मे-मक्करणे, सिंहे-सिंहकरणे. कशिमरे-कशिमरमडने. अनघे-अनघाघने, अघने-अघनाघने. अघायंते-अपगत-अपेयंते.-श्वेते-श्वेततुंडे-अनानुरक्ते-ठः ठः ठः--स्वाहा,--

(विधिः) भो! भिक्षवः!! इमा-जागुली नाम महाविद्यां त्रिकाल-यः-पठति, सः-सर्पेण-न-दश्यते, अथ चेत्! दश्यते,-न-तस्य काये विपं संक्रामति, भुक्तं-च-सर्वमपि जीर्यते विपं. अनया विद्यया वालुका-कोद्रवांश्च-एकीकृत्य-त्रिभिरभिमंत्र्य-यत्र क्षिप्यते, तत्र सर्पादयो-न-प्रभवति, अनया-विद्यया-सप्तवार जल, दुग्ध-वा-अभिमंत्र्य पाययेत्, सर्वं स्थावर-जगम-कृत्रिमं-जाठर -विप नाशयति,

(अर्थ-) उपर दिखलाई हुई-जागुली-महाविद्या-शुद्ध करके लिखी गइ है, जो-शख्श-हमेशा पढे,-तो-उसकों सर्प काटेगा नही. अगर काटे-तो-शरीरमे जहेर चढेगा नही. अगर किसी दुसरी तरहका स्थावर विप-अफीम-संखिया-वगेरा खाया हो-तोभी -उतर जाय. इस विद्यासे वालु, रेती और कोद्रव, धान्य इकठ्ठा करके तीन दफे मंत्रित करे. जहा डाले वहा सर्पका आना-न-होसके,-दशतोले पानी-या-दूध इस जागुली विद्यासे मंत्रित करके पिलावे-तो-सर्पके काटेहुवे शख्शका जहेर उतर जाय, दुसरेभी-स्थावर-जंगम-कृत्रिम और जठर अग्निसबधी सबतरहके जहेर (२१) दफे इस जागुली विद्याकों पढते जाना और मोरपींछी-या-रजोहरणसे झाडते जाना, जहेर उतर जायगा, इसमे कोई शक नही, मगर कठ, छाती, मस्तक, कान, नाक, डाढी, आंख, होठ, हाथपावके तलवे, बगल,-या-स्कंध,-ये-मर्मस्थान है इतनी जगह -सर्पदश होनेसें विजलीकी तरह शरीरमे जहेर जल्दी पसर जाता है, अगर जोरसे जहेर पसरगया हो, तोभी-जागुली विद्या ताकात-

वाली है,-इससें जहेर उतर जायगा, जहेर उतारनेका इलाज है,-मगर आयुष्य बढानेका इलाज नही है —

[बयान-जागुली-नाम महाविद्याका-खतम हुवा,]

---

१९ [तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात्-एप योगः फलतु,-
सद्गुरु-प्रसादात्-एप योग. फलतु,-एसा एकदफे
बोलकर आगे लिखेहुवे बीजअक्षर पढे,-]

ॐ नमो भगवओ-अरिहंतसिद्धआयरीयउवज्झायसव्वसाहू-सघ-धम्म-तिथ्थ-पवयणस्स-ॐनमो भगवइए,-सुअदेवयाए,-सतिदेवयाए,-सव्वदेवपवयण-देवयाण-दसन्नदिग्गपालाण,-चउन्नलोगपालाण, स्वाहा,—

इन बीजअक्षरोंकों (१०८)-या-(२१) दफे पढकर चद्रस्वरमें सफर करे-तो-फायदा-हो, रास्तेमे तकलीफ पेश-न-हो, शास्त्रार्थमें फतेह मिले, और मुबारकबादी हासिल हो,-खौफकी जगह-खौफ-न-हो, और आफत दूर हो. इन बीजअक्षरोंका जाप-मनही मनमे करना, मास, शराब, और लहसन-प्याज वगेरा जमीकदकी चीजें-न-खाना, और परस्त्री-सेवनसें परहेज करना, जब फल होगा,

२० [तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात्-एप योग' फलतु,-
सद्गुरु-प्रसादात्-एप योग. फलतु,-एसा एकदफे
बोलकर आगे लिखाहुवा भविष्यज्ञान बतलाने-
वाला पाठ पढे,-]

ॐ ह्रीँ-अर्हं नमो जिणाण,-लोगुत्तमाण,-लोगनहाण, लोगहियाण, लोगपईवाण, लोगपज्जोयगराण,-मम-शुभाशुभ-कथय-कर्णपिशाचिनी स्वाहा,—

इस पाठकों-चांदीकी-थालीमें-रविवार-या-गुरुवारके रौज-अष्टगधसें-या-केशरसें-जुकी चमेलीकी-कलमसें लिखे,-और-

अपने मकानमे साफ जमीनपर पूर्व-या-उत्तर दिशामें लकडेकी-चौंकीपर उस-थालीकों-स्थापन करे, और जिस बातका दरयाफ्त करना हो,-वोभी-उस-थालीमे लिखदेवे-और-फिर-चदनका-धूप -और घीका चिराग जलावे.-जिसरौज यह-पाठ-करे-उसरौज एकदफेही-खाना खावे.-और-रातके वरत-थालीके सामने चटाई -या-कंबलपर बेठकर-पूर्वदिशासे लेकर चारोंदिशामे-मुह-करके एक-एक-माला-गिने, फिर कर्णपिशाचिनी देवी-आराधनार्थं करेमि-काऊमग्ग-कहकर-(२०)लोगम्सका-कायोत्सर्ग करे, प्रगट लोगस्स बोलकर चुपचाप सो-जाय,-ख्वाबमें-भविष्य हाल रौशन होगा.-इन बीजअक्षरोंको पढनेवाला शस्श-मांस, शराब, और लहसन, प्याज वगेरा जमीकंदकी चीजे-न-खावे, और परस्त्री-सेवनसें परहेज करे, जब फल होगा. शक्रस्तनकल्पके मुताबिक लिखागया है.-मनकल्पित नही है, मजकुर पाठ-अगर-अवलसें साढेबारांहजारदफे पढलिया हो-तो-जल्द फल देगा.—

२१ (तीर्थंकर-गणधर-प्रसादात्-एप-योगः फलतु,—
सद्गुरु-प्रसादात्-एप योगः फलतु,-एसा अनल
बोलकर आगे लिखीहुइ-गाथा-पढे,-)
नट्ठट्ठमयट्ठाणे-पणट्ठ-कम्मट्ठ-नट्ठसंसारे,—
परमट्ठ-निट्ठिअट्ठे-अट्ठगुणाधीसर वंदे,-१

किसीतरहके देवदोपका अपनेदिलमे-शक-हो, शरीरमे तकलीफ पेंश हो. फिक्र-चिंता बनीरहती हो,-(२१) रौजतक हरहमेश मजकुर गाथा (१०८) दफे पढे, तकलीफ दूर होगी,-अपने मकानमें साफ जमीनपर बेठकर-धूप-दीपके शाथ पढे,-मास, शराब, लहसन-प्याज वगेरा-जमीकदचीजें-न-खावे, और परस्त्री-सेवनसें परहेज करे,-जब-फल होगा,—

[बयान-मंत्रशास्त्रका-खतमहुवा,]

—०००—

[दरवयान-यन्त्र-और-तन्त्रशास्त्र -]

१ जैनमजहबमे ऋषिमडल-यन्त्र, और तिजयपहुत्तयन्त्र-निहायत उमदा चीज है.-विशा-यन्त्र, और पन्नरका-यन्त्रभी-काबिलेगौर है, -हरेक-यन्त्र पुष्यार्क, हस्तार्क, मूलार्क-या-अपना चद्रस्वर चलता हो. उसवख्त अष्टगधसें भोजपत्रपर लिखना, अष्टगधमें आगे लिखी-हुई चीजे होना चाहिये.-केशर-पावतोला, भीमसेनीकपूर पावतोला, गोरोचन एक आनीभर, कस्तूरी-दो-रति, चंदन आधा तोला,-अगर पावतोला.-तगर पावतोला.-ककोल-दो-आनीभर-ये-अष्टगधकी चीजे हुई.-इनमे कस्तूरी और गोरोचन छोडकर बाकीकी चीजे-कूट-छानकर खरलमे डालना.-और-गुलाबजलसें घोटना, कस्तूरी और गोरोचन-पीछेसें मिलाना, जब सब चीजें एक रस होजाय, रगके लिये हिंगलु मिलाना, फिर एक-शीशीमे भर लेना -या-छायामे सुकाकर-गोली बनालेना, जब यन्त्र लिखनेकी जरूरत पडे-काममे लेना,

२ दुनियामे कई किसके यन्त्र है,-सिद्ध चक्रजीका-यन्त्र-सब यन्त्रोमे शिरोताज कहा. इसके बाद ऋषिमडलका-और-तिजय-पहुत्तका यन्त्रभी-किसी कदर-कम-नही,-विशा-यन्त्र, और पन्नरका यन्त्र, काबिलेगोर है,-मगर उनसेंभी-पेंसठका यन्त्र-बहुत-बढकर है, -जो-आगे दर्जकिया जाता है,—

मजकुर पेंसठका यन्त्र-पुष्यार्क, हस्तार्क, मूलार्क, या-दीपमालाके रोज अपना चद्रस्वर चलता हो-उसवख्त-अष्टगधसें भोजपत्रपर लिखकर अपनेपास रखनेसें सौभाग्यवृद्धिसूचक-चीज है.—

[पेसठका-यत्र.-]

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१०	११	१७	२३	४
१८	२४	५	६	१२

३ वर्सभरमे पुष्यार्कका-रौज-अकसर बहुत कम-आता है, उस-मेभी दिनभर पुष्यनक्षत्र होना,-और-उसरौज-रविवार होना, निहायत उमदा योग है,-मजकुर-बात-पंचागसें-मालुम होसकेगी, अर्कोके संयोगसें यत्र बनता है, जब तकदीर आलादर्जेकी पेश हो, अठी-चीजोंका-योग-मिलसके,—

४ जैनागम, चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति-वगेरामे ज्योतिप-चक्रका बयान दर्ज है, तीर्थंकर-गणधरोंने-जो-द्रव्योंकी वड-तरहकी ताकात बयान किई, वो-एक दूसरेके मिलनेसें खिलती है,-मणि-मंत्र-और-औषधियोंका-अचिंत्यप्रभाव-शास्त्रोंमे कहा, सह-देवी, विष्णुक्राता, काकजंघा, मयूरशिखा, केतकी, शंखावली-

वगेरा जडीयें पुष्यार्कमे लाईहुई-बहुत गुण दिखलानेवाली है,-शास्त्रोंमें इनके अलग-अलग-कल्प-बनेहुवे है.-तालाश करनेसें मालुम होगा,—

५ बाग, बगिचे, पहाड, और उमदा जगहकी पैदा हुई-जडी ज्यादा-ताकातवाली होती है,-कुवा-बावडीके नजदीककी-रास्तेके नीचेकी और नापाक जगहकी पैदा हुई जडी विधिसें लाईहुई हो-तोभी-कम-फल देनेवाली फरमाई, पुष्यार्कके रौज लाईहुई जडी-रेशमी रुमालमे रखकर छायामें सुकाना, और-फिर-कागजमे लपेट करके पास रखनेसें फायदेमद चीज है.—

६ सर्पकाटनेवालेकों नागदमनी-जडी, चाहे हरी हो,-या-सुकी,-छह-मासें-लेकर खिलाईजाय-तो-फौरन! जहेर उतर जायगा, मुल्क मारवाडमे नागदमनी जडीको कालीपाड-बोलते है,-नींबके द्रस्तकी-सुकी-नींबोली-पाचमासे, सिंधानमक पाच मासे और कालीमिर्च-पाचमासे-ये-तीनों चीजें बारीक पीसकर उसमें देढतोला-ताजा-घी-मिलाना. और सर्पकाटे हुवे शख्सकों खिलाना -थोडा डखपर लगाना. जहेर-उतर जायगा

७ मरुवेकी जड-चारमासे लेना. उसमे (२५) काली मिर्च मिलाकर घोटना और दश तोले-पानी-मिलाकर पिलाना,-सर्पका जहर उतर जायगा, गुडमार-हरडीके-पाचपत्ते और-सातकाली-मिर्ची-बारीक पीसकर साततोले पानीम मिलाकर पिलानेसें बछना-गका जहेर-उतर जाता है,-कपासके-हरे-पत्ते-और-थोडीसी-राई -पीसकर डखपर लेप करनेसें वींछका जहेर उतर जाता है, तीन-या-चार-रति-कपुर पानमे रखकर खिलानेसें वींछुवगेरा जहेरी जीवोंका जहेर उतर जाता है,—

(दर-बयान यत्र और-तत्रशास्त्रका-खतम हुवा,-)

[श्वेतांबर-दिगंबरके मतव्यमें भेद,-]

१ जैनमजहबमे इसवख्त-बडे-फिरके तीन-शुमारकिये जाते है, १-श्वेतांबर.-२-दिगंबर, और ३-स्थानकवासी,-इनमें श्वेतांबर-दिगंबरके मंतव्यमे जो कुछ-भेदाभेद है.-यहा-दिखलाया जाता है. गौर कीजिये ! श्वेतांबरोंका कहना है-केवलज्ञानी खान-पान-लेवे. तत्वार्थसूत्रमे बयान है,-केवलज्ञानीको ग्यारह-परिसह होते है.- (तत्वार्थसूत्रका-सबुत -)

"एकादश-जिने-" (यानी) क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, डंसमशक, चर्या, शय्या, वध, रोग, तृणस्पर्श, और-मल,-ये-ग्यारह परिसह तेरहमे गुणस्थानवालेकोंभी-होते है,-साबीत हुवा-केवलज्ञानीकोंभी-वेदनीय-कर्म-मौजूद होनेसें-क्षुधा-तृषा-होनाचाहिये, -दिगंबर मजहबवाले तत्वार्थसूत्रकों मानना मञ्जुर रखते है.-मगर -न-मालुम-केवलीकों क्षुधा-तृषाका क्यों इनकार करते है ? यह-एक-सवाल है.-दिगंबरमजहबवाले कहते है.-केवलज्ञानी-खान-पान-न-लेवे. तत्त्वार्थसूत्रमे-जो-ग्यारह-परिसह-बयान फरमाये, उनको मञ्जुर रखते है,-मगर क्षुधा-तृषाकी जगह दूसरी तरहके परिसह कहते है,—

२ केवलज्ञानीकों अशाता-वेदनीय कर्मका उदय मौजूद है.- इसलिये श्वेतांबरलोग कहते है,-केवलज्ञानीकों कभी-रोगभी होसके. दिगंबरमजहबवाले कहते है,-केवलज्ञानीकों रोग-नही होता. इन्साफ कहता है, जब उनकों अशाता-वेदनीय-कर्मका-उदय है, फिर-रोगका होना-क्यों-न-होसके ? केवलज्ञानीकों शौचकेलिये जाना श्वेतांबर लोग मानते है.-इन्साफ कहता है,-जब-खान-पान-होगा,-तो-शौचकेलिये-जानाभी जरूर होगा, केवलज्ञानी-जब-दुसरे केवलज्ञानीको मिले-तो-"नमो जिणाणं-" ऐसा कहे.-इसबातकों श्वेतांबरलोग मानते है,-दिगंबर मजहबवाले कहते है, केवलज्ञानी केवलज्ञानीकों नमो जिणाणं-ऐसा

कहे नही, तीर्थंकरोंके समवसरणमें तशरीफ लावे अलग-अलग गंधकुटी बनीहुई रहती है,-उनमें जायेनशीन होते है. और तीर्थकरोंका व्याख्यान खतम होनेपर जुदे-जुदे-चले जाते है,—

३ तीर्थंकर महावीरस्वामी-विप्रकुलमे पैदा हुवे-और-शक्र-इद्रके फरमानेसे एक-देवने-उनको-क्षत्रिय कुलमें-सिद्धार्थ राजाके वहां-त्रिशलारानीकी कुखमे स्थापन किये-इसबातको श्वेतावरलोग मजुर रखते है,-दिगवर लोग-मजुर नही रखते,-श्वेतावर कहते है -जब-तीर्थंकर महावीर स्वामी-आठवर्षकी उम्रके हुवे,-उनके वालिदने-उनकों पडितके वहां पाठशालामे पढानेको भेजे थे.-तीर्थकरदेव-जन्मसेही-अवधिज्ञानी होते है -मगर-लोगव्यवहारसे उनके वालिदने पाठशालामे पढनेकों भेजे थे शक्र इद्रने आनकर उसवख्त तीर्थंकर महावीर स्वामीकों अवधिज्ञानी होना-सावीत किया था.

४ श्वेतावर लोग जिनप्रतिमाकों-गेहने-आभूषण वगेरा शिंगार पहनाते है. दिगवर लोग नही पहनाते, मगर-रथयात्राके वख्त-रथमें सोने-चांदीके सिंहासनपर बेठाते है,-पीछें-भामडल-लगाते है. जब-गेहने आभूषण वगेरा शिंगार नही पहनाया-तो-फिर सोनेचांदीके-सिंहासनपर तख्तनशीन करना,-वगेरा वीतरागकों-सरागभावके चिन्ह क्यों?

५ तीर्थंकर-ऋषभदेव-और सुमगला-ये-दोनों एकगर्भमे पैदा हुवे थे, सबब उस जमानेमें-युगलमनुष्य-पैदा होते थे. यानी-एक लडका और एक लडकी शाथ जन्मते थे.-सुनदा-नामकी-एक-कन्या-जब जन्मी थी,-तब-उसके शाथ-पैदा-होयाहुवा-एक लडका मरजानेसें-लावारीश कन्या-नाभिकुलकरने-ऋषभदेवके शाथ विवाही थी, यह-पुनर्लग्न नही कहाजाता-पुनर्लग्न-वो-होता है,-जो-विवाह-होकर खाविंद इतकाल होजाय-और-वो-औरत दुसरा-खाविंद-करे,—

६ उन्नीसमें–तीर्थंकर–मल्लिनाथजी–औरत–हुवे, यह–आश्चर्यजनक बात हुई, श्वेताम्बर लोग मानते है,–दिगंबर लोग–इसबातकों –नही मानते. और कहते है,–तीर्थंकर मल्लिनाथजी–मर्द हुवे,–दिगंबरलोग–दुसरी तरहके आश्चर्यजनक–बनाव होना मंजुर रखते है, दिगंबरलोग–दुसरे आश्चर्य–जनक बनावमे यहभी–एक–बनाव बना कहते है,–तीर्थंकरोंके घर–बेटे–पैदा होना चाहिये,–तीर्थंकर ऋषभदेव–महाराजके–घर–ब्राह्मी–सुदरी,–दो–बेटी पैदा हुई–यह–एक आश्चर्य–जनक–बात है,–सोचो! फिर बात क्या हुई?—

७ श्वेताम्बर मजहबवाले औरतकों पचमहाव्रत होना मंजुर रखते है,–अगर–औरतकों–पंचमहाव्रत–न–होना माने–तो–चतुविध–संघमें–साध्वी–पद–न–रहेगा. फर्ज करो! अगर औरत–सम्यग्–दर्शन–ज्ञान–और–चारित्र पाले. शुद्ध भावना भावे–तो–उसकी मुक्ति क्यों–न–होसके! दिगम्बर मजहबवाले कहते है.–औरत–चाहे–जितनी धर्मक्रिया करे–मगर उसकी उसीभवमें मुक्ति नही होती. मगर ऐसा मानना इन्साफसे खिलाफ है,—

८ दिगंबर–मजहबवाले कहते है,–श्वेतांबर–मजहबवाले–तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका–गणधर–एक घोडा हुवा मानते है. मगर श्वेतांबरलोग ऐसा नही मानते, तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका गणधर–मनुष्य–हुवा है, घोडा नही–ऐसा मानते है, खयाल करनेकी जगह है. कभी–तिर्यंचकों–गणधर पदवी–होसकती है?–दीक्षा इख्तियार करना–और गणधर पदका–इल्काब हासिल करना –मनुष्यका काम है,–एक–घोडेकों तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीने प्रतिबोध दिया था जिससे उस घोडेकों जातिस्मरणज्ञान हुवा था, बात यह थी,–समजनेवाले सायत! दुसरीतरह समजे हो,—

९ श्वेताम्बर मजहबके शास्त्रोंमे तेहरीर है,–गौतमगणधर–एक–देवशर्मा–नामके–ब्राह्मणको–प्रतिबोध देनेकेलिये गये,–प्रतिबोध देना धर्मके फायदेका–काम है,–नुकसानका–काम–नही,–चाहे–

कोई-जैनधर्मी हो-या-दुसरा हो. प्रतिबोध देना ज्ञानीयोंका फर्ज है,-और वही फर्ज-गौतम-गणधरने अदा किया था,-केवलज्ञानीकों -डसमछर काट-जाय,-यह-बात-ग्यारहपरिसहोंके उदयसें सावीत है,-जबतक-कोई-देहधारी है,-छींक आना, खासी पैदा होना शरीरका धर्म है,-इसमें कोई ताज्जुबकी बात नही,—

१० अगर कोई द्रव्यचारित्र-न-लेवे और उसकों भावसे चारित्र लेनेके परिणाम आजाय-तो-बेशक! केवलज्ञान पाकर उसकी मुक्ति होसकती है,-श्वेतांबर इस बातकों मंजुर रखते है,-दिगंबरमजहब-वाले कहते है, बिदून द्रव्यचारित्रके मुक्ति नही होती. मगर-मज हुरबात इन्साफसें खिलाफ है,-द्रव्यचारित्र लिया और-श्रद्धा-ज्ञान नही हुवा, शुद्ध-भावना-नही आई-तो-मुक्ति कैसे होगी? द्रव्य-चारित्रने क्या फायदा पहुचाया?—

११ अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे,-जैनश्वेतांबर मुनि-चादर -पछेडी-झोली-पात्रे-और कंबल वगेरा रखते है,-इससें ममत्वभाव पैदा होगा, (जवाब) जैनदिगंबरमुनि-मयूरपींछी कमंडल रखते है, -इससेंभी-ममत्वभाव पैदा होगा, अगर-कहाजाय-मयूरपींछी और कमंडल-संयमकी हिफाजतकेलिये है-तो-चादर-पछेडी-और कंब-लभी संयमकी हिफाजतकेलिये-क्यों नही? दिगंबरमजहबके-ज्ञाना-र्णवशास्त्रमें लिखा है,-शय्या-आसन-वगेरा संयमके उपकरण-और -ज्ञानके उपकरण जैनमुनि-यतनासें देखभालकर पडिलेहण करे, और रखे. इससें-साबीत हुवा-संयम-और-ज्ञानकी हिफाजतकेलिये उपकरण रखना जैनमुनिका फर्ज है,—

१२ दिगंबरमजहबवाले कहते है,-जैनमुनिकों-अपनेही-मजहब वालोंके घरसें आहार लेना चाहिये. श्वेतांबर मजहबवाले कहते है. क्षत्रिय, ब्राह्मण, और वणिक वगेराके घरसें जहां-शुद्ध-आहार मिले -वहांसें लेना चाहिये. मगर शर्त यह है,-मांस शराब वगेरा अशुद्ध चीज-न-होना,—

१३ अगर कोई शख्श इस दलिलकों पेंश करे,-श्वेतांबर-मजहबमें तपगछ, खरतरगछ,-केवलगछ, लोंकागछ वगेरा-कई भेद मौजूद है,-जवाब, क्या! दिगंबर-मजहबमें काष्टासंघ, मूलसंघ, माथुरसंघ, गोप्यसंघ, विशपंथ, तेरहपंथ, समैयापंथ, वगेरा-भेद-मौजूद नही है, ?—

१४ दिगंबरमजहबवालेका कहना है,-धर्मकी हानि करनेवालोंकों -जैनमुनि-न-रोके. श्वेतांबरमजहबवालोंका कहना है-धर्ममें-हानि पहुचानेवालोंकों जैनमुनि-रोके. फर्ज करो! कोई शख्श जिनमंदिरको तोडता हो. जिनमूर्त्तिकी बेंअदबी करता हो. धर्मी शख्शकों तकलीफ पहुचाता हो,-धर्मपुस्तक जलाता हो, उसकों जैनमुनि रोके, और-उसपर गुस्सा करे-तोभी-कोई हर्ज नही. सबब-इरादा धर्मकी हिफाजतका है, और जहा इरादा धर्मकी हिफाजतका हो वहां भावहिंसा नही. और बगेर भावहिंसाके पाप नही.—

१५ तीर्थंकरोंके जमानेसें लेकर आजतक स्थविरकल्पी जैनमुनि -गणधर, आचार्य, उपाध्याय,-वगेरा होते चले आये, जिनकल्पी मुनि-तीर्थंकर महावीर स्वामीके बाद-जंबूस्वामीके पीछे नेस्त-नाबुद होगये, स्थविरकल्पी-मुनिकों आसन, कबल, चादर, पछेडी रजोहरण. मुखवस्त्रिका-और-पात्रे वगेरा-चौदह-उपकरण-संयमकी हिफाजतकेलिये रखना कहा, खुद्-तीर्थंकर देवभी देवदुष्य-वस्त्र रखतेथे, आजकलभी उसी तरह जैनमुनि बरताव करते है.-जिनकल्पी-मुनि-जमाने हालमें रहे नही,—

१६ तत्त्वार्थसूत्रके बनानेवाले उमास्वातिजी ज्ञानमे दशपूर्वके पढेहुवे और-वे-श्वेतांबर मजहबके थे. उमास्वातिजी-कब हुवे? उनोने कितने जैनग्रंथ बनाये? उनका नाम-उमास्वातिजी क्यों हुवा? इन बातोंका खुलासा श्वेतांबर मजहबके शास्त्रोंमे मिलता है. -दिगंबर मजहबमें नही मिलता. इस सबुतसे पाया जाता है,-वे श्वेतांबर मजहबमें हुवे.

१७ श्वेतांबर मजहबके शास्त्रोंमे-बयान है.-तीर्थंकर देवदीक्षा इख्तियार करनेके पेस्तर-सावत्सरीक-दान देवे दिगंबर मजहबके शास्त्रोंमें नही लिखा श्वेतांबर-मजहबवाले कहते है तीर्थंकर देवोंकी माता चौदह स्वप्न देखे,-दिगंबरमजहबवाले कहते है-सोलह-स्वप्न देखे,-श्वेतांबर मजहबवाले चोसठ-इंद्र-मानते है,-दिगंबर मजहबवाले-(१००) इंद्र-मानते है.—

१८ मरुदेवी-माताको-हाथीके होदपर बेठेहुवेभी-अनित्यभावनासे केवलज्ञान पेदा-हुवा-श्वेतांबरमजहबवाले मानते है, दिगंबरमजहबवाले इस बातको नही मानते -इन्साफ कहता है, जिसवख्त इस जीवको शुद्धभावना आजाय-केवलज्ञान होना कोई ताज्जुबकी बात नही, जैनमजहबमें भावना बडी फरमाई,—

[दोहा,-]

भावना-है-भवनाशिनी-भावो हृदय मझार,
भाववले भवनिधितरे,-पामे भवनो पार,-१
लुन-विना-ज्यू-रसवती,-भोजनविन तंबोल,
दानविना कमला जिसी,-साचविना-ज्यू-बोल,-२
श्रीमरुदेवा स्वामिनी,-आदिनाथकी-मात,
भाववले भवजल तरी,-ये-जगम-अवदात,-३
श्रीभरतेश्वरभावना,-भावे केवल-लिध,
वैसे-अष्टपटोधरा,-भाववले हुवा सिद्ध,-४
पुत्र एलाची देखलो,-किसविध साधे काज,
भाववले-केवल लिया,-प्रत्यक्ष देखो ! आज-५

१९ उपवास व्रतमे-चार तरहके आहारकी मना है,-अगर बमवख-बीमारीके उपवासव्रत करनेवाला बेहोश होजाय और उस-हालतमे अणहारी-चीज-उसको वतौर ओषधके दिइजाय-तो-कोई हर्ज नही उसका उपवासव्रत खंडित नही होता-ऐसा श्वेतांबर-मजहबवाले मानते है—उसवख्त अमर लाचारीका है,

२० दिगंवरमजहबवाले-कहते है.-दुनियामें-तरह-तरहके जी-वोंका मरना देखतेहुवे-केवलज्ञानी महाराज खान-पान-कैसे करे ऐसा दिगंवर कहते है, जवाब, तरह-तरहके जीवोंका मरना देखनेसे क्या हुवा? इससें केवलज्ञानी आहार क्यों छोडे, केवल-ज्ञानीकोंभी-क्या-फिक्र पैदा होना मानते हो? केवलज्ञानी जानते है,-होनहारवस्तु होती रहती है, इससे उनका-क्या! ताल्लुक? अगर कोई-कहे, केवलज्ञानीकों-आहार-इच्छासहित समजना-या -रहित? (जवाब) केवलज्ञानी पाच इद्रियोंकी पुष्टिहोनेकी इच्छासे आहार नही लेते. ममत्वभावरहित-सयमकी हिफाजतकेलिये लेते है.

२१ अगर कोई इस दलिलकों-पेंश करे.-शूद्रकों मुक्ति होसके -या-नही? (जवाब.) हो सके. आत्मा-शूद्र नही है, जिसके मनःपरिणाम-साफ हो, उसकी मुक्ति होसकती,-अगर कोई इस मज-मूनकों पेंश करे. श्वेतावरमुनि-दडा-क्यों रखते है? (जवाब.) सय-मकी हिफाजतकेलिये रखते है,-फर्ज करो, सफरके वख्त रास्तेमे-कोई -नदी आगई और उसके पारजानेकी जरुरत है. उसवख्त-उस नदीका पानी-कितना उडा है? देखनेकेलिये-दडा-काम-देगा, श्वेतावर मजहबमे-जमाने हालमे-जैसे-श्रीपूज्यजी-है. वैसें दिगवर मजहबमे भट्टारकजी-है,—

२२ अगर कोई-इस दलिलकों पेंश करे, श्वेतावर मुनि-जिन-मदिरमे-खान-पान करते है,-और ठहरतेभी-है,-(जवाब.)-श्वेताव-रमुनि-जिनमदिरमे ठहरते नही, और जिनमदिरमे खानपानभी नही,-करते, बाजुमे अलग मकानमे ठहरते है,-और-खान-पानभी-अलग करते है,-श्वेतावरमजहबवाले-कहते है.-दुनियादारी हालतमेभी-अगर -किसी-जीवकी भावना शुद्ध होजाय-तो-उसकी मुक्ति होसकती है,-दिगंवरमजहबवाले-कहते है-द्रव्य-चारित्र लेना चाहिये,-विना द्रव्यचारित्रके मुक्ति नही होती,—

-धर्म करनीकों देखकर-सयमी अनुमोदन करे-तो-कोई हर्जकी बात नही.—

३१ चद्र-और-सूर्य-मूलविमानमे बेठकर-तीर्थंकर महावीर स्वामीके समवसरणमे आये, यह एक-आश्चर्यजनक-बनाव बना, श्वेताबर मजहबवाले मानते हैं.—

३२ मानुष्योत्तर-पर्वतसेंआगे-मनुष्य पैदा नही होते.-मगर कोई लब्धिधारक-मुनि-हो-तो-जासकते है, ऐसा श्वेताबरमजहब-वाले मानते है.—

३३ शखकी-स्थापना-श्वेताबरलोग मानते है. जैसे-पाषाणकी बनीहुई जिनमूर्ति-एकेद्रिय-जिवोका कलेवर है,-वैसे शख-बेइंद्रि-यजीवका कलेवर है,-पाषाणकी मूर्त्तिकों मानना और शखकी स्थापनाकों नही मानना यह-कौन इन्साफ हुवा ?

३४ नाभिराजा-और-मरुदेव-युगलीक मनुष्य थे,-उस-जमा-नेमे-युगलीक मनुष्य पैदा होते थे-इसमे कोई गलत बात नही. नवग्रैवेयक-और-पाच-अनुत्तर विमानके देवते-अपना-स्थान छोड-कर-नही आते,-बाकीके देवते आते है,-ऐसा द्वादशाग-बानीके -पुस्तकोंका-फरमान है,—

[बयान-श्वेताबर-दिगबरके मतव्यमें भेदका खतम हुवा,-]

[पापकर्मके फल -]

१ अपने किये हुवे-पापकर्म-अपनेकों-भोगना पडते है-दुस रेके-कर्म-दुसरा नही भोगता, इस दुनियाफानी-सरायमे-बतौर मेहमानके सब आये है,-आखीरकार सबकों जाना है, मगर इन्सान -उस दिनकों-याद नही करता. जब किसी तरहकी तकलीफ पेश होती है,-या-बीमारी आती है, बेशक ! याद करता है मगर जब

आफत दुर हुई-और-आराम मिला, फिर सब बात धर्मकी भूल जाता है,-अगर सुखमेभी-धर्म करे-फिर दुख-क्यों-हो? जिसने इस बातकों याद रखी.-धर्मकों तरकी दिई समजो,-कईलोग-बयान करते है,-धर्मधुर्म-सब-गप्प है,-परलोक किसने देखा? जिसके पास परलोककी-रसीद-आई हो, बतलावे,-मगर इस बात-पर खयाल नही करते. दुनियामे एक-सुखी और-एक-दुखी क्यों बदौलत धर्महीके इस जीवने यहां सुख चैन पाया है, और-आगेकों-पायगा.-धर्म-और-परलोक-सचा है,-और-सुख-दुख-इसीकी रसीद है,—

२ जितनी उम्र लाये हो,-खतम-होनेपर एक रोज जाना होगा, माल-असबाब-तो-क्या! मगर शरीरभी-यहा-छोड जानाहोगा.-ऐसाभी-देखाजाता है,-तंदुरुस्त और खुशमिजाज शख्श सुभहके वख्त-आरामतलब-बैठे शामकों दुनियासे रुकसत होजाते है,-पाप-कर्मसें इन्सान दोजककों जाता है. कई-लोग-दौजक और बहिस्तकों नही मानते,-मगर धर्मशास्त्र-दोजक और बहिस्तका होना सही फर-माते है. दोजकमे-जीव निहायत तकलीफ पाता है,-और-वहां-कोई उसकों छुडानेवाला नही मिलता. मारे तकलीफके-वहा-चिल्लाता है, शौर-गुल-करता है.-मगर उसकी सुनाई करनेवाला कोई नही, जबतक अपने पापकर्म-खतम नही होते वहासें छुट नही सकता. भूख-प्यास-सताती है.-निहायत ठंडी-निहायतगर्मी-और-तरह-तरहकी तकलीफ पेंश है.-अपनी करनीके फल मिले है,-विदून भोगे कैसे छुटे? शरीर-पारेकी-तरह-खीर-जाय और मिलजाय-लंबी उम्रतक-(यानी)-लाखो करोडे वर्स होनेपर जब-अपने पापकर्मके फल खतम हो,-वहासें-छुट सकते है,—

३ मुताबिक फरमान-धर्मशास्त्रके दौजक इस जमीनके नीचेको है. और पापकर्मके उदयसें इन्सानको दोजककी-सफरको जाना पडता है, वहा-हमेशा-बदबू अंधेरा-और-भुवनपति देवोंकी

जातिमें जो-कमदर्जेके-देव-शुमार किये गये है,-जिनकों-रहम-बिल्कुल नही. शास्त्रोंमे उनका-नाम-परमअधर्मीदेव-लिखा, वे-दोजकमे गयेहुवे जीवोंकों तकलीफ-पेश-करते है,-उनके खयालसें -वे-तरहतरहके खेल करते है-मगर दोजकके जीवोंकों निहायत तकलीफ पेंश होती है और इसकामसें उनकों पापकर्मभी बधते है,-और-जब उनकी उम्र खतम होनेपर उनका इतकाल होता है, तिर्यंचकी-गति-पाते है. वहाभी उनसें कोई धर्मका काम नही बनसकता, आखीरकार! पापकर्मके उदयसें उनकों दोजकका सफर करना पडता है. सब बातमे-कर्म-प्रधान है,-जैसी-करनी-वैसा-फल यह एक सीधी सडक है. जैसे लोहचुमक पथर-लोहेकों-अपनीतर्फ खेचलेता है पापकर्म-इसजीवकों-दोजककी राहपर खेंचते है,—जीव-आरामकों छोडकर तकलीफमें जाना नही चाहता. मगर पापकर्मसें लाचार होकर वहा-जाना-पडता है.—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

૪ [દોહા,]

દશપ્રકારકી વેદના, સહતા નારકી જીવ,
માહો-માહિ-ઝુઝતા, પાતા દુખ સદૈવ ૧
પાપકર્મ કિધા ઘણા, બહુ જીવ સહાર,
પીડા-ન-જાણી પરતણી, જીવ બડોહી ગમાર ૨
પરનારી સેવી ઘણી, બાંધ્યા પાપ અપાર,
બહુ પરિગ્રહ મેલવ્યો, નિશીભોજન આધાર ૩
અલિક વચન મુખ બોલિયા, પરનો ચોર્યો માલ,
જીવહિંસા કિધી ઘણી, નરક ગયો તતકાલ ૪
પાપકર્મથી પ્રાણિયા, ઊપજ્યા નરક મઝાર,
પરમઅધર્મી પરસ્પરે, વેદન-ક્ષેત્રવિચાર ૫

पापकर्म करके-जीव-दोजककों पाता है,-और-वहा बडी-बडी -तकलीफें उठाता है, जिनोंने यहा पराइ औरतसें-एश किया हो,

रातकों-खानपान किया हो, जूठ बोले हो, उनकों दोजककी तकलीफें पेश होती है,-जहा-हरवख्त छेदन-भेदन-ताडन-तर्जनसें घडीभर चैन नही, लाजिम है,-यहा-सौच-समजकर बरताव करे, पापकर्म करतेवख्त खयाल रखा नही. जब दोजकमे उसके नतीजे सामने आये, कहनेलगे ऐसे पाप-न-करते-तो-अछा था. मगर अब क्या होसके? जो-कर्म किये है, उनके फल-तो-भोगनेही पडेगें,-इसीलिये ज्ञानीयोने कहा-कुछ-आगेकेलिये परलोकका रास्ता साफ करते रहो, दुनयवी-कारोबारमे हजारा-रुपये-खर्चतेहो -तो-आधा-या-चौथा-हिस्सा-धर्ममेंभी खर्च करते रहो. जिससे परलोकका-रास्ता-साफ हो,—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

५ [दोहा,]

ગરીબ જીવને મારતા, કરતા બહુ અન્યાય,
જૂ-અરૂ-લીંખ-મારી ઘણી, પીલે ઘાણીમાય ૬
ગાડી રથમા બેશીને,-બલદ દોડાવ્યા વાટ,
અગન તપાવી ધુસરા, દેઇ દોડાવે ઘાટ ૭
રાગતણા રસિયા ઘણા, સુણ સુણ કરતા તાન,
ધર્મ કથા નહી સાભલી, તેહના કાટે કાન ૮
પરનારીના રૂપનો, વિષય વખાણ્યો જોય,
દેવગુરૂ નિરખ્યા નહી, કાઢે આખો દોય ૯
જૂઠ વચન બોલ્યા બહુ, કુડ કપટની ખાન,
પરમઅધર્મી તેહની, જીભ કાઢે જડતાન ૧૦

जो-लोग-यहा गरीबोंकों मारते है, बेइन्साफ करते है,-जू-लींख-वगेरा-जीवोंकी-हिंसा करते है,-उनकों दोजकमें परमअधर्मी-देव-घाणीमे घालकर पीलते है.-जो-लोग-सवारीमें बेठकर बेल वगेरा जानवरोंकों दोडाते है, और मार-मारते है, दिलमें रहम नही करते. उनकों दोजकमे बेलकी तरह गाडीमें-जोतकर दोडाते

हैं,-और-मार-मारते है-जो-लोग-यहा इश्कका-गाना-सुनकर बडी खुशी मनाते हैं. धर्मकी वातें सुनना पसद नही. धर्मसें-नफरत करते है, दोजकमे-उनके-कान काटेजाते है,-पराई-औरतकी खूबसुरती देखकर-खुश होते हैं,-मगर कभी-उनको-देव-गुरुके दर्शनोंकेलिये कहाजाय-तो-खयालमे-नही लाते, परम अधर्मी देव-दोजकमे-उनकी आखे निकालते है-और-बडी तकलीफ देते हैं,-जो-लोग-यहा-जूठ बोलते हैं,-और-दगलबाजी-करते हैं. -दोजकमे उनकी जबान खेंची जाती हैं,-जो-लोग पापकर्मको छोडकर धर्मकी राहपर कदम आरास्ता करते है,-जीवोंपर रहम करते हैं,-उनको यहाभी-मुबारकबादी-और खुशीके-पैगाम-मिलते है, परलोकमे बहिस्तके-एश-आराम और अखीरमें मुक्ति मिलती हैं,-इस लेखका मतलब यह हुवा-जहातक बने-पापकर्मसें परहेज रखना. ओर धर्मकी राहपर कदम-आरास्ता करना

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

६ [दोहा,]

કોહાડે કરી કાપિયા, નાના મોટા ઝાડ,
પરમઅધર્મી-તેહના મસ્તક છેદે ફાડ ૧૧
પૂજ્ય કહી પૂજાવતા, કરતા અનરથ મૂલ,
કામિની ગર્ભ ગલાવતા, તેહને પ્રોવે ત્રિશૂલ ૧૨
અનાચાર અતિસેવિયા, કિધા બહુત અન્યાય,
વજતણા કાટા કરી, પીલણુ લાગ્યા પાય ૧૩
સાધુજન સતાપિયા, નિંદા કિધી અપાર,
તાતે ખભે બાધીને, દે-મુદગરની માર ૧૪
થાભો દેખી થરહરે, કપન-લાગી-દેહ,
હા! હા! મુજ મારો રખે-કદી-ન-કરશુ તેહ ૧૫

जिनोंने यहा-हरे-दरख्तोंको-कुहाडोंसें काटे है, दोजकमे उनके सिर छेदेजाते है. जो-लोग यहा गर्भपात करते है,-दोजकमे

उनकों त्रिशूलसें विंधते है,-अनाचार-सेवनेवालोंकों और वेंइन्साफ करनेवालोंकों-वज्रमय-कांटोंसे-तकलीफ देते है, साधुजनोंकों सताना, और उनकी नींदा बोलना बहेत्तर नही. मगर यहां इतना समजना चाहिये-निंदा-किसका नाम है,-दरअसल! जुटीबात कही जाय उसका-नाम-निंदा है,-सच-कहना-निंदा नही,-और साधुजनोमे-जो-सच्चे-साधु है-वे-तो-हमेशा-सच्चेही है.-मगर-जो-नकलीसाधु-बने-वे-खुद धर्मके गुनेगार है,-शास्त्रोंमें किसीका पक्षपात नही किया गया, जैसी जिसकी करनी वैसा उसको फल -यह-एक-साफ-बात है. सच्चे-साधुजनोंको सताना-बेशक! पाप है. और उसका फल बुरा है,-जीव-जब-तकलीफ पाता है,-अपने पापकर्मकों-याद-करता है,-मगर-अवलसें-सोच-समजकर बरताव करना-चाहिये, जो-लोग धर्मकोही-नही मानते,-उनकों कोई क्या! कहे? धर्ममें जबरजस्ती नही.-जब अपने दिलसें-धर्मपर एतकात-चढे-सबकाम-राहेरास्त-हो,—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

૭ [દોહા,]

રસ્તે લુટ્યા રાકને, કરી કોપ અન્યાય,
નિર્દયતા કિધી ઘણી, પીલે ઘાણી માય ૧૬
જાૂઠા સોગન ખાવતા, કરતા ચુગલી ચાડ,
જોરાવર યમદૂત-તે, કરત પછાડ-પછાડ ૧૭
અનુચિત કારજ-જે-કરે, તેહના એહ હવાલ,
સાભલી ધર્મ-જે-આદરે, પામે સુખ રસાલ ૧૮
કરી અગાર અગનિતણા, ચલમ ભરી ચકરોલ,
ગાજા તમાકુ-જે-પિયે, ભોગે કષ્ટ અડોલ ૧૯
વિષદેઈ નર મારિયા, કરકર ક્રોધ પ્રચડ,
પરમઅધર્મી-તેહનો, શરીર કરે શત ખડ ૨૦

जिनोंने यहा रास्ते चलते गरीबोंकों लुटे है,-वेंइन्साफ किया

है, दिलम रहेम बिल्कुल नही रखा, उनको दोजकमे परमअधर्मी-देव-घानीम-डालकर पीलते है, और तरह-तरहकी मुसीबतें पेश करते है,-जो-शख्श यहा जुठी सोगन खाते है, दुसरोंकी बुराई करते है,-उनकों परम अधर्मीदेव पछाडते है,-और तकलीफ देते है,-जो-जो-शख्श-शास्त्रफरमानपर अमल नही करते, और पाप-कर्म-इख्तियार करते है, उनको मुसीबतें उठाना पडती है,-जो-जो-शख्श शास्त्रफरमानपर अमल करते है-और धर्मकी-राहपर चलते है, उनकों मुसीबत उठानेका कोई काम नही, अगले जन्ममें आरामचैन पाते है-और-अखीरम धर्मकरके मुक्ति हासिल करते है,-जो-शख्श यहा-गाजा-तमाखु-चिलम वगेराका कुव्यसन सेवते है,-उनकों पापकर्मसे दोजकका सफर करना पडेगी. दुसरोंकों जहेर देना. दिलमे रहेम नही, बातबातमे-गुस्सा-लाना. धर्मकी बात पसद नही,-ऐसे शख्शोकों परमअधर्मी-देव-दोजकमे-निहायत तकलीफ पेंश करते है,-उनके शरीरकों टुकडे टुकडे करदेते है,-मगर-जबतक उनके पापकर्म-खतम-नही हुवे वहासें छुट नही सकते. तकलीफ-उठानाही-पडती है,-

(ગુજરાતી ભાષાતર.)

૮ [दोहा,]

ડુંગર દવ ઘાલ્યા ઘણા, બાલ્યા વનચર જેહ,
પરમઅધર્મી તેહની, બાલે અગ્નિ દેહ ૨૧
દ્રષ્ટિ પિંડકગી મોહિયો,-સગડિયો પરનાર,
અગ્નિ તપાવી પુતલી, ચાંપે-હૃદય મઝાર ૨૨
જાલુ-જાલુ-મહારાજજી, મત ઘો મોટો ત્રાસ,
ભેડો ફ્રાસો કઠનો, જિમ લગી થોડો સાસ ૨૩
રાજદંડ હોવે ઘણા, જગમેં હોય ફજેત,
જેહને-ચઢો-બારમો-પરનારીસું હેત ૨૪
ધનહાણી-હાસી-ઘણી, સુખે-ન-સોવે આય,
જેહને ચઢો બારમો, પરનારી ઘર જાય ૨૫

जो-शख्श-यहा पहाड और जगलको जलाते है. और-वनचर -जीवोंको तकलीफ देते है,-दोजखमे जानेपर-परमअधर्मी-देव-उनकों-आगमे जलाते है,-जिनोने-यहा-पराई औरतसें-स्नेह-किया है,-परमअधर्मी-देव-दोजखमे-लोहेकी-पुतली-गर्मकरके उनके शरीरकों-लगाते है,-उसवख्त-वो-कहता है, माफ करो, जरा आराम लेने दो, मगर उसवख्त-वहा-उसकी सुनाई कौन करे? अपनी करनीके फल भोगनेही-पडते है, पराइ औरतके संगसें राज्यकी तर्फसें जरीमाना-और-इज्जतकी खराबी.-होती है, -नजुमशास्त्रका फरमान है, जिसशख्शकी-राशिसें बारहमा-चद्र-आजाय-उसको तकलीफ पेश हो, इसीतरह पराई औरतके सगसें -तकलीफकी-निशानी है,-इश्कके-फदेमे पडनेसे-रुपये-पैसोंसें नुकशान-इज्जतसे नुकशान-और हरबातसे परेशानी उठाना पडती है,—

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

९ [दोहा,]

દાનદિયતા વારતા, કરતા રાગને દ્વેષ,
પરમઅધર્મી તેહના, મુખમા મારે મેખ २६
પંખી પાડ્યા પાશમા, તીતર-મોર-ચકોર,
જઈ નરકમા ઊપન્યો, સહતો કષ્ટ અઘોર २७
કર્મ અશુભ ભારે કરી, જીવ અધોગતિ જાય,
છેદન-ભેદન-બહુસહે, કોઈ સહાઈ-ન-થાય २८
સપ્ત વ્યસન સેવ્યા ઘણા, કિધા મોટા પાપ,
જઈ નરકમા ઊપન્યા, તેહને વિંટ્યા સાપ २९
અહનિશપર નીંદા કરે, ધર્મવચન-ન-સોહાય,
પરપરિવાદના યોગથી, મરી નરકમા જાય ३०

जो-शख्श-दुसरोंको दान-पुन्य-करते मना करे. दोजकमे परम अधर्मीदेव-उसके मुखमे-मेख-मारते है, जिनोने यहा-तीतर-

मोर-चकोर-वगेरा परींदोंको-बधनमें डाले हैं, दोजकमे उनकों बडीबडी मुसीबते उठाना पडती हैं,-अशुभकर्मके उदयसें-जब-जीव-दोजकका सफर करता है, और अपनी करनीके-फल-भोगने पडते है,-उसवख्त कोई मददगार नही होता. इसीलिये धर्मशास्त्रोंमें कहागया-आत्मा-अकेला आया और अकेला जायगा. साथमें अपने कियेहुए-पुन्यपापही चलेगें, दुसरा-कोई-नही,-जो-शख्श दुसरोंकी दिनरात नींदा करते हैं, धर्मकी बाते सुनते नही.-न-धर्मका रास्ता इख्तियार करते, उनकों अपने कियेहुवे-पापकर्म-दोजकम लेजाते है,

(ગુજરાતી ભાષાંતર.)

૧૦ [દોહા,]

અણુદીઠી અણુસાભલી, કરે પરાઈ વાત,
આપ પિંડ પાપે ભરે, મરી નરકમેં જાત ૩૧
તાકી માર્યાં તીરડા, વિંધ્યા વનચર જીવ,
હિંસા કરીને ઊપન્યો, નરકે કરતો રીવ ૩૨
પૂરવ પાપ પ્રભાવથી, ઊપન્યા નરક મઝાર,
વિવિધ પ્રકારે વેદના, સહેતા કષ્ટ અપાર ૩૩
લડતી પીહર સાસરે, દેતી સબલ સરાપ,
કુડા કલંક ચડાવતી, અવગુણવાલી આપ ૩૪
ઘાત કરે વિસવાસ-દે, છલ કરતી છકમાહે,
નિર્લજ્જ નારી તેહને, દેવે દુખ અથાહ ૩૫

जो-शख्श-बिनादेखी-भाली-बाते बनाकर-अपनेआपकों-पापसें भारी करते हैं आखीरकार! येभी-पापकेही काम है,-जिनोंने यहा वनमें रहनेवाले जीवोंपर-तीर-चलाकर हिंसा किई हैं, उनकोंभी-अधोगति होती है,-और-अपनी करनीके-फल-भोगने पडते हैं,-अपने पूर्वसंचित-पापकर्मसें-जीव-करनीके-फल-भोगे. इसमे कौन ताज्जुबकी बात है. ? और इसमे आसान किसका ?-जो-औरत-पीहर-और-सासरेमें लडती रहे, दुसरोंको तोहमत

चढावे. अपने आत्माकों-पापकर्मसें-भारी करे, वैसी औरत दोज-
ककी सफर करती है,-और-तकलीफ पाती है,-विश्वासघात
करना, और दगाबाजी करना, निहायत बुरा है; इसमें कोई शक
नही, ये-पापकर्मके-फल-धर्मशास्त्रकों देखकर लिखेगये है,-मनघ-
डत-नही-लिखे,-जिनकों धर्मपर कांमीलएतकात है,-वेही-
मानेगें.-जो-शख्श-धर्मकों कुछ चीज नही समजते-वे-चाहे-न-
माने, धर्ममे किसीकी जबरदस्ती नही.-दरअसल! दुनियामें सार-
वस्तु धर्म है, जब किसीतरहकी आफत पेंश होती है. धर्मकों याद
करते है-और कहते है,-धर्मही-मददगार होगा,—

[बयान पापकर्मके फलोंका-खतम-हुवा.-]

[संस्कृतवाक्य-मंजरी]

१ विबुधजनसकीर्णाया-इदग्विधाया-सभाया किंचिद्वक्तुका-
मोह-श्रूयता! तावत्! ! जीवोनादिकर्मभाक् यदनेन पूर्वजन्मनि प्र-
कृति-स्थिति-रस-प्रदेशैः-आश्रववृत्त्या-कर्म-बद्ध, तद्बन्धोदयोदीर्णा
-सत्ताभिः परिभुनक्ति, उद्योग कुर्वन्नपि-फल-न-लभ्यते अतः कर्म-
णामेव प्राधान्य, पुण्यबलात् नानाविध सुख लभते जनाः—

२ स्वकर्मदोषेण समीहित-न-लभते जीवः-वृथैव दोष ददात्य-
न्येभ्यः,-दीर्घायुरारोग्य च-पुण्यबलादेव सभवति, गुप्तवृत्त्या कृतमपि
पाप ज्ञानिना प्रत्यक्षं,-शब्दरूपरसगधस्पर्शादिभिविपर्यर्जीवो दुर्गतौ
नीयते, को-न-वाच्छति स्वकीयमभ्युदय, स्वर्गिभिर्निधानानि सुरा-
गनाश्च-पुण्येनैव कर्मणा लब्धाः—

३ सज्वलन-प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानानन्तानुबंधिभिः-क्रोधाहं-
कारछलमलोभैर्जीवः ससारबधन प्राप्नोति, जैनमते रागद्वेषादिदोषैर्वि-
निर्मुक्तो जिनेंद्रो देवः-भो! नेत्रे-अधुना जिनेंद्रदर्शने प्रमादो-
न-विधेयः—

४ ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय-वेदनीयांतरायाणां-उत्कृष्टा-स्थितिः त्रिंशत्सागरोपमकोटिकोट्यः सप्तसागरोपमकोटिकोट्य -मोह नीयस्य,-नामगोत्रयोर्विंशतिसागरोपमकोटिकोट्यः—

५ आयुष्कस्य-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि-वेदनीयस्य जघन्या-स्थितिर्द्वादशमुहूर्त्ता, नामगोत्रयोरष्टौ, शेषाणामंतर्मुहूर्त्तं, पुद्गलानामेव स्थितिरसनिरपेक्ष-दलिक-सख्याप्राधान्येनत्र-यद्ग्रहण-असौ प्रदेश-बंधः,-व्याख्यान तदेव रम्य-यत्र-श्रोतारो-न-मुह्यन्ति,—

६ तीर्थानामत्रलोकनं आश्चर्याणा निरीक्षण देशाटनेनैव जायते, सत्यपित पुमान् यदि स्वयं पंके निमज्जति कस्य दोषेण, धर्मद्वेषिणा-मूढेन सह-यो-वादः-स-शुष्कवादः-अथ सर्वथा त्याज्यः-प्रमुखस्य पुरः शास्त्रार्थकथन हास्याय-न-बोधाय,—

७ अनृतवादिना सत्यमपि मृषायते, युष्मान् प्रति-मया-अत्य नीक वच उक्त चेत्-मुहुः-क्षन्तव्यं, क्षमासागरा यूयं,-येषा चेतसि मोहमाधुर्यता-भावमालिन्य तत्र, स्वबुद्धिकल्पनानिर्मित तत्त्व-न-समत, देवमदिरे सायुधे-न-गतव्य, धर्मविरहिताना जीवाना पदे-पदे दुःखसपदः,-सुभातरेपि नास्ति कल्याण

८ जिनबिंबकारिणे शिल्पकाराय-येन-अल्पमूल्य दत्त-परमार्थनीत्या तेन भगवति-अप्रीतिरुत्पादिता, युष्मासु दत्तसेनाजलिरह-किंचिद्-विनयामि —अहो! महता महत्त्व-ये-विपत्तिकालेपि-धर्म-न-त्यजंति,-धर्मकर्मणि अनुत्साहएव प्रमादः,-शक्तौ सत्या-या-उपेक्षा-सैव दुःखमूला-प्राणातेपि प्रेक्षावता धर्ममालिन्य-न-कार्यं,—

९ देवाः कति रूपाणि विकुर्वंति, कतिविधा वेदना नारकाणां, कति द्वीपसमुद्राः किंसस्थानाः, जंबूद्वीपः किदृग् सस्थानः,-तत्र कति नद्यः, ससारसमापन्ना जीवाश्चतुर्विधाः, अवसर्पिण्या षष्ठारकः कीदृशः, तत्र नरा कीदृशाः,-तेषां किमायुः? किं देहमानं?

१० जीवः कस्मिन् समये-अनाहारकः-आहारको-वा,-कति देव-

लोकाः? कति-नरकवासाः? दुर्जननागुरासु पतितः कः सुख प्रपन्नः, इह जगति लघुरपि जनः महता ससर्गेण महिमान कलयति,-अज्ञात पारपर्यं वाक्य जने उपहासाय जायते, प्रमदासु अतिप्रसंगो-न-कार्यः—

११ यो-मुक्तिं गत्वा पुनः ससार समुपैति-स-कथं मुक्तः,-अटन्तः सन्तः साधवः पूज्यते, गुणप्रकर्षादेव जनः ख्यातिं आप्नोति, असत्यवादिना यशो-न-जायते, दुर्जनससर्गात् पदेपदे मानहानिः,-वाक्पारुष्य महद्दुःखाय जायते जनाना,-यत्रानिश क्लेशोत्पत्तिस्त त्स्थान दूरतः परिवर्जयेत्—

१२ देहे-आरोग्य चेत्-महदैश्वर्यं,-यः कातासु कनकेषु च-न-लुब्धस्तस्य-अखिलसिद्धय',-श्रमणोपासकैः पंचदशकर्मादाननिर्वृत्तिः कार्या, आदित्याद्या ग्रहाः शुभाशुभस्य द्योतका-नतु स्वय कस्याप्यनिष्टं कुर्वंति, जलेन-अखिलदेहस्य यत्स्नान तद् बाह्यस्नान, परमार्थदशाया -सएव-स्नापितः यः-पुनः कर्मपकेन-न-लिप्यते,—

१३ नहि-स्वस्य बलविकलतामाकलय्य-बलियसःप्रभोः शरणाश्रयण दोषपोषाय, ततस्ते विबुधाः स्वकीय स्वकीय मदिर जग्मुः-सजातभयः सः-मत्पुरा बद्धाजलिर्विज्ञपयति, इच्छानुरूपो विभवः कस्यापि -न-सजातः-अतो मूर्छा-त्यक्त्वा-धर्मकर्मणि यत्नो विधेयः,—

१४ स्वकुशलोदतमयं पत्र लघु-प्रेक्षणीय, पत्रवाचनविरतौ-उद्गतरोमाचकञ्चुकोह-किं-लिखामि-युष्माक कलाकौशल्य, अहं-तु -विद्या-कामये-न-योषितं, अन्त'पटेसति स्त्रीणा धर्मकर्मणि महानतरायः, अमुक सुत सुलक्षण जानामि. यत्र-इभाअपि दृष्टिपथं नायाति-मशकाना-तु-का-कथा?

१५ शृणुत! भो! पौराः!! अयं शृगारसुन्दरीघातको वधस्तभ नीयते, तद्-यदीदृश-कर्म-अन्योपि करिष्यति, एतादृगमेव-दड-लप्स्यते, येन जातेन वशः समुन्नतिं-न-प्राप्तस्तेन सूनुना किं?

पैतृक द्रव्य-मया-न-लब्ध, वय-तु-अकिंचनाःस,-पण्यवीथिकायां गतुकामा वय कार्य चेद्वक्तव्य,-इह जगति ज्ञान पर भूषण,—

१६ श्रीमद्हेमचद्रसूरे. प्रौढि वाक्यरचना दृष्ट्वा-विसयस्मेराननाविबुधजनसमूहाः, पर्वतिथौ व्रत गृण्हति धार्मिकाः, सत्वानलंविना-नास्ति कातरत्व,-न-विना-परापवादेन रमते दुर्जन ,-जन्मजरामरणसकुल-ससारवास-ससरन्-जीवो भवाद्भवातरमुपैति, अप्राप्तार्हतधर्मोय-कष्टपरपरा लेभे,—

१७ कुत्र वास. ? किमभिधान श्रीमता, ? कान्यक्षराण्यलकृतानि स्वनाम्ना ? किमधीत शब्दशास्त्रे-तर्कशास्त्रे-वा, ? येन शब्दशास्त्रं नाधीत सभातरे-कि-वक्ता स:,-यूय परीक्षायामुत्तीर्णाः-कि ? का-शका-अत्र ? सएवाय किं-न-पश्यथ ? परिज्ञात मया-युष्मद्रहस्य,-अवगत-वा-श्रीमता स्वात,—

१८ आकाशे कर्ण दत्वा देववाणी श्रुता, नूपुराणारवेण-अनुमीयते योपिदागमन,-तत्प्रतिरूपकरूप-नाद्यापि दृग्गोचरीभूत, वन्हिजलभूमयो विधिनोपसेविताएव सौख्यावहा',-एतत्तु-अस्माभिरपि स्वीक्रियते, कपाट पिधेहि,-अतद्वारे शस्त्र केन निहित. उपानहः कुत्र सति,-न-अज्ञानात् पर' शत्रु'-कर्मणा विचित्रा गति.,—

१९ जैनमते तावत् सप्त-पदार्थाः—जीवाजीवाश्रवबधसवरनिर्जरामोक्षाश्च, निक्षेपश्चतुर्धा -नामस्थापनाद्रव्यभावाः,-तत्वार्थश्रद्धान-सम्यग्दर्शन, गुणपर्यायवद्द्रव्य,-सद्द्रव्यलक्षण,-उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत्—तदभावाव्यय नित्य.-जयति रागद्वेपादिशत्रून् इतिजिनः-जिनप्रकाशित दर्शन, जैनदर्शन अर्हत्प्रवचन जैनशासन-वा,—

२० स्वपरव्यवसायि-ज्ञान-प्रमाण, जैनमते प्रमाण द्विविध, प्रत्यक्ष परोक्ष च,-स्पष्ट प्रत्यक्ष, अनुमानाधिक्येन प्रकाशनमस्पष्ट,-स्मरण-प्रत्यभिज्ञान-तर्कानुमानागमभेदत.तत्पचप्रकार,-मतिश्रुतावधिमन पर्यायकेवलानि-ज्ञान, आद्य परोक्ष, प्रत्यक्षमन्यत्,-द्विवि-

धोऽवधिः,-भवप्रत्ययो नारकदेवाना, यथोक्तनिमित्तषड्विकल्पः शेपाणा,-रूपिष्ववधेः,-सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य,—

२१ जबूद्वीप-लवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः-तन्मध्ये मेरुनाभिवृत्तो, योजन-शतसहस्र-विष्कभो जबूद्वीपः,-द्विर्धातकीखंडे-पुष्करार्द्धे च,-प्राग्मानुष्योत्तरान्मनुष्याः,-आर्या-म्लेच्छाश्च,-चेतनालक्षणो जीवः,-धर्माधर्माकाशपुद्गला अजीवाः—

२२ पृथिव्यादीनां जीवत्व-यथा-सात्मिका विद्रुमशिलादिरूपा पृथिवी,-छेदे-समानधातूत्थानाद् अर्शोकुरवत्,-भौम-अभोपि-सात्मकं, क्षतभूसजातीयस्य स्वभावस्य संभवात्-शालूरवत्,-आतरिक्षमपि सात्मक, अभ्रादिविकारे स्वतः संभूयपातात्-मत्स्यादिवत्,—

२३ तेजोपि सात्मकं, आहारोपादानेन-वृद्ध्यादिविकारोपलंभात्-पुरुषांगवत्, वायुरपि-सात्मकः, अपरप्रेरितत्वे-तिर्यग्गतिमत्त्वात्-गोवत्,-वनस्पतिरपि सात्मकः-छेदादिभिर्ग्लान्यादिदर्शनात्-पुरुषागवत्, केषाचित् स्वापांगनोपश्लेषादिविकारात्-च,-अपकर्षवतश्चैतन्याद्-वा,-सर्वेषा सात्मकत्वसिद्धिः-आप्तवचनाच्च,-त्रसेपु-च-कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादिषु-न-केषाचित्सात्मकत्वे-विवादः—

२४ सन्मूर्छनगर्भोपपाता-जन्म,-जरायुजाण्डपोतजाना गर्भः,-नारकदेवानामुपपातः-रत्नशर्करावालुकाधूमतमोमहातमःप्रभा-भूमयः, सप्ताधोधःपृथुतराः,—

२५ द्वयोः स्वर्गयोर्विग्रहपरिचारणा, शेषा स्पर्शरूपशब्दमनःप्रविचारा-द्वयोर्द्वयोः-ज्योतिष्काः सूर्याचद्रमसौ-ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च, जीवा द्विधा, मुक्ता. ससारिणश्च, सकलकर्मक्षयेण-सिद्धा-मुक्ताः, कर्मप्रतिबद्धाः ससारिणः,-जीवाना शरीर पचधा,-औदारिकं, वैक्रिय, आहारक, तैजस कार्मण-च,—

२६ प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपण-हिंसा, मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगा-बधहेतवः, प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः-आर्त्त-

रौद्र-धर्म-शुक्लानि-ध्यान,-परे-मोक्षहेतू,-सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलान् आदत्ते-स-बधः-आश्रवनिरोध सवर',—

२७ हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रत,-मूर्छा-परिग्रहः-निःशल्यो व्रती,-अगारी,-अनगारश्च,-अणुव्रत'-अगारी,-महाव्रतः -अनगारः,-सामायिक-छेदोपस्थाप्य-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसपराय -यथाख्यातानि-चारित्र, पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रंथ-स्नातका-निर्ग्रंथाः,—

२८ सर्वमस्ति स्वरूपेण,-पररूपेण नास्ति च,
अन्यथा सर्वभावाना,-मेकत्व सम्प्रसज्यते, १
एको भाव सर्वथा येन दृष्ट-सर्वे भावाः सर्वथा तेन दृष्टाः
सर्वे भावा सर्वथा येन दृष्टा एको भाव-सर्वथा तेन दृष्ट-, २
नित्य सत्वमसत्व वा,-हेतोरन्यानपेक्षणात्,
अपेक्षातोहि भावाना-कादाचित्कत्वसभव-–३

[स्याद्वादसिद्धिः]

२९ स्यादस्ति-एव सर्वं, इतिविधिकल्पनया-प्रथमो भगः-
स्यान्नास्ति-एव सर्वं, इतिनिषेधकल्पनया-द्वितीयो भगः
स्यादस्त्येव-स्यान्नास्त्येव-सर्वं, इतिक्रमतो विधिनिषेधकल्पनया-तृतीय —
स्यादवक्तव्यमेव सर्वं, इतियुगपद्विधिनिषेधकल्पनया-चतुर्थः
स्यादस्त्येव-स्यादवक्तव्यमेव सर्वं, इतिविधिकल्पनया-युगपद्विधिनिषेधकल्पनया-च-पचम —
स्यान्नास्त्येव-स्यादवक्तव्यमेव सर्वं,-इतिनिषेधकल्पनया-युगपद्विधिनिषेधकल्पनया-च-षष्ठः—
स्यादस्त्येव-स्यान्नास्त्येव-स्यादवक्तव्यमेव सर्वं, इतिक्रमतो विधिनिषेधकल्पनया-युगपद्विधिनिषेधकल्पनया-च सप्तम —

[इति स्याद्वादसिद्धि]

३० [अन्ययोगव्यवच्छेद-द्वात्रिंशिकाया-श्रीमद्धेमचद्रसूरय' ।]

आदीपमाव्योमसमस्वभाव,
स्याद्वादमुद्रानतिभेदि-वस्तु.
तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्यद्
इतित्वदाज्ञाद्विपता प्रलापाः-१

केचिद्-वदंति, जगतः कोपि-कर्त्ता-विद्यते, स एकः-नित्यः-विभुः-स्ववशश्च-पर-तदसगत, ईश्वरः स्वय-अशरीरत्वात् कर्त्ता-कथं सभवेत्—?

३१-[पड्दर्शनसमुच्चये-हरिभद्रसूरयः-]

[जैनमत,]

जिनेंद्रो देवता तत्र, रागद्वेपविवर्जितः
हतमोहमहामल्लः, केवलज्ञानभास्करः १
सुरासुरेंद्रसपूज्यः, सद्भूतार्थोपदेशकः
कृत्स्नकर्मक्षय कृत्वा, सप्राप्तः परमं पदं, २
जीवाजीवौ तथा पुण्य, पापमाश्रवसवरौ,
वधश्च निर्जरामोक्षौ, नव तत्त्वानि तन्मते, ३
तत्र ज्ञानादिधर्मेभ्यो, भिन्नाभिन्नो विवृत्तिमान्,
शुभाशुभं कर्मकर्त्ता,-भोक्ता कर्मफलस्य च, ४
चैतन्यलक्षणो जीवो, यश्चेतद्विपरीतवान्,
अजीवः स समाख्यातः, पुण्य सत्कर्मपुद्गलाः ५
पापं तद्विपरीत तु,-मिथ्यात्वाद्याश्च हेतवः
यस्तैर्बंधः स निज्ञेयः,-आश्रवो जिनशासने, ६
संवरस्तन्निरोधस्तु,-वंधो जीवस्य कर्मणः
अन्योन्यानुगमात्कर्म-सवधो यो द्वयोरपि, ७
बद्धस्य कर्मणः साटो-यस्तु सा निर्जरा मता,
आत्यंतिको वियोगस्तु-देहादेर्मोक्ष उच्यते. ८
एतानि नव तत्त्वानि,-यः श्रद्धत्ते स्थिराशयः
सम्यक्त्वज्ञानयोगेन,-तस्य चारित्रयोग्यता, ९

तथा भव्यत्वपाकेन,-यद्येतत्त्रितय भवेत्,
सम्यग्ज्ञानक्रियायोगात्,-जायते मोक्षभाजन, १०
प्रत्यक्ष च परोक्ष च-द्वे प्रमाणे तथा मते,
अनतधर्मक वस्तु-प्रमाणविषयस्त्विह, ११
अपरोक्षतयार्थस्य,-ग्राहक ज्ञानमीदृश,
प्रत्यक्षमितरद्ज्ञेयं,-परोक्षग्रहणेक्षया, १२
येनोत्पादव्ययध्रौव्य-युक्तं यत्सत्तदिष्यते,
अनतधर्मक वस्तु,-तेनोक्त मानगोचर १३
जैनदर्शनसक्षेप,-इत्येषः कथितोनघः
पूर्वापरविरोधस्तु-यत्र क्वापि-न-दृश्यते, १४

३२-[शार्दूलविक्रीडित]

क्ष्माभृद्रंककयोर्मनीषिजडयोः सद्रूपनिरूपयोः,
श्रीमद्दुर्गतयोर्बलाबलवतोर्नीरोगरोगार्त्तयोः,
सौभाग्यासुभगत्वसगमजुषोस्तुल्येपि नृत्वेंतर,
यत्तत्कर्मनिबधन तदपि-नो-जीवविना युक्तिमत् १

३३ पूर्वस्मिन् काले वनौकसोऽभवन् मुनयः-साम्रत नगरनिवासिनः सजाताः,-न-विद्यतेधुना तादृश ज्ञान-शारीरिक बल च, को-जानाति भाविनोनर्थान ? जरया क्षीयते शरीर, सकटे पतिते ज्ञानिदृष्ट प्रमाण, श्रद्धाविहीनो यद्यद्धर्मकृत्य करोति तत्सर्वं भस्मनिहुत घृतमिव निष्फल, नृस्पृह' जन. तप. कुर्वन् अस्मिन् परजन्मनि-वा -सौख्य लभते मोहाधकारे स्थित जन प्रबोधदीप' नितरा सौख्यप्रद', गतस्पृहाणां मुनीना निस्पृहत्वमेव गौरवास्पद, विविधलब्धि सपन्ना मुनय साम्रत क? पुण्यबलात्-तीर्थंकरत्व,-चक्रित्व,-नृपत्व, च-लभ्यतेचेत्-धनाढ्य-रतिसुख-अशन-पान-किदुष्कर ? श्वभ्रद्वाराणि परदारसेवा-मासादन-आखेटक-कर्म-च, द्रव्यार्थं वारागना नर रजयति पर-न-तत्र स्नेहलेश', सुरापानात् पारवश्य विकलत्वं च जायते.

३४ धनलिप्सुर्जनः-न-जानाति पितर भ्रातर सुत वा, वस्त्रावृतोपि शीतज्वरी शीतेन पीड्यते, तद्वत्-धनावृतोपि-धनतृष्णया पीड्यते. शिलाधिरूढो जनः-यथा-जलान्तरे निमज्जति, पापाश्रितो भवार्णवे निमज्जति, धर्मकर्मणि दक्षत्व सौख्यावह, इद जैनमतपताकाभिधान पुस्तकं मया शांतिविजयेन मुनिना निर्मित अस्मिन् किमपि न्यूनाधिक्य,-शास्त्रविरुद्ध,-वा-तत्सकेतसूचक पत्र विद्वद्भिर्मत्समीपे प्रेष्य, द्वितीयसस्करणे प्रत्युपकृतिं मत्वा सस्करण करिष्ये.—

३५-[उक्तं च वीतरागस्तवे-हैमचद्रसूरिणा,-]
(अनुष्टुप्-वृत्तम्)

अदेहस्य जगत्सृष्टे-प्रवृत्तिरपि नोचिता,
नच प्रयोजन किंचित्-स्वातंत्र्यात्-न-पराज्ञया. १
क्रीडया चेत्प्रवर्तेत,-रागवान् स्यात् कुमारवत्,
कृपया चेत्सृजेत्तर्हि-सुख्येव सकल सृजेत्-२
दुःखदौर्गत्यदुर्योनि-जन्मादिक्लेशविह्वल,
जन-तु-सृजतस्तस्य-कृपालोः-का-कृपालुता. ३

कर्मापेक्षया चेत्-यदि-ईश्वरेण-इद जगत् निर्मित,-तदास्मदादिवत्-सः न-स्वतंत्रः-कर्मजन्ये वैचित्र्ये सति कर्मप्राधान्यं वाच्यं,—

३६-[नास्तिकमतं,-]

लोकायता वदन्त्येव,-नास्ति देवो-न-निर्वृतिः,
धर्माधर्मौ-न-विद्येते,-न-फलं-पुण्यपापयोः १
एतावानेव लोकोय,-यावानिंद्रियगोचरः
भद्रे वृकपद पश्य,-यद्वदंति बहुश्रुताः, २
तस्माद्दृष्टपरित्यागाद्-अदृष्टे च प्रवर्तनं,
लोकस्य तद्विमूढत्व, चार्वाकाः प्रतिपेदिरे,-३
पिब खाद च-जातशोभने!-यदतीत वरगात्रि! तन्न-ते,
नहि भीरु! गत निवर्तते,-समुदयमात्रमिद कलेवर,-४

३७-[वैशेषिकमत,-]

द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्तैव पदार्थाः,-पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि-नवैव-द्रव्याणि,-गंधवती पृथिवी,-सा-द्विधा, नित्या-अनित्या च,-यदि नित्या-तर्हि अनित्या कथं? यदि-अनित्या तर्हि नित्या कथं? यदि नित्यानित्यरूपौ द्वौ -धर्मौ-परस्परविरुद्धौ-अपि-एकस्मिन् वस्तुनि-भिन्नाभिन्नापेक्षया स्वीक्रियेते चेत्-स्याद्वादन्यायस्य स्वयं सिद्धिः समापन्ना,—

३८ ननु-अवच्छेदकावच्छिन्नयोः को भेदः? इतिचेत् श्रूयतां! यद्धर्मावच्छिन्नं लक्ष्यं-स धर्मो लक्ष्यतावच्छेदकः-यो धर्मो यस्यावच्छेदकः-स तद्धर्मावच्छिन्नः (तथाच) लक्ष्यतावच्छेदकं-पृथिवीत्वं-चेत्-लक्ष्यता-पृथिवीत्वावच्छिन्ना,—

३९ अव्याप्ति-अतिव्याप्ति-असंभवदोषत्रयशून्यं लक्षणं, लक्ष्यैकदेशावृत्तित्वं,-अव्याप्तित्वं, यथा-नीलरूपत्वं गोर्लक्षणं चेत्-श्वेत गवि-नीलरूपत्वस्याभावात्-अव्याप्तिः,—

४० अलक्ष्ये लक्षणवृत्तित्वं,-अतिव्याप्तित्वं,-यथा-शृंगित्वं गोर्लक्षणं चेत् लक्ष्यभूतगोभिन्नमहिष्यादौ-अतिव्याप्तिः-तत्रापि शृंगित्वस्य -विद्यमानत्वात्—

४१ लक्ष्यमात्रे क्वापि-लक्षणासत्वं-असंभवत्वं-यथा-एकशफत्वं गोर्लक्षणं चेत्-अत्र-गोसामान्ये-द्विशफत्वेन-एकशफत्वाभावात्,—

४२ अनुमितिकरणं-अनुमानं, परामर्शजन्यं ज्ञानं अनुमितिः,-व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः,-साहचर्यनियमो व्याप्तिः,-यथा -वह्निव्याप्यधूमवान् अयं पर्वत इति ज्ञानं परामर्शः,-तज्जन्यं पर्वतो वह्निमान् इतिज्ञानं अनुमितिः, पर्वतो वह्निमान् धूमवत्वात्-यत्र-यत्र -धूमस्तत्र तत्राग्निः व्याप्तित्वात्, व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता, व्याप्यो नाम-व्याप्त्याश्रयः-स च धूमादिरेव,-तस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता-इत्यर्थः—

४३ पर्वतोग्निमान्-धूमवत्त्वात्-यो यो धूमवान् स सोग्निमान् यथा महानसं, तथाचाय-तस्मात्तथेति, अनेन प्रतिपादितात् लिंगात् परोप्यग्निं प्रतिपद्यते, प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनानि-पंचावयवाः,-पर्वतोग्निमान्. इतिप्रतिज्ञा, धूमवत्त्वादिति हेतुः,-यो यो धूमवान् स सोग्निमान् इत्युदाहरण, तथाचाय-इत्युपनयः,-तस्मात्तथेति-निगमन,—

४४ लिंगं-त्रिविध, अन्वयव्यतिरेकि-केवलान्वयि-केवलव्यतिरेकि-,-च-अन्वयेन-व्यतिरेकेण च-व्याप्तिमत्-अन्वयव्यतिरेकि, यथा-वन्हौ-साध्ये धूमवत्त्व, यत्र धूमस्तत्र-वन्हिः,-यथा-महानसं, यत्र वन्हिर्नास्ति-तत्र धूमोपि नास्ति, यथा जलह्रदः,-इतिव्यतिरेकव्याप्तिः—

४५ अन्वयमात्रव्याप्तिक केवलान्वयि,-यथा-घटोभिधेयः प्रमेयत्वात्-पटवत्-इत्यत्र प्रमेयत्वाभिधेयत्वयोर्व्यतिरेकव्याप्तिर्नास्ति-सर्वस्यापि प्रमेयत्वात्-अभिधेयत्वाच्च,—

४६ व्यतिरेकमात्रव्याप्तिक-केवलव्यतिरेकि-यथा-पृथिवी-इतरेभ्यो भिद्यते, गधवत्त्वात्,-यद्-इतरेभ्यो-न-भिद्यते-न-तत्-गधवत्,-यथा जल, नचेय तथा,-तस्मान्न-तथेति, अत्र यद् गधवत् तद् इतरेभ्योपि भिन्न-इत्यन्वयदृष्टातो नास्ति, पृथिवीमात्रस्य पक्षत्वात्,—

४७ सदिग्धसाध्यवान् पक्षः,-यथा-धूमवत्वे हेतौ पर्वतः,-निश्चितसाध्यवान् सपक्षः,-यथा-तत्रैव-महानस,-निश्चितसाध्याभाववान् विपक्षः-यथा-तत्रैव जलह्रदः,—

४८ उपमितिकरणमुपमान -सज्ञासज्ञिसबंधज्ञानमुपमितिः, तत्करणं-सादृश्यज्ञानं,-तथाहि -कश्चिद्-गवयपदार्थमजानन्-कुतश्चिदारण्यकपुरुषाद् गोसदृशो-गवय इतिश्रुत्वा वन गतः,-वाक्यार्थं स्मरन् गोसदृशं पिंड पश्यति. तदनतर गवयशब्दवाच्योयं-इत्युपमितिरुत्पद्यते-इत्युपमान.-शाब्दिकप्रमाण लक्षयति,-आप्तवाक्य शब्दः-आप्तस्तु यथार्थवक्ता. वाक्य पदसमूहः,-इति वैशेषिकमत,—

४९ अस्मिन् जगति दर्शनानि-षडेव.

[यदुक्त-हरिभद्रसूरिणा-षड्दर्शनसमुच्चये -]
बौद्ध नैयायिक साख्य,-जैन वैशेषिक तथा,
जैमिनीय च नामानि,-दर्शनानाममून्यहो,- १

५० [राजशेखरसूरिकृतषड्दर्शनसमुच्चये-]
जैन सांख्य जैमिनीय, योग वैशेषिक तथा,
सौगत दर्शनान्येव नास्तिक-तु-न-दर्शन, १
धर्मप्रियः सर्वलोके-त-नूयुर्दर्शनानि षट्
तेषा-लिंगे च-वेषे-च-आचारे दैवते गुरौ, २
प्रमाणतत्त्वयोर्मुक्तौ, तर्के भेदो निरीक्ष्यते,
मुक्तिरष्टागयोगेनेत्येतत्साधारण वच' ३

५१ केचित्-मतावलंबिनो देहाद्-बहिरात्मतत्त्व मन्यते, पर तदसमीचिन, यत्र-यो-दृष्टगुण'-स-तत्रैव, कुंभादिवत्, स्वयसिद्धः -नात्र सशयः—

[समासेय-सस्कृतवाक्यमंजरी]

[जुदे जुदे-कवियोंके-बनाये हुवे स्तवन और-उपदेशिक पद -]

१ [रागिनी काफी-ताल-दीपचदी,]
पथीडा पथ चलेगो, प्रभु भजले दिन चार,
जूठी काया जूठी माया, जूठो सब परिवार-पंथीडा. १
बालपनो-हस-खेलगमायो, जोबन मायाजाल,
बुढापनमे धर्म-न-पायो, पिछे करत पोकार, पथीडा. २
क्या ले-आयो क्या लेजासी, पापपुन्य दोय लार,
दया-मयाकर पासएवती, अब तेरो आधार, पथीडा. ३

२ [उपदेशिक पद-रागिनी-भैरवी]

कौन किसीका मीत, जगतमे कौन किसीका मीत, ए-तर्ज,
मात तात तिरिया सुत बांधव, कोई-न-रहत निचिंत, जगतमे. १
सबही अपने स्वारथके है, परमारथ नही प्रीत,
स्वारथ विनसे सगो नही होवे, मीता मनमे चिंत, जगतमे. २
ऊठ चलेगो आप अकेलो, तूही-तू-सुविहित.
को-नही-तेरा-तूं-नही किसका, येहि अनादि रीत, जगतमे. ३
ताते एक भगवान भजनकी,-राखो मनमें नीत,
ज्ञानसार प्रभु राग भैरवी, गायो आतमगीत, जगतमे. ४

३ [आत्मबोधपर-गजल -]

मदमोहकी-शराब-पीइ, खराब हो रहा,-ए-तर्ज,
बकता है-बेहिसाब क्या ? किताब क्या कहा, मदमोहकी. १
दरियाव भरापुर लहेर, मेहर नजरकी,—
अलगर्ज-जो-रहा-तो, यामे कौन है मजा,-मदमोहकी. २
इक दिलकी चश्म खोल, भस्मकर्मकी करो,
जप जाप हल्क बीच, खल्क नजरभी करो, मदमोहकी. ३
मगरूर मनकों तोड, जोड आत्मकों सजो,
गुरुज्ञानके प्रसाद भूल, भर्मको तजो, मदमोहकी. ४

४ [उपदेशिक पद-कमाच]

सुनमन होनहार-न-टरे,-सुनमन, ए-तर्ज,
चित्त कछु और विचारत है नर, औरही और बने, सुन. १
उपर बाज-अर-नीचे पारधि, चिडिया कैसे बचे, सुन. २
होनहार वश डसो पारधि, शर सिंचाणो मरे, सुन. ३
होत पदारथ भावी भैया ! क्यौं-मन-सोचकरे, सुन. ४
उदयकर्मगत देख जगतकी,-जिनवर क्यौं-न-भने, सुन. ५

५ [रागिनी काफी, ताल दीपचदी]

ऐसी विध तेने पाइरे,-कछु करनी करजा, ऐसीविध.
उत्तम नरभव जैनधर्म रुचि,
सुगुरुसेवा सुखदाइरे, जसु पातक झरजा, ऐसीविध. १
हिंसा जुआ जूट-परतिरिया,—
परिग्रहमढफल चोरीरे, घट जावेगा दरजा, ऐसीविध. २
तपजप सयम शील दान कर,
आनद सुमति सुहाईरे, भवजलनिधितरजा. ऐसीविध ३

६ [भैरवीकी ठुमरी,]

वीरप्रभु तेरी दोस्तिसें-मेरी सुमतासखीमहेरवानभईरे —
वीरप्रभुतेरी दोस्तिसे, ए-तर्ज,
आप-न-आवे बोध पठावे,
तेरी सुरत कुरबान भइरे, वीरप्रभु. १
शासननायक-याही-अरज है,
दीजे दरस वडी बेर भईरे, वीरप्रभु. २
आस दासकी पूरण किजे,
चरन-शरन लपटाय रहीरे वीरप्रभु. ३

७ [उपदेशिक पद,]

उठोने मेरे आतमराम, जिनमुख जोवा जाइयेरे,
उठोने मेरे,-ए-तर्ज,—
जिनजीको दर्शन-छे-अतिदोहिलो, ते-किम सोहिलो जाणोरे,
वारवार मानवभव एहवो, मिलवो मुश्किल टाणोरे, उठोने १
चार दिवसनो चटको मटको, देखिने मत राचोरे,
विणसी जाता वार-न-लागे, कायागढ-छे-काचोरे, उठोने. २
अनतगुणे भरियो है ! जिनवर, पूरवपुन्ये पायोरे,
एहने देखी दिलमे आनंद, कर-तु-सदा सवायो, उठोने. ३

हीरो हाथ अमोलक पायो, मूढपणे मत गमजोरे,
सहज सलूणा पासजिनदसु, राजी हुई चित रमजोरे, उठोने. ४
मनमानीने मेरा चेतन,-करजे सुकृत कमाईरे,
लाभउदय जिनचदलहीने, कर-तुं-सिद्ध वधाईरे, उठोने. ५.

८ [तीर्थकर ऋषभदेवका स्तवन, राग केदारा,]

भज मन! नाभिनदन देव,-भजमन! ए-तर्ज.
ध्यान मुनिजन अटल धारे,-सुरनर-करत है सेव,—
भजमन नाभिनदन देव. १
चक्री भूपति नडे सुरपति, वासुदेव वलदेव,
नमत देवा-रुद्र-नारद, शेप मणिधर सेव, भजमन. २
अशरण शरणहे विरुदजाको, भक्तिवछलदेव,
राजसिंह-प्रभु-ऋषभ सिरपर, नाथहे नितमवे, भजमन. ३

९ [झींझोटीकी-ठुमरी]

घडीघडी पलपल छिनछिन निशदिन प्रभुजीको समरन करलेरे,
घडीघडी-पलपल,-ए-तर्ज.
प्रभुसमरन सन पाप कटत है, अशुभकरम सन हरलेरे, घडी. १
मनवचकाय लगी चरननित, ज्ञान हियेमे धरलेरे, घडी. २
दौलतराम प्रभुगुन गावे, मनवछितफल वरलेरे. घडी. ३

१० [कहरवेकी-ठुमरी]

में-मुखदेख्यो गोडी पारसको, मेरे जनम सफल भयो आज,
में-मुख देख्यो-ए-तर्ज.
अन्यदेवकों बहुत-मे-ध्यायो, किन सें-न-सरीयो मेरो काज,
मे-मुख देख्यो. १
भवभव भटकत सरने-मे-आयो, अन-तो-रखो मेरी लाज,
में-मुख देख्यो. २
कमठ हरावन नागकों तारन, सभलाव्यो नवकार,
मे-मुख देख्यो. ३

रूपचद कहे नाथ निरजन, तारण तरण जहाज,
में-मुख देख्यो. ४

११ [कालिंगडेकी-ठुमरी]

रहो-रहोरे जादव-दो-घडिया,
दो-घडिया अव चार घडिया, रहोरहोरे, ए-तर्जे,
प्रेमका प्याला बहुत मसाला, पीवत मधुरीसेलडिया, रहोरहोरे. १
हाथसे हाथ मिलाय दियो सही, फुलडा बिछाउ सेजडिया, रहोरहोरे.२
राजुल छोड चले गिरनारी, दीपत मोहन वेलडिया, रहोरहोरे. ३
रूपचद कहे नाथ निरजन, मुक्तिवधू गुणवेलडिया, रहोरहोरे. ४

१२ [वहुरवेकी-ठुमरी,]

समज परी मोहे समज परी, जगमाया अबजुठी, मोहे समज,
काल काल-तु-क्या करे मूरख, नाही भरोसा पल एक घडी,
जगमाया अब जुठी, मोहे समज. १
गाफिल छिनभर नाही रहो तुम, शिरपर घूमे तेरे कालअरि,
जगमाया अबजुठी, मोहे समज २
चिदानद-ये-बात हमारी प्यारे, मानो तुम चितमांहिं खरी,
जगमाया अब जुठी, मोहे समज. ३

१३ [उपदेशिक-पद,-]

[रागिनी-क्माच,]

अवसर वेरवेर नही आवे, अवसर, ए-तर्ज.
ज्यू-जाने-त्यू-करले भलाई, जनम जनम सुखपावे, अवसर. १
तनधन जोबन सबही जुठो, प्राण पलकमे जावे, अवसर. २
तनछुटे धन कौन कामको, काहको कृपण कहावे, अवसर. ३
जाके दिलम साच वसत है,-ताकों जूठ-न-भावे, अवसर. ४
आनदघन-प्रभु-चलतपथमे,-समर समर गुणगावे-अवसर. ५

१४ [उपदेशिक-पद,]

रे! जीव जिनधर्मकिजिये-धर्मना चारप्रकार.
दान शियल तपभावना, जगमा-ये-तत्वसार.-रे! जीव, १
वरसदिवसने पारणे, आदीश्वर सुखकार.
इक्षुरस वहेरावियो, श्रीश्रेयांस कुमार, रे! जीव, २
चंपाद्वार उघाडिया, चालणी काढयो नीर,
सती सुभद्रा जशलियो, शीले सुरगिर धीर, रे! जीव, ३
तपकरी काया शोषवी, अरस निरस आहार,
वीरजिनंद वखाणियो, धन-धन्नो अणगार, रे! जीव, ४
अनित्यभावना भावतो, धरतो निरमल ध्यान,
भरत आरीसा भुवनमें, पाम्यो केवलज्ञान, रे! जीव, ५
जैनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल, छांह,
समयसुंदर कहे सेवता, मुक्तितणा फल त्याह,-रे! जीव. ६

१५ [रागिनी पीलु-ताल-दीपचदी,]

सोवे-सोवे-सारीरेन गुमाई, वेरन! निद्रा-तु-कहांसें आई,
निद्रा कहे-में-बाली भोली, बडे बडे मुनिजनकों नाखु-मे-ढोली, १
निद्रा कहे-में-यमकी दासी, एकहाथमे मुक्ति दुजे हाथ फासी, सोई २
समयसुदर कहे सुनो भाई साधु-आप मुवे सारी डुबगई दुनिया, सोई, ३

१६ [चद्रप्रभजिन-स्तवन,-]

चंदाप्रभुजीसें ध्यानरे-मेरी लागी लगनवा,—
चदाप्रभुजीसें-ए-तर्ज.
लागी लगनवा छोडी-न-छुटे, जब लगे घटमे प्राण रे,
मेरी लागी लगन वा,-चदाप्रभुजीसें, १
दान शियल तप भावना भावो, जैनधर्मप्रतिपाल रे,
मेरी लागी लगनवा,-चदाप्रभुजीसें, २
हाथजोडकर अरज करत है-वदत शेठ खुशाल रे,
मेरी लागी लगनवा, चदाप्रभुजीसें, ३

१७ [ठुमरी,-]

तनमन सारेजी सामरिया, तुमपर वारनारे,-ए-तर्ज.
बालापनमे कमठ निवार्यो, अगन जलतो नाग उनार्यो,
वैरी कर्मन मार्यो, तपबल धारनारे, तनमन सारेजी, १
जीवाजीव दरखबतलाये, सबजीवनके भरममिटाये,
शिवमारग दरसाये, दुखपरिहारनारे, तनमनसारेजी, २
स्याद्वादसतभग सुनाये, नयप्रमाण निश्चयकरवाये,
जूठे मत किये खडन, सतको धारनारे,-तनमनसारेजी, ३
न्यामत जिनपारस गुनगावे, पुनपुन चरननशीशनमावे,
वीतराग सर्वज्ञ तुही, हितकारनारे, तनमनसारेजी, ४

१८ [ठुमरी,-]

वारीजाउरे सावरिया, तुमपर वारनारे,-ए-तर्ज.
समुद्रविजय राजाके नदा, शौरीपुर सोहे सुखकदा,
शिवादेवीके घरमे, झूले पारनारे, वारीजाउरे, १
श्रावनसुद पचमीदिनजाये, छपनदिगकुमरीहुलराये,
इद्रादिक सहु हर्ष बढाये, गीत सोहावनारे, वारीजाउरे, २
दीक्षा-ले-प्रभु-केवलपाये, अष्टकर्मको दूरहठाये,
रेवाचलपर मुक्त सिधाये, गमन निवारनारे, वारीजाउरे, ३

१९ [कमाचकी-ठुमरी,]

निठुर नेमपिया गये गिरनारीरे, वरशिवरमणी मोहे निवारीरे,-ए-तर्ज,
अष्टभवातर प्रीत पुरानी, नवम भवपिया तुमने निवारीरे, निठुर, १
मुज अबलाको दूरकरीने,-पशुवनपर तुम करुना विचारीरे, निठुर, २
सहसावन जइ सयम लीनो, पचमहाव्रतभये तपधारीरे, निठुर, ३
नेम-राजुल-दोय मुक्ति सिधार्ये, पहलीनेम-प्रियानिजतारीरे, निठुर ४
नेमपियाजी मोक्षमहलम,-पद्मोदयको हर्षहजारीरे, निठुर, ५

२० [भाटकी ठुमरी,-]

लगे छबनीकी यासे-भरभर दग निरखु. लगेछब, ए-तर्ज.

सिद्धारथ त्रिशलाके नंदन, पूजत हिये हरखु,
अन्यदेव तजसब चरनन-निज-तुमसें प्रेम रखु, लगेछन, १
अष्टद्रव्यशुचि हैमथालभर,-झारी जल झरखुं,
सुरधर गान नाटकनानाविध, सकल अग फरकु, लगेछन, २
वसुविध भवभवमे दुखदाई,-या-भयते लरकु,
श्रीजिनराज रतनचिंतामणि, याचक फल परखुं, लगेछन, ३

२१ [ठुमरी,-]

नींद उचट गई सगरी मोहकी,-मूरत निरखी, नींद उचट गई. ए-तर्ज.
नेमीश्वरके पद फरसत ही, पायो-मे-विसरामरी, नींद उचट गई, १
ध्यानारूढ निहार छबीकों, छुटत भवदुख धामरी, नींद उचट गई, २
मुनिजन याकों ध्यान धरतनित, पावतआतमरामरी, नींद उचट गई, ३

२२-[कमाचकी-ठुमरी,]

प्रभु भजले! मेरा दिल राजी-प्रभु,-ए-तर्ज,
आठ पहेरकी चौसठ घडिया, दोय घडिया दिलसाजी, प्रभु. १
दानपुन्य कछुकरनी करले!-मोहमायाकों त्याजी, प्रभु. २
आनदघन कहे समज समज मन, आखिर खोवेगा बाजी, प्रभु. ३

२३-[गजल,]

राजुल पुकारे नेमपिया,-ऐसी क्या करी,
मुजे छोडके चले हो,-चुक हमसें क्या परी, राजुल. १
हुई आसकी निराश,-उदासीनता घडी,
प्यारा वश नही हमारा, प्रीतम पीडमे पडी, राजुल. २
हमसें-रहा-न-जाय, प्रीतम तुम विना घडी,
सयम लिजिये दयाल, दया धर्म आदरी, राजुल. ३
निशदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी झडी,
मुनिचद विजय चरन कमल, चित्तमे धरी, राजुल. ४

२४-[सिद्धचक्रजीकी-लावनी,-]

जगतमें नवपद जयकारी, पूजता रोग टले भारी,

प्रथमपद तीरथपति राजे, दोष अष्टादशकों त्याजे,
आठ प्रातीहारज छाजे, जगत् प्रभु गुणभारे राजे,
अष्टकर्मदल जीतके-सकलरिद्धि थई आय,
सिद्धअनत नमु बीजेपद, एकसमय शिव जाय,
प्रगटभयो निजस्वरूपभारी, जगतमे नवपद जयकारी, १

सूरिसदमे गोयम-केशी, ओपमा चदसूरज जैसी,
उधार्यो-राजा-परदेशी, एक भवमाही शिवलेशी,—
चौथेपद पाठकनमु, श्रुतधारी उवझाय,
सर्वसाधु पचमपदमाही, धनधन्नो अणगार,
वखाण्यो वीरप्रभुभारी, जगतमे नवपदजयकारी, २

द्रव्यषटकी सरधा आवे, समसवेगादिक पावे,
विना-ये-ज्ञान नही किरिया, ज्ञानदर्शनथी-सबतरिया,
ज्ञानपदार्थ सातम, पदमे आतमराम.
रमता रहे अध्यातममाही, निजपद साधे काम.
देखता वस्तु जगतसारी, जगतमे नवपद जयकारी, ३

योगकी महिमा बहु जानी, चक्रधर छोडी सब नारी,
यतिदश धर्मकरी सोहे, मुनि श्रावक सब मनमोहे,
कर्मनिकाचित कापवा, तप कुठार करधार,
नवमापद-जो-करेक्षमासु, कर्ममूल कटजाय,
भजो नवपद जगसुखकारी, जगतमे नवपद जयकारी, ४

श्रीसिद्धचक्र भजो भाई, आचामल तप नव दिनठाई,
पापतिहु योगे परिहरज्यो, भवी श्रीपालपरे तरज्यो,
ओगर्णासें सतरा समे, जयपुर श्रीसुपास,
चैत्रधवल पुनमदिने, मुज सफल भई सब आस,
बालकहे नवपद छय प्यारी, जगतमे नवपद जयकारी. ५

२५-[कवि-सूरजमलजी-साकीन उदयपुर-मुल्कमेवाडकी
बनाइ हुइ-गुरुभक्तिपर-लावनी,]

विद्यासागर न्यायरत्न श्रीशांतिविजयजी बडे अणगार,
संयमलीनो आपने छोड्यो कुटुंब सब धन घरबार,
भावनगर गुजरातके माही शहरबडो भारी उत्तम,
धन्य है-धरणी वहांकी-जहा मुनिजी लियो है-जनम,
धन्य पिता मानकचदजीको-वे-चलते जिनमतकों धरम,
थे-सतवादी जिनके पुत्र कहलाये-अनुपम,-
धन्यवाद रलियात कवरकों, माता-बुद्धिकी-थी-अगम,
सस्कारसें आप-आजन्मे उदय भये निज पूरवकर्म,
महाजन विशाओशवाल-थे-जूठवचन नही एक लगार,
सयमलीनो आपने छोड्यो कुटुंब सवधन घरबार. १
श्रीरी आत्माराम महाराज जिनोंने लिये आपकों-है-पहचान,
दीक्षालीनी साल उन्नीस और छत्तीस प्रमान,
वैशाख शुक्लदशमी गुरुवारे हुवे सयमी चतुर सुजान,
मलेरकोट पाचाल मुल्कमे जानत है-सब-निखिल जहान.
धर्मशास्त्रकों पढे मुनीश्वर व्याकरण कोशकों भारीज्ञान,
सर्वशास्त्रको आपने-पृथक्-पृथक् लिने सवजान.
पजाव-पूरव-मारवाड-गुजरात-मालवाकों दियो तार,
सयमलीनो आपने छोड्यो कुटुंब सवधन घरबार, २
दखनमें गये आप मुनीश्वर जिनमत खूब दिपाया है,
देशदेशमे आपका सुजश बहुतसा छाया है,-
मानवधर्म संहिता एक पुस्तक बहोत खूब फरमाया है,
प्रश्नपाचकों खडन करके मजहव रिसाला बनाया है,
तीनथुइका परामर्श-एक-तीनथुईपें बनाया है.
विधिजैनसंस्कार बनाकर तनपर यश उपजाया है,

गृहस्थापनमे नाम-हठीसिंह-जन्मलग्नमें निदितविचार,
सयमलीनो आपने छोड्यो कुटुम सनधन घरबार, ३
उन्नीसनर्सकी उमर आपकी जनसें यह सयम धार्यो,
धन्य मुनिजी आपने कामक्रोध रिपुकों मार्यो,
सकलकामना तजी जगतकी लोभपाप पावक जार्यो,
धन्य हो-स्वामी-आपने निज आतम कारज सार्यो,
विद्यासागर न्यायरत्न-मुनि-धर्मधुरधरपद धार्यो,
देशदेश और नगर गाममें सुजश आपने विस्तार्यो,
सूरजमलकी हाथजोडकर मुनिजी वदना वारवार,
सयमलीनो आपने छोड्यो कुटुम सनधन घरबार. ४

२६-[लावनी दूसरी-अष्टपदी,-]

मुनिश्री-शातिविजयजी आप, कर्मके-मेटदिये सताप,
सुख ससारसे मुख मोड्यो, कुटुमसें सन नातो तोड्यो,
ध्याननिज जिनप्रभुसे जोड्यो, लोभ और मोहपाप छोड्यो,
[दोहा] पचमहाव्रत धारके-करतेहो-उपकार,
छह-कायाके जीव बचाते, मुनिजी वारवार,
भूलकर नही करते सताप, कर्मके मेट दिये सताप.- १
कामना छोडी सारीकों, तरसना भारी दारीकों,
धन्य ऐसे आचारीकों, नमन है-दृढव्रत धारीकों,
[दोहा] पुदगल परिचय छोडियो,-भव्यजीवनके काज,
विचरतहो-सबजगतमे,-धर्मध्यानके जहाज,
अनुकपा रही दिलमें व्याप, कर्मके मेट दिये सताप. २
दोष सब कर्मनकों टार्यो, गरव सन तनमनसें गार्यो,
धर्म जिनवरको-विस्तार्यो, अन्यमत चितमे नही धार्यो,
[दोहा] मिथ्यामतको खडन कीनो, जिनमत मडन कीन,
श्रीजिनप्रभुके चरन-सरनमे-रहतेहैं-लयलीन,
दुश्जन गये आपसें काप, कर्मके मेट दिये सताप. ३

इंद्रियां पांचोंकों मारी, आपने तजे कनक नारी,
धर्मके ग्रंथ रचे भारी, वचन सब माने नरनारी,
[दोहा] कहांतलक बरनन-करू,-मुनिजी-परम दयाल,
सूरजमल्लकी हाथ जोडकर, वदना ल्यो प्रतिपाल,
प्रभुका नित उठ करते जाप, कर्मके मेट दिये सताप.-४

२७-[कवि-सूरजमलजी-साकीन उदयपुर-मुल्कमेवाडकी
बनाइ हुइ-गुरुभक्तिपर-शेयरदार-लावनी,-]

विद्यासागर न्यायरत्न-श्री-शांतिविजयजी मुनिमहाराज,
तीरथ कीने आपके जनम जनमके सुधरेकाज,-ए-तर्ज.
शासन नायक सब सुखदायक जिनका निशदिन ध्यान धरो,
भव्यजीवोंके प्रेमहित-चितसे आप कल्यान करो,
शठनर सुधरे सुनकर वानी-ऐसो मुनि-व्याख्यान करो,
खल अज्ञानी पशुसम-उनके हिरदेमें ज्ञान धरो,

[शेअर]

आपने जिनमतकों धारन करके त्यागोहै-कुटुंब,
उघरे पटल निज उरके मुनिजी,-दूरकर दिनोंहै-तम,
दीपायो जिनमतकों स्वामी, प्रकाशित भयो रविसम,
जन्मजन्मातरकी बिगरी,-बात सुधरी इसजनम,

[मिलान]

करतेहो-सब-कठीन तपस्या-धन्य धन्य मुनिजी सुखसाज,
तीरथकीने आपके जनम-जनमके सुधरे काज. १
पहिले समेतशिखरगिरिप्रभुके आप मुनिजी किये दर्शन,
एक महिना गिरिपर बैठ कियो है प्रभुजीको भजन,
पावापुरीमें रहे तीन महिना, आप मुनिजीहो-धन धन,
कई जिज्ञासु आपसें पुछे शास्त्तरकों वर्नन,

[शेअर,]

अतरिक्ष पारसनाथजीमें-आठ दिन किनोंहै ध्यान,

शतरुंजाजी गिरिराजमे-चौमासोकर दिनो बखान,
गिरनारजी दिन बारा रहकर दिपायो साचोहि-ज्ञान,
आठ दिन आबुजी उपर-विराजकर किनोहै-ध्यान,
[मिलान]
रानकपुरजी पाचदिवसतक-आपमुनिजी रहे विराज,
तीर्थ किने आपके जनम जनमके सुधरे काज, २
हस्तिनागपुर आप विराजे-आठ दिवसमें लिखलियो हाल,
कपिलाजीमे रहे दिन तीन,-आप भव्यजनके प्रतिपाल,
शौरीपुर दिन एक टीके मुनि-काट्यो सकलकलिमलजजाल,
कौशाबीमें रहके मुनीश्वर-तीनदिवस रिपु किये पैमाल,
[शेअर]
सावथ्थी नगरीमे एकदिन-वास मुनिजन-जा-कर्यो,
एकदिन भदीलपुर भीतर-पापतनकों-सब-हर्यो,
मिथिलापुरी दिन एक टीके-वहा-ध्यान जिनजीकों धर्यो,
राजगृही दिनपाच बसे-वहा-सकलपाप तनकों जर्यो,
[मिलान]
अयोध्यामे दिन आठ विराजे-मिली केईज्ञानीकी समाज,
तीर्थ किने आपके जनम जनमके सुधरे काज. ३
माडवगढ रहे एक दिवस-वहा-कर्यो आप भारी उपकार,
शखेश्वरजी रहे दिन तीन रच्यो मनमे आचार,-
तारगाजी दीन तीन रहे वहा तप्त बुझाई तनकी अपार,
केशरीयाजी रहके छह दिन-बोले है-वहा जयजयकार,
[शेअर,]
फलोदी पारसनाथजीमे तीन दिन तपसा करी,
मकसी पारसनाथनीसें-परवाडे विनति खरी,
काशी दिन रहे आठ-भेटे आपसें केई शास्तरी,
चपापुरी एक मास रहकर-चर्चाकरी मुनि रसभरी,

[मिलान,]

सूरजमल्ल-कहे-क्षत्रीयकुंडपर-तीन दिवस बेठे मुनिराज,
तीरथ किने आपके जनम जनमके सुधरे काज,-४

[गुरुभक्तिपर-शेयरदार-लावनी-खतम हुइ,-]

२८-[श्रीयुत-मुन्शी-जाइज-साकीन मद्रासके बनाये हुवे,-]

[शेयर,]

कुछदिनों मदरास क्या था ? क्यासें अब क्या होगया,
जो-किया-शरसब्ज गुलशन अब-वो-सहरा-होगया,
हर गुलेतर सूफ़क़र काटेके जैसा होगया,
हर सरानक़ सुरते बुलबुल यह गोया होगया,
जन विहार इस जायसें ऐसे मुनिका होगया,
जैनमतवालोंकों-एक-हैरतका नकशा होगया, १
विद्यासागर-न्यायरत्न-यह खितावें आम है,
और मुबारक आपका-शांतिविजयजी-नाम है.
छ-महिनेतक रहे मद्रासके गुलशनमे-आप,
खारकीजा गुलभरे-जैनोंके यहां गुलशनमें आप,
हरसरावक धर्मपर पावद अठा होगया,
जैनमतवालोंकों एक हैरतका नकशा होगया, २
इसतर्मे चौमासेके-मौके-औरही-कुछ-रंग था,
वह मकान आरास्ता-था,-बादशाही-ढंग था,
कल्पसुतरका-दिलोंपर-सबके-सिक्का-होगया,
हर सरावक धर्मपर ऐसा अनौखा होगया,
जैनमतवालोंकों-एक-हैरतका नकशा होगया.-३
होमके तारीफ अदा कन ? ऐसे मोहनगारकी,
शास्तर-गोया-जबांकी-धारहै-तलवारकी,

रातदिन है-याद-उन-तीर्थंकरोंके कारकी,
क्योंकि-वो-पहिचानते हैं-अस्ल-सुर-व-नारकी,
जाईज-उनका-आना जाना एक तमाशा होगया,
जैनमतवालोंकों-एक-हैरतका नकशा होगया. ४

२९-[श्रीयुत-सोभागचदजी मुणोत-साकीन-मदसोरका बनाया हुवा-गुरुभक्तिपर-पद,-]

[झीझोंटीकी ठुमरी,-]

विद्यासागर न्यायरत्नश्री-शातिविजयमहाराज मुनि है,-ए-तर्ज,
मिथ्यामत ज्वर दूर करनकों, वानी अमृतरस मधुरध्वनी हैं,-विद्या. १
भविजनके हितकारक तारक, तुम कीर्त्ति विख्यात मुनि हैं,-विद्या. २
दशपुरनगरमध्य चौमासो, भाग्य भलो और शुभकरनी है,-विद्या. ३
नरनारीमिल चरनकमलयुग, सेवो-ये-गुरु ज्ञान गुनी है,-विद्या. ४
सोभागचद वदित प्रमुदितचित, मेरे-तो-अव-आपधनि हैं,-विद्या.५

३०-[गजल,-]

अष्टकर्म सग लगे, उनका छोडाना मुश्किल,
लाख चौरासीमे-नरदेहका पाना मुश्किल,-अष्टकर्म. १
मोह-ममताकी जडी-बेंडियां पगके अदर,
सीख सदगुरुके विना-उसका तोडाना मुश्किल,-अष्टकर्म. २
गुरुका उपदेश नसीबेसें हाथ आता है,
धर्ममे प्रीतलगा, ध्यान जमाना मुश्किल,-अष्टकर्म. ३
कहे मुनि शातिविजय-धर्मका वगिचा देखो,
ऐसा फिर तुमकों यहा-दूसरा पाना मुश्किल,-अष्टकर्म. ४

३१ [जिनगुणगानपर-ठुमरी,]

विसरे मत नाम जिनदजीकों-विसरे मत,-ए-तर्ज,
जिनजीकों नामचिंतामणि सरिखो, निर्मल नाम सदानीको,-विसरे,१

नाभिरायमरुदेवीकों नदन, तीनभुवन सिर है-टीकों,-निसरे, २
चतुरकुशल चित चौलसें राच्यो, कौनचहे रगपतग-फीको,-विसरे,३

३२ [यशोविजयजीकृत-अध्यात्मिकपद,]
[कमाचकी-ठुमरी,]

जबलगे आवे नही मन ठाम, जनलगे आवे नही, ए, तर्ज,
तब लगे कष्टकिया सब निष्फल, ज्यूं-गगनेचित्राम,-जब, १
करनी विना-तुं-करत मोटाई, ब्रह्मवती तुज नाम,
आखिर-फल-न-लहेगो ज्यूं-जग, व्यापारी विन दाम, जब, २
मुड मुडावत सबही गडरिया, हरिण रोझ वनधाम,
जटाधार वट भस लगावत, रासभ सहत है-धाम, जब, ३
एते पर नही योगकी रचना,-जो-नही मनविसराम,
चितअतर पर छलनेकों चिंतत,-कहा-जपत-मुख राम,-जब, ४
वचनकाय गोपे दृढ-न-धरे, चित्त तुरग लगाम,
तामें-तुं-न-लहे शिवसाधन, ज्यू-कण-सूनेगाम, जब, ५
पढो ध्यानधरो सयम किरिया,-न-फिरावो-मन-चाम,
चिदानंदघन सुजश विलासी, प्रकटे आतमराम,-जब, ६

३३ [अध्यात्मिक पद-कमाचकी-ठुमरी.]

जबलगे उपशम नांही रति, जबलगे उपशम नांही, ए-तर्ज,
तबलगे योग धरत क्या होवे, नाम धरावे जति,-जबलगे, १
कपटकरे-तु-बहुविध भाते, क्रोधे जलत छति,
ताकों फल-तु-क्या पावेगो, ज्ञान विन नाही बति, जब, २
भूख तरस अरु धूप सहत है, कहत है-ब्रह्मव्रती,
कपटकेलवे माया मडे,-मनमे धरत कती,-जब, ३
भस्मलगावत ठाडो रहेवत-कहत है-हु-वसति,
यत्रमत्र जडीबूटी-भेखज-लोभवश मूढमति, जब, ४
बडेबडे बहु पूरवधारी, जिनमें शक्ति हती,
सोभी उपशम छोडी विचारे, पाये नरक गती, जब, ५

कोउ गृहस्थ कोउ होवे विरागी, योगी भगत जति,
अध्यात्मभावे उदासी रहेगो, पावेगो जब मुगति,-जय, ६
श्रीनयविजय विबुध वरराजे, जाने जग कीरति,
श्रीजशविजय उवझाय पसाये,-है-प्रभु सुखसतति,-जन, ७

३४ [अध्यात्मिक पद-कमाचकी ठुमरी,]

चेतन राह चले उलटे, चेतन राह चले-ए-तर्जे,
नखशिख लोभघनमे बेठे,-कुगुरु वचन शुलटे.-चेतन, १
विषयविपाक भोग सुखकारन,-छिनमें-तु-पलटे,
चाखी छोर सुधारस समता,-भवजल विषय घटे, चेतन, २
भवोदधि बीच रहे तुम ऐसे, आवत नाही तटे,
जहा तिमिंगल-घोर रहत हैं,-चारों कषाय कटे,-चेतन, ३
वरविलास वनिता लोचनके, पडे पाश लपटे,
अब परवश भागे कहांजाओगे, झाले मोह भटे,-चेतन, ४
मन-मैले-से-किरिया कीनी, ठगे लोक कपटे,
उनका-फल-विन भोगे-न-छुटे, तुमको नाही रटे, चेतन, ५
सीखमान अब रहो सुगुरुके-चरन कमल निकटे,
यू-करते-तुम सुजश लहोगे, तत्वज्ञान प्रगटे,-चेतन, ६

३५ [उपदेशिकपद-रागिनी-धनासीरी,]

परमगुरु जैन कहो किम होवे ? परमगुरु,-ए-तर्जे,
गुरुउपदेश बिना नर मूढा, दर्शन जैन विगोवे,-परमगुरु, १
कहत कृपानिधि समजलझीले, कर्म मयल-जो-धोवे,
बहुलपापमल-अग-न-धारे, शुद्धरूप निजजोवे,-परम, २
स्याद्वादपूरन-जो-जाने, नयगर्भित जस वाचा,
गुन पर्याय द्रव्य-जो-बुझे, सोही-जैन है-साचा,-परम, ३
किरिया मूढमति-जो-अज्ञानी, चालत चाल अपूठी,
जैनदशा उनमेही-नांही, कहे-सो-सबही-जूठी-परम, ४

पर परणति अपनी कर जाने,-किरिया गर्वे गहेलो,
उनकों जैन कहो किम कहिये,-सो-मूरखमें-पहलो,-परम, ५
ज्ञानभान-ज्ञान-सत्रमांही,-शिनसाधन सरदहिये,
नाम मेखसे काम-न-सिझे, भाव उदासें रहिये,-परम, ६
ज्ञान सकलनय साधन साधो ! किरिया ज्ञानकी दासी,
किरिया करत धरत है-ममता,-याही गलेमें फासी,-परम, ७
किरिया विन नही ज्ञानरहत है,-किरिया ज्ञान विन नांही,
ज्ञानक्रिया दोनुं मिलत रहत है,-ज्यूं-जलरस जलमांही,-परम, ८
किरिया मगनता बाहिर दिसत, ज्ञानशक्ति जस भांजे,
सद्गुरुसीख सुने नही कबहु-सो-जन-जनतें लाजे,-परम, ९
तत्वबुद्धि जिनकी परणति है,-सकल शास्त्रकी कुंची,
जग-जशवाद वदे उनहीकों,-जैनदशा जस उची,-परम, १०

३६ [अध्यात्मिक-पद-रागिनी-धनासीरी]

चेतन-जो-तु-ज्ञान अभ्यासी, चेतन-जो-तुं,-ए-तर्ज.
आपही बांधे आपही छोडे, निजमति शक्ति विनाशी,-चेतन, १
जो-तु-आप स्वभावमें खेले, आशा छोड उदासी,
सुरनर किन्नर नायक सपति,-तो-तुज घरकी दासी.-चेतन. २
मोहचोर-जन-गुनधन लूटे, देत आश गलफासी,
आशा छोड उदासरहे-जो,-सो-उत्तम-सन्यासी,-चेतन, ३
जोगलही परआश धरत है,-याही-जगमें-फासी.—
तु-जाने-में-गुनकों सचु, गुन जावे सब नासी. चेतन.-४
पुद्गलकी-तु-आश धरत नित, सो-तो-सबही विनासी,
तु-तो-भिन्नरूप है-उनतें,-चिदानद अविनाशी.-चेतन, ५
धन खर्चे-नर-बहोत गुमाने,-करवत लेवे कासी,
तोमी-दुखकों अत-न-आवे,-जो-आशा नहीघासी,-चेतन, ६
सुखजल विषम विषय मृगतृष्णा, होत मूढमति प्यासी,
विभ्रमभूमि-भई-परआसी, तु-तो-सहज विलासी,-चेतन, ७

याको पिता मोह-दुखभ्राता,-होत विषयरति मासी,
भवसुत-भरता अविरति प्रानी, मिथ्यामतिहै-हासी,-चेतन, ८
आशा छोड-रहे-जो-योगी,-सो-होवे शिववासी,
उनकों सुजश बखाने ज्ञाता, अंतरदृष्टि प्रकासी,-चेतन, ९

३७ [जिनगुण-स्तवन,]

[कालिंगडेकी-ठुमरी,]

प्रभु तेरे! चरनोंकी सरन ग्रहु,-प्रभु तेरे,-ए-तर्ज,
हृदयकमलमें ध्यान धरु नित, सिरपर आन वहु, प्रभु, १
तुमसम खोल्यो देव खलकमें, पायो नाही कहु,
तेरे गुनकी जपु जपमाला, अहनिश पाप दहु,-प्रभु तेरे,- २
मनकी वार्ता तुम सब जानो,-क्या! मुख बहुत कहु,
कवि-जशविजय कहे-हे! साहब,-ज्यू-भवदुख-ना-सहु-प्रभु, ३

३८ [विनयविजयजीकृत-उपदेशिक पद,]

[खमाचकी-ठुमरी,]

दुरमति डारदे-मेरे प्रानी, दुरमति,-ए-तर्ज,
जूठी सब ससारकी माया, जूठी गरव गुमानी, दुरमति, १
आप-न-बूझे-मोहनींदसें, डोले दुनिया दिवानी, दुरमति, २
वीतराग-दुखडारण दिलसें,-विनय जपो शुद्ध ज्ञानी, दुरमति, ३

३९ [उपदेशिकपद-रागिनी-भैरवी,-]

[मेरुशिखरनवरावे, सुरपति-मेरुशिखर, ए-चाल]

वस्तुगते वस्तुको लक्षण-गुरुगम विन नही पावे,
गुरुगम विन नही पावे कोउ, भटक भटक भरमावे,-लक्षण-ए-तर्ज.
भवनआरिसे-श्वान-कुर्कटजिम, निजप्रतिबिंब निहारे,
इतर रूपमनमाही विचारी, महाशुद्ध विसरावे,-लक्षण गुरुगम, १
निर्मलस्फटिक शिलाके अंदर, करिवर-लक्ष-परछाहि,
[illegible]-अधिक दुखपावे, द्वेष धरत मनमाही,-लक्षण गुरुगम, २

शशले जाय सिंहकों पकडे, कुना दिया दिखाई,
निरख-हरि-तस-जाने दुसरा, पड्यो-झंप-तिहां खाई, लक्षण, ३
निजछाया-वेतालभर्म-धर, डरत-बाल चितमाही,
रज्जु-सर्प-करी कोउ मानत, जनलग समजत नाही, लक्षण, ४
नलिनीभ्रम मर्कटमुठी जिम, भ्रमवश अतिदुख पावे,
चिदानंद-चेतन-गुरुगम विन, मृगतृष्णा धरी धावे, लक्षण, ५

४० [होरी,]

सावरो सुखदाई-जाकी छब बरनी-न-जाई.-सांवरो, ए-तर्ज.
अश्वसेन वामानदनकी-कीरति सवजग छाई,—
समेतशिखरगिरिमंडनप्रभुको.-दरस देख हरखाई,
हृदयमे अतिहुलसाई.-सावरो सुखदाई. १
आज हमारे सुरतरुप्रगट्यो, आज आनद वधाई.
तीनभुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्वपुन्याई.
सफल मेरो जन्मकहाई, सावरो सुखदाई. २
प्रभुजीके दरस-सरस-वीनपाये, भवभव भटक्यो भाई,
अब-तेरो-चरन सरन नितचाहत,-बाल-कहे सुखदाई,
प्रभुजीसे लगन लगाई,-सावरो-सुखदाई, ३

४१ [होरी,]

नेम-निरजन-ध्याबोरे,-वनमे तप किनो,-नेम,-ए-तर्ज,
सब जादव मिली व्याहन आये, पहेन-जडाव-जरीनोरे,-वनमें, १
कचन-मुकुट-हाथसे छोडे, पशुवनपर चितदिनोरे,-वनमे,- २
सहस्राननकी कुज गलीनम-पचमहाव्रत लिनोरे,-वनमे, ३
रूपचद कहे भवीजनसें-सवजगमे जश लिनोरे,-वनमे ४

४२ [ठुमरी]

मेरी लागी लगन नेम प्यारेसे,-मेरी लागी,-ए-तर्ज,
सुनरी! सखि-एक बात हमारी, कहिओ कंथ हमारेसे,-मेरी लागी. १

जोगन-बनकर संग चलुंगी, प्रीत तजुं जगसारेसें,-मेरी लागी. २
नामलियेसें आनंद उपजत, कीरत होय उरधारेसें,-मेरी लागी. ३

४३ [रागिनी-भैरवी,]

यसोजी! मेरे नेननमें महाराज,-यसोजी मेरे,-ए-तर्ज,
सावरी सुरत मोहनीमूरत-तारण तरण जहाज, यसोजी मेरे. १
यानी सुधारस दर्शन पायो,-भवभय-सर्यो सबकाज, यसोजी मेरे. २
चेनविजय करजोडी विनवे, चरनकमल सिरताज,-यसोजी मेरे. ३

४४ [रेखता,]

करो कल्यान आतमका,-भरोसाहै-नही-दमका,-करो,-ए-तर्ज,
यह काया काचकी शीशी, छिनकमें फुट जावेगी,
ईसे-तु-देख-मत फुले, बबुला जेसे पानीका,-करो १
सजन-सुत-नार-पितुमातर,-रच्यो परिवार सब आदर,
खडे सब देखते रहेंगें,-कूच-होजायगा-दमका,-करो. २
ए-धनदौलत-मकां-मंदिर,-जो-तु अपना-बताता-है,
नही हर्गिज! कभी-तेरे,-छोड जंजाल सब गमका,-करो, ३
यह-बडी-अटवी है-जगरूपी,-फसेमत भूलकर इसमें,
कहे-चुन्नी-समजदिलमें,-सितारा ज्ञानका-चमका,-करो, ४

[बयान उपदेशिक पदका-खतम हुवा,]

[किताब-सुरसुंदरी-विवेकविलासके लेखका-जवाब,]

१ इनदिनोंमें एक-किताब-सुरसुंदरीविवेकविलास नामकी मेरे देखनेमें आई, जो-बाइस-टोला-(स्थानकवासी) संप्रदायकी आर्या-श्रीमती-सुरसुंदरीजीकी-बनाइ हुई-हिंदीजबानमें छपी है,-इसकी पृष्ठसंख्या-(२८५)-प्रकाशक-मिहनलाल कोठारी-पल्लीवाल-जैन, भरतपुर (राजपुताना)-है-मजकुर किताबके चतुर्थ-परिच्छेदमें-साधु धर्म-और-जिनमूर्त्तिके बारेमें-जो-कुछ तेहरीर

किया है. उसका माकुलजवाब इसमे लिखाजाता है, आपलोग–बगौर–देखिये,—

२ किताब–शुरसुंदरीविवेकविलासके पृष्ठ (१७०) पर–चतुर्थ–परिछेदकी शुरुआतमे–साधुधर्मके बारेमें लिखा है,–मुनि,–संयमी,–वाचयमी,–व्रती,–यति,–तपस्वी,–सर्वविरति,–सयत,–भिक्षु,–तथा अनगार,–इत्यादि अनेकनाम साधुके है, आगे इसी-पृष्ठकी (१९) मी–पंक्तिमे–बतौर उत्तरके–तेहरीर किया है, साधुशब्दका साधारणतया–यह–अर्थ है–कि–जो–आप सर्वप्रकारके क्लेशोका सहनकरकेभी–दुसरेके कार्योंको सिद्ध करता है, उसे–साधु कहते है.–अथवा–जो–ज्ञानादिरूप शक्तिके द्वारा मोक्षका साधन करते है उनकों साधु कहते है, अथवा–जो–सब प्राणियोंपर समताका ध्यान रखते है, उनकों साधु कहते है, अथवा–जो–८४–लाख–जीवयोनिमे उत्पन्न हुवे समस्त जीवोंके शाथ–समत्वको रखते है,–उनको साधु कहते है, अथवा–जो–संयमके सत्राह भेदोका धारण करते है, उनको साधु कहते है,–अथवा–जो–असहायकोंके–सहायक होकर तपश्चर्या–आदिमे–सहायता देते है, उनकों साधु–कहते है,–अथवा–जो–सयमकारीजनोंकों सहायता करते है, उनको साधु कहते है,—

(जवाब,) पेस्तरके जैनमुनि–वस्तीके बहार उद्यान–बनखंडमें रहते थे,–आजकल गाव–नगरमे रहनेका रवाज होगया,–इसका क्या सबब? इसबातको सोचो! जैनशास्त्रोमे जैनमुनिकों–असहायक–होकर विहारकरना कहा, सफरमे किसी नोंकर–वगेराकी मदद नही लेना, नवकल्पी–विहारकरना, चौमासेका एक–कल्प,–और–आठ-महिनेके आठकल्प,–इसतरह नवकल्प हुवे,–इसका मतलब यह निकला, जैनमुनिकों–चौमासेके चारमहिने एकस्थानपर ठहरना,–और–मगसीर–पौषवगेरा आठमहिनोंमे–एक–एक गांवमे एक एक महिनेतक रहना, ज्यादा नही, इसका नाम–नवकल्पी–विहार कहा,

सबब-मुनिजनोंकों-एक गांवमे-ज्यादे असेंतक-ठहरना, बहेतर नही, जैनमुनिकों जैनशास्त्रका-हुकम है,-दिनमे-नींद नही लेना,-दिनम तीसरे प्रहर-भिक्षाकों जाना, और दिनमे एकदफेही आहार खाना,-किसीके लडकेकों विनाहुकम-वारीशोंके दीक्षा नही देना, उपवासव्रत करना-जब-पहले रौज-और-पारनेके-रौज-एकाशना करना, इसतरह-दो-उपवास करे-तो-छह-टक-खाना छोडे, और तीन उपवास करे-तो-आठटक-खाना-छोडे,

३ जैनमुनिकों-सुबह-शाम-प्रतिक्रमण-करना, कपडोंकी प्रतिलेखना करना,-जिनमदिरके दर्शनकों-जाना, प्रत्याख्यान-पारना,-खाना खाये ! बाद चैत्यवंदन करना, रातकों सोतेवक्त-सस्तारक-पौरसी पढना, पैदल सफर करना, पाक्षिक-चातुर्मासिक-और-सावत्सरिक प्रतिक्रमण-वक्त-बवक्तपर करना, गुरुमुखसे धर्मशास्त्रकी बाचना लेना, जैनमुनिके लिये-ये-बाते जरूरी है,-अगर कोई-जैनमुनि-इसतरह करे नही-और-कोरी बाते बनावे-तो-इससें क्या फायदा? व्रत-नियमकेलिये बात कहना आसान है,-मगर-करबतलाना आसान नही, पचमहाव्रत इख्तियार करना और दशविध यतिधर्मपर पावद रहना जेनमुनिका फर्ज है,-जैनश्वेतांबर श्रावकोंकों-श्रावकधर्मके (२१) गुण-और (१२) व्रत-हासिल करना, हरहमेश चौदह-नियम-धारना, और अभक्ष्य चीजोंसें-परहेज रखना, जरूरी काम है,-सचे देव-सचे गुरु-और-सचे धर्मपर कामीलएतकात रखना, मिथ्या-प्रचारकों-छोडना, व्यापारमेंमी जूठ नही बोलना, हरहमेश देवपूजन, सामायिक और प्रतिक्रमण करना, धर्मशास्त्रका व्याख्यान-गुरुलोगोके मुखसे सुनना, सालभरमे एक-नये जैनतीर्थकी जियारतकों जाना, उम्रभरमे-पचपरमेष्ठि-महामत्रका जाप-करना, और पिछली उम्रमें-दुनयवी-कारोबारकों छोडकर तीर्थमें-या-घरबेठे, परमात्माका ध्यान-स्मरण-करना, जिससें परलोकका रास्ता साफ हो, अगर कोई जैनश्वेतांबर श्रावक-इसतरह-बरताव-

करे नही, और कोरीबाते बनावे-तो-इससें क्या फायदा? दरअसल! जैसा कहना-वैसा-करबतलाना तारीफकी बात है,-सिर्फ! बातें बनानेवाले चाहे-सो-कहे,

४ किताब-भुरसुदरी-विवेकविलासके चतुर्थपरिछेदमे-पृष्ठ (१७३) पर-बयान है,-जिन किसकों कहते है,-और-जिनप्रणीत धर्म-श्रेष्ठ-क्यों है? (उत्तरमे) कहागया है.-"जि-जये-" इस-धातुसें नक्प्रत्यय करनेपर-"जिन-" शब्दकी सिद्धि होती है,-इसका अर्थ यह है कि-जिन्होंने इंद्रियों तद्विषयों-कषायों-तथा-ससारके रागद्वेषादिको जित लिया है,-उनकों जिन कहते है, जिन, भगवान्,-वीतराग,-सर्वज्ञ,-सर्वदर्शी,-तथा-निष्पक्षपात होते है,-इसलिये उनका कहाहुवाही धर्म सर्वोत्तम माना जाता है, इसीको जैन-धर्मभी कहते है, आगे इसीकिताबके (१७४) पृष्ठकी (१०) मी -पक्तिमे ऐसामी-तेहरीर है,-अहिंसा, सयम, और तपोरूप धर्म है. -पूर्वोक्त धर्म-दो-प्रकारका, आगार धर्म अर्थात् श्रावक धर्म, तथा अनगार धर्म अर्थात् साधुधर्म,—

(जबाब.) अगर अहिंसा, सयम और तपोरूप धर्म-मानते हो-तो-इसपर सवाल पैदा होगा, जब श्रावकलोगोंकों धर्मसाधनकरनेके लिये स्थानक बनाया जाय-तो-उसमे बनानेवालोंको पुन्य हुवा मानना-या-पाप? इसका माकुल जवाब पेंश करे,-जैसे मंदिर तामीरकरानेमे इट-चुना-और-पत्थरकी जरुरत होती है, स्थानक बनानेमेभी होगी, अगर स्थानक बनानेमे पुन्य हुवा मानाजाय-तो-जिनमदिर तामीर करानेमे पुन्य-क्यों-नही,-? अगर स्थानक बना-नेमे मिट्टी, पानी, और लकडेकेलिये वनास्पतिकायके जीवोंकी हिंसाहोनेसें पाप मानाजाय-तो-स्थानक बनाना क्यों? घरके रुपये पैसे-खर्चना और पाप हासिल करना ऐसा काम क्यों करना?

५ चौमासेकेदिनोंमे-कइ-स्थानवासी मजहबके श्रावक अपने धर्मगुरुवोंकों वदन-नमन-करनेकेलिये एक-गावसे-दुसरे गांवकों

जाते है, जैसे-बुतपरस्त-जैनश्वेतांबर श्रावक-जैनतीर्थोंकी जियारतकों जाते है,-स्थानकवासी मजहबके श्रावक अपने धर्मगुरुओंकी जियारतको जाते है,-बतलाईये! इसमें-पाप-समजना-या-पुन्य? अगर कहाजाय पुन्य समजना-तो-जैनतीर्थोंकी जियारतमे पुन्य क्यों नही? इसका कोई जवाब देवे, दीक्षाके जलसेमे-बाजे-बजवाना, आमत्रणपत्रिका भेजकर स्वधर्मी-श्रावकोंको बुलवाना, और जब-वे तशरीफ लावे खानपानसे उनकी खातिर-तवजे करना, इसमें पुन्यहुवा मानना-या-पाप-? अगर कहाजाय पुन्यमानना-तो-जिनप्रतिमाके जलसेमे पुन्य क्यों-नही? इसका कोई जवाब देवे, अगर दीक्षाके जलसेमे-आयेहुवे श्रावकोंकों खानपान वगेरासें खातिरकरनेमें पुन्य समजा जाय-तो-जैनश्वेतांबर श्रावक-जो-नवकारसी-या-स्वधर्मी-वात्सल्यका जिमन करते है,-इसमें पुन्य क्यों नही? अगर कहाजाय दीक्षाके जलसेम और स्वधर्मीश्रावकोंकी खानपानवगेरासें खातिरकरनेसें धर्मकी तरकी होती है,-तो-जिनप्रतिमाके जलसेमे-और-नवकारसीके जिमनम धर्मकी तरकी क्यों नही मानना? अगर कोई-दयाधर्मी बनना चाहे तो-उनकों स्थानक बनानेकी-दीक्षाका जलसाकरनेकी-और-स्वधर्मीश्रावकोंकी खातिर-तवजे करनेकी क्या जरूरत? पृथवीकाय, अप्‌काय, तेउकाय, वायुकाय, और वनस्पतिकायके जिवोंकी हिंसा होगी-अगर कहाजाय, स्थानक बनवाना, दीक्षाका-जलसा करना, और स्वधर्मीयोंकी खातिर करना श्रावकोंका-काम है,-तो जवाबम तलब करो, जिनमदिर बनवाना, जिनप्रतिमाका जलसा करना और स्वधर्मीवात्सल्य करना-यहभी-श्रावकोंकाही-काम है,-इसका इनकार करना-किस सबुतसें-हो सकेगा? ऐसे मुद्देकी दलिलोंका कोई जवाब देवे.

६ अगर कोई इस मजमूनकों-पेश करे,-तीर्थंकरमहावीरस्वामीके निर्वाणके वक्त-जो-उनके जन्मनक्षत्रपर-भस्मराशिग्रह-आयाथा,-

उसके उतरनेके बाद जैनसाधु-साध्वीयोंकी-उदय-उदय-पूजा और सत्कारहोना शुरु हुवा,-और दयाधर्म तरकीपर आया,

(जवाब.) भस्मराशिग्रह-तीर्थंकरमहावीरस्वामीके-जन्मनक्षत्रपर आनेसे दो-हजारवर्सतक जिस जैनमुनिसमुदायकी-पूजा-और सत्कार-कम-हुवा था, उसीसमुदायकी उदयउदय पूजा और सत्कार चढा,-जिसचीज मंदी हुई हो, भाव बढनेसें उसीकी तेजी होसकती है,-दुसरोंकी नही,

७ आगे किताब-शुरसुंदरी-विवेकविलासके चतुर्थ-परिछेदमें पृष्ठ (१९२) पर बयान है,-पूर्वोक्त पाठ कल्पसूत्रका है, इसपाठकों-तो-पीतांबरीभी मानते है,-फिर व्यर्थमे आक्षेप-क्यों-करते है ?

(जवाब) स्थानकवासी-मजहबके श्रावक-स्थानक बनवाते है, दीक्षाका जलसा करते है,-अपने स्वधर्मी-श्रावकोंकी-खातिर-तवजे-करते है. अपने धर्मगुरुओंको-वंदन-नमन-करनेकेलिये एकगांवसें दुसरेगावकों-जाते है,-कइ-स्थानकवासी-मजहबके साधुमहाराजोंकी-फोटोग्राफकी बनीहुई-तस्वीरभी-मेरे-देखनेमें आइ है,-फिर-जिनमूर्त्ति-और-जिनमंदिर माननेमें इनकार क्यों कियाजाता है.-यह-एक-मुद्देका-सवाल है.-जमानेहालमे-जैनश्वेतांबर मजहबमें-जो-संवेगी-मुनि-कहलाते है, और-पीले-कपडे-पहनते है.-उनकों पीतांबरी कहेजाय-तो-क्या हर्ज है ? पीलेकपडे जैनमुनिकों पहनना निशीथसूत्रके (१८) उदेशकमें सबुत है,-जब-श्वेतकपडे पहननेवाले-जैनमुनिजनोंमे-संयममे-शिथिलता पेंशहुई-निशीथसूत्रके (१८) में उद्देशकके-सबुतसें-सफेद कपडेकी एवजमे कथेचुनेकेरंगसे-पीलेकपडे किये गये और क्रिया-उद्धार-किया गया, सचपुछो-तो-जमानेहालमे पीतांबरी-जैनमुनियोंने-जैनधर्मको-संभाला है,-और तरकी दिई है,-एक-गांवसें-दुसरेगाव सफर करना-श्रावकोंकों हमेशां व्याख्यानधर्मशास्त्रका सुनाना,-फर्ज करो ! एकतर्फसे जिनमंदिर और जिनमूर्त्ति-माननेसें इनकार किया गया,

-उसहालतम-अगर पीतांबरी सवेगी-जैनमुनिजनोंकी हाजरी-न-होती-तो-जिनमदिर-जिनमूत्ति-और-जैनतीर्थोंकी विल्कुल बरबादी होजाती पीतांबरी-जैनमुनि-व्यर्थ-आक्षेप नही करते बल्कि! सच-फरमाते है. जैनशास्त्रोंम-जिनमूर्त्ति-मानना-जाइज कहा,-और जैनमुनिकों-मुहपर-मुहपत्ति बाधना किसी जैनशास्त्रमे नही फरमाया,

८ फिर किताब-भुरसुदरीविवेकविलासके चतुर्थपरिछेदमे पृष्ठ (१९७) पर-इसदलिलको पेश किई है,-कृत्रिम-वस्तु-सरयेय कालतक ठहरती है,-इससें अधिक नही रहती, फिर देखोकि-भरतका करायाहुवा-मदिर-अष्टापद तीर्थमे-महावीरस्वामीके समयतक कैसे रहा? गौतमस्वामीने कैसे वदना किई? इसविपयमे-यदि-कोई यह कहे,-देवताने स्थितिको वढादिया, सो-यह-कथन मिथ्या है, क्यों कि-देवता-स्थितिकों-नही वढासकता, देखो! पृथ्वीकायकी स्थिति (२२) हजार वर्सकी है,-इसपर-यह-शका-होसकती है-ये-पर्वत-हजारों-लाखोवर्पतक कैसे ठहरते है? क्योंकि-पृथवीके लगे हुवे है, उनमेंसें पृथवीका-रस-पहुचता है, और टुकडा काटकर अलग करदिया गया है,-उसकी स्थिति-(२२) हजार वर्ससे अधिक कैसे रहसकती है, ?

(जवाब) पृथवीकायके जीवोंकी स्थिति बाइसहजार वर्सकी है,-मगर-जिनमूत्ति-पृथवीकायके जीवयुक्त नही, बल्कि! अजीव है,-पुद्गलकीस्थिति बाइसहजार वर्सकी स्थिति कैसे कह सकते हो,-पृथवीकायके जीवोंकी उम्र बाइसहजार वर्सकी है,-इससे-और-पुद्गलसें क्या ताल्लुक? कौन कहता है,-देवतोंने-पृथवीकायके जीवोंकी-स्थिति वढादिई,-सरयातकालकी स्थिति-कृत्रिमचीजकी-जैनशास्त्रमे कही,-मगर देवता जिसकी हिफाजत करे, उस चीजकी असरयकालतकभी-हो-सके? इसमे कौन शककी बात है? शखेश्वरपार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति-और-तीर्थ-अष्टापदपर्वतपर-भरतराजाजीके

तामीर करवाये हुवे-मदिर मूर्त्तिये-देवते हिफाजत करनेवाले मौजूद रहनेसें आजतक कायम रह सकती है, इसमें कोई ताज्जुबकी बात नही. तीर्थ-अष्टापदजीकी जियारतकों-गौतम-गणधर-तशरीफ लेगये-आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें सबुत है, इसबातकों कोई जैन-कैसे इनकार करसकेगा ?

९ आगे किताब-थुरसुदरी-विवेकविलासके-चतुर्थ-परिछेदमें -पृष्ठ-(१९७) पर इसमजमूनकों पेंश किया है,-पीतांबरीलोग कहते है,-देवगुरु और धर्मकेलिये-जो-हिसा है,-उसमें पाप नही है.-क्या ! यह-बात ठीक है ? उत्तरमे कहा गया, उनका पूर्वोक्त कथन-सर्वथा असत्य है, आगे-इसीकिताबके इसीपरिछेदमें पृष्ठ (१९८) पर-बयान है, हिसासे देव-और-गुरुकी भक्ति करलेनेसें लाभ कहांसे होगा ?

(जबाब.) फर्ज करो, किसी जैनमुनिका-इतकाल हुवा.-उनके कलेवरकों-श्रावकलोग-लकडेका उमदा विमान बनाकर-धजा-पताका वगेरासे शिंगारते है, और उसमे कलेवरकों रखकर अग्निसंस्कार करनेकों लेजाते है, और अग्निसस्कार करते है,-सौचो ! यह -श्रावकोने-गुरुभक्ति किई समजना-या-क्या-समजना ? इसमे श्रावकोंको पुन्यहुवा-या-पाप ? इसका कोई जवाब देवे,-अगर किसी साधुमहाराजकों बीमारी पेंश हो-तो-डाक्तर-या-वैद्यसे इलाज कराना, दौलतखर्च करना, यह-गुरुभक्ति हुई-या-क्या ? और इसमे दौलतखर्च करनेवाले-श्रावकको-पुन्य होगा-वा-पाप ?-किसी जैनमुनिने दुसरे जैनमुनिकी बीमारीके वख्त खिदमत किई, बतलाओ-इसमे पुन्य हुवा-या-पाप ? धर्मपुस्तक-लिखवाना-या-छपवाना उसमे खर्च होगा, खर्चदेनेवाले-श्रावकको पुन्य हुवा-मानना-या-पाप ? गरीबश्रावककों मदद देना, श्रावककों धर्मध्यान करनेकेलिये स्थानक बनाना-या-बना-बनाया मकान खरीदकर बतौर स्थानकके मुकरर करना, इसमें-जो-दौलत सर्फ होगी-यह-

धर्मके लिये हुई-या-नही? दयापालनेवालोंको खानपानमे द्रव्य खर्चना-यह-धर्मकेलिये समजना-या-किसमे? दीक्षाके जलसेमें दौलत खर्चना-यह-गुरुभक्ति हुई-या-नही-और-इसम-खर्चकरने-वालेकों पुन्य हुवा-मानना-या-पाप? सबुत हुवा,-देव-गुरु-धर्मके-लिये इरादेधर्मके-जो-कार्य कियाजाता है, उसमे पुन्य है—

१० जैनमुनि-एक-गांवसें दुसरेगाव-विहारकरते है, बतलाइये! धर्मकेलिये करते है-या-किसलिये? भिक्षाकों-जाते है.-कपडोंकी-प्रतिलेखना करते है.-यह-बरतार धर्मकेलिये-समजना-या-पापकेलिये? अगर कहाजाय धर्मकेलिये समजना-तो-इसमे-जो-वायुकायवगेराके जीवोंकी-जो-हिंसा हुई-इसका पाप किसको लगेगा?-इसका जवाब दिजिये, पीतांबरोंका कथन मिथ्या नही, बल्कि! उनकी दलिल आलादर्जेकी है, विहार करनेमे-भिक्षाकेलिये जानेमे-और कपडोंकी-देख-भाल करनेम-जो-वायुकायके जीवोंकी हिंसा होती है-बतलाओ! इस हिंसाका पाप-उन-मुनियोंको-लगा-या-किसकों? अगर कहाजाय पाप जरूर लगा-तो-फिर दीक्षा लेकर एक-जगह बेठे रहना चाहिये,-चलना-फिरना,-गौचरी जाना,-और-कपडोंकी प्रतिलेखना वगेरा कियाभी-क्यौं करना? अगर कहाजाय-इन कामोंमे-इरादा धर्मका होनेकी वजह भावहिंसा नही,-फिर-यही दलिल मंदिरमूर्ति-और-तीर्थयात्राकेलिये-क्यौं-न-अमलमे लाईजाय?

११ आगे किताब सुरसुंदरीविवेकविलासके चतुर्थपरिछेदमे पृष्ठ (१९८) पर-तेहरीरहै,-पीतांबरीलोग कहाकरते है कि-"मुहपत्ति इसलिये होती है, थुक-न-पडे, तथा थुकका छींटा-न-लगे, अतः उसे रुमालेना चाहिये, परतु प्रतिसमय उसके बाधे रखनेकी कहीं आज्ञा नही,"-इसविषयमे कृपया उत्तर दिजीये, इसके उत्तरमे कहा-गया, उनका यह कथन मिथ्या है,-क्योकि-बोलतेसमय-थुकका पडना, तथा थुकका छींटा लगना, उसका गौण प्रयोजन है,-किंतु

उसका मुख्यप्रयोजन-तो वायुकायजीवोंकी रक्षा है,-अतः उसे-मर्वदाही-बाधे रखनाचाहिये,-

(जवाब.) जैनमुनिकों मुहपत्ति हरवख्त मुंहपर बाधरखना-यह-किस जैनशास्त्रका पाठ है? बतलाया क्यों नही? जो-जिसका फरमानवरदार हो-चाहे इसबातकों मंजुर करलेवे, मगर-हम-तो-प्रतिपक्षीलोग रहे,-कैसे मानसके?-मुहपर मुंहपत्ति बाधनेसें-वायुकायके जीवोंकी-हिफाजत कैसे होसकेगी? जैनशास्त्रोंमे भाषा वर्गणाके पुद्गल-चारस्पर्शवाले-बयान किये,-इधर वायुकायके जीवोंका शरीर-आठस्पर्शवाला कहा, चारस्पर्शवाले आठस्पर्शवालोंकी-हिंसा-न-करसके, अगर कहाजाय-भाषा-वर्गणाके पुद्गल-मुखसें बहार निकले बाद-जब-आठ-स्पर्शवाले होजायगें-वायुकायके जीवोंकी हिंसा करसकेगें, जबावमें तलब करो,-मुहपत्ति मुहपर बाध रखो-तोभी-और-न-बाधो तोभी-भाषावर्गणके पुद्गल-आठस्पर्शी-होकर हिंसा-करेगें-फिर मुहपत्ति बाधनेसें-क्या फायदा हुवा?-और-वायुकायके जीवोंकी हिंसा होती कहा रुकी?-इस बातकों सोचो! और खयालकरो, पीतांबरोंकी दलिल किसकदर-पुख्ता है? -जिसकों तोडना नही बनसकता-चाहे-कोई-मुनि हो-या-श्रावक हो,-मुहके आगे कपडारखकर बोले-तो-वो निरवद्यभाषा है, वरना! सावद्य है,-मगर-मुहपत्ति मुहपर बाधना किस जैनशास्त्रका फरमान है, इसका कोई जबाब दे-सको-तो-दो,—

१२ आगे किताब-सुरसुदरीविवेकविलासके चतुर्थ परिछेदमे पृष्ठ (१९९) पर तेहरीर है,-पीतांबरीलोग हमसें कहा करते है कि-शिखरजी-गिरनार-वा-शत्रुंजय-इत्यादि किसी तीर्थकी यात्रा करो-तो-तुझे बडा पुन्य लाभ होगा,-सो-क्या-यह उनका कथन ठीक है? उत्तरमे-आर्याजी कहते है, उनका यह कथन बिल्कुल ठीक नही है, देखो! जब कोई साहूकार (सराफ) किसी स्थानपर अपनी सराफेकी दुकान करता है,-तो-लोग उनकी दुकानपर

जाकर बेठते है, और-सोना-चादी-खरीदते है, कालातरमे-जब-वह-सराफ उस दुकानकों छोड देता है,-तथा-अन्यत्र कहीं जाकर अपनी दुकान खोलता है,-तब-वह-उसकी दुकान सूनी पडी रहती है,-अर्थात् वहा कोईभी-नही-जाता, इस दृष्टातसे समज लेना चाहिये कि-सराफके समान भगवान्-वा-मुनिगण-तो-कर्मोका नाशकर मुक्तिम पधार गये, अब दुकानके समान-वे-सूने पहाड रहगये,-वे-वदनीक-कैसे-हो सकते है?—

(जवाब.) द्वादशाग-वाणीके-फरमानेवाले-तीर्थंकर-देव-तो-मुक्तिको चले गये, अब-कागज-स्याहीके बने हुवे-धर्मपुस्तक बाकी रहगये, और-वे-खुद बोलते नही, सबब-वे-जड है, बतलाना होगा, धर्मपुस्तकोंकी-इज्जत करना-या-नही? अगर कागज-स्याहीके बने हुवे-धर्मपुस्तकोंकी बेंअदबी होजाय-तो-गुनाह हुवा-समजते हो,-तो-जडवस्तुकी इज्जत सावीत हुई, दुसरी मिशाल-सुनिये! जब-कोई-जैनमुनि-इतकाल होजाते है, श्रावकलोग-लकडेके विमानमे-जैनमुनिके-कलेवरकों बेठाकर अग्निसस्कार करनेके लिये-लेजाते है,-विमानपर धजा-पताका-लगाते है,-यह-उस धर्मगुरु-मुनिकी-इज्जत हुई-या-नही?-मृतकलेवरम-पचमहाव्रतपालनेवाले-मुनिम-हाराज-तो-है-नही,-सुना पडा है,-फिर इसकी-इज्जत क्यों किई जाती है,? कलेवरमे-आत्माका-गुण-रहा नही,-सोचो! गुणरहित द्रव्यनिक्षेपकी इज्जत हुई-या-नही? किसकदर उमदा दलिल है-जिसकों-कोई-रद नही करसकता, दीक्षालेनेवाला शख्श जब दीक्षाकी तयारी करता है,-उसम-पचमहाव्रतरूपी-गुन-हासिल हुवे नहीं, गृहस्थहालतम उसकी इज्जत किई जाती है, उमदा कपडे-और-जेवर पहनाकर उसका जुलुस निकाला जाता है, बतलाईये! यह-गुन-निर्गुन-द्रव्यनिक्षेपकी इज्जत हुई-या- नही? गुरुजीके आसनको-धेलेका-पाव-लगजाय-तो-गुरुजीकी बेंअदबी हुई समजी जाती है,-कहिये! गुरुजीके आसनम पचमहाव्रतरूप-गुन कहा है? स्था-

नकबासीमजहबके कितनेक साधुमहात्माओंकी फोटोग्राफमें उतरी हुई तस्वीर देखी गई हैं,-और श्रावकलोग अपने घरोंमें इज्जतसें रखते हैं,-यह-स्थापनानिक्षेकी इज्जत हुई-या-नही?-अगर कहा जाय-हम-गुन-बिना खाली-द्रव्यनिक्षेपेकों नही मानते-तो-उपर दिखलाई हुई-बाते-क्यों मजुर रखी गई? इसका कोई जबाब देवे,

१३ तीर्थ-शत्रुंजय, गिरनार, समेतशिखर, पावापुरी, चंपापुरी, राजगृही, हस्तिनापुर, आबुजी-केशरीयाजी-अंतरिक्षजी-माडवगढ बगेरा जैनतीर्थोंकी जियारत जानेसे अगर जानेवालेका दिलीइरादा-पाक और साफ होजाय-तो-बेशक! उसकों पुन्य है,-जैसे आपलोग अपने धर्मगुरुओंके दर्शनोंकों-एकगावसें दुसरे गाव जाते हैं, वैसे मूर्त्तिपूजक जैनश्वेतांबर-श्रावक-शत्रुंजय-गिरनार वगेरा तीर्थोंके दर्शनोंकों-जाते हैं, जैसे आपलोगोंकों धर्मगुरुओंके मुखसें शास्त्र सुननेपर ज्ञान होता है, मूर्त्तिपूजक जैनश्वेतांबर श्रावकोंकों जिनमूर्त्तिके दर्शनोंसें ज्ञान होता है -अगर कहाजाय मूर्त्तिपूजामें पानी-फूल वगेराके सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा होगी-जबाबमें मालुम हो.-स्वधर्मी-श्रावकोंकों रसोई बनाकर जिमानेमें अप्काय-तेउकाय-वायुकाय, और वनास्पतिकायके जीवोंकी-हिंसा-न-होगी? इसका जबाब दीजिये. -फर्ज करो, धर्मगुरु-अपने-शहरमें-तशरीफ लाये,-और-उनकी पेशबाईकों श्रावकलोग कोश-दो-कोशतक सामने गये-तो-बतलाइये! जानेवालोंके पावसें रास्तेमें वायुकाय वगेराके सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा होगी-या-नही!-अगर कहाजाय-होगी-तो-धर्मगुरुओंके पेशवाइकों क्यों जाना? अगर कहाजाय-इरादा धर्मका होनेसे भावहिंसा नही-तो यही दलिल-मंदीर-मूर्त्ति-और जैनतीर्थोंकी जियारतमें क्यों-न-लाई जाय?

१४ अगर कहाजाय पथ्थरकी-गौ-दूध नही देती, और पथ्थरका सिंह मारता नही, इसीतरह पथ्थरकी-मूर्त्ति किसीकों तारती नही, फिर उसके माननेसे क्या फायदा?

(जवाब) कागज-स्याहीके बनेहुवे धर्मपुस्तक खुद बोलते नही और ससारसमुदरसे किसीको तारते नही, फिर उनकोभी-मानना क्या! फायदा? अगर कहाजाय, पुस्तकके पढनेवालोकों उनसे ज्ञान होगा-तो-जवाबमे तलव करो, वीतरागकी मूर्त्ति देखनेसे वीतराग भावका ज्ञान होगा, जैसे पथ्थरकी गौने असली गौकों-याद-करवाई, पथ्थरकी जिनमूर्त्तिने असली जिनेंद्रकी यादी करवतलाई, चुनाचे! मूर्त्ति अजीव है,-मजकुरबात किसीसे छीपी नही,-मगर-असली चीजको-याद दिलानेमे एक-पुख्ता-सबुत है,-इस बातको कौन इनकार करसकता है?-जैसे फोटोग्राफकी उतारीहुई-तस्वीर-जिसकी तस्वीर हो-उसकों याद कर दिखाती है.-कागजपर बनेहुवे देवलोकके चित्र बोलते नही, इसीतरह नरकगतिके चित्रभी-बोलते नही,-जबूद्वीपका नकशाभी-बोलता नही, और-ये-चीजें-कई जैन-मुनि-अपने पुस्तकोंके शाथ रखते है. बतलाना चाहिये-इनके-रखनेसें क्या! फायदा? इसका कोई जवाब देवे, दरअसल! तस्वीर-मूर्त्ति-या-नकशा देखनेसें-असली चीज-याद-आ-जाती है, इसमे कोई-शक-नही. इसीतरह जिनेंद्र देवकी मूर्त्ति देखनेसें जिनेंद्र देव-याद-आजाते है,-बस! जो-काम-मूर्त्तिने करनाथा-वो-कर-दिखाया आगे-जिस शख्शका जैसा इरादा-वैसा-उसकों-फल,-देखिये! माला देखनेसें परमात्माका-स्मर्ण-करना याद आता है,-किसी-शहरमे-किसी राजा-साहबकी मूर्त्ति-बतौर-स्मारक-चिन्हके बनाईगई हो. उसकों देखकर-वे-राजासाहब-याद-आते है,-वैसे-देवमूर्त्तिकों देखकर-देव-याद-आजाते है,-यह-एक-साफ बात है.-इसको कौन-गलत-कहसकेगा, सबुत हुवा, नामनिक्षेपेसें स्थापना निक्षेपा ज्यादा फायदेमद है. और-इसीलिये स्थानागसूत्रमे-तीर्थंकर-गणधरोंने-"ठवणा सचे"-ऐसा पाठ बयान फरमाया,—

१५ भगवतीसूत्रके (२०)वे-शतकके (८)मे-उद्देशकमे-साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका,-ये-चार तीर्थ फरमाये,-ये-जगमतीर्थकी

-अपेक्षासें-है, और जिस जिस जगहसे तीर्थंकरदेव-मुक्तिमें तशरीफ -लेगये,-वे-स्थावर-तीर्थ-बयान किये,-तीर्थंकर ऋषभदेवमहाराज -अष्टापदपर्वतसे-मुक्ति-पाये -वीश-तीर्थंकर-समेतशिखरजीसें,- तीर्थंकर-नेमनाथ महाराज-गिरनार पर्वतसे-और-तीर्थंकर-महावीर स्वामी-पावापुरीसें-मुक्ति पाये.-ये-सब स्थावर तीर्थ शुमार किये गये, और-इनकों बतौर जैनतीर्थ-मानना-जाइज है,-हरेक जैनकों अपने मजहबके धर्मपुस्तकमें-तलाश करना चाहिये,-जैनमजहबमे- मूर्त्ति-मानना लिखा है,-या-नही? अगर लिखा है-तो-उसको मजुर करना-बहेत्तर हुवा, जैनश्वेतांबर मजहबमें-जब-स्थानकवासी -फिरका-इजाद हुवा, जिनमूर्त्ति-माननेसे इनकार कियागया,-फर्ज करो! अगर जैनमजहबमें बुतपरस्ति-न-होती-तो-जमीनसे पुरानी जिनमूर्त्तिये कैसे निकल आती,-तीर्थंकर-महावीर निर्वाणके बाद (२९०) वर्सपीछे-राजासंप्रति-हुवा, उनके तामीर करवायेहुवे-जैन- मंदीर-तीर्थ-शत्रुंजय-गिरनापर अबतक-कायम है,-प्राचीन-इति- हास देखो-तो-उसमेंभी-जिनमूर्त्ति-और-शिलालेखोंका बयान है, -सोचो! अगर-बुतपरस्ति-जैनमें-न-होती-तो-ऐसा बयान-क्यों होता?—

१६ आगे किताब-श्रुरसुदरीविवेकविलासके-चतुर्थ-परिछेदमे- पृष्ठ (२०२) पर इसदलिलकों पेंश किई है,-कोणिक, श्रेणिक, चेडाराजा,-दशार्णभद्र, और हस्तपाल,-इत्यादि अनेक-राजा-हुवे है,-तथा-दश-उत्कृष्ट-श्रावक हुवे, परंतु किसीनेभी-प्रतिमाका- पूजन-नही किया, तथा किसीनेभी-मदिर नही बनवाया,—

(जवाब,) कौन कहसकता है-मंदिर-नही बनवाया,? उवाई- सूत्रमें-चंपानगरीका बयान है,-वहां बहुतसें-अरिहंत-चैत्योंसें चंपा- नगरी खुबसूरत लिखी है,-खयाल करनेकी-जगह है,-उस वख्त- अरिहंतोंके चैत्य-बने हुवे-होंगे, जब-मजकुर बयान लिखा गया होगा,-चेडा-राजाकी राजधानी-विशाला नगरीमें-तीर्थंकर-मुनिसु-

व्रतस्वामीका-मंदिर-था, आवश्यकसूत्रमें-सबुत है,-भरत-राजाजीने अष्टापद पर्वतपर-चौवीस तीर्थंकरोंके-मंदिर-तामीर करवाये और-पूजा-किई, आवश्यक-सूत्रमें दर्ज है,-आनंद-कामदेव-वगेरा दश-श्रावकोंने-जिनमूर्त्तिको वंदन-नमन-करना मंजुर रखा, उपाशकदशांग सूत्रमें-तेहरीर है,-जंबूद्वीप-प्रज्ञप्ति-सूत्रमें शाश्वती-जिनप्रतिमाका-जिक्र है,-जब-शाश्वती-जिनप्रतिमा-मानना जैनसूत्रोंमें-तेहरीरहै,-तो-अशाश्वती-जिनप्रतिमा-माननेमें क्या! हर्ज है? अरिहंत चेइयाणमें-वंदणवत्तीयाए-पूअणवत्तीयाए-ऐसा पाठ है, इससें साबीत हुवा,-जैनमजहबमें-मूर्त्तिका-मानना जाईज है,-आर्द्रकुमारकों-जिनप्रतिमाके दर्शनसें-जातिस्मर्ण-ज्ञान-हुवा, सूत्रकृतांगम-सबुत है,-कोई महाशय-निर्युक्ति-टीका-भाष्यवगेरा पंचांगी-न-माने-उनकी खुशी,-मगर-जैनशास्त्रोंमे मूर्त्तिका मानना लिखा है, इसमें कोई-शक-नही,—

१७ किताब सुरसुंदरी-विवेकविलासके-चतुर्थ परिछेदमें-पृष्ठ-(२०५) तेहरीर है,-देखो! श्रीआदिनाथ भगवानसें लेकर श्रीमहावीरस्वामी-पर्यंत-सबका एक ही-उपदेश है, अर्थात-सबने-आगार-धर्म-और अणगारधर्म-इन दोही-धर्मोकी प्ररूपणा किई, किंतु-यात्रा करना-संघ-निकालना,-मंदिर बनवाना, तथा प्रतिमाका पूजना, इसकों कहीमी-धर्म-नही बतलाया. यदि किसी सिद्धांत-ग्रंथमें इनबातोंको-धर्म-बतलाया गया हो-तो-लेख बतलाओ.—

(जबाब,) बत्तीस सूत्रमें-जो-नंदीसूत्र है,-उसमें-पेतालीश-आगम-वगेरा सूत्रसिद्धांतोंके नाम है,-उनको मंजुर रखते हो-या-नही? इसका जबाब दिजिये बत्तीससूत्र मानना-और-दुसरे नही मानना-यह-किस जैनसिद्धांतका-सबुत है? जैनमुनिकों मुहपर-मुहपत्ति बांधरखना-किस सूत्रका पाठ है? अगर बत्तीससूत्रके सिवाय दुसरेसूत्र-न-मानेजाय-तो-रामचरित, पांडवचरित, महाबलचरित, महीपालचरित, धन्ना-शालिभद्र चरित, जंबूस्वामीच-

रित-अंजना-सतीका रास-वगेरा-प्रकरणग्रंथ आपलोग किस सबुतसे मंजुररखते है? बत्तीस-सूत्र-और-इनचरित्रोंमे बहुतसा तफावत है,-चरित्रग्रंथ-जैनाचार्योंके-बनायेहुवे है, और-सूत्र-तीर्थंकर-गणधरोंके फरमायेहुवे है,-अगर कहाजाय, मंदिर बनवानेमे-मिट्टी-पानी-वगेराके सूक्ष्मजीवोंकी हिंसाहोगी. जवाबमे मालुम हो,-स्थानक बनवानेमेभी-मिट्टी और पानीवगेरा सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा होगी-इसका क्या जवाब देते हो?—

१८ सब तीर्थंकरोंने-जो-गृहस्थधर्म-और-साधुधर्म बयान फरमाया, इसमे गृहस्थधर्मके बयानमे-सम्यक्तमूल-बारहव्रत-इख्तियार करना-फरमाया,-सुदेव, सुगुरु, और सुधर्म-मानना-इसका नाम सम्यक्त कहा, देवपूजाकरना,-धर्मशास्त्र-सुनना, जीवोंपर रहम करना,-सुपात्र दान देना,-स्वाध्याय करना,-और-मुताबिक अपनी ताकातके-तप-करना, इतनी बातें गृहस्थधर्मकेलिये तेहरीर फरमाई. भरतराजाने जिनमंदिर तामीर करवाये और उनकी पूजा किई आवश्यकसूत्रकी निर्युक्ति और टीकामें-सबूत है, और उनोने शत्रुजयतीर्थका-संघ निकाला-शत्रुंजयमाहात्म्यमें तेहरीर है,-अगर कहाजाय-जिनप्रतिमाकी पूजामे अप्काय-वनास्पतिकायवगेरा सूक्ष्मजीवोंकी-हिंसा होगी,-तो-मुनि विहारमे-नदी उतरनेमे-और गौचरीजानेमें-अप्काय-वायुकाय-वगेरा-सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा होगी-इसका जवाब क्या देते हो,—

१९ जैनागम-नंदीसूत्रमे-जो-भत्तपच्चखाण-पयन्नेका-नाम है,-उसमे पाठ है,—

> नियदव्व-मउव्व-जिणदभवणं, जिणबिंब-वरपइट्ठासु,
> वियरइ पसथ्थ-पुथ्थय-सुत्तिथ्थ-तिथ्थयरपूआसु,-१

जिनमंदिर, जिनप्रतिमा, ज्ञान, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका-ये-जैनमजहबमे-सात-धर्मक्षेत्र है,-श्रावकको लाजिम है,-इनमे

दौलत सर्फ करना, बत्तीससूत्र माननेवाले-नंदीसूत्र मानते है,-और नदीसूत्रमे जिसजिस सूत्रोंके नाम बतलाये है,-उनको क्यों नही मानते? अगर जिनमदिर, और जिनमूर्त्ति-ये-दो-धर्मक्षेत्र-न-मानेजाय-तो-सातधर्म-क्षेत्र-कहा रहे! पाचही रहेगे, सबुत हुवा, -जिनमदिर और जिनमूर्त्ति-जैनमजहबमे मजुर रखी गई है-श्रावकों सातधर्मक्षेत्रमे दौलत सर्फ करना कहा,-जैनमुनि-द्रव्य रखते नही,-इनकी खिदमतमे द्रव्य खर्चना,-बीमारीकी हालतमे दवावगेराका इतजाम करना,-दीक्षाके जलसेमे धन-लगाना-ये-सब-गुरुभक्तिके काम है,-धर्मपुस्तक लिखवाना-या-छपवाना-यह-ज्ञानकी पुख्तगी है,-इसीतरह जिनमदिर तामीर करवाना,-जिनमूर्त्ति -तरतनशीन-करना,-ये-सब धर्मकी-तरक्कीके कामहै, और-धर्मकी तरक्की करना श्रावकोंका फर्ज है,—

२९ उववाई-सूत्रमे-बयान है,-कोणिकराजाने-जब-तीर्थंकर-महावीर स्वामीका-अपने शहरके बहार-आना सुना, अपने शहरको-शिगारा, और-हाथी-घोडे और बाजा वगेरा लवाजमेके शाथ-वदन -करनेकों-गया, बतलाइये! कौणिक राजाकों-इसमे पुन्य हुवा-या-पाप? अगर कहा जाय,-पुन्य हुवा,-तो-फिर इसीतरह कोई दुसरा श्रावक धर्मका जलसा करे-तो-पुन्य-क्यों-नही? जमाने तीर्थंकरोंके-जब-तीर्थंकर देव-हयातथे,-उनके पाचकल्याणिकके-रौज-देवते-आतेथे, और धर्मका-जलसा-करतेथे, कहिये! इसमे पुन्य हुवा-समजना-या-पाप? फर्ज करो! अगर पापका काम था-तो-तीर्थंकरोंने उनकी कारवाइकों गलत-क्यों-न-फरमाई? दशार्णभद्र-राजा-बडे जुलुससे तीर्थंकरमहावीर स्वामीकों-अपने-शहरके बहार वदन-करने गया था, इसमे वायुकायके जीवोंकी-और-रास्तेमे-छोटे-त्रसजीव-जो-फिरते है,-सायत! उनकी हिंसाभी-हुई होगी-मगर-तोभी-उसकों धर्मकी-तरक्कीका फायदा मिला, सोचो! इसका क्या मनब?—

३० जैनमुनिकों सफरकरते वख्त-अगर-रास्तेमें-नदी-आजाय -और उसमे गोडेके नीचेतक पानीहो,-तो-एक पात्र-जलमें-और -एक पात्र स्थलमे-(यानी)-जलसे उपरको रखकर यतनासें नदी उतरे, इरादे धर्मके नदी उतरना तीर्थंकरोंका हुकम है,-फर्ज करो! नदी उतरते वख्त मुनिके पावसें पानीके जीवोंकी-जो-हिंसा हुई उसमें पुन्य मानना-या-पाप? अगर कहा जाय इरादा धर्मका है, इसलिये पुन्य है-तो-फिर यही मिशाल दुसरे धर्मकार्यके लिये-क्यों-न-पेश किई जाय? जैनमुनि-एक गांवसें दुसरे गावका सफर करे,-लोगोंकों तालीम धर्मकी देवे, यह-सब-क्रिया-धर्मकी तरक्कीके लिये परमार्थकी है,-अपने-मतलबके लिये-नही, इसलिये इसमें पुन्य है,-जैनशास्त्रमे चारनिक्षेपे मंजुररखे गये, नामनिक्षेपा,-स्थापनानिक्षेपा,-द्रव्यनिक्षेपा,-और-भावनिक्षेपा, प्रत्येक-बुद्धोंकों -जो- एक एक चीज देखकर ज्ञान हुवाथा, उनके लिये-वे-चीजें-फायदेमंद हुई, दशवैकालिक सूत्रके (८)मे-अध्ययनमे तेहरीर है,—

चित्तभित्त-न-णिज्झाये,-नारीं-या-सुअलकिय,-
भखरपिब दट्ठूण, दिट्ठीं-पडिसमाहरे,-

जिस मकानमे दिवारपर-औरतका-चित्रहो, उसकों-मुनि-न-देखे, जैसे सूर्यकों देखकर नजर खेंच लिई जाती है,-औरतके चित्रकों देखकर-मुनि-अपनी नजरकों खेंच लेवे, सबब-उस चित्रकों देखकर असली औरत याद आजाती है,-सवालपैदा होनेकी जगह है, औरतके चित्रकों देखकर असली औरत याद आजावे-तो-तीर्थंकरोंकी मूर्तिदेखकर खासतीर्थंकरोंकी यादी क्यों-न-आसके? अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे-गुणरहित-स्थापना निक्षेपेंको-हम-नही मानते-तो-सौचो! दिवारपर बने हुवे चित्रमे-औरतके गुण-कहा है? वो-चित्र-न-बोलता है,-न-कुछ बात करता,-फिर उस चित्रकों देखकर अपनी नजरकों खेंच लेना-क्यों-फरमाया? इसका जवाब दीजिये,—

३१ अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे. जिनेंद्रदेव-त्यागी थे, उनकों-केशर-चदन-और आभूषण वगेराके शिंगारसे भोगी-क्यों -बनाना? (जवाब.) जब-तीर्थंकरदेव-रत्नसिंहासनपर तख्तनशीन होते थे? और सिरपर छत्र-और-दोंनों तर्फ देवते चवर करते थे. उस हालतमें उनकों त्यागी-मानते हो-या-भोगी? अगर कहाजाय उनके-राग-द्वेष-वगेरा-कर्म-क्षय होगये-फिर-रागी-भोगी कैसे होसके? जवाबमे तलब करो इसीतरह उनकी मूर्त्तिकों केशर-चदन -और-आभूषण चढानेसे-वे-भोगी कैसे बनसके? रायपसेणीसूत्रमें सुरयाभदेवताने जिनप्रतिमाकी पूजा किई ऐसा बयान है,-ज्ञातासूत्रमें द्रौपदी-सतीने-पूजा किई तेहरीर है,-भगवतीसूत्रमें-जघाचारण-विद्याचारण-मुनिने-जिनप्रतिमाको-वदन-नमन-किया सबुत है,-इसी-भगवतीसूत्रमें-बयान है,-चमरेंद्रने-जिनप्रतिमाका-शरण-लिया, खयाल करो! अगर-जैनमजहबमे-जिनप्रतिमा मानना -मजुर-न-होता-तो-ऐसा बयान क्यों होता?—

३२ रायपसेणी-सूत्रमे-बयान है,-परदेशी-राजा-पेस्तर बहुत पापकर्म करता था, मगर-जैनाचार्य-केशीकुमारजीकी धर्मतालीमसें-जैनधर्मपर एतकात लाया. और पिछली उम्रम धर्मपावद बना, फर्ज करो-पहले कोई शख्श-कितनाही-पापी-हो, और-उन-पापोंकों छोडकर धर्मपावद होजाय-तो-उसका निस्तार होसकता है,-मगर-शर्त-यह है,-पहले पापकर्म-करतेवख्त-निकाचित-कर्म-बाधलिया-न-हो, अगर पापकर्म-निकाचित बाधलिया होगा-उस-गतिकों जरूर जाना होगा, मास खाना-पाप है,-जैनशास्त्रोंमें-मास-खाना-मना है, मगर सबलोग सरीखे नही होते,-कोई लोग धर्मपर एतकात लाते है,-कोई-नही लाते धर्ममे-जबरजस्ती-नही किईजाती,-धर्मपर एतकात लाना-न-लाना अपने अपने दिलके ताल्लुक है.-जो-जो-महाशय जैसी जैसी-करनी करेंगे-वैसा-फल पायगे,-यह-एक साफ बात है,-मास खानेसें-पाप लगेगा, मगर

उसकी-श्रद्धा-चलीजाय ऐसा कहना नही बनसकता, श्रद्धा-दर्शनावरणीयकर्मके क्षयोपशमसें होती है-और-व्रत-नियम-चारित्र-मोहनीय-कर्मके-क्षयोपशमसें होसकते है,-स्वर्गके देवतोंमे-जो-धर्मपर-कामील एतकातवाले है,-उनको-सम्यक्त्वधारी-चतुर्थ गुणस्थानपर शुमार कियेगये है,-श्रावकोंमेभी-जो-धर्मपर-कामील एतकालवाले सम्यक्त्वधारी है,-उनकोंभी-चतुर्थगुणस्थानपर शुमार किये है,-जिनोंने व्रत-नियम-इख्तियार किये है, उनको पचम-गुणस्थान कहा, सम्यक्त्वधारी देवते-चतुर्थ गुणस्थानवाले होनेसे श्रावकपदमे शुमार-कियेगये है,-चतुर्थगुणस्थानवालोंकी-और-चौदहमे गुणस्थानवालोंकी-देव-गुरु-धर्मके बारेमे-श्रद्धा-एक है,-सबुत हुवा, सम्यक्त्वधारी देवोंकी धर्मकरनी-काबिले-गौर है,-फिजहूल नही,—

३२ अगर कोई-इसदलीलकों पेंश करे, जैनशास्त्र-स्थानागसूत्रके तीसरे-ठाणेमे-तीन तरहके जिनफरमाये, अवधिज्ञानी जिन, मनःपर्यायज्ञानी जिन, और-केवलज्ञानी जिन, और-इसीतरह-तीनतरहके अरिहतभी कहे, (जवाब,) इनमे-केवलज्ञानी जिन, और केवलज्ञानी अरिहतकोही-उपदेशक माने है, और-मूर्त्तिभी उनही-जिन-अरिहतोंकी मानी गई है,-अरिहत और तीर्थंकर-एकही-पर्यायवाचक है,-उनके शरीरकी-अवगाहना-कमसें कम-सात हाथ और ज्यादेसें ज्यादा पाचसो धनुष्यकी फरमाई,-स्थानकवासी मजहबमे-और-जैनश्वेताबर-तेरहपथमजहबमे-जिनमूर्त्ति-नही मानी गई जमाने हालमें कोई-तीर्थंकरदेव-मौजूद नही, उनकी कही हुई द्वादशाग वानीके पुस्तक मौजूद है,-उनकों देखकर अमल करना चाहिये, व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, और अलकार ग्रंथोंके पढनेसे शास्त्रोंका ज्ञान उमदातौरसें होसकेगा, इसलिये इनका पढना लाजमी हुवा,-जो-लोग व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय और अलकारका इल्म हासिल नही करते, निर्युक्ति-भाष्य-टीका-वगेरा नही मानते, उनकों मूलसूत्रोंका अर्थ हासिल होना दुसवार है,—

३४-[भगवती सूत्रमें शतक (२५)-उद्देशक तीसरेमे बयान है,-]

सुत्तथ्थो खलु पढमो, बीयो निज्जुत्ति मिस्सिओ भणियो,

तइयो-य-निरविसेसो, एसविहि होइ अणुयोगो,—

अवल सूत्रका अर्थ करना, फिर निर्युक्ति कहना, तीसरेमे-निर-विसेस अर्थ करना, इसपाठसें निर्युक्तिका मानना साबीत हुवा, इस तरह-सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, टीका, चूर्णि, वगेरा पचागीकों कबुलर-खना चाहिये, बत्तीस-सूत्रका-भाषा अर्थ-जिसको-स्थानकवासी-मजहबवाले टब्बार्थभी-बोलते है,-टीकाके-सबुतसें बना है,-आचा-राग सूत्रके टब्बार्थकरनेवालोंने लिखा है, सूत्रकी-टीका-कठीन होनेके-सबब-मे-बालावबोध-अर्थ-बनाताहु, इससे-सबुत हुवा,-पचांगीमानना जाईज है,-जैनमजहबम-बत्तीस सूत्रमानना-और-दूसरे नही मानता, ऐसा कोई-पाठ-नही,-बत्तीससूत्रोंकी गिन-तीमें नदीसूत्रमानना-शुमार-किया गया, और नदीसूत्रमे दुसरे सूत्रोंकेभी-नाम है,-इनकों नही मानना इसकी क्या वहज? अगर कहा जाय,-पैंतालिस जैनआगमोंकी निर्युक्ति और टीका-वगेरामें कइबातोंका तफावत है, इसलिये-हम-नही मानते, जबाबम-तलबकरो,-बत्तीस सूत्रोके-मूलपाठमेभी-कई-बातोंका-तफावत है, इनकों कैसे मानते हो?—

३५ अगर कोई इसदलिलको पेश करे-मूर्त्तिका मानना जैनमज हबमें पीछेसें दाखिल हुवा है, जमाने तीर्थकरोंके नही था, जबाबमें तलब करे,-मूर्त्तिका मानना-खास-जमाने तीर्थकरोंके चला आया, समवसरणम-जब-पूर्वदिशाके सामने खुद तीर्थंकरदेव-तख्तनशीन-होतेथे, बाकीरही हुई-तीनदिशाके सिंहासनोंम देवतेलोग-रत्नमय-जिनमूर्त्ति-बनाकर जायेनशीन-करतेथे,-मूर्त्ति-माननेके बारेम इससें -ज्यादा-सबुत-क्या होगा? तीर्थंकरऋषभदेव-महाराजके-जमानेमे -भरत-राजाने-जैनमदिर तामीर करवाये-और-जिनमूर्त्तियें तख्त नशीन किई, राजा-सप्रतिके बनवाये हुवे-जैनमदिर-अबतक-शत्रु-

जय-गिरनार-वगेरा जैनतीर्थोंमें-और-दुसरे शहरोंमें अवतक कायम है,-कई जगह-पुरानी जिनमूर्तियोंका जमीनसें निकलना-नजरके सामने देखा गया हैं,-इनसबुतोंसें-कह-सकतेहो, जैनमजहबमें-मूर्तिका-मानना कदीमसें चला आया, मंदिर बनवानेमें-मिट्टी-और-पानीवगेराके सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा होगी कहना,-फिर स्थानक बनवाना-कैसे-जाइज हुवा? दीक्षाके जलसेमें-हजारो-रुपये सर्फ करना-इसकी क्या वजह है? तीर्थकी जियारतको जानाहो-कहा जाय सख्तगर्मी पडती है, और-अगर-दुनयवी-कारोबारके लिये जानाहो-तो-सख्त-गर्मीमेभी-चले जाय, श्रावकोंको जिनमूर्त्तिकी -द्रव्यपूजा-और-भावपूजा-दोनोंतरहकी पूजा बयान फरमाई, केशर -चंदन-पुष्प-धूप-दीपवगेरा चीजोंसे पूजाकरना इसका नाम द्रव्य-पूजा-और-वंदन-नमन-करना-इसका नाम-भावपूजा है,-साधु-जनोंको-भावपूजा-करना,-जिनमूर्तिके सामने-जिनेंद्रोंकी-इबादत करना हुकम है,—

२६ किताब श्रुरसुंदरी-विवेकविलासके-चतुर्थ परिछेदमें पृष्ट (२१०) पर बयान हैं,-मूर्त्तिपूजकलोग कहते हैं, ज्ञातासूत्रके सोल-हमे अध्ययनमें द्रौपदीजीके प्रतिमापूजनका वर्णन है,-क्या-यह बात ठीक है, उत्तरमे आर्याजीकी तर्फसे कहा गया, प्रथम-तो-उस समय द्रौपदी मिथ्यात्विनी थी, क्योंकि-उसने नियाणा किया था,-नियाणाकी पूर्त्तिके विना सम्यक्त्वकी प्राप्ति नही होसकती, फिर देखो! वहा-"जिन-घर-" का-पाठ है,-सो-जिनराजके-तो-घर-होताही नही, यदि जिनराजकेभी-घर-हो-तो-वास्तवमें जिनही नही हो सकते,—

(जवाब,) जिनगृह-कहो-या-जिनमंदिर कहो, बात एकही-है,-जिनेंद्रोंने दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किई, फिर उनको-दुनियासें-और घरसें-क्या!-ताल्लुक? मगर इस बातका जवाब देना होगा, जब-वे-संयमी हालतमें-समवसरणके रत्नसिंहासनपर बेठतेथे,

देवते-छत्र-चमर करतेथे,-उनकों आपलोग जिनेंद्र मानते हो-या-नही? सबब-ये-सब-त्यागीपनेके चिह्न नही,-अगर आप लोग जिनप्रतिमाको जिन-नही मानते-तो-रायपसेणी-सूत्रमें जहा बयान है,-"धुव दाउण जिणवराण,-" स्वर्गमे सूर्याभदेवताने जिनेंद्रोंकों-धूप दिया, वहा स्वर्गमें साक्षात् जिनेंद्र-तो-ये-नही, फिर शास्त्रकारोने उनकी मूर्त्तियोंकों जिनेंद्र क्यों कहे? इसबातको सोचो! अगर कहा जाय! देवतोंकों-व्रत-नियम नही होते-तो-जवाबमे मालुमहो, सम्यक्त्वधारक-देवतोंकों-चतुर्थगुणस्थान फरमाया, और चतुर्थगुणस्थानवालोंकों अविरति-सम्यक्दृष्टि-श्रावक-कहे,-सबुत हुवा, कामील एतकात-देवते श्रावकपदमे शुमार किये है,-और-उनकी धर्मक्रिया-काबिले गौर-है, ज्ञातासूत्रमें द्रौपदीजीकों मिथ्यात्व-श्रद्धावाली नही लिखी, फर्ज करो! अगर उनकी-श्रद्धा-मिथ्या-होती-तो-जिनप्रतिमाके सामने शक्रस्तवका पाठ-क्यौं-पढती? द्रौपदीजीने पूर्वभवमे-जो-निदान-किया था,-इसभवमे उसको मिला,-नियाणा-सम्यक्त्व पानेमे हरकत नही करसकता,-कमपढे हुवे चाहे इसबातकों-न-समजेगे, मगर-कामीलइल्म-व-खूबी समजलेगें,—

३७ जैनशास्त्रमे जैनमुनिकों (३२) अंगुल-लंबा-रजोहरण रखना कहा, स्थानकवासी-मजहबके मुनिलोग-इससें-ज्यादा लंबा रजोहरण रखते है,-इसका कोई शास्त्र सबुत हो-तो-पेश करे, जैनमुनिकों कोई-दुनियादार शख्श-वदन-नमन-करे, जैनमुनि-उसके जवाबमें धर्मलाभशब्द कहे,-मगर-दया-पालो-ऐसा कहना किसी जैनशास्त्रमें तेहरीर नही, एकगावसें दुसरेगाव जाते रास्तेमे-अगर कोई-नदी आजाय-तो-उसके पार होना जैनमुनिको हुकम है,-अगर-कोई-दो-उपवासका-दड-लेना कहे,-तो-बतलाना होगा किस जैनशास्त्रका सबुत है, अगर कहा जाय-रुढी पडगई है-तो-रुढी-शास्त्रसे बडी नही, हरेक बात-दिलीइरादेपर-दारमदार-है,-शरीरसें जीवहिंसा-न-करे-और-दिलमे जीव हिसा करनेका इरादा-हो-

तो-पाप है,-शरीरसें हिंसा-करे-मगर-दिलीइरादा जीव हिंसा करनेका-न-हो-तो पाप नही, इस वातकों समजना चाहिये,-फर्ज करो! पानीके भरे हुवे-किसी-वर्तनमें-मख्खी-गिरपडी हो, अगर उसकों निकाले-तो-पानीके जीवोंकी हिंसा होती है, वतलाईये! मख्खी निकालनेवालेको पुन्य होगा-या-पाप? अगर कहा जाय-इरादा-जीव बचानेका है,-इसलिये पुन्य होगा-तो-यही दलिल दुसरे धर्मकार्यके लिये क्यों-न-समजी जाय,—

३८ वत्तीससूत्रही-मानना, दुसरे नही मानना, ऐसा कहनेवालोंसें पूछना चाहिये, तीर्थंकर महावीरस्वामीके (२७) भवोंका बयान किस-जगह तेहरीर है? वतलाना होगा, तीर्थंकर नेमनाथजीका और राजीमतीका पूर्वभवका सवध कहतेहो,-तो-मजकुर बयान वत्तीस सूत्रोंमे किसजगह लिखा है, दिखलाना होगा, सोलह -सतीयोंका-बयान-और बलभद्रजीने एक-हिरनकों प्रतिबोध दिया कहतेहो, वतलाना होगा, वत्तीससूत्रोंमे किसजगह लिखा है? मरुदेवीजी-हाथीके होदेपर बेठे अछीभावनासे-केवलज्ञान पाये, और उनकी मुक्ति हुई वत्तीससूत्रोंमे किसजगह सबुत है? भरत-राजाजीका-और-बाहुबलिजीका-जंग-हुवा, इसकाभी-वत्तीससूत्रोंमे सबुत नहीं, फिर-मजकुर बात कैसे मजुर रखी गई? इसका कोई जवाब देवे,—

३९ चौवीस तीर्थंकरोंके-बीच-बीचमे-कितने अर्सेका-अंतर-पडा -इसकाभी-कोई सबुत वत्तीससूत्रोंमे नही, किस फिर वसीलेसेंमाना गया? चौमासेके दिनोंमे आठदिन पर्यूषण-पर्व-मानना, इसकाभी वत्तीससूत्रके मूलपाठमे कोई सबुत नही, फिर मजकुर तेहवार किस आधारसे मजुर रखागया? भरत-चक्रवर्त्तीने-आरिसे-भुवनमे केवलज्ञान पाया, इसका जिकभी-वत्तीससूत्रमे वतलाना होगा, अगर नही वतलासकते-तो-फिर इस बातका मजूर रखना-कैसे-लाजिम-हुवा? चंद्रगुप्त-राजाने-(१६) स्वप्न देखे, वत्तीससूत्रमे किसजगह

तेहरीर है, इसकामी सबुत बतलाना-चाहिये,-जबूस्वामीकी-मुक्ति होनेके-बाद (१०) चीजें इस भारत वर्षसें नेस्तनाबुद हुई-इसका-जिक्रभी-बत्तीस सूत्रमे हो-तो-कोई दिखलावे,-अगर कहाजाय-ये -बात शिवाय बत्तीस सूत्रोंके दूसरे सूत्र-सिद्धांतोंसे मानी गई है,-तो-फिर-मूर्त्तिपूजाभी-क्यों-नही मानी गई?—

४० तीर्थंकरदेवोंके निर्वाण-हुवे-बाद उनकी-दाढा-जो-इद्र देवते स्वर्गमे लेजाकर अदबसे रखते है,-खयाल करों, दाढा-जड-पदार्थ है, तीर्थंकरदेवोंके गुण-उनमे-नही, फिर गुणरहित-जडपदार्थकी-इज्जत-क्यौं करते है? इसपर-खयाल कीजिये,-राजगृहीनगरीसें-अभयकुमारने तीर्थंकर ऋषभदेवमहाराजकी-मूर्त्ति-संदुकमे-रखकर आर्द्रकुमारको-भेजी, जिसके देखनेसें आर्द्रकुमारको जातिस्मर्ण-ज्ञान हुवा,-अढाई-द्वीपके जागे बडे बडे समुदरोंमे जिनप्रतिमाके आकारवाले मच्छोंको देखकर दुसरे मच्छोंको-ज्ञान होना-शास्त्रोंमे फरमाया, अगरकोई-श्रावक-जिनमदिर बनवावे-बारहमे स्वर्गकी गति हासिलकरे,-महानिशीथ-सूत्रके मूलपाठमे-सबुत है,-सतराह-भेदी-पूजा-और-अष्टप्रकारी-पूजा-जैनशास्त्रोंमे-फरमाई-इसको नही मानना-कोन इन्साफ है,—

४१-[बत्तीस सूत्रोंमे-नदीसूत्र मजूर रखा है,-और-उसमे दुसरे सूत्र-मान्यरखनेका हवाला है,-]

[अग सूत्रोंके नाम,]

१-आचाराग,	७-उपासक,
२-सूत्रकृताग,	८-अतकृत्,
३-स्थानाग,	९-अनुत्तरोववाई,
४-समवायाग,	१०-प्रश्नव्याकरण,
५-भगवती,	११-विपाकसूत्र,
६-ज्ञातासूत्र,	१२-दृष्टिवादसूत्र.

१-[आवश्यकसूत्र,-]

१-दशवैकालिकसूत्र, २-कप्पिया-कप्पियसूत्र,
३-चुल्लकप्पसूत्र, ४-महाकल्पसूत्र,
५-उवाइसूत्र, ६-रायपसेणीसूत्र,
७-जीवाभिगमसूत्र, ८-प्रज्ञापनासूत्र,
९-महाप्रज्ञापनासूत्र, १०-पमायप्पमायसूत्र,
११-नंदीसूत्र, १२-अनुयोगद्वारसूत्र,
१३-देवेंद्रस्तवसूत्र, १४-तंदुलवैयालियसूत्र,
१५-चद्रविजयसूत्र, १६-सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र,
१७-पौरुषीयमडलसूत्र, १८-मंडलप्रवेशसूत्र,
१९-विद्याचारणविनिश्चयसूत्र, २०-गणिविज्जा-पयन्ना,
२१-ध्यानविभक्तिसूत्र, २२-मरणविभक्तिसूत्र,
२३-आयविसोहीसूत्र, २४-वीतरागश्रुत,
२५-संलेषणासूत्र, २६-विहारकल्पसूत्र,
२७-चरणविधिसूत्र, २८-आयुःप्रत्याख्यानसूत्र,
२९-महाप्रत्याख्यानसूत्र.

[कालिकसूत्रके-नाम -]

१-उत्तराध्ययनसूत्र, २-दशाश्रुतस्कंधसूत्र,
३-कल्पसूत्र, ४-व्यवहारसूत्र,
५-निशीथसूत्र, ६-महानिशीथ-सूत्र,
७-ऋषिभाषितसूत्र, ८-जबूद्वीपप्रज्ञप्ति,
९-द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, १०-चद्रप्रज्ञप्तिसूत्र,
११-खुड्डिया-विमाण-विभत्ति, १२-महल्लिया-वि०-वि०
१३-अगचूलियासूत्र, १४-वग्गचूलिया-सूत्र,
१५-विवाह-चूलिया-सूत्र, १६-अरुणोववाइसूत्र,
१७-वरुणोववाइसूत्र, १८-गरुडोववाइसूत्र,
१९-धरणोववाइसूत्र, २०-वेसमणोववाइसूत्र,

२१-वेलधरोववाइसूत्र, २२-देविंदोववाइसूत्र,
२३-उठ्याणश्रुत, २४-समुठ्यानश्रुत,
२५-नागपरियावलिकासूत्र, २६-निर्यावलिकासूत्र,
२७-कप्पिया-सूत्र, २८-कप्पवडंसिका-सूत्र,
२९-पुप्फिकासूत्र, ३०-पुप्फचूलिकासूत्र,
३१-वन्हिदशासूत्र.

इसतरह (७२) सूत्रोंके नाम लिखकर-"एवमाए"-शब्दसें (१४०००) प्रकीर्णकसूत्र-बयान-फरमाये. इनमेसें-जो-जो-बिल्कुल -नेस्तनाबुद होगये-वे-तो-मौजूद नही-जो-जो-सूत्र-मौजूद है, -उनकों जैनमजहबमे-आगमके नामसे कहेजाते है,-और-वे-पाटन-जेशलमेर खंभात वगेरा शहरोंके-पुराने-जैनपुस्तकालयोंमे ताडपत्रपर लिखे हुवे मौजूद है,-जो-लोग-बत्तीससूत्र मानते है,-उनमेसें-कइयोंका-कहना है,-बत्तीससूत्रही-कायम रहगये. बाकीके नेस्तनाबुद होगये-जमाने हालमें-जो-मौजूद है,-वे-नये-बनायेहुवे है,-जवाबमे तलब करो,-नये-बनाये है,-ऐसा कहनेमे-क्या-सबुत है? बगेर सबुतके-कोई-कैसे-मंजुर करेगा?—

४२ आवश्यकसूत्रमे-भरत-चक्रवर्त्तीने-तीर्थ अष्टापदपर जिनमंदिर तामीर करवाये, महाकल्पसूत्रमे-तेहरीर है,-जैनमुनि-हरहमेश जिनमंदिरमे जाकर जिनमूर्त्तिकों-वंदन-करे, अगर-न-करे-तो-गुनेहगार है, महानिशीथसूत्रमे सबुत है-जो-श्रावक-अछे-इरादेसें-जिनमंदिर-बनवावे-बारहमें स्वर्गकी-गति-हासिल करे. सबुत हुवा-जैन-आगम-शास्त्रोंमे जिनमंदिर-और-जिनमूर्त्तिका-मानना-जाइज -है,-इस फरमानको-कोई-गलत-नही कहसकता —

४३ कोईभी-चीज-दुनियवी कारोबारकेलिये-खरीद किइजाती है, तो-तलाश करके खरीदते है, इसीतरह धर्मरूपी रत्नभी तलाश करके खरीदना चाहिये, दुनियामे मत-मतांतरके भेद हमेशासे चले आये, जमाने तीर्थंकरोंकेभी-मत-मतांतर चलते थे, आजकल कित-

नेक लोग-जो-दुनियाके-एश-आराममे मशगूल है,-कहा करते है, -धर्ममे-वादविवाद बढगये, मगर इतना खयाल नही करते, दुनयवी कारोबारमेंभी-वादविवाद-कहा-कम है? दिनभरमे-थोडे-वख्तभी -धर्म करना, धर्महि-दुनियामे-सार-वस्तु है,—

[किताब-सुरसुंदरी-विवेकविलास-चतुर्थपरिच्छेदके लेखका जवाब खतम हुवा,-]

[दिग्पट चौरासी-बोलोंका सार,]

(इसमे जैनश्वेतांबर महोपाध्याय-श्रीमद्-यशोविजयजीका बनाया हुवा चौरासी-बोलोंका यहा सार लिखाजाता है. देखिये.-)

१ केवलज्ञानीकों-क्षुधा-तृषाका-होना जैनशास्त्रमें फरमाया,—

[दोहा,-]

तत्वारथ परिग्रह कहे,-जिनकों प्रगट इग्यार,
ताकों अर्थ मरोरते,-क्यों पामे भवपार,-१

तत्वार्थसूत्रमे-केवलज्ञानीको-ग्यारह-परिसह बयान फरमाये, उसका-अर्थ दुसरी तरह करना बहेत्तर नही.—

[दोहा,-]

क्षायिक सुख जिनकों कहे, केवलज्ञानस्वरूप,
वेदनीयके क्षय गये, कुन गुण कहो कठुरूप,—२

अगर कहाजाय-केवलज्ञानी महाराजकों क्षायकसुख होता है,-तो-बतलाना चाहिये वेदनीय-कर्मके क्षय होनेसें उनकों-कौनसा गुण-हासिल हुवा?

२-[केवलज्ञानीके खानपानके बारेमें -]

(कवित्तइकत्तीसा,-)

केवली आहार करे,-जागे अग्नि अतरकी-
वेदनी आहार शक्ति,-ताकी नही-हीनता,

हेतुके समाजते-घटे-ज्यू-काज साजशुद्ध-
लाजे तहा आज लुरु-हानि कहा दीनता,
अन्यथा-न-अष्टवर्स-वालकेवलीविलास,-
पूर्वकोटि आयुपाल-ताको वृद्धि खीनता,-
वृद्धिपोपदाइ भाइ-वर्गणा-कहासें पाइ-
ज्ञानत-ज्यू-आइ-तामे मुक्तिकी प्रवीनता,-३

केवलज्ञानी महाराज खानपान करे, ऐसा-श्वेतांबर-मजहबवाले मानते है -दिगंबर-नही-मानते -सोचो ! केवलज्ञानी अगर-खान -पान-न-करे-तो-उनका शरीर कैसे बढे ?-जैनशास्त्रोंमे छोटी उम्रवालोंकोंभी-अगर-उनके-कर्म-कट जाय-तो-केवलज्ञान होना सावीत है,-फर्ज करो ! उनकी-उम्र-कोटि-पूर्वतक लंबी हो-तो-उनका-शरीर कैसे बढेगा ? अगर कहाजाय ज्ञानसे-बढेगा-तो-यह बात-बहेत्तर नही दरअसल ! शरीर-लोही-मासका एक पुतला है,-वो-विना-खानपानके बढ नही सकता ज्ञानसें-उनके ज्ञानकी प्रवीणता बढती है,-शरीर नही बढता शरीर बढनेकेलिये-खान-पानकी जरुरत है —

२ दिगंबर-मजहबमें माना गया है -जिनेंद्र देव-खुद-बोलते नही,-मगर जब-समवसरणमें-आमलोगोंकों-तालीमधर्मकी देवे,-उसवख्त उनके मस्तकसें एक तरहका नाद पैदा होता है,-श्वेतांबर मजहबवालोंका कहना है,-क्या ! केवलज्ञानीकों-भाषावर्गणा-मौजूद नही है-? जिससे बोले नही. दरअसल ! उनकों भाषाव-र्गणा-मौजूद है -और-वे-बोलते है,—

[दोहा -]

दिग्पट जिनबोले नही, सिरतें उठे नाद,
क्रिया विना घट ध्वनि परे, तामे कौन सवाद,-१

सवुत हुवा. केवलज्ञानीकी-भाषावर्गणा-नेस्तनाउद नही होगई

है,-जिससे-वे-बोले नही.-!-तालस्वरके विदून गाना बोलना-कौन-लज्जत देनेवाला होगा ?-इसबातकों सोचो !

४ श्वेतांबर मजहबवाले-त्रेसठ-शिलाका-पुरुषोंकों-आहार-निहार करना मंजुर रखते है,-दिगंबर मजहबवाले उनको आहार करना मानते है, मगर निहार करना-मंजुर नही रखते, और कहते है, तपोलब्धिसें-मल-मुकजाता है,-हाजतरफा-करनेकी-जरूरत नही रहती,-

५ जैनश्वेतांबर मजहबका फरमान है,-चाहे-किसी शख्शने-देहने-आभूषण-पहने हो. और-राज्य-सिंहासनपर-तख्तनशीन-हो, मगर-उसका दिलीइरादा-दुनयवी-कारोबारसें-हठ-जाय-और धर्मपर-साबीत कदम-होजाय तो-उसकी-मुक्ति-होसकती है,-दिगंबरमजहबका कोल है,-बाह्य-परिग्रह-विना-छोडे मुक्ति नही होसकती.—

६ श्वेतांबरमजहबवाले औरतकों उसीभवमे-अगर-उसका दिलीइरादा-पाक और साफ होजाय तो-मुक्ति होना मानते है, दिगंबर-मजहबवाले कहते है, औरतकों-उसीभवमे-मुक्ति-नही होती, श्वेतांबरमजहबवाले-तीर्थंकर-मल्लिनाथजीकों-औरत-मानते है,-दिगंबरमजहबवाले-कहते है,-औरत-नही थे,-मर्द-थे, जैनश्वेतांबर महोपाध्याय-श्रीमद्-यशोविजयजी-उसपर दलिल करते है,—

[दोहा,-]

तीर्थंकर-स्त्रीवेदकों-क्यौ-एकनकों बंध,
गुणथानक आकर्षसें-यह्‌ हमारी संध,-१

तीर्थंकरगोत्र-और-स्त्रीपनेका-एकही-जीवकों गुणस्थानकके-आकर्षसें-बंध होना-क्यौ-कहा ? इसबातको-सौचो !-किसी जीव-कों-पहले गुणस्थानपर औरतपनेकी गति बंधगई हो-फिर-वो-चौथे गुणस्थानकसे आगेके गुणस्थानपर आनकर तीर्थंकरगोत्र हासिल करे-तो-क्यौ-न-होसके ? इसपर गौर करो,—

७-[जिनप्रतिमाके बारेमे दोहा -]

प्रतिमा नगन-न-सोहिये, पट-भूषण-पहनाय,
स्नानविलेपन धूप सुख, भक्ति हेतु कराय.-१

श्वेतांबरमजहबमे जिनप्रतिमाकों गहने आभूषण-केशर-चंदन वगेरासें शिंगारीहुई मानीगई हैं.-दिगंबरमजहबमे नग्नस्वरूप मानी है,—

८-[स्थापनानिक्षेपेके बारेमे दोहा,-]

जिनविरहे जिनबिंबकी-ज्यु-स्थापना प्रमान,
गुरुविरहे गुरु स्थापना,-वैसे करे सुजान -१
जैसी भगति-विमलगिरि,-तैसी गढगिरनार,
तीरथक्रम जाने नही, को-तस-बोधनहार, २

जैसे जिनेंद्रके विरहमे जिनमूर्तिकी स्थापना मजुर रखीगई, गुरुके विरहमे गुरुकी स्थापना मजुर रखीगई है -देखिये! जैनतीर्थोंमे-जहां -जिनमूर्तिकी स्थापना मौजूद है,-वहा-जानेसें भावकी ज्यादा विशुद्धि होती है, सबुत हुवा, स्थापनासे दिलीइरादा-पाक-और साफ होता है -इसलिये श्वेतांबरमजहबमे गुरुकी स्थापना मजूर रखीगई,—

९-[उपवासके बारेमे बयान,-]

(दोहा,-)

चौविहार पचखाण-विन,-माने नही उपवास,
जाने नही तिविहारभी,-दुर्बलकों अभ्यास,-१

श्वेतांबरमजहबमे तिविहार और चौविहार दोंनों तरहके उपवास करना माना है. दिगंबरमजहबमे-सिर्फ! चौविहार उपवासही माना गया, तिविहार उपवासकों नही माना. सौचो! जैसी अपनी ताकात हो-वैसा करना कौन बेमुनासिब हुवा? जिसकी ताकात कम हो, तिविहार उपवास करे, जिसकी ताकात ज्यादा हो,-वो-चौविहार

उपवास करे, इसमें-कौन हर्जकी-बात-हुई? अपनी ताकात देखकर यह तमाम धर्मशास्त्रोंका-इत्र-है,—

१०-[बयान-तीर्थंकरमुनिसुव्रतके गणधरका]

(चोपाई -)

मुनिसुव्रतको गणधर घोडो, ऐसो कहे-सो-जाने थोडो,
कौन गणधर यहा घोडो भाख्यो, जूठो आल व्यर्थही दाख्यो,१

तीर्थंकर-मुनि सुव्रतमहाराजका-गणधर-घोडा हुवा, ऐसा श्वेतांवर नही मानते, बल्कि! मनुष्य हुवा-मानते है,-जानवर गणधर कैसे होसके? तीर्थंकर-मुनि सुव्रतमहाराजका-गणधर-पूर्वजन्ममें-घोडा-था, गणधरकी हालतमें-घोडा-नही. जैनमजहबमें तीर्थंकरके बडे चेलेको गणधर बोलते है,—

११-[दोहा,-]

व्राण नही कुल जात कछु-विद्या-चरण विहीन,
सुयगडागकों वचन यह,-क्यौ-न-करो मनलीन, १

श्वेतांबर मजहबमे मानागया है,-चाहे-कोई अछे खानदानके घरानेके-हो,-या-नीच जातके हो,-जिसका दिल-पाक-और साफ होगया, उसकी मुक्ति होगी -फर्जकरो! कोई शख्श उच्च जातिका -हैं-, मगर श्रद्वा-ज्ञान-और चारित्र उसमे नही-तो-उसकी मुक्ति कैसे होसकेगी? कोई शख्श-नीच जातका है-मगर श्रद्धा-ज्ञान-और चारित्र उसके आलादर्जेके-है,-तो-उसकी मुक्ति बेशक होसकेगी,—

१२-[दोहा,-]

बालअग्र-पुद्गल-धरे, मुखभाखत हो-दोष,
धरो कमडल-पिछिका, कहा-करो-कठ शोष,-१

दिगंबर-मजहबमे मानागया है-बालके-अग्रभाग जितनाभी-परिग्रह रखाजाय-तो-जैनमुनिकेलिये बहेत्तर नही,-सवाल पैदा होनेकी जगह है,-फिर पिछी-कमडलु-क्यौं-रखागया? इसका कोई जवाब

पेश करे,-अगर कहाजाय! शौचकेलिये-कमंडल-और संयमकी हिफाजतकेलिये-पिछी-रखीगई है,-तो-जवानमे-तलर करो. श्वेतांबरमुनि-जो-संयमकी हिफाजतकेलिये-रजोहरण और वस्त्र-पात्र -रखते है,-उनको-बेजा-कैसे कहसकते हो? ममत्व-रहित-जैसे-पिछी-कमंडलु रखा.-वैसे-ममत्व-रहित-वस्त्रपात्र-रखे, यह-कौन बेइन्साफकी-बात हुई? खान-पान-करना यहभी-तो-संयमकी हिफाजतकेलिये है,-फर्ज करो! अगर खान-पान-न कियाजाय-तो -संयमकी-हिफाजत कैसे हो? जिनकल्प-मार्ग-जंबूस्वामीके-बाद नेस्त-नाबुद होगया, पेस्तर जैसी लब्धि-और-ज्ञान रहे नही जिनकल्पमार्ग-साधन-हो-सके नही और बातें-बडी-बडी-बनाना, इससें क्या फायदा?—

[बयान यशोविजयजीकृत-दिग्पट-चौरासी बोलोंका-सार-खतम हुवा,-]

[इम्तिहान-धर्म,-]

१ इसम इम्तिहान धर्मके बारेमे-इबारत लिखीजाती है,-ब-खूबी-देखिये! जैनमजहबम-चौइस तीर्थंकर धर्मके नायक हुवे, कइ मनहबम-चौइस-अवतार मानते है. कई-ईश्वरकों-दुनियाका कर्त्ता मानते है, कईलोग कहते हैं,-धर्मधुर्म सब-गप्प है,-परलोक किसने देखा इन बातोंका-बयान इसम दिया जाता है,-पढकर धर्मका इम्तिहान कीजिये! इन्सानको-लाजिम है,-धर्मके बारेमे-इम्तिहान करे, कौनसा धर्म दुरुस्त और कौनसा नादुरुस्त है? कोइ भी -इल्म पढना-तो-उस्तादसे पढना चाहिये. आपसे आप पढलिया जाय-तो-वो-प्रमाण नही, दरअसल! उसमे गलतीयें होती रहेगी दिलका शक रफा-न-होगा और-बगेर खौफ-खतरके दुसरोंको-बयान-न-करसकोगे,—

२ जबूद्वीपमे-महाविदेह-और-सुमेरु पर्वत-इस-भारतवर्षसे-उत्तर दिशामे शुमार कियागया, भारतवर्षमे-चौइस तीर्थकरोंका होना हरकालचक्रमे चलाआया, और तरकी धर्मकी होतीरही,-बडे-बडे धर्मतीर्थ-और शहर आबाद होते चलेआये, कल्पवृक्ष-और-चिंतामणिरत्न-धर्मसे बडे नही. पेस्तरके जमानेमे विद्याधरलोग ब-जरीये अपनी विद्याके आसमानके रास्ते आया करते थे-आजकल-वे-बाते रही नही, जमाने हालमे ऐरापलेन-रैल-ष्टीमर वगेरा साधन है,-धर्मके बारेमे तलाश करो-तो-कइ शख्शोंकों धर्मपर एतकात नही. और कइ शख्शोंकों कामील एतकात है, यह-सब-पूर्वसंचित-कर्मकी बाते है,

३ कई मुल्कोमे-बडी-बडी-तिजारत करनेवाले सोदागिर आबाद है,-मगर धर्मकी तिजारत करना बडा दुसवार है.-मुल्क काश्मिर, पजाब, अग, वग, कलिंग, सौराष्ट्र, मगध, मारवाड, मेवाड, कच्छ, सिंध, गुजरात, विराड, खानदेश, मध्यप्रदेश, मालवा,-अवध, गाधार, नयपाल, आसाम, और-दखन-वगेरा हिंदमे कइ मुल्क है.-और उनमे तरह-तरहके मजहब जारी है,-दोस्तोंमे-चाहे जितनी दोस्ती हो, मगर जहा धर्ममे तफावत पड-गया-तो-दोस्तीभी छुट जाती है.-रिस्तेदारोंमेभी-जब धर्ममे तफावत पडजाय-तो-रिस्तेदारोंमे जुदाई होजाती है,-खानपान और पुशाक उमदा पहनते हो, मगर धर्मकेलिये क्या किया ? इस पर खयाल करो.—

४ सच बोलना-कइ शख्शोंको-नागवार गुजरता है, और सच बोलनेवालोंको आफतभी-पेश-होजाती है, मगर सत्यवक्ता किसीकी परवाह-न-रखे-तो-उसकी-मुराद-बर-आयगी,-जूठ बोलनेवालोंकों पेस्तर अछा मालुम देता है, मगर-उसका नतीजा बुरा है,-सबुत हुवा, सच बोलना-एक-बडी अछी बात है, कइ शख्श धर्मकरना चाहते है, मगर दुनियाके-एश-आराममे पडकर

धर्मको -भूलजाते है,-सोचो! कितनी बडी गलती है? खानपानमे-उमदा मिठाई-खाना और दानपुन्य करना छोड देना, कितनी भूल है, ? अपने अपने धर्मकी और मुल्ककी-सब-तारीफ करते है, मगर इम्तिहान करके तारीफ करना बहेतर है बदौलत धर्महीके-इस-जीवने सुखचैन पाया, और आइंदे-पायगा,-दुनियाके-एश-आराम-स्वप्न-जैसे-है,-जैसे-स्वप्नमे कोई शख्श दौलतमद बना. मगर जब-आखें-खुली कुछ नही देखा, कई शख्श नजुममे और-कई-हकीमीमे कामील है -मगर-तारीफ उनकी समजो, -जो-धर्मशास्त्रमे कामील हो,-अपने अपने मुल्ककी बनीहुई-चीजोकी-कईलोग तारीफ बयान करते है,-मगर जिसने-जो-मुल्क देखा नही,-वो-उसबातको-न-माने-तो-क्या करसक्ते हो? इसपर-जिद्-करना बहेत्तर नही. पूर्वजन्ममे जिसने जैसी-नेकी-बदी -किई हो. उसको आराम-या-तकलीफ मिलना, इसका नाम-पूर्वसंचित-कर्मका फल है,—

५- किं-करोति नर' प्राज्ञ'-प्रेर्यमाणः स्वकर्मणा,-
प्रागेव-हि-मनुष्याणा,-बुद्धिः-कर्मानुसारिणी,-१

अपने पूर्वसंचित-कर्मोसे-घिरा-हुवा-इन्सान चाहे जितना कामील-हो, मगर-क्या! करसक्ता है? पूर्वसंचितकर्म-उसकी-अकलको-अवलसही फिरा देते है,—

[शेयर -]

तदबीरसे तकदीरकी,-बुराई नही जाती,
लिखी-हुई-तकदीर,-फिराई नही जाती -१

पूर्वकृत-कर्मका-उदय तदबीर करनेसेभी-मिट नही सक्ता, और अगर-अपनी-बुरी-तकदीर पेश हुई हो-तो-कोई मददगारभी-नही-होता,—

६ वैदिक मजहबमे-चार-वेद-ईश्वरप्रणीत-पवित्र मानते है,-गायत्री मंत्रका जाप करना फायदेमद कहा,-वेदोंपर सायनाचार्य-

माधराचार्य- और महीधराचार्यने भाष्य बनाये है,-सायनाचार्यजीका दुसरा नाम-विद्यारण्य-स्वामीभी था-मनुस्मृति, महाभारत, -श्रीमद्भागवत, और-गीता-वैदिक मजहबके धर्म पुस्तक है,-मत्स्यावतार, कूर्मावतार, वराहावतार, नरसिंहावतार, वामनावतार, परशुरामावतार, रामावतार, कृष्णावतार, बुद्धावतार, और कल्की अवतार,-ये-दशअवतार वैदिक मजहबमें बडे माने है.-मूर्त्तिपूजा-और तीर्थोकी जियारत जाना मानते है,-काशी, हरद्वार, बद्रिनाथ, मथुरा-जगन्नाथ, रामेश्वर, और द्वारका-वगेरा वैदिक मजहबमे बडे धर्मतीर्थ माने गये है, ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-और शूद्र-ये-चार वर्णाश्रम माने है,—

७ मीमासक मजहबका दुसरा नाम-जैमिनीय है,-इनके-दो-भेद, एक-कर्ममीमासक, दुसरा ब्रह्ममीमासक, वेदातीब्रह्ममीमासक और-भट्ट-प्रभाकर-कर्ममीमासक है, और-चार-वेदोकों पवित्र मानते है,-साख्य मजहबमे बयान है, जो-शख्श-पचीसतत्वकों-जाने उसकी मुक्ति होगी, इस मजहबके-दो-तरीके है, एक-ईश्वरवादी, दुसरे-अनीश्वरवादी, कपिल-आसुरी-भार्गव-और पंचशिख वगेरा साख्य मजहबके धर्माचार्य है,-सत्वगुण, रजोगुण, और तमोगुणकी-साम्यताका-नाम-प्रकृति है,-और प्रकृतिका दुसरा नाम-प्रधान है,-पंचविंशतितत्त्व, तत्त्वकौमुदी, गौडपाद, और साख्यसप्तति-ये-साख्यमजहबके बडे-धर्मशास्त्र है,—

८ नैयायिकमजहबमे-प्रमाण-प्रमेय-वगेरा सोलहपदार्थ मंजूर रखे है,-और-प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शाब्द, वगेरा-प्रमाण माने है, वैशेषिक-मजहबमे-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव और-ये-सप्त-पदार्थ मजूर रखे है.-और-प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, और-शाब्द-ये-चार-प्रमाण मानते है,—

९ नास्तिक-मजहबमे-पुन्य, पाप, स्वर्ग, नरक, नही माने गये,

ओर उनका कहना है, स्वर्ग, नरक, कौन देख आया, पाचतत्वका-पुतला-मनुष्यदेह-वना है, परलोक जाताआता कोई नही. हरतरह-बदनकों आराम पहुचाना यही मुनासिब बात है,-जहांतक बने-कर्ज-करकेभी-अछी-चीज खाना बारबार मनुष्यदेह नही मिलता, इसतरह नास्तिकमजहबका-मानना है-नास्तिकमजहबवालोंका कहना है,-न-कोई देव है,-न-मोक्ष है, नजरके सामने-जो-दुनिया-दिखाई-दे-रही है-उतनीही-है,—

१० जैन-और बौध मजहबकों कितनेक विद्वान् एक-समजते है,-मगर एक नही, जुदेजुदे है, गौतमबुध-तीर्थंकर महावीर स्वामीके वख्तमे-थे, तीर्थंकर महावीरके पेस्तर (२५०) पेहले तीर्थंकर पार्श्वनाथजी-हुवे,-इसकालचक्रमे-जैनधर्म-तीर्थंकर ऋषभदेवमहाराजसे-चला, तीर्थंकर ऋषभदेव-विनिता-नगरीके-राजा-थे, उनोने अपनी अमलदारी-भरत और बाहुबली-वगेरा-बेटोंकों देकर-आप-साधु हुवे, तप-किया,-और मुक्ति पाई, कई-लोग-कहते है, बौधमजहबके-नजीक-नजीक जैनधर्म जारी हुवा, मगर यह बात गलत है, जैनमजहब-अवल-तीर्थंकर-ऋषभदेवजीसे जारी है-चौइसमे तीर्थंकर महावीरस्वामी-और-गौतमबुध-एक-वख्तमे-थे, मगर उनका मजहब अलगअलग था, जैनमजहबवाले-अनतकालचक्र-होगये.-और आगेकोंभी अनतकालचक्र होगें-ऐसा मानते है. जैसे वैदिक-मजहबवाले मन्वंतर मानते है, जैनलोग कालचक्र मानते है, जैनलोग एक-कालचक्रमे-चौइस-महान्-पुरुष धर्मप्रवर्त्तक होना कहते है, और उन धर्मप्रवर्त्तकोंका नाम तीर्थंकर बोलते है.—

११ इसकालचक्रमे पहले ऋषभदेव, दूसरे अजितनाथ, तीसरे संभवनाथ, इसतरह-तेइसमे तीर्थंकर पार्श्वनाथ और चौइसमे तीर्थंकर महावीरस्वामी हुवे, तीर्थंकर पार्श्वनाथजीने-और महावीरस्वामीने जैनधर्मकों तरकी दिइ मगर-नया जारी नही किया, अवल

तीर्थंकर ऋषभदेवमहाराजने-जो-जैनधर्मका उपदेश दिया था, वही उपदेश सबतीर्थंकरोंने दिया. तीर्थंकर देव-सचे धर्मके कायदे दुनियाके सामने जाहिर करते है, धर्मके कायदोंमे रिस्तेदारोंके मुलाहजेकी-बात-नही चलसकती, सत्यधर्मकी-बात-चलती है,-कई-राजे-महाराजे सचे धर्मकी तालीम पाकर इसदुनियाकों छोड चुके है, तप किया और-मुक्ति-पाई है, सबुत हुवा-धर्म एक बडी -चीज है, धर्ममे दुनियादारीके मुलाहजेकी कोई जरूरत नही, दुनियाछोडकर-जो-साधु होते है,-वे-दुसरोंपर दुनियादारीका मुलाहजा डाले-येहेत्तर नही,-

१२ तीर्थंकर महावीरस्वामी-मुल्क-मगधकी-अपापा-नगरीमें निर्वाण हुवे,-वो-जमाने हालमें-वराये नाम रह गई, और उसका नाम-आजकल पावापुरी बोलते है, आजकलकी गिनतीसें तीर्थंकर महावीरस्वामीको निर्वाण हुवे (२४५३) वर्ष हुवे, बौद्धमत प्रवर्तक-गौतम बुधका-जन्म-मुल्क-नयपालकी तराइमे सुंसमार पर्वतके करीब-एक-कपिल वस्तु गावमे हुवा, उनके वालिदका नाम-शुद्धोदन-और-माताका नाम गौतमी था,-गौतमबुधने-(३०) वर्सकी -उम्रमे दुनिया छोडकर साधुवृत्ति इख्तियार किई, गौतम बुधके चार बडे-चेले-थे, १-आनद, २-देवदत्त, ३-उपाली और ४-अनुरुद्ध,-

१३-गौतम बुध-तीर्थंकर महावीर स्वामीके जमाने हयात थे, मगर उनका कभी-रुबरु-मिलना हुवा नही, तीर्थंकर महावीर स्वामीके बडे चेले-गौतम गणधर जुदे और गौतमबुध-जुदे थे, वैदिक-मजहबके गौतमऋषि-और नैयायिक मजहबके-गौतम-जुदे थे, जैन और बौध मजहबके-उसूलोंमे फर्क है, और धर्मग्रंथभी-अलग-अलग है, बौध मजहबमे-सौगत-देव माने है, और-बौध मजहबके-साधु-लाल कपडे पहनते है,-बौध मजहबमे प्रत्यक्ष और अनुमान दो-प्रमाण मंजुर रखे है,-१-विज्ञान, २-वेदना, ३-संज्ञा,

४-सस्कार, और-५-रूप-ये-पाच स्कध बौध मजहबमे तेहरीर है, दुनियाके सब-पदार्थ-क्षणिक-होना-यह बौधोंका मतव्य है,-गौतम बुधने-बौध मजहब-इख्तियार किया, तीर्थंकर महावीर स्वामी-जैनोंके चौवीसमे तीर्थंकरहुवे, इनके पेस्तर-तेईस-तीर्थंकर हो चुके थे, तीर्थंकर महावीर स्वामीके गौतम-गणधर-वगेरा-(११) बडे-चेले थे, और गौतम बुधके बडे चेले (६) थे, मौदगलायन, शारिपुत्र, आनद, देवदत्त, उपाली, और अनुरुद्ध वगेरा,—

१४ तीर्थंकर महावीरस्वामीका फरमान था, किसी जीवकों-मारना नही, और मास खाना नही, गौतमबुधका फरमान था-जहा जैसा योग मिले वैसा करना, अनाज मिले-तोभी-खाना, और-अगर मास मिले-तोभी-खाना, बौध मजहबम ईश्वरकों कर्त्ता नही मानते, धर्म, बुध, और सघ,-ये-बौद्ध मजहबमें तीन रत्न माने है, जैन मजहब-हिंदमे ज्यादा-और-दुसरे मुल्कोंमें कम है, बौध मजहब-हिंदमे कम, और चीन, जापान-तिब्बट-तर्फ-ज्यादा है, बौध मजहबके शास्त्रोमे गोशाला मखलीपुत्र-अभयकुमार, और अजातशत्रु वगेराके नाम आते है,-मगर निर्ग्रंथ-ज्ञातपुत्र-महावीर-तीर्थंकर नये हुवे ऐसा बयान नही आता, इससे सबुध हुवा जैनमजहब-नया-नही, बौधमजहबके बडे साधुओकों-लामा-और-साधारण साधुओकों-पुगी-बोलते है,-बौधमजहबके साधु ओको ठहरनेकी-जगहका-नाम-मठ-या-आश्रम कहते है, बौध मजहबमें-मदिर-तामीर करवानेका-रवाज-कम, और गुबज तामीर-करानेका-रवाज-ज्यादा है, भिलसा-मानकयाला वगेरा कई जगह बौध गुरुओके गुबज-बने हुवे है,-शहर बनारसमे एक-बौधोंकीएक पाक-जगह है,-जिसकों-वहाके लोग-सारनाथकी-धमेख-बोलते है, और कहते है,-इसमे कोई-उनके महापुरुषकी-खास-है,—

१५ जैनमजहबमे-रात्री भोजन करना. लहसन-प्याज-वगेरा जमीकंद-रातकी बढीहुई-वासी-रसोई खाना और विना छाने जलपीना मना है,-जिनमूर्त्तिकी पूजा करना, धर्मशास्त्र सुनना. सुदेव, सुगुरु, और सुधर्मका मानना धर्मीजीवोका फर्ज है,-मुक्तिके बारे कई मजहबवालोका कहना है,-मुक्तिमे-जाकर फिर दुनियामें आना होता है.-मगर-वो-मुक्ति क्या हुई ? जहासे फिर दुनियामे आना पडे. कई मजहबवाले बयान करते है,-मुक्तिमे-एश-आराम-मिलते है,-मगर-खयालकरनेकी वात है, जब मुक्तिमे-देह-नही,-तो-ऐश-आराम कैसे भोगे जायगें ? अलबते ! मुक्तात्मा-ज्ञानमय होनेसे अपने आत्मिक ज्ञानका उपभोग करते है, जैनमजहबवाले मुक्तिसे-वापिस-आना नही मानते, मुक्तिमे-गये बाद-जन्म-मरण नही. और-वहासे फिर दुनियामे आना नही होता.-जैसे-घी-हुवे-बाद फिर-वो-दूध नही होता. मिट्टीमेसें-सोना-निकालेबाद-फिर-मिट्टी नही होती.-वैसे परमात्मा हुवे बाद दुनियामे आना नही होता, निरंजन-निराकार-फिर-आकारवाले क्यों बने ? मुक्तिमे हमेशा-सत्-चित्-आनंद-मय ज्ञानात्मा-अपने आत्मिक सुखमे-लयलीन है, पापकरनेसें-इसजीवकों-दौजखमे जाना पडता है, पुन्य करनेसे बहिस्त मिलता है, और जब पुन्यपाप छुट जाय-तो-मुक्ति हासिल होती है,-बहिस्तसें-मुक्तिका दर्जा बडा, और मुक्तिका स्थान-स्वर्गसें उपर है,-बहिस्तमे शारीरीक सुख है. मगर-जन्म-मरण-नही छुटता. मुक्तिमे जन्म-मरण-छुट जाता है. और आत्मिक सुख-है,—

१६ जैनमजहबवाले-द्वादशांग-वाणीके पुस्तक-आचारांग वगेरा मानते है,-और-कई-जैनपुस्तक छपभी-गये है, जैनमजहबके शास्त्र फरमाते है,-कर्मको प्रधान मानो,-जीव-अजीव-वगेरा षटद्रव्य अनादि माने गये है,-अनादि कहो, कदीमसे कहो, बात एकही है, जैन शास्त्रोमे उच-गोत्र और नीचगोत्र बयान किये, इससें सबुत

हुवा-जैनमजहबमे-वर्णाश्रमका होना मजुर है -और वर्णाश्रम धर्मकी हिफाजत होनेका सबब है,-वर्णाश्रमसें-धर्मको खलल नही, बल्कि! पुख्तगी-मिलती है,-चाहे-उच-या-नीचगोत्रवाला हो, आत्मासें धर्मकरना चाहे-करसकता है, दुनियाके रीत-रवाज-कभी-एकम-रीसे नही होते, इसबातको-जैनी-क्या! सब मजहबवाले मजूर रखते है, धर्मम किसीको जबरजस्ती-नही.-इतना जरूर है, धर्मका इम्तिहान करना चाहिये,—

१७ जैनमजहबमे प्रकृति और जीवको अलग अलग मानते है, -मगर-जबतक इसजीवने मुक्ति नही पाई तबतक अलग नही. जब निस्पृह होकर धर्मकरेगा, पूर्वसंचित कर्म क्षय-होजायगें-आइंदे नये कर्म-न-बधेगें और मुक्ति-होगी, जैनमजहबम मनुष्य, जानवर-पानी-हवा-वनास्पति और मिट्टीम-जीव मानते है -वनास्पतिको-पानी-मिले-तो-बढे, और-न-मिले-तो-सुक जाय, सबुत हुवा, वनास्पतिमेभी जीवका होना जरूर है, सोना, चांदी, ताबा, लोहा, कथीर-वगेरा धातु-जबतक जमीनमे है उनम पृथिवी कायके-जीव है,-जब उसकों-अग्निका-सयोग होकर-धातु-बनजाय फिर उनमे जीव नही,

१८ जैनमजहबवाले एक नित्यमुक्त ईश्वर नही मानते, जो-मनुष्य-तप करे-वो-मुक्ति पावे, तप-जप-ध्यान-व्रत-नियम करनेसे पूर्व संचित-कर्म दूर होकर मुक्ति हो सकती है, जीव-अगर परमात्माका सच्चे दिलसे ध्यान करे-तो-अपने-कर्मोंकों जलाकर खुद परमात्मा हो सकता है, जैसे आतशी-शीशा-सूर्यके सामने रखनेसे उसमें आतीश पैदा हो जाती है, इस तरह परमा-त्माका ध्यान करनेसें जीवके कर्म-जल-जाते है, परमात्मा किसीके -कर्म-जलाते-या-बढाते नही, मगर परमात्माका ध्यान करनेसें जीवम-कर्म जलानेकी ताकात पैदा होती है,-और-वो-ताकाव कर्मोंकों खुद जला देती है, मुक्तिमे कोई छोटे बडे नही, कई लोग

-सामीप्य मुक्ति मानते है,-जैन लोग-सादृश्य-मुक्ति मानते है,-कई महाशय कहते है,-ईश्वर-एक है, और-वो-सर्व शक्तिमान् है, जनानमे मालुम हो,-जो-आत्मा-तप-जप करके मुक्ति पावे-वो-क्या! ईश्वर-समान नही? जैनमजहनके शास्त्र फरमाते है, मुक्तिमे -जितने मुक्तात्मा है,-वे-सन-पेस्तर ससारी थे, तप-जप-करके मुक्ति पाये है,-कोई-ऐसा नही-जो-पहलेसेही-नित्य-मुक्तात्मा हो, प्रवाहरूपसे मुक्ति अनादि और एक जीनकी अपेक्षा आदि है, -जो-जीव-कर्मक्षय करके मुक्ति पाये-वे-सन ईश्वर है, इसलिये जैनशास्त्र ईश्वर-अनेक कहते है, दुनियाभी-प्रवाहरूपसे अनादि-और-एक-जन्मकी अपेक्षा आदि है,-कमी-दुनिया-और-मुक्ति-न-रहेगी ऐसा-न-होगा, सामान्यरूपसे-सन-मुक्तात्मा एक और व्यक्तिरूपसे पृथक् है, जैनमजहनवाले-ईश्वरको-मानते है, मगर जगत्का कर्त्ता तरीके नही मानते, सनन-वे-रागद्वेष-काम-क्रोध-मोह वगेरा दोषोसे रहित है,-निराकार जगत् ननानेकी प्रवृत्ति-क्यो करे? और उनको इसप्रवृत्ति करनेकी क्या जरूरत? जड-और चेतन-दो-पदार्थ-अनादि है, इसको-ननानेवाला-कोई नही, जीव -जैसा कर्म करे-वैसा-फल-पावे, यह एक कुदरती नियम है,-जैनमजहनका-सनसे-नडा-सिद्धात-"अहिसा परमो धर्मः"-है,—

१९ अनुकपासे दानदेना धर्मशास्त्र-पुन्य-फरमाते है,-ससारकी असारतापर खयाल करना फायदेमद है, जिनको त्यागमार्ग अछा-न-लगे, और-एश-आराम अछे लगे उनकी मरजीकी बात है, जिनको धर्मकरना पसंद-हो,-धर्मकी राहपर चले, और सचेधर्मकी -तलाश करे, दुनियामे आत्मा-तीनतरहके फरमाये,-एक बहि-रात्मा,-दुसरा अतरात्मा,-और तीसरा परमात्मा, इसमे बहिरात्मा उनको कहना-जो-दुनयवी-कारोवारमे मशगूल रहे, और धर्म-क्या चीज है-इसपर खयाल-न-करे, दुसरा अतरात्मा-जो-धर्ममेभी-खयालरखे, और दुनयवी कारोवारमे-खयाल रखे, तीसरा परमात्मा,

जो-रागद्वेष रहित होकर निरंजन-निराकार होगये है.-अगर कोई इसदलिलकों पेंशकरे, कर्म-जड है, फिर-अपने आप दूसरेको फल कैसे देसके, (जवाब.) जडपदार्थभी खुद-ब-खुद फलदेसकते है,-जैसे नशेवाली चीजे-भंग-तमाखूवगेरा जड है-और-खानेवालेको नशा कैसे देती है?-वैसे-कर्मभी-आदमीको-आपही-फल देते है ईश्वरपरमात्मा-फल देनेकेलिये क्या प्रवृत्ति करे, जड-चेतन-पदार्थमें-जो-जो-गुण रहे है,-वे-किसीसे-बदलाये नही जाते-और अपने स्वाभाविक फलको देते है -जड-चेतनकी-जो-शक्ति है,-वही-सब-व्यवहारकी उत्पादक है, सोचो! जो-चीज नयी थी, कितनेक अर्सेके बाद पुरानी होगई, बतलाना चाहिये, पुरानी किसने किई? अगर कहा जाय-स्वभावसे पुरानी होगई-तो-इसतरह सब चीजोंकेलिये समजो,-जो-चीज-जमीनमें बोई जायगी,-वही-पैदा होगी, जैसे किसी खेतमें-गेंहू-बोये तो-गेंहू-पैदा हो जवार-बोवे-तो-जवार हो,-इसीतरह-अपने अपने-पूर्व-संचित-कर्मके-मुताबिक-फल होता रहेगा,—

२० जैनमजहबमें पक्षपात इसलिये नही कहा जासकता. जैनशास्त्रोंमें राग-द्वेष-काम-क्रोध-मोह-वगेरा कर्मरूपी दुश्मनोको जीत लेवे उनका-नाम जिन-अरिहंतकहे,-जो-मुक्ति-पाचुके है-उनकों -सिद्ध-कहे, जैनशास्त्र-पनरा-तरहसे-सिद्ध होना मानते है,-साधुकोंभी-मुक्ति-होसके,-गृहस्थकोंभी मुक्ति होसके-और इसीतरह-अन्यमतके साधु-और गृहस्थकोंभी-मुक्ति होसके, मगर शर्त यह है, उसकी-श्रद्धा-ज्ञान-और-भावना सुधर जाय,-जैनधर्मके साधुके-वेशमेंभी-मुक्ति है,-और दूसरे-मजहबके-साधुवेशमेंभी-मुक्ति है,-मगर-श्रद्धा-ज्ञान-और-भावना सुधरना चाहिये, पुरुषकोंभी-मुक्ति -होती है-इसीतरह-स्त्रीकोंभी-मुक्ति होती है, भावनाके ताल्लुक मन बात है -जिसका-मन-साफ हुवा, धर्मपर-श्रद्धा-आई और भाव सुधरगये-तो-मुक्ति कौन रोक सकता है, दरअसल' नामसे-कुछ-

गरज नही, गुणसे-गरज है,-जिसके रागद्वेष-काम क्रोध-मोह दूर होगये कामील एतकात पैदा हुवा. और-केवलज्ञान पाया-तो-उसकी मुक्ति-क्यों-न-हो, जैनमजहबकी-यह-बडी-उदारता है-वे-अपने मजहबमेही मुक्ति हो, ऐसा पक्ष नही करते है, सत्यधर्म तत्वका ज्ञान होजाय. सत्यधर्मपर आस्ता आजाय और भावना सुधरजाय-तो-मुक्ति-होसके-यह-एक सिधी सडक है,—

२१ जैनके तत्वार्थसूत्रमे बयान है,-सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र मोक्षका मार्ग है,-और आवश्यक सूत्रका फरमान है. चरित्र विना मुक्ति होसके,-मगर-श्रद्धाविना-न-होसके, श्रद्धाके-सबबसे विना चारित्रकेभी ज्ञान होकर मुक्ति हो सकती है, इसका मतलब-यह-निकला-चारित्र-विनालिये-जिस शख्शकी श्रद्धा सुधर गई, और केवलज्ञान-हासिल होगया-तो-मुक्ति होसके-दोनो-सूत्रके पाठोका मतलब यह हुवा किसीको-श्रद्धा-ज्ञान और-चारित्र आराधनसें मुक्ति मिले, और-किसीको चारित्र विना इख्तयार किये श्रद्धा और भावनासें केवलज्ञान होजाय तो-मुक्ति-मिलसके, जैसे मरुदेवीजीको-हाथीके होदेपर बेठे हुवे-विना चारित्र लिये-भावना सुधर जानेसे केवलज्ञान हुवा, और मुक्ति पाई,-इलाचि कुमारको-नृत्य करते हुवे-भावना-सुधरनेसे केवलज्ञान हुवा,-और मुक्ति पाई,-इससे सबुत हुवा,-विना दीक्षालियेभी-अगर भावना सुधर जाय-तो-मुक्ति हो सकती है, जैनमजहबके श्रीमद्-यशोविजयजी-उपाध्यायका-कहना है,—

[दोहा,-]

ज्ञानदशा जहा आकरी,-तेहीज-चरण विचारो,
निर्विकल्प-उपयोगमा,-नथी कर्मनो-चारो,-१

जिस वख्त आदमीका मन-ज्ञानदशामे-लयलीन होता है, वही चरण-यानी-चारित्र है, ज्ञानकी-एकाग्रतामे अशुभ कर्म-बधते-नही,-और शुभ कर्म बधते है,-जिससे मुक्तिके नजीक पहुच सके,—

२२ अगर कोई इस दलिलको पेश करे, कन्या विक्रय करना अधर्म है,-इन्साफ कहता है,-जो-शख्श-रुपये-पैसे देकर-अपना विवाह करता है,-वोभी-अधर्म क्यौं नही? अगर रुपये-पैसे देनेवाले-न-देवे-तो-लडकीका पिता-कन्याविक्रय-कैसे करे, इन्साफ कहता है,-दोनोकों-अपना-अपना-मतलब है,-जभी-ऐसा करते है, शास्त्र फरमानपर चलो-तो-दोनोंकों ऐसा करना जाइज नही,-कई शख्श-औरतके कहनेमे आकर-मातापिताको तक्लीफ-पहुचाते हैं, यहभी अधर्म है,-जिस मातापिताने अपनेको लडकपनमे आराम दिया,-और-विवाह सादी-कराडिइ,-उनका इरादा था-हमको जइफीमे-बेटे-लोग-आराम देयगें,-लेकिन! विवाह सादी हुवे बाद मातापिताकों-आराम पहुचाना-तो-दूर रहा, मगर औरतके स्नेहसे मातापिताके साथ विरोध पदा करके जुदे हो जाते है,-बेटेका फर्ज था मातापिताकी खिदमत करना, और उनके कहने मुताबिक चलना, मगर खिदमत करना-तो-दूर रहा, *औरतके कहनेसे मातापितासे जुद हो जाते है, और-तक्लीफ पहुचाते है,—

२३ कितनेक ऐसाभी-कहते है, क्या करे! घरमे औरतोंका अनबनाव होनेसे-हम जुद होगये, इन्साफ कहता है, बेटे लोग-अपने औरतकी हिमायत-न-करे-तो-घरमे अनबनाव कैसे पैदा हो,? औरत-अपने मातपितासे-विरोध करे,-और जानते हुवेभी -चुप-हो जाओ मुहसे कहते रहो-हम-तो-दोनोकी-तर्फसे बोलते नहीं, सौचो? अगर तुमारी औरत-तुमारे मातपिताके साथ विरोध करे-और-तुम-उसको रोकना चाहो-तो-रोक सकते हो, इससे साबीत हुवा-तुमही-विरोध पैदा करनेमे-मददगार हो, धर्मशास्त्र फरमाते है,-माता-पिताका-दर्जा बडा है, उनका तुमारेपर भारी उपकार है,-उनकी इज्जत करना जइफीमे उनको आराम पहुचाना तीर्थोंकी जियारत कराना, और-उनको रुपये पैसोसे तंग-न-रखना, यह तुमारा फर्ज है,-मगर इस वख्त घरके कामकाज और

दौलत-तुमारे हाथमे है,-मातापिता जइफ होगये, चलने फिरनेकी ताकात नही, इस हालतमें-तुमको लाजिम है,-उनकी-खिदमत करना और-उनके हुकुमकी तामील करना तुमारा धर्म है,-इम्तिहान धर्मके बयान यह बात इसलिये लिखी गई है-ये-सब-धर्मके सुधारेके निमित्त है,—

२४ तीर्थोंकी जियारत जाना, धर्मशास्त्र सुनना, और-स्वाध्याय करना,-ये-धर्मके तरीके-है,-अगर कोई-सरगी-तबले-सितार-हारमोनियम-फिडल-वगेरा साज बजाना जानते हो, और-राग-रागिनीसे गाना जानते हो,-इनमूर्त्तिके सामने ताल-स्वरसे गाना गावे, पुन्यानुबंधि-पुन्य-हासिल करेगा,-अवाज-मीठी-और सुरीली पाना पुन्यके ताल्लुक है, स्वर्गके आरामचैन पाना बडी बात नही, मनुष्यजन्ममे-सत्यधर्म-पाना-बडी बात है,-पूर्व-जन्ममे-जिनोंने-दान-पुन्य-किया है,-उनोने-यहा-आराम चैन-पाया, अनुकंपासे-दान देना पुन्य पैदा होनेका सबब कहा,

[आवश्यक-सूत्रकी बृहद्वृत्तिमे-पाठ है,]

सव्वेहिपि-जिणेहि,-दुज्जयजियरागदोसमोहेहि.

सत्ताणुकंपणट्ठा,-दाण-न-कहिंवि-पडिसिद्ध-१

रहेमदिलसे-खैरात-करना सब तीर्थंकरोंने फरमाया, किसी तीर्थंकरने इसबातकी मना नही फरमाइ,-दीक्षाके पेस्तर वर्सीदानतक -अनुकंपासे सबतीर्थंकरोने दान दिया आवश्यकसूत्रवगेरा जैन-शास्त्रोमे फरमान है,-तीर्थंकर महावीर स्वामीने दीक्षाकी हालतमभी -देवदुष्य-वस्त्र दानमे दियाथा, रहेमदिल होना धर्मका-एक-अंग है,—

२५ जब अपने घर-खुशीके नकारे-बजते है-विवाह सादीकी-खुशीमे-और-बेटा-पैदाहोनेके सबब जलसा कियाजाता है,-सोचो फिर धर्मके लिये जलसा-क्यों-न-करना ? क्या ! दुनयवी-कारोबारसे-धर्म-कम-दर्जेपर है ? सचपुछो-तो-धर्मका दर्जा-बडा है,

धर्मको पहचाननेवाले-धर्महीको आलादर्जेपर समजते है, और-बरताव करते है,—

२६ धार्मिक-व्रत-नियमपर-एक-गगदत्त-श्रावककी मिशाल, पेस्तरके जमानेमे दौलतमद-बाशिदोसे-सरगर्म एक शखपुरशहर आबादथा, और उसमे-एक-गगदत्तनामका-साहूकार वसताथा, उसने गुरुके सामने श्रावकधर्मके व्रत-नियम-इख्तियार किये थे, और अपने-व्रत-नियमपर अमल करताथा दशमे-व्रतमें बयान है, -जिसरौज-देशावकासिक-व्रत धारण कियाजाय,-दुनयवी कारोबार छोडकर धर्मध्यानमे सावीत कदम रहना, और अपने मकानमे बेठकर धर्मध्यान करना, एकरौज-गगदत्त अपने घरमे देशावकासिक -व्रत-इख्तियारकरके धर्मम तैनात था चुनाचे!-बनाव ऐसा बना, शखपुरके बहार बडे सोदागरलोग-सौदा-लेकर बेचनेकेलिये आये, गगदत्तश्रावकके दोस्तने आनकर गगदत्तसे कहा, आज बडा-काफला-गावके बहारआया है -वहा-चलना चाहिये और-जो-जो -चीजे फायदेमद हो, खरीदना चाहिये,-अपनेको फायदा मिलेगा,

२७ गगदत्त श्रावकने कहा, आज-मैने-दशावकासिक-व्रत-इख्तियार किया है, धर्मकामकेलिये बहार जासकता हु मगर दुनियादारीकेलिये बहार नही-जासकता, दोस्तने कहा बडे फायदेका वख्त है,-ऐसे मौकेको हाथसे क्यो गुमाते हो? गगदत्तश्रावकने कहा,-मै-धर्मके फायदेके सामने दुनियाके फायदेको-कुछ-चीज नही समजता, दोस्त गगदत्तको धर्ममे पाबद समजकर चला गया और-गगदत्त-अपने व्रत-नियममे मुस्तैदीसे पाबद रहा,

२८ [इसपर एक-गायन कालिंगडेकी ठुमरीमे दिया जाता है,-]

सुनो सुनो रे! साजन सीखडीया, ए-तर्ज,

अभयनिधि जिनधर्मने पामी,-काहको-मागत भीखडिया,

सुनो सुनो रे! साजन सीखडिया,-१

शंखपुरे गगदत्त व्यवहारी,-वास वसे शुभ चौघडिया,
जिनवर धर्म करे मन शुद्धे,-जाणे-चितामणि जडिया,
सुनो सुनो रे! साजन सीखडिया,-२
देशावकासिक एक दिन धरतु,-लिधु-न-निसरू सेरडिया,
शाथ वहु आव्यो जाणीने,-मित्र आवी कहे वातडिया,
सुनो सुनो रे! साजन-सीखडिया,-३
शाथे चलो वहु लाभ होवेगो,-गगदत्त कहे मुज आखडिया,
मित्र कहे व्रत काले करजो,-लाभ वहु आज सापडिया,
सुनो-सुनो रे! साजन सीखडिया,-४
कहे गगदत्त-ये-लाभ-न-लेखे, व्रत नही छोडु एक घडिया,
आज-अछे-व्रत देशावकासिक, छोडो विकथा वातडिया,
सुनो सुनो रे! साजन-सीखडिया,-५

२९ दूसरे रोज जब-गंगदत्तका-व्रत-पुराहुवा, दोस्त आया,-और कहने लगा, चलते हो? सोदागर लोग आजभी ठहरे है,-कुछ-सौदा-खरीदे, गगदत्त उसके शाथ गया, माल खरीद किया, और उससे फायदाभी-काफी-मिला, बदौलत धर्मके-सब काम-फतेह-होते है,-मगर शर्त यह है-धर्ममे-पुरता रहना चाहिये,-आज कलके कितनेक लोग ऐसे देखे जाते है,-जरा कमाई हुई-धर्मको भूल गये, और एश-आराममे पडकर दौलतकी बरबादी किई,-तारीफ उनकी है,-जो-दौलतपाकर दिलमे शब्र करे-और-धर्मपर पाबद रहे,—

३० फर्ज करो! आपलोग किसी तीर्थकी जियारतको चले, और उस जगह पहुचभी-गये,-मगर वहाभी-घरतर्फ-खयाल लगा रहा,-फिर-आपकी-जियारत कैसे कारआमद होगी, ? फुरसद-कम -मिलनेसें और शुस्तिसे देवपूजन-नही-किया, किसीने पुछा आपने पूजन क्यों-नही किया, जबाव देना पडा क्या करे! तबीयत दुरुस्त नही थी, व्याख्यानसभामे धर्मशास्त्र-सुनने बेठे, दुकानसें नोकर

बुलाने आया,-फौरन ! खयाल उधर गया, मगर इन्साफ कहता है, -पेस्तरसेही-ऐसा-बदोबस्त करके आना था, जिससे-कोई-बुलाने -न-आवे, और अठीतरह शास्त्र सुनाजाय, धर्मकी पाबंदीपर एक -सिंहकुमार श्रावककी दिलचस्प-मिशाल दिई जाती है,-सुनिये !

३१ पेस्तरके जमानेमे-एक-रमणीकपुर-शहरमे-एक-जिनदेव-श्रावक-और-उसकी औरत-जिनदासी-रहतीथी और उनके-सिंहकुमार नामका-एक-लडका-था,-वो-हमेशा-सामायिक और प्रतिक्रमण-वरत-वरतपर करताथा, एकरोज तिजारतके लिये अपने शहरसे-काफिलेके साथ-मुसाफरीको चला, बाद चंदरोजके सफरमे -एक-नदी आई और उसके एक-कनारेपर पडाव डाला, शामके वक्तकी बात है, सिंहकुमार-श्रावक-आसन बिछाकर प्रतिक्रमण करनेको बेठा नदीके कनारे मछरोंका जोर बहुत था. लोगोने-अपने अपने डेरपर-आग-सुलगाकर धुआ किया, सिंहकुमार अलग बेठकर अपनी आवश्यक-धर्मक्रिया करताथा मछरोंने इसकदर तकलीफ दिई,-सिंहकुमारका शरीर तकलीफपानेसे-बेकरार-होगया,-मगर अपने शरीरकी परवाह-न-रखकर-धर्मध्यानमे मशगूल रहा, तनकभी -खलल नही डाला धर्मपाबंद हो-तो-ऐसे हो-जो-तकलीफमे धर्मको-न-छोडे, दूसर रोज-काफिला और-सिंहकुमार आगेको रवाना हुवे. मुकाम-ब-मुकाम दरगुजर करते हुवे किसी बडे शहरमे जाकर माल-असबाब-बेचा और फायदा हासिल किया, वापिस अपने वतनको आये, सिंहकुमारने अपनी कमाई हुई दौलत-मसे दान-पुन्य-किया और परलोकका रास्ताकरा.-इसीतरह अपना भलाचाहनेवाले शख्श कमाईहुई-दौलतमेसे-चौथा-हिस्सा धर्मम खर्चकरे धर्मखातेकी बोली हुई-दौलत-घरमे-न-रखे-तो-बहेत्तर-है —

३२ पेस्तरके जमानेमे अगर कोई, धर्मपाबंद शख्श तपकरके ध्यान-समाधि लगातथे, स्वर्गके देवते-उनका इम्तिहानकरने आते

थे, उनके-धर्मध्यानमें खलल पहुंचानेके लिये कहतेथे, धर्मको छोड दे, वरना! तुजे आफत पेश होगी, अपनी दैवशक्तिसे सिंहका रूप करके डरातेथे, सर्पका रूप लेकर सामने आतेथे, और धर्मध्यान छुडानेके लिये खौफ पैदा करतेथे,-अपनी दैवशक्तिसे उनके घरकों जलता हुवा दिखपडे ऐसा देखाव करके बतलातेथे, उसका खजाना कोई-ले-जाता है, ऐसा देखाव दिखलातेथे,-मगर जब-वे-अपने ध्यानमें साबीत कदम रहतेथे,-देवते-उनको-बक्षीस देजातेथे.-कई धर्मपाबद शख्श बक्षीसकीभी-परवाह नही करतेथे, और कहतेथे, हमारा धर्म बना रहे.-हमको दुसरा कुछ नही चाहिये,-बेशक! ऐसे धर्मपाबंदोकी तारीफ है,-उनकी ताकात-दिलेबरी-और खुशनसीबी-ऐसीही-थी-जिससे उनकी मुराद-बर-आतीथी, आज ऐसे खुशनसीब और धर्मपाबद कम-रहे, जमानेहालमें स्वर्गके-देवते -आतेनही. ऐसी तकलीफ देते नही,-तोभी-धर्मसें गिरनेवाले गिर जाते है,-धर्ममें-दौलत खर्चना मुसीबतका काम होगया, घरका काम आन पडे-तो-कर्ज करकेभी खर्च करे, मगर धर्ममें-खर्च करना दुसवार होगया, फिर कहते है, हमकों तकलीफ और दौलतकी तंगी-क्यों? मगर इतना खयाल नही करते-हम-खुद धर्मकों भूल गये है, और आराम-चैन-चाहते है,—

३२ जमाने पेस्तरके जानवरोंकोभी-धर्मकी बात सुनकर-जातिस्मर्ण-ज्ञान-होजाताथा, जानवर-मनुष्यकी तरह-मुहसे-बोल नही सकते, मगर दिलमें समज सकते है,-तोते-मैनेको-दो-चार-नाम सिखलादिये और उनोने बोलदिया-वो-बात इससें ताल्लुक नही रखती, दिलमें-उनके क्या! बात है,? उसका-बयान-जानवर-अपने मुहसे नही करसकते,-जैसे उनकों-भूख-लगी तो-वे-मुहसे नही बोलसकते, हमकों-खाना-खिलाओ! अगर-कोई-स्वर्गका देवता-किसी जानवरके-शरीरमें-अपनी दिव्य शक्ति प्रवेश करे-और-मनुष्यकी तरह बोले-तो-वो-अलग बात है,-जानवरोंकी

यह हेसियत नही-जो-वे-खुद-मनुष्यकी भाषाम बोलकर अपना दिलीइरादा जाहिर-करसके उनकों-जातिसर्ण-ज्ञान-हुवे बाद-वे -दिलसें इतना समज सकते है. फला काममे पाप और-फला-कामम पुन्य है, और-अगर-चाहे-तो-उसमुआफिक वरतावभी-करसकते है,—

३४ जैन-आगम-आवश्यक सूत्रके-अचल-अध्ययनकी टीकामे एक-वदरकी मिशाल है,-दरअसल!-वो-वदर पेस्तर मनुष्य जन्ममे था, और-रोगकी चिकित्सा करनेवाला एक-उमदा-वैद्य-था,-औषधियोंकी-तासीरको-उमदा-तौरसें जानता था, उस जन्ममे तावेउम्र-उसने-वैद्यकपना किया, और मनुष्यभवकी-उम्र-खतम होनेपर मरकर किसी पूर्वसंचित कर्मके-उदयसे-जानवरकी गतिमे-एक-वदर हुआ, जगलम रहता हुवा जब-वो-जवानीमे आया, दूसरे वदरोका सरदार बना इसतरह जगलम रहते कई-वर्स-गुजर गये,-एक-रोज बनाव ऐसा बना, पाच दश-जैनमुनि-मुल्कोकी-सफर करते हुवे-उस जगलमे आगये, और चलते चलते-एक मुनिके पावमे-एक-बडा काटा-इस कदर जोरसे लगा, जो-पावके नीचेके भागसें-उपरतक निकल आया,-और-वो-मुनि-वहा रास्तेहीमे गिर गये, दुसरे मुनि-उनके पावसे-काटा-निकालनेकी कोशिश करने लगे, मगर निकला नही, बल्कि! ज्यादा तकलीफ पेश हुई,-इतनेमे उस-वदरकी-जमात-आ पहुची, उसका-सरदार बडा वदर-जो-पूर्व जन्मका वैद्य था, उसने मुनिजनोंकों देखे और उसके दिलमे खयाल पैदा हुवा-ऐसे-मुनि मेने कही देखे है,-दरअसल! वैद्यके जन्ममे-वो-साधुजनोंकी खिदमत करनेवाला था,-इस जन्मम साधुओंकों देखकर जातिसर्ण-ज्ञान-पाया,-पूर्व जन्मकी वातें-याद -आई —

३५ चिकित्सा विद्याका-वो-वैद्यके-जन्मसे जानकार-था, फौरन! जगलमे-जाकर-एक-तरहकी-जडी-लाया, और अपने-दोनों-

हाथोंसें मसलकर-उसका-रस-मुनिके पावपर जहा-कांटा-लगा था, डाला,-जिससे-काटा-तुरत-उपरको-उकस-आया, बंदरने अपने हाथसे खेंच लिया, बाद फिर जगलमे गया, और दुसरी-सरोहिणी -नामकी-जडी लाया, दोनो हाथोंसे मसलकर उसका रसभी-मुनिके पावपर लगाया, जिससे मुनिका पाव-तुरत-अछा हो गया, और सब मुनि-दिलमे सोचने लगे, इस बदरको-जातिसर्ण-ज्ञान होना चाहिये,-बदर-कुछ-मनुष्यकी-तरह-बोल-सकता नही,-मुनिजनोंके-सामने-जमीनपर-अपनी पूर्वजन्मकी-इबारत लिखी, उसमे लिखा-मे पेस्तरके जन्ममे-वैद्य-था, आप लोगोंको-देखकर मुझे जातिसर्ण-ज्ञान-हुवा है,-और-पूरव भवकी-जानी हुई-औषधियोंका-रस-आपके पावकों लगाया है,-मुनिजनोंने उसकों-शाबाशी-दिई, और धर्म-सुनाया, फिर वहासे आगेको रवाना हुवे, -बदर पापकर्मसे बचाव-करता रहा.-और-अपनी अछी करनीसें-स्वर्गकी-गति-पाया, इसके लिखनेका मतलब यह निकला-जमाने पेस्तरके जानवरोंकोंभी-ज्ञान-होता था,-इसपर चाहे कोई एतकात लावे-या-न-लावे, मरजी उनकी, धर्ममे-जबरजस्ती-नही, चाहे-कोई-कुबुल रखे-या-न-रखे,—

३६ [दुसरी मिशाल-चड-कोशिक-सर्पकी दिइ जाती है,-सुनिये, ?-]

जैनशास्त्र-कल्पसूत्रकी-टीकामे-जहा-तीर्थंकर महावीरस्वामीके-विहारका बयान है,-एक-चडकोशिक-सर्पकी-मिशाल दिई गई है, -क्रोध करनेसें-तपस्याभी-गलत होजाती है,-जहातक बने क्रोधको घटाना-चाहिये,-दरअसल !-चडकोशिक-सर्पका जीव-पूरवभवमे एक-तपस्वी-जैनसाधु था, और उसके एक-चेला-था, एकरौज एक शहरमे गुरुचेला-भिक्षाको जातेथे, रास्तेमे गुरुके पावसे-एक-छोटी-मेडकी-दबकर मरगई,-चेलेने-गुरुसें इसबातकी इत्तिला-दिई मगर गुरुने उसपर कुछ खयाल नही किया. भिक्षाले-

कर जब-अपने ठहरनेकी जगहपर आये. चेलेने फिरभी-याद-दिलाई, और इसीतरह शामको प्रतिक्रमण-करतेवख्त खयाल दिलाया, जनमजहबम प्रतिक्रमण-उसको-कहते हैं,-दिनभरमें-किये हुवे गुन्हांकी माफी मागी जाय,-इसपर गुरु-अपने-चेलेपर वहुतही गुस्सेहुवे, और-यहातक बनाव बना, चेलेको मारनेके लिये उठे, इसीदरमियान एक-थभेकी-चोट उनके सीरमे लगी, तपस्याके सबब बदनम कमजोरी-तो-थी, चोट लगनेसे गिर पडे, और उनका इतकाल होगया, बाद-दो-जन्मकरके-एक-जगलम-उनका-जीव-एक-चडकोशिक-सर्प-हुवा, दरअसल ! सर्पको गुस्सा होताही-है, मगर इसको गुस्सा ज्यादेतर रहता था, आश्रमके करीब जहा-मज-कुर-सर्प-रहताथा, लोग उस रास्ते निकलतेभी-नही-थे. गरज ! उस रास्ते लोगोकी आमद-रफत-कम-होगई.

२७ कुछ अर्सेके बाद-तीर्थंकर महावीरस्वामी-मुल्कोकी-सफर करते जब उसरास्ते निकले और उसी-चडकोशिक-सर्पके बिलस नजीक-एक-दरख्तके नीचे ध्यानकरनेको खडे हुवे,-चडकोशिक-सर्पने बिलसें निकलकर देखा-तो-एकशख्श ध्यानमे मशगूल खडा है -सर्पने तीर्थकर-महावीर-स्वामीके-सामने जहरीली नजरें-फेंकी, मगर तीर्थंकर महावीरस्वामी अपने ध्यानम साबीतकदम-रहे -और दिलम-तनकमी-खौफ नही लाये, आखीरकार ! सर्पने-उनके पावपर-डस-मारा, मगर फिरभी-वे-ध्यानसे हठे नही.-चडको-शिक-सर्प-अपने दिलम ताज्जुब करने लगा, और सोचनेलगा-ये-कौन शख्श है, तीर्थंकर महावीरस्वामी-अपना-ध्यान-खतम-करके -सर्पको-कहने लगे-तु-आजसे तीसरे भवम-एक तपस्वी साधु था,-तेरपावसें दबकर एक-मेंडकी मरगईथी जब-चेलेने-याददि-लाया -तु-उसे-मारनेको-उठा -थभेकी-चोट-लगनेसे तेरा इत-काल हुवा दो-जन्मकरके-तीसरे जन्मम-सर्प-हुवा है -सब बात पर गुस्सा लाना बहत्तर नही था. क्रोधकी-वजहसें-तपस्याभी-

कारआमद नही होती. गुस्सेका-यह-नतीजा-है,-चडकोशिक-सर्पको-इसकदर अपने पूरवभवका बयान सुनकर जातिस्मर्ण-ज्ञान-हुवा, और अपने पूर्वजन्मकी तजरुबा किई हुई बाते याद आई, तीर्थंकर-महावीरस्वामीकों-नमस्कार किया. और अपने दिलमे-बडा आसान माना, तीर्थंकरोको-केवलज्ञान होनेके पेस्तरभी मति, श्रुत, अवधि, और मनःपर्ययज्ञान होता है,-जिससे-वे इसतरह दुसरोंके हालात जानसकते है.-चडकोशिक-सर्पको-तालीम धर्मकी-देकर-आगेको-रवाना हुवे, चडकोशिक-सर्प उसरोजसे गुस्सा-छोडकर धर्म पावद हुवा, और अपनी उम्र-खतम-होनेपर-बहिस्तमे देवता हुवा,-देखिये! क्रोध करनेसे-किसकदर तपस्या गलत होकर नीचगति होजाती है,-और क्रोधके छोडनेसे किसकदर उमदा-गति मिलती है,-इस मिशालसे-देखलो! इन्सानकों लाजिम है,-जहातक बने गुस्सा-कम-करे. दिलमे शांति-लावे, जिससे परलोकका-रास्ता साफ हो. और मुक्ति मिले, जिनकों धर्मपर एतकात नही-इसबातकों-न-माने-तो-उनकी मरजी-अछे लोगोका फर्ज है, -तालीम धर्मकी देना,

२८ साधु जनोकों-भूख-प्यासकी-तकलीफ पेश हो, कभी भिक्षा मिले-या-न-मिले-उसपर सब्र करनाचाहिये, दुनियादारोकोंभी-कभी-ऐसा वख्त आजाता है,-खान-पान-न-मिले और तकलीफ पेश हो.-मगर उसवख्तभी-रज-नही लाना चाहिये.-जबतक अपने अतरायकर्मका दोष हो-दिलपसद चीज नही मिलती, साधुजनोको-ठडकेदिनोंमे-कभी-कपडा-न-मिले और मारे-ठडके -बदन सुकड जाय-इसीतरह दुनियादारोंकों-ठडकेदिनोंमे बदनकी हिफाजतकेलिये-कपडा-न-मिले और तकलीफ पेश हो-दिलमे खयाल करे अपने अतराय-कर्मका-दोष है, साधुजनोको-कभी-ठहरनेकेलिये-मकान-न-मिले, और बनमे-या-पहाडोंकी तराइमे-बसर करना पडे-ऐसा बनावभी बन सकता है,-मगर उसहालतमेभी-

शन करे-और धर्ममे-सानीतस्दम रहे-जब-इम्तिहान धर्ममे-पास-होसकेगें,—

३९ दुनियादारोंमे-जिनोने पूर्वजन्ममे-दान-पुन्य-किया है,-यहा सुखचैन पाया, और उनका खजाना तर-है,-कितनेक-ऐसेभी-देखे जाते है, जिनके पास-न-दौलत है,-न-दुनियादारीका-सुख, जिनके पास खानेके लिये-अनाज नही बदनकी हिफाजतके लिये-कपडा-नही, उनकों आलादर्जेके-दुखी-समजना चाहिये,-किसी-शख्शके पास-कुछ दो-तीन-हजार रुपयोंकी जमीन थी, उसने उसकों-बेच दिई, हजार-दो-हजार रुपये किसीसे उधार लिये-और अपना विवाह करगया, आखीरकार! दो-तीन वर्स वतीत होनेपर ऐसा वख्त आगया, कर्जा-दे-सका नही, जमीन-अवल-बेच दिई थी, घर-छोडकर गेरमुल्क जाना पडा, और नोकरी करके गुजर करना पडा, एक दोस्तने कहा, कर्जा-करके विवाह-न-कराते, और जमीन-न-बेचते-तो-खानपानसे सुखी रहते और नोकरी करनेका वख्त-न-आता,-इन्सान-अवल सौचता नही, पिछेसें-रज-करता है,-कई-कहते है,-कुछ फायदा मिले ऐसी करामात तलाश करना चाहिये, मगर इन्साफ कहता है, सौच-समजकर चलना यही बडी करामत है, एक शख्शके पास पेस्तर अछी दौलत थी, जब किसी शहरकी सफरको-जाता था, सेकंड कलासकी-टिकिट लेकर रैलमे सवार होता था, खानपान और पुशाक अछी महनता था, मगर जब आमदनी-कम-होने लगी, फौरन! उसने अपना खर्चा-घटा दिया, सेकंड-कलासकी जगह-थर्ड-कलासकी गाडीमें सफर करने लगा, मगर-अपनी इज्जत-और धर्म-उमदा तौरसें कायम रखा,-तारीफ ऐसे शख्शोंकी करना चाहिये-जो-वख्त और आमदनी देखकर चले, सिरपर कर्जा होगा-तो-धर्म करनेमेभी ध्यान नही लगेगा,-चाहे व्यापार-कम-करना, मगर हुत-दाम-लेकर चीज-बेचना फायदेमंद है,-ये-मिशाले यहा इस-

लिये लिखी गई अगर अपने सिरपर-कर्जा-न-होगा-तो-धर्म-उमदा तौरसे कर सकोगे,—

४० अगर-कोई-इस वातका फिक्र करे दुनियामे मेरी-यश-कीर्त्ति-क्यो-नही बढती, इन्साफ कहता है,-नेकीसे-चलो-तुमारी-यशकीर्त्ति बढेगी,-कई शख्श-गायनमे-नाचरगमे तरह-तरहके वाजे बजानेमे-और-व्यापारमे कामील है, मगर धर्म करनेमे-जो-कामील हो ज्ञानी-शख्शोने उनकी तारीफ बयान फरमाई, पेस्तरके जमानेमे-इस-भारतवर्षसें मुक्ति होसकती थी, आजकल-वैसे-आलादर्जेके-ध्यान-करनेवाले रहे नही,-इसलिये मुक्ति होना बद होगया, केवलज्ञान,-उपशमश्रेणि,-क्षपकश्रेणि, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यातचारित्र, और जिन कल्प मार्ग रहा नही,-जबूद्वीपके मध्यभागमे महाविदेहके वाशिंदोको आलादर्जेके-ध्यान करनेकी-ताकात रही है,-इसलिये-वहासे-इस वख्तभी-मुक्ति होसकती है,—

४१ हरसाल जब-वारीशके दिन-पेश-होते है,-जैन मुनि-एक जगह-कयाम करते है,-बाकीके-आठ-महिने-सफरमे-गुजारते है,-वारीशके दिनोमे-पानी-वनास्पति, और-अकुरोंकी वहुतायतसें-चलने फिरनेमें मुसीवत पेश होगी, इसलिये सफर-नही-करते, साधुजनोमे-या-दुनियादारोंमे-किसी सबन-अनबनाव हो जाय-धर्मीशख्शकों लाजिम है,-गुस्सेकों-कम-करे, जिसने पेहले गुन्हा-किया हो माफी-मागे, और दिलकों-साफ-करे-जिससे-धर्मके इम्तिहानमे फतेहमंद हो,—

४२ कितनेक कहते है, धर्मतत्व-न-मालुम किस पहाडकी गुफामे-जा वेठा है, तलाश करनेपरभी मिलता नही, जवाबमे मालुम हो,-धर्मतत्व-गुफामे क्यो-जा वेठे-खुले मैदान खडा है,-परमात्मा-और धर्मशास्त्रपर-एतकात रखो. सच वोलो, नेकीसे

चलो, धर्मतत्व-तो-अपने पासही है, नाहक! बातें-बनाना जुदी बात है,-धर्मतत्व जाननेके लिये अपना दिलही अपना गवाह है,-जीवोंपर रहम करो, किसीकी विना दिई हुई चीज मत उठाओ, इस्कम परहेज रखो, अपनी आमदनीमें-बसर-करो, मांस-शराब-छोडो, खैरात देते रहो, और पिछली उमरमें दुनियाके कारोबार छोडकर धर्मपर कदम बढाओ, बडे बडे राजे-महाराजोंने अमलदारी छोड दीई और धर्म-किया है, बस! यही धर्मतत्व है,—

४३ पेस्तरके जमानेके लोग-बडे-कमाल हुश्न-और-आला-दर्जेकी तकदीरवाले थे,-दौलतकी-कमी नही थी, बदनमें-तदुरस्त और आरामतलब होते थे,-उमदा-मकान और दिलपसंद खानपान-हाजिर-था, मगर-तोभी-धर्मको भूलते नही थे, मनुष्य लोकसे-स्वर्गके-देवतोंका कई दर्जे बढकर आराम-और सुख चैन ज्यादा है, -जिनकों-धर्मपर कामील एतकात है,-वे-धर्मको हर्गिज! भूलते नही, चाहे-मनुष्य हो,-या-स्वर्गके-देवते हो,-जिनोंने धर्मकी इज्जत किई उनोंने मुक्ति पाई, और-जो-अब-धर्मकी इज्जत करते हैं-आइंदे मुक्ति पायगें —

४४ स्याद्वादन्याय-जो जैनमजहबमें मंजुर रखागया है, इस कदर मशहूर और काविलेगौर है -जो-हरेककों इस रास्तेपर कदम रखना पडता है

[यदुक्त-स्याद्वादकलिकाया-राजशेखरसूरिभि -]

अनवस्थासंशयव्यतिकरशंकरविरोधमुख्या-ये,-
दोषा' परं प्रकटिताः-स्याद्वादे-तु-न-सत्स्येषु'-२२

दुसरे मजहबवाले-जो-स्याद्वाद न्यायपर-अनवस्था-वगेरा दोष पेश करते है,-वे-दोष काविल इस्तिहानके नही होसकते पेस्तर इस बातको उमदा-तौरसे-समजना चाहिये,-जो-आगे दिखलाई जाती है,—

४५ नित्यमनित्य युगल, स्वतत्रमित्यादयस्त्रयो दुग्धा'
तुर्य' पथ सबलो द्वयीमयो दुग्यते-केन, १-२३

विनाशः पूर्वरूपेणोत्पादो रूपेण केनचित्,-
द्रव्यरूपेण च स्थैर्य-मनेकातस्य जीवित-२४
द्रव्यक्षेत्रकालभावैस्तैः सत्वमपरैः पर,
भेदाभेदानित्यनित्य-पर्यायद्रव्यतो वदेत्,-२५

एकात नित्य-एकात अनित्य-और-एकात नित्यानित्य-ये-तीन पक्ष एकात होनेसे दोषवाले कहे-जा-सकते है, मगर-कथचित्-नित्यानित्य जो-चौथा पक्ष है,- किसीतरह-दोषवाला नही कहा-जा-सकता, देखो! उपाधिभेदसे एक वस्तुमे रूप-रस-स्थूल-अस्थूल वगेरा-धर्म-अविरुद्ध होकर रहसकते है,-एकही-पदार्थमे पूर्वरूपका-विनाश, नये रूपसें पैदा होना,-और-परमाणुरूपसे स्थिर रहना, इसीमजमूनकों अगर अछी तरह समज लिया जाय-तो-यही-स्याद्वादन्यायका रहस है,- हरेक पदार्थ-अपने स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, और स्वभावसें-अस्तिरूप और परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, और पर-भावसे नास्तिरूप है,-इसीतरह-भेद-अभेद, नित्य, अनित्य, गुण, पर्यायके बयानको-समजलिया-जाय-तो-तमाम शक-रफाहो, और असली वस्तुस्वरूप खयाल शरीफमे आसके,-दरअसल?-ये-बाते समजना-मुश्किलभी-है,-इसपर-कोशिश विना किये-या-विना समजे चाहे कोई कहदेवे-स्याद्वादन्याय ठीक नही-तो-उनकी-मरजी,—

४६ वैशेषिकमतमे-पृथिवी नित्यभी मानी, और अनित्यभी मानी, परमाणु-रूपसे-नित्य, और कार्यरूपसे-अनित्य,-सोचो! एक -मिट्टीका-घडा-टूट-गया, कहनेवाले कहेगें,-घडा-टूट-गया, मगर परमाणुरूपसे-मिट्टी-कायम है,-खयाल करनेका-मुकाम-है,-एकही -पृथिवीमे-नित्यानित्य-दोनों-विरुद्ध धर्म-अपेक्षा भिन्नसे-रहे-या -नही? स्याद्वादन्यायका-जो-उसूल है,-चीज-पैदा होती है,-कायम रहती है,-और नेस्तनाबुदभी-होती है, इस मिशालसें करार पाई गई,—

४७-[स्याद्वाद-न्यायपर-एक छोटासा दाखिला,-]

घटमौलिसुवर्णार्थी,-नाशोत्पादस्थितिष्वय,
शोकप्रमोदमाध्यस्थ्य,-जनो याति सहेतुक,-१

एक-दौलतमद-शख्शके-घर-एक लडका-और-एक-लडकी मौजूद थी, एक रोज-लडकीने-अपने वालिदसें कहा, मुजे-सोनेका घडा-बनवा दो, चुनाचे' वालिदने सोनारकों बुलवाकर कहा, मेरी लडकीके लिये-एक-सोनेका-घडा-बनादो, सोनारने दुसरे रोज-घडा बनादिया, जब घडा तयार होकर आया, दौलतमद शख्शने अपनी लडकीको-सोंप-दिया, इसबातको-सुनकर लडका नाराज हुवा और अपने वालिदस कहने लगा, मेरी बहेनके लिये आपने घडा बनवा दिया, मेरेलिये कुछभी-नही, उसी-सोनेके घडेको तुडवाकर मुकुट बनादिया जाय जभी बहेत्तर होगा, दुनियाम मिशल मशहूर है,-लडकीसे लडकेका-दर्जा-बडा होता है, ब-कौल-इसी मिशालके दौलतमद शख्शने-घडेको-तुडवाकर उसी सोनेका-एक-मुकुट-बनवा दिया,-देखिये! पदार्थ-एक-और-उसके पर्याय अनेक है,-घडा-तोडा जानेसें लडकीको रज हुवा,-मुकुट बननेस लडकेकों खुशी पैदा हुई,-और उनके वालिदकों-न-रज-है,-न-खुशी, तीनो बाते-इस मिशालसे पाये गये,-इसीकों जैनमजहबमें-"उत्पाद विनाश ध्रौव्ययुक्त-सत्"-कहा, और-सत्को-द्रव्यका-लक्षण फरमाया, ये-सब-स्याद्वादन्यायके उसूल है,—

४८ बौधमजहबमे-सब-पदार्थ-क्षणिक बयान किये, मगर-एकात-क्षणिक कहनाभी नही बन सकता, कथंचित् भेदाभेद कहे-जाय-जब-ठीक होगा,-अगर इसबातको-मजूर रखी जाय-तो-स्याद्वादन्यायका होना साबीत हुवा,—

(बयान इस्तिहार धर्मका खतम-हुवा,-)

[जनाव-फेजमाव-मग्जने इल्म-जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर -न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी साहबके बनाये हुवे-ग्रंथोंकी तपसील हस्ब-जेल,-]

१ मानवधर्मसंहिता. किमत, २-०-०
इसके पृष्ठ करीब (८३६)-संवत् (१९५५)मे छपी, और-पनराह रुपयेकी किंमतसेंबीकी, अब-सिलकमे-नही रही,-इसकी-माग अबतक जारी है,-मगर मिलती नही.-इसमे दुनयवी कारोबार और धर्मके बारेमे बयान-जिनोने मजकुर किताब पढी होगी. ब-खूबी-जानते होंगे.—

२ रिसाला-मजहब-ढुंढिये. मुफ्त बाटी गई,
इसके पृष्ठ (२८) संवत् (१९५९)मे छपी. इसमे मूर्त्तिपूजाके बारेमे खुलासा लिखागया है. हालमे सिलक नही.

३ जैनसंस्कारविधि,- किमत ०-५-०
इसके पृष्ठ (८६) संवत् (१९६०)मे छपी. इसमे-मुताबिक जैनशास्त्रके सोलहसंस्कार करनेका बयान है, अब सिलकमे नही.

४ त्रिस्तुति-परामर्श, किमत ०-८-०
इसके पृष्ठ (८०) संवत् (१९६३)मे छपा,-तीन स्तुति और चार स्तुतिके बारेमे खुलासा दिया गया है, अब सिलकमे नही.

५ बयान पारसनाथ पहाड, मुफ्त बाटा गया,
इसके पृष्ठ (३६) संवत् (१९६४)मे-छपा, इसमे समेतशिखरजीका बयान है,-हाल सिलकमे नही.

६ जैनतीर्थगाईड. किमत ३-०-०

इसके पृष्ठ (४४०) सफाने उन्नीके पृष्ठ (८८) और (८) पृष्ठ गुरुभक्तिपर पद वगेराके कुछ पृष्ठ (५३६)-सवत् (१९६७)मे-छपी, इसमे तवारिख-जैनश्वेतानर तीर्थोंकी मयरास्तोंके उमदा लिखीगई है, जिससे पढनेवाले आसानीसें कमखचम हरेक जैनतीर्थकी जियारत कर सके, इसमे एक-रगीन नकशा हिंदुस्तानका इस लिये दिया है,-जिससे पढनेवालेकों हर शहर और टेशनोंका हाल घरबेठे मालुम होजाय,-मजकुर किताब-शेठ-हवसीलालजी-पानाचदजी-सार्कीन बालापुर,-जिला आकोला, मुल्क विरारने छपवाई है,-और उनके पास मिल सकती है,—

७ सनम-परस्तिये-जैन किमत, ०-४-०

इसके पृष्ठ (३७) सवत् (१९६७) मे-छपी, इसमे मूर्तिपूजाके बारेमे उमदा तौरसें-खुलासा किया गया है,-हाल-सिलकम नही

८ न्यायरत्न-दर्पण, मुफ्त बाटा गया,

इसके-पृष्ठ (२४) सवत् (१९७२)मे-छपा, इसमे खरतरगछके बारेमे बयान है,-अब सिलकम नही रहा,—

९ हिदायत-बुतपरस्तिये जैन, किमत, ०-४-०

इसके पृष्ठ (३०) सवत् (१९७२)मे छपी. इसमे मूर्त्तिपूजाके बारेमें उमदा दलिले दर्ज है,-सिलकम नही.—

१० पर्यूषण-पर्व-निर्णय, मुफ्त बाटा गया,
इसके पृष्ठ (२४) सवत् (१९७४)मे छपा, इसमे
पर्यूषण तेहवार कव करना उसका बयान है,
सिलकमे नही-रहा,—

११ अधिकमासनिर्णय, मुफ्त बाटा गया,
सवत् (१९७४)मे-छपा. इसमे अधिक महिना
-वार्षिक-चातुर्मासिक और कल्याणिक पर्वके
व्रतनियमकी अपेक्षा शुमारमे नही लाना वगेरा
बयान है.-सिलकमे नही.—

१२ किताब-चर्चा-पत्र, मुफ्त बाटा गया,
इसके पृष्ठ (५६) सवत् (१९७४)मे-छपा.-
इसमे-महाराज-शातिविजयजीकी प्रतिदिनच-
र्याके बारेमे-तीन-शख्शोने-जो-जो-सवाल
पेश किये थे. उनका माकुल जवाब दिया है,
-हालमे सिलक नही,—

१३ अधिक-मास-दर्पण, मुफ्त बाटा गया,
इसके पृष्ठ (३२) सवत् (१९७५)मे छपा, इसमे
अधिक महिनाकी चर्चाके बारेम बयान है.
हाल-सिलकमे-नही.—

१४ जैनमत-प्रभाकर, किमत,-१०-०-०
इसके पृष्ठ (७७६)-प्रस्तावनाके पृष्ठ (१२) कुल
पृष्ठ (७८८) हुवे, सवत् (१९८०)मे-छपा,
इसमे महाराज शातिविजयजी साहबकी सवाने
उम्री, मुल्क-व-मुल्ककी सेर, इतिहास जैनम-
जहब, उसूल जैनमजहब, बयान मतमतातर,
अगस्फुरण, स्वप्नशास्त्र,-बयान-हस्तरेखा,-
शकुनशास्त्र,-स्वरोदयज्ञान, चिकित्सा विद्या,-

नजुमशास्त्र, मत्रशास्त्र, गौतमकेनली, और तवारिख जैनतीर्थ-वगेरा देखे,-और-थ्री-कलर्स-ब्लाकके बनेहुवे-रगीन तीन चित्र जिसमे स्वर्गके नाचरग काबीलेदीद है. एक-हजार-किताब छपीथी, साढे-नवसो-बीक गई, सिर्फ! (५०) नकल सिलकमे रही है.—

१५ जैनमत-पताका,-जो-नाजरीन अपनी नजरके सामने देखरहे है,- १०-०-०

इसम किताब जैनमतप्रभाकरसे बढकर-बयान है,-देखलीजिये! क्या! दुनयवी कारोबारकी हकीकते और-धर्मके बारेम उमदा और दिलचस्प इबारत है? जैनफिलॉसोफी, जैन भूगोल, बयान-तपश्चर्या, बयान-चौदह-गुणस्थान, मत-मतांतरके भेद, अगस्फुरन,-स्वप्न शास्त्र,-उत्पात-और-अतरिक्ष निमित्त, बयान हस्तरेखाका-ज्यादा देखोगे अक्लके-फवारे, जिसके पढनेसे निहायत खुशी पैदा होगी.-गुलदस्ते जराफत,-मत्रशास्त्रम ऋषिमडल स्तोत्र और उसके बीजअक्षर,-भविष्यबतलानेवाले बीजअक्षर-पैंसठका-यत्र, बयान-नजुमशास्त्र चिकित्सा-विद्या, स्वरोदयज्ञान. अष्टागनिमित्त-प्रश्नावली, सस्कृतवाक्यमजरी, और अखीरम इतिहास धर्म-इबारत इस-कदर दाखिले दलिलोके शाथ लिखीगई है,-नाजरीन अपनी नजरोंसे देखे, और-थ्री-कलर-ब्लाकके बनेहुवे पाच उमदा रगीन चित्रपरभी-गौरकरे,-एक हजार नकल

छपवाई गई है,-इसके पृष्ट-ग्रंथ-और-प्रस्ता-
वनाके मिलाकर आठसोंसें कम नही,—

[महाराज-शांतिविजयजीके-बनायेहुवे
ग्रंथोंकी तपशील खतम हुई -]

[जैनमत-पताकाके पेंशगी-खरीददारोंके-नाम,-]

किताबकी संख्या (शहर-बंबई,-)

७ श्रीयुत-तुलसाजी-धरमचंदजी-नाथाजी, सिंगी, मुकाम-आहोर, जिला-जोधपुर. मुल्क मारवाड, हाल मुकाम बंबई, पहेली सुतारगली पोस्ट-नंबर,-४

२ श्रीयुत-खीमजी गांगजी, कछ-बारोई,-हाल मुकाम-बंबई. घाटकोपर, ठिकाना-शेठ-टोकरशी-मूलजीके-मकानमे,

१ श्रीयुत-तुलसाजी-नाथाजी, मुकाम आहोर, जिला जोधपुर, मुल्क-मारवाड, हाल मुकाम बंबई पहेली सुतारगली, पोस्ट-नंबर,-४

१ श्री वर्द्धमान जैन लाइब्रेरी, मुकाम आहोर, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड, श्रीयुत-तुलसाजी-नाथाजीकी दुकान तर्फसें भेट, ठिकाना पहेली सुतारगली, बंबई,-पोस्ट-नंबर ४

१ श्रीयुत-जेठमलजी भुताजी, जीवावत-मुकाम आहोर, जिला-जोधपुर, मुल्क मारवाड. हाल मुकाम-बंबई. श्रीयुत तुलसाजी-नाथाजीकी दुकानपर, पहेली सुतारगली. पोस्ट-नंबर,-४

१ श्रीयुत-गुलाबचंदजी फोजमलजी, जीवावत-मुकाम-आहोर जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड. हाल मुकाम बंबई. पहेली सुतारगली, पोस्ट-नंबर,-४

१ श्रीयुत-केवलचंदजी-जोराजी मुकाम सीलदर,-जिला शिरोही, मुल्क मारवाड,-हाल मुकाम बंबई. पहेली सुतारगली.-पोस्ट नंबर,-४

किताबकी संख्या

२ श्रीयुत-मोहनलालजी-वेद, ठिकाना लक्ष्मीचदजी वेदकी दुकानपर, कालबादेवीरोड. बबई,-

१ श्रीयुत-कपूरचदजी कस्तूरचदजी शाह, शिवगजवाला, हाल मुकाम बबई, भीडी बजार शाह-फोजमलजी कपूरचदजी, धगडीवाला

१ श्रीयुत-चुनिलालजी-भगाजी, मुकाम सादरी, जिला-जोधपुर, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम-पैणबदर, ठिकाना-काका-मनोहरकी-चाल. जिला-अलिबाग,-कोलाबा

१ श्रीयुत-जेताजी अणदाजी, गूढा-बालोतरावाला. हाल मुकाम बबई,-डगरी,-पालागली, पोस्ट-नबर, ९

१ हजारीमलजी तेजाजी, कोठारी, मुकाम कोशिलाव,-जिला-जोधपुर मुल्क मारवाड -हाल मुकाम माहिम. पोस्ट-नबर-१६ बबई,

१ श्रीयुत-हीराचदजी-सरदारमलजी,-मुकाम सादरी,-जिला-जोधपुर मुल्क मारवाड हाल मुकाम-माहिम, पोस्ट-नबर,-१६-बबई,

१ श्रीयुत-चिमनाजी कृष्णाजी, मुकाम परेल, भोईवाडी, पोस्ट-नबर,-१२-बबई,

१ श्रीयुत-जुहारमलजी-रुमाजीकी-कपनी, मारफत पुखराजजी माणकचदजी-सात-तार, माडवी, कोलीवाडा, पोस्ट-नबर, ३-बबई,

१ श्रीयुत-सागरमलजी-हजारीमलजी, मुकाम-घाणेराव, जिला-जोधपुर मुल्क मारवाड, हाल मुकाम-बबई, भाईखाला, पोस्ट-नबर,-८

१ श्रीयुत-कुवरजी-केशवजी,-मुकाम-कच्छ-कोठारा,-हाल मुकाम बबई, ठिकाना-हीरजी-लालजीकी-कपनी. पोस्ट-नबर,-३.

किताबकी संख्या

१ श्रीयुत-सेलाजी-गजाजी, ठिकाना-परेल-रोड जे. जे. इस्पितालके नजीक -पोस्ट-नंबर,-८-बबई,

१ श्रीयुत-शामजी-नागशी,-ठिकाना-माटुंगी. चीचबंदर, दामजी मेघजीके मालेमे तीसरे दादरे-पोस्ट-नबर,-३-बबई,

१ श्रीयुत-प्रागजीभाई-धरमसिंह, ठिकाना छीपीचाल. ठक्कर-धनजी मूलजी, रेशमी कापडवालेकी दुकानपर, पोस्ट-नबर, -२-बबई,

१ श्रीयुत-सीरेमलजी-पुनमचदजी, मुकाम-आहोर,-जिला-जोधपुर, मुल्क मारवाड, हाल-मुकाम-भीमडी जिला थाना, ठिकाना-शाह भगवानजी-ताराचदजीकी दुकानपर.

१ श्रीयुत-सुखराजजी-रूपराजजी मुकाम-जालना, जिला औरगाबाद, मुल्क दखन, मारफत श्रीयुत-हजारीमलजी-कनरलालजी, -विट्ठलवाडी, तमाखूवालाका-माला-पोस्ट-नबर,-२-बबई,

१ श्रीयुत-गुलाबचदजी-प्रेमराजजी, मुकाम-जालना, जिला-औरगाबाद, मुल्क दखन, मारफत-श्रीयुत हजारीमलजी-कनरलालजी, विठ्ठलवाडी-तमाखूवालाका-माला, पोस्ट-नबर, -२-बबई,

१ श्रीयुत-मगनाजी-जीनाजी. ठिकाना दुसरा भोइवाडा. पोस्ट-नबर,-२-बबई,

१ -सुखराजजी-मगनाजी, मुकाम आहोर, जिला-जोधपुर-मुल्क मारवाड.-हाल मुकाम-बबई, ठिकाना दुसरा भोइवाडा-पोस्ट -नबर,-२-

१ श्रीयुत-कैवलचदजी-हसराजजी, मुकाम-श्रीरामपुरा, जिला-शिरोही मुल्क मारवाड. हाल मुकाम बबई. श्रीयुत कैवलचदजी-जोराजीकी दुकानपर, पहली सुतारगली, पोस्ट-न,-४

किताबकी सख्या

- १ श्रीयुत-चालचद,-नथुजी, मुकाम-डुआ, जिला-थराद, मुल्क गुजरात, हाल मुकाम बबई, पोस्ट-नबर,९-गोधारीमहोला,
- १ श्रीयुत-वनेचदजी प्रागजी मुकाम दारला, जिला-जसुवतपुरा, मुल्क-मारवाड.-मुकाम बबई. श्रीयुत-खेताजी पोमाजी. कुभारवाडा, दुसरी गली, पोस्ट-नबर,-८
- १ श्रीयुत-देवजी-शिवजी, मुकाम-सेरडी पोस्ट गोधरा, मुल्क-कछ, हाल मुकाम-बबई न्यु-चीचबदर. नानजी लखमशीकी -कपनी. पोस्ट-नबर,-९
- २ श्रीयुत-कृष्णाजी हुकुमीचदजी, बबई चपागली.
- १ श्रीयुत-हेमाजी खूमाजी, गाव खाडगर. पोस्ट पनवेल, जिला-कोलावा, मारवाडमे कालिदरी, जिला-शिरोही
- १ श्रीयुत-लालासिह-भगवानसिह,-मुकाम-कुरला,-ठिकाना-चुनाभटी,-जिला-थाना.

[मुल्क-गुजरात,-]

- १ श्रीयुत-पदममुनिजी-महाराज,-मारफत-श्रीयुत-वाडीलाल भगवानदास -ठिकाना-नया-उपाश्रय, गोपीपुरा,-सुरत
- १ श्रीयुत-उमेदलालजी उकाजी,-पोस्ट सातेम --Post Sâtem व्हाया नवसारी, Via Navsari जिला सुरत Dist Surat
- १ श्रीयुत-सामलदास-हरजीवनदास, कार्यकर्त्ता-जैनसाहित्य-सग्रह,-मुकाम महुधा Mahudha ताल्लुके नडियाद, Nadiad जिला-खेडा --Kaira --अहमदाबाद,-मुल्क गुजरात
- १ श्रीयुत-हीराचद फकलभाई, ठिकाना-माडवीकी-पोलमे-नागजी सुदरकी-पोल, शहर अहमदाबाद मुल्क गुजरात,
- १ श्रीयुत-फुलचद-खीमचद, मुकाम-वलाद, जिला-अहमदाबाद. -मुल्क गुजरात.-टेशन-मेदरा,-

किताबकी सख्या

१ श्रीयुत-मंगलदास दामोदरदास, घी-वाला,-ठिकाना-बाजारमें -मुक़ाम वीशनगर, Visnagar जिला-अहमदाबाद,-मुल्क-गुजरात,

१ श्रीयुत-अमृतलाल-मोतीलाल मुक़ाम देहगाम, Dehgam ठिकाना-कापड बाजार, जिला-अहमदाबाद -मुल्क गुजरात,-ए, पि, रैलवे,

[जिला काठियावाड,-मुल्क सौराष्ट्र -]

१ श्रीजैन-आत्मानंद-सभा. मुक़ाम-भावनगर, जिला-काठियावाड,-मुल्क सौराष्ट्र,

१ श्रीयुत-गिरधरलाल-त्रिकमजी, मुकाम दसाडा, Post Dasara -जिला-काठियावाड, Dist Kathiawar मुल्क सौराष्ट्र

[जिला-शिरोही-मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत-शेठजी जयचदजी-हिम्मतमलजी, मुक़ाम-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-दोसी-दलिचदजी तिलोकचदजी,-महोला छिपाओली, मुकाम-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-नाणावटी घासीरामजी हीराचदजी, महोला गाधीयोंका वास, मुकाम-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-दोसी-राजमलजी फोजमलजी, महोला गाधीयोंका वास,-मुक़ाम शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-मोदी जशराजजी पुनमचदजी, महोला मोदीयोंका वास, मुक़ाम शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-सघवी-हीराचदजी-पुनमचदजी. ठिक़ाना-आमसडक, मुकाम-शिरोही, मुल्क-मारवाड.

मिताबकी सख्या

[मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाडके पेंशगी खरीददारोंके-नाम

५ श्रीयुत-मोतीजी-कपुरचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

५ श्रीयुत-तजाजी हुकमीचदजी-सचवी, मुकाम जावाल,-जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड

२ श्रीयुत-साकलचदजी-देवीचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

२ श्रीयुत-वनाजी-जवेरचदजी, मुकाम जावाल, जिलाशिरोही - मुल्क मारवाट

२ श्रीयुत उमेदमलजी-लालचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

२ श्रीयुत कपुरचदजी-भभुतमलजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड

२ श्रीयुत वालचदजी-मगनलालजी, मुकाम पुना, वेताल पेठ मुल्क महाराष्ट्र, हाल मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क-मारवाड

१ श्रीयुत सुरमलजी अमीचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत हसराजजी कपुरचदजी, मुकाम जावाल,-जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-दानमलजी-शकरलालजी, मुकाम वराडा,-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड हस्ते-श्रीयुत सुरमलजी अमीचदजी, जावालवाले.

किताबकी सख्या

१ श्रीयुत-नवलमलजी-गमनाजी, मुकाम जवाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-हसाजी-साकलचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-साकलचदजी-रासाजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-भगुतमलजी-हिंदुजी, मुकाम जावाल,-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-पुनमचदजी जवेरचदजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत कपुरचदजी साकलचदजी-लालाजी,-मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत कपुरचदजी-फुलचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-गुलाबचदजी चुनिलालजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत पन्नालालजी प्रागचदजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-जेसाजी रूगनाथजी, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-खीमाजी रिखबदासजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-गुलाबचदजी-फुलचदजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-देवराजजी-थानमलजी, मुकाम-करनोल, जिला-मद्रास, हाल मुकाम-जावाल,-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

किताबकी सख्या

१ श्रीयुत-पुनमचदजी गुलाबचदजी-मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-चिमनाजी-मेघराजजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-चिमनाजी साकलचदजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क-मारवाड

१ श्रीयुत-जेठमलजी रत्नाजी, मुकाम जावाल,-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-जवेरचदजी-कृष्णाजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, हस्ते-केशरीमलजी पदमाजी, जावालवालोंके,

१ श्रीयुत-मगुतमलजी केशराजी,-मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत केशरीमलजी-चुनिलालजी, मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-चदाजी ताराचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, -मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत लुबाजी भुरमलजी,-मुकाम जावाल,-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-उमाजी लालचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-पनेचदजी फुलचदजी मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-सुरतीगजी-वनेचदजी, मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

किताबकी संख्या

१ श्रीयुत-कस्तूरचंदजी-शंकरलालजी, मुक़ाम जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-मनरूपजी-चमनमलजी, मुक़ाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-मोतीजी-नथमलजी, मुक़ाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-साकलचंदजी-मगनलालजी-मुकाम जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ हंसराजजी-केशरीमलजी-मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

[मुकाम-पाडीवके पेंशगी खरीददारोंके नाम]

५ श्रीयुत-दौलतरामजी-खूनचंदजी, मुक़ाम-पाडीव, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड.-हाल मुक़ाम-पाचोरा, जिला-खानदेश.

१ श्रीयुत-गुमानमलजी विनयचंदजी-मुक़ाम पाडीव, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

[मुकाम कालिंदरी, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत-हकमाजी नानचंदजी, मुक़ाम-कालिंदरी, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-रूपचंदजी अमराजी, मुक़ाम तवरी, पोस्ट कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड, दुकान शहर-पुना, भवानी-पेठ, मुल्क दखन.

रितावरी सख्या

[मुकाम-नलदुट,-जिला-शिरोही,-मुल्क-मारवाड]

१ श्रीयुत धनरूपजी केशरीमलजी, मुकाम नलदुट,-पोस्ट जावाल -जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-नथमलजी-गमनाजी, मुकाम नलदुट, पोस्ट-जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-कृष्णाजी-धालाजी. मुकाम बलदुट, पोस्ट जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड

[मुकाम-मडवारिया,-जिला शिरोही मुल्क मारवाड]

२ श्रीयुत-चुनिलालजी-लहरचदजी सवजी,-मुकाम-मडवारिया, पोस्ट जावाल जिला-शिरोही मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-पदमाजी-रायचदजी, मुकाम मडवारिया, पोस्ट-जावाल, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड

१ श्रीयुत-हमाजी मूलचदजी, मुकाम मडवारिया, पोस्ट-जावाल, जिला-शिरोही-मुल्क-मारवाड -

१ श्रीयुत-साकलचदजी,-सुरमलजी, मुकाम-मडवारिया,-पोस्ट जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

[मुकाम देलन्दर,-जिला शिरोही मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत-पुनमचदजी-हिदुजी, मुकाम देलदर,-पोस्ट-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड.

[मुकाम-माडाणी, जिला-शिरोही,-मुल्क-मारवाड]

१ श्रीयुत-रामलालजी हिदुजी मुकाम माडाणी, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड दुकान शहर मद्रास,-चीनाबाजाररोड

किताबकी सख्या

[मुकाम–गोहली, जिला–शिरोही,–मुल्क मारवाड]

५ श्रीयुत–लालचदजी–सदाजी, मुकाम गोहली, जिला–शिरोही, मुल्क मारवाड. हस्ते–खुशालचदजी–सेनाजी,–दुकान शहर बबई. जवेरी बाजार, खाराकुवाके पास.

[मुकाम–सडुआल, जिला शिरोही,–मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत–सेलाजी–वनाजी,–मुकाम सडुआल,–जिला–शिरोही, मुल्क मारवाड. दुकान कोलापुर,–मुल्क दखन.

[मुकाम भूतगाव,–जिला–शिरोही, मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत–भगवानजी–देवाजी, मुकाम भूतगाव, पोस्ट जावाल, जिला–शिरोही,–मुल्क मारवाड.

[मुकाम–बागरा–कालिंदरी, सिरोडी,–जिला–शिरोही, मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत–पुनमचदजी राजमलजी, बागरावाले,–जिला–शिरोही, –मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत–फलचदजी–हीराचदजी सघवी, मुकाम–कालिंदरी,– जिला–शिरोही, मुल्क मारवाड,–हस्ते श्रीयुत–पुनमचदजी– राजमलजी शहर बबईमे पेंशगी किमत भर–गये.

१ श्रीयुत–खूनचदजी–लखमाजी मुकाम–शिरोही–पोस्ट अनादरा, माउट–आबु, मुल्क–मारवाड. हस्ते–श्रीयुत पुनमचदजी –राजमलजी–शहर बबईमे पेंशगी किमत भर–गये.

किताबकी सख्या

[जिला-जोधपुर,-मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत-लालचदजी पुनमचदजी,-मुकाम-गुढा-बालोतरा, जिला एरनपुरा, मुल्क मारवाड. Post Gudha Bâlotra, *Dist-Ernipura, Mârwar*

१ श्वेताबर-जैनविद्यालय, मारफत-शाह लखाजी दोलाजी मुकाम -गुढा-बालोतरा, जिला-एरनपुरा, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-सरदारमलजी-केरीगजी,-बोथरा,-पुनाचला, मुकाम-साडेराव, मुल्क मारवाड. Post-Sanderao, Mârwâr

१ मत्री-श्रीयुत-दौलतविजयजी-जैनलाइब्रेरी, मुकाम-नाणा, व्हाया, आबुरोड, मुल्क मारवाड Post Nânâ, Via Abu Road Mârwâr

१ श्रीयुत-पुनचदजी-दानाजी,-मुकाम बागरा,-बाया एरनपुरा, मुल्क मारवाड. Post Bagra Via Ernipurà, Dist Jodhpur, Mârwâr

१ श्रीयुत-गुलाबचदजी-कस्तूरचदजी, मुकाम-कोरटा,-पोस्ट एरनपुरा, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत-सुरजमलजी उमेदमलजी, मुकाम-भाडुदा, पोस्ट एरनपुरा, जिला जोधपुर-मुल्क मारवाड. हाल मुकाम-विजयानगर, मुल्क दखन, (अथवा,) बबई,-पोस्ट-नगर,-२-नयी-हनुमानगली, शेठ-चिमनाजी नाथाजीकी-पेढी

१ श्रीयुत-पुनमचदजी गुलाबचदजी, मुकाम दुझाणा,-पोस्ट साडेराव,-जिला जोधपुर,-मुल्क-मारवाड.-हाल मुकाम-बबई, पोस्ट-नगर-२-नयी-हनुमानगली, शेठ-चिमनजी-नाथाजीकी पढी

किताबकी सख्या

१ श्रीयुत–धगराजजी–रूपराजजी, मुकाम–कोट, पोस्ट वाली, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत–यतिनर्य–प्रमोदसागरजी, मुकाम–विजोवा, पोस्टविजोवा, स्टेशन–रानी,–Rani, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत–भीखराजजी–मूलचदजी, मुकाम तखतगढ, वाया एरनपुरा, जिला जोधपुर मुल्क मारवाड. Post Tagatgarab, Via Ernipura

१ श्रीयुत पन्नालालजी–प्रेमराजजी, मुकाम–तखतगढ,–व्हाया एरनपुरा, जिला जोधपुर–मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत–मनरूपचदजी–अकाजी,–पोरवाड, मुकाम–हरजी, पोस्ट –गूढा–बालोतरा. व्हाया एरनपुरा, जिला जोधपुर–मुल्क–मारवाड, हाल मुकाम–बबई, ठिकाना–लालबाग, डोंगरी बिल्डिग, पोस्ट–नंबर–१२–शाह–हिंम्मतमलजी रायचदजीकी कपनी.

१ श्रीयुत–गुलाबचंदजी–असलाजी–पोरवाड,–मुकाम–गूढा बालोतरा, व्हाया एरनपुरा, जिला जोधपुर–मुल्क मारवाड,–हाल मुकाम–बबई, ठिकाना–लालबाग,–नारायणआश्रम बिल्डिग, –नंबर– ७ पोस्ट–नबर–१२

१ श्रीयुत–चमनाजी–राजाजी, पोरवाड.–मुकाम–आहोर, व्हाया एरनपुरा,–जिला–जोधपुर,–मुल्क मारवाड, हाल मुकाम–बबई, ठिकाना लालबाग.–नारायणआश्रम, नबर सात. पोस्ट नंबर–१२–शाह–चमनाजी दीपचदजीकी कंपनी.

२ श्रीयुत–चिमनाजी–डुगाजी, मुकाम–बाकली, व्हाया एरनपुरा, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.–हाल–मुकाम बंबई ठिकाना मदनपुरा,–पोस्ट–नबर–८–Post Bākli Via Ernipura.

किताबकी सख्या

१ श्रीयुत-माणाजी-कस्तूरचदजी, हस्ते-जवारमलजी, मुकाम-बडनगर, मालवा, गवालियर-स्टेट, Post Barnagar, MA lwa -Gwalior-stete

१ श्रीयुत-भगीरथजी-माणकचदजी-भडारी. गिलिटसाज, ठिकाना-बडा-सराफा, इदोर सिटी. मुल्क-मालवा, Post Indore City Malwa

[मुल्क-विरार -]

१ श्रीयुत-हवसीलालजी-पानाचदजी, मुकाम-बालापुर, जिला आकोला, मुल्क विरार -Post Balapur -Dist Akola - Berar

१ श्रीयुत-गुलाबचद-तिलोकचद, गुजराती. मुकाम-बालापुर. जिला-आकोला,-मुल्क विरार.

१ श्रीजैनश्वेताबर-सघ-आकोला,-मारफत-सेक्रेटरी, श्रीयुत-गिरधरलाल-हकमचद,-मुकाम-आकोला.-मुल्क विरार

१ श्रीमती-माणकबाई,-श्रीयुत-हरगोविंददासकी-माता, ठिकाना ताजनापेंठ, मुकाम-आकोला,-मुल्क-विरार.

१ श्रीयुत-रूपचदजी-असलाजी,-सिलदर,-हाल मुकाम-अमरावती, ठिकाना-दहींपेंठ,-मुल्क विरार, Post Amraoti, Dist Berar

[मुल्क-खानदेश -]

१ श्रीयुत-शकरलालजी-दीपाजी. मुकाम-पाचोरा, जिला-खानदेश.

१ श्रीयुत-तेजपाल-गोविंदजी,-मुकाम-चालिशगाव,-जिला-पूर्व-खानदेश.

किताबकी सख्या

श्रीयुत–किशोरदास–छगनदास गुजराती,–मुकाम–सिरसालि, ताल्लुके आमलनेर,–जिला–पूर्व–खानदेश.

१ श्रीयुत–डाह्याजी–मोतीजी,–मुकाम–नदुरबार, जिला खानदेश.

[मुल्क महाराष्ट्र,–पुना,–सातारा –]

१ श्रीयुत–रतनचंद भाईचंद, नंनर–(८७२) सदाशिवपेठ, पुना–सिटी, Post Poona city,–Deccan

१ श्रीयुत–गुलाबचंदजी–बालचंदजी, ठिकाना–रविवार पेठ पुना सिटी.–

१ श्रीयुत–रमणीकलाल–चुनिलाल, मुकाम–जुन्नेर, जिला–पुना.

१ श्रीयुत–बापुलाल–बालुभाई, मुकाम–जुन्नेर,–जिला–पुना.

१ श्रीयुत–मीखुभाई–ककुचद, ठिकाना–कागवाडा, मुकाम–जुन्नेर, जिला–पुना.

१ श्रीयुत–हीराचंद–हाथीभाई,–मुकाम–कराड, जिला–सातारा, Post Karad –Dist Sâtârâ

[शहर–नाशिक–बेलगाव–सोलापुर– और कोल्हापुर–मुल्क दखन –]

१ श्रीयुत–अमृतलालजी–केशवलालजी शाह,–ठिकाना–सी. डॉ. सराफ, मुकाम–नाशिक. मुल्क दखन.

१ श्रीयुत–ताराचदजी–वृद्धिचदजी, ठिकाना–भोंडीबाजार मुकाम –बेलगाव, जिला धारवाड, मुल्क दखन.

१ श्रीयुत–परतापमलजी–मगनीरामजी, केंप–बेलगाव, जिला धारवाड. मुल्क दखन,–Post Belgaum, Deccan

१ श्रीयुत–गाधी–छगनलाल–देवचद,–मुकाम–सोलापुर सिटी, मुल्क–दखन. Post Sholapur-city –Deccan

किताबकी संख्या

१ श्रीयुत-हिंदुमलजी-जेताजी, राठोड,-मुकाम-कालिंदरी, जिला -शिरोही -मुल्क मारवाड. हाल-मुकाम-कोल्हापुर,-मुल्क दखन. Post Kolhâpur Deccan

१ श्रीयुत-महावीर-जैन-लाइब्रेरी.-मारफत-एच,-जे-राठोठ. मुकाम-कोल्हापुर, मुल्क-दखन.

१ श्रीयुत-हकमीचद-डोंगाजी,-राठोड.-मुकाम-फुलणी, पोस्ट -कालिंदरी, जिला-शिरोही,-मुल्क मारवाड. हाल-मुकाम-कोल्हापुर, मुल्क दखन.

[शहर-मद्रास,-मुल्क दखन -]

४ किताब-चार,-श्री-जैनश्वेतांबर-लाइब्रेरी, नया-मदिर, नबर -(४०९)-ठिकाना साहुकर पेठ,-मुकाम-मद्रास-मुल्क दखन

१ श्रीयुत-हिंदुजी, रामाजी, मुकाम-मोडोणी, जिला-शिरोही. मुल्क मारवाड, हाल-मुकाम-मद्रास -

१ श्रीयुत-हिंदुमलजी-देवीचदजी,-मुकाम-कालिंदरी, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड, हाल-मुकाम-मद्रास -

१ श्रीयुत-भानाजी-ताराचदजी,-मुकाम-मोडवला, जिला-जोधपुर, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम मद्रास.-

१ श्रीयुत-चैनमलजी-हिंदजी,-मुकाम-जावाल, जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड,-हाल मुकाम-मद्रास -

१ श्रीयुत-मलुकचदजी-कस्तूरचदजी, मुकाम-दातराई,-जिला-शिरोही, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम-मद्रास -

१ श्रीयुत-हजारीमलजी-जीवराजजी, मुकाम-वाली, जिला जोधपुर,-मुल्क मारवाड, हाल मुकाम-मद्रास.

किताबकी संख्या

१ श्रीयुत-भुताजी-पुनमचदजी, मुकाम-साएला,-जिला-जोधपुर,-मुल्क मारवाड,-हाल-मुकाम-मद्रास.-

१ श्रीयुत-चुनिलालजी-गेनमलजी, मुकाम-मोडवला, जिला-जोधपुर, मुल्क-मारवाड, हाल मुकाम-मद्रास.-

१ श्रीयुत-मनरूपजी-पन्नाजी.-मुकाम-कालिंदरी, जिला-जोधपुर, मुल्क-मारवाड. हाल-मुकाम-मद्रास.

१ श्रीयुत-हसराजजी-भुताजी,-मुकाम-माडोणी. जिला शिरोही. मुल्क मारवाड. हाल मुकाम-मद्रास

१ श्रीयुत-लालचदजी-खुमचदजी, मुकाम-फैदाणी, जिला-जोधपुर,-मुल्क मारवाड,-हाल मुकाम-मद्रास.

१ श्रीयुत-दीपचदजी-वीरमजी,-मुकाम-ओदवाला, जिला-जोधपुर, मुल्क मारवाड, हाल-मुकाम-मद्रास.

१ श्रीयुत-मेघराजजी-गेंनाजी,-मुकाम-पाचाण, जिला-जोधपुर,-मुल्क-मारवाड. हाल मुकाम-मद्रास.

१ श्रीयुत-भुतमलजी-खुशालचदजी, मुकाम-सिलदर,-Post Sildar Mount Abu माउट आबु. मुल्क मारवाड. हाल मुकाम-मद्रास.

१ श्रीयुत-हुकमाजी-गुलावचदजी, मुकाम-गोहली,-जिला-शिरोही. हाल-मुकाम-मद्रास.

१ श्रीयुत-चदनमलजी-केशरीमलजी, मुकाम-मांडवला, जिला-जोधपुर-मुल्क मारवाड.-हाल मुकाम-मद्रास.

इसतरह-शहर-मद्रासके श्रावकोंकी तर्फसे-(२०) किताबकी पेंशगी-किम्मत-बजरीये खतके-मुनीम-श्यामलालजी-जैनमदिर साहूकारपेंठके मारफत-आई

किताबकी संख्या

१ श्रीयुत-लक्ष्मीचंदजी-कोचर, मुकाम-फलोदी-पोकरण,-जिला-जोधपुर,-मुल्क मारवाड,-हाल-मुकाम-मद्रास,-नं-१४४-अमन-कोयेल स्ट्रीट

१ श्रीयुत-मूलचंदजी-वनाजी, मुकाम-शिरोही,-मुल्क मारवाड, -हाल-मुकाम-मद्रास,-नं-४०३-साहूकारपेठ,-इन दोनों किताबोंकी पेंशगी किम्मतभी-मुनीम-श्यामलालजी-जैनमंदिर साहुकारपेंठके मारफत आई.

१ श्रीयुत-शाह-भवुतमलजी-ठिकाना-शाह-हिंदुमलजी-देवीचंदजी-नं-(९०)-नयनापा-नायक-स्ट्रीट-मद्रास-साहुकारपेंठ, -P-T-Madras-(Sāwcāpet)

[मुकाम-राजनदरी,-वुलीपेटा,-मुल्क दखन]

१ श्रीयुत-मुता-नथमलजी-चुनिलालजी, मुकाम-आहोर,-व्हाया एरनपुरा, जिला-जोधपुर-मुल्क-मारवाड-हाल-मुकाम-राजंदरी श्रीयुत-रतनाजी-भुताजीकी दुकानपर, Post Rajahmundry (Vullitota)

[मुकाम-सेलम-मुल्क दखन-]

१ श्रीयुत-सहसमलजी-हीराचंदजी, सनापेंठ-मुकाम-सेलम,-साउथ-इंडिया-रेलवे -Post-Salem-S-I-Ry

[मुकाम-नेलूर,-मद्रास लाइन मुल्क-दखन-]

१ श्रीयुत-शाह-ताराचंदजी-छोगमलजी-चतरभाणजी, मुकाम-तखतगढ, व्हाया एरनपुरा, मुल्क मारवाड हाल-मुकाम-नेलूर (मद्रास-लाईन-) Post Nellore (Madras Line-)

किताबकी संख्या

[शाहाबाद-दखन]

१ श्रीयुत-शाह-उमरशी-देवशी, मुल्क-कछ, गोयरसमानाला, हाल मुकाम-शाहाबाद,-मुल्क दखन. Post Shàhbàd, Deccan, G I P Ry

१ श्रीयुत-शाह-लालजी-सोजपाल,-मुल्क-कछ,-चारोइनाला, हाल-मुकाम-शाहाबाद,-मुल्क-दखन.

[मुकाम-धनेरा-जिला-पालनपुर, मुल्क गुजरात]

१ श्रीयुत-छगनजी-मलुकचदजी, मुकाम-धानेरा, जिला पालनपुर, मुल्क-गुजरात, हाल मुकाम-बबई, गोधारी-महोला, पोस्ट-नगर,-९

१ श्रीधानेरा-जैनलाइब्रेरी,-मुकाम-धानेरा,-जिला-पालणपुर. मुल्क गुजरात,-श्रीयुत-तुलसाजी-नाथाजी-शिंगी, आहोर वालोंकी तर्फसें भेट.

[मुकाम-कल्याणी-भीमडी, जिला थाना]

१ श्रीयुत-हकमाजी-केशाजी,-मुकाम-आहोर, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम-भीमडी,-जिला थाना.

१ श्रीयुत-हजारीमलजी-जीवाजी, मुकाम-धुडतरा, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम-कल्याणी, जिला-थाना.

[मुकाम-चडलु-भीनमाल-जिला-जोधपुर, मुल्क मारवाड]

१ श्रीयुत-अमरचदजी-गभीरमलजी-छाजेड, मुकाम-चडलु,-Post Barlu, जिला जोधपुर,-मुल्क मारवाड.

किताबकी सख्या

१ श्रीयुत भीनमाल-जैनलाइब्रेरी,-मुकाम-भीनमाल,-जिला-जोधपुर,-मुल्क मारवाड -श्रीयुत-तुलगाजी-नाथाजी शिंगी, आहोरवालोंकी-तर्फसे भेट.

१ श्रीयुत-चादमलजी-छोगमलजी-छाजेड, मुकाम-चटलु, जिला जोधपुर, मुल्क-मारवाड हस्ते-श्रीयुत-अमरचदजी-छाजेड.

[मुकाम नादेड]

१ श्रीयुत-शामजी-धारशी, मुकाम-नादेड. एन्-एस्-रेलवे, Post Nanded, N S Ry

५ श्रीयुत-पदमाजी-भयाचदजी, मुकाम-कालिंदरी, जिला-शिरोही, मुल्क-मारवाड.

[सवाने-उम्रीकी-पूर्त्ति,-]

१ महाराज-शातिविजयजीकी-सवाने उम्रीका-बयान-सवत् (१९८२) तक-इस किताबकी शुरूमें (२०) पन्नेतक छप चुका है, -बाद-बारीशके मुकाम-जावालसे-रवाना होकर कस्बे-वलदुट, मडवारीया, शिरोही, पिंडवाडा, आबु, और शहर अहमदाबादके रास्ते जब मृगशीर सुदी पुनमके रौज-शहर-बबई-तशरीफ लाये.-और-व-मुकाम-दादरमें कयाम फरमाया,-आपलोगोंने पढा होगा,—

२ दादरमें महाराज करीब साढेतीन महिने ठहरे कइ महाशय महाराजके पास मजहबी बहेसकेलिये आते थे, और महाराज उनका माकुल जबाब देते थे, किताब जैनमत-पताका-छपवानेकी शुरूआत इसी अर्सेमें-किइ गइ, चैत महिनेमें माहिमके श्रावकोंकी आर्जुसे

महाराज माहिम तशरीफ लाये, और करीबन-तीन-महिने माहिममे-मुकाम-रखा,-हर हफतेमे-दो-मरतबा महाराज-बुधवार-शनिवारको-बम्बई-तशरीफ लेजाते थे,-और वहा निर्णयसागर प्रेसमे-जैनमत पताकाके-मुफका-मुलाहजा फरमाते थे,-और शामके वख्त माहिम लोट आतेथे,—

३ जब सवत् (१९८३) का-चौमासा-करीब आया कुर्लेके श्रावकोकी आर्जूसें महाराज-ब-मुकाम-कुर्ला तशरीफ-लेगये और सवत् (१९८३)की-बारीश वहापर गुजारी, कुर्लेमे जैनश्वेताबर श्रावकोंकी आबादी अछी है,-नजीक चुनाभट्टीके-एक-जैनश्वेताबर-मदिर बनाहुवा, और-अनकरीब मदिर श्रावकोंके-दश-बारा-घरमी आबाद है,-कुर्ला-टेशन-या-शिव टेशन-उतरकर मजकुर जैनमदिरके दर्शनकों-जानेका रास्ता है-चौमासेमे व्याख्यान सभा-अछी भरती थी. पर्युषणके दिनोमे निहायत उमदा जलसा हुवा,-और कल्पसूत्र-ब-तरीके शास्त्र बाचा गया, इन दिनोमे-महाराजके पास -शहर बम्बई,-घाटकोपर, थाना, माहिम, और-दादरके श्रावक व्याख्यान सुननेको आतेथे,-और-धर्मके बारेमे सवाल पुछतेथे-महाराज-उनका-जबाब देतेथे, कुर्लेके जैनश्वेताबर मदिरका-काम-जो-अधुरा-था महाराजकी धर्मतालीमसे श्रावकोने-पुरा किया, और करीब तीन हजार रुपये इस कामम-सर्फ-किये -इस-चौमासेमे किताब जैनमत-पताकाका करीबन आधा हिस्सा छप गया, महाराज-बम्बई-निर्णयसागर-प्रेसमे मुफका मुलाहजा फरमानेकेलिये यहासेभी तशरीफ लेजातेथे, और शामकों-बापिस लोट आते थे,—

४ कुर्लेका चौमासा खतम करके मृगशीर महिना-फिरभी वहा-गुजारा, और पौषमहिनेमे-माहिम-तशरीफ लाये-माघ, फाल्गुन, चेत, और वैशाखतक महाराजका-मुकाम-माहिममे रहा. किताब-जैनमत पताका-इस दरमियानम-छप गइ और जिल्द बधना शुरू हुवा, इन दिनोमे कइ-श्रावक-महाराजके पास मजहबी बहेसकों-

आते थे,-और उनमे कई श्रावक-इस दलिलको पेश करते थे,-जैनोंकी आबादी दिन-ब-दिन घटती जाती है.-इस तरह-घटती रहेगी तो-(१००) वर्सके बाद जैनोंका नामनिशानभी-न-रहेगा, इनके जवाबमें महाराज कहते थे, तीर्थंकरोंका फरमान है,-पांचवे-आरेकी अखीरतक जैनोंकी आबादी रहेगी, इसलिये इस बातका फिक्र करना आपलोगोंका फिजहूल है,-और फिक्र करनेसे क्या! बनता है, कुदरत अपना काम-खुद-ब-खुद करलेती है,-शामका बदोबस्त शुभहके वख्तभी-नही-हो सकता-तो-(१००) वर्सके-आगेका बदोबस्त कैसे होसकेगा? कल-क्या! होनेवाला है,-इसका -तो-शिवाय ज्ञानीके कोई कह सकता नही,—

५ इस पर एक मिशाल सुनिये! एक-शेठने-अपनी औरतकों कहा,-मेने-अपनी सात पीढीके खानपानका बदोबस्त कर लिया है, मगर आठमी पीढीके मनुष्य क्या खायगें इस बातके फिक्रमे-हु, औरतने कहा, क्या खुब बात है? अपने पडोसीके यहा एक-पीढीके लियेभी-खानेका-बदोबस्त नही और-आप-आठमी पीढीके लोगोंका फिक्र कर रहे है,-नाहक! फिक्र करनेसे-क्या होगा! जो-उनकी तकदीरमे होगा-उसके सामने आयगा,—

६ कइ जैनश्वेतांबर श्रावक कह रहे है,-अपनी-कोमका अध.पतन हो रहा है -मगर-यह-नही बतासकते किस बातका अध पतन होरहा है,-मुताबिक जमानेके सब कारोबार चल रहे है,-पेस्तरके लोगोंकी जैसी तकदीर-थी,-अब-कहा है? जैसा वख्त वैसा-सब कुछ है,-आजकल जैनश्वेतांबर सघमें ऐसेभी-कहनेवाले श्रावक है-जो-कहा करते है, श्वेतांबर-दिगंबर-और-स्थानकवासी मिलकर तीनों फिरकेकी-कॉन्फरन्स भरके-दुनयवी-और-धर्मके काम करे, मगर कहनेवाले ऐसा करके-बतलाते क्यों नही? लोगोंमे-अपनी-तारीफ होनेके लिये-कह देते है,-सप-करलो, एक-होजाओ, धर्ममे विरोध मत करो,-इन्साफ पुछता है,-क्या! यह सब कहनेकीही

बातें है,-या-कर बतलानेकी? दरसाल! कॉन्फरन्स-भरनेकों-कहते थे,-तोभी-अपना कोल पुरा नही कर सकते, कइ सालतक-कोन्फरन्स भरती-नही -जो-जो-ठहराव पास किये जाय-उनपर अमल नही करनेवाले-अमल नही करते, उनकेलिये कोई बंदोबस्त नही, इसकी क्या वजह है?—

७ एक-राजासाहबकी मिशाल यहा काबिल पढनेके है,-लिखताहु, पढिये! एक वख्तकी-बात है,-एक राजासाहब अपने पाच-सात-नोकरोंके सामने बेठे हुवे बातें कर रहे थे, इतनेमे राजासाहबने कहा-हमको-तीर्थोंकी जियारतके लिये जाना है,-किस तरहसें जाय? उनमेसें एक-नोकरने कहा, सवारीकेलिये आप साहबकी क्या मरजी है? राजासाहबने-कहा, मेरी मरजी-रास्तेमे हाथीपर सवार होकर जानेकी है, नोकरने कहा. बहुत अछी बात,-हाथीके मुआफिक कोई सवारी नही, राजासाहबने फिर कहा, अगर हाथीपर सवार होकर-न-जाय और-बग्गीपर बेठकर जाय-तोभी बहेतर है, नोकरने कहा -हजूर! बग्गीकी सवारीभी बहुत उमदा है -और-बग्गीकी-कुछ कमीभी-नही, फिर राजासाहबने-कहा-बग्गीमे -बेठकर जानेसे रास्तेमे हिलने चिलनेसें बडी तकलीफ होगी, पालखीमें बेठकर जाय-तोभी-अछा है, नोकरने कहा, पालखीमे जाना -तो-बहुतही मुफीद है,-अखीरम राजासाहबने कहा. अगर तीर्थोंकी जियारतकों-न-जावे और यहा बेठेही-ईश्वरका ध्यान करे-तो-क्या हर्ज है? नोकरने कहा. यह-सलाह-तो-निहायत उमदा, ध्यानकी बराबरी दुसरी कोई चीज नही. राजासाहबने पुछा. क्यौं-जी! मेने-हाथी,-बग्गी,-पालखीकी-बात कही-तोभी-तुम लोगोने कहा, अछा,-और जियारत जानेके लिये बद रखनेकी-बात कही, तोभी कहते हो,-अछा है.-बतलाओ! इसकी क्या वजह? नोकरोने कहा. हजूर! हमतो-आपके-तावेदार है,-जैसी आपकी मनसा देखे-उसीके मुआफिक बात कहे,—

८ महाराजने माहिममे किताब जैनमत-पताका पूर्ण किई, आपलोग अपनी-पाक-नजरोंसे देखे और-ज्ञानकी कोई बात अछी मालुमहो,-उसपर-गौर-करे,—

☞ कार्यकर्ता,
जैनमत-पताका-ग्रंथ,-

[इन्तहा-किताब,-]

१-मजहबी किताब पढनेस आदमीका दिल धर्मपर रजु होता है, -इन्सान-अगर सचेदिलसे धर्मकरे तो-उसकी इज्जत और हुरमत है,-वरना! उम्र खतम होनेपर रुह चोलेसें निकलेगा, और रज खींचेगा, दुनियाकी हवस कभी पुरी नही होती, कई शख्श इसी हवसम मिशालकापुरके होकर चलेगये,-

२-अगर अपना धर्म सलामतरहा-तो-सनदुरु-बहेत्तरहै,-ईश्वर-परस्त और धर्मपाबद कभी आफतम गिरफतार नही होता, एहले हिम्मत और कदरदान वही है-जो-ख्वाबमेभी धर्मकों-न भूले, जिन्होने यहा धर्म किया उन्होने बहिस्तमभी-मर्तबा पाया, धर्मपाबद शख्शको देवतेभी ताजिम करतेहै,-

३-कई शख्श उमदा इमारत बनवाते है,-मेने मेरी अइफीम किताब-मजकुर बनाकर आपलोगोंके सामने रखी है,-मेरे खेयालसे इसमे मेने कोई खिलाफ धर्मशास्त्रके इबारत नही लिखी इतने परभी-कोई गलती रह गइ हो,-व-जरीये खतके मुझे-इत्तिला-दे, जिसस दोबारा छपनेपर सुधारा किया जाय, इस किताबकों-नाजरीन-अपनी नजरोंसे देखे, और ज्ञानका फायदा हासिल करे,—

मुकाम-माहिम,
पोष्ट-न -१६ बनई
सनत् १९८४-

ब-कलम-जैनश्वेताबर धर्मोपदेष्टा-
विद्यासागर-न्यायरत्न-
मुनि-शांतिविजय,-